this is Book to the

har math misre

the central hindu

college Benares city

mir Ghat

Bansidhar Sharma

THE

RAGHUVAMS'A

OF

KÂLIDÂSA

WITH

The Commentary of Mallinâtha.

EDITED

with various readings

BY

KÂS'ÎNÂTHA PÂNDURANGA PARABA

PRINTED AND PUBLISHED

BY

THE PROPRIETOR

OF

THE NIRṆAYÂ-SAGARA PRESS.

BOMBAY.

1880.

षजन... ...जनं नि
मासक्तोपियोनित्यंभक्तिभावविवर्जितःशालि
ग्रामशिलांपुत्रपूजयेत्सोच्युतोभवेत् ॥ १ ॥
कामासक्तोपिक्रुद्धोपिशालिग्रामशिलार्चनं ॥
भक्त्यावायदिवाऽभक्त्याकृत्वामुक्तिमवाप्नुयात्
२ ॥ लिंगकोटिसहस्रैस्तुपूजितैर्यत्फलंभवेत्
तत्फलंकोटिगुणितंशालिग्रामशिलार्चनात् ३
शालिग्रामशिलाग्रेतुयेकुर्वंतिसुरार्चनं तत्रदा
नंचहोमंचसर्वंकोटिगुणंभवेत् ॥ ४ ॥

प्रथम जिनोने शास्त्रनहि श्रवण किया उनकी विष्णुके पूजनमे श्रद्धाविशेषके उत्पन्न करणे वास्ते लिंगपुराणमें कही जो शालिग्रामप्रशंसा सोकहतेहैं महादेव स्वामिकार्त्तिकको कहतेहैं हेपुत्र भक्ति श्रद्धाते रहितकामासक्तभी पुरुषशालिग्रामकीनित्यपूजाकरें सो साक्षाद्विष्णुका रूपहोजाताहै॥ १ ॥कामासक्त इति कामीहोवे क्रोधीहोवे लोभीहोवे वा भक्तिकर्के और भक्तिते विनाजो पुरुष शालिग्रामकी पूजाकर्तेहैं सो मुक्तिकोप्राप्तहोतेहैं ॥२॥लिंगकोटीति जोपुरुषको शिवलिंगक्रोड हजारकेपूजाकरणे सें फलहोताहै सो फल क्रोड गुणा इकदिन शालिग्राम पूजाकरणेतेप्राप्तहोताहै॥३॥शालिग्राम शिलाके आगे जो पुरुष देवताका पूजन और दान होमयज्ञादि कर्ताहै सो पुरुष कोटि गुणाफलको लभताहै ॥ ४ ॥

... ...गुह ॥ ५ ॥ ...स्ये।
शालग्रामसमुद्भूताः शिलाश्चक्रांकमण्डिताः
यत्रतिष्ठंतिवसुधेतत्क्षेत्रंयोजनत्रयम् ॥ ६ ॥
शालिग्रामशिलाचक्रंयोदद्याद्दानमुत्तमं भूचक्रं
तेनदत्तंस्यात्सशैलवनकाननम् ७ ॥शालि
ग्रामशिलाग्रेतुयःश्राद्धंकुरुतेनरः भवंतिपितर
स्तृप्ताःकालसंख्यातुनैवहि ॥ ८॥ पाद्मे। अ
पिपापसमाचाराःकर्मण्यनधिकारणः शालि
ग्रामार्चकावैश्यनैवयांतियमालयम् ॥ ९ ॥

शालिग्रामशिलाके चारो तरफ कोशमात्रमेंजो कीडाभीमृतहो
वे सोभी वैकुंठलोकमे प्राप्तहोताहै॥५ ॥मत्स्यपुराणमे कहाहै वा
राह भगवान्‌ने पृथिवीके प्रति हे वसुधे चक्रके चिन्हवाली शा
लग्रामकी शिला जिसस्थानमै स्थितहै सोस्थान त्रय योजन प्रमा
ण क्षेत्रकहाहै॥६॥शालग्रामशिलाका दान करताहे जोपुरुषति
सपुरुषने सहित वनोंके ऊर पर्वतोंके संपूर्ण पृथिवीका दान
कीताहै॥७॥जोपुरुष शालग्राम शिलाके आगे श्राद्ध कर्ताहै ति
सके पितरांदी तृप्तिके कालका नियम नहिहै॥८॥पद्मपुराणमेभी
कहाहै वैश्यकेप्रतियमदूतोंने हेवैश्य शालग्राम शिलाकी पूजा
करण वाला पुरुषपापीभीहोवे कर्म कांडमै अधिकारीनहोवे-
सोभीमृतहोया होया यमलोकमै नहि जाताहै ॥ ९ ॥

शालिग्रामशिलायांतुसदाश्रीकृष्णपूजनं नि
त्यंसन्निहितस्तत्रशालग्रामेजगद्गुरुः ॥१०॥
वृहन्नारदीये शालिग्रामशिलारूपीयत्रतिष्ठति
केशवः नवाधंतेग्रहास्तत्रभूतवैतालकादयः
११॥ शालिग्रामशिलायत्रतत्रतीर्थंतपोवनं य
तःसंनिहितस्तत्रभगवान्मधुसूदनः ॥ १२ ॥
यद्गृहेनास्तितुलसीशालिग्रामशिलार्चनम् ॥
श्मशानसदृशंविंद्यात्तद्गृहंशुभवर्जितम् १३

हेवैश्य शालिग्रामशिलामे श्रीकृष्णका पूजन करणा उचितहै जिस शालिग्रामशिलामे सदानारायणरहतेहैं॥१०॥वृहन्नारदीयपुराणमेभीकहाहै जिसघरमै शालिग्रामशिलारूपी केशवहै उस-घरमेग्रह और भूतवैतालादि पीडानहिकरसकतेहैं ॥११॥ शालिग्रामशिलाजिसस्थानमैंहै उसीस्थानमै सभतीर्थरहतेहैं और पवित्रतपोवनादिरहतेहैं जिसकारणतेंशालिग्रामशिलामैं नारायण सदावासकर्तेहैं॥१२॥यदिति जिसघरमै शालिग्रामकीपूजानहिहै और तुलसीका पूजननहिहै सोघरश्मशानके सदृश और शुभकर्मोतेरहितहै॥१३॥

पाद्मे यः पूजयेद्धरिंचक्रेशालग्रामशिलाद्भवे
राजसूयसहस्त्रेणतेनेष्टंप्रतिवासरं ॥ १४ ॥
यदामनंतिवेदांताब्रह्मनिर्गुणमच्युतं तत्प्रसा
दाभवेन्न्दृणांशालग्रामशिलार्चनात् ॥ १५ ॥
यथाकाष्ठस्थितोवह्निर्मथ्यमानःप्रकाशते तथै
वात्मस्थंतज्ज्ञानंपूजनाद्धिप्रकाशते ॥ १६ ॥
नतथारमतेलक्ष्म्यानतथास्वपुरेहरिः शालि
ग्रामशिलाचक्रेयथासरमतेसदा ॥ १७ ॥

पद्मपुराणमैभीकहाहै यइति जोपुरुष शालिग्रामशिलाचक्रमै नि त्यनारायणकापूजनकरताहै सोपुरुष प्रतिदिनराजसूयहजारयज्ञ के फलकोंप्राप्तहोताहै॥ १४॥ यदिति जिस परमेश्वरकों वेदांती- ब्रह्म और निर्गुणअच्युतकहतेहैं सोपरमात्मा शालिग्रामकीपूजा करणेवाले मनुष्योंपर प्रसन्न होताहै॥ १५॥ यथेति जिसतरां काष्ट के बीच अग्निहै और उसकाप्रकाश नहि परंतु काष्टोंके परस्पर संघर्षण करणेसे प्रकाश उसअग्निकाहोताहै इसीतरां पुरुषोंके आत्मामै ज्ञानहै ओह ज्ञान प्रकाशित नहिहै सो शालिग्राम की पूजाकरणे कर्के प्रकाशमानहोताहै॥ १६॥ नेति जिस तरह कर्के नारायण शालिग्राम शिलामै क्रीडाकरताहै तिसतरांलक्ष्मी के साथ नहि क्रीडाकरताहे ओर वैकुंठ भुवनमै भी नहिक्रीडा कर्ताहै ॥ १७ ॥

अग्निहोत्रंकृतंतेनदत्तापृथ्वीससागरा येनार्चि
तोहरिश्चक्रे शालग्रामसमुद्भवे ॥१८॥ कामैः
क्रोधैर्मदैर्लोभैर्व्याप्तोयोत्रनराधिप सोपियाति
हरेर्लोकंशालग्रामशिलार्चनात् ॥१९॥ यः पू
जयतिगोविंदंशालग्रामेसदानरः आभूतसंप्ल
वंयावन्नसप्रच्यवतेदिवः ॥२०॥ विनातीर्थैर्वि
नादानैर्विनाहोमैर्विनामखैःमुक्तिंयांतिनरा वै
श्य शालग्रामशिलार्चनात् ॥ २१ ॥

अग्निहोत्रमिति शालग्रामकी शिलामै जिसपुरुषने नारायणकी पूजाकीतीहै उसपुरुषने अग्निहोत्रकीया और सहित समुद्रोंके पृथ्वीका दानकीताहै ॥१८॥ कामैरिति काम क्रोध लोभ मोह करकै दंभ करकै युक्तजोपुरुष शालग्रामकी पूजाकर्ताहै सो वैकुंठ लोकमै जाताहै ॥ १९ ॥ जो पुरुषसदा शालग्रामकी पूजा कर्ताहै सो पुरुष कल्पपर्य्यंत स्वर्गते नाहिगिरता ॥ २०॥ विनेति तीर्थदानहोम यज्ञ करणेतै विना मुक्तिको प्राप्तहोतेहैं जो पुरुष नित्य शालग्रामका पूजन कर्तेहैं ॥ २१ ॥

...नदत्तापृथ्वीससागरा येनार्चि
पाग्ने यः पूजयद्ध...
...शालग्रामशिलार्चनम् ॥२२॥
कुरुतेमानवोयस्तुकलौभक्तिपरायणःकल्पको
टिसहस्राणिरमतेसन्निधौहरेः ॥२३॥ सकृद
भ्यर्चितंलिंगंशालग्रामशिलोद्भवं लभतेमनुजो
मुक्तिंनित्यंसांख्येनवर्जितः॥२४॥ शालिग्राम
शिलारूपीयत्रतिष्ठतिकेशवः तत्रदेवासुरास्स
र्वेभुवनानिचतुर्दश ॥२५॥ शालिग्रामशिला
ग्रेतुयःश्राद्धंकुरुतेनरः पितरस्तस्यातिष्ठंतितृ
प्ताःकल्पशतंदिवि ॥ २६ ॥

नैवेद्यैरिति जो पुरुष कलिकालमै भक्तिसे गंध धूप दीप अने कतरहके नैवेद्य कर्के शालग्रामकी पूजाकर्ताहै गीतगाताहै स्तोत्र पढताहै ॥ २२ ॥ सो पुरुष हजार क्रोडकल्प वैकुंठ लोकमै रहताहै २३ ॥ सकृदेति शालग्राम शिलाकोलिंगकी जो मनुष्य एकवारभाक्तिकर्के पूजाकर्ताहै और ज्ञानतें रहितहै सो मुक्तिको लभताहै २४ ॥ शालग्रामेति जिस स्थानमे शालग्रामकी शिलानित्यस्थितरहतीहै उसी स्थानमै सभदेवता असु यक्ष गंधर्व चौदां भुवनरहतेहैं ॥ २५ ॥ शालग्रामेति जो पुरुष शालग्राम शिलाके पास श्राद्ध कर्ताहै तिसके पितर सौ १०० कल्पपर्यंत तृप्त हुयेहुये स्वर्गमै वासकर्तेहैं ॥ २६ ॥

स्कंदेकार्त्तिकमाहात्म्ये शिवस्कंदसंवादे ॥
शालग्रामशिलायांतु त्रैलोक्यंसचराचरं मया
सहमहासेनलीनंतिष्ठतिसर्वदा ॥ २७ ॥
शालग्रामशिलाबिंबंहत्याकोटिविनाशनं स्मृ
तसंकीर्त्तितंध्यातंपूजितंचनमस्कृतम् ॥२८॥
शालग्रामशिलांदृष्ट्वायांतिपापान्यनेकशःसिं
हंदृष्ट्वायथायांतिवनेमृगगणाभयात् ॥२९ ॥
पुनस्तत्रैव ॥ शालग्रामशिलायांतुसदापुत्रव
साम्यहं दत्तंदेवेनतुष्टेनस्वस्थानंममभाक्तितः
॥ ३० ॥

स्कंदपुराणके कार्त्तिक माहात्म्यमै शिव स्कंदके संवादसै कहा है शालग्रामशिलायामिति महादेव कहतेहैं हे स्कंद शालग्राम शिलामै सभत्रिलोकी मेरेसाथ लीनहोय कर्के सदा रहती है ॥२७ ॥ शालग्रामेति शालग्रामशिलाके बिंबका जोपुरुषनित्यस्मरणकर्तेहैं पूजन औरध्यान औरनमस्कारकर्त्तेहैं तिनांपुरुषांकीयां क्रोडजन्म कीयां हत्या दूरहोतीयां हैं ॥ २८ ॥ शालग्रामशिलामिति शालग्रामकी शिलाका दर्शन कर्के अनेकजन्मांके पाप नष्टहोजातेहैं जिसतरां वनमै सिंहकोंदेखकर अनेक मृगऔर गजनष्ट होजातेहैं ॥ २९ ॥ और स्कंदपुराणमै शिवजी कहतेहैं हे स्कंद हेपुत्र मेरीभाक्ति कर्के प्रसन्न हुये हुये परमात्माने अपना स्थान जो है शालग्राम शिलामय सो मेरेको निवास वास्तेदित्ताहै ॥ ३० ॥

कल्पकोटिसहस्त्रैस्तुपूजितेमायियत्फलं तत्
लंकोटिगुणितंशालग्रामाशिलार्चने ॥ ३१ ॥
पूजितोहंनतैर्भक्त्यानामितोहंनतैर्नरैः नकृतंम
र्त्यलोकेयैःशालग्रामशिलार्चनम् ॥ ३२ ॥
प्रायश्चित्तेसमुत्पन्नेकिंदानैःकिमुपोषणैः चांद्रा
यणैश्चतीर्थैश्चपीत्वापादोदकंशुचिः ॥ ३३ ॥
प्रमाणमस्तिसर्वस्यसुकृतस्याहिपुत्रक फलं
प्रमाणहीनंतुशालग्रामशिलार्चने ॥ ३४ ॥

कल्पेति हे पुत्र हजारांक्रोडकल्प मेरी पूजाकरणेका जो फलहै उसफलका क्रोडगुणां फल शालग्रामशिलाकी पूजाकरणेसें होताहै ॥ ३१ ॥ पूजित इति हेपुत्र जोमनुष्य शालिग्रामकी पूजानाहि कर्ते सो मनुष्य मेरीभीपूजा नाहि कर्ते और मेरेकों नमस्कार नहि कर्तेहैं ॥३२॥ प्रायश्चित्तइति हे स्कंद मनुष्यांकों प्रायश्चित्त के करणे वास्ते उपवास व्रत और दान और चांद्रायण व्रतऔर तीर्थका स्नान करणेसे उनपुरुषोंको क्या है केवल चरणोदकपीणेसें वो शुद्ध हो जातिहैं ॥ ३३ ॥ प्रमाण मिति सभपुण्य दान व्रतके फलकाप्रमाणहै शालग्रामकीपूजाके फलका प्रमाण नाहिहै ॥ ३४ ॥

यःददातिशिलांविष्णोः शालग्रामसमुद्भवां
विप्रायविप्रमुख्यायतेनेष्टंवहुभिर्मखैः ॥ ३५
सधन्यःपुरुषोलोकेसफलंतस्यजीवितं शाल
ग्रामशिलाशुद्धागृहेयस्यचपूजिता ॥ ३६ ॥
संनियम्येंद्रियग्रामंशालग्रामशिलार्चनं यःकु
र्यान्मानवोभक्त्यासयातिपरमंपदम् ॥ ३७ ॥
पुनस्तत्रैव॥कुरुक्षेत्रेण किंतत्रसंप्राप्तेग्रहणेरवेः
शालग्रामशिलायत्रदृश्यतेचक्रलांछिता ॥ ३८

यइति जो पुरुष शालग्रामशिलाका दान कर ब्राह्मणकोंदेताहै सो वहुतयज्ञोंके फलको प्राप्तहोताहै ॥ ३ ५॥ सइतिजिसके घरमें शालग्राम शिलाशुद्ध और पूजताहै सो मनुष्य धन्यहै और उसका जीवना सफलहै ॥ ३ ६॥ समिति जो पुरुष यतेंद्रियहोके भक्ति के साथ शालिग्रामका पूजन कर्ताहै सो बैकुंठ को प्राप्त होताहै ॥ १७ ॥ औरभी स्कंदपुराणमे कहाहै क्रिति जहां चक्रके चिह्नवाली शालग्रामकी शिलाहै तद सूर्य ग्रहणके प्राप्तहुए कुरुक्षेत्र करके क्याहै अर्थात् वोहि स्थान पवित्रहै उसी स्थानमें दिका अनंत फल होताहै ॥ ३८ ॥

प्रभासेयत्फलंप्रोक्तंराहुग्रस्तेनिशाकरे कृतदा
नेभवेत्पुण्यंशालग्रामशिलाग्रतः ॥ ३९ ॥
शालग्रामशिलास्पर्शःकोटियज्ञफलप्रदः मर
णात्तत्समीपेतु काशीतुल्यफलंभवेत् ॥ ४० ॥
पाद्मे । दूतविकुंडलसंवादे ॥ अथवासर्वथापू
ज्योवासुदेवोमुमुक्षुभिः शालिग्रामशिलाचक्रे
वज्रकीटविनिर्मिते ॥ ४१ ॥ अधिष्ठानंचतद्वि
ष्णोःसर्वपापप्रणाशनं सर्वपुण्यप्रदंवैश्यसर्वे
षामपिमुक्तिदम् ॥ ४२ ॥

चंद्रग्रहणमे प्रभास तीर्थमे जो दान करणे का फल प्राप्त हो
ताहै सो फल शालिग्राम शिलाके समीप थोडेक दान करणेसे
होताहै ॥ ३९॥और शालिग्राम शिलाके स्पर्श करणेसें क्रोड
यज्ञके करणेका फल प्राप्त होताहै और जिस मनुष्यका शा
लिग्राम शिलाके समीप मरण होताहै तिसको काशीमे
मरणेका फल प्राप्त होताहै अर्थात् उसकी मुक्ति होतीहै ॥४०
एहि पद्मपुराणमे लिखाहै ॥ मुक्तिकी इच्छा वाले पुरुषोंने
वज्रकीटने रचा जो शालिग्राम शिलाचक्र तिसमे वासुदेव
भगवान्की पूजाकरणी चाहिए ॥ ४१ ॥ और सोई चक्रपापों
के नाश करणेवाला और सबको मुक्तिके देने वालाऔर संपूर्ण
पुण्यके देने वाला विष्णु महाराजका निवासस्थानहै ॥ ४२ ॥

यः पूजयतिहरिंचक्रेशालग्रामसमुद्भवे राजसू
यसहस्त्रेणतेनेष्टंप्रतिवासरं ॥४३ ॥ यदाम
नंतिवेदांताब्रह्मनिर्गुणमच्युतं तत्प्रसादोभवे
न्नृणांशालिग्रामशिलार्चनात् ॥४४॥ कोटि
द्वादशलिंगैस्तुपूजितैःस्वर्णपंकजैः यत्स्याद्
द्वादशवर्षेषुदिनेनैकेनतद्भवेत् ॥ ४५ ॥

जो पुरुष शालिग्राम शिला चक्रमे विष्णुका पूजन करताहै तिसको प्रतिदिन राजसूय यज्ञका फल प्राप्त होताहै ॥ ४३ जिसको वेदांती सत्य निर्गुण अच्युतमानतेहैं सो मनुष्यों पर शालि ग्राम शिलाके पूजन करणेसें प्रसन्न होतेहैं ॥ ४४ ॥ और बारां क्रोडरुद्रोंका १२ बारां वर्ष तक स्वर्ण पुष्पों करके पूजन करणेसे जो फल होताहै सो शालि ग्राम शिलाके पूजन करणेसें एक दिनमे होताहै ॥ ४५ ॥

शालिग्रामसमीपेतुक्रोशमात्रंसमंततः कीटकोपिम्रतोयातिवैकुंठभुवनंगुह ४६॥स्कंदे। चक्रांकिताशिलायत्रशालिग्रामशिलातथा तिष्ठते मुनिशार्दूलवर्धंतेतत्रसंपदः॥४७॥ कोटिलिंगैस्तुमानुष्यःपूजितैर्जाह्नवीतटे काशिवासेयुगान्यष्टौदिनेनैकेनतल्लभेत् ४८स्वांदे शालग्रामाःसमाःपूज्याविषमानकदाचन विषमेह्येकएवस्यात्समेद्वौनकदाचन ॥४९॥

शालग्रामेति शालग्रामके चारोतरफ क्रोशभरमैकोईकीडाभी मृतहोवे उोभीवैकुंठभुवनकोप्राप्तहोताहै४६॥ स्कंदपुराणमे भी कहाहै द्वारकाकाचक्र शालग्रामकी शिला जिसस्थानमे रहती यांहैं उसीस्थानमै सभसंपदा रहतीयांहैं ४७ ॥ कोटिलिंगेरिति मनुष्यकों श्रीगंगाजीके कनारेपर क्रोडलिंग महादेवके पूजनका और अष्टयुगकाशीमै वासकरणेका जोफल होताहै सो फलपुरुषको इक दिन शालग्रामकी पूजाकरणेसें प्राप्त होताहै ॥ ४८ अवशालग्रामकी पूजाके प्रसंगतें पूजाके योग्य कितनीयां मूर्तीयां पूजनीयां कितनीयां नहि पूजनीयां इस बातको कहाहै स्कंदपुराणने शालेति शालग्राम समांदी पूजाकरणी विषमाहीनाहि करणी विषमोमेइककी पूजा करणी और सम शालग्रामोमे दोइकठे नहि पूजने ॥ ४९ ॥

पाद्मे । गृहेलिंगद्वयंनार्च्यंगणेशत्रयमेवच
द्वौशंखौनार्चयेन्नित्यंनशक्तित्रयमेवच ॥ द्वेच
क्रेद्वारकायास्तुनार्च्यंसूर्यद्वयंतथा ॥ ५० ॥
शालिग्रामास्समाःपूज्यानद्वयंतुकदाचन वि
षमानचपूज्यास्तेविषमेचैकएवहि ॥ ५१ ॥
नाक्षतैःपूजयेद्विष्णुंनकेतक्यासदाशिवं आर
क्तैर्नार्चयेच्छंभुंकरवीरांबुजैर्विना ॥ ५२ ॥

पद्मपुराणमै विशेषकहाहै घरमे पूरुष दो शिवलिंगोकी उँर. गणेशशोण भद्रके तीनो की पूजा न करे गृहस्थी घरमै. दो शंख न पूजे उँर दुर्गाकीयां मूर्तियां तीन न पूजे श्रौर. द्वारकाके गोमतीचक्र दो न पूजे श्रौर दो २ सूर्याकी पूजा न करे ॥ ५०॥ शालिग्रामेति श्रौर शालग्राम समक्या दो चारछे श्राठ इत्यादि पूजानकरे परदोहकी कदीन करे श्रौर विषम, शालग्रामोंकी क्या तीन ३ पांच५ सप्त ७ नव९इनकी पूजा कदे नकरे करे तो एक शालग्रामकीकरे ॥ ५१ ॥ नाक्षतैरिति, श्रक्षतोके साथ विष्णुकी पूजान करे केतकीके पुष्प शिवजी पर न चडावे उँररक्तपुष्पो करके शिवजीका पूजन न करे उँर करवीरं क्याकनेरके उँर कमलोके पुष्प लालभी हैं पर. महादेव उँर विष्णुपर चडावे ॥ ५२ ॥

वैखानससंहितायां चतुर्मूर्तिश्च षण्मूर्तिरष्टौद
शचसंख्यकाः आदित्यसंख्यकास्तद्वत्तथैवमु
निसंख्यकाः ॥ ५३ ॥ तथाषोडशसंख्याका
स्तथाविंशतिरीरिताः द्वात्रिंशच्छुद्धसंख्याका
श्चत्वारिंशद्विशेषतः ॥ ५४ ॥ चारुवर्णाश्च
शोभाढ्याश्चतुष्षष्टिस्तथापराः अष्टाशीतिर्म
हामूर्त्तीः शतमष्टोत्तरंतथा ॥ ५५ ॥ प्रयत्नेनै
वसंगृह्यपूजनीयाविचक्षणैः।पुनःस्कंदे।चतस्त्रः
पूजितायेनद्वादशात्माभवेद्बसः ॥५६॥पाद्मे।
द्वादशेहशिलायोवैशालिग्रामसमुद्भवाः अर्च
येद्वैष्णवोनित्यं तस्यपुण्यंनिबोधमे ॥ ५७ ॥

एहि वैखानस संहितामैं लिखाहै शालग्रामकीयां चारमू-
र्तियां ४ छे ६ अट ८ दश १० द्वादश १२ चौदां १४ सोलां
१६ वीस २० वतीस ३२ चालीस ४० चतुष्षष्टि६४ अष्टा
शीति ८८ सउ १००एकसउतेअष्ठ १०८ इहसंख्या मूर्तियां
कीयां पूजाकरणीयां ॥ ५५ ॥ एहि स्कंदपुराणमैं कहाहै जो
पुरुषचारमूर्तियांकी नित्यपूजा करताहै सो सूर्यरूप होजाताहै ॥
५६ ॥ पद्मपुराणमैकहाहै शालग्रामाशिला वारांका १२ जोनि
त्यपूजन कर्ताहैं तिसकें पुण्यको जाण ॥ ५७ ॥

कोटिलिंगसहस्रैस्तुपूजितैर्जाह्नवीतटे काश्यां
वसेद्युगान्यष्टौदिनैनैकेनतद्भवेत् ॥५८॥ स्कां
दे मूर्त्तीनांषोडशीनांतुकृतापूजाविधानतः सर्व
सिद्धिर्भवेत्तस्यनात्रकार्याविचारणा ॥ ५९ ॥
गायत्रीवर्णसंख्यायाः विंशतेश्चतथाऋषे पूज
नाच्चनरोनित्यमश्वमेधफलंलभेत् ॥६०॥ द्वात्रिं
शत्पूजयित्वातुशिवसान्निध्यमाप्नुयात् चत्वा
रिंशत्पूजयित्वाविष्णोः सालोक्यतांव्रजेत् ६१
चतुष्षष्टिस्तथामूर्त्तीस्तद्वच्चाशीतिसंख्यकाःफ
लंशृणुध्वमेतासांपूजांकृत्वाविधानतःसर्वपाप
विनिर्मुक्तोविष्णोःसायुज्यमाप्नुयात् ॥ ६२ ॥

गंगाकेकिनारे हजारक्रोड शिवलिंगपूजा करणेका फल और अठयुग काशी वसनेका फल शालग्रामोकी इकदिनदी पूजा सेंहोताहै ॥ ५८ ॥ स्कंदपुराणमेकहाहै जो पुरुष सोलां १६ शालग्रामोंकीनित्य पूजाकर्ताहै सो सभासिद्धिको प्राप्तहोताहै ॥ ५९ ॥ गायत्रीति वीस२० शालग्रामोका चवीस२४ शालग्रामोंकाजोनित्यपूजनकर्ताहै सोनित्य अश्वमेध यज्ञके फलको लभताहै ॥६०॥ द्वात्रिंशादीति वतीस ३२ मूर्तियां नित्यपूजन करणेते पुरुष शिवलोकको प्राप्तहोताहै और चालीस४०शाल ग्रामपूजाकरणेसें बिष्णुलोकको प्राप्तहोताहै ॥६१॥ चतुष्षष्टि रितिजो चौहसठ६४शालग्रामोकाऔर अस्सी ८० शालग्रामो कानित्य पूजनकर्ताहै सोपुरुषसभपापातेरहितहोकर विष्णुलो कमेंप्राप्तहोताहै ॥६२ ॥

मूर्त्तयः शतसंख्याकानानावर्णविभूषणाः गृहे
यस्यप्रपूज्यंतेलक्ष्मीस्तस्यस्थिराभवेत् ॥ ६३
पाद्मे ततोवह्नीरर्चयतिशालिग्रामशिलास्तु
यः नहिब्रह्मादयोदेवाः संख्यांजानंतियत्फल
म्६४॥यःपुनःपूजतेभक्त्याशालग्रामशिलाश
तं उषित्वासहस्रेलोंकेचक्रवर्त्तीहजायते ॥ ६५
पद्मपुराणे गंडकीसरितांपुण्याचक्रतीर्थंचतत्र
हि शालिग्रामाभिधंक्षेत्रंतत्रविष्णुसमुद्भवः६६

मूर्त्तय इति नाना वर्णों कीयां शत १०० शालग्राम की यांमूर्तियां जिसके घरमै नित्यपूजी दीहैं तिसके घरमै लक्ष्मी सदा रहतीहै ॥ ६३ पद्मपुराणमै कहाहै जोपुरुष शत१०० संख्याके आगे लक्ष पर्यंत वहुत शालग्रामोंकी पूजा करते हैं तिनकेफलकी गिणती ब्रह्मादिदेवता नहि जानतेहैं ६४॥ यइति जोनित्य भक्तीकर्के शालग्राम सउका पूजन करताहैसो वैकुंठमै निवास क. भारतखंडमै चक्रवर्त्ती राजाहोताहै ॥ ६५ पद्मपुराणमै कहाहै नदीयोमैं पवित्र गंडकी नदीके चक्रतीर्थ शालग्राम क्षेत्रमै साक्षाद्विष्णु उत्पन्नहोते भये इस वास्तेवोक्षेत्र नामकर्के शालग्राम होताभया ॥६६ ॥

अत्रैवोदाहरंतीममितिहासंपुरातनं धूम्रकेश उवाचलोकपालेशधर्मात्मन्धर्मराजमहाप्रभो संशयंछिंद्धिमेदेवसर्वज्ञोसिहरिप्रिय॥१॥ गंगाद्याः सरितोह्यन्यास्त्यक्त्वासौसर्वगोहरिः गंडक्यामेवसंभूतस्तत्रकारणमुच्यतां ॥ २ ॥ यमउवाच आसीदतीतकल्पेवैमुनिर्वेदाशिरो महान् गंगातीरेतपस्तीव्रं कुर्वन् लोकसुखावहम् ॥३ ॥ तदाश्रमंमहत्पुण्यंरम्यंनानाद्रुमाकुलं सर्वर्तुफलपुष्पाढ्यंनिर्वैरिप्राणिसंकुलं ॥ ४

इसमे पद्मपुराणके कार्त्तिक माहात्म्यमै यम और धूम्र केशके संबाद करके इति हास कहतेहैं धूम्रकेश कहताहै हेधर्मराज सर्वज्ञ और नारायणका भक्त तूं हैं इसते मेरे संशयनूं दूरकर ॥ १ ॥ गंगाद्याइति गंगादिपवित्र नदीयांको त्यागकर परमेश्वर गंडकी नदीमै किस कारणते उत्पन्न होतेभये इह कारण कहो ॥ २ ॥ यमजोकहतहैं हेधूम्रकेश प्रथम कल्पमे गंगाजी के कनारे लोकोके सुखवास्ते वडेउग्रतपको वेदाशिरा नाममुनि कर्ताभया ३ ॥ तदेति तिसका वडा पवित्र रमणीय फलपुष्पो बाले वृक्षोंके साथ भरयाहांया और विना वैरसे जीवो वाला आश्रम होताभया ४ ॥ पूजार्थमिति रसाल वृक्षों के साथ शुभायमान पूजा वाली पुष्पवाडी वेद शिराकी होतीभई

पूजार्थंपुष्पवाटीचरसालैःसमलंकृता तत्त।।।।
ताचित्तेन महेंद्रेणनृपात्मज प्रेषितामंजुवाग्दे
वीदेवकन्यामनोहरा ५ सातत्रकन्यावनमुल्लसं
तीनिसर्गसौरभ्यजितप्रसूना कौमल्यतुच्छी
कृतपल्लवाग्राचिक्रीडबालाकरकंदुकेन॥ ६ ॥
सव्रीडहासोल्लसितंब्रुवंतीचलंमुखंस्वसुगंधेन
विभ्रती सूक्ष्मांबरांतर्दृशिगोचरालसत्सुवर्णकुं
भस्तनसूक्ष्ममध्यमा ७ तांवेदमूर्धापितपोंतरा
यांदृष्ट्वाचचिक्षेपकटाक्षदृष्टिम्गंतुंततोन्यत्रच
कांक्षसाततःप्रीत्यामुनेःपादयुगंदधौमिषात् ८

हेधूम्रकेश तिसमुनिके तीव्रतपसे भयभीतहुये इंद्रने मंजुवाग्
अप्सरावडी सुंदरस्वर्गते वेदाशिराके आश्रमपर भेजीभयी ५
सोति वेदशिरामुनिके आश्रमके पास ओह मंजुवाक् वनकोप्रका
श कर्ती होई आपनी सुगंध कर्के पुष्पांको सुगंध वाले कर्तीहो
ई और आपनी कोमलता कर्के दूरकीतीहै पुष्पोंकी कोमलता
जिसने अयसी मंजुवाक् कंदुक कर्के क्रीडा कर्ती भई॥ ६ ॥
सोति कैसीहै मंजुवाक् मंदहास लज्जा संयुक्त सुंदर और चंच
ल सुगंधवाला मुख जिसका सूक्ष्म वस्त्रके वीचते दृष्टि गोचर
होतेहैं सुवर्ण कुंभकी न्याईस्तन जिसके और सूक्ष्महै लक जि-
सका ७ अयसी जो मंजुवाक् अप्सरा तिसको वेदाशिरा ऋषि
तपमेविघ्नकरणवाली देखकरकटाक्षदृष्टिकोछोडताभया और सो
तिस स्थानते औरजगा जानेकी इच्छाकर्ती हुई प्रीतिके वहाने
कर्के ऋषिकेपादयुग्म रूपी कमलोंको धारण कर्ती भई॥ ८ ॥

तत्स्पर्शरोमांचितदेहमेनंज्ञात्वास्ववशंय निज
वाहुपाशं तत्कंठपार्श्वेनिदधेतदासौवुवोधचा
त्मानमनंगविद्धम् ॥ ९ ॥ ततस्तुक्रोधताम्राक्षो
मुनिर्वेदशिरोमहान् अवष्टभ्यात्मनात्मानंश
शापैनांमहातपाः १०॥ वेदशिरउवाच तरंग
शीतलतराभुजद्वयसमन्विता शृंगारह्लादिनी
भूत्वाविक्षिपंतीममोपरि ॥ ११ ॥ कामकुंडेम
ज्जयंतीक्षेप्तुकामाभवांवुधौ यन्नदीवसमाहष्टात
न्नदीभवभामिनी ॥ १२ ॥

तदिति मंजुवाक् अप्सरा वेदशिरा मुनिके शरीरको अपने अधीनजानकर्के वेदशिराके कंठमै अपनी वाहुरूपी पाशको पातीभई और तिस समय वेदशिरा मुनि अपने आत्माको कामदेव कर्के विद्ध जानता भया ॥ ९ ॥ तत इति वेदशिरा मुनि आत्मानूं कामदेव विद्ध जान कर आत्माको ज्ञानके साथ रोक कर और क्रोधसे मंजुवाक् अप्सरा को शाप देताभया ॥ १० ॥ वेदशिरा मुनिकहताहै जिसते तरंगोकी तरां वहुत शीतल वाहुके साथ और सुंदर शृंगार वाली हुयी हुयी मेरेको संसार समुद्रते गेरती होयी और कामदेवका रूप होकर नदीकी न्याई मेरेपर गिरती भई इसीलिये नदीरूप तूं हो ॥ १२ ॥

एवंशप्तातुसादेवीमंजुवाक्खिन्नमानसा अ्पु
वाचमुनिंदीनाप्रसादायापतत्पदोः ॥ १३ ॥
पराधीनास्मिभोब्रह्मन्प्रीतिचेष्टांप्रकुर्वती वि
नयावनतावापिंनशापार्हाप्रसीदमे ॥ १४ ॥
तदोवाचमुनिः शांतोनदीभूत्वाजनार्दनं स्वो
दरेधारयंतीचकृतकृत्यंजनंकुरु ॥ १५ ॥ शा
लग्रामशिलारूपीविष्णुस्त्वयिजनिष्यति त्व
द्यशोविस्तरोलोके मुक्तिदातानृणामिह ॥ १६

एवमिति इसतरां शापवाली मंजुवाक् अप्सरा खिन्नमन होकर वडी दीन ऋषिको कहणेलगी और प्रसन्न करणे वास्ते मुनिके पादांको ग्रहण करती भई ॥ १३ ॥ पराधीनेति हे ब्रह्मन् हे मुने मैं परायीनहोकर क्रीडा करीहोईहां और नम्रहां स्त्री हां हे ऋषे स्त्री शापके योग्यनहिहोती मेरेपर प्रसन्नहो॥१४तदे ति इह वातसुन वेदशिरा मुनि क्रोधको शांतकर कहणे लगाहे मंजु वाक् तूं नदी हो कर परमेश्वरनूं अपने प्रवाह मैं उत्पन्न करतीहोयी जनांकों कृतार्थकरेंगी ॥ १५ ॥ शालग्रामेति हे मं जुवाक् तेरेमैं शालग्राम स्वरूप विष्णु उत्पन्न होकर माके देवें गे और तेरेयशका विस्तार लोकोमैं होगा ॥ १६ ॥

तवैवहद्यंखलुजन्मशोभने यत्रास्तिगोविंदस
मागमोत्सवः शापोप्ययंतेवरतोधिकोमयाद
त्तोस्ति यद्वैभक्तिश्चदुर्लभा ॥ १७ ॥ यमउ
वाच सैवैषामंजुवाग्देवगंडकीसरितांवरा त
स्यांविष्णुः शिलारूपीवृंदाशापाद्बभूवह ॥१८
इत्येवंसर्वमाख्यातंतद्गच्छहरिसन्निधौ ॥१९॥
इतिखलुकथितश्चराजपुत्रोयमेनसमधिगतवि
मानं दिव्यरुपोधिरुह्य सकलकलुषमुक्तः
कार्त्तिकेकृष्णपूज्यश्रमलपदमितोन्यत्केवलंवि
ष्णुमाया ॥ २० ॥

तवेतिहे शोभने तेरा जन्म सफलहै जिसतेरेमें गोविंद नारायण
का जन्म शालग्रामरूपी होवेगा और एह शाप तेरेको मेरादि-
त्ताहोया वरते अधिकहोता भया जिसते विष्णुकी भक्ति दुर्लभहै
॥१७॥यमकहताहै हेवैश्य ओह मंजुवाक् अप्सरानदीयोंमै श्रेष्ठ
गंडकी नामनदीहोतीभई तिस गंडकी नदीमै वृंदाके शापते-
विष्णु शालग्रामशिलारूपी होतेभये ॥ १८ ॥ इतीति हे
वैश्य एह सभतेरेको कहाहै अवनारायण केसमीपजाह ॥ १९॥
इतीति यम करके कहाहोया राजाकापुत्र वडा सुंदर कार्त्तिकमे
प्रसंगते विष्णु पूजाकर्के सभनांपापांते रहितहोकर विमान सुंदर
मे वेठकर विष्णुलोकनूं प्राप्तहोताभया इससे और परमेश्वरकी
मायाहै॥ २० ॥

शालिग्राममाहात्म्यं सेतिहासमाह अथा-
योःप्रवक्ष्यामिकन्ययोर्भक्तिचेष्टितं यदाकर्ण्य
नरोभक्तिंलभतेनात्रसंशयः ॥ १ ॥ एकाग्रामे
तुकन्यासीदपराराजकन्यका उभयोः परमा
प्रीतिर्नृपजासेवनीपरा॥२॥एकदातत्रकोप्या
सीद्वैष्णवोतीवभक्तिमान् तंद्रष्टुंराजमातातु
कन्याभ्यांसहितायया ॥ ३ ॥ तत्रगत्वाथसंपू
ज्यवैष्णवंभक्तितत्परा प्रणम्यचलितागेहंराज्ञी
कन्याद्वयंतथा ॥ ४ ॥

इतिहास पूर्वक शालग्राम माहात्म्यको कहतेहैं अबदोकन्याके भक्तिवाले चरित्रको कहतेहैं जिसको श्रवणकरपुरुषभाक्तिकोलभताहै इसमे संशयनहिंहै १ एकेति इकनगरमे एकराजाकी कन्या एक और किसीकी कन्यादोनेथीयादोनोकी परमप्रीतिहोतीभई २ एकसमयकोइ वैष्णवसाधुवडाभक्तिवाला नगरकेसमीप आवताभया और तिस वैष्णवके दर्शन करणे वास्ते राजकन्याकीमाता अपनीकन्याको और दूसरी कन्याको साथलयकेजातीभई ॥३ तत्रेति तिसवैष्णवकेपासजाकरभक्तिसेवैष्णवकीपूजाकरनमस्कार करकें राणीघरनूं चलती भई ॥ ४ ॥

वैष्णवंतंतुविज्ञायप्रार्थयामासभूरिशः पूजार्थं
देहिमेदेवं गुरोसाधोनमोस्तुते ॥ ५ ॥ इतिश्रु
त्वातयोर्वाक्यंसएववैष्णवोत्तमः शिलाखंडद्व
यंताभ्यांकन्याभ्यांप्रददौहसन् ॥ ६ ॥ श्राह
नामतयोःसाधुश्शिशल्लपिल्लेतिहासतः तेउभे
भक्तितस्तौद्वौशिलाखंडौप्रगृह्यच ॥ ७ ॥ प्रण
म्यतंगुरुंसाधुंसमागत्यानिजालयं पूजयामा
सतुस्तद्वेकन्येभक्तयाशिलाद्वयम् ८ तद्भक्त्या
भगवांस्तत्रसर्वव्यापीनिरंतरं प्रतिजग्राहपू
जांतांताभ्यांनिः कामतः कृताम् ॥ ९ ॥

वैष्णवमिति वैष्णवको जाणकरकन्यादोनोकहतीभयी हेसाधो
हेगुरो हमारेको पूजाके वास्ते नारायणकी शिलादेह॥५॥ इती
ति ऐसावाक्यदोनो कन्याका सुणकर वैष्णव हासकर्के शिला
के दो टुकडे दोनो कन्याको देताभया ॥ ६ ॥ श्राहेति और
एकशिलाका नामशिल्लदूसरीका पिल्लहाससे कहताभया और
दोनोकन्या भक्तिकर्के दोनो शिलाका ग्रहण करतीयां भईयां
॥७॥प्रणम्येति दोनो कन्या साधुको नमस्कार कर्के घर मे
श्रायकरदोनोंशिलाका भक्तिसे पूजन कर्तीयां भईश्रां ॥ ८ ॥
तदिति तिनांकीभक्तिसे परमेश्वर तिनां शिलाकी निष्कामतासे
कीतीहोइं पजाको नित्य ग्रहण कर्ताभया ॥ ९ ॥

अत्रेतिहासमुभयोःप्रत्येकंकथयाम्यहं ग्रामा
धीशस्यकन्यायाराजपुत्र्यास्तथैवच ॥ १० ॥
ग्रामाधीशस्यदायादश्शत्रुभूतस्तुचैकदा बले
नमहतायुक्तस्समागत्यापतद्गृहे ॥११॥ सर्वं
लुंठितवांस्तत्रकन्यायाअपिसाशिला मंजू
षायांस्थितायत्रसापितेनैवलुंठिता ॥ १२ ॥
ग्रामाधीशादयःसर्वेधनशोकेनदुःखिताः रा
जद्वारं ययुस्तस्मैनिवेदयितुमातुराः ॥ १३ ॥
साकन्यागृहमध्येतुतामदृष्ट्वानिजां शिलाम्
शोकार्त्ताप्रययौतस्मैनिवेदयितुमातुरा॥१४॥

अत्रेति इसमें कथाप्रसंग दोनोकन्याका भिन्नभिन्नराजकन्याका और ग्रामाधिशकी कन्याका कहताहां ॥ १० ॥ ग्रामेति एक समय ग्रामाधिशका घर वैरकर्के दायाद अर्थात् दूसरे ग्रामका स्वामी बल कर्के युक्त आनकर्के लूट लेजाता भया और उसी लूटमै कन्याकी ओह पिटारी जिसमै पूजावाली शिलाथी सो भी लूटके लेजाता भया ॥ १२ ॥ ग्रामेति धनदे शोक कर्के दुःखीहोया ग्रामाधिश और तिसके सभ संवंधी राजद्वारमै जाकर पुकार कर्ते भये ॥ १३ ॥ सेति और सोकन्या घरनै पूजा वाली शिलाको न देखकर शोकार्त क्या दुःखीहो कर कहनेको चलतीभई ॥ १४ ॥

पित्रामात्राबंधुवर्गैर्बोधितापिदृढव्रता नस्वीच
कारपानीयमपिचान्यस्यकाकथा ॥१५॥ तत
स्तुबांधवाःसर्वेतामूचुःकन्यकांपुनः गच्छतस्य
गृहंत्वंतुतामानयनिजांशिलाम् ॥१६॥ नोचेद
न्योनास्तियत्नःकश्चित्तवशिलांप्रति इतिश्रु
त्वावचस्तेषांसाकन्याऽतीवहर्षिता ॥ १७ ॥
शूद्रींकांचित्समादाययया॑दायादमंदिरं दाया
दश्चापितांद्वारिन्यवारयतयत्नतः ॥ १८ ॥
किमर्थमागताचात्रवदमागच्छमंदिरं इतिश्रु
त्वावचस्तस्यदायादस्यापिनिष्ठुरम् ॥ १९ ॥

पित्रेति और पिता माता और संबंधियां करके समझाई होई कन्या नतों कहा मानतीभई न पानी पीवतीभई न किसी की वातांसुनतीभई ॥ १५ ॥ ततइति तद सब संबंधी एकत्र होकर तिस कन्याको कहनेलगे हेकन्ये तूंदायदकेघरमैजा अप णे देवको लयआ ॥ १६ ॥ नो इति हेकन्ये न जावें उसके घरमै तद और उपाय कोई नहिहै इह वाक्य सुणाकर संबंधी योंका सोकन्या परम आनंदहोए एक और टहलणनू साथल यके दायादके घरमै जातीभई दायादभी तिस कन्याको देख कर द्वारते हटादेता भया ॥ १८ ॥ किमिति और कहणे लगा हेकन्ये किस वास्ते तूं आईहैं कहो मतजा घरमे इह वाक्य दायादका सुणकर कहणे लगी ॥ १९ ॥

उवाचववचनंकन्यादेवंमेनीतवानसि तंदेहि
मेतदर्थंतेद्वारेहंसमुपागता ॥ २० ॥ इतिश्रु
त्वावचस्तस्यादायादःपुनरब्रवीत् मिथ्यापा
षंडमेतत्तेगच्छमूढेस्वकंगृहम् ॥ २१ ॥ नोचेद्दे
वोस्तिसत्यस्तेतंसमाव्हयतेंतिकं आगमिष्य
तितंनीत्वागमिष्यसिनिजमंदिरम् ॥२२ ॥ इ
तिश्रुत्वावचस्तस्यकन्यानाहारतःकृशा रुरो
दार्त्तस्वरैरेवव्याजहारपुनःपुनः ॥ २३ ॥

उवाचेति हेदायाद नारायण मेरे लय आयांहैं सो परमेश्वरकी मूर्तिदेह इसवास्ते तेरेदरवाजे पर आईहां ॥ २० ॥ इतीति अयसे कन्याके वाक्यको सुणकर दायाद तिसकों कहताभया हे मूढे तूं मिथ्या पाषंड कर्ती हैं मत पाषंड कर घर को जाह ॥ २१ ॥ नोइति हेकन्ये जेकर तेरा नारायणसत्यहै पाषंड नहि तद तूं नारायणकों वुला तेरे वुलायांआजावेगा तवलेकर अपणेघरमैचलीजावेंगी ॥ २२ ॥ इतीति कन्या अयसे दायादके वाक्यको सुणकर वहुतदीनहो रोदनकर्तीवुलातीभई ॥ २३ ॥

तदैसभगवांस्तत्रमंजूषायांस्थितःप्रभुः तांमं
जूषांसमुत्पत्यकन्यायेसमुपागतः ॥ २४॥ तां
दृष्ट्वानिजमंजूषांसामुमोदहढव्रता गृहीत्वाच
लितागेहमथतत्रागमत्पुरम् ॥ २५॥ दायादः
प्रत्युवाचाथाकिमत्रास्तीतिदर्शय तदाकर्ण्य
तुसाशीघ्रंदर्शयामासतांशिलाम् ॥२६ ॥ दृष्ट्
वाशिलांतुदायादोनिवृत्तः स्वगृहंगतः साक
न्यापिशिलांनीत्वासमायातापितुर्गृहम् ॥२७
संपूज्यशिल्लपिल्लंतुनिवेद्यान्नंततःस्वयं उपो
षिताहिसाकन्याबुभुजेप्रीतमानसा ॥ २८ ॥

ततइति और तिसकन्याके बुलानेपीछे नारायण पटारीकेसाथ
हिं अकस्मात्कन्याके पास आजातेभये ॥ २४ ॥ तामिति
तब कन्या अपनीपटारीको देखकर परमआनंद होतीभई कै
सीहै कन्या सत्यह प्रतिज्ञा जिसकी और लयकर पटारी अप
नेघरको चलनेलगी २५ तब दायादकहणे लगा हे कन्ये इसमें
क्या वस्तुहै सो दिखला इसवाक्कोसुणकर सो कन्याजलदी
तिस शिलाको दिखलातीभई ॥ २६ ॥ दृष्ट्वेति दायादशि
लाको देखकर अपनेघरको गया तब सो कन्या शिलाको लय
करापिताके घरको आवती भई ॥ २७ ॥ समिति आनकरघर
शिल्लपिल्लकी पूजाकर नैवेद्य लगाय प्रसन्न मन होकर सोकन्या
उपवास व्रतको धारण करती भई ॥ २८ ॥

एवंप्रभावासाकन्यावक्ष्येराजसुताकथां राज
कन्यापितांयत्नाच्छिलांपूजयतीरहः ॥ २९ ॥
तस्थौपितृगृहेकालेविवाहसमयेपिता कार
यामासनृपतेःपुत्रेणपरमादरात् ॥ ३० ॥ वि
वाहानंतरंपत्नींसमादायगृहंययौ निन्येतत्रा
पिसाकन्याशिलापिंडनवैजहौ ॥ ३१ ॥ मंजू
षायांतुसंस्थाप्यधृत्वास्वाशिविकोपरि आग
तापतिगेहेपिराजपुत्र्यातिभक्तितः ॥ ३२ ॥

एवमिति सो ग्रामस्वामीकी कन्या ऐसे प्रताप वाली भयी अब राज कन्याकी कथा कहताहुं राजकन्या भी तिस शिलाकी एकांतमें पूजाकर्तीभई ॥ २९ ॥ तस्थाविति सो राजकन्यापि ताके घरमें रहतीथी और विवाहके योग्य जद राजकन्याहोई तदराजा उसकन्याका विवाहकिसी राजपुत्रके साथ करदेता भया ॥ ३० ॥ विवाहानंतरमिति सो राजाका पुत्र विवाह पीच्छे स्त्रीको साथ लयकर घरको आता भया उस समय राज कन्या नारायणकी मूर्ति साथ लयआवती भई उस मूर्ति को न त्यागतीभई ॥ ३१ ॥ मंजूषायामिति राजकन्या भक्ति करकें पिटारीवीचपाककें शिलाको पालकीमें साथ लयककें पतिके घर आवती भई ॥ ३२ ॥

शिल्लपिल्लेतिनाम्नावैपूजयंतीसदाहरिं ॥३३॥
एवंगतेषुकालेषुकदाचिद्दैवयोगतः पूजयंतीं
शिलापिंडंपतिरेनांददर्शह ॥ ३४ ॥ पप्रच्छ
किमिदंकांतेकरोषिकथयस्वनः श्रुत्वैतत्प्राहतं
स्मित्वादेवपूजांकरोम्यहम् ॥३५॥ अनेनैवतु
सर्वेषामैहिकामुष्मिकंसुखं इतिश्रुत्वावचस्त
स्याश्चुकोपसनृपात्मजः ॥ ३६ ॥ अज्ञातपू
जानामासौद्वितीयइवनास्तिकः पादेनपूजा
सामग्रींचिक्षेपसाशिलांतदा ॥ ३७॥

शिल्लपिल्लेति शिल्लपिल्ल नामलय कर्के सदानारायणका पूजन कर्तीभयी इसी तरां वहुत काल व्यतीत होगया दैवयोगते इक दिन राज कन्याके पूजनको पतिदेखताभया ॥ ३४ ॥ पप्रच्छेति देखकर पूजाकर्ती स्त्रीको पूछने लगा हेकांते क्याहै एह क्याकर्तीहैं तूंहमारेको कहो इहवातपतिकी सुनकर राजकन्या कहणे लगीहस कर्के हेनाथपरमेश्वरकीपूजा करतीहां ३५ ॥ अनेनेति हे देव इसपरमेश्वरदी कृपासे इस लोकका और परलोकका सव सुख है इहवात सुणकर्के राजपुत्र क्रोधकोकर्ता भया ३६ अज्ञातेति सो राजपुत्र पूजाका माहात्मजानतानही सो नास्तिक सरीषासी क्रोधकरके पादके साथ सभपूजाकी सामग्रीको और नारायणकी मूर्तिको दूरफैंकदेताभया ॥ ३७ ॥

ततःसराजतनयाहाहाकृत्वारुरोदह ततोऽध
कतरःक्रुद्धोराजपुत्रोतिमंदधीः ॥३८॥ स्वयमु
त्थायतांसर्वां सामग्रींसाशिलांतदा गृहद्वारिस
रिन्मध्येजलेचिक्षेपकोपतः ३९ ॥साहृष्ट्वातुज
लागाधे क्षिप्तंदेवंनृपात्मजा उद्बंधनादिनामर्त्तु
मुपचक्रेदृढव्रता ॥ ४० ॥ ततोनिवारयामासु
र्बांधवामरणोन्मुखीं तांराजकन्यांचप्रोचुर्दा
स्यामस्तेशिलांतुताम् ॥ ४१ ॥

ततइति और उसीसमय राजकन्या हाहा करकें रोदनकर्तीभई
और महामूर्ख राजाका पुत्र वहुतक्रोध कर्ताभया ॥ ३८ ॥
स्वयमिति राजपुत्र सभ सामग्रीको एकत्रकर्के और मूर्ति नारा
यणकी साथलयके घरके नजीक अगाध जलवाली नदीके वी
चफैंक देताभया ॥३९॥ सेति सोराजकन्या दृढ व्रतवाली रा
जपुत्रकर्कें अगाधजलमै पडीहोई मूर्तिको देखकर फाहलयके
मरणेका प्रारंभ कर्तीभई ॥ ४० ॥ ततइति मरणलगी राजक
न्याका हठ सभसंबंधी देखकर मरणेते हटाते भये और कहणे
लगें हे राजकन्ये तेरे को ओहि शिला असी देवेंगे ॥ ४१ ॥

ततोनिवृत्तामरणात् याचमानास्वकांशिलां अ
गाधेपतितांतांतु ज्ञात्वासर्वेपराङ्मुखाः ॥४२॥
यत्रतत्रगताःसर्वेसाकन्यैकारुरोदह एवंदिनद्व
यंजातंतस्याअन्नादिकंविना ॥४३॥ मरणेकृत
संकल्पाशिलाखंडंविनासती तृतीयेदिवसेप्रा
प्ते पतिस्तस्यास्समागतः ॥ ४४ ॥ निष्कास्य
खड्गंमूढात्मात्रासयामासनि ुरम् किमिदंखि
द्यसेमूढे प्रपद्यनकरिष्यसि ॥ ४५ ॥ यदुक्तंप
श्यमेखड्गंहन्मित्वांनात्रसंशयः इतिभर्तृवचःश्रु
त्वासाप्रहस्याब्रवीद्वचः ॥ ४६ ॥

तत्रइति अयसे संबंधीयांका वाक्य सुनकर सो कन्या मरणेतें हट जातीभई और मांगणेलगी मेरीशिलादेओ तव संबंधी अगाध जलमैं पडी होई मूर्तिको देखकर सभ संबंधी इधर उधर चलेगये ४२ सोकन्या एकली रोदन करने लगी दोदिन पर्यंत निराहार कर्ती भई ॥४३॥ मरणइति सो राजकन्या मूर्तिथीं विना मरणमैं कीताहै निश्चय जिसने इसातरां तीनादिनमैं पति उसका आवताभया ॥ ४४ ॥ निष्कास्येति और खड्ग काढ कर्कें त्रासदेताभया कहने लगा हे मूढे क्यों दुःखपाती हैं मेरा वचन न करेंगी ४५ यदिति हे मूढे देख मेरे खड्गको मैं तेरेको मारांगा असे भर्ताका वाक्य सुन कर्कें और हस कर्कें कहणे लगी ॥ ४६ ॥

अहोस्माकंतुकर्त्तव्यंयत्तदार्थ्यंकृतंत्वयामर्त्तव्य
मेवतंदेवंविनानास्त्यत्रसंशयः ॥ ४७ ॥ तद्ब
वद्भिर्विनायत्नंममसंपादितंस्वयं इतिश्रुत्वावच
स्तस्याःपत्न्यास्तद्राजपुत्रकः॥ ४८ ॥ चिंत
यमासमनसाकिंकरोमिततःपरं मरणेकृतसं
कल्पाशिलाखंडंविनाकुधीः ॥ ४९ ॥ कथमे
वशिलाप्राप्तिर्भविष्यतिकरोमिकिं इतिनिश्चि
त्यतांस्नेहात्पुनराहनृपात्मजः ॥ ५० ॥

अहोइति हेस्वामिन् हमारेकोजो आपने विचाराहसा करणा
चाहिएमेरेको नारायण विनामरणाहीहै॥४७॥तादितिसो विनाय
त्नसेतयनेसभकरणाचाहिए अयसे राजकन्याकावाक्य सुनकर्के
सो राजपुत्र विचारणेलगा इसतेपरे क्याकरां इसने मूर्तितें विना
मरण निश्चय कीताहै ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ कथमिति कयसे शिला
मिले और मैंक्याकरां अयसे विचारके मनमै कहने लगा ५०

रते
शिलागाधेजलेक्षिप्ताकथंप्राप्स्यसितांशुभे ग्र
हाणान्यांशिलांमत्तःप्रसादंकुरुमत्कृते॥५१॥इ
तिभर्तृवचःश्रुत्वासाराजतनयाब्रवीत् निर्भया
गतशोकाविमरणेकृतनिश्चया ॥ ५२ ॥ स्वा
मिन्प्रसीदमेद्यत्वंयद्ब्रवीमिकुरुष्वतत् स्वयंघा
तयमांत्ववानयतत्रजलाशये॥५३॥निमज्ज्या
हंकरिष्यामिप्राणत्यागंशिलांविना कथंचि
दपितेगेहेनावस्थानंममाधुना ॥ ५४ ॥

शिलेति शिला अगाधजलकेवीचहै सो कैसेंप्राप्तहोवे मैं तेरेको और शिला ल्यादेताहां तूं मेरे वास्ते प्रसन्नहो और पूजाकर५१ इतीति सो राजकन्या भयसे अपने पतिका वाक्यसुनकर निर्भयहोईहोई कहनेलगीकैसीहै मरणमेंकीताहै निश्चय जिसने५२ स्वामिन्निति हे स्वामिन् अब प्रसन्न हो मेरे पर जो मैं कहती हां सो करो चाहे तो आपमारो और नहिते उसजलाशय पर मेरेको लयचलो ॥ ५३ ॥ निमज्ज्येति मैं उस जलके वी चडूबकर मर जावांगी मैं तो शिलाबिना कदेभी न जीवांगी और तेरे घर कदेभी स्थित न रहांगी ॥ ५४ ॥

श्रुत्वैतद्वचनंसोपितामुवाचव्रजाधुना नाहंत्वा घातयिष्यामिकुरुतत्रयथारुचि ५५ ततःसारा जकन्यावैजनैःकतिपयैर्वृता स्नानव्याजेनवव्रा जनदीतीरेंतिगोपिता ॥ ५६॥ वाहनान्निर्गता सद्योजगामागाधवारिणि स्मरंतीतंनिजेदेहे शिल्लपिल्लहरिंमुदा ॥ ५७ ॥ अथांतरेतुभगवा नूज्ञात्वातस्याद्दढांमतिं मंजूषांशिल्लपिल्लस्य पादलग्नांचकारह ॥ ५८ ॥

श्रुत्वात राजकन्याके वाक्यकों सुनकर सो राजाका पुत्र कहने लगा कि अवहि तूं घलमैं तेरेकों मारता नहि जो तरीमरजीहै सोंकर ५५ तत इति इतनी बात भर्ताकी सुनकर सो राजक न्या कितनेक आदमी साथ लयके स्नान करणे वहाना कर्के नदीकें कनारे पर जाती भई ५६ वाहनादिति सो राजकन्या पालकीते निकल कर्के अपने मनमैं शिल्लपिल्ल नारायणका स्म रण करती होई ५७ अथेति इसतें पीछे भगवान् नारायण ति स राजकन्याकी दृढ बुद्धि जान कर्के शिला वाली पटारी उस राजकन्याके पादकों लगाते भये ५८

ततःपादेतुसंलग्नेकिमिदंकिमिदंत्विति गृही
त्वापाणिनातोयान्निष्कास्यैक्षतसुव्रता ५९दद
र्शतांतुमंजूषांजहर्षसाश्रुलोचना संस्थाप्यशि
विकायांतांमंजूषांसापुनर्द्रुतं ६० स्नात्वाहर्षा
श्रुनयनासमायातास्वमंदिरं मर्त्तुंवारिप्रविष्टा
हंतदामेमिलितोहरिः ६१ पश्यनाथकृतार्था
स्मिशिल्लपिल्लप्रसादतः स्वयंसोपिदुराचारा
न्निवृत्तोहरिकीर्त्तने ॥ ६२ ॥

ततइति जद राजकन्याका पाद पटारीकोंलगा उसी समय रा
ज कन्या क्याहै क्याहै ऐसे कहती कहती हाथके साथ जल
के मध्यतें निकालके देखती भई ॥ ५९ ॥ ददर्शेति देखकर
मंजूषाको वहुत प्रसन्न होकर्के पालकीके वीच शीघ्रहि रक्षकर
तिस पटारीको ॥ ६० ॥ स्नात्वेति स्नान कर्के आपने घर
को आवती भई और कहिनेंलगी मरणे वास्ते मैं जलमें गई
मेरेको नारायण मिले ६१ पश्येति और कहणे लगी हेस्वामि
न् देख अब मैं शिल्लपिल्ल जीदी कृपासे कृतार्थहां इतनी कथा
सुनकर राजपुत्रभी दुष्कर्म्मते हटजाताभया और नारायणका
कीर्त्तन करताभया ॥ ६२ ॥

कृत्वामतिंराजपुत्रःपुत्रपौत्रैर्मुमोदह एवंतद्भ
क्तिसंसर्गाद्राष्ट्रेभक्तियुताभवन् विष्णुभक्तिप्र
भावेणजग्मुस्तेभुवनंहरेः ६३ ममस्याद्यथात
थाचित्तमेकाग्रंचेद्धरौभवेत् सनशोचेतकुत्रापि
सत्यमेतन्नसंशयः ॥ ६४ ॥ इति शा० प्रशंसा
अथहरिमंदिरगमनमहिमवर्णनं श्रीमद्भाग
वते पादौनृणांतौद्रुमजन्मभाजौक्षेत्राणिनानु
व्रजतोहरेर्यौ ॥ १ ॥

इसप्रकार राजाका पुत्र हरिके पूजन करनें मैं दृढ निश्चय वा
ली बुद्धि करकें पूजाके प्रभाव सें पुत्र पौत्रादियोंके सहित रा
ज्यके सुख भोगता भया इस प्रकार तिस राजकन्याकी भक्ति
के संसर्गसें उसके राज्य भर मैं हरिकी भक्तियुक्त लोक होतें
भये सो सारेहि विष्णु भक्तिके प्रभाव करकें हरिविष्णुके भुवनमे
क्या वैकुंठ लोकमैं चले जाते भये॥ ६३ ॥ और राजकुमार
कथन करताहै जिस प्रकार मेरा चित्त एकाग्र हरिमैं लगाहै इसी
प्रकार और किसीका भी लगें तद सो भी किसी स्थानमे भी
शोक न करेगा इसमैं कुछ संशय नहिहै ॥ ६४ ॥

अब हरिके मंदिरमैं जानेकी महिमा कहतेहैं और श्रीमद्भागव
तमैं कहाहै [illegible] वृक्ष योनिके भागीहैं जो हरिके
मंदिरमें नाहिंजातेहैं १

पाद्मे यावत्पादान्द्विजश्रेष्ठगच्छेयुर्हरिमंदिरं तावद्वर्षसहस्राणिमोदंतेविष्णुसन्निधौ ॥ २ ॥ पद्मपुराणेसृष्टिखंडे हरिमंदिरमालक्ष्ययावद्गच्छेच्छनैः शनैः पदेपदेश्वमेधस्यफलमाप्नोतिमानवः ॥ ३ ॥ भविष्यत्पुराणे विष्णोः प्रसादंयः गच्छेत्सकृत्कृत्वातुपूजनं अश्वमेधफलंप्राप्यचांतेहरिपुरंव्रजेदिति ४॥ वाराहे नानुव्रजतियोमोहाद्दुर्गेहरिमहोत्सवे ज्ञानाग्निदग्धक्लेशोऽपि वसतेनरकेशुचौ ॥ ५ ॥

एहवाक्यपद्मपुराणमैं कहाहै हे द्विजश्रेष्ठपुरुषजो हैं सो जितने पादहरिके मंदिरमैं जातेहैं उतनेहिहजारवर्ष विष्णुके समीपक्या वैकुंठमैं सुखभोगकों प्राप्तहोतेहैं ॥ २ ॥ पद्मपुराणके सृष्टिखंडमैं औरभी कहाहै क्या हरिके मंदिरकों देखकर जितनापादधरे२ जाताहै उसकों उहांजाने मैं पाद २ रखनेमैं एक २ अश्वमेधका फल प्राप्तहोताहै ॥ ३ ॥ भविष्यत्पुराणमैं कहाहै कि विष्णुके मंदिर मैं जो जाकर एकवार पूजन कर्ताहै सो अश्वमेध यज्ञ करने के फलकों प्राप्तहोकर अंतमैं हरि विष्णुके पुरमेंक्या वैकुंठमैं जाताहै ॥४॥ वाराहपुराणमैं कहाहै हेदुर्गे जो पुरुष मोह क्या अज्ञानसैं हरिके महोत्सव क्या मेलेमैं नहि जाताहै सो ज्ञानरूपी अग्निकरकैं दग्धहोगयेहैं क्लेश जिसके ऐसा भीहै तदभी शोकरूपी नरकमैं चिरकाल निवास कर्ताहै ५ ॥

वैश्वानरक्रियाधिकारे उत्सवेवासुदेवस्यना
यातिस्पर्शशंकया स्वर्गस्थाःपितरस्तस्यपतं
ति नरकेक्षणात् ॥ ६ स्कांदे ॥ दर्शनेमाधव
स्यापिभस्मीभवतिपातकं आजन्मसंचिता
त्पापान्मोचयिष्यतितान्मुने पदेपदेश्वमेध
स्यफलमाप्नोतिनिश्चितम् ॥७॥ बृहन्नारदीये।
तौपादौसफलौपुंसांविष्णवायतनगामिनौ ॥८

वैश्वानर क्रियाधिकारमें कहाहै वासुदेव भगवान्जीके उत्सव
क्या मेलेमे स्पर्शशंका क्योंकि जो इतरजातिसेंछोहनेसें होतीहै
इसवास्तेजो नाहिजातेहैं तिनके स्वर्गमैं स्थितजो पितर सोक्षण
मैं नरकमैं पडतेहैं ॥ ६ ॥ स्कंदपुराणमें और कहाहै माधवल
क्ष्मीके स्वामी भगवान्जीके दर्शनमे पापभस्म होजातेहैं और
हेमुने पुरुष नारायण दर्शन से जन्मसें लेकर इकठे करे होए
पापोंको दूर कर देताहै और तहांजानेमैं पुरुषएक २ पैरमैं अ
श्वमेधके फलको प्राप्तहोताहै॥७॥ बृहन्नारदीय पुराणमे कहाहै
पुरुषोंके सोई पैरसफलहैं जोनसें बिष्णुके मंदिरमें जानेवालेहैं ८

भक्तमालायां अथापरंप्रवक्ष्यामिभक्तेर्माहा
त्म्यमुत्तमं परमाश्चर्यजनकंहरिभक्तिप्रदाय
कम् ॥ १ ॥ द्वारकायास्तुपूर्वस्यांजाकोरइति
विश्रुतः महाग्रामोस्तितत्रासीद्ब्राह्मणोभक्ति
संयुतः ॥ २ ॥ रामदासइतिख्यातःकुटुंवीहरि
पूजकः प्रतिमासंद्विजःसोथगत्वाद्वारावतींमु
दा ॥३॥ उपोष्यैकादशींतत्रकृत्वाजागरणंनि
शि समायर्यौनिजंगेहमितितस्यदृढंव्रतम् ४॥

भक्तिमाला नामक ग्रंथमैं हरिके मंदिरमैं जानेकी महिमा का
प्रभाववर्णनमैं रामदास नामक ब्राह्मणका इतिहास कहाहै सो
इहां लिखतेहैं॥अव और उत्तम भक्तिका माहात्म्य कथन क
तां हुं कैसाहै परम आश्चर्यक्या विस्मय कों करने वाला और
हरिकी भक्ति देनेवाला ॥ १ ॥ द्वारिका पुरिसें पूर्वदिशामैं जा
कोर नाम कर्के प्रसिद्धवडा एक ग्रामहै तिसग्राममैं भक्तिकर्के
संयुक्त ब्राह्मण निवास कर्ताथा ॥ २ ॥ रामदास तिसका
नाम वडे कुटुंव वाला नारायणकी पूजा करणे मे तत्पर सो
ब्राह्मण महीने २ प्रति वडे हर्ष कर्के द्वारकामैं आकर ॥ ३
तहां एकादशीके दिन निराहार व्रतकर्के रात्रिमे जागरण
कर्के दूसरे दिन फिर अपने घरकों चला आवता भया एह
तिसका दृढअच्छीतरांसें व्रतथा क्या प्रतिज्ञा थी ॥ ४ ॥

गेहेपिसाधुसेवायांनिरतःसर्वदाद्विजः भिक्ष
यान्नानिचादायसाधुभ्यःप्रददौमुदा ५ एवं
गतेषुकालेषुरामदासोजरांगतः तथापिद्वार
कायात्रांरणछोरहरेःपुरः ६ उपवासंजागरंच
चक्रेकृच्छ्रेणसद्विजः एवंगतागतंकर्त्तुमशक्तो
ब्राह्मणोत्तमः ७ नचतस्थौद्वारकायांकुटुंवभ
रणायसः जाकोरग्राममागत्यचक्रेपुत्रादि
पालनम् ८

और अपने घरमै भी सर्वदा काल साधुयोंकी सेवाम तत्पर र
हताथा और भिक्षा मांगकर अन्न दिल्याके वडेहर्षकर युक्तसा
धुयोंको भोजन करवाताथा ५ इसप्रकार वहुत कालके व्यती
त होते २ रामदास अवस्था करके वृद्धहोगया क्याशिथिलहो
गया तबभी द्वारकाकीयात्रा नहित्यागताभया ६ और रणछोर
भगवान्जीके आगे जाकर वडे क्लेशकर सो रामदास ब्राह्मण
एकादशीका निराहार व्रत और रात्रिमे जागरणकर्ताभया प
रंतु इस प्रकार आउना जाना करनेमै असमर्थ होगया ७ त
दभीसो ब्राह्मणोत्तमदूसरे दिन द्वारकामैं नहि स्थित होताभया
क्योकि कुटुंवके पालन वास्ते चला आवता भया और जा
कोर ग्राम अपनेमैं आकर पुत्रादियोंका पालन कर्त्ता भया ८

अथैकस्मिन्दिनेविप्रोरामदासोजरातुरः एका
दश्यांगतस्तत्ररणछोरसमीपतः ९ पथाश्रमा
ज्जरादोषादतिम्लानोवभूवसःतथाप्युपोषितो
रामदासः कृत्वाथजागरम् १०द्वादश्यांपारणं
कृत्वानगंतुंशक्तिमानभूत् ततस्तत्रैवसुष्वापर
णछोरस्यसन्निधौ ११ अथस्वप्नेरामदासंर
णछोरउवाचतम् अहोमांनयतत्रैवयत्रत्वंवस
सिद्विज ॥ १२ ॥

इससैं उपरंत एकदिन बृद्धावस्थाकर्के आतुर रामदास ब्राह्मण
एकादशीकौं तहांरणछोर भगवान्जीके समीप चलातोगया ९
परंतु मार्गके खेदसैं बृद्धावस्थाके दोषसैं वडा मलीन क्याखेद
युक्त होगयातदभी उपवासकर्के रात्रिमैं जागरणकर्त्ता भया१०
दूसरे दिन रामदास व्रतकौं पारण कर्के फिर परत कर अपनैं
घरमैं आवनेकौं समर्थ नाहि होताभया तद तहांहि रणछोरजी
केपास मंदिरमैं कहीं सोयरहा ॥ ११ ॥ अब इस रामदास
कौं स्वप्नमैं रणछोरजी कहनेलगे हेद्विज जिसग्राममैं तूं निवा
स कर्ताहैं उसी ग्राममैं मेरेकौंभी लेचल क्योंकि तेरेक्लेश कर्के
मेरेकौं भीक्लेश होताहै ॥ १२ ॥

आनीयशकटंतत्रमामारोप्यमहानिशि इतः
प्रयाहिमद्भक्त्यागमिष्यामिनसंशयः ॥१३॥
इतिदृष्ट्वाथस्वप्नंसःप्रातरुत्थायहर्षितः द्विजो
थगृहमागत्यनीत्वाशकटमुत्तमम् ॥ १४ ॥ ए
कादश्यांरामदासोद्वारकायांसमागमत् सतु
रात्रौस्थितस्तत्रव्रतीजागरणंचरन् ॥ १५ ॥
द्वादश्यांपारणंकृत्वानिशायामर्धरात्रिके उत्ता
र्यालंकृतान्सर्वान्संस्थाप्यतान्मठेपुनः ॥ १६

उहांसें गड्डा ल्याके मेरे कों अंधेरी वडीरातमैं उसमैं स्थाप न कर इहांसे लेचल तेरी भक्ति प्रीति कर्के मैं इहांसें चलूंगा इसमैं संशयनाहिहै ॥ १३ ॥ इसप्रकार रात्रिमें स्वप्न देखकर प्रातःकाल उठकर हर्ष सें सोब्राह्मण घरमेंआयकर फिर दूसरीवार एकादशीकों गया तः गड्डेकों साथ लेकर जाय प्राप्त हुया ॥ १४ ॥ एकादशीकों रामदास द्वारिका मैं प्राप्त और उपवास जागरण करताभया ॥ १५ ॥ दूसरेदिन द्वादशीकों पारणकर्के तहांहि निवास कर्ता भया तो रात्रिके अर्ध व्यतीत हो गए होए रामदास मंदरमे जाकर भगवान्जीके सारे वस्त्रभूषण उतार कर तिनकों तहांमें रख कर मूर्त्तिकों वाहर ल्याया १६

रणछोरंसमुत्थाप्यसंस्थाप्यशकटोपरि निर्जगामद्वारिकायाभयादतिजवेनसः ॥ १७ ॥ अथप्रभातेद्वादश्यांरणछोरस्यपूजकाः अदृष्ट्वारणछोरंतुचिंतांजग्मुर्दुरत्ययाम् ॥१८॥ केननीतोयमस्माकंरणछोरःप्रतापवान् इतिसंचिन्त्यतेसर्वेतत्रत्यान्ददृशुर्जनान् ॥ १९ ॥ कोनास्तिवारामदासमदृष्ट्वातेथपूजकाः शकटंचाप्यदृष्ट्वातैःसर्वैरेतद्विनिश्चितम् २० ॥

रणछोरजीकी मूर्तिकों उठायकर गड्डेके ऊपर स्थापन करकें भयसें द्वारकासें शीघ्र वडे वेगकर नि ल आवताभया ॥१७॥ इस वृत्तांतसें उपरंत क्या रातवीत जानेसें उपरंत प्रभात समय रणछोरजीके पुजारी मंदिरमे रणछोरजीकी मूर्तिकों न देखकर वडी दुरत्यय चिंताकों प्राप्त होतेभये ॥ १८ ॥ क्या कहतेहैं किसने हमारे प्रतापवाले रणछोरजी चुराएहैं ऐसाकोनहैं क्या करें कहांदेखें किसकों पूछें उनके विनाहम क्या करें ग ऐसें चिंतन कर उस नगरीमें घर २ ढूंडने लगे ॥ १९ ॥ एककोई पुजारी उहां रामदासकों और तिसके गड्डेकों नहिं देखकर कहनें लगा भाईयों और इहां के लोकसारे इहां हि हैं एक रामदास इहां नहि है सोई लेगया होगा ॥ २० ॥

अनेनैवतुनीतोसौ निशायांनात्रसंशयः अतएव
रथंनीत्वापूर्वेद्युरिहच गतः२१ अर्द्धरात्रेरामदा
सोजगामशकटेनवै इतितत्रत्यमनुजैरुक्तास्ते
पूजकास्तदा २२ उत्थायदद्रुवुःसर्वेरामदासं
प्रतिद्विजाःरामदासःसमायातोयदास्वग्रामस
न्निधौ२३तदातेपूजकास्तत्रददृशुस्तंद्विजोत्तमं
रामदासोपितान्सर्वान्ददर्शातित्वरान्वितान् २४
विज्ञायमूर्त्तिमुत्थाप्यवाप्यांचिक्षेपभीतिमान्
स्वयमागत्यशकटेरामदासःस्थितोभवत् २५

२ह वातसभनोंने निश्चयकरी कि रातके समय इसीने नेतेहैं इ समैं कुछ संशय नहिहै क्योंकि इसी वास्ते पिचले दिन रथ ल्याके इहांआयाथा ॥ २१ ॥ आधीरातके समय इहांसे राम दास रथपरचढके गया एहबात उहांके रहने वाले लोकोंने पुजारी लोंकोको कथनकरी॥२२॥तदाहि इतनी बातके सुनते उसीसमय शीघ्रउठतेहि रामदासके पीछे सारेहि ब्राह्मण दौडे पररामदास इतनेमैं जद अपने ग्रामकेसमीप चला आया२३ तदसो द्वारका वासि पुजारी तिसद्विजोत्तमको देखतेभये और रामदासभी तिनकों दौडकर अपने पीछेलगेहोऊंकों देखता भया ॥ २४ ॥ तदउसने मनमैंविचारा कि मेरेपीछे लगे आव तेहैं अब मेरेकोंपकडकर नजाने क्या दुर्दशा करेंगे इतनी वा तके भयकों जानकर मूर्तिकों उठायकर वाउलीमै सुटदेताभया और आप शकटने आकर बेठताभया ॥ २५

अथतेपूजकास्तत्रसमायातास्त्वरान्विताः द
दृशुः शकटंतत्रनापश्यन्प्रतिमांशुभां ॥ २६ ॥
तन्मध्येकोप्युवाचाथवापीतीरेगतोह्ययं कोवे
दतत्रनिक्षिप्यपुनरागतवानसौ ॥ २७ ॥
इत्युक्तातत्रतेसर्वेवापीतीरमुपागताः पश्यंतो
जलमध्येतांददृशुःप्रतिमांहरेः ॥२८॥ उत्थाप
यितुमारेभेसर्वेतेपूजकास्तदा नोत्तस्थौप्रति
मातत्रसर्वेचिंतासमाकुलाः ॥ २९ ॥ ग्रामाद
न्यान्वलिष्ठान्वैयथाशतसहस्रशः प्रार्थ्यानी
यचतैश्चापिनोत्थिताप्रतिमाजलात् ॥ ३० ॥

इससेंउपरंत तहां पुजारी दौडते २ शीघ्रचले आये तो शकट कों देखने लगे उसमें प्रतिमा नहि उनोंने देखी तद कहने लगेप्रतिमा इहांभी नहिहै ॥ २६ ॥ उनके वीचमेसें एक कोइं पुजारीहि वोला इहांसें उठके वाउलीके किनारेगयाथा नजाने उसके वीच न सुटयाआया होवे फिर इहां वैठगया होवे ॥ २७ ॥ ऐसा कह कर्के सारेइि वाउलीके किनारे पर चलेगए तो क्या देखतेहैं कि जलके मध्यमे प्रतिमा पडीहै २८ ॥ तद सारेहि पुजारी उसकों जलसें उठानेका प्रारंभ कर्त्तेभयेपर ओह प्रतिमा नहि उठती भई तद उनकेमन मैं चिंताभई क्याकरें ऐसे व्याकुल होये तो ग्रामसें हजारों वडे वडे वलवानोंकों प्रार्थनाकर्के उहां ल्याए वडे यत्नसें निकालने लगे तद भी प्रतिमा उहांसें नहि उठी ॥ ३० ॥

ततःसर्वेनिवृत्तास्तेज्ञात्वाहरिविचेष्टितं राम
दासेनचैकेनप्रतिमेयंसमुत्थिता ॥ ३१ ॥ सैवा
स्माभिस्तुबलिभिःसहस्रैरपिनोत्थिता अतो
नैवहरेरिच्छागंतुमिच्छास्तिनिश्चितं ३२तथा
चात्रैववत्स्यामोवयंचैवनसंशयःइतिनिश्चित्य
तेसर्वेतस्थुस्त्यक्ताशनोदकाः ॥ ३३ ॥ निशा
यांरणछोरस्तुतानुवाचवचोहितं अहोनाहमि
तोयामिरामदासस्यभक्तितः ॥ ३४ ॥

जद प्रतिमा बाउलीके वीचसें नहि निकली तद सारेहि पीछे हट गये क्योंकि हरिकी इच्छाहि ऐसीहै देखो बूढे रामदास ने इकले उठायिके ल्याई ओर इसमें पाई॥३१॥ ओहिमूर्त्तिह मारे वडे २ वलवानों हजारोंसें नहि उठी इससें जानों निश्च य कर्के हरिकी इच्छानहिहै ॥ ३२ ॥ अच्छा एह मूर्त्ति उहां नहि जातीहै तद हमभीइहांहि निवास करेंहैं इसमें संशय न हिहै ऐसानिश्चय कर्के सारेहि ओह अन्नपाणी का त्याग कर उहांहि वैठगए ॥ ३३ ॥ तदरातकेसमय रणछोर भगवान् स्व प्नमें तिनकों हितप्यारका वचन कहते भये क्या कि हे द्विजाः रामदासकी भक्ति कर्के वशीभूत मैंहां सो अव इहांमेंसें नहि कदींभी जावोंगा ॥ ३४ ॥

यूयंयातद्वारकायांस्वर्णंनीत्वातुमत्समं तत्रान्य
मूर्त्तिंकृत्वामेस्थापयध्वमहंपुनः ॥ ३५ ॥ तत्रा
पिभवतांभक्त्यातिष्ठाम्येवनसंशयः तानुक्त्वैवं
ततोरामदासंस्वप्नेऽवदत्प्रभुः ॥ ३६ ॥ मत्तुल्यं
कनकंप्रातर्दत्त्वातेभ्योतिभक्तितः पूजकेभ्योथ
तान्भक्त्याविसृज्यमांपुनर्गृहे ॥ ३७ ॥ संस्था
प्यार्च्चयतिष्ठामित्वद्गृहेनात्रसंशयः इत्युक्त्वारा
मदासायस्वप्नंतस्यास्त्रियंपुनः ॥ ३८ ॥ स्वप्ने
प्रोवाचभगवान्भक्तानुग्रहकारकः कर्णालंकर
णंयत्तरक्तिकात्रयमस्तिते ॥ ३९ ॥

और तुमलोक सारेहि मेरी इस मूर्त्तिके तुल्य सोना इससें ले कर द्वारकामैं चले जाओ तहां जाके उस स्वर्णकी और मेरी मूर्ति वनवाकर फिर स्थापनकरो ॥ ३५ ॥ तहांमैंभी तिसमूर्ति मैं तुमारी भक्ति कर्के स्थित होआंगा इसमैं संशय नहिहै तिनकों ऐसे कथन कर्के फिर रामदासकों स्वप्नमैं जाकर प्रभुजी कहते भये ॥ ३६ ॥ हेद्विज मेरी मूर्तीके वरावर तोलके स्वर्ण उनकों देकर वडी भाक्तिसें फिर तिनकों प्रीति कर्के विदाकर पीछेमेरेकों अपने घरमैं ल्याकर ॥ ३७ ॥ स्थापन कर्के पूजा करया कर मैं तेरेघरमैं स्थित हो आंगा इसमैं संशय नहिहै इसप्रकार रामदासकों स्वप्नमे कथन कर फिर तिसकी स्त्री कों ॥ ३८ ॥ स्वप्न मैं जाकर भक्तोंके ऊपरदया करने वाले भगवान् रणछोंरजी कहते भये कि जो तेरे कानमैं तीन रत्ति स्वर्ण का स्वर्ण भूषण पडाहै ॥ ३९ ॥

तदर्पयतुलायांतुतत्समोपिभवाम्यहम् इतिह
ष्ट्वाथतेस्वप्नमुत्तस्थुः प्रातरेवहि ॥ ४१ ॥ पू
जकारामदासस्यगृहद्वारिसमागताः देहिनःप्र
तिमातुल्यंस्वर्णंयामोगृहेवयम् ॥४२॥ इतिते
षांवचः श्रुत्वारामदासोतिविस्मितः उवाचस
त्यमेतद्वैममाप्याहजनार्दनः ॥ ४३ ॥ परंतु
कनकंतद्वद्वर्त्ततेकुत्रमेद्विजाःतथापिपत्नींपृष्ट्वा
हंसमागच्छामितिष्ठथ ॥ ४४॥

सो भूषण तुलाके पात्रमैं रखदेना उसके हिवराबर होजावोंगा। इस प्रकार सो पुजारी स्वप्न देखकर प्रातःकाल उठखडे होते भये ॥ ४१ ॥ सो पुजारी रामदासके घरके द्वारपर प्रभातसमयही आय प्राप्तभये और तिसकों कहने लगे प्रतिमाके तुल्यहमारे कों स्वर्ण देदे हम अपने २ घरोंकों चलेजावेंगे॥ ४२ ॥ एह तिनका वाक्य श्रवण कर्के रामदास बडे विस्मयकों प्राप्त होकर तिनकों कहने लगा एह बात सत्यहै क्योंकि मेरेकों भी भगवान् जनार्दनजी स्वप्नमैं कहगएहैं ॥ ४३ ॥ परंतु इतना स्वर्णमेरे निर्धनके घरकहांसें होनाहै हेंद्विजाः तदभी अपनी पत्नीसें पूछकर आताहुं तुमइतना चिर इहां बैठो ॥ ४४ ॥

इत्युक्तातानुगतः पत्नीसमीपंप्राहसारुवयं अ
होकिमर्थंखिन्नोसिभगवान्भक्तवत्सलः ४५
मामुवाचाथसस्वप्नेयत्कर्णेऽस्तिहिरण्यकम् तेनै
वतुलितोभद्रेभविष्यामिनसंशयः ४६ ॥ इत्यु
क्ताकर्णदेशात्साकनकंप्रददौसती हर्षयंतीरा
मदासंवचनैर्भक्तिसंयुतैः ॥ ४७॥ अहोयोसंम
नुष्यैस्तुसहस्रैरपिनोत्थितः कथंसतुत्वयैकेन
स्थापितः शकटेहरिः ॥ ४८ ॥

ऐसें तिनकों कथनकर पत्नीके पास चलागया परखेदयुक्तमन
वाले तिसकों देख कर पत्नी बोली हे स्वामिन् आपक्यों
खेद युक्त मनवाले होएहो क्योंकि भगवान्जीको भक्तहीप्यारे
हैं ॥ ४५ ॥ मेरेकों स्वप्नमें आज ऐसे कहकें गये हैं कि जो
तेरें कानमें तीन रत्तिका स्वर्ण भूषणहैं तिस करकें तोलया हुया
बराबर होजावोंगा हेभद्रे इसबातमें मतकुछ संशय जान ४६
ऐसे स्वामिको कथन करकें सोसती अपने कर्णस्थानसें स्वर्ण
काभूषण उतार कर देदेती भई और भक्तिके युक्त वाक्यों करकें
रामदासकों हर्षप्राप्त कर्ती हुई क्या निश्चय करावतीहोई ४७
हेस्वामिन् आप इस बातका फिकर मतकरोकि स्वर्णथोडाहै
मूर्त्ति बडीहै देखो प्रत्यक्षकी बात जो भगवान् बडे बलवान्
हजारों मनुष्यो सें नहि उठाये गए सोई तेनें इकल्ले केंसे उठा
कर गड्डमें स्थापन करे तुम कोई उनों हजारों सें बलवान्
थे क्या ॥ ४८ ॥

कथंचात्रजलेन्यस्तस्तत्सर्वैहृदिचिंत
त्वाग्रसंदेहंतुलितःस्यादनेनसः ॥ ४९ ॥
तितस्यावचः श्रुत्वागृहीत्वाकनकंतुतत तुला
मादायमहतींरणछोरंसमानयत् ॥ ५० ॥ श्रु
त्वैतत्सर्ववृत्तांतमागताग्रामवासिनः तेषामग्रे
तुलायांतु रामदासोतिभक्तितः ॥ ५१ ॥ रण
छोरंस्थापयित्वाददौतत्कनकंस्वयम् ततः प्र
जहसुः सर्वेदृष्ट्वातत्कनकंजनाः ॥ ५२ ॥

और कैसे तैने इकल्लेने उठायकर जल में स्थापनकरे एह सा
रिपा बाता हृदयमें चितनकर मतइस्वातमें संदेहकरा कि
तने स्वर्ण सें बराबर नहि तुलेंगे जाने कि इसके बराबरहो
जावेंगे ॥ ४९ ॥ ऐसा दृढ निश्चयकरयुक्त तिसका वचन सु
नके तिस स्वर्ण कों लेकर और बडी जो एक तुला है
तिसकों लेके रणछोरजीकी मूर्तिकों ल्यावता भया ॥ ५० ॥
तद इसप्रकारके वृत्तांतकों श्रवणकर उसग्रामके निवास करने
वाले भी सारेहि चले आए तो तिनके आगे रामदास बडी
भक्ति करके रणछोरजी की मूर्तिकों तिसके एकपासे स्थापन
करता भया ॥ ५१ ॥ और दूसरे पासे ओह स्वर्णभी पाय देता
भया तद सारेहि लोक तिसकों हासी करते भए देखो मूर्खने
इतनी बडी मूर्तिके पीछे कितनाक स्वर्ण पायाहै ५२

पूजकास्तेसमूचुस्तंकिमिदंकुरुषेद्विज एताव
तांकथंमूर्त्तिर्नरैर्नतुलिताभवत् ॥ ५३ ॥ इति
तेषांवचःश्रुत्वारामदासोत्रवीद्वचः तोलयंतु
भवंतोत्रमाकुरुध्वंत्रसंशयम् ॥ ५४ गुरुताल
घुताचेतिसर्वंकृष्णस्यलीलया सहस्रैर्नोत्थि
तायेसौपश्यतैकेनमयोत्थितः ॥ ५५ ॥ इति
श्रुत्वावचस्तस्यरामदासस्यपूजकाः सत्यं
मत्वाथतन्मध्यादेकउत्थायचागतः ॥ ५६ ॥

पुजारी तिसकों कहनेलगे हेद्विज एहक्या कर्ताहैं इतनी बडी
मूर्तिहै जो हजारों पुरुषों करके नहिउठाई गई सो इतने थोडे
जणों सें किसतरां पूरी होवेगी ॥ ५३ ॥ तद तिनका एह
बचन सुनके रामदास वाक्य कहता भया तुम इसकों तोलकर
देखो इसमे कुछसंशय नहिहै बराबर करलेवो ॥ ५४ ॥ और
गुरुता और लघुता हौले भारे होना सारे कृष्णकी लीला करके
होतेहैं क्योंकि हजारों करके जो नहि उठायेगये सो मैने इकले
उठाये एहबात प्रत्यक्ष देखो ॥ ५५ ॥ एह तिसरामदासका
बचन सुनके सारेही पुजारियोंभी सत्य मान कर तिनके
बीचसें एकठाकुरदास तुलाके उठानेकों चला आया ॥५६॥

तुलामुत्थापयामासतेनैवतुलितःप्रभुः त...ःस
वैमहाश्चर्यंमेनिरेभक्तिसंयुतम् ५७ अथते
षांपूजकानांमध्येचैकोतिमूर्खवत् हरिंनेतुंमनः
कृत्वातमुत्थापयितुंगतः ५८ वहुप्रयासंकृत
वान्नोत्तस्थौसमहाप्रभुः ततःसर्वेहसंतस्तंवार
यामासुरातुरम् ५९ अथतेब्राह्मणास्तावद्गृही
त्वाकनकंमुदा भोजितारामदासेनजग्मुर्द्वाराव
तींपुरीम् ६०

और उसतुलाकों उठावताभया जिसमैं महाप्रभुरखेथे और ति
सीनें अछीतरां तोलेतो वरावर स्वर्णके हुये तदसारे लोकवडा
आश्चर्य मानते भये उसकों भक्तियुक्तमानते भये ५७ इससैं उप
रंत पूजारियोंके वीचसें एककोई वडे मूर्खोंकी न्याईं हरिकों
लेजानेकों मनकर्के क्याकि स्वर्णनहिलेतेहैं मूर्तिकोंही लेचल
तेहैं ऐसी इच्छा कर्के तिसकों उठानेकों चलाआया ५८ और
तिसमूर्तिके उठानेकों वडायत्न कर्ता भया क्या अपना सारा
हिजोर लगावताभया तदभी सोमहाप्रभुनहि उठतेभये तोसारे
लोकतिसकों हसते होए हटालेतेभये कि अववसकर तैनेवहुत
जोर लगायाहै५९इससैं उपरंत सो ब्राह्मण उतने मात्र स्वर्णकों
हर्षयुक्तग्रहण कर्के रामदासके घर भोजनखाय कर द्वारकाकों
चलेजातेभये ६०

रामदासोपितांमूर्त्तिंरणछोरस्यभक्तितःस्थाप
यामासभवनेसिषेवेतामहर्निशम् ६१ संपूज्य
रणछोरंतुयावज्जीवंकृतार्थधीः मृतोवैकुंठभवनं
ययौकृष्णमनुस्मरन् ६२ अद्यापिसहरिस्त
त्रजाकोरग्राममध्यतः तिष्ठत्येवजनान्भक्तान्कृ
तार्थीकर्त्तुमात्मनः ६३ धन्योयंरामदासस्तुध
न्यातद्भक्तिरुत्तमा यदर्थंद्वारकांत्यक्त्वारणछोरः
समागतः६४ इतिहरिमंदिरगमनमाहात्म्यम्

इससें उपरंत क्यागयेहोए पीछे रामदास तिस रणछोरजीकी मूर्तिकों भक्तिसें अपने घरस्थापनकर दिनरात तिसकी सेवाकर्ताभया ६१ जितनाकाल जीवितारहा उतनाकाल रणछोरजी की पूजाकर कृतार्थ बुद्धि वाला मृत्युकों प्राप्तहोकर कृष्णजीका स्मरण कर्ताहुआ वैकुंठकों चलागया॥६२॥सोहरिकी मूर्ति अब तकभी जाकोरग्रामके वीच मैं स्थितहै अपने भक्तजनोंकों कृतार्थ करणे वास्ते ॥ ६३ ॥ तिसकी महिमाकों देखकर सारे लोक कहने लगे धन्य है रामदास धन्यहै तिसकी भक्ति जिस के वशीभूत हुएहुए अपनी प्यारी द्वारिका पुरीकों त्याग कर जाकोर ग्रामके मध्य ब्राह्मणकेघर श्रीकृष्णजी चले आए ६४ इति हरिमंदिरगमनमाहात्म्यम्

अथहरिदर्शनमहिमानिरूपणं श्रीमद्भागवते वर्हायितेतेनयनेनराणां लिंगानिविष्णोर्ननिरीक्षतोये इति ॥ १ ॥ स्कांदे ॥ येपश्यंतिचदेवेशंसुपर्णोपरिसंस्थितं किंकरिष्यंतितेतीर्थैर्देवानांचैवदर्शनैः ॥ २ ॥ किंयज्ञैःकिंव्रतैर्वापिकिंदानैः किमुपोषणैः मूर्तिंनारायणीयत्रपश्यंति गरुडोपरि ॥ ३ ॥

अवहरि विष्णु भगवान् जीके नित्य दर्शन करने की महिमा लिखते हैं श्रीमद्भागवतमें कहाहै पुरुषोंके सो नेत्र मयूरके चंद्रकयोंकी न्याई हैं जौनसे नित्य विष्णुकीयां मूर्तियोंकों नहि देखतेहैं ॥ १ ॥ स्कंदपुराण में ऐसे कहाहै कि जौनसे पुरुष नित्यं प्रति गरुडके ऊपरचढे होए विष्णुभगवानूजी कों देखतेहैं सो पुरुष तीर्थों में स्नानों करकें वा क्या करेंगे और देवतयोंके दर्शनोंकरकें क्याकरेंगे ॥ २ ॥ और यज्ञों करकें क्याकरेंगे और व्रत दान उपवास इनों करकें क्या करेंगे जो गरुडके ऊपर बिराजमान नारायणकीमूर्तिकों देखतेहैं तिनकों पूर्वोक्त कर्मों करकें क्या है ॥ ३ ॥

पाद्मेभृगुवचनं ॥ सकर्त्ता सर्वधर्माणांभक्त्यायःप
श्यतिकेशवं सकर्त्तासर्वपापानांयोनपश्यतिके
शवमिति ॥४॥ स्कांदे भक्तिर्भागवतेनित्यंकिं
करोषिनराधिप शालग्रामशिलाबिंबंकिंनप
श्यस्यहर्निशं तेचनेत्रमहाभाग्येपश्यतोयेज
नार्दनम् ॥५॥ पाद्मेपातालखंडे । प्रातःकालेतु
वैकृष्णंभक्त्यापश्यंतिमानवाः नतेषांपुनरा
वृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि ॥ ६ ॥

पद्मपुराणमे भृगुजीने ऐसे कहाहै जोपुरुष नित्य केशवजीका दर्शनकरताहै सोई संपूर्ण धर्मोंकेकरने वालाहै और जोनहिंनारायणजीकादर्शन करताहै सोई सारेपापोंके करणे वालाहै ॥४॥ अबस्कंदपुराणका और वाक्य कहतेहैं हेनराधिप नित्यप्रतिभागवतमे भक्ति क्यों करताहै क्योंकि तूं शालिग्रामकी शिलाका बिंब दिनरात्रि मे क्यों नहि देखताहै वडे भाग्यवान् नेत्र ओईहैं जोनमें नित्यप्रति जनार्दनभगवान्‌जीका दर्शन करतेहैं ॥ ५ ॥ पद्मपुराणके पाताल खंडमें कहेहैं क्या जौनसे मनुष्य भक्तिकरके प्रातःकालकेसमय श्रीकृष्णको देखतेहैं तिनको पुनरावृत्तिक्यासे कि वैकुंठमेंगएहोए सैकडेकोडांकल्पपर्यंत होवें तदभी उहांसे नहि पडतेहैं ॥ ६ ॥

अथदंडवत्प्रणाममाहात्म्यं पद्मपुराणे क्रिया
योगसारे प्रणमेद्दंडवद्भूमौसप्तधायस्तुकेशवं
पातकंतच्छरीरस्थंभस्मीभवतितत्क्षणात् १॥
शिरस्यंजलिमाधायप्रणमेद्योजनार्दनं तस्मै
लक्ष्मीपतिर्विष्णुर्ददातिपरमंपदम् ॥२॥ भूमौ
निपात्यसर्वांगंहरिंप्रणमतांनृणां पुण्यप्रभावं
विप्रर्षेवदतोमेनिशामय ॥ ३ ॥ यावद्धूरेणुभि
र्न्दृणांभूषितंस्यात्कलेवरं तावत्कल्पसहस्राणि
तिष्ठतिहरिसन्निधौ ॥ ४ ॥

अब विष्णुके आगे दंडवत् प्रणामकरणेका माहात्म्य लिखतेहैं पद्मपुराणके क्रिया योगसार मैं ॥ जो पुरुष दंडवत् भूमि मैं पडके सातप्रकारसें केशवजीकों नमस्कारकर्ताहै तिसकेशरीर मैंस्थित जो पापहैं सोतत्क्षणभस्म होजातेहैं ॥ १ ॥ जो पुरुष शिरमैं अंजलिबांधके जनार्दनजीकों प्रणामकर्ताहै तिसकेतांई लक्ष्मीकेपति विष्णुपरम पददेतेहैं ॥२॥भूमिमैं निपतनकर्के क्या लंबेपायकेसारे अंग जो हरिकों प्रणामकर्ताहै तिसके पुण्यका प्रभाव हे विप्रर्षे कथनकर्तेहोए मेरेसें श्रवणकर ॥ ३ ॥ सोक्या फलहै किपृथीवीमैं दंडकीन्याई प्रणाम करनेकेलिये लंबेपढेहो एजितनेधूलिकी रेणुयांकर्के पुरुषोंके अंग भूषितहोवैं क्याधूलि केसाथ युक्तहोवैं उतनेहि हजारांकल्प हरिकेसमीप विष्णुलोक मैंस्थित रहतेहैं ॥ ४ ॥

पुरतोवासुदेवस्यदंडवत्पतितोभुवि पततिपा
तकास्सर्वेनोत्तिष्ठंतिपुनास्त्विह ॥ ५ ॥ निपत्य
दंडवद्भूमौ नमस्कारणयोर्चयेत् सयांगति
मवाप्नोतिनतांक्रतुशतैरपि ॥ ६ ॥ स्कांदे। शा
लिग्रामेनमस्कारोव्याजेनापिहयैः कृतः मद्भ
क्ता अपितेनैवमांनमस्यंतुमानवाः ॥ ७ ॥ नम
स्करोतिमनुजः शालग्रामशिलार्चने पापानि
विलयंयांतितमः सूर्योदयेयथा ॥ ८ ॥

वासुदेवभगवान् जीकेआगे प्रणामकरनेके वास्ते पृथिवीमें दंड
की न्याईं जद कोई पुरुषपड़े तदतिसक पापउसके साथपडते
हैं परंतु उठतो वाःपाप नाहिउठतेहैं ओह उहांहीलीन होजातेहैं
॥५॥ दंडकी न्याईंपृथिवीमे भगवान् जीके आगे पडकर्के नम
स्कारके साथजो पूजन कर्तेहैंसो जिसगातिकों प्राप्त होतेहैं तिस
गातको सैकडे यज्ञां कर्के भी नहि प्राप्तहोतेहैं ॥ ६ ॥ स्कंदपुरा
णमें लिखाहै॥ शालिग्रामको शिलामे जिनोने वहाने कर्के
भी नमस्कारकरीहै सोभी मेरेभक्तहैं इस वास्ते मानव ... कों
अछी तरह्नमस्कार करें ॥ ७ ॥ जोमनुष्य शालग्राम शिलाके
पूजनमें नमस्कारकर्ताहै तिसके पाप लीनहोजातेहैं जैसें अंध
कार सूर्यके उदय हुए हुए लीन होजाताहै ॥ ८ ॥

सालिग्रामेनमस्कारेभावेनापिनरैःकृतः भयं
नैवकरिष्यंतिमद्भक्तास्तेनसंशयः ॥ ९ ॥ सा
लिग्रामेनमस्कारः शोकेनापिकृतोयदि मान
वाःकिंकरिष्यंतिमद्भक्तास्तेनघाभुवि ॥ १०
मद्भक्ताश्चैवधर्मिष्ठामांप्रभुंननमंतिये वासुदेवं
नतेज्ञेयामद्भक्ताःपापिनोहिते ॥ ११ ॥ स्कांदे
सालिग्रामेनमस्कारंयेकुर्वंतिदिनेदिने तेयांति
परमंस्थानंयत्रदेवोजनार्दनः ॥ १२ ॥

शालिग्राममै भावनासे विनाभी जिनपुरुषोने नमस्कारकराहै सो भयनहिकरेंगे क्योंकि सो मेरे भक्त हैं इसमें संशय नहिहैं ९॥शालग्राममै नमस्कार जिनोंने शोककर्केभीकराहै सोमानव पृथ्वीमे क्या करेंगे अर्थात् वो कृतार्थ हैं ओर निष्पाप हैं ओर मेरे भक्तहैं ॥ १०॥ और वडे धर्मी मेरे भक्तहोके मेरे प्रभु वासुदेवजीको जो नहिनमस्कारकर्तेहैं सोमेरेभक्तनहि जानने ओहपापीहैं ११ स्कंदपुराणमेलिखाहै जो पुरुषप्रतिदिन शाल ग्राममैं नमस्कार कर्तेहैं सो जहांजनार्दनभगवान् निवासकर्तेहैं उस स्थानमैं जातेहैं ॥ १२ ॥

पाद्मे देवदूतविकुंडलसंवादे कृत्वापिवहुशः पापंनरोमोहसमन्वितः नयातिनरकंनत्वास वेपापहरंहरिं १३ स्कांदे प्रणामपूर्वंदृष्ट्वादौ स्नापितंपूजितंहरिम् यज्ञकोटिसमंपुण्यंगवां कोटिफलंलभेत् ॥ १४ ॥ नमस्कुर्वंतिमनुजाः शालग्रामशिलाग्रतः पापानिप्रशमंयांतित मःसूर्योदयेयथा ॥ १५ ॥ वासुदेवनमस्तेस्तु जगन्नाथनमोस्तुते नारायणनमस्तेस्तुयःक रोतिसमानवः ॥ १६ ॥

पद्म पुराणमें देवदूतविकुंडलके संवादकर्के कहाहै जो पुरुष अज्ञानकरयुक्त वहुततरोंके पापकर्केभी हरिकोंनमस्कार करेतों नरकोंमेंनाहिजाताहै १३ स्कंदपुराणमैंकहाहै जों पुरुष स्नानपूज नकरे होए हरिकों पहले प्रणाम कर्के पीछे दर्शन कर्ताहै उसको कोडयज्ञोंकेसमान फल और कोड गोदानकेसम पुण्यफल प्रा प्तहोंताहै ॥ १४ ॥ जोनसे मनुष्य शालिग्रामशिलाकेआगे नमः स्कारां कर्तेहैं तिनके पाप ऐसे नष्ट होजाते हैं जैसे सूर्यके उद यहोए अंधकार दूर होजाताहै ॥ १५ ॥ जोपुरुष ऐसे कहताहै क्या हे वासुदेव हे जगन्नाथ हे नारायण तेरे कों नमस्कारहोवे सोई मनुष्यहै ॥ १६ ॥

प्रायश्चित्तसहस्राणिब्रह्महत्याशतानिच कथं नश्यंतिपापानिश्रीविष्णोःशरणंविना १७ ॥ बाहुभ्यांसहजानुभ्यांशिरसामनसाधियापंचात्मकःप्रणामः स्यात्प्रजासुप्रवराविभो १८ पाद्मे तुलसींप्रणमेद्यस्तुनरोभक्तिसमन्वितः आयुर्बलंयशोवित्तंसंततिस्तस्यवर्धते १९ बृहन्नारदीये अर्चितंशंकरंदृष्ट्वाविष्णुंवाप्रणमेत्तुयःस विष्णुभवनंप्राप्यवसेदब्दशतंनृप २० नृसिंहपुराणे नमस्कारःकृतायैस्तुभक्त्या वैमाधवस्य च धर्मार्थकाममोक्षाख्यंफलंतैःप्राप्तमंजसा २१

प्रायश्चित्तोंके सहस्र हजारां और ब्रह्महत्यादि सैकडे पाप सोविष्णुभगवान्‌जीकी शरणसें विना कैसें नष्टहोतेहैं १७ जानुक्या गोडयोंके सहित वाहुयों कर्के और मन शिरकर्के पंचात्मक प्रणाम विष्णुके आगेहोतीहै इसतरां प्रणाम करने वाले प्रजामें श्रेष्ठहोतेहैं ॥ १८ ॥ पद्मपुराणमें लिखाहै जोमनुष्य भक्तिकर्के युक्त तुलसीकों प्रणामकर्ताहै तिसकी आयु वलधनसंतान एहवृद्धिकों प्राप्तहोतेहैं ॥ १९ ॥ वृहन्नारदीयपुराणमें लिखाहै पूजा करेहोए महादेवजीका दर्शन कर्के और पूजित विष्णुकोंदेखके जोप्रणामकर्ताहै सोअंतमें विष्णुलोकमें प्राप्तहोकर सौवर्षनिवास करेगा २० ॥ नृसिंहपुराणमें कहाहै जिनोंने भक्ति कर्के माधवक्या लक्ष्मीके स्वामीविष्णुजीकों नमस्कार करीहै तिनकों धर्म और काम मोक्ष एहचार पदार्थ फल प्राप्तहोतेहैं ॥ २१ ॥

एकोऽपिकृष्णस्यकृतः प्रणामोदशाश्वमेधावभृथेनतुल्यः दशाश्वमेधीपुनरेतिजन्मकृष्णप्रणामीनपुनर्भवाय ॥ २२ ॥

अथप्रदक्षिणामाहात्म्यं पद्मपुराणेक्रियायोगसारे जनार्दनहृषीकेशशरणागतवत्सल त्वद्दासदासदासानांदासत्वंदेहिमेप्रभो ॥ १ ॥ मंत्रेणानेनयः कुर्यान्नारायणप्रदक्षिणां तस्य पुण्यफलंवच्मिसंक्षेपाच्छृणुजैमिने ॥ २ ॥ ब्रह्महत्यादिपापानियानियानिमहान्त्यपि तानि तानिप्रणश्यंति प्रदक्षिणायाः पदेपदे ॥ ३ ॥

एकभी दंडवत्प्रणाम श्रीकृष्णजीकोंकरीहोई दशाश्वमेधमें स्नानके तुल्यहै परंतु इतनी श्रेष्टता इसमें फिर अधिकहै क्या दशाश्वमेधमें स्नानकरणे वाला फिर जन्मकों प्राप्तहोताहै कृष्णजीकों प्रणाम करणे वाला मोक्षकों प्राप्त होजाताहै ॥ २२ ॥ एह प्रदक्षिणाका माहात्म्य पद्म पुराणके क्रिया याग सारमें लिखाहै॥ हेजनार्दन हेहृषीकेश हेशरणागतोंकेप्यारे हेप्रभो तुमारे दासोंके जो दासउनके जो दासहैं भक्त उनकी जो दासभावता सो मेरे कों देवो ॥ १ ॥ इसमंत्रकरकेजो नारायणकी प्रदक्षिणा करेगा हेजैमिने तिसके पुण्यका फल संक्षेपसें कहताहुं तूं श्रवण कर ॥ २ ॥ ब्रह्महत्यादिक जोनसें वडे २ पापहैं सो २ पाप विष्णुकी प्रदक्षिणाके एक२पादमें विनष्टहोतेहैं॥३॥

यावत्पादंद्विजश्रेष्ठगच्छेद्विष्णुंप्रदक्षिणं ताव
त्कल्पसहस्राणिमोदतेविष्णुनासह ॥ ४ ॥
हरिंप्रदक्षिणेप्राज्ञोयावद्गच्छेच्छनैःशनैः पदे
पदेऽश्वमेधस्य फलंप्राप्नोतिमानवः ॥ ५ ॥ प्र
दक्षिणीकृत्यसर्वसंसारेयत्फलंलभेत् हरिंप्रद
क्षिणीकृत्यतस्मात्कोटिगुणंफलम् ॥ ६ ॥ भ
विष्यत्पुराणे पूजांकृत्वातुकृष्णस्ययःप्रकुर्यात्प्र
दक्षिणाम् सप्तद्वीपवतीपुण्यंलभेततुपदेपदे ७
॥ विष्णोः प्रणामंयः कुर्यात्सकृत्कृत्वाप्रदक्षि
णाम् अश्वमेधसहस्रस्यफलमाप्नोतिमानवः ८

और हे द्विज श्रेष्ठ विष्णुकी प्रदक्षिणा में जितने पाद पुरुष चलतेहैं उतने हजार कल्प विष्णुके साथ आनंद भोगतेहैं ४ हरिनारायणकी प्रदक्षिणामें जो बुद्धिमान् पुरुष जितने पाद धी रे २ चलताहै तिसकों पाद २ में अश्वमेधका फलप्राप्तहोता है ॥ ५ ॥ सारी पृथिवी की प्रदक्षिणा करके संसारमें जो फलप्रा प्तहोताहै तिससें क्रोड गुणां अधिक हरिकी प्रदक्षिणा करके फ लहोताहे ६ भविष्यत्पुराणमें लि० पूजन करके जो श्रीकृष्ण की प्रदक्षिणा कर्ताहे सो सातद्वीप युक्त पृथिवी की प्रदक्षि णाके पुण्यकों पैर २ में लभताहै ॥ ७ ॥ और जो पुरुष वि ष्णुकी एक बार प्रदक्षिणाकरके प्रणामकर्ताहे सो मानव हजार अश्वमेधके फलकों लभताहै ॥ ८ ॥

क्रियायोगसारे प्रदक्षिणाकारतयावारैकंयोत्र
जेश्वरेः जन्मजन्मनिविप्रेंद्रसार्वभौमोभवेद्भुवि
॥ ९ ॥ यस्तुवारद्वयंकुर्याद्विप्रविष्णुंप्रदक्षिणं
ऐंद्रंपदमवाप्नोतित्रिदिवेनात्रसंशयः ॥ १० ॥
विष्णोःप्रदक्षिणांयस्तुकुर्याद्वारत्रयंवुधः विमु
क्तःसकलैःपापैःप्रविशेन्मानवींतनुम् ॥ ११ ॥
पाद्मेमथुरामाहात्म्ये नारदः गुह्याद्गुह्यतरंचा
न्यद्वक्ष्यामितवप्रीतितः सालिग्रामस्यदेवस्य
तुलस्याश्चप्रदक्षिणा ॥ १२ ॥

क्रियायोगसारमे लि॰ जोपुरुष हरिके चारों पासे इकवार प्रद
क्षिणाकीतरां गमन कर्ताहै हेविप्रेंद्र सो जन्म २ में पृथिवी
पर सार्वभौम राजा होताहै ॥ ९ ॥ हेविप्र जो पुरुष दो वार वि
ष्णुकी प्रदक्षिणा कर्ताहै सो स्वर्गमें इंद्रपदवीको प्राप्तहोताहै
इसमें संशय नहि है ॥ १० ॥ और जोवुद्धिमान् विष्णुकीतीन
वारप्रदक्षिणा कर्ताहै सो सारे पापोंसें मुक्तहुआ हुया मनुष्यदेह
मेंप्रवेश कर्ताहै ॥ ११ ॥ पद्मपुराणमें कहाहै मथुरामाहात्म्यमे
नारदजी कहतेहैं हेराजन् तेरीप्रीतिसें अवऔर एकमाहात्म्यगु
ह्यसें गुप्तशालिग्रामकी शिला और तुलसीप्रदक्षिणाकाकहताहुं
॥ १२ ॥

तत्समाभूपतिश्रेष्ठनभूतानभविष्यति सप्तद्वी
पवतीभूमिस्सवनौघाधसागरा ॥ १३॥तस्याः
प्रदक्षिणापुण्यंशालग्रामप्रदक्षिणात् कृताप्रद
क्षिणायेन सालिग्रामस्यशार्ङ्गिणः ॥ १४॥
तेनकृताः पंचक्रोश्याः शतशश्चप्रदक्षिणाः
गोकोटिदानं ग्रहणेप्रयागेवासउत्तमः ॥ १५॥
अश्वमेधायुतंपुण्यंसालिग्रामप्रदक्षिणात् ग
वाचब्राह्मणानांचतथासंन्यासिनामपि देवाल
यानांसर्वेषांसालिग्रामसमामताः ॥ १६ ॥

हेराजयोंमें श्रेष्टतिसके समानमाहात्म्य नपीछेंहुया नआगेहोगा सात द्वीप वन वृक्ष शैल सागर इनकेसहित जो पृथि वी तिसकी सारी प्रदक्षिणा करणेका पुण्यसालिग्रामकी प्रदक्षि णासें होताहै ॥ १३ ॥ जिसने शार्ङ्गी भगवान् शालग्रामकी प्रदक्षिणा कराहे तिसने सैकडेप्रदक्षिणा काशीमे पंचक्रोशी की यांकरीयांहैं ॥ १४ ॥ ग्रहणमें क्रोडगौकादान करणेमें और मा घमहीने प्रयागमें वासकरणमे और शालिग्रामकी प्रदक्षिणासेंद शहजार अश्वमेधका पुण्यहोताहै ॥ १५ ॥ और गोयांको ब्रा ह्मणोंकी और संन्यासियोंकी और देवतांके मंदिरोंका प्रदक्षिणा सालिग्रामकी प्रदक्षिणाके समानहैं ॥ १६ ॥

 ...ननद्दरूपति

शालिग्रामाधिकाचैवनकस्यापि...

३३

मतःपादविन्यासात्सावंतःसर्वतः।

कुलसंभूतालोकेतिष्ठंतिशाश्वते ॥१७

विष्णोर्विमानंयः कुर्यात्सकृद्भक्त्याप्र

अश्वमेधसहस्रस्य फलंप्राप्नोतिमानवः ॥१८॥

प्रदक्षिणंतुयःकुर्यात्कार्त्तिकेविष्णुमंदिरे पदे

पदेश्वमेधस्यफलभागीभवेन्नरः ॥ १९ पाद्मे ॥

प्रदक्षिणंतुयःकुर्यात्कार्त्तिकेविष्णुसद्मनि दिने

दिनेश्वमेधस्यफलमाप्नोतिमानवः ॥ २० ॥

शालिग्राम सें अधिक माहात्म्य वाली और किसीदेवताकी प्रद क्षिणा नहिहै क्योंकि जिसकी प्रदक्षिणामें क्रमसें पादोंका न्या सधराहै क्या चारो और दिशाके जितने कदमचलाहै उतनेकु ल उसके पवित्र हुए हुए सर्वदाकाल वैकुठमें स्थितहोतेहैं १७ स्कंदपुराणमें कहाहे जो पुरुष विष्णुका विमान वनावताहै और एक वार भक्तिकर्के प्रदक्षिणाकर्ताहै सोमनुष्य हजार अश्व मेधयज्ञके फलकों प्राप्तहोताहै ॥ १८ ॥ जो पुरुष कार्त्तिकमही ने विष्णुके मंदिरकी प्रदक्षिणाकर्ताहै सो नर एक २ पैर में अश्वमेधयज्ञके फलका भागी होताहै ॥ १९ ॥ पद्मपुराणमें कहाहै कि कार्त्तिकमहीनेमें जो विष्णुके घरमें प्रदक्षिणा कर्ता है तिसकों दिन २ में अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त होताहै ॥ २०

बृहन्नारदीये ॥ प्रदक्षिणांतुकुर्याद्योविष्णोर्वै मनुजेश्वर सर्वपापविनिर्मुक्तोदेवेंद्रत्वंसमश्नुते २१॥अंगप्रदक्षिणंकुर्याद्योविष्णोःपरमात्मनः एकस्यचाश्वमेधस्यसंपूर्णंफलमश्नुते॥ २२ ॥ पुनस्तत्रैव राजन्प्रदक्षिणैकेनमुच्यतेब्रह्महत्यया द्वितीयेनाधिराजत्वंतृतीयेनेंद्रसंपदं सर्वान्कामानवाप्नोतिमनसायद्यदिच्छति ॥ २४॥

बृहन्नारदीयपुराणमें कहाहै हेमनुजेश्वर जोपुरुष विष्णुकी प्रदक्षिणाकर्ताहै सोसारेपापोंसें निर्मुक्त हुआ हुया देवेंद्रपदवीकों भोगताहै ॥ २१ ॥ हेअंग जोपुरुष विष्णुपरमात्माकी प्रदक्षिणाकर्ताहै सो सारे अश्वमेधयज्ञके फलकों भोगताहै ॥ २२ ॥ फिर उसीग्रंथमें विशेष माहात्म्य कहाहै क्याएक प्रदक्षिणा करके ब्रह्महत्यासें मुक्त होताहै दो करे तद अधिराजभावकों प्राप्त होताहै तीन करने करके इंद्रकी संपदा तुल्य संपदा वाला होताहै और चार करे तद मनकरके चाहि हुईआं संपदां और संपूर्ण कामना तिनकों प्राप्तहोताहै ॥ २४ ॥

वृहन्नारदीये परिक्रमामाहात्म्ये इंद्रवृहस्पति
संवादेचेतिहासंवर्णयामि भक्त्याकुर्वंतियेवि
ष्णोःप्रदक्षिणचतुष्टयं तेपियांतिपरंस्थानंसर्व
लोकोत्तमोत्तमम् ॥ २५ ॥ सूतउवाच अत्रैवना
रदेनोक्तमितिहासंपुरातनम् वदतांशृण्वतांचै
वसर्वपापहरंद्विजाः ॥ २६ ॥ वैवस्वतेंतरपूर्वं
शक्रस्यचवृहस्पतेः संवादःसुमहानासीत्तंव
क्ष्येशृणुताद्विजाः ॥ २७ ॥ एकदासर्वभोगा
ढ्याविवुधैः परिवारितः अप्सरोगणसंकीर्णो
वृहस्पतिमभाषत ॥ २८ ॥

वृहन्नारदीय पुराणमैं परिक्रमाके माहात्म्यमैं इंद्रऔरवृहस्पतिके संवादमे इतिहास वर्णनकर्ताहुं ॥ जोपुरुषभक्तिकरकें विष्णुकीयां च्यारप्रदक्षिणाकर्तेहैं सोसारे लोकोमैं उत्तमलोक जोपरमस्थान वैकुंठ तिसमे जातेहैं॥२५॥सूतजी कथनकर्तेहैं हेद्विजाः इसी मैं नारदजीने प्राचीन इतिहास कथनकर हुयाहै जो कहने और सुनने वालेयोंके सारे पापहरणे वालाहै ॥ २६॥ हेद्विजाःशौन कादिक ऋषियों पूर्वएक समयवैवस्वत मनुके अंतरमेंहि इंद्रका और वृहस्पतिका वडा संवादहोताभया सो कहताहुं तुम सुनो ॥ २७ ॥ एकादिन सर्वभोगों करयुक्त देवतागणों करकें परिवा रया हुया अप्सरोंके समूहोंकर सहित इंद्र वृहस्पति जीकों कहताभया ॥ २८ ॥

इंद्रउवाचवृहस्पतेमहाप्राज्ञसर्वतत्त्वार्थकोविद
अतीतेब्रह्मणःकल्पेसर्गःकीदृग्विधःस्मृतः २९
इंद्रस्तुकीदृशःप्रोक्तोविबुधाः कीदृशाः स्मृताः
तेषांचकीदृशंकर्मयथावद्वक्तुमर्हसि ॥ ३० ॥ वृ
हस्पतिरुवाच अहमद्यतनः शक्रनाहंजाना
मिकिंचन पूर्वद्युःकृतकर्माणिवक्तुंनशक्य
ते ३१ ॥ वर्त्तमानेदिनेचापिविधातुः परमेष्ठिनः
मनवः षड्व्यतीताश्चतद्वक्तुमपिनोक्षमः ३२

इंद्रकहने लगा हे वृहस्पते महाप्राज्ञसारे ततृत्व अर्थोंके जाननवा
ले वीतिगए होए ब्रह्माके कल्पमें कितप्रकारकी सृष्टि कथन क
रीहै ॥ २९ ॥ इंद्रकिततरांकाथा और देवताकैसेथे और तिन
काकैसाक वर्तन था सोसभयथावत्‌मेरेप्रति कहनेके योग्यहो
॥ ३० ॥ इतनावाक्य सुनके वृहस्पति कहते भये हे शक्रमें आ
जका कुछ नहि जानताहुं पिछले दिनके किये होए कर्म कहने
कों समर्थ नहिहुं ॥ ३१ ॥ और परमेष्ठी ब्रह्माके वर्तमान दि
नमैंभीएक इस दिनमैं छे मनु व्यतीत होगएहैं ओहभी कहनें
कों योग्यनहि होसकताहुं पीछेकी खबर किसतरां कहुंगा ३२

सुधर्मइतिविख्यातःकश्चिदास्तेपुरेतव सए
वैतद्विजानातितंपृच्छामोयथातथम् ॥ ३३ इ
तिनिश्चित्यशक्रोपिवृहस्पतिपुरोगमः देवता
गणसंकीर्णः सुधर्मप्राप्तवांस्तदा ॥ ३४ ॥ स
मागतंदेवपतिंवृहस्पतिसमन्वितं यथार्हमर्च
यामाससाधनैर्वहुभिस्तदा ॥ ३५॥ सुधर्मेणा
र्चितःशक्रोदृष्ट्वातच्छ्रियमुत्तमाम् मनसावि
स्मयाविष्टः प्रोवाचविनयान्वितः ॥ ३६ ॥

परंतुएक वार्ताहैकि तेरे इस नगरमें सुधर्मनाम करके ब्राह्मणहै सो इसवातकों जानता होगा उसकोचलके पूछतेहां उोह यथायोग्यकहेगा ॥ ३३ ॥ इसप्रकार निश्चयकर्के इंद्र वृहस्पतिकों सा थलेकर देवतागणोंकेसाथ सुधर्मके घरमेंजाय प्राप्तहोताभया ३४ तदवृहस्पतिके सहित देवतागणों करके परिवारे होएदेवपतिइंद्र को आयेहोएकों देखकर अनेकतरोंके साधनोंकरयथायोग्य सभनोंकी पूजा सत्कार कर्ता भया ॥ ३५ ॥ तद सुधर्मकर्के यथा योग्यसत्कार कराहुया इंद्रतिसकी उत्तमसंपदाको देखकेमनके विस्मयवाला हुआ हुया विनतीके युक्त तिसकोंकहता भया ॥ ३६ ॥

इंद्रउवाच सुधर्मसर्वधर्मज्ञ सर्वसंपत्समन्वित
यशसातेजसाकीर्त्त्या मत्तोप्यधिकतांगतः ३७
दानेनवातपोभिर्वायज्ञैर्वातीर्थसेवनैः साधोके
नप्रकारेणहीदृशींप्राप्तवानश्रियं ३८ इत्युक्तो
देवराजेनसुधर्मःप्रहसंस्तदा प्रोवाचविनया
विष्टः पूर्ववृत्तंयथाविधि ॥ ३९ ॥ सुधर्मउवाच
अहमासंपुराविप्रगृध्रः पापविशेषतः स्थितश्च
भूमिभागेवैह्यमेध्यामिषभोजनः ॥ ४० ॥ एक
दाहंविष्णुगृहेप्राकारोपरिसंस्थितः पतितो
व्याधशस्त्रेणसायंविष्णुगृहाग्रतः ॥ ४१ ॥

इंद्रकहने लगा हेसुधर्म सम्पूर्ण धर्मोंके जाननवाले सारियां सं पदांकरयुक्त यशतेज कीर्ति कर्के मेरेसेभी अधिकताकों प्राप्तहो आ हुयाहैं ॥ ३७ ॥ इसमें मेरेकों कथन कर हेसाधोतूइस प्रकारकी संपदाकों किस प्रकारसें प्राप्त होआहैं क्याकोई दानकराहै वा जपकरेहैं वायज्ञों कर्के अथवा तीर्थोंकी सेवाक र्के जिस कर्के प्राप्त होआहैं सो कथनकरो ३८॥ इसप्रकारपू छाहुया देवराजकर्के सुधर्म हास्यकर्ता २ नम्रताकरयुक्त यथा विधिकर्के अपनापूर्व वृत्तांतकहताभया३९सुधर्म कहने लगा हेदे वराज पूर्वजन्ममे मैं पापविशेषसें गृध्रभया और मरे होए पशुयों का मांस भोजन करनेवालाथा४० एकदिनमैंविष्णुकेघरके प्राका रऊपर क्या कोटपर बैठा हुयाथा तदसा पंकालके समयवंधकी ने शास्त्र कर्के मेरेंकों मारके मंदिरके आगे गिडाय दिया ॥४१

मयिकंठगतप्राणेभक्षकोमांसलोलुपः जग्राह
मांसवक्त्रेणश्वाभिरन्यैरनुद्रुतः ४२ वहन्मांस्वमु
खेनैवभीतोन्यैर्भक्षकैस्तदा गतःप्रदक्षिणाका
रंविष्णोस्तन्मंदिरंप्रभो ४३ तेनैवतुद्दिमाप
न्नोह्यंतरात्माजगन्मयः ममचापिशुनश्चापिद
त्तवान्परमंपदम् ४४ प्रदक्षिणाकारतयागत
स्यापीदृशंफलं संप्राप्तंविबुधश्रेष्ठकिंपुनः स
म्यगर्चनात् ४५

तोउससमय कंठमैं मेरेप्राणआएहोंएथे तो मांसके खानेकालोभी कुत्ता मेरेकों मुख कर्के ग्रहणकरलेताभया तद उसके पीछे और कुत्तेलगे ॥ ४२ ॥ तद मेरेकों मुख कर्के पकडे होएहिऔरनों कुत्तयोंकर्के भयभीतहुआ तिसप्रभु विष्णुकेमंदिरमैं प्रदक्षिणाकरनेकी तरां दौडा ॥ ४३ ॥ उससमयमेरे प्राणनिकलगए और अंतरात्मा जगन्मय विष्णु भगवान् उस कर्के प्रसन्न होए तदमेरेकोंभीऔर उस कुत्तेकोंभी परम पददेते भये ॥ ४४ ॥ देखो मेरेकों प्रदक्षिणा कीतरां प्राप्तहुएहुएकों इसप्रकारका फल होआहै हेइंद्र जेकर कोइ विधिविधान कर युक्त प्रीतिसें पूजन प्रदक्षिणा करे उसकों तोखवरनहि क्या फल होगा ॥ ४५ ॥

सूतउवाच इत्युक्तोदेवराजस्तुसुधर्मेणमहात्म
ना मनसाप्रीतिमापन्नोहारिपूजारतोभवत् ४६
अद्यापिनिर्जराःसर्वेभारतेजन्मलिप्सवः सम
र्चयंतिदेवेशंनारायणमनामयंम् ४७येमानवाः
प्रतिदिनंपरिमुक्तसंगानारायणंगरुडवाहनम
र्चयंति तेसर्वपापानिचयैःपरिमोचिताश्चाविष्णोः
पदंशुभतरंप्रतियांतिहृष्टाः ४८ येमानवाविग
तरागपरापरज्ञानारायणंसुरगुरुंसततंस्मरंति
ध्यानेनतेनहतकिल्विषचेतसस्तेमातुः पयोध
ररसंनपुनः पिबंति ४९

सूतजी कथन करें हे ऋषियो इसप्रकार महात्मासुधर्म के कथन
कराहुया देवराज मन के प्रीति कों प्राप्तहुआ हुया हरिकी पूजामें
रत होताभया ४६ उसादिनसेंलेकर अब तक भी भारत खंडमें सारे
देवता जन्मधारणकीइच्छाकर्ते होए देवतयांके ईश अनामय
नारायणजीको पूजतें हैं ४७ और जौ नरें मनुष्यसंगत्याग कर्के
प्रतिदिन नारायणजीकों पूजतेहैं गरुडके ऊपरचढने वाले कों सो
सारेपापोंके समूहोंसें मुक्त हुए हुए प्रसन्नता पूर्वक शुभतर जो
विष्णलोक तिसमें जातेहैं ४८ और जिनके रागादि दूर होगए
ऐसेमानव परापरकों जानन वाले देवतयोंके गुरु नारायणजी
का सर्वदाकाल स्मरणकर्तेहैं सोतिसध्यान कर्केहतकिल्विष क्या
पापजिनके दूर होगए ऐसेमन वाले फिर ओहमाता केस्तनोंका
दूध पान नहिकर्तेहैं अर्थात् नहि जन्मतेहैं ॥ ४९ ॥

पूजयंतिहरिंयेतेनिष्कामाः शुद्धमानसाः तेषां
विष्णुःप्रसन्नात्मासर्वान्कामान्प्रयच्छति ५०
यस्त्वेतच्छृणुयाद्वापिपठेद्वासुसमाहितः सप्रा
प्नोत्यश्वमेधस्यफलंविबुधसत्तमाः॥ ५१ इत्ये
तद्वः समाख्यातंहरिपूजाफलंद्विजाः संकोचवि
स्तराभ्यांतुकिमन्यत्कथयामिवः॥ ५२ ॥ इति
श्रीबृहन्नारदीयपुराणे इंद्रबृहस्पतिसंवादेप
रिक्रमामाहात्म्यवर्णनम्॥ ❀
स्कांदे कर्तव्यंसततंभक्त्याशालग्रामशिलार्च
नं देवर्षेकिंबहूक्तेनशृणुमेनिश्चितंवचः॥ १

और शुद्ध मनवाले जौनसे निष्काम हरिका पूजन करतेहैं ति
नोंकों प्रसन्न मनवाले विष्णु भगवान् संपूर्ण कामना देतेहैं
॥ ५० ॥ और जो पुरुष इस प्रदक्षिणाके माहात्म्यको कथाकों
सावधानमन वाले पढते सुनतेहै हे विबुधसत्तमाः सो अश्वमे
ध यज्ञके फलकों प्राप्त होतेहैं ॥ ५१ ॥ एह इतना मात्र तुमा
रेकों हरिकी पूजाका फल कथन कराहै अब और सं
कोच विस्तार करकें क्या कथन करां सो कहो ॥ ५२ ॥ एह
बृहन्नारदीयपुराणमे इंद्रबृहस्पति के संवाद करकें विष्णुकी
परिक्रमादा माहात्म्य वर्णन होचुकाहै
स्कंदपुराणमें शालग्रामकापूजन लिखआहै कर्तव्यमिति पुरुष
ने निरंतर भक्तिकरकें सालग्रामकी शिलाका पूजनकरणाचाहिये
हेनारद मुजकेवचनकोंतूंश्रवणकरबहुतकथनकरणे करकें क्याहै १

शालग्रामशिलासम्यक् पूजनीयासदाद्विजैः शालग्रामशिलांचापिचक्रांकितशिलांतथा २॥ ब्राह्मणःपूजयेन्नित्यंश्रद्धाभक्तिसमन्वितःअक रणेप्रत्यवायः शालग्रामशिलापूजांविनायो श्नातिमानवः सचंडालादिविष्ठायामाकल्पंजा यतेकृमिरिति ॥३॥ हेमाद्रौदेवलःशालग्रामं हरेश्चिह्नंप्रत्यहंपूजयेन्नरइति तदकरणे गौत मः यदिविप्रः समुत्सृज्यशालग्रामशिलार्चनं संयातिनरकंघोरंयावदाचंद्रतारकम् ॥ ४ ॥

ब्राह्मणोंने सालग्रामका नित्य पूजन करणा चाहिये चक्रां कित जो सालग्राम शिलातिसका श्रद्धा भक्तिकर्के युक्तहुआ हुआ जो ब्राह्मण नित्य पूजन करताहै सो मुक्तिकों प्राप्तहोता है ॥ २ ॥ शालग्रामके नहिपूजन करणेमें दोष कथन करा है जो पुरुष शालग्रामके पूजनबिना अन्नकों भक्षण करता है सोचंडालादिकोंका जो विष्टा तिसमें कीडारूप होकर क ल्प पर्यंत रहिताहै ३ हेमाद्रिमें देवलजी कथन करतेहैं हरिका जो चिह्न है शालग्राम तिनका पुरुष नित्य पूजनकरे शालग्राम के नहिपूजन करणेमें गौतमकथन करताहै जो ब्राह्मण शाल ग्रामके पूजनकों त्यागताहै सो घोरनरककों प्राप्तहोताहै जित ना पर्यंत चंद्रमा और तारेहैं ॥ ४ ॥

तस्य पापविशुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तमुदाहृतम् । ब्रह्म कृच्छ्रं परं तत्र दिनैकं हि मनिद्विजोत्तम ॥ ५ ॥ मासत्यागे पर्णकृच्छ्रं वत्सरं तु चरेत् । शालग्रामो यत्र नास्ति यत्र नैवामृतोद्भवा ॥ ६ ॥ श्मशानसदृशं गेहं सविप्रः पंक्तिदूषकइति ब्रह्मांडपुराणे शालग्रामशिलायां तु यष्टव्याः सर्वदेवता इति ७ लांछनैर्विविधाकारैर्लांछितं यच्च दृश्यते चक्रांकितं हरेश्चापि शालग्रामस्य लक्षणम् ८ यथायोग्यं विचार्यैव ग्रहीतव्यं प्रयत्नत इति

तस्येति तिसके पापकी शुद्धिवास्ते प्रायश्चित्तकथन कीयाहै हे ब्राह्मण सोएक दिनमें ब्रह्म कृच्छ्र कोंकरे ५ जोपुरुषएक मास सालग्रामका पूजन नहिंकरता सो पर्णकृच्छ्र और वर्षपर्यंत जो नहिंकरतासो उदुंबरव्रतकोंकरे और जिसके घरशालग्राम और अमृतोद्भवाकया तुलसी नहिंसा गृहश्मशानकेसदृशहै ६ और सोब्राह्मण पंक्तिकोंदूषितकर्ताहै ब्रह्मांडपुराणमें कथनकीयाहैक्या शालग्रामकी शिलामें संपूर्ण देवता पूजने चाहिये ॥ ७ ॥ विविध प्रकारके जो लांछनातिलोंकरके जो चिह्नवाला देखियेवा हरिचक्रकरके जाअंकित कया चिह्नित सो शालग्रामकालक्षणहै ८ ॥ जैसेयोग्यहैतैसे विचारकरके यत्नतें ग्रहण करना चाहिये ॥

अथ मुद्राक्षेत्रपरिमाणमासनंमूर्तिभेदकम्
स्थूलसूक्ष्मविभेदंचचक्रलक्षणमेवच ॥ १ ॥
सम्यग्विचार्यमतिमान्सामान्यंलक्षणंतथा पू
जयन्मुक्तिदंनित्यंयथोक्तफलभाग्भवेत ॥ २ ॥
मुद्रातु वैखानससंहितायाम् ब्रह्मोवाच भ
गवन्देवदेवेशशंखचक्रगदाधर संशयंचसमु
द्भूतंछेत्तुमर्हसिमेविभो ॥ ३ ॥ शालग्रामस्य
यत्पुण्यंक्षेत्रत्रैलोक्यविश्रुतम् तत्रास्तिचहरि
स्साक्षात्सर्वदेवैस्समन्वितः ४ तत्रोत्पन्नाःशि
लाविष्णोःसूक्ष्मासूक्ष्मतरास्तथा प्रादुर्भावै
श्चविविधैराकारैश्चसमन्विताः ५

अथेति और कथनकरतेहैं मुद्राक्षेत्रमें परिमाण और आसन और मूर्त्तिभेदकोंकरे औरस्थूल सूक्ष्मभेद और चक्रलक्षण इनकों १ बुद्धिमान् और सामान्यलक्षणकों विचारकर्के नित्यपूजनकरदाहुआ मुक्तिकेदेणेवाले सालग्रामका सो यथोक्तफलकों प्राप्तहोताहै २ मुद्रा वैखानस संहितामें कथन करिहै ब्रह्माकहताभया हेभगवन् हेदेवदेवेश हेशंखचक्रगदाके धारणेवाले उत्पन्नहुवाजोमेरासंशय तिसके छेदने कों हेविभो तूंयोग्यहैं ३ शालग्रामका जो पुण्य और त्रैलोकमें प्रकटजोक्षेत्र तिसमें संपूर्णदेवतियो कर्केयुक्त होआहुआ हरि स्थितहै ४ विविधप्रकारके जो आकार और प्रादुर्भाव तिनों कर्के युक्त और सूक्ष्म और स्थूल विष्णुकी तिसमें शिला उत्पन्नहोतीहैं ५

आयुर्दाः कामदाः प्रोक्ताभोगमोक्षप्रदास्तथा
शस्ताअशस्ताश्चतथाह्येतदाख्यातुमर्हसि ६
श्रीभगवानुवाच शृणु ब्रह्मन्प्रवक्ष्यामिशालग्रा
मगिरिर्हरिः यस्माद्धरिः स्थितस्तत्रप्रादुर्भावै
रनेकशः ७ लक्षणैर्विविधाकारैर्लांछितंचैवदृ
श्यते शैलंसूक्ष्ममसूक्ष्मंवामुद्रैवपरिकीर्तिता ८
एकपद्मांकितायातुदक्षिणावर्त्तसंयुताचतुर्लांछ
नसंयुक्ताभोगमोक्षफलप्रदा ९ पद्मयुग्मांसं
स्थितेद्वेताभ्यांचसंवृतास्थिता केनापिलांछ
नयुताचतुर्वर्गफलप्रदा ॥ १० ॥

आयुर्दाइति हेभगवन् सो शिला आयु और काम और भोग और मोक्षके देनेवालीयांहैं और शस्तकया श्रेष्ठ और निंदितक थन कीयांहैं यह कथनकरणेको तूंयोग्यहैं ६ श्रीभगवान्जी क थनकरतेहैं हेब्रह्मन् तूंश्रवण कर शालग्रामगिरिजोहरि सोमैंक थनकरताहां जिसतें हरि प्रादुर्भावोंकरके अनेक प्रकारका स्थि तहे ७ विविध प्रकारके लक्षणोंकरके लांच्छित जो शैल और सूक्ष्म और स्थूल देखीदाहै सो मुद्रा कथन करीदीहै ८ एक प द्मकरकेजो अंकित कथा चिन्हित और दक्षिणावर्तकरके संयुत और चतुर्लांच्छनोकरके संयुक्तहै सो भोग और मोक्ष फलके देणे वालीहै ९ जिस में दो पद्म स्थितहैं और दो पद्मोंकरके स युक्तहुई हुई स्थितहै और किसे लांछन करके युक्त सो चतुर्व र्ग कया धर्म अर्थ काम और मोक्षके देने वाली होतीहै १०

चक्रेणकंबुनायाचपद्मेनगदयांकिता तत्र श्रीः
सदा तिष्ठेत्सदासंपत्तयाविशेत् ११ लांछनं
नविनायास्यादप्रशस्तातुसास्मृता चक्रंवाके
वलंपद्मलांछनंत्वथवागदा १२ लांछनंवनमा
लावाहरिलक्ष्म्यासहस्थितः तस्मिन्गेहेनदा
रिद्र्यंनशोकोमरणाद्भयम् १३ नचैवाग्निभयंत
त्रग्रहदुष्टैर्नबाध्यते अंतेमोक्षोभयंतस्यपूजना
देवनित्यशः १४

चक्रेणेति चक्र करके वा कंबु कयाशंख वा गदा करके अंकित
जो शिला तिसमें दिन दिनमें श्री स्थित रहतीहे और संपदास
दाप्रवेश करतीहै ॥११॥ जो शिला लांछनतोंविनाहै सोनिंदित
कहतेहैं चक्र वा पद्म वा गदाके चिह्नवाली ॥ १२ ॥
वा वनमालाके चिह्न वाली जो शिला जिसमें लक्ष्मीके सा
घहरि स्थित रहतेहैं तिस घरमें न दरिद्र और न शोक और
नमृत्युसें भयहोताहै ॥ १३ ॥ तिसमें अग्निका भय और दुष्ट
जो ग्रहहैं सोभीनहि पीडादेते और नित्य पूजन करणेसें तिस
पुरुषकों भय नहि होता और अंतमें मोक्ष होताहै ॥ १४ ॥

केवलंपद्मसंयुक्ताय सावैकुंठउच्यते घोणाकृ
तिर्वराहाख्याऽतुलैछनसंयुता ॥ १५ ॥ च
क्रेणदृश्यतेलिंगंतदातत्रसुशोभना वराहमूर्त्ति
संयुक्तासर्वकामफलप्रदा ॥ १६ ॥ दया
दसामोक्षसंसिद्धिंब्रह्मचर्येणपूजिता वनमाला
तुयैयस्याः साक्षसूत्रकमंडलुः ॥ १७ ॥ क
पिलाख्याभवेन्मुद्राधनैश्वर्यप्रदायिका दर्शना
न्नश्यतेपापंब्रह्महत्यांव्यपोहति॥१८ ॥

जोकेवलपद्मके चिन्हकरकेंयुक्तहै सोवैकुंठ नामककेंकथनकरीदी
है घोणाक्यासूर तिसकी न्याईहै आकृति जिसकी और चारलांछ
नोंकरकें जो युक्त सो वराहनामकरकें कथनकरीदीहै ॥ १५ ॥
सुंदर जोचक्र तिसका चिह्न जिसमें दखिये और वराह मूर्तिक
कें युक्तसो संपूर्णकामनोंके पूणकरण वाली होतीहै ॥ १६ ॥
दयादिति ब्रह्मचर्य करकें पूजितहुई हुई सो शिला मोक्ष और
सिद्धिकों देतीहै वनमाला और अक्षसूत्र और कमंडलुके हैं चि
न्ह जिसमें ॥ १७ सो कपिलानामककरकें मुद्राहोतीहै धन औ
रऐश्वर्यकेदेणेवालीहोतीहै तिसकेदर्शनते ब्रह्महत्यादूरहोतीहै १८

सान्निध्यान्मंत्रपूर्वेणपूजनेनफलाधिका स्थू
लचिह्नांकितायाचकुलेशेनसमन्विता ॥ १९ ॥
वैनतेयाभवेन्मद्रालक्षणैश्चसमन्विता साजया
ख्यापरामुद्राचतुर्वर्गफलप्रदा ॥ २० ॥
मीनादिमूर्त्तिसंयुक्तासर्वकामार्थसंयुता पद्मा
सनस्थासामुद्रासर्वकामप्रदाशुभा ॥ २१ ॥
एकैकेनैवचिह्नेनलांछितातेनशस्यते अश्वाकृ
तिस्तथामुद्रासाक्षमालासपद्मका ॥ २२ ॥

और समीपतासें मंत्रों करकें पूजित हुई हुई अधिक फलके देने वाली होतीहै जो शिला स्थूल चिन्ह और कुलिश करकें युक्त ॥ १९ ॥ और लक्षणों करकें युक्त सो वैनतेयनामककें मुद्रा होतीहै और जो जयानामककें मुद्राहै सोचतुर्वर्गक्या धर्मअर्थ काममोक्षके देने वाली होतीहै ॥२०॥ मीनादि मूर्त्तिकरकें जोयुक्त और सर्वकामार्थकरकें युक्त सोपद्मासनस्थामुद्रा संपूर्णकामनाके देणवालीहोतीहै ॥२१॥ एकचिन्हकरकें जो युक्त सोप्रशस्त कथनकीतीहै और अश्व आकृति वाली जोमुद्रा और अक्षमाला और पद्मकरकें युक्त २२

पद्मांकिताभवेन्मुद्राहयग्रीवेतिविश्रुता भय
दुःखांतरैर्मुक्तोनरः पापात्प्रमुच्यते २३ अक्ष
यंचभवेत्तस्यलक्ष्म्याद्यैश्वर्यमुत्तमम् प्रागुक्ता
लांछनास्सर्वेयस्यामेकत्रसंस्थिताः २४सर्वत्र
सर्वदापूज्यामुच्यतेसर्वबंधनैरिति २५पुराणसं
ग्रहेपि मत्स्याख्याकूर्मसंयुक्ताकूर्माख्यामत्स्य
संयुता दद्यात्सामोक्षसंसिद्धिंब्रह्मचर्येणपूजि
ता २६

पद्मांकितेति और पद्मकेचिह्न वाली जो मुद्रा सोहयग्रीव नाम करकें प्रकटहै तिसके पूजनतें पुरुष भय और दुःख और विघ्न सें रहित और पापसें रहितहोताहै२३तिसके लक्ष्म्यादि जो उत्तम ऐश्वर्य सो अक्षयहोताहै और प्रथम कथन कीये जो चिह्न सो जिस शिलामें एकत्र स्थितहैं २४ सो सर्वदा कालमें पूजने योग्यहै तिसके पूजने वाला जो पुरुष सोसंपूर्ण बंधनातेंरहित होताहै २५ पुराणसंग्रहमें और कथनकीयाहै मत्स्यनामककेंजो सो कूर्मककें युक्तऔर कूर्मनामककें जो सो मत्स्यककें युक्तसो ब्रह्मचर्यककें पूजीहोई मोक्षरूपीसिद्धिके देनेवालीहोतीहै २६

स्थूलचिह्नंमुखंयस्याःकुलिशेनसमायुतं वैन
तेयाभवेन्मुद्रालांछनैश्चसुलांछिता २७ पूजि
तातुभवेन्मुद्राभुक्तिमुक्तिफलप्रदेति२८प्रयोग
पारिजातेपि पांचजन्यांकितायातुपद्मेनगद
यान्विता तत्र श्रीःप्रत्यहंतिष्ठेत्सदासंपत्तथावि
शेत् २९जयाख्यापरमामुद्राचतुर्वर्गफलप्रदा
येषांचैकेनचिह्नेनलांछिताचैवदृश्यते ३० इति
मुद्राख्यंलक्षणम् ।

स्थूलेति स्थूल चिह्नवाला है मुख जिसका और कुलिश
करकेयुक्तऔर चिह्नोंकरके चिह्नितजो सो वैनतेय कथन करीदी
है२७पूजित हुई हुई मुद्रा भुक्तिऔरमुक्ति फलकों देनेवालीहो
तीहै२८प्रयोगपारिजातमें और कथनकीयाहैजोपांचजन्य क्या
शंखके चिह्नवाली और पद्म और गदाकरके जो युक्त तिसमें
श्रीदिनदिनमें स्थित रहतीहै और संपदा प्रवेशकरतीहै २९औ
र जयानाम करकेजोपरममुद्रा सो चतुर्वर्ग क्या धर्म अर्थकाम
मोक्षके देने वालीहोतीहै जो एक चिह्न करके लांछितहोवे सो
जया होतीहै ३० यह संपूर्ण मुद्राके लक्षण समाप्त भये ॥

अथक्षेत्राख्यंलक्षणमुच्यते। ब्रह्मांडपुराणे नारदंप्रतिब्रह्मोक्तिः क्षेत्रंतुद्विविधंप्रोक्तंमूर्त्तितोवर्णतस्तथा मिश्रलक्षणतश्चेतिविज्ञातव्यंविचक्षणैः १ ॥वामनामयुतंतत् स्याच्छ्रीधराणांचवामनम् क्षेत्रंवाराहमूर्तेस्तुश्रीधरंत्वखिलप्रदम् २ हयग्रीवस्यवाराहलक्ष्मीक्षेत्रमथापिवा क्षेत्रंनारायणंज्ञेयमन्येषांक्रमतस्तथा ३ कपिलंनारसिंहंतुवामनंत्वसितप्रभं दामोदरंतुनीलाभमनिरुद्धंतथैवच ४ श्यामंनारायणंक्षेत्रंकृष्णवर्णंतु वैष्णवम् चित्रवर्णमनंतंचश्रीधरंपीतमुच्यते ५

इसतें उपरंत क्षेत्र लक्षण कथन करतेहैं ॥ ब्रह्मांड पुराणमें नारदके प्रति ब्रह्मा कथन करताहै क्षेत्रमिति मूर्तितें और वर्णतें दो प्रकारका क्षेत्र कथन कीताहै और मिश्रलक्षणतेंबुद्धिमानोने जानने योग्यहै १ श्रीधरका जोवामन क्षेत्र सो वाम नामकर्के युतहै और वाराहमूर्त्तिका जो क्षेत्र सो श्रीधर और संपूर्णकेदेनेवालाहै २ हयग्रीव और वाराह औरलक्ष्मीका जोक्षेत्र सोनारायणका क्षेत्र जानना औरोंके क्रमतेजानने ३ नारसिंहकाक्षेत्र कपिलवर्णवाला और वामनकाक्षेत्र श्याम प्रभावालाहै दामोदर और अनिरुद्धकाक्षेत्र नीलेवर्णवालाहै ४ नारायणका क्षेत्रश्याम और विष्णुका क्षेत्र कृष्णवर्णवालाहै अनंतकाक्षेत्र चित्रवर्णवाला और श्रीधरका क्षेत्र पीतवर्णवाला कथनकरीदाहै ५

नरसिंहपुराणेपि वासुदेवंसितंज्ञेयंरक्तंसंकर्षणंतथा दामोदरंतुनीलाभमनिरुद्धंतथैवच ६ श्यामंनारायणंक्षेत्रमेवंचमुनिपुंगवाइति पुराणसंग्रहेपि वासुदेवसितंविद्याद्रक्तंसंकर्षणंतथा ७ अन्यत्र कपिलंनारसिंहस्यवामनस्यासितप्रभम् वासुदेवंसितंज्ञेयंरक्तंसंकर्षणंस्मृतम् ८दामोदरंतुनीलाभमनिरुद्धंतथैवचश्यामंनारायणंप्रोक्तंकृष्णवर्णंतुवैष्णवम् ९ वहुवर्णमनंतंस्यात्पीतंश्रीधरमुच्यते लक्षणांतरयोगेनतत्तत्क्षेत्रमुदाहृतम् ॥ १० ॥ इतिक्षेत्राख्यं लक्षणम् ॥

नारसिंहपुराणमें और कथनकीयाहै वासुदेवमिति वासुदेवकाक्षेत्र श्वेत और संकर्षणका क्षेत्र लालवर्णवालाहै दामोदरका और अनिरूद्धका क्षेत्र नीलवर्णवालाहै ॥ ६ हेमुनिश्रेष्ठों नारायणका क्षेत्र श्यामवर्ण वालाहै । पुराण संग्रहमें और कथन कीयाहै वासुदेवकाश्वेत और संकर्षणका रक्तकथन कीताहै ॥७॥ और कथनकरतेहैं नारसिंहका कपिलवर्ण वाला और वामनका क्षेत्रश्यामवर्णवालाहै वासुदेवका श्वेत और संकर्षणका रक्तवर्णवालाकथनकीताहै ॥ ८ ॥ दामोदरका और अनिरुद्धका नीलेवर्णवाला है नारायणका श्याम और विष्णुका कृष्णवर्णवालाहै ॥ ९ ॥ अनंतकाक्षेत्रबहुतवर्णवाला और श्रीधरकापीतवर्णवालाकथनकीताहै लक्षणांतरयोग करके सो सो क्षेत्र कथनकीताहै १० एह क्षेत्रोंका लक्षण समाप्त होचुका ॥

अथ परिमाणाख्यंलक्षणं पुराणसंग्रहे वृत्त
सूत्राष्टमोभागउत्तमंचक्रलक्षणं मध्यमंतुच
तुर्भागंकनीयस्तुत्रिभागकमिति १ एतत्फ
लमपि स्कंदपुराणे उत्तमंशुभदंप्रोक्तंजघन्यं
निंदितंभवेत् मध्यमंनामसदृशफलदंहिप्रकी
र्त्तितमिति २ अथासनाख्यंलक्षणंस्कंदपुरा
णे आसनंतुचतुर्धास्याच्चलंवाचलमेवच विषमं
पार्श्वकंचैवशालग्रामशिलागतम् ३

इसतें उपरंत परिमाणका लक्षण पुराण संग्रहमें कथन
कीयाहै वृत्तमिति सूत्रकके वृत्त क्या वेष्टित जो सालग्राम ति
स सूत्रका जो अठवां ८ भाग तिस जिन्नाहै मुख जिसकाऐ
सा जोसालग्राम सोउत्तमहै तिस सूत्र का जो चौथा भाग ति
स जिन्नाहै मुख जिसका सो मध्यमहै औंर तिससूत्रका जो ती
सरा भाग तिस जिन्नाहै मुख जिसका सो अधम होताहै १
इसका फलस्कंदपुराणमें कथनकीताहै उत्तमजोहै सोशुभकेदेने
वाला कथनकीताहै उोर जघन्यजोहै सोनिंदितहै मध्यम जोहै
सो सदृशफलकेदेनेवाला कथन कीताहै २ इसतें उपरंत आस
नका लक्षण स्कंदपुराणमें कथन कीताहै शालग्रामकी शिला
में प्राप्तहुआजोआसन सो चार प्रकारकाहै सो चल औंर अ
चल औंरविषम औंर पार्श्वकहै ३

फलमपितत्रैवोक्तम् अचलंतुस्थिरालक्ष्मीश्च
लंतत्स्थानभंगदम् दुःखप्रदंतुविषमंपार्श्वंचोद्वे
गदंस्मृतम् आसनंचविचार्यैवग्राह्यंलक्षणको
विदैरिति४ अथमूर्त्तिभेदाख्यंलक्षणं ब्रह्मपुरा
णे मूर्त्तयोद्विविधाज्ञेयाजलजाःस्थलजास्तथा
जलजाः कोमलाः स्निग्धाः स्थलजाः परु
षाः स्मृताः ५

फलभी तिसमें कथनकीताहै अचलजोआसनसो स्थिरलक्ष्मीके
देनेवाला औरजोचलसो स्थानभंगकेकरणेवालाऔर जो विषम
सोदुःखकेदेनेवालाहै औरजोपार्श्वं सो उद्वेगकेदेने वाला कथन
कीयाहै लक्षणकेजाननेवालेजो सोविचारकर्के आसनको ग्रहण
करें ४॥इसमें उपरंत मूर्त्तिका लक्षण ब्रह्मपुराणमें कथनकीयाहै
मूर्त्तयइति मूर्त्ति दोप्रकारकीजाननी जलज और स्थलज जो
जलज मूर्त्ति सो कोमल और स्निग्धहैं जो स्थलज सो परुष
कथन कीतीहैं ५

फलमपि मूर्त्तयस्त्विष्टदाः स्निग्धामोक्षदाःपरु
षाःस्मृताः६॥ अथशिलायाःस्थूलसूक्ष्माख्यं
लक्षणं पद्मपुराणे शालग्रामलक्षणांतरं यथा
एतल्लक्षणसंयुक्तामूर्त्तयः फलदाः स्मृताः७ ॥
याश्चतास्वपिसूक्ष्माःस्युस्ताःप्रशस्ततराःस्मृ
ताः यथायथाशिलासूक्ष्मामहत्पुण्यंतथातथा
॥ ८ ॥ तस्मात्तांपूजयेन्नित्यंधर्मकामार्थसिद्धये
तत्राप्यामलकीतुल्यासूक्ष्माचातीवयातथा९॥

तिसके फलकों कथन करतेहैं मूर्त्तियां इष्टके देनेवालीयां स्निग्ध और मोक्षके देने वालीयां परुष कथन कीतीयांहैं ॥ ६ ॥ इसतें उपरंत स्थूल और सूक्ष्म शिलाके लक्षणकों पद्म पुराणमें कथन कीयाहै शालग्रामका वोह लक्षणहै इसलक्षण करकें युक्तजो मूर्त्तियां सो फलकेदेनेवालीयांकथन कीतीयांहैं ७ जो तिनोमें सूक्ष्महैं सो प्रशस्त कथन कीतीयांहैं जैसी जैसी सूक्ष्मशिलाहै तैसें २ अधिक फलकों देतीहै ८ तिस कारणतें तिसका नित्य पूजन करे धर्म काम अर्थकी सिद्धिवास्ते तिसमें आमलेके सदृश और जोसूक्ष्म शिलाहै ॥ ९ ॥

तस्यामेवसदाब्रह्मन् श्रियासहवसाम्यहम् अ
तिस्थूलातुयामूर्त्तिर्गृहस्थस्तांतुपूजयेदिति १०
अथशिलायाश्चक्राख्यलक्षणमुच्यते वैखान
ससंहितायाम् नारदउवाच समाचक्ष्वपरंरूपं
चक्राणांलक्षणंमुने सर्वसिद्धिकरंचैवसर्वकामा
र्थसाधकम् १ वैखानसउवाच दिव्यंवर्षसह
स्रंतुहरिराराधितोमया ततस्तूवाचभगवान्वि
ष्णुस्त्रिभुवनेश्वरः २ ॥

तस्यामिति हेब्रह्मन् तिस सूक्ष्म शिलामें सदा मैं श्री के सा थ निवास कर्ता हां अतिस्थूलजो मूर्त्ति तिसका गृहस्थी पूज नकरे १० इसतें उपरंत शिलाके लक्षणकों वैखानस संहितामें नारदजी कथन करतेहैं हेमुने चक्रोंका लक्षण और परम रू पकों कथन कर कैसाहै सर्व सिद्धिके करणे वाला और संपूर्ण कामार्थका साधक ॥१॥ वैखानस कथनकर्ताहै मैनेदेवतयोंके हजार वर्षमें हरि आराधित करा तिसतें उपरंत भगवान् जो त्रिभुवनेश्वर विष्णु सो कथन करतेभये ॥ २ ॥

वरंवृणीष्वप्रीतोस्मितपसातवसुव्रत इत्याक
र्ण्येमयादेवोविज्ञप्तोभुवनेश्वरः ३ शालग्रामस
मुद्भूतचक्राणांलक्षणंप्रभो कथयस्वप्रसादेनय
दितुष्टोसिमाधव ४ तच्चश्रुत्वावचोमह्यंस्मय
मानोब्रवीदिदम् ५ विष्णुरुवाच लक्षणंयच्च
क्राणांतच्छृणुष्वमहामुने धर्मकामार्थमोक्षा
णांपुरुषार्थैकहेतुकम् ६ केचिल्लांछनसंयुक्ताः
शंखाकारेणसांस्थिताः

हे सुंदर व्रतवाले बरकों तूं मंग तेरे तप कर्के मै प्रसन्न होयाहां
ऐसे श्रवण कर्के मैने यह जाना क्या मेरे उपर भुवनेश्वर जो दे
व सो प्रसन्न हुवेहैं ३ ॥ हेमाधव जेकर मेरे उपर भुवनेश्वर तुसी
प्रसन्न हुवेहो तद शालग्रामके जो चक्र तिनांको कथन करो ४
तदिति तिसमेरे वचनकों श्रवण कर्कै मंद मंद हसता हुआ
कथन करता भया ५ विष्णुकथन करताहै हे महामुने चक्रोंका
जो लक्षण तिसको श्रवण कर धर्म अर्थ काम मोक्षके उौर पु
रुषार्थ का एक हेतुक्या कारणहै ६ केईक लांच्छन कर्के युक्त
उौर शंखाकार कर्के स्थित ॥

केचिल्लिंगसमायुक्ताःकेचिच्चक्रेणसंयुताः ७ ॥
दशयोजनविस्तीर्णंममक्षेत्रंद्विजोत्तम उत्तरे
चैवदिग्भागेप्रमाणंयोजनंतथा ॥ ८ ॥ सानु
नामापर्वतस्तुचक्रनामांकितानदी विष्णुना
मांशकोर्था निममरूपाणिसर्वतः ९ त्रिकालं
शिखराकूटश्चाप्सरोगणसेवितः शैलमूर्त्तिरहं
तत्रचक्राख्यंतुचयंविदुः षोडशैरुपचारैस्तुत
त्रार्चांसंविधायच १०

कोईक लिंगकर्के युक्त और चक्रकर्के युक्तहैं ७ हेद्विजोत्तम दश
योजन विस्तार वाला मुजका क्षेत्रहै उत्तर पासेमें योजन प्रमाण
में सानु नाम कर्के पर्वत और चक्र नामकर्के नदीहै और विष्णु
के नाम और अंश संपूर्ण मेरे रूपहैं ९ तीन काल में अप्सरों
के गणो कर्के सेवित जो शिखराकूट तिसमें शैल क्या पर्वत
मूर्त्तिमें हां जिसकों चक्र जानतेहैं षोडश उपचारों कर्के
मुजको तिसमें पूजाकों विधान कर्के ॥ १०

गान्धर्वैर्विविधैश्चैवसंस्तूयमधुसूदनम् भोजनं
चबलिंदत्त्वाचक्रंग्राह्यंहरेरिति११मत्स्यांकिता
श्चयेचक्राआयुर्दाःपुष्टिदान्नृणाम् सदापूज्यागृ
हस्थेनास्थितस्तत्रहिकेशवः१२ कूर्मांकिताश्च
येचक्रामहासंततिकारकाः महार्थकारकादि
व्याहरिस्तत्रव्यवास्थितः १३ वराहमूर्त्तिसंयु
क्तंयत्तुचक्रंप्रदृश्यते पूजनाल्लभतेराज्यंपृथि
व्यामेकराजकम्१४

गांधर्वैरिति विविध प्रकारकें जो गीत तिनोंकर्के मधुसूदनकी स्तुति कर्के भोजन ओर बलिकों देकर्के हरिके चक्र को ग्रहण करे ११ जो मत्स्यके चिन्ह वाले चक्र सो पुरुषांकों आयुके देने वाले ओर पुष्टिके देनेवालेहैं गृहस्थीने सदा पूजनेयोग्य हैं तिसमे केशव जो नारायण सो स्थितहैं १२ ओर जो चक्र कूर्मके चिन्ह कर्के युक्त सो वहुत संतति करणे वालेहैं ओर बडे अर्थ के करणे वाले ओर दिव्यहैं तिसमेंहरिस्थितहै १३ ओर जो चक्र वराह मूर्त्ति कर्के युक्त देखीदाहै तिसके पूजनतें पृथिवीका एक राज्य प्राप्त होताहै ॥ १४

नरसिंहांकितंचक्रंदुर्लभंभुविमानवैः शत्रूणांना
शनंतद्धिकेशवंपरिकीर्त्तितम् १५ स्तंभनंपर
सैन्यस्यमहामृत्युहरंपरम् श्रांकितंवामनेनस्या
च्चक्रंपरमशोभनम् १६ नानावृद्धिकरंचैवह्यघ
क्षयकरंभवेत् चक्रमध्येतुदृश्येतजामदग्न्यस्य
रूपकम् १७ तत्तन्नामांकितंचक्रंजामदग्न्यंप्र
कीर्तितम् १८ गरुडपुराणे गंडक्याश्चोत्तरेतीरे
गिरिराजस्यदक्षिणे क्षेत्रंतुविष्णुसान्निध्यंस
र्वक्षेत्रोत्तमोत्तमम् १९

और पुरुषांको नरसिंहके चिन्ह वाला जो चक्र सो पृथिवी मे दुर्लभहै कैसाहै शत्रुयांकों दूरकरणे वाला और केशव कथन करीदाहै १५ और शत्रुयांकीसेनाकों स्तंभनकरणे वाला और महामृत्युकों दूर करणेवालाहै और जोचक्र वामन कर्के शोभायमानहै १६ और नानावृद्धिके करणे वाला और पापोंके दूरकरने वालाहै जो चक्रके मध्य में जामदग्निका रूप देखीदाहै १७ तिस २ नाम कर्के चिन्हित्तजमदग्निकथन करीदाहै १८ गरुड पुराणमेंकथन कीयाहै गंडकी नदीके उत्तर पासे और गिरिराज के दक्षिणमें संपूर्ण क्षेत्रो में उत्तम विष्णु सान्निध्य क्षेत्रहै १९

योजनद्वादशामितंवहुतीर्थसमाकुलं तत्रचक्रन
दीनामतीर्थंब्रह्मविनिर्मितम् २० तस्योत्तरेम
हाशृंगंममप्रीतिकरंतथा तच्छायाभिगतास्त
त्रपाषाणाश्चखगेश्वर २१ सच्चिह्नैश्चिह्निताश्चै
वतरवोधरणीतले नराणामपिपक्षींद्रकिंचित्का
लनिवासिनाम् सर्वास्थिषुभवेच्चक्रंमस्तकेपृष्ठ
एवच २२ एवंक्षेत्रस्यमाहात्म्यंमृगपक्ष्यादय
स्तथा चक्रनद्युत्तरेतीरेलभंतेपुण्यमुत्तमम् २३

कैसाहै १२ बारां योजनो कर्के मित और बहुत तीर्थों कर्के समाकुलहै तिसमें चक्र नामा नदी और ब्रह्मा कर्के रचया हुआ तीर्थहै २० तिसके उत्तर पासे जो शृंग सो मुजको प्रीतिकेकरणे वालाहै हेगरुड तिसकीछायामें प्राप्तहुवे जो पाषाणक्या पथ्थर २१ और श्रेष्ठचिन्होंकर्के जो चिन्हित पृथिवी तलमें वृक्षहैं हे गरुड कुच्छक काल के निवास करणे वाले पुरुषांके संपूर्ण अ स्थियोंमें और मस्तक में और पृष्टमें चक्र होताहै २२ एवमिति इस प्रकार क्षेत्रका माहात्म्यहै और मृग पक्षीचक्र नदीके कनारे में उत्तम पुण्य कों लभतेहैं २३ ॥

शालग्रामशिलास्तत्र नानामूर्तिसमन्विताः पूज
नीयाः प्रयत्नेन चतुर्वर्गफलाप्तये २४ हिरण्यवज्र
कीटेन निर्मितं चक्रमुत्तमम् २५ मठपद्मादिभेदे
न तच्चानेकविधं स्मृतम् धर्मसंहितायां हिरण्यग
र्भो भगवानाद्यो नारायणः स्वयम् वज्रकीटः प्रभू
तत्वा चचार वसुधातले २६ सौवर्णभ्रमरं दृष्ट्वा दे
वास्तद्रूपधारिणः उपतस्थुर्महात्मानं भ्रमंतमति
तेजसम् २७ षडंघ्रिभिर्जगत्सर्वं व्याप्तमेतच्चराच
रम् हिरण्यगर्भभ्रमरैर्भ्रामितं भ्रांतवत्सदा २८

तिसमें नानामूर्तियोंकर्के युक्त शालग्रामकीयांशिलाहैं सो पुरुषनें यत्न कर्के पूजने योग्यहैं धर्म अर्थकाम मोक्षके अर्थ वास्ते २४ हिरण्य वज्र कीट कर्के रचया जो उत्तम चक्र सो मठ पद्मा दि भेदकर्के अनेक प्रकारका कथन कीयाहै २५ धर्म संहितामें कथन कीयाहै हिरण्य गर्भ जो भगवान् स्वयं क्या आद्य नारायण आद्य वज्र कीट हुआ हुआ प्रभूत तें पृथिवीके तल में विचरता भया २६ सुवर्णमय भ्रमरेकों देखकर देवता तिसरूपके धारणे वाले हायेहुवे बडे तेज वाला भ्रमता जो महात्मा तिसकी उपासना करते भये २७ षडंघ्रि क्या भ्रमरयोंकर्के संपूर्ण यह चराचर जगत् व्यापित होता भया हिरण्यगर्भभ्रमरियों कर्के सदा भ्रमाइंदा भया २८ ॥

दृष्ट्वाजगत्पतिर्विष्णुर्वैनतेयंसनातनः रुरोध
शैलरूपेणजगतांहितकारकः २९ निरुद्धवेगः
सहसाप्रविवेशाविलंमहत् तस्मिन्प्रविष्टेभ्रमरा
स्तद्बिलंविविशुःशुभम् ३० चक्रुःस्वंस्वंमहद्वेश्म
कोशकारवदात्मनःनास्तिकानांप्रत्ययार्थंवज्र
कीटाष्षडंघ्रयः ३१ चक्राकारंविनिर्माणंतत्रकुर्यु
र्हिसर्वशःजलस्थलमठंचैवतच्चक्रंत्रिविधंस्मृत
म् ३२ निष्केसरंकीटभुक्तंतच्चक्रंमठसंज्ञकम्
इदमेवद्विधाप्रोक्तंजलस्थलविभेदतः एवंच
क्रंद्विधाप्रोक्तंतत्रापिजलजंवरम् ३३

दृष्ट्वेति जगत्का पति सनातनजो विष्णु सोवैन तेयकों देख करकें और शैल क्या पर्वत रूप हो करकें जगत्के हितके करणें वाला तिसकों रोकता भया २९ रोकया गियाहै वेग जिसका ऐसा हुआ हुआ हिरण्यगर्भ वडीजो विल क्या खुड्ड तिसमें प्रवेश करता भया तिसके प्रवेश होयां हुयां भ्रमरे तिस विल में प्रवेश करतेभये ३० कोशकार कीडेकी न्याईं आत्माके आपतो अपने रूपां को करते भये नास्तिकांकी प्रतीति वास्ते वज्रकीट जो षडंघ्रि क्या भ्रमरे ३१ रचयाजो चक्राकार तिसको संपूर्ण करतेभये और सोचक्र जल और स्थल और मठ तिनिप्रकार काकथन करीदा भया ३२ कीटयोंते भक्षण कीया जो निष्के सर सोचक्र मठ संज्ञा वाला होताहै यह जल और स्थलभेदतें दोप्रकार का कथन कीयाहै इनसे जलज चक्र श्रेष्ठहै ३३ ॥

क्रमादिमानिचक्राणिद्विजातीनांखगाधिप पूजा
यांसुप्रशस्तानिग्राह्याणिचद्विजोत्तमैरिति ३४
वराहपुराणेवराहउवाच शिलायालक्षणंसम्य
क्मयाप्रोक्तंसुविस्तृतम् वसुधेत्वामथोवक्ष्येच
क्राणांलक्षणंशृणु ३५ मठकेसरभेदेनचक्रंतद्
द्विविधंभवेत्स्निग्धैःसूक्ष्मैःकेसरैर्यद्व्याप्तंतत्केस
रंभवेत् ३६ तद्धीनंमठचक्रंस्यान्मद्धीकाकृतिकं
यचत् पूर्वोक्तंकेसरंचक्रंमठचक्राद्विशिष्यते ३७

हे गरुड क्रमतें यह चक्र ब्राह्मणोको पूजामें प्रशस्तहैं सो ब्राह्मणोंने ग्रहने करणे योग्यहैं ॥ ३४ ॥ वराहपुराणमें ॥ वराहजी कथन करतेहैं शिलाया इति शिलाका लक्षण मैंने विस्तारते कथन करा है हेपृथिवि अब चक्रो का लक्षण को कथन करोंगा तूं श्रवण कर ॥ ३५ ॥ मठ और केसर भेद करके सोचक्र दोप्रकारका होताहै स्निग्ध और सूक्ष्म जोकेसर तिनो करके जो व्याप्त सो केसर होताहै ३६ तिसते हीन और दाखकी आकृती वाला सो मठ चक्र होताहै मठ चक्रतें पूर्व कथन कीया जो केसर चक्र सो विशेषहै ॥३७॥

अत्रास्तिकारणंयत्ततत्तेसम्यङ्निगद्यते रसंच
स्यांशिलायांतुसंभुंक्तेकीटकः शनैः ३८ प्री
त्यातस्यांप्रजायेतचक्रंतत्केसरैर्युतम् तस्मा
दुत्पद्यतेचक्रंमठसंज्ञंफलाल्पदम् चक्राभ्यांच
शिलाज्ञेयाशस्ताशस्तावसुन्धरे ३९ यत्प्रोक्तं
द्विविधंचक्रंतत्पुनर्द्विविधंभवेत् जलजस्थलजं
चैवलक्षणंतस्यकथ्यते ४० सुस्निग्धंदीप्तिसंयु
क्तंचक्रंतज्जलजंभवेत् कर्कशंक्षीणतेजोयत्तच्चक्रं
स्थलजंभवेत्४१ एतयोर्जलजंशस्तंनदीपर्वत
योगतः मध्यमंस्थलजंप्रोक्तंपर्वतस्यैवयोगतः४२

इसमे कारणहै सोमैं कथनकरताहां जिसशिलामेंरसको कीडा
शनै शनै प्रीति करके भक्षण करे ३८ तिससें केसरोंकरके युक्त सो
चक्र उत्पन्न होताहै तिसते मठ संज्ञा वाला चक्र होताहै थोडे
फलकेदेनेवाला हेपृथिवि चक्रोंकरके शिलाशस्त और निंदितहै
३९ यद्विति जो चक्र दो प्रकारका कथन कीयाहै सो फेर दो
प्रकारका होताहै तिसके जलज और स्थलज लक्षण कथन
कीतेहैं ४० स्निग्ध और दीप्तिकरके संयुक्त जो चक्र सो जलजहो
ताहै कर्कश क्या कठोर और दूरहुआहै तेज जिसका ऐसा
जोचक्र सोस्थलजहोताहै ४१ इनोंके मध्यमे नदी और पर्वतमें
प्राप्तहोआ जो जलज सो शस्तहोताहै पर्वतमें प्राप्तहोआ जो
स्थलज सो मध्यम कथन कीताहै ४२

पद्माकारंक्वचिच्चक्रंशिलायांजायतेधरे समा
सेनमयाप्रोक्तंचक्राणांलक्षणंप्रिये सम्यग्वि
चार्यस्वधिया ग्राह्यंपूजार्थमादरादिति ४३

इतिचक्रारूयलक्षणम् ॥

अथशालग्रामस्यसामान्यलक्षणमुच्यते बारा
हे चक्रसंख्यानयत्रास्तिवर्णोक्तिर्नास्तियत्रवै
छिद्रंकालंत्वच विज्ञेयंतत्रतत्रवसुंधरे ॥१॥
स्कंदपुराणे क्षीरेवातंडुलेवापिशालिग्रामंनि
वेशयेत् दृष्ट्वाधिक्यंतयोः किंचिद्गृह्णीयाद्बु
द्धिमान्नरः ॥ २ ॥

हे पृथिवि शिलाका पद्माकार चक्र कोईक उत्पन्नहोताहै हेप्रिये थोडेकर्के मैने चक्रोंका लक्षणकथन कीयाहै पुरुष अपनीबुद्धि कर्के इच्छीतरां आदरतें पूजाके अर्थ वास्ते ग्रहण करे ४३ एह चक्रोंका लक्षण समाप्त भया ॥ इसतें उपरंत शाल ग्राम के सामान्य लक्षण कों कथन करतेहैं बराह पुराणमें लिखाहै चक्रामिति हे पृथिविजिसमें चक्रसंख्या नहि और जिसमें बर्णोक्ति नाहि तिसमें छिद्र और कालत्वं जानना १ स्कंदपुराणमें कथन कीयाहै क्षीर क्या दुग्धमे बा तंडुलोंमें शा लग्राम निवेशकरे तिनोकी कुच्छक जो अधिकता तिसकों देख कर्के बुद्धिमान् जो पुरुष सो ग्रहण करे २

इति सामान्यलक्षणम् तथाहि । वर्त्तुलंसूक्ष्ममत्यंतं स्पष्टचक्रसमन्वितं हूस्वमुन्नतमुच्चैर्वादीर्घास्य मतिगह्वरं स्फुरद्रेखावलियुतंनाभिस्तस्योन्नताभवेत् ३ चक्रस्योभयपार्श्वेतुस्नुहीपुष्पाकृतिर्भवेत् केशभारंतुचैताक्ष्यंदृश्यतेचक्रपार्श्वत इति४ गरुडोक्तनृसिंहमूर्त्तौनरसिंहोमहादेवःपृथुवक्षास्सदंष्ट्रकः ब्रह्मचर्येणपूज्योसौनान्यथापूजितोभवेदिति ५ अथविशेषलक्षणम् । स्थूलचक्रोभवेद्विष्णुर्मोक्षैकफलदोर्चितःलक्ष्मीनारायणः श्रीमान्भुक्तिमुक्तिफलप्रदः ॥ १ ॥

ऐसेसामान्य लक्षण कथन कीयाहै और तैसें कथन करतेहैं अत्यंत जो सूक्ष्मवर्त्तुल क्या गोलाकार और अतिगह्वर और प्रकटजो रेखोंकीपंक्ति तिसकर्के युक्त और तिसकी नाभि ऊचीहोवे ३ और चक्रके दोनो पासयोंमें स्नुहिक्या डंडाथोरके पुष्पोंकी आकृति होवे और हेगरुड चक्रके पासेतें केशभार देखिये सो श्रेष्ठहोताहै ५ नृसिंह मूर्त्तिमें गरुडजी कथनकरतेहैं नरसिंहजो महादेव औरवडीहै वक्षीजिसकी औरदाढोंवाला तिसकी ब्रह्मचर्यतें विना पूजा न करे ५ ॥

इसतें उपरंत विशेषलक्षणको कथन करतेहैं स्थूल चक्रवाला विष्णु होताहै सो पूजितकीयाहुआ मोक्ष फल देताहै शोभावाले जोलक्ष्मी नारायण सो भुक्ति और मुक्ति फलको देतेहैं १

दधिवामनसंज्ञः स्याद्गोभूधान्यधनप्रदः यः
स्यात्संतानगोपालः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ २
॥ ज्ञानार्थैलक्षणान्युच्यंते तथैवोक्तं पुराण
संग्रहे अनेकामूर्त्तयः संतितत्तल्लक्षणलक्षिताः
वैलक्षण्यविशेषेणज्ञातुंशक्यानताःकलौ ३ ॥
वर्णरूपाद्यवयवैः प्रमाणविललांछनैः द्वार
देशाविभेदेनभेदः कासांचिदुच्यते इति ॥ ४ ॥
वर्ण्यतेयथापद्मपुराणे शुक्लादिवर्णसंयुक्तोद्विच
क्रःपद्मसंभवः वासुदेवोजगद्योनिः कृष्णःपी
तांवरोऽव्ययः ५ ॥

जो दधिवामन संज्ञावालाहै सो गौवांभूम्या पृथिवी और अ
न्न और धनके देनेवालाहोताहै औरजो संतानगोपालहै सो पुत्र
पौत्रादिकोंवृद्धिके देनेवालाहोताहै २ ज्ञानके अर्थवास्तेलक्षणों
कों कथन करतेहैं तैसें पुराण संग्रहमें कथन कीयाहै औरतिनो
लक्षणों करकें लक्षित अनेक मूर्त्तीयांहैं विशेष लक्षण करकें सो
कलियुगमें जाननेकों शक्य नाहेहैं ३ वर्णरूपादि अवयवोंककें
और प्रमाणविल लांछनोंकरकें और द्वारदेशाविभेदककें केयोंका
भेदकथनकीताहै ४ पद्मपुराणमें और कथन कीयाहै शुक्लादिव
र्ण करकें युक्त और दोहैं चक्र जिसके और पद्मतेंहै उत्पत्ति जि
सकी सो वासुदेव और जगत् योनि और कृष्ण और पीतांबर
और अव्ययहै ॥ ५

चक्रेद्वारस्थितेज्ञेयःसौख्यैकफलदोर्चितः चक्रे
तुमध्यदेशस्थेतेषामाख्यानकंशृणु ६ परमेष्ठी
जितक्रोधस्तथानारायणोव्ययः अनंतश्चैवि
ज्ञेयोनानामूर्त्तिश्चवैभवेत् ७ राज्यंमृत्युधनंचै
वसंतानंवांछितार्थकं ददातिपूजितोलोकेतस्मा
द्ज्ञात्वार्चयेन्नर इति ८ पुराणसंग्रहे वासुदे
वोजगद्योनिः कृष्णः पीतांवरोव्ययः चक्र
पाणिरितीमेषड्द्वारचक्राः समीरिताः९ अनि
रुद्धोहरिः कृष्णोजामदग्न्यस्तथैवच वामेवाद
क्षिणेवापिपार्श्वेचक्रसमन्वितः १० ॥

जिसके चक्र द्वार क्या मुखमें स्थित होवे सो पूजया हुआ सुखरूपी फलकों देताहै मध्यदेशमें स्थित जो चक्र तिनो के नामाकों श्रवण कर ६ परमेष्ठी और जितक्रोध और नारायण और अव्यय और अनंतजानना और नानामूर्त्तियाबाला होताहै ७ सो पूजित होआहुआ लोकमें राज्य और मृत्यु धन संतान और मनका जो संकल्प तिसकों देताहै तिस कारणतें पुरुष जान करके पूजन करे ८ पुराण संग्रहमें कथन कीयाहै वासुदेव और जगद् योनि और कृष्ण और पीतांवर और अव्यय और चक्रपाणि यह द्वारचक्र क्या मुखमेंहै चक्र जिनके ऐसे कथनकीतेहैं ९ अनिरुद्ध और हरि और कृष्ण और जमदग्नि यह वाम पासेमें और दक्षिणपासेमें चक्र करके युक्तहै १०

लक्ष्मीनृसिंहोविष्णुश्चनरसिंहश्चभीतिदःबल
रामोभूवराहः सुयज्ञोवामचक्रवान् ११ अथ
विशेषमूर्तीनां शीघ्रतलक्षणज्ञानार्थमादावेक
चक्रादिमूर्त्तयःप्रदर्श्यंते पुराणसंग्रहे पुंडरीकः
प्रलंबघ्नोवैकुंठोमधुसूदनः पीतांबरोहरीरामो
बलरामसुदर्शनौ १ वीरनारायणश्चैवक्षीरा
ब्धिशयनस्तथा सीरपाणिस्तथामत्स्यः पर
मेष्ठीतथैवच २ मुसलीविश्वरूपश्चेत्येकचक्राह्व
मेमताः३ पद्मपुराणे विष्णुरुवाच निवसामि
सदाब्रह्मन्शालग्रामोद्भवाश्मनि तत्रैववर्णच
क्रादिभेदान्नामानिमेशृणु ४

लक्ष्मीनृसिंह और विष्णु और भयके देने वाला नरसिंह और बलराम और भूवराह और सुयज्ञ यह वाम चक्र वालेहैं ॥ ११ ॥ इसके उपरंत विशेष मूर्त्तियोंके तान काल लक्षण ज्ञानतें आदमें एकचक्र वालीयां मूर्त्तियांकों दिखातेहैं पुराण संग्रहमें पुंडरीक और प्रलंबघ्न और वैकुंठ और मधुसूदन और पीतांबर और हरि और राम औरबलराम और सुदर्शन १ और वीर नारायण और क्षीराब्धिशयन और सीरपाणि और मत्स्य और परमेष्ठी २ और तैसें मुसली और विश्वरूप यह एकचक्र वाले जानने ३ पद्मपुराणमें विष्णुजी कथन करतेहैं हे ब्रह्मन् शालग्राम पर्वतमें उत्पन्न हुआ जो पथ्थर तिसमें सदामैं निवास करताहों तिसमें वर्णचक्रादिभेदतें मेरेनामांकोंतू श्रवणकर ४

शुक्लोरक्तस्तथाकृष्णोद्विवर्णोवहुवर्णवान् एक
चक्रस्यसंज्ञास्तुपंचज्ञेयायथाक्रमम् ॥ ४ ॥
मोक्षंमृत्युंविषादंच दारिद्र्यंमदनंतथा ददा
तिपूजितोन्हणां तस्माद्ज्ञात्वार्चयेन्नरइति ५
अथद्विचक्राः पुराणसंग्रहे मत्स्यकूर्मौवराह
श्वेतवाराहवामनौ लक्ष्मीवराहगरुडौवरा
होधरणीयुतः ६ नृसिंहः परशुरामश्च वीर
रामश्चकेशवः लक्ष्मीनृसिंहःशेषश्चचोपें
द्रोदधिवामनः ॥ ७

शुक्ल और तैसें रक्त और कृष्ण और द्विवर्ण और वहुवर्ण वाला
यथाक्रमतें एकचक्रकीयां पंचसंज्ञा जाननीयां ॥ ४ ॥
मोक्षमिति पूजित हुआ मोक्ष और मृत्यु और विषाद और
दरिद्र और तैसे मदन यथा कामदेव पुरुषां कों देताहै तिस
कारणतें पुरुष जानकर्के पूजनकरे ५ इसतें उपरंत दोचक्रोंवा
लीयां मूर्तियां कथनकरतेहैं पुराण संग्रहमें मत्स्य और कूर्मऔर
वराह और श्वेतवाराह और वामन और लक्ष्मीवराह और ग
रुड और पृथिवी वराह ६ और नृसिंह और परशुराम और
वीरराम और केशव और लक्ष्मीनृसिंह और शेष और उपेंद्र
और दधिवामन ॥ ७ ॥

विष्णुर्दाशरथीरामोबलरामोहलायुधः रामो
विजयकोदंडोहृष्टपूर्वस्त्रिविक्रमः ॥ ८॥ कृष्णो
गोवर्धनः कल्कीपद्मनाभोहरिस्तथा प्रद्यु
म्नश्चानिरुद्धश्चगोपालो लक्ष्मिपूर्वकः ९ ॥
तथासंतानमदनोगोपालः श्रीयुतस्तथा ॥
बालकृष्णोहयग्रीवोगोपालोवंशपूर्वकः १०॥
मायानारायणश्चैवकेवलोगरुडध्वजः पुंड
रीकाक्षयज्ञौचश्रीधरश्चगदाधरः ॥ ११ ॥
लक्ष्मीपतिर्वासुदेवोमाधवः शेषशाय्यपि वि
दारणनृसिंहश्च नृसिंहोराक्षसांतकः १२॥

और विष्णु और दाशरथिराम और बलराम हलायुध और राम और विजयकोदंड हृष्टपूर्व और त्रिविक्रम ८ और कृष्ण और गोवर्द्धन और कल्की और पद्मनाभ और हरि और प्रद्युम्न और अनिरुद्ध और गोपाल और लक्ष्मी पूर्वक ९ और तैसेंसंतानमदन और गोपाल और श्रीयुतबाल कृष्ण बालकृष्ण और हयग्रीव और गोपाल और वंशपूर्वक १० और मायानारायण और गरुडध्वज और पुंडरीकाक्ष और यज्ञ और श्रीधर और गदाधर ११ और लक्ष्मीपति और वासुदेव और माधव और शेषशायी और विदारणकरणे वालानृसिंह और और राक्षसांतक नृसिंह १२

आकाशकालकपिलयोगपालनृसिंहकाः वि
द्युज्जिह्वोघोरकुक्षिविभीषणनृसिंहकाः १३
महाहरौनृसिंहौद्वौविवृतास्यस्तथैवच कलि
नाशकरामश्चदशकंठकुलांतकः ॥ १४ ॥ नर
शंकरपूर्वौद्वौरूपनारायणस्तथा दामोदरोल
क्ष्मिपूर्वःशुद्धश्चपुरुषोत्तमः ॥ १५ ॥ संकर्ष
णाधोक्षजौचदत्तात्रेयचतुर्भुजौ त्रैलोक्यमोह
नः कृष्णः सौभाग्यवरदस्तथा ॥ १६ ॥

ओर आकाशकालकपिल और योगपाल ओर नृसिंहक और विद्युज्जिह्व ओरघोरकुक्षि ओर विभीषणनृसिंहक १३ और महाहर ओर नृसिंहओर विवृतास्य ओर कलिनाशक और राम ओर दशकंठ कुलांतक १४ ओर नर शंकर ओर रूपनारायण ओर दामोदर ओर लक्ष्मीपूर्व ओर शुद्ध ओर पुरुषोत्तम १५ ओर संकर्षण और अधोक्षज ओर दत्तात्रेय ओर चतुर्भुज ओर त्रैलोक्यमोहन ओरकृष्ण ओर सौभाग्य वरद १६

रुक्मिणीविजयस्तद्वच्चूडामणिधनंजयौ पारि
जातहरःकृष्णःसीमंतकहरस्तथा १७ कालेय
मर्दनःप्रोक्तस्तद्वच्चाणूरमर्दनःकृष्णःसनातनयु
तःकृष्णोगोवर्धनस्तथा१८ सुदर्शनोमुरारिश्च
वनमालीचयोगराट् अमृताहरणस्तद्वद्गणेश
श्चतथैवच१९ श्रीवत्सलांछनस्तद्वद्धरणीधरए
वच देवदेवोजगद्योनिःस्वयंभूः कपिलस्तथा
२०धर्मराजोहरिहरौहैहयस्तद्वदेवच हिरण्य
गर्भस्तद्वत्स्याद्धंसःपरमपूर्वकः२१ द्विचक्रामूर्त्त
यश्चैतास्साकल्येनप्रकीर्त्तिताः २२

और रुक्मिणीविजय तिसकीन्याईं चूडामणि और धनंजयऔर पारिजातहर और कृष्ण और तैसेंसीमंतकहर १७और कालेयमर्दन कथन कीयाहै तिसकी न्याईं चाणूर मर्दन और कृष्णऔर सनातनयुत और कृष्ण गोवर्द्धन १८ और सुदर्शन और मुरारिवनमाली और योगराट् और अमृताहरण तिसकी न्याईं गणेश १९ और श्रीवत्सलांछन तिसकीन्याईं धरणीधर और देवदेव और जगद्योनि और स्वयंभू और कपिल २० और धर्मराज और हरि और हर और हैहय और हिरण्यगर्भ तिसकी न्याईं परम हंस २१ यहदोचक्रों वालीयां मूर्त्तियांहैं सो संपूर्णता करके कथन कीयांहैं २२।

ब्राह्मे दीर्घांचकाचवर्णांचविंदुत्रयविभूषिताम
त्स्याख्यासौशिलाज्ञेयाभुक्तिमुक्तिफलप्रदेति २३
विष्णुरहस्ये मत्स्यरूपंचदेवस्यदीर्घाकारंसु
भूषितम् विंदुत्रयसमायुक्तंकृष्णवर्णंसुशोभन
मिति ॥ २४ पाद्मे त्रयोमत्स्यादयः श्यामा
द्विचक्राःस्वांकसंयुताः तेषांसंदर्शनादेवसर्वा
न्कामानवाप्नुयादिति ॥२५॥ ब्रह्मांडे दीर्घद्वार
युतास्निग्धाद्वारमध्येद्विचक्रयुक् चक्रमेकंपु
च्छभागेदक्षिणेशंखसाकृतिः ॥२६॥ वामेप्रदृ
श्यतेरेखामत्स्यमूर्त्तिः शुभप्रदेति ॥ २७

ब्रह्मपुराणमें और कथन कीयाहै दीर्घेति दीर्घ और काच क्या
कचके वर्णवाली और तीन बिंदुकर्के भूषित मत्स्यनाम कर्के
सोशिला जाननी भुक्ति और मुक्तिके फलकोंदेतीहै ॥ २३ ॥
विष्णुरहस्यमें कथन कीताहै जोदीर्घाकार और सुभूषित और
तीन बिंदु कर्के युक्त और कृष्णवर्ण और सुशोभन सोदेवका म
त्स्य रूपहै ॥२४॥ पद्मपुराणमें और कथन कीयाहैं तीनजोहैं
मत्स्यादिक मूर्तियां और श्याम और दोचक्रों वालीयां और अ
पने चिह्न कर्के युक्त तिनोंके दर्शनतें संपूर्णकामांकों पुरुषप्रा
प्तहोताहै ॥२५॥ ब्रह्मांडपुराणमें और कथन कीयाहै दीर्घ द्वार
कर्के युतस्निग्धऔरद्वारमध्यमें दोचक्रोंकर्केयुत औरपुच्छभागमेंए
कचक्र और दक्षिणमें शंखकीआकृति ॥२६॥ औरवामपार्श्वमें
रेखादेखिये सो मत्स्यमूर्त्ति शुभ फलकेदेनवालीहोतीहै ॥२७॥

त्रिचक्राअपितत्रैवमूर्त्तयः परिकीर्त्तिताः नारा
यणोहरिहरोलक्ष्मीनारायणस्तथा ॥ २८ ॥त
द्वद्दाशरथीरामःशांताख्योवासुदेवकः हंसःकू
र्मयुतश्चैवकेशवोवहुरूपकः ॥ २९ ॥ अधोमु
खनृसिंहस्तुशिशुमारास्त्रिविक्रमः मत्स्यास्त्रिमू
र्त्तिःसीतेशः पुरुषोत्तमएवच ३० त्रिचक्रामूर्त्त
यश्चैताः समासेननिरूपिताः ॥ ३१ ॥ चतुश्च
क्राअपि तत्रैव चतुश्चक्राहरिहरसीतारामज
नार्दनाःत्रिविक्रमःकंसमर्दीलक्ष्मीनारायणस्त
था ॥ ३२ ॥ वटपत्रशयीरामोवुद्धस्तद्वच्चतुर्भु
जः गोवर्धनधरश्चैताश्चतुश्चक्राभवंतिहि ३३

तिसमें तीनो चक्रों वालीयां मूर्त्तियां कथन कीतीयांहैं नाराय
ण और हरिहर और तैसें लक्ष्मीनारायण २८ तिसकी
न्याईं दाशरथीराम शांतह नाम जिसका और वासुदेवकऔर
हंस और कूर्मयुत और केशवऔरवहुरूपक २९ और अधो
मुख नृसिंह शिशुमार और त्रिविक्रम और मत्स्य और
त्रिमूर्त्ति और सीतेश और पुरुषोत्तम ३० यह तीनोचक्रोंवालियां
मूर्त्तियां भैनेथोडेसेंकथनकीतीयांहैं ३१ चौंचक्रोंवालीयांमूर्त्तियांभी
तिसमेहैं चौं चक्रों वाले हरिहर और सीताराम और जनार्दन
और त्रिविक्रम और कंसमर्दी और तैसेंलक्ष्मीनारायण३२ और
वटपत्रशयी और रामऔर वुद्ध और तिसकी न्याईं चतुर्भुज
और गोवर्धनधर यह चौंचक्रोंवालीयां मूर्त्तियांहैं ३३

पंचचक्रमूर्त्तयोपितत्रैव सीतारामहरिहयौपंच
चक्राविमौस्मृतौ ॥३४॥ षट्चक्रास्तत्रैवश्री
मूर्त्तिस्तारकब्रह्मसीतारामस्त्रिमूर्त्तिकःपुरुषोत्त
मोऽव्ययश्चैवमधुसूदनएवच पदाभिरामः षट्च
क्रामूर्त्तयःसमुदीरिताः ३५ सप्तचक्राअपि तत्रै
व अनंतः प्रथमोज्ञेयोनृसिंहःसर्वतोमुखः सप्त
चक्राविमौद्वौतुविज्ञेयौपूर्वसूरिभिः ३६ अष्टच
क्रास्तत्रैव। महानारायणश्चैवचक्रपाणिपिता
महौ अनंतइत्येतिचत्वारोह्यष्टचक्रास्समीरिताः
३७ नवचक्रमूर्त्तयस्तत्रैव विष्वक्सेनाद्रूपसर्वा
नवचक्राः समीरिताः ॥ ३८ ॥

पंचमूर्त्तियांभी तिसमें कथितहैं सीताराम इति सीताराम और
हरिहय यहदोनो पंचचक्रों वालीयां मूर्त्तियां कथन कीतियांहैं
॥ ३४ ॥ छेचक्रोंवालीयांभी तिसमेंहैं श्रीमूर्त्ति और तारकब्रह्म
और सीताराम और त्रिमूर्त्तिक और पुरुषोत्तम और अव्यय
और मधुसूदन और पदाभिराम यह छेचक्रों वालीयांमूर्त्तियांक
थनकीतियांहैं३५सप्तचक्रोंवालीयांभी तिसमेंहैंप्रथम अनंतजान
ना और संपूर्णतें है मुखजिसका सोनृसिंहयह दोनोंसप्तचक्रवा
लियांवुद्धिमानोंनेजाननेयोग्यहैं ३६ औरअठचक्रोंवालियांभीति
समेंहैंमहानारायणऔरचक्रपाणि और पितामह औरअनंतयह
अष्टचक्रों वाले कथनकीयेहैं३७नवचक्रोंवालियांमूर्त्तियांतिसमेंहैं
विष्वक्सेनसेलेकरसंपूर्ण नव चक्रो वालियां जाननियां ३८

दशचक्रमूर्त्तयस्तत्रैव हृषीकेशश्चगोविंदस्त्वनं
ते विश्वरूपकः महाविष्णुश्चपातालनृसिंहः
पुरुषोत्तमः सत्यवीरश्चतेसर्वेदशचक्राः समी
रिताः ॥ ३९॥अथैकादशचक्राः शुद्धानंतोहृद
यचक्रोरुद्रानंतस्तथैवह ॥ ४० ॥ अथद्वादश
चक्रमूर्त्तयःज्ञेयोद्वादशचक्रस्तुमुकुंदःसूर्यएवच
॥ ४१ ॥ पुनरष्टचक्रादित्रयोदशचक्रांतामूर्त्त
यः वसुचक्रा अनंताश्च अनंताःपूर्वसंज्ञकाः४२
अथचतुर्दशचक्रादिचतुर्विंशतिचक्रांतामूर्त्तयः
चतुर्दशादिचक्रैश्चयुक्ताविश्वंभरादिकाः अनं
तास्तत्त्वसंख्यांताविज्ञेयाविबुधैःक्रमात् ४३

दशचक्रों वालियां मूर्त्तियां भी तिसमें हैं हृषीकेशइति हृषीकेश और गोविंद और अनंत और विश्वरूपक और महाविष्णु और पातालनृसिंह और पुरुषोत्तमऔर सत्यवीर सो संपूर्ण दश चक्रों वाले कथन कीतेहैं ॥ ३९ ॥ इसतेंउपरंत ११ यारांचक्रोंवालेकथन करतेहैं शुद्धानंत और हृदयचक्र और तैसें रुद्रानंतहै ॥ ४० ॥ इसतेंउपरंत द्वादशचक्रोंवालियां मूर्त्तियां कोंकथनकरतेहैं मुकुंद और तैसें सूर्ययहदोनोद्वादशचक्रोंवाले जानने ४१ फेर अष्टचक्रतेंलेकर्के त्रयोदशचक्रांतमूर्त्तियांहैंअष्टचक्रोंवालाअनंतऔरपूर्वसंज्ञावालेअनंतहैं४२इसतेंउपरंतचतुर्दश चक्रतों लेकर्के बीसचक्रांत मूर्त्तियांहैंचौदो चक्रों कर्के युक्त विश्वंभरादिहैंऔर अनंतचौवीस बुद्धिमानोंनेक्रमतेंजानने ४३

अथपंचविंशतिचक्रादियावत्संभवचक्रमूर्त्तयः
यावत्संभवचक्रांकास्ततोनंताविशुद्धका इति
निश्चक्राश्रपिमूर्त्तयस्तत्रैवनिर्वाणवद्धौतौज्ञेयौ
योगीशोविष्णुपंजरः सद्योजातोवामदेवईशा
नश्चंद्रशेखरः १ भवस्तत्पुरुषः शंभुशिवना
भिरघोरकः कुंडलिन्यश्चसर्वास्तुनिश्चक्रामू
र्त्तयोमताः २ एवंलक्षणसंपन्नाःशिलाश्चक्रैर
लंकृताः पूजनीयाविशेषेणसर्वकामफलप्रदाः
इति ३ अथविशेषलक्षणानिब्रुवन्नादावुद्देश
तोमूर्त्तीरनुक्रामति मत्स्याद्यादशतत्त्वैश्चसंमि
ताःकेशवादयः अनंतस्तुभवेदाद्योविश्वरूप
स्ततोपरः ४

अब पंजोचक्रादि मूर्त्तीकहतेहैं योगीश और विष्णुपंजर सद्यो जात और वामदेव और ईशान और चंद्रशेखर १ और भव औरतत्पुरुष शंभुऔरशिवनाभि और अघोरकऔर कुंडलिनीयह संपूर्णचक्रसें रहितमूर्त्तीयांहैं २ इसप्रकार लक्षणोकर्के युक्त और चक्रों कर्के अलंकृत कीतीयांहोयां विशेष कर्के शिला पूज नेंयोग्यहैं सो पूर्ण कामफलदेनेवालीयांहैं ३ इसतें उपरंत वि शेष लक्षणाकों कथनकरताहुआ पहले उद्देशतें मूर्तीयांका अनुक्रमकरताहै दश तत्त्वोंकर्के युक्त मत्स्यादि और केशवादि मूर्तियांहैं अनंत आद्यहै तिसतेंपरे विश्वरूपहै ॥ ४ ॥

वैकुंठस्तुततःपश्चाद्धयग्रीवचतुर्भुजौ गदाधर पुंडरीकाक्षौपुंडरीकसुदर्शनौ ५ योगेश्वरस्तथा विष्णुःपंचयज्ञस्वरूपधृक् दत्तात्रेयः शिशुमारो हंसः परमहंसकः६ ॥ लक्ष्मीपातिरितिख्यातो गरुडध्वजएवच वटपत्रप्रशायीचततोविश्वंभरा भिधः ७॥ पीतांवरःसत्यवीरः श्रीवाचामृतका रकः नरशेषस्तुगरुडोवनमालीततःपरम् ८॥ मुरारिश्चमुकुंदश्चततः श्रीवत्सलांछनः धरणी धरोयोगराजः श्रीमूर्त्तिः श्रीसहायकः ९

वैकुंठइति वैकुंठ तिसतें पीछें हयग्रीव और चतुर्भुज और गदा धर और पुंडरीकाक्ष और पुंडरीक सुदर्शन ५ और योगेश्वर तिसतें उपरंत विष्णु और यज्ञस्वरूप धृक् औरदत्तात्रेय औरशि शुमार और हंस और परम हंसक ६ और लक्ष्मीकापति कथन कीयाहै औरगरुडध्वज और वटपत्रप्रशायी तिसतें उपरंतविश्वं भर ७ और पीतांवर और सत्य वीर और श्रीवाचामृत कारक और नर शेष और गरुड और वनमाली तिसतें परे ८ मुरारि और मुकुंद तिसतें उपरंत श्रीवत्सलांच्छन और धरणीधर और योगराज और श्रीमूर्त्ति और श्रीसहायक ९

देवदेवश्चकपिलोऽव्ययः क्षीराब्धिशाय्यपि मुसलायुधनामाचचक्रपाणिस्ततःपरम् वहुरूपोजगद्योनिस्त्रिमूर्तिश्चततः परम् ॥ १० ॥ विश्वक्सेनोहैहयश्चएते वैविष्णुमूर्त्तयः सद्योजातोवामदेवोघोरस्तत्पुरुषस्तथा ॥ ११ ॥ ईशानशर्वसंज्ञौद्वौशंकरश्चंद्रशेखरः शिवनाभिर्भवः पश्चाद्गणेशस्त्वेकएवहि ॥ १२ ॥ सूर्यस्तथाकुंडलिन्यः पंचायत्नमूर्त्तयः हरिहरोधर्मराजः परमेष्ठीपितामहः ॥ १३ ॥

और देवदेव और कपिल और अव्यय और क्षीराब्धिशायी और मुसलायुध और चक्रपाणि और तिनतें उपरांत बहुरूप और जगत् योनि तिसतें परे त्रिमूर्तिहै ॥ १० ॥ विश्वक्सेन इति विश्वक्सेन और हैहय यहविष्णु मूर्त्तयहैं सद्योजात और बामदेव और अघोर और तत्पुरुष ॥ ११ ॥ और ईशान और शर्व संज्ञावाले दोहैं और शंकर और चंद्रशेखर और शिवनाभि और भव और एकगणेश १२ और तैसें सूर्य और कुंडलिनी यह पंचआयत्न मूर्तिहैं हरिहर धर्मराज और परमेष्ठी और पितामह १३

हिरण्यगर्भःस्वयंभूश्च तद्वत्प्रोक्तश्चतुर्मुखः
एताः प्रकीर्णकशिलाः शालग्रामसमुद्भवाः ॥
१४ उद्देशक्रमतस्तासामुच्यंतेलक्षणान्यथ
१५ तत्रादौमत्स्याद्यामूर्त्तयः मत्स्यःकूर्मः
सूकरोनारसिंहस्तद्वत्खर्वोभार्गवश्चाथरामःरा
मः सीताप्राणनाथस्तथान्योरामः प्रोक्तोरौ
हिणेयोपिबुद्धः ॥ १ ॥ तथाकल्कीतिवि
ख्यातोह्यवताराविमोद्दश नारायणस्यक्रम
तः कथ्यंतेलक्षणान्यथ ॥ २ ॥
अथकूर्ममूर्त्तिलक्षणानि पद्मपुराणेकूर्मस्याका
रचक्रांकाशिलाकूर्मः प्रकीर्तितइति ॥ १ ॥

और हिरण्यगर्भ औरस्वयंभू और तिसकीन्याई चतुर्मुख कथन कीताहै यहशालग्रामतेउत्पन्नहोईया प्रकीर्णकशिलाहैं १४ उद्देशक्रमतें तिनोंकेलक्षण कथन करतेहैं तिसके आदमेंमत्स्यादि मूर्त्तियांकथन करतेहैं मत्स्यऔरकूर्म और सूकरनारसिंह तिसकी न्याईखर्व और भार्गव रामकया पर्शुराम और सीताकेप्राणनाथ राम और रोहिणेयराम कथनकीताहै क्याबलदेव औरबुद्ध १तथे ति तैसें कल्कीकथन कीयाहे विभुनारायणकेदशअवताहैंतिन केक्रमसें लक्षणाकों कथनकरतेहैं २इसतें उपरंत कूर्ममूर्त्तियोंके लक्षण पद्मपुराणमें कथन कीयेहैं कूर्मस्येति कूर्मके आकारकी न्याई है चक्र जिस शिलामें सोकूर्मकथन कीताहै १

ब्राह्मे कूर्मस्तथोन्नतःपृष्ठेवर्त्तुलावर्त्तशोभनःह रितंवर्णमाधत्तेकौस्तुभेनचचिह्नितः ॥ १ ॥ पुराणसंग्रहे तत्तल्लक्षणसंयुक्तंभानोर्वलयपंच कम् कूर्मरूपंसचक्रंयद्दुर्लभंसर्वकामदमिति ॥ २ ॥ विष्णुरहस्ये कूर्मस्तथोन्नतः पृष्ठेवर्त्तुला वर्त्तसंयुतः हरिद्वर्णः समाख्यातःकौस्तुभेनैव चिह्नितः ३ पाशांकुशांकितंदेवंनीलवर्णंविशार दम् कूर्मदेवंभजेतसद्यश्चलांश्रियमवाप्नुयात् ४ इंद्रनीलनिभास्थूलात्रिरेखालांछितोन्नता

ब्रह्मपुराण में और कथन कीता है जो पृष्ठमें उच्चा और गोलाकार और सुंदर और हरित वर्णको धारताहुआ और कौस्तुभकर्के चिह्नित सो कूर्महोताहै १ ॥ पुराण संग्रहमें और कथनकीयाहै तिनोंलक्षणोकर्के युक्त और सूर्यकी न्याईं गोल हैं पंचचक्र जिसमें और कूर्मरूप सचक्र पुरुषको पृथिवीमेंदु र्लभहै सो संपूर्ण कामनोंकेदेनेवाला होताहै २ विष्णुरहस्यमें और कथन कीताहै पृष्ठमें उच्चा और वर्तुलावर्त्त कर्के युक्त और हरिद्वर्णकर्के प्रकट और कौस्तुभकर्के चिह्नितसो कूर्महोताहै ३ पाश और अंकुश कर्के चिह्नित और नीलवर्ण वाला ऐसा जो कूर्मदेव तिसको जोभजताहै सोअचललक्ष्मीको प्राप्तहोताहै ४ इंद्रनीलेति इंद्रनील मणिकी न्याईं है प्रकाश जिसका और स्थूल और तीनहैं रेखाजिसकीयां और चिह्नोकर्के उच्चा ॥

कूर्मम्। रिवक्रांतादुर्लभासर्वकामदा ५॥ कूर्म चक्रोद्भवंपृष्ठेवर्तुलावर्तपूरितं सर्वकामप्रदं ज्ञेयंसुखसौभाग्यवर्द्धनम् ६ अंतेमोक्षोभवेत्तस्यपूजकस्यनसंशयः कूर्मः स्यादुन्नतशिराः पृष्ठभागेखुरान्वितः ७ विख्यातोदुर्लभः सर्वमनोरथफलप्रद इति ॥ ८ वराहपुराणे वर्तुलः कमठाकारोवनमालाङ्कचक्रवान् श्यामाभोहेमबिंदुश्चकूर्मस्तुभुविदुर्लभ इति ९ ग्रंथांतरे वर्तुलंश्यामस्दृढलपृष्ठभागेतथोन्नतम् द्विचक्रंवल्गुरेखाढ्यंकूर्मदेवंसनातनम् ॥१०॥

अंतजिनकावक्रा ऐसीजो कूर्ममूर्तिसोदुर्लभहै और संपूर्णकामकेदेनेवालीहोतीहै ५जिसकीपृष्ठमें कूर्मचक्रका उद्भवहोवे और वर्तुलकहा गोलाकारका आवर्त तिसकर्के पूरित सो संपूर्णकामके देनेवालाहै और सुखसौभाग्यके देनेवालाहै ६ तिसका पूजनकरणेवाला जोपुरुष सोमोक्षको प्राप्तहोताहै इसमें कुच्छ संशयनहि जो कूर्मऊंचे शिरवालाहोवे और पृष्ठभागमें खुर वर्के युक्त ७ सोदुर्लभहै और संपूर्ण मनोरथ फलके देनेवालाहोताहै ८ वराहपुराणमें और कथनकीयाहै वर्तुलकहा गोलाकार और कमठकहा कछोयकीसी है आकार जिसका और वनमालाके चिह्नवाला और दोचक्रोंवाला और श्यामहै आभाजिसकी स्वर्णकीहै बिंदुजिसमें ऐसाजो कूर्म सोपृथिवीमें दुर्लभहै ९ वर्तुलाकार शुद्ध श्याम पीठमें ऊंचा और दो चक्रों वाला और सुंदर रेखा युक्त ऐसा कूर्म होताहै ॥ १० ॥

चतुर्धाकूर्ममूर्त्तिःस्यात्पार्श्वभागेखुरान्विता वि
ख्याता दुर्लभासर्वमनोरथफलप्रदा ॥ ११ ॥
बिंदुत्रयांकिताशंखचक्रध्वजयुतापिवा दीर्घं
दक्षिणवामास्याद्भालोर्द्धलक्षपंचकैः॥ १२ ॥
भूषिताकूर्ममूर्त्तिः स्याद्दुर्लभासर्वकामदा वृ
त्तायताकूर्ममूर्त्तिः कनकच्छाविसंयुता ॥ १३ ॥
स्नुहीपुष्पाकृतिर्वापिचक्रस्योभयपार्श्वतः कू
र्ममूर्त्तिः खगेशानसर्वकामफलप्रदेति ॥१४ ॥

चतुर्धेति जो चार प्रकारकी कूर्म मूर्त्ति और एक पासेमें खुर करके युक्त और प्रकट सो दुर्लभहै और संपूर्णमनोरथोंके फल कोदेतीहै ११ और तीनबिंदुकरके चोहत और शंख औरचक्र और ध्वजा इन करके युक्त दक्षिण और वाम पासेमें दीर्घ और सूर्यके जो पंच चक्र तिनो करके भूषित१२ऐसी जो कूर्म मूर्त्ति सो दुर्लभहै और संपूर्ण कामके देनेवाली होतीहै और गोलाकार जो कूर्म मूर्त्ति और स्वर्णके प्रकाशकी न्याई १३ और चक्रके दोनो पासयो में स्नुही क्या डंडे थोरके पुष्प की न्याईहै आकृति जिसकी हेगरुड ऐसीजो कूर्ममूर्त्ति सो संपूर्णकाम फलको देतीहै १४

गारुडे वर्त्तुलाकमठाकारादीर्घद्वारा तुवैखग
नाभिचक्रयुतारम्याकूर्माकारातुपार्श्वतः १५
स्थिरासनाज्वलत्पृष्ठाउन्नतानीललोहिता कू
र्ममूर्त्तिरितिख्यातापुत्रपौत्रविवर्द्धिनी ॥१६॥
अथवराहमूर्त्तिलक्षणं चतुर्धावराहः स्या
त्तत्राद्यःशुद्धसंज्ञकःपृथ्वीवराहस्त्वपरस्ततोल
क्ष्मीवराहकः श्वेतवराहकश्चैवतेषांलक्षणमु
च्यते १

गरुड पुराणमें और कथन कीताहै हेगरुड वर्तुल
क्या गोलाकार और कमठ क्या कछोपडकी न्याई आ
कार और दीर्घ मुखवाली और नाभि चक्र करके युक्त और रम्य
क्यासुंदरऔरपासेतें कूर्माकार १५औरस्थिरासन और प्रकाशवाली
पृष्ठजिसकी और उंची और नीललोहित ऐसी कूर्ममूर्त्ति
कथन कीतीहै सो पुत्र और पोत्रके वधाने वाली होतीहै १६
इसतें उपरंत वाराह मूर्त्तिके लक्षणकों कथन करतेहैं चतुर्धेति
इसमें वाराह क्या सूकरकी चारप्रकारकी मूर्त्तिहै प्रथम शुद्ध
संज्ञक क्या शुद्धवराह और पृथ्वी वराह और तिसतेंपरे ल
क्ष्मीवराहक और श्वेतवाराहक तिनोका लक्षण कथन क
रताहै १

तत्रशुद्धवराहलक्षणं पद्मपुराणे वराहस्सतु विज्ञेयश्चक्रंयस्यसहांबुजं तस्यसंपूजनाद्देही प्राप्नोतिमनसेप्सितम् २ वराहाकृतिराभुग्न श्चक्रादिभिरलंकृतः वराहइतिसंप्रोक्तःसर्व कामफलप्रदइति ३ ग्रंथांतरेपि पृष्ठरेखासमा युक्तो वराहाकृतिरेववा आस्यमात्रंतुवैताक्ष्य पादलांगूलकंतथा ४ अतसीकुसुमप्रख्यानी लोत्पलनिभातथा दीर्घाकारातुवैदीर्घाहारयु क्तासजर्जरा ५

तिसमें शुद्धवराहका लक्षण पद्मपुराणमें कथन कीताहै जिसको कमलकाहै चक्र सोवराह क्या सूकर मूर्त्ति जान नोतिसके पूजनतें पुरुष संपूर्ण कामनाके फलको प्राप्तहोता है २ और वराहकीन्याईहैआकृतिजिसकी और आभुग्नक्यातेरडी और चक्रोंकरकेंजोअलंकृतसोवराहमूर्तिसंपूर्णकामनाकेदेनेवाली कथनकीतीहै ३ और ग्रंथमेंकथनकीताहैपृष्ठमेंजोरेखातिसककें यु क्त और वाराहकी न्याईहै आकृति जिसकी अथवा मुखमात्र हैगरुड वा सूरकी न्याई है पाद वापुच्छ जिसकी ४ और अल सीके फूलकी न्याई प्रकट और नीला जो कमल तिसकीन्या ई है कांतिजिसकी और दीर्घ आकार वाली और हार करकें यु क्त और जर्जरा क्या जीर्ण ५

पृष्ठोन्नताचदीर्घास्याबामतश्चक्रयुग्मकम् दृश्य
ते कौस्तुभ.कारारेखापृष्ठेचपार्श्वतः ६ वराह
मूर्तिरित्युक्ताराज्यलक्ष्मीप्रदायिका पुत्रपौत्रा
दिवृद्धिंचप्रजाज्ञानप्रदासदेति ७ वाराहे वरा
हृशक्तिलिंगंतुचक्रेचविषमेस्थिते इंद्रनीलनिभं
स्थूलं त्रिरेखालांछितंशुभमिति ८ कूर्मांगानी
वचपरेद्वाराहंरूपमव्ययम् गोष्पदंयत्रदृश्ये
त्तवराहोनात्रसंशयः९ अथधरणीवराहलक्षणं

पृष्ठतें उंचा और दीर्घ और बामपार्श्वतें चक्र युग्म और कौ-
स्तुभ मणिकी न्याई आकार वाली पृष्ठमें और पार्श्वतें रेखा
ऐसी मूर्तिजो देखिये सो वराह मूर्ति कथन कीतीहै सोराज्य
लक्ष्मी कों देतीहै और पुत्र पौत्रादियांकों बधातीहै प्रजा और
ज्ञानकोंसदादेतीहै ७ वराहपुराणमें और कथनकीताहै शक्तिका
है चिह्न जिसमें और विषम चक्रों करके स्थित और इंद्रनीलम
णिकी न्याईहै कांतिजिसकी और स्थूल और तीनरेखोंवालाहै
चिन्ह जिसमें और शुभ सो वराहमूर्त्ति होतीहै ८ जिस अव्यय
रूपकों कूर्मके अंगोंकी न्याई देखिये सो वराह मूर्त्ति होतीहै
और जिसमें गौकापैर देखिये सोभी वराह मूर्त्ति होतीहै इसमें
कुछ संशयनहि ९ इसतें उपरंत धरणी बराहका लक्षणहै ॥

वाराहे दीर्घास्यंश्यामलाकारंपृथग्वलश्चवे
ष्टितं द्वारदेशेऽलसच्चक्रंभूवराहंविदुर्बुधाः १०
पुराणसंग्रहे अधश्चक्रमसंदिग्धंपृष्ठोन्नतमपी
नकम् वराहंधान्यफलदंसर्वैराराधनीयकं ११
अंकुशाकारवदनंभूवराहंशुभंविदुरिति ॥ अथ
लक्ष्मीवराहलक्षणम् वाराहे दक्षपार्श्वगतेचक्रे
समलग्नेप्रदेशतः वनमालायुतंलक्ष्मीवराहःप
रिकीर्त्तितइति १२

वराहपुराणमें कथन कीयाहे दीर्घहै मुख जिसका और श्यामहै आकार जिसका और भिन्न चक्रों करके वेष्टित और द्वार देशमें प्रकाशमान है चक्र जिसमें तिसकों बुद्धिमान् वराह कथनकरतेहैं १० पुराण संग्रहमें कथन कीयाहै अधइति अधाहे चक्र जिसके और असंदिग्ध और पृष्ठतें उंचा और अपीनक क्या नमोटा ऐसा जो वराह सो धान्य फल कों देताहे और तिसकी संपूर्ण पुरुषोंने आराधनाकरणी चाहिये ११ और जिसके मुखमें अंकुशका आकार होवे ऐसा जो भूवराह तिसकों शुभ जानतेहैं इसतें उपरंत लक्ष्मी वराहके लक्षण कों कथन करतेहैं वराह पुराणमें जिसके दहनेपासेमें प्रदेशतें समलग्नक्याइको जैसेदोचक्र हैं और वनमालाकर्के युक्त सोलक्ष्मी वराहकथन करीदाहै १२

अथश्वेतवराहलक्षणं वाराहे दीर्घघोणासमा युक्तमेकदंष्ट्रंसुनिर्मलंवनमालायुतंरम्यंश्वेतवाराहमुच्यते १३ नृसिंहपुराणे गोक्षीरवर्णमतुलंवनमालांकितंतथा श्वेतवाराहकंनामतस्यपुण्यमनंतकमिति १४ इतिवराहमूर्त्तिलक्षणानि अथविदारणराक्षसांतकनृसिंहयोर्लक्षणम् ब्रह्मांडे विदारणाभिधानंस्यान्नृसिंहंदीर्घकेसरम् अंतश्चक्रंवृहद्द्वारंदाक्षिणोन्नतमस्तकम् विदारणमितिख्यातंदंष्ट्राभ्यामुपशोभितम् १

इसतें उपरंत श्वेत वराह का लक्षण कथन कीयाहै वराह पुराणमें दीर्घहै नासा जिसकीयां एक दाडा करके युक्त और निर्मल और वनमाला करके युत और रम्य सो श्वेतवराह कथन कीयाहै १३ नृसिंहपुराणमे और कथन कीयाहै गोके दूधकी न्याईहे रंग जिसका औरअतुल औरवनमालाका चिन्ह जिसमें तिसका श्वेतवराह नामहै तिसके पूजनका पुण्य अनंत होताहै १४इसतें उपरंत विदारणनृसिंह और राक्षसांतकनृसिंहकेलक्षण कों कथन करतेहैं ब्रह्मांडपुराणमें विदारणेति विदारण नामक कें जो नृसिंह कैसाहे दीर्घहैं वाल जिसके और अंतरमें चक्र और वाहरमें हे मुख जिसका औरदक्षिणों उचाहै मस्तक जिसका और दाडोंकरके सुंदर सो विदारण कथन कीताहै १

ब्रह्मचर्यविलोपेन नरसिंहोर्चितोयदिचौरशत्रु भयंतस्यवह्निनादह्यतेगृहम् ॥ ति २ कपिलोग्रंथि मालाढ्योरक्तविंदुसमान्वितः विदारणनृसिंहो सौदीर्घकेसरशोभितः ३ अथराक्षसांतकनृसिंह लक्षणं ब्रह्मांडे बहुच्छिद्रंभिन्नचक्रंसुवर्णकनका चितम् तद्राक्षसांतकंज्ञेयंनृसिंहंगृहदाहकम् ४ अस्पष्टचक्रमत्स्यास्यंकेशभारमनोहरं तच्छि न्नराक्षसंज्ञेयंनृसिंहंगृहदाहकम् ५ अथवामन मूर्त्तिलक्षणम् वामनाख्यंहरेर्मूर्त्तिर्द्विविधापरि कीर्तिताशुद्धवामनसंज्ञैकात्वपरादधिवामनाद्

जेकरब्रह्मचर्यतें विनापुरुषनरसिंहको पूजताहैतिसकों चोरशत्रुतें भयहोताहै औरतिसका गृह अग्निकरकें दग्धहोताहै २ और कपि लवर्णवाला और ग्रंथिमाला करकें युक्त और रक्त विंदुकरकें युक्त और दीर्घ जो बालतिनोंकरकें सुंदर सो विदारण नृसिंह कथन कीयाहै ३ इसतें उपरंतराक्षसांतकके लक्षणकों कथन करतेहैं ब्रह्मांड पुराण में बहुत छिद्रोंवाला और भिन्नहै चक्र जिसमें और सुंदर वर्णवाला और स्वर्णकीयांहैं रेखा जिसमें ऐसाजो नृसिंह सो घरके दाहकरणे वाला राक्षसांतक जानना ४ और अस्पष्टहै चक्र जिसमें और मछकी न्याईं है मुख जिसका और बडे हैं केश जिसके सो नृसिंह गृहके दाहकरणेवाला छिन्नरा क्षस जानना ५ इसते उपरंत वामन मूर्तिका लक्षणकथनकरते हैं वामन नामककें हरिकी मूर्ति दोप्रकारकी कथन कीतीहै सो शुद्धवामन और दधिवामन नामककेंहै ६ ॥

शुद्धवामनलक्षणं पद्मपुराणे वामनाख्योभवे
द्देवोहूस्वोयः स्यान्महाद्युतिः ऊर्ध्वचक्रस्त्वध
श्चक्रः सोपिस्वार्थप्रदोनृणाम् ॥ ७ ॥
ब्रह्मपुराणे ॥ अतसीपुष्पसंकाशोविंदुनापरि
परिशोभितः वर्त्तुलश्चातिहूस्वश्चवामनः प
रिकीर्त्तित इति ॥ ८ ॥ पुराणसंग्रहे अ
तसीपुष्पसंकाशोविंदुनापरिभूषितः पारिजा
तध्वजोवज्रोवर्तुलश्चातिशोभनः ॥ ९ ॥ अ
न्नपानसम्वृद्धिः स्यात्सुखसौभाग्यवर्धनः आ
रोग्यसुखदश्चैववामनः परिकीर्त्तित इति १०

शुद्धवामनका लक्षण पद्मपुराणने कथन कीयाहै जो हूस्व
क्या छोटा और बडेतेजवाला और उपर है चक्र जिसके
और अधः चक्र वाला सो वामन नाम करके देव है सो
पुरुषोंको स्वार्थके देने वाला होताहै ७ पद्मपुराणमें और
कथन कीताहै जो अलसीके पुष्पकी न्याई प्रकाशमान और
विंदु करके शोभायमान और वर्त्तुल क्या गोलाकार और छो
टा जैसा सो वामनकथन कीयाहै ८ पुराण संग्रहमें और कथ
न कीयाहै जो अलसीके पुष्पकीन्याई प्रकाशमान और विंदु
करके भूषित और पारिजात वृक्षकीहै ध्वजा जिसमें और वज्रके
चिह्नवाला और गोलाकार और सुंदर ९ सोअन्नपानकीवृद्धिदेने
वालाहोताहै और सुखसौभाग्यकेवधानेवाला और आरोग्यऔर
सुखके देनेवाला वामन कथन कीयाहै ॥ १०

ग्रंथांतरे कंदर्पकुसुमाकाररेखापंचकभूषितः
वर्तुलश्चातिह्रस्वश्चवामनःपरिकीर्त्तितइति
११ वाराहे इंद्रनीलनिभाभासंवनमालांबुजो
ज्ज्वलम् ह्रस्वंचवर्त्तुलंचैववामनंपरिचक्षतइ
ति १२ ब्रह्मांडे ः र्त्तुलांस्निग्धमत्यंतंस्पष्टच
क्रसमन्वितम् ह्रस्वमुन्नतमुच्चैश्च दीर्घास्यमति
गव्हरम् १३ स्फुरद्रेखावलियुतंनाभिस्तस्यो
न्नताभवेत् चक्रस्योभयपार्श्वेतुस्नुहीपुष्पाकृति
र्भवेत् १४ केशभारंतुवैतार्क्ष्यंदृश्यतेचक्रपार्श्व
तःवामनोगृहिणांश्रेष्ठःसुखसौभाग्यसंपद १५

ग्रंथांतर में और कथनकीयाहै कंदर्पइति कंदर्पके पुष्पकीन्या
ईहै आकार जिनका ऐसी पंचरेखोंकर्केभूषित और वर्त्तुल क्या
गोलाकार और ह्रस्वक्याछोटासोवामन कथनकीयाहै ११ वरा
हपुराण में और कथन कीताहै जो इंद्रनीलमणिकी न्याई प्र
काशवाला और वनमाला और कमलके प्रकाशवाला और
छोटाजैसा और गोलाकार सोवामनकथनकीताहै १२ ब्रह्मांडपु
राणमें और कथन कीताहै वर्त्तुल क्या गोलाकार और अति
शयकर्कोंचिंदाऔर स्पष्टचक्र कर्कें युक्त और ह्रस्व और अतिश
यकर्कें उच्चाऔरवडाहैमुखजिसका और अतिगव्हर १३ और
प्रकाशमान जो रेखाकीपंक्तितिस कर्कें युक्ततिसकीनाभिउच्ची
होवे और चक्रकेदोनोंपासयोंमें थोरके पुष्पकी आकृतिहोवे १४
हेगरुड चक्रके पासेतें केशभार जिसके देखियेसोवामनगृहस्थी
यांकोंश्रेष्ठहोताहैऔरसुखऔरसौभाग्य और संपदाकोंदेताहै १५

गृहपुत्रान्नवृद्धिंचभूपालंदिशतिध्रुवम् मध्य
चक्रंवामनंचनृणामोप्सितदायकम् ॥ १६
अतसीपुष्पसंख्यं च किंचिदुन्नतमस्तकम् त
द्वामनंकामदंतु किंचिद्व्यक्तचक्रकम् ॥ १७ ॥
वर्त्तुलंनीलमेघाभंवनमालासमन्वितम् सूक्ष्म
रंध्रंवृहत्कुक्षिवामनं भुविदुर्लभमिति ॥ १८ ॥
अथपरशुराममूर्त्तिलक्षणम् जामदग्न्यस्तुभ
गवान्द्विविधःपरिकीर्त्तितः एकस्तूग्रतया
ख्यातोद्वितीयः शांतसंज्ञकः ॥ १९ ॥

राजाको निश्चयकर्के गृह और पुत्र और अन्नकी वृद्धि कर्ताहै और जिसवामनके मध्यमे चक्र होवे सोपुरुषोंको इच्छितफल देताहै १६ अलसीके पुष्पकीन्याई प्रकाशमान और कुच्छक उच्चाहै मस्तक जिसका और कुच्छक प्रकटहै चक्र जिसमें सो वामन कामनाके देनेवालाहोताहै १७ और वर्त्तुल क्या गोला कार औंर नीले मेघकी न्याईहै आभाजिसकी और वनमाला कर्के युक्त और सूक्ष्महैं छिद्रजिसमें और बडीहै कुक्षि जिसकी ऐसाजो वामन सोपृथिवीमे दुर्लभहै १८ इसतें उपरंत परशुराम कीमूर्त्तिका लक्षण कथनकरतेहैं परशुरामकीयांदोमूर्त्तिया कथन कीनियांहैं एकतो उग्र दूसरी शांतसंज्ञावालीहै १९ ॥

पुराणसंग्रहे सितकृष्णारुणोपेतंदीर्घाकारंदृ
ढखिलम् भिन्नभागगतंचक्रंवामदक्षिणतोपिवा
चक्रभागेभवेद्बिंदुः परश्वाकृतिरेववा २० ॥
पृष्ठेवापार्श्वतोवापिरेखादंष्ट्राकृतिर्भवेत् जाम
दग्न्यस्तुभगवानर्चनीयोमहीभृतामिति २१
विष्णुरहस्ये बाणचापांकितोदेवः स्वर्णवर्णः
सुखासनः जमदग्निसुतोरामोमुक्तिंभक्तानृप्र
यच्छतीति २२ पुराणांतरे लसत्परशुरेखा
ढ्योदूर्वाश्यामस्तथोन्नतः नाभिदेशलसच्चक्रो
रामोसौजमदग्निज इति २३

पुराणसंग्रहमेकथनकीयाहै सित क्या चिट्टा और कृष्ण और अ
रुणक्या लाल इनोवर्णोंकरके युक्त और दीर्घ आकारवाला और
बडीहै खुडजिसमें और वाम और दक्षिणमें भिन्नभिन्नचक्रहोवे
वाचक्रके भागमें बिंदुवापर्शुकी आकृति होवे सोपरशुरामकी
मूर्त्ति होतीहै २० पृष्ठइति जिसकी पृष्ठमें वा पासेंतें दाडाकी
न्याईरेखा होवेसोजामदग्न्यक्या परशुरामहोताहै राजोंनेपूजने
योग्यहै २१ विष्णुरहस्यमें औरकथनकीयाहै बाण और चापक्या
धनुषतिनोंकाहै चिन्ह जिसमे सो देव और स्वर्णके वर्णवाला
और सुखवालाहै आसन जिसका ऐसा जो जमदग्निका पुत्र
राम क्या परशुराम सो भक्तोंको मुक्ति देताहै ॥ २२ पुराणां
तरमें औरकथनकीयाहै प्रकाशमान जो कुहाडेकी रेखा तिस
करके युक्त और घासकीन्याईं श्याम और उच्चा और नाभिदेशमें
प्रकाशमानहै चक्र जिसके सोजमदग्निका पुत्र परशुरामहै २३

अथ शांतपरशुरामलक्षणं पुराण संग्रहे केव
ललांच्छनंपृष्ठपरश्वाकृतिरेववा सजामदग्नि
र्भगवान्शांताख्यः शांतिदोर्चित इति २४ ॥
दाशरथिरामलक्षणं पुराणसंग्रहे राममूर्ति
द्वादशधातत्राद्योरामएवाहि रामवालोद्वितीयः
स्यात्सीतारामःतृतीयकः२५ तारकब्रह्मसंज्ञौ
चदशकंठकुलांतकः वीरोविजयकश्चान्योहष्ट
कोदंडपूर्वकः २६ कालिनाशकरोरामः श्री
रामश्चततः परम् पद्माभिरामसंज्ञःस्याद्द्वाद
शः परिकीर्तित इति २७

इसतें उपरंत शांतपरशुरामका लक्षण पुराण संग्रहमें कथन
कीयाहै जिसकी पृष्टमें घुवाडेकी न्याईं जो रेखा तिसका
चिन्हहोवे सो परशुराम शांत नाम करकें होताहै सो पूजिया
हुआ शांतिकों देताहै ॥ २४
दशरथका पुत्र जो रामचंद्र तिसका लक्षण पुराण संग्रहमें
कथन कियाहै राममूर्त्तिरिति बारां प्रकार की रामचंद्रकी मू
र्ति कथन कीतीहै तिनोमें प्रथम रामचंद्र १ दूसरी रामबाल
२ और तीसरी सीताराम ॥ ३ ॥ और तारक४ब्रह्म ॥५॥और
दशकंठकुलांतक ॥ ६ ॥ और वीर ॥ ७ ॥ और विजयक ८
और हष्टकोदंडपूर्वक ९ और कालिनाशकर १० और श्रीराम
११ और पद्माभिराम १२ यहबारां मूर्त्तियां कथनकीतीयांहैं२७

राममूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मपुराणे रामचंद्रस्तथास्नि
ग्धो दूर्वाभश्चक्रशोभनः पृष्ठदंडस्तथापार्श्वेरे
खाद्वितयसंयुत इति २८ पुराणसंग्रहे वाणेन
धनुषायुक्तः पद्मरेखासमन्वितःकोदंडीकुक्कुटां
डाभोमध्येचक्रसमन्वितः २९ कल्पद्रुमसमा
युक्तः पृष्ठश्यामवर्णकः रामोदाशरथिर्ज्ञेयो
दुर्लभोभुवनत्रये इति ३० ग्रंथांतरे धनुर्बाण
युतंदीप्तंस्थूलदीर्घंसबिंदुकम् नाभिचक्रंबहु
च्छिद्रंश्यामंदाशरथिंविदुरिति ३१

रामचंद्र की मूर्त्तिका लक्षणब्रह्मपुराणमें कथन कीयाहै रामचंद्र इतिजोस्निग्ध और घासकी न्याईहै आभा जिसकी और चक्र करकें शोभायमान और पृष्ठमें दंड और तैसें पासेमें दोरेखां करकें युक्त सो रामचंद्रकी मूर्त्ति कथन कीतीहै२८पुराण संग्रह में और कथन कीयाहै वाण और धनुष करकेंयुक्त और पद्मकीरेखा करकें समन्वित और कोदंड क्या धनुषहै विद्यमान जिसमें और कुकुडके आंडेकी न्याईहै आभा जिसकी और मध्यमेंहै चक्रजिसके २९ और कल्प वृक्षके सदृश और पृष्ठमें श्यामवर्ण वाला सो दशरथका पुत्र रामचंद्र जानना सो तीन भुवनोमें दुर्लभहै ॥ ३० ॥ ग्रंथांतरमे और कहाहै धनुषऔरवाणकरकेंयुक्त और प्रकाशमानऔरस्थूल और दीर्घ और बिंदुकरकें युक्त औ नाभिमें हे चक्र जिसके और बहुत छिद्रों वाला और श्याम सो दश रथका पुत्र रामचंद्र जानना ३१

गरुडपुराणे एकचक्रातुवदनेकृष्णवर्णासुशोभ
ना सारामममूर्त्तिर्विज्ञेयापूजकस्यफलप्रदेति ३२
अथसीतारामलक्षणं ब्रह्मपुराणे एकस्मिन्नेववद
नेचतुश्चक्रोंबुदप्रभः चापबाणांकुशच्छत्रध्वज
चामरसंयुतः ३३ वनमालाधरोदेवः सीतारा
मः प्रकीर्त्तितः सर्वसौभाग्यदःप्रोक्तःसर्वत्रवि
जयप्रदः ३४ अथवा द्वारद्वयेचतुश्चक्रःक्रम
तश्चैकचक्रवान् बाणतूणीरचापाढ्यः सीतारा
मः स्रगन्वितः ३५

गरुड पुराणमें और कथन कीताहै जिसके मुखमें एकचक्र और श्याम वर्ण वाली और सुंदर सो रामचंद्र की मूर्त्तिजाननी पूजनवाले पुरुषकों फलके देने वालीहोतीहै ३२ इसतें उपरंत सीतारामका लक्षण ब्रह्मपुराणमें कथन कीताहै जिसके मुखमें चार चक्र और मेघकी न्याई है प्रभा जिसकी और चाप क्या धनुष और बाणऔर अंकुशक्या कुंडा और छत्र औरध्वजा और चामर इनोकर्के युक्त३३ और बनमालाके धारणेवाला जो देव सो सीताराम कथन कीयाहै सो संपूर्ण भाग्यके देनें वाला और संपूर्ण स्थान में जयके देणेवाला कथन कीताहै ३४ और कथन करतेहैं दोनो द्वार क्या मुखोंमें चार चक्र होण अथवा एक मुख में एक चक्रहोवे और बाण और भथ्यडा और धनुष कर्के युक्त और बनमाला कर्के युक्त सो सीताराम कथन कीयाहै ॥ ३५

पाद्मे कुक्कुटांडसमाकारश्चधश्चक्रेचकुंडलम् द्वार
देशेसमेचक्रेकल्पवृक्षसुचिह्नितः ३६ वामपार्श्वे
शिरश्चक्रो रेखया शुभलांछितःसीतारामःसवि
ज्ञेयोभुक्तिमुक्तिफलप्रद इति ३७ तारकब्रह्मसी
तारामलक्षणंपाद्मे अंतःक्षतेनधनुषागोखुरेणच
लांछितःविलत्रयसमायुक्तःखड्गदर्शनसंयुतः
३८श्यामलोन्नतपृष्ठश्चस्थूलजंबूफलाकृतिःसी
तारामःसविज्ञेयस्तारकब्रह्मसंज्ञितइति ॥ ३९
दशकंठकुलांतकरामलक्षणं ब्रह्मांडे

पद्मपुराणमें और कथन कीयाहै कुक्कुटेति कुक्कुट के आंडेकी न्याईहै आकाराजिसकाऔर अधासेंहै चक्र और कुंडलजिसमें और द्वारदेशक्यामुखमें दोचक्र जिसकेऔर कल्पवृक्षकाहै चिह्न जिसमें ३६ और वामपासेमें और शिरमें चक्र जिसके और रेखाकर्के सुंदरहै चिन्हजिसमें सो सीतारामजानना सो भुक्ति और मुक्तिकेदेनेवालाहोताहै ३७ तारकब्रह्म जो सीताराम ति सका लक्षण पद्मपुराणमें कथनकीयाहै अंतरजोक्षत और धनुष और गोखुरतिसकर्के लांछित क्या चिन्हित और तीन जो छिद्र तिनोकर्के युक्त औरखड्गऔरसुदर्शनचक्रकर्केयुक्त ३८ और श्याम औरउच्चीहै पृष्ठ जिसकी और स्थूलजो जंबूफल तिसकी न्याईं हैआकृति जिसकी सोतारकब्रह्मसंज्ञावालासीतारामजानना ३९ दशकंठकुलांतक जो रामचंद्र तिसका लक्षण ब्रह्मांडपुराणमें कथन कीयाहै ॥

कोदंडीकुक्कुटांडाभःश्यामलः पृथुसंततःरेखाद्व
यसमोपेतोद्वारपार्श्वेधनुर्धरः ४० धनुषाकृति
कारेखादक्षपार्श्वेयुतापिवा पृष्ठतोवाभवेद्रामो
दशकंठकुलांतकइति ४१ अथवीररामलक्षणं
ब्रह्मांडे वाणतूणीरचापाढ्यः कुंडलीस्त्रक्सम
न्वितःसूक्ष्मकेसरश्चक्राढ्योवीररामःश्रियावहः
४२विजयरामलक्षणं ब्रह्मांडे दिव्यवाणेनसं
युक्तश्चापतूणीरसंयुतः करालवदनोयस्तु
विंदुयुक्चक्रशोभिताः सस्याद्विजयरामाख्यः
केसरोपेतचक्रकइति ४३ ॥

कोदंडीति कोदंडी क्या धनुष धारया हुआहै जिसने और
कुक्कुटकी न्याई है आभा जिसकी और श्याम और विस्तार
वाला औरदोरेखोंककै युक्त और मुखमें धनुषधारीका चिन्हहोवे
४०और दक्षिणपासेमेंवापृष्ठमें धनुषकी आकृति वाली जिसमें
रेखाहोवे सोदशकंठकुलांतकरामचंद्रहोताहै ४१ इसतें उपरंत
वीर जो रामचंद्र तिसकालक्षण ब्रह्मांडपुराणमें कथन कीयाहै
जो वाण और भथ्यडा और चापककें युक्त कुंडली और माला
ककें और सूक्ष्म केसरक... युक्त सो श्रीके प्राप्तकरणेवाला वीर
रामचंद्रहोताहै ४२ विजयजोरामचंद्र तिसकालक्षण ब्रह्मांडपुरा
णमें कथनकीताहै जो सुंदर वाणककें युक्तऔर चाप औरथ्यडे
ककेंयुक्तकरालहै मुखजिसकाऔरविंदुककें युक्तऔरचक्रककेंसुंदर
औरकेसरयुक्त चक्रवाला सोविजयरामकथन करीदाहै ४३

हृष्टरामलक्षणम् ब्रह्मांडे मूर्ध्निमालाधनुर्बाणौ पार्श्वेखुरयुतस्तथा हृष्टराम इतिप्रोक्तोभुक्तिमुक्तिफलप्रदइति४४ कोदंडिरामलक्षणं ब्रह्मांडे धनुषैकेनसंयुक्तोवर्तुलः किंचिदायतःकोदंडश मनामास्याच्छुद्धनीलांबुदप्रभ इति ४५ कालिनाशकररामलक्षणंपाद्मे जंबूफलसमाकारःकृष्णवर्णःसबिंदुकः पृष्ठेशुषिरमास्येचचक्रेमकरकुंडले ४६ ललाटेहेमवाणेनबिंदुनाधनुषायुत ःकलिनाशकरःप्रोक्तः सर्वकामफलप्रदः४७

हृष्ट जो रामचंद्र तिसका लक्षण ब्रह्मांड पुराणमें कथन कीयाहै जिसके मस्तकमें माला होवे और धनुष और बाण और तैसें खुर करकें युक्त होवे सो भुक्ति और मुक्ति फलके देनेवाला हृष्टराम कथन कीताहै ४४ कोदंड जो राम तिसका लक्षण ब्रह्मांडपुराणमें कथन करतेहैं जो एक धनुष करकें युक्त और वर्तुल क्या गोलाकार और कुच्छक विस्तार वाला और शुद्धजोमेघ तिसकी न्याईंहै प्रभा जिसकी सो कोदंड नामकर्कें रामहोताहै ४५ कलिनाशकर जो राम तिसका लक्षण कथन करतेहैं पद्मपुराणमें जंबूफलकीन्याईंहै आकार जिसका और कृष्णवर्ण वाला और बिंदुवाला औरपृष्ठ और मुखमेंहै छिद्र जिसके औरमकरक्यामच्छ और कुंडलकाहै चक्र जिसमें४६ और मस्तकमें सुवर्णकाजोबाण और बिंदु और धनुष करकेंजोयुक्तसो संपूर्ण कामफलकेदेनेवालाकलिनाशकररामकथनकीताहै ४७

अपुत्रोलभतेपुत्रंसर्वमंगलकारणमिति। श्रीरा
मलक्षणं पाद्मे वदनेष्वेकैकरदनश्चतुर्वक्रोंवुद
प्रभः श्रीराम इति विख्यातःपीतकेसरचक्रयु
क् ४८वाराहे कोदंडीकुक्कुटांडाभःश्यामलोन्न
तपृष्ठकः रेखाद्वयसमायुक्तोद्वारपार्श्वेधनुर्धरः
श्रीराम इति विख्यातोभुक्तिमुक्तिफलप्रदइति
४९ पदाभिरामलक्षणं ब्रह्मांडे पूर्वभागेत्रिव
दनःपार्श्वचक्रेणसंयुतः वाणतूणीरचापाढ्यः
कल्पवृक्षसमन्वितः ५०

अपुत्रइति और जो अपुत्र सो पुत्रको प्राप्त होताहै और सो
संपूर्ण मंगलाचार को करणे वाला होताहे ॥ श्रीरामका लक्ष
ण पद्मपुराणमें कथन कीयाहै मुख जिसके चार होन और ए
क एक मुखमें एक एक दंद हो और मेघ की न्याईहै प्रभा
जिसकी और पीलीयां रेखा वाला जो चक्र तिस करके जो
युक्त होवे सो श्रीराम कथन करीदाहै ४८वराह पुराणमें और
कथन कीताहै कोदंडी क्या धनुष के धारणे वाला और कु
क्कुटकीन्याईहै आभा जिसकी और श्याम और उच्चीहे पृष्ठजिस
की और दोरेखां करके युक्त और मस्तकमें धनुष धारीका चिह्न
सो भुक्ति और मुक्तिके देने वाला श्रीराम कथन कीयाहै ४९
ब्रह्मांडपुराणमें पदाभिरामका लक्षण कहाहै पूर्वभागमें तीनहैं
चक्र जिसमें और पासमें जो चक्र तिस करके युक्त वाण और भ
थ्यडा और चाप करके युक्त और कल्पवृक्षकाहै चक्र जिसमें ५०

सिंहासनसमारूढोरामःपरिजनैःसह पदाभि
रामइत्युक्तः सर्वलक्ष्मीप्रदोनृणामिति ५१
बलराममूर्त्तिलक्षणान्युच्यंते पुराणसंग्रहे बल
रामः सीरपाणिः प्रलंबघ्नइतित्रयः प्रभेदा बल
रामस्यतेषांलक्षणमुच्यते ५२ दीर्घाकारोबृह
द्वारः श्वेतलांगलचिह्नितः एकचक्रःसमुसलः
पृष्ठेनीलोत्पलप्रभः बलरामइतिख्यातोबलवं
शविवर्धन इति ५३ ग्रंथांतरे श्वेताभोहलचि
ह्नाढ्योमुसलाकृतिरेववा नीलोत्पलप्रसूनाभः
पृष्ठेघोणासनोपिवा बलशालीभवेद्रामोबलवं
शविवर्धन इति ५४ ॥

और संबंधियोंके साथ सिंहासनमें आरूढ सो संपूर्ण पुरुषोंको संपूर्ण लक्ष्मी के देनेवाला पदाभिराम कथन कीयाहै ५१ बलराम मूर्त्तिका लक्षण कथन करतेहैं पुराण संग्रहमें बलरामइति बलराम और सीरपाणि और प्रलंबघ्न यहतीन बलरामकेभदहैं तिनोंके लक्षणकों कथन करतेहैं दीर्घहै आकार जिसका और बडे मुखवाला और चिट्ट हलकाहै चिह्न जिसमें और एकचक्रवाला और मुसलके सहित और पृष्ठमें नीले कमल की हैप्रभा जिसमें सोबल और वंशकेवधाने वाला बलराम कथन कीताहै ॥ ग्रंथांतरमें औरकथन कीताहै श्वेतहै आभा जिसकी और हलकेचिह्न करकें युक्त और मुसलकी आकृति जिसमेंऔर नीले कमलकी है आभा जिसकी और पृष्ठमें नासांकाहै आसन जिसमें और बलवाला सो बल और वंशके वधानेवालरामहै ५४

द्वितीयोवामचक्रश्चरेखाचैवतुदक्षिणे वलशाली भवेद्रामोलांगलेनांकितःप्रभुरिति ५५ स्थूलचक्रोभवेद्देवोहरिल्लोहितवर्णकः वलरामःसविज्ञेयोगोत्रकीर्त्तिविवर्धनइति ५६ सीरपाणिलक्षणं पुराणसंग्रहे सर्वत्ररक्तवर्णःस्याच्छ्वेतनीलाभवर्जितः सचक्रोवक्रचक्रोवासीरपाणिः शुभप्रद इति ५७ प्रलंवघ्नमूर्तिलक्षणं पुराणसंग्रहे एकचक्रस्तुवदनेरक्तवर्णसमन्वितः प्रलंवघ्न इति ख्यातः पूजितोमृत्युदायक इति ॥ ५८

द्वितीयइतिवामपार्सहैचक्रजिसमें औरदक्षिणमेंरेखावाला औरवलवालाऔरहलकाहैचिह्नजिसमें सोरामदूसराजानना स्थूल ५५ चक्रवाला देव होवे और हरा और लोहित वर्णवाला सो गोत्र और कीर्त्तिकेवधानेंवाला वलरामजानना५६सीरपाणिकालक्षण पुराणसंग्रहमें कथनकीयाहै संपूर्ण रक्तवर्ण वाला होवे औरश्वेत औरनील आभातेंरहित होवे और सहित चक्रके वामुखमेंचक्रहोवे सोसीरपाणिशुभकेदेनें वालाहोताहै ५७पुराण संग्रहमें प्रलंवघ्नमूर्त्तिका लक्षण कथन करतेहैं मुखमें एकचक्र जिसके औररक्तवर्ण करकें युक्त सोप्रलंवघ्न कथनकीताहै सो पूजिआ हुआ मृत्युकोंदेताहै५८

निष्केसरोर्ध्वचक्रस्तुह्यधश्चक्रःसकेसरःपद्मना
भइतिख्यातोविपरीतोहलायुधइति वौद्धमूर्त्ति
लक्षणं साद्विधानिर्वाणवुद्धपूर्विकावुद्धदेवपूर्वि
काच तत्राद्या ब्रह्मांडे अंतर्गक्रसंयुक्तश्चक्रहा
नस्तथाभवेत् निर्वाणवुद्धसंज्ञोसौददातिपरमं
पदमितिद्वितीयापुराणसंग्रहे अंतर्गक्रसंयुक्तं
चक्रेणरहितंतथा वुद्धदेवंविजानीयात्पूजकस्य
शुभप्रदम् १ स्कांदे अंतःशून्यंवहिःशून्यं वृहत्कु
क्षिसमन्वितं चक्रशून्यंगुहाचक्रंवुद्धदेवंप्रचक्षते

निष्केसर इति ऊर्ध्वमें निष्केसर क्या (०) कारांते रहित चक्र होवे और अधा में सकेसर क्या (×)कारांवाला चक्रहोवे सो पद्मनाभ कथन करीदाहै जेकर तिना चक्रों तें विपरीतहो तद हलायुध कथन करीदाहै ॥ बौद्ध मूर्त्तिका लक्षण कथन करतेहैं सो दो प्रकारकी है एक निर्वाणवुद्ध और दूसरी वुद्धदेवप्रथम निर्वाण वुद्धका लक्षण ब्रह्मांडपुराणमें कथन कीयाहै अंतर जो चक्र तिस कर्के युक्त और चक्र हीन क्या कुछक चक्रहोवे सो परम पदकों देनेवाला निर्वाण वुद्ध कथन कीताहै॥ दूसरी मूर्तिका लक्षण पुराणसंग्रहमें कथन कीयाहै अंतर में छिद्रकर्के युक्त हो और चक्र कर्के रहित होवे सो वुद्ध देव जानना पूजने वालेकों शुभफलकों देताहै ॥ स्कंदपुराण में और कथन कीयाहै अंतरसें शून्य औरबाहरमें शून्य और वडी कुक्षि कर्के युक्त औरचक्र सें रहित औरगुहामें है चक्र जिसके सो वुद्धदेव कथन कीताहै

कल्किमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे अतिरिक्तः सूक्ष्म
विलःस्पष्टचक्रःस्थिरासनः कृपाणाकृतिकारे
खाह्वारस्योपरिमस्तके १ म्लेच्छनाशीभवेत्क
ल्किः कलिकल्मषनाशन इति २ पुराणसंग्र
हे अतिरिक्तंस्पष्टचक्रंस्थिरासनयुतंतथा कृपा
णाकृतिरेखाढ्यंकल्किदेवंविदुर्बुधा इति ३
केशवमूर्त्तिलक्षणं पाद्मे सौभाग्यंकेशवोदद्याच्च
तुष्कोणोभवेद्यदीति ४ वैखानससंहितायाम्
नाभ्यधस्तुभवेच्छंखश्चक्रेचवदनांतरे केशव
स्सतुविज्ञेयः सर्वदुःखविनाशन इति १ ॥

कल्कि मूर्त्तिका लक्षण ब्रह्मांड पुराण में कथन कीयाहे अतिरि
क्त इति जो अतिरिक्त होवेऔर सूक्ष्महे विल क्या छिद्रजिसमें
और स्पष्ट चक्र वाला और स्थिरासन और मस्तकमें खड्ग की
न्याई रेखा होवें १सो म्लेछों के नाशकरण वाला और कलि
युगके पापां कों नाशकरणेवालाहे सो कल्कि कथन करीदा
है २ पुराण संग्रह में और कथन कीयाहै अतिरिक्त और स्पष्टच
क्र वाला और स्थिरासन कर्के युक्त और कृपाण की आकृति की
न्याई जो रेखा तिसकर्के जो युक्त बुद्धिमान् तिसकों कल्किदे
व जानतेहैं ३ पद्मपुराण में केशव मूर्त्तिका लक्षण कथनकीता
है जो केशव चौंकोणो वाला होवे सो सौभाग्य कों देनाहै ४
वैखानससंहितामें और कथन कीयाहे नाभिके अधमें शंखका
आकार होवे और मुखकें अंतरालमें दोचक्र होवें सो केशव
जानना संपूर्ण दुःखकेनाश करणवाला होताहै १

विष्णुरहस्ये सवर्तुलस्तथाग्निषः पृष्ठेचसशरोभ
वेत् नीलवर्णस्तथास्थूलः पृथुचक्रः सुशोभनः
॥ १ ॥केशवस्सतुविज्ञेयस्सर्वकामफलप्रदः वा
मपार्श्वेस्थितेचक्रेरेखाचैवतुदक्षिणे ॥ २ ॥ रु
चिरः सशिरः स्निग्धःशोभनः सुस्थिरासनः
सौभाग्यंकेशवोदद्याच्चतुष्कोणोभवेद्यदि ३
ब्रह्मांडे नीलवर्णस्तथास्थूलः पृथुचक्रः सुशो
भनः रेखाद्वयंद्वारदेशेपृष्ठेपद्मेनलांछितः सौ
भाग्यंकेशवोदद्याच्चतुष्कोणोभवेत्तुयइति १॥

विष्णुरहस्यमें और कथनकीयाहै सइति सवर्तुल क्या गोलाका रहोवे उर तैसेंअग्निष्ठ क्याअग्निकी न्याईंहै प्रभावजिसका और पृष्ठमें बाणकाचिह्नहोवे और नीलेवर्णवाला और तैसेंस्थूल होवे और वडेचक्रवाला और सुंदरहोवे ॥ १ ॥ सोसंपूर्णका मनाकेदेणवाला केशवजानना वामपासेमें दोचक्र स्थितहोणा और दहनेपासेमें रेखाहोवे ॥ २ ॥ रुचिर क्यासुंदर और शिर के चिह्नवाला और स्निग्धक्याथिंदाहोवे और शोभन और स्थि रासनहोवे सोकेशवकथनकरीदाहै जेकरचारकोणो वालाहोवे तदसौभाग्यकों देताहै ॥ ३ ॥ ब्रह्मांडपुराणमें और कथनकीता हैनीलेवर्णवाला और स्थूल और वडेचक्रवालाहोवे और सुंदर और मुखमें दोरेखांहोण और पृष्ठमें पद्मकाचिह्नहोवेसोकेशव कथन करीदाहै जो चार कोणो वाला होवे सो सौभाग्यके दे णे वाला होताहै ॥ १ ॥

ब्रह्मवैवर्त्ते राजतैर्विन्दुभिर्हैमैरन्वितंसूक्ष्मचक्र
कम् वनमालान्वितंश्यामंकेशवाख्यंविदुर्बुधाः
१॥ तथा पूर्वपश्चिमदिग्भागेयस्यचक्राणिसं
तिहि केशवंनामतंविद्यान्महासौख्यप्रदायक
मिति १ नारायणमूर्त्तीनांलक्षणान्युच्यंते तत्र
नारायणलक्ष्मीनारायण नरनारायणरूपना
रायणवीरनारायणमायानारायण शंकरनारा
यणमहानारायणेत्यष्टभेदाभवंति १ अग्निपुरा
णे श्यामोनारायणोदेवोनाभिचक्रस्तथोन्नतः
दीर्घरेखासमोपेतोदक्षिणेशुषिरान्वितः।१।

ब्रह्मवैवर्त्तमें कथनकीयाहै प्रकाशमानजो स्वर्णकीयांबिंदुतिनोक
र्केयुक्त और सूक्ष्मचक्रवाला और बनमालाकर्के युक्तऔर जो
श्याम बुद्धिमान् तिसको केशवजानतेहैं १ और कथनकीयाहै
जिसके पूर्व और पश्चिमभागमें चक्रहोएसो बडेसौख्यकेदेणेवा
लाकेशवनामकर्के जानना १ नारायणकीयांमूर्त्तियांकालक्षणक
थनकरतेहैं नारायण और लक्ष्मीनारायण और नरनारायण और
रूपनारायण और वीरनारायण और मायानारायण और शंकर
नारायण और महानारायण यहअष्टभेदहैं १ अग्निपुराणमेंनारा
यणकालक्षण कथनकीयाहै श्याम और नाभिमेंहैचक्रजिसकेऔ
रउच्चा और दीर्घरेखों कर्के युक्त और दक्षिणमें जो छिद्रतिनो
कर्के युक्तसोनारायण देवजानना ॥ १ ॥

एकपद्मांकितश्चैवदक्षिणावर्त्तसंयुतःवर्त्तुलच्छ
त्रसंयुक्तोभोगमोक्षप्रदायक इति २ ब्रह्मांडे
श्यामंनारायणंविंद्यान्नाभिचक्रंतथोन्नतं दीर्घ
रेखासमोपेतंदक्षिणेशुषिरंपृथु १ विलजेसुमु
खेचक्रेमध्यचक्रःसुशोभनः ताटंकनानाभरण
हारकेयूरलांछनः नारायणः समाख्यातःस
र्वसिद्धिप्रदायक इति २

और एक पद्म कर्के चिन्हित और दक्षिण में जो चक्र तिस कर्के युक्त औरगोलाकार जो छत्र तिस कर्के जोयुक्त सो भोग और मोक्षके देनेवाला नारायण कथन कीयाहै २ ब्रह्मांडपुराणमें और कथन कीताहै नाभिमेंहै चक्र जिसके और दीर्घरेखों कर्के युक्त और दक्षिणमेंहै छिद्र जिसके सो श्यामनारायण जानना १ छिद्रमें सुंदर मुखवाला चक्र होवे और मध्यमें चक्र जिसके और सुंदर और कान फूल और नानाप्रकारके जो भूषण और हार और बवट्टे इनोंकेहीं चिन्ह जिसमें सो संपूर्ण सिद्धिके देने वाला नारायण कथन कीताहै ॥

विष्णुरहस्ये वामपार्श्वस्थितेचक्रेरेखाचैवतुद
क्षिणे पांडुवर्णेनसंयुक्तःस्थिरासनसवर्त्तुलः
सस्यान्नारायणोदेवः सर्वपापप्रमोचन इति
२ लक्ष्मीनारायणो यथा ध्वजवज्रांकुशोपे
तोवामचक्रस्सवर्तुलः लक्ष्मीनारायणोदेव
श्चतुश्चक्रसमन्वितः १ पूजनीयस्सदासद्भि
र्वैष्णवैर्मोक्षकांक्षिभिरिति २ ॥

विष्णु रहस्यमें और कथन कियाहै वामपार्श्वेति वाम पासेमेंच
क्र और दहनेमें रेखाहोवे और पीलेवर्ण कर्के युक्त और स्थिरास
न और गोलाकार ॥ १ ॥ सो संपूर्ण पापके दूर करणे वाला
नारायण देवहोताहै ॥ २ ॥ लक्ष्मी नारायण के लक्षण कों क
थन करते हैं ध्वज और वज्र और अंकुश इनो कर्के युक्त होवे
और वाम पासेमें चक्रवाला और गोलाकार और चांरचक्रों क
र्के युक्त सो लक्ष्मी नारायण कथन करीदाहै मुक्तिकी इच्छावा
ले जो वैष्णव पुरुष तिनोने सो सदा पूजने योग्यहै ॥ २

ब्रह्मांडे एकचक्रश्चतुश्चक्रोवर्त्तुलःश्यामवर्णकः
ध्वजवज्रांकुशोपेतोमालायुक्तस्सविंदुकः १
१ नातिह्रस्वोनचस्थूलोलक्ष्मीनारायणःस्मृतः
तस्यदर्शनमात्रेणह्यभीष्टफलमाप्नुयादिति २
पाद्मे सूक्ष्मद्वारश्चतुश्चक्रोवनमालांकितोदरः
लक्ष्मीनारायणः श्रीमान्भुक्तिमुक्तिफलप्रद इ
ति१ तथा चत्वारिसूक्ष्मचक्राणिद्वारभागेभवं
तिहि उदरेवनमालाचलक्ष्मीनारायणोभवेत्
१ पूजनीयःसदाभक्तैर्भुक्तिमुक्तिफलप्रदइति२

ब्रह्मांड पुराणमें और कथन कीताहै एक चक्र इति एकचक्र वा चार चक्रों वाला होवे और गोलाकार और श्यामवर्ण वाला और ध्वज और वज्र और अंकुश क्या कुंडा तिनो क र्के युक्त और विंदु वाला होवे १ और न अतिशय कर्के छो टा और न स्थूल होवे सो लक्ष्मीनारायण कथन कियाहै ति सके दर्शनते पुरुष इच्छित फलकों प्राप्त होताहै २ पद्मपुराण में और कथन कीताहै सूक्ष्महै मुख जिसका और चार चक्रों वाला और उदरमें बनमालाकाहै चिन्ह जिसमें और शोभा वाला सो भुक्ति और मुक्तिके फल कों देने वाला लक्ष्मीनारा यण होताहै १ और कथन कियाहै जिसके मुखमें चार सूक्ष्म चक्र होए और उदरमें बनमाला का चिन्ह होवे सो लक्ष्मीनारायण होताहै भक्त जनोंने भुक्ति और मुक्तिके फल कों देने वाला सो सदा पूजने योग्यहै २

तथा गवाकृतिस्त्रिरेखश्चलक्ष्म्यंकोमध्यदेशतः
ध्वजवज्रांकुशोपेतोवामचक्रः सवर्त्तुलः लक्ष्मी
नारायणोदेवःसर्वाभीष्टप्रदायकइति १ ब्र
ह्मांडे वर्त्तुलंवर्त्तुलद्वारंत्रिगम्भीरंचगव्हरम् स
मचक्रंसमंवक्रंपृष्ठेचवनमालया १ सुवर्णाभंच
कृष्णाभंलक्ष्मीनारायणंविदुरिति २ वाराहे
स्थिरासनमतिस्निग्धंनातिस्थूलंचनाधिकं च
तुश्चक्रसमायुक्तंचारुरेखासुशोभितं लक्ष्मी
नारायणंप्राहुस्त्रिपुलोकेषुदुर्लभम् १

उोर कथन करतेहैं गोकी आकृति और तीनरेखा होन
उोर मध्यमें लक्ष्मीका चिन्हहोवे ध्वज उोर वज्र उोर अंकुश
तिनो कर्के युक्त होवे उोर गोलाकार सो संपूर्ण इच्छाके देने
वाला लक्ष्मीनारायण देवहोताहै १ ब्रह्मांडपुराणमें उोर कथन
कियाहे वर्त्तुलक्या गोलाकार उोर गोलाकारहै मुख जिसक
उोर त्रिगंभीर क्या तीन वट्टों वाला उोर गव्हर उोर समचक्र
वाला और सम मुख वाला होवे उोर पृष्टमें बनमाला का
चिन्ह होवे १ उोर सुवर्ण की आभा वाला उोर कृष्ण आ
भा वाला होवे तिसकों लक्ष्मीनारायण जानतेहैं २ वराहपु
राणमें उोर कथन करतेहैं स्थिरासन होवे उोर चिदा उोर सू
क्ष्म उोर न अधिक होवे उोर चार चक्र कर्के युक्त उोर सुंदर
रेखाकर्के जो शोभायमान तिसकों लक्ष्मीनारायणकथनकरतेहैं
सोतीनोंलोकोंमे दुर्लभहै १

गरुडपुराणे लक्ष्मीनारायणस्साक्षाच्चतुश्चक्र
युतस्तथा त्रिचक्रोवाभवद्वामेचक्रंचात्यंतशो
भनम् १ लक्ष्मीनारायणंदेवंभुक्तिमुक्तिफलप्र
दमिति २ तथा कृष्णवर्णंचतुश्चक्रंवनमालो
पशोभितम् ध्वजवज्रांकुशोपेतंगोष्पदेनचाचिं
ह्नितम् १ लक्ष्मीनरायणंदेवंसर्वकामफलप्र
दमिति २ तथा चिह्नितंवनमालाभिस्तत्रस
न्निहितोहरिः तस्मिन्गेहेनदारिद्यंदुःखशोक
भयंनहि १ ॥

गरुडपुराण में और कथन कियाहै लक्ष्मीति जो चार चक्रों करकें युक्त होवे सो साक्षात् लक्ष्मीनारायण होताहै और वामपासें में तीनचक्र होंण और चक्रकर्के शोभायमानहोवे १ सो भुक्ति और मुक्तिकेदेनेवाला लक्ष्मीनारायण देव होताहै २ और कथन करतेहैं कृष्णवर्णवाला होवे और चार चक्र होन और बनमाला करकें शोभायमान होवे ध्वजा और वज्र और अंकुश इनोंकर्के युक्तहोवे और गौका जो खुर तिसकर्के चिन्हितहोवे १ सो संपूर्णकामनाके देनेवाला लक्ष्मीनारायण देव होताहै २ और कथन करतहैं जिस शिला में बनमाला का चिन्ह होवे तिसमें हरिस्थित होताहै जिस में ऐसीमूर्त्ति होवे तिस घर में दरिद्र और दुःख और शोक और भय नहि होताहै । १

नचौरादिभयंतत्रनदुष्टैः परिभूयते अंतेमोक्षो भवेत्तस्यपूजकस्यनसंशयइति स्कांदेपक्कजंबू फलाकारश्चिह्नितोवनमालया एकद्वारश्चतुश्चक्रोलक्ष्मीनारायणोहरिः १ गोस्तनाकारचक्राढ्यः पूर्वभागेतुपुष्कलः गोपदेन समायुक्तो ध्वजच्छत्रसमन्वितः २ श्रीवत्सलांछनोपेतोमालयापरिवेष्टितः अंकुशध्वजसंयुक्तो लक्ष्मीनारायणोहरिः ३ तथा एकंमुखंचतुश्चक्रंवनमालासुशोभितं नातिह्रस्वंनातिदीर्घंशंखचक्रादिभिर्युतम् ॥ ४ ॥

नेंति तिसघरमें चौरादिभय नहि होता और पूजने वाला जो पुरुष तिसका दुष्ट जीवोंने निरादर नहि करीदा और अंत में तिसका मोक्षहोताहै इसमें कुछ संशयनहि २ स्कंदपुराण में और कथन कियाहे पक्का हुवा जो जंबूफल तिसकी न्याईं है आकारजिसका और बनमाला करके चिन्हित और एकहै मुख जिसमें और चारहैं चक्र जिसमें सो लक्ष्मीनारायण हरि कथन करीदाहै १ गोस्तनकेआकारकी न्याईं जो चक्र तिस करके युक्तऔर पूर्वभागमें पुष्कलहोवे और गोपद करके युक्त और ध्वज औरछत्रकरकेयुक्त २ श्रीवत्सकेचिन्हकरके युक्त और मालाकरके परिवेष्टित और अंकुश औरध्वजकरके युक्त सो लक्ष्मीनारायण हरिहोताहै ३ एकहैमुखजिसमें और चारचक्रों वालाऔरबनमालाकरके शोभित औरनसूक्ष्म और नदीर्घ और शंख चक्रकरके युक्तहोवे ४

गदापद्मेनखड्गेनतोमरेणापिशोभितम् सुवर्ण
विंदुसंयुक्तंलक्ष्मीनारायणंस्मृतामिति ॥ ५ ॥
तथा पक्वजंवूफलाकारंवर्त्तुलंश्यामवर्णकम् च
तुश्चक्रसमायुक्तंवामभागेतुपुष्कलम् ॥ १ ॥
कल्पद्रुमकौस्तुभाद्यैर्मस्तकोपरिमंडितम् स्व
र्णाभंसूक्ष्मवदनंलक्ष्मीनारायणंस्मृतम् ॥ २ ॥
नरनारायणलक्षणं ब्रह्मांडे नरनारायणोदेवः
श्वेतवर्णः सुशोभनः तमालदलसंकाशः स्व
र्णपंकविलेपन इति ॥ १

औरकथनकरतेहैं गदेति गदा और पद्म और खड्ग तोमर इ नोकर्के जो सुंदर और सुवर्णकीयां विंदुकर्के युक्त सो लक्ष्मी नारायण कथन कीताहै ॥ ५ ॥ और कथन करतेहैं पक्कजो जंबूफल तिसकी न्याईहै आकारजिसका और गोलाकार और श्यामवर्णवाला और चारचक्रोंकर्के युक्त और वामभागमें पुष्कलकाहै चिह्न जिसमें ॥ १ ॥ और कल्पवृक्ष और कौस्तुभ मणि कर्के भूषितहै मस्तक जिसका औरसुवर्णकीहै आभाजिसमें और सूक्ष्महै मुख जिसका सो लक्ष्मीनारायण कथन करीदाहै २नर नारायणकालक्षण ब्रह्मांडपुराणमे कथनकियाहै जो श्वेतवर्णवाला और सुंदर और तमालबृक्षकाजोपत्र तिसकी न्याईहै प्रकाश जिसका और पीत टिकेवाला सो नरनारायण देवहोताहै १ ॥

रूपनारायणलक्षणं ब्रह्मांडे मुसलायुधमा
लासिशंखचक्रगदान्वितः रूपनारायणोदेवो
मुखेचाभिमुखंधनुः सर्वसिद्धिप्रदोदेवःसर्वका
मफलप्रदइति वीरनारायणलक्षणं पुराणसं
ग्रहे तमालदलसंकाशः स्वर्णसंकलितस्तथा
वीरनारायणोदेवोह्येकचक्रसमन्वितइति ॥ १
तथा वीरनारायणोदेवः श्वेतचक्रस्सुशोभनः
मुसलायुधमालासिशंखचक्रसमन्वित इति १

रूपनारायणका लक्षण ब्रह्मांड पुराणमें कथन कीयाहै मुसलक्या मोहला और आयुध और माला और खड्ग शंख और चक्रइनोंकर्के जो युक्त और मुखमेंहै धनुका चिह्नजिसकें सोरूपनारायणदेव कथन कीताहै सो संपूर्ण सिद्धि और संपूर्ण कामनाके फलको देनेवालाहोताहै ॥ १ ॥ वीरनारायण का लक्षण पुराणसंग्रहमें कथन कीयाहै तमाल वृक्षके पत्रकी न्याईहै प्रकाश जिसका और तैसें सुवर्णकीरेखावालाहोवे और एकचक्र कर्के जो युक्त सो वीरनारायण कथन कीताहै ॥ १ ॥ और कथन करतेहैं श्वेतहै चक्रजिसमें और सुंदर और मुसल और आयुध और माला और तलवार और शंख और चक्रइनो कर्के जोयुक्त सोवीरनारायणदेव कथन कीताहै ॥ १ ॥

मायानारायणलक्षणं स्कांदे निर्मलेमुसलेच क्रेमध्यचक्रेसुशोभने ताटंकनासाभरणहारके यूरलांछनः १ मायानारायणोदेवः सर्वसि द्धिप्रदायक इति २ शंकरनारायणलक्षणं ब्रह्मांडे शिवनाभियुतःपार्श्वेवायव्येदक्षिणे पिवा सचशंकरपूर्वोवैनारायणइतीरितः १ पुरा णसंग्रहे गंडकीगर्भसंभूतंधनुशकारशोभित म् शंखप्रतिमपूर्वार्धपश्चार्धंश्यामलप्रभम् १ ॥

मायानारायणका लक्षण स्कंदपुराण में कथन कीयाहै निर्मलयि ति निर्मल मुसल और चक्रजिसमें और मध्यचक्र कर्के सुंदर औ र ताटंक क्या कान फूल और नासा भरण क्या नथ्य और हा र और भुवट्टे इनोकाहै चिन्ह जिसमे १ ॥ सो संपूर्ण सिद्धिके देने वाला माया नारायण कथन कीताहै २ ॥ शंकर नारायण का लक्षण ब्रह्मांड पुराणमें कथन करतेहैं वाम और दक्षिण पासेमें शिवनाभि कर्के युक्त होवे सो शंकर नारायण कथन कियाहै १ ॥ पुराण संग्रहमें और कथन करतेहैं गंडकी नदीके गर्भतें उत्पत्ति जिसकी और धनुषके आकार कर्के शोभायमान होवे और पूर्वले पासेमें शंखका आकार होवे और पश्चिम पासे में श्याम रंग की प्रभा होवे १ ॥

सरोजपुटचक्राग्रमधस्ताद्रक्तबिंदुकम् गौरल
क्ष्मीसमायुक्तंशूलश्रीवत्ससंयुतम् २शीर्षस्थि
तजटारेखावनमालापरिप्लुतम् सर्वाभीष्टप्रदं
श्रीशंकरनारायणात्मकम् ३॥ यःपूजयेन्नरोभ
क्त्याल्लब्धभाग्यवशान्मुने पुत्रपौत्रैःपरिवृतो
धनधान्यसमन्वितः ४ कोटिजन्मकृतंपापंस्प
र्शात्सद्योविनश्यति इहलोकेसुखंप्राप्यतत्सा
युज्यमवाप्नुयादिति ५ ॥

सरोजेति सरोज क्या कमलका जोपुट तिसकी न्याईहै च क्रका अग्र भाग जिसमे और गौर और लक्ष्मी करके युक्त और शूल और श्रीवत्स करके युक्त २ ॥ और जिसके शिरमें जटा की रेखाहोवे और वनमालाकरके युक्त होवे सोसंपूर्ण इच्छाके देने वाला शंकरनारायण कथन कीयाहै ३ ॥ हेमुने प्राप्त हुआ जो भाग्यवश तिसतें जो पुरुष भक्ति करके शंकर नारायणकों पूजताहै सो पुत्र और पौतरे और धन और अन्न करके युक्त होताहै ४ तिस पुरुष का क्रोड जन्म का किया जो पाप सो तिस मूर्तिके स्पर्श करणेतें तात् काल दूर होताहै और इस लोकमें सुखकों प्राप्तहो करके अंत समयमे शंकर नारायण कों प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥

महानारायणलक्षणं स्कान्दे कृष्णवर्णोमहा
स्थूलोह्यष्टचक्रसमन्वितः शंखचक्रगदायुक्तो
महानारायणःस्मृत इति १ ॥ माधवमूर्त्तिलक्ष
णं वैखानससंहितायाम् माधवोमधुवर्णा
भोगदाकंबुविलक्षित इति १ ॥ ब्रह्मांडे मधु
वर्णोमधुचक्रः स्निग्धसूक्ष्मतनुस्तथा माधव
स्सतुविज्ञेयोयतीनांमोक्षदायक इति १ ॥ वि
ष्णुरहस्ये शुक्लवर्णातथास्निग्धापंचरेखासम
न्विता माधवाख्याशिलाज्ञेयामोक्षैकफलदायि
नीति १ ॥

महानारायणका लक्षण स्कंदपुराणमें कथन कीयाहै कृष्ण व
र्ण इति कृष्णहै वर्ण जिसका और महास्थूल और आठोंचक्रोंक
र्के युक्त शंख और चक्र और गदा कर्के युक्त सो महा नारायण
कथन कीयाहै १ माधव मूर्त्तिका लक्षण वैखानस संहितामें
कथन कीताहै मखीरके वर्णकी न्याईंहै आभा जिसकी और
गदा और शंख कर्के जो युक्त सो माधव कथन कीताहै १ ब्र
ह्मांड पुराणमें और कथन कीताहै मखीरकी न्याईंहै वर्ण जि
सका और मधुकाहै चक्र जिसमें और थिंदा और सूक्ष्महै शरीर
जिसका सो माधव नारायण जानना सो यतीयांको मोक्षकें
देनेवाला होताहै १ विष्णुरहस्यमें और कथन कीयाहै श्वेतवर्ण
वाली जो शिला और थिंदी और पंचरेखों कर्के युक्त सोमाधव
नामकर्के शिला जाननी सो मोक्षको देनेवाली होतीहै १

ब्रह्मपुराणे स्वर्णविंदुसमायुक्तोमधुवर्णस्सुचि न्हितः माधवस्सतुविज्ञेयोमहारोग्यहरश्चय इति १ ॥ गोविंदमूर्त्तिलक्षणं पुराणसंग्रहे नाभिस्थूलःकृष्णवर्णोगोविंदःपंचचक्रकः वामचक्रोवृहद्द्वारोह्यनंतोमध्यनिम्नग इति१ विष्णुरहस्ये पताकाध्वजाचिन्हाढ्य पद्मवर्णसचक्रकम् गोविंदपूजयेद्भक्त्या सद्योलक्ष्मीप्रदायकम् तथा इंद्रनीलनिभाभायापृथक्चक्रासुशोभना गोविंदाख्याचसाज्ञेयामूर्त्तिःसौभाग्यकारकाइति २ ॥

ब्रह्मपुराणमें और कथनकरतेहैं स्वर्णेति सुवर्णके विंदुकर्के जो युक्तऔर मखिरकी न्याईहै वर्ण जिसका और सुंदर चिन्होवाला होवे सो बडे रोगके हरणेवाला माधव जानना १ गोविंद मूर्तिका लक्षण कथन करतेहैं पुराण संग्रहमें नाभिहै स्थूल जिसकी और कृष्ण वर्ण वाला और पंच चक्रों वाला होवे और वामे पासेतेंहै चक्र जिसका और बडाहै मुख जिसका और अनंत और मध्यमें नीवांहोवे सो गोविंदजानना १ विष्णुरहस्यमें और कथन कीताहै पताकाध्वजके चिन्हकर्के जोयुक्त और पद्मवर्णवाला और चक्रवाला सोगोविंद कथनकीताहै जोपुरुष भक्तिकर्के गोविंदकों पूजताहै सोतातूकाल लक्ष्मीकों प्राप्तहोताहै १॥ नीलम मणिकी न्याईहै आभा जिसकी और भिन्नचक्रवाली और सुंदरसोसौभाग्यके करणे वाली गोविंदकी मूर्त्तिजाननी २

वराहपुराणे कृष्णवर्णातथास्निग्धापंचरेखास
मन्विता गोविंदाख्याशिलाज्ञेयासर्वसौभाग्य
दायिनीति १ विष्णुमूर्त्तिलक्षणं पद्मपुराणे
स्थूलचक्रोभवेद्विष्णुर्मोक्षैकफलदोर्चितइति ब्र
ह्मांडे कृष्णवर्णस्तथाविष्णुःस्थूलचक्रस्सुशो
भनः द्वारोपरितथारेखादृश्यतेमध्यदेशतइति
१ पुराणसंग्रहे कृष्णवर्णस्तथाविष्णुः स्थूलच
क्रस्सुशोभनः यस्यमध्येगदाकारादृश्यतेपंच
रेखिकेति ॥ १ ॥ वैखानससंहितायाम् कृष्ण
वर्णस्तथाविष्णुःस्थूलचक्रःसुशोभनः

वराह पुराणमें और कथन करतेहैं कृष्णेति जो कृष्णवर्णवाली और चिकनी और पंचरेखा करके युक्त सो संपूर्ण सौभाग्यके देने वाली गोविंदनामकरके शिलाजाननी १ विष्णुकीमूर्त्तिकालक्षण कथनकियाहै पद्मपुराणमें स्थूलचक्रवाला विष्णुहोताहै सोपूजि आहुआ मोक्षफलकोंदेताहै १ ब्रह्मांडपुराणमें और कथनकरतेहैं कृष्णवर्ण वालाहोवे और स्थूलचक्र जिसमें और सुंदरऔर मुखमें औरमध्यदेशमें रेखादेखिये सोविष्णुहोताहै १ पुराणसंग्रहमें और कथनकरतेहैं कृष्णवर्णवालाहोवे और स्थूलहै चक्राजिसमें औरसुं दर और जिसके मध्यमें गदाके आकार वाली पंचरेखादेखिये सो विष्णु कथनकरीदाहै १ वैखानससंहितामें औरकथनकरतेहैं कृष्णवर्णइति कृष्णहै वर्ण जिसका औरस्थूलचक्रवाला और सुंदर

पद्माकृतिस्तथारेखादृश्यतेपृष्ठमध्यगेति १ ॥ ब्रह्मांडे वामचक्रोबृहद्द्वारउन्नतोमध्यनिम्नगःसकापिलःस्निग्धवर्णोविष्णुर्विषयभोगदइति १ विष्णुरहस्ये बिल्वाकृतिस्त्वधोरेखःसुषिरंचातिसंकुलम् कृष्णवर्णस्तथाविष्णुःस्थूलचक्रेणशोभितः १ गदाकृतिस्तथारेखादृश्यतेमध्यदेशतः २ वाराहे कृष्णवर्णस्तथाविष्णुःस्थूलचक्रेणशोभितं बिल्वाकृतिस्तथारेखादृश्यतेमध्यदेशतःगृहस्थःपूजयेन्नित्यंधनधान्यसमृद्धिदम् ॥ १ ॥

और जिसकी पृष्ट और मध्यमें पद्मकी न्याई रेखादेखिये सो विष्णुहोताहै १ ब्रह्मांडपुराणमेंऔरकथन कियाहै वामभागमेंहै चक्र जिसके और बडेमुखवाला और उचाऔर मध्यमें नीचाऔर कपिल और स्निग्ध वर्णवाला सो विषय भोगके देनेवाला विष्णु कथनकरीदाहै १ विष्णुरहस्यमें और कथन करतेहैं ॥ बिल्वकीहै आकृति जिसकी और अधोरेखावाला और अति संकुल छिद्रहै जिसमे और कृष्णवर्णवाला और स्थूलचक्रकरके जो सुंदर सोविष्णुहोताहै १ और जिसके मध्यदेशमें गदाकी रेखादेखिये सोभी विष्णु होताहै २ वराहपुराणमें और कथन कीनाहै कृष्णहै वर्ण जिसकाऔरस्थूल चक्र करके सुंदर और जिसके मध्यदेशमें बिल्वकी न्याईरेखादेखिये सोविष्णुहोताहै जो गृहस्थी तिसको नित्यपूजिताहै सो धन और अन्नकी वृद्धिको प्राप्त होताहै॥ १

पुराणसंग्रहे विष्णुक्रांतस्तलाकारोवनमालाब्जचिह्नकःपंचायुधधरःश्रीमान्विष्णुरित्युच्यते बुधैरिति १ महाविष्णुलक्षणं पुराणसंग्रहे महाविष्णुस्तुभगवान्दशचक्रेणसंयुतः स्वर्णरेखासमायुक्तोमणिमाणिक्यदीप्तिमानिति १ मधुसूदनमूर्तिलक्षणं वैखानससंहितायाम् नाभिपार्श्वेशंखपद्ममुद्रायस्मिन्प्रदृश्यते मधुसूदनदेवोसौशत्रुहापरिकीर्तितइति १ ब्रह्मांडे मधुसूदनोमहादेवएकचक्रोमहाद्युतिः सुवर्णेनसमायुक्तोमहातेजःप्रदः शुभ इति ॥१॥

पुराणसंग्रहमें और कथन कीताहै विष्णुक्रांतइति जो तलीकेआकारवाला औरवनमाला औरकमलकाहै चिह्न जिसमें औरपांच आयुधकेधारणेवाला औरशोभावाला सोबुद्धिमानोंने विष्णुक्रांत औरविष्णु कथन कीयाहै ॥१॥ महाविष्णुका लक्षण पुराणसंग्रहमें कथन कीताहै दश चक्रकरके जो युक्त और सुवर्णकीरेखाकरके युक्त मणि और माणिक्यकी न्याई जो प्रकाशमान सो भगवान् महाविष्णु कथन कीताहै ॥ १ मधुसूदनकी मूर्तिका लक्षण वैखानस संहितामें कथन कीयाहै जिसकी नाभिपासमे शंख और पद्मका चिह्न दिखिये सोमधुसूदनदेवहोताहै सो कीर्तित कीयाहुआ शत्रुवांकों दूरकरताहै ॥१॥ ब्रह्मांड पुराणमें और कथन करतेहैं एकहै चक्रजिसमें और बडेतेजवाला औरसुवर्णकरके जो युक्त सोवडे तेजके देनेवाला मधुसूदन कथन कीताहै १ ५

विष्णुरहस्ये विल्वाकृतिर्यत्ररेखाविवरंचाति शोभनं मधुसूदनउक्तोसावेकचक्रोमहाद्युतिरिति ॥ १ ॥ स्वर्णवर्णसमाकीर्णोनीलविंदुभिरन्वितः सवर्त्तुलस्निग्धवर्णःपादरेखासुचिह्नितः मधुसूदनदेवोयंभुक्तिमुक्तिप्रयच्छति ॥ २ ॥ वाराहे रक्तवर्णातथास्थूलाक्रूरासुशुषिराशिला मधुसूदनसंज्ञास्याद्भुक्तिमुक्तिफलप्रदेति १ ॥ तथा मधुवर्णोभवेद्देवः षट्चक्रेणसमन्वितः धनधान्यसमृद्धिंचप्रदद्यान्मधुसूदन इति ॥ १ ॥

विष्णुरहस्यमें और कथन करतेहैं जिसमें बिल्वकी न्याईं आकृति वाली रेखाहोवे और सुंदर छिद्रवाला और एकहै चक्र जिसमे और बडे तेजवाला सो मधुसूदन कथन करीदाहै १ और सुवर्णके रंगवाला और नीलियां बिंदुककें युक्त और गोलाकारहोवे और चिंदा और पैरकी रेखाककें चिह्नितहोवे सो भुक्ति और मुक्तिकेदेनेवाला मधुसूदन कथन कीयाहै २ वराह पुराणमें और कथन करतेहैं जो शिला रक्तवर्णवाली और स्थूल और क्रूर और छिद्रवाली सो भुक्ति और मुक्तिके फलकों देने वाली मधुसूदन नामककें होतीहै १ और कथन करतेहैं मखीरकी न्याईंहै वर्ण जिसका और छेचक्रोंककें युक्त होवे सो मधुसूदन धन और अन्नकी वृद्धिकों देताहै १

वामनपुराणे पीतगोघृतवर्णंचनागयज्ञोपवीति
नम्मधुसूदनदेवंतुभुक्तिमुक्तिफलप्रदमिति त्रि
विक्रममूर्त्तिलक्षणमग्निपुराणे श्यामास्त्रिविक्रमो
दक्षेरेखावामेचारिक्तकइति १ विष्णुरहस्ये त्रि
विक्रमाख्यातुशिलाहेमवर्णामहाद्युतिः साशि
लाकृष्णवर्णास्याद्धनधान्यसुखप्रदेति १ तथा
प्रदक्षिणावर्त्तयुतोवनमालाविभूषितः त्रिविक्र
मोमहादेवःश्यामवर्णोमहाद्युतिः१ गरुडपुराणे
अतसीकुसुमप्रख्योविंदुनापरिभूषित इति१ ॥

वामन पुराण में और कथन कियाहै पीला जो गोघृत तिसकी न्याई है वर्ण जिसका और नागोंकाहै यज्ञोपवीत जिसमें सो देव भुक्ति और मुक्ति के फलको देने वाला मधुसूदन होताहै ॥ १ ॥ त्रिविक्रममूर्त्तिका लक्षण अग्निपुराणमें कथन करतेहैं जिसके दहने पासेमें रेखा होवे और वाम पासेमें रेखा न होवे और श्याम वर्ण वालाहोवे सो त्रिविक्रम कथन कीताहै ॥ १ ॥ विष्णुरहस्यमें और कथन करतेहैं सुवर्णकी न्याई है रंग जिसका और बडे तेजवाली जो शिला सो कृष्ण वर्णवाली शिला धन और अन्न और सुखको देतीहै और त्रिविक्रम नाम करके होतीहै ॥ १ ॥ और कथन करतेहैं श्यामहै वर्ण जिसका और बडेतेजवाला और दहने पासे चक्र होवे और वनमाला करके भूषितहोवे सो त्रिविक्रम कथन कीताहै १ गरुडपुराणमें और कथन करतेहैं अलसीके पुष्पकी न्याईहै प्रकट और विंदु करके जो भूषित सो त्रिविक्रम होताहै ॥ १ ॥

पाद्मे त्रिविक्रमंमहादेवंश्याममूर्त्तिंमहाद्युतिम्
वामपार्श्वेस्थितेपद्मेरेखाचैवतुदक्षिणे इति वै
खानससंहितायाम् त्रिविक्रमस्तथादेवःश्याम
वर्णोमहाद्युतिः वामपार्श्वेस्थितेचक्रेरेखाचैवत
दक्षिणे ॥१॥ तथा स्थूलचक्रद्वयामध्येगुडला
क्षाभवर्णका द्वारोपरितथारेखाध्वजाकारातु
दक्षिणे ॥ २ ॥ चतस्रोयत्रदृश्यन्तेरेखावामेस
माःस्थिताः द्वेचक्रेमध्यमेदेशेशिलायस्यचतुर्मु
खी ॥ ३ ॥ सचत्रिविक्रमोज्ञेयःश्यामवर्णोम
हाद्युतिरिति ॥ ४ ॥

पद्म पुराणमें और कथनकरतेहैं त्रिविक्रमसिलि श्यामहै मूर्ति जि
सकी और बडे तेजवाला होवे और वामपासमें कमलका चि
न्ह होवे और दक्षिणमें रेखाहोवे सो त्रिविक्रम होताहै ॥ १ ॥
वैखानससंहितामें और कथनकरतेहैं श्यामहै वर्णजिसका औरब
डे तेजवाला होवे और वामपासेमें चक्र स्थितहोवे और दहनेमें
रेखाहोवे सो देव त्रिविक्रमहोताहै ॥ १ ॥ और तैसे कथन करते
हैं जिसके मध्यमे दो स्थूल चक्र होए गुड और लाखकी न्या
ईं है वर्ण जिसका और मुखमें रेखाहोवे और दहनेमें ध्वजाका
आकारहोवे ॥ २ ॥ जिसके वामपासेमें चार सम रेखा देखिये
और मध्यदेशमे दो चक्र होए और जिसकी शिलाके चार मु
ख होए ॥ ३ ॥ और श्याम वर्ण वाला और बडे तेजवाला हो
वे सो त्रिविक्रम जानना ॥ ४ ॥

पुराणसंग्रहे कपिलाभश्चैकचक्रश्चक्रत्रितयभू
षितः त्रिविक्रमस्त्विष्टदःस्यात्पूजकस्यनसंश
यः १ ब्रह्मांडे त्रिविक्रमस्त्रिकोणाढ्यश्चक्रत्रय
समन्वितः द्विजेंद्राणामयंपूज्योनान्येषांतुक
दाचन १ तथा अधश्चक्रंविशालाभमूर्ध्वेचक्रं
सुदीर्घकं भ्रमरांजनसंकाशमीषद्दीर्घंत्रिविक्र
मम् १ चक्रद्वयंविलेविंद्यात्पार्श्वेकोदंडसंयुतमि
ति १ ॥

पुराण संग्रह में और कथन कियाहै कपिलकी न्याईहै आभा
जिसकी और एक चक्र वा तीनचक्रोंकर्के भूषितहोवे सो त्रिवि
क्रम पूजने वाले पुरुषकों इष्टकों देताहै इ में कुछ संशय न
हिहै १ ॥ तीन कोणोकर्के युक्त और तीन चक्रों कर्के जो युक्त
सो त्रिविक्रम ब्राह्मणो ने सदा पूजने योग्य है और जातिने
कदाचित् भी न पूजना चाहिये १ और तैसें कथन करतेहैं हेठ
और उपरहैचक्र जिसके और वडी आभा वाला और भ्रमर और
अंजन की न्याईहै प्रकाश जिसका और दीर्घ होवे सो त्रिवि
क्रम कथन कियाहै १ ॥ जिसके छिद्र में दो चक्र होए और
पासेमेंकोदंड कर्के युक्त होवे सो भी त्रिविक्रम होताहै १ ॥

अथदधिवामनमूर्त्तिलक्षणं पुराणसंग्रहे अथ श्चक्राग्रविलसद्दधिविंदुसवर्तुलम् वामंतन्नील वर्णाभंवदंतिदधिवामनम् १ एतल्लक्षणसंयुक्तं दधिबुद्बुदशोभितं वामनंनीलवर्णाभंहूस्वंचैव सुखप्रदम् २ विष्णुधर्म्मोत्तरे छत्राकारंयथा कूर्ममध्येचक्रंप्रदृश्यत दधिविंदुसमायुक्तंसू क्ष्मंतद्दधिवामनामिति १ श्रीधरमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे श्रीधरस्तुतथादेवश्चिन्हितोवनमाल या कदम्बकुसुमाकारोरेखापंचकसंयुतः १ ॥

दधिवामन मूर्त्तिका लक्षण पुराण संग्रहमें कथन कियाहै अ थइति अथाहै चक्र जिसके और अग्रभावमें प्रकाशमान होवे दधिकीयां विंदु जिसमे और गोलाकार और वाम पासे में नीला वर्ण होवे जिसका तिसकों दधिवामन कथनकरतेहैं १ ॥ इस लक्षण करके जो युक्त और दधिका जो बुलबला तिसकरके शोभित और नीलवर्णकी है आभा जिसमें और हूस्व सो सुख केदेनेवाला दधिवामन होताहै २ ॥ विष्णुधर्म्मोत्तरमें और कथ नकियाहै छत्रकी न्याईहै आकार जिसका और कूर्मजैसा होवे और जिसके मध्यमें चक्रदेखिये और दधि विंदु करके युक्त और जोसूक्ष्म होवे सो दधिवामन कथन करीदाहै १ ॥ श्रीधर मूर्त्ति का लक्षण कथन कियाहे ब्रह्मांड पुराणमें बनमाला करके जो युक्त और कदंब पुष्पकी न्याईहै आकार जिसका और पंचरेखाों करके जो युक्त सो श्रीधर देव कथन करीदाहै १ ॥

पुराणसंग्रहे श्रीधरोसौतथादेवश्चिन्हितोवन
मालया कदंबकुसुमाकारऊर्ध्वरेखश्चपादयो
रिति ब्रह्मांडे चक्रेद्वेमध्यदेशेतु पंकजेनसमान्वि
तःसूक्ष्माननःश्यामलाभस्सपुनःश्रीधरःस्मृत
इति १ तथा निम्नोदरशिरःपार्श्वनिम्नमास्यंस
वर्तुलं निम्नचक्रमतिह्रस्वंश्रीधरंसर्वसिद्धिदम्
॥ १ विष्णुरहस्ये यस्यमध्येगदाकारादृश्यते
पंचरेखिका वामपार्श्वस्थितारेखातथाचैवतुद
क्षिणे १ श्रीधरोवामवहुलोहरिद्वर्णश्चदृश्यते
सौभाग्यंसततंयस्तुसर्वसौख्यंददातिच २

पुराणसंग्रहमें ओर कथन कियाहै श्रीधर इति वनमाला कर्के जोचिन्हित ओर कदंबवृक्षके पुष्पकीन्याईहै आकार जिसका ओर जिसके पादोंमें ऊर्ध्वरेखाहोवे सो श्रीधर देवहोताहै १ ब्रह्मांडपुराणमें ओर कथनकियाहै जिसके मध्यदेशमें दोचक्रहोंण ओर कमल कर्के युक्त होवे ओर सूक्ष्महे मुख जिसका ओर श्याम रंगवाला होवे सोभी श्रीधर कथन कियाहै १ ओर तैसे कथनकरतेहैं नीवाहै उदर ओर शिर ओर पार्श्व जिसकाओर नीचाहै मुख जिसका ओर गोलाकार होवे ओर नीचाहै चक्र जिसमें ओर छोटा जैसा होवे सो संपूर्णसिद्धिके देनेवालाश्रीधर होताहै १ विष्णुरहस्यमें ओर कथन कीताहै जिसके मध्य में गदाके आकारकी न्याई रेखादेखिये वाम ओर दक्षिणमेंरेखा स्थित होवे १ ओर वहुतसुंदरहोवे ओर हरितवर्णवाला जो देखिये सो श्रीधर निरंतर सौभाग्य ओर संपूर्ण सोख्यकोंदेताहै २

कौस्तुभेनतुसंयुक्तः पीताभश्चातिशोभनः छत्र
चक्रसमायुक्तः स्वर्णाभश्चसुशोभन इति ३ तथा
शाद्वलसंकाशंवनमालाविभूषितम् किंचिद्विष
मचक्राढ्यं श्रीधरंश्रीकरंविदुरिति १ ब्रह्मांडे प
क्कजंवूफलाकारंदक्षिणांगेचचक्रिणम् श्रीधरंना
मविज्ञेयंसर्वसिद्धिप्रदायकमिति १ धनधान्य
समृद्धिंचरत्नानिविविधानिच पुत्रपौत्रादिवृ
द्धिंचपूजनाल्लभतेनर इति २

कौस्तुभमणिकरके जो युक्त और पीली आभाजिसकी छत्रऔर
चक्रकरके युक्त होवे औरसुवर्णके रंगवाला होवे और सुंदर होवे
सो श्रीधर होताहै ३ और तैसें हरे घासकी न्याई प्रकाशवाला
और वनमाला करके भूषित होवे और कुछक विषम चक्र करके
युक्त होवे सो श्रीको करणे वाला श्रीधरजानना १ ब्रह्मांडपुराण
में और कथन करताहै पक्काहुआ जांजवूफल तिसकी न्याईहै
आकार जिसका और दक्षिण पासेमें चक्रहोवे सोसंपूर्णसिद्धि
के देने वाला श्रीधर जानना १ तिस श्रीधरके पूजनतें पुरुष
धन और अन्नकी वृद्धिऔर विविधप्रकारके जो रत्न और पुत्र
पौत्रादिकी जो वृद्धि तिसकों प्राप्त होताहै २

हृषीकेशमूर्त्तिलक्षणं पाद्मे अर्धचंद्राकृतिर्देवो हृषीकेशउदाहृतः तमर्च्यलभतेस्वर्गविषयांश्चसमोहितानिति १ वैखानससंहितायाम् सूकरास्यनिभाकारोयस्येरखाः सवर्चसः वज्रैकं दृश्यतेयत्रहृषीकेशः सउच्यतइति १ विष्णुरहस्ये प्रदक्षिणावर्त्तयुतावनमालाविभूषिता वर्तुलायत्ररेखाचपृथक्कक्रसमन्विता इष्टार्थफलदामूर्त्तिस्सातांयत्नेनपूजयेदिति १

हृषीकेशकी मूर्त्तिका लक्षण पद्मपुराणमें कथन कियाहे अर्धेति अर्धचंद्रमाकी आकृतिकी न्याईं जोदेव सोहृषीकेश कथन कीताहै तिसकों पूजने वाला जो पुरुषसो स्वर्ग और इच्छितजो विषय तिनकों प्राप्तहोताहै १ वैखानससंहितामें और कथन कीताहै सूकरके मुखकी न्याईं है आकार जिसका और जिसकी तेजवालीयां रेखाहोंस और जिसके उपरवज्रका चिन्ह देखिये सो हृषीकेश कथन करीदाहै १ विष्णुरहस्यमें और कथन किय हैं जो मूर्त्ति प्रदक्षिणावर्त्त करकें युक्तहोवे और वनमाला करकें भूषित और गोलाकार जिसमें रेखा होवे और भिन्न भिन्नजोचक्र तिस करकें युक्त होवे सो इष्टफलके देने वाली मूर्ति होतीहे तिसका यत्न करकें पुरुष पूजन करे १

तथा वर्त्तुलस्निग्धसर्वांगोगदाकारश्चदृश्यते१ दूर्वाभावर्तुलायत्रपीतरेखातथैवच अनेकमू र्त्तिसंयुक्तासर्वकामफलप्रदेति २ तथा दिक्षुचै वतुसर्वासुयस्योर्ध्वंदृश्यतेमुखं हृषीकेशःसवि ज्ञेयः सर्वकामफलप्रद इति १ पुराणसंग्रहे पं चरंध्रसमायुक्तंदशचक्रसमन्वितं श्यामलंको मलंस्निग्धंहृषीकेशंप्रचक्षते १ नारदपुराणे शोणपिंगलकेशोयोहृषीकेशःसउच्यते अयों तरेणवर्णेनरूक्षवर्णेनवाभवेदिति १

और तैसें कथनकरतेहैं गोलाकार औरचिकनेहैं अंगजिसकेऔर जिसमें गदाका आकार देखियें सो हृषीकेश होत.है१घासकी न्याईहै आभा जिसकी और गोलाकार जिसमेंपीत रेखाहोवे और अनेकमूर्त्तियों करकें जोयुक्त सो मूर्त्ति संपूर्ण कामनाकेदने वालीहोतीहै २ औरकथनकरतेहैं संपूर्णदिशोंमें जिसका मुखदे खिये सोसंपूर्ण कामकेदेनेवालाहृषीकेशजानना १ पुराणग्रंह में और कथनकरतेहैं पंचरंध्रकयाखुड और दशचक्रोंकर्के जोयुक्त और श्यामरंगवाला और चिकना होवे सोहृषीकेश कथन करीता है १ नारद पुराणमें और कथन कियाहै शोण और पिंगलव र्णवालेहैं केशजिसके सोहृषीकेश कथन कीताहै लोहेकी न्याईं जो वर्ण वा रूक्षेवर्ण वाला होवे सोभी हृषीकेश होताहै १

वाराहे इन्द्रनीलनिभाकारःपृथक्चक्रःसुशोभ
नः हृषीकेशस्तुविज्ञेयस्सर्वकामफलप्रद इ
ति ॥ १ ॥ पद्मनाभलक्षणं ब्राह्मे आरक्तंप
द्मनाभाख्यंपंकजच्छत्रसंयुतं तुलस्यापूजये
न्नित्यंदरिद्रः श्रीश्वरोभवेत् ॥ १ ॥ पद्मपुराणे
बहुभिश्चिह्नितश्चक्रैः शुक्लवर्णादिसंयुतैः दैत्या
रिः कमलाक्षश्चगदापाणिरधोक्षजः ॥ १ ॥
पद्मनाभश्चदेवस्स्यात्प्रत्यहंदुःखदायकः त
स्मान्नमानवैःपूज्योबहुचक्रःप्रजापत इति ॥२

वाराह पुराणमें और कथन कियाहै इंद्रनीलेति इंद्रनील मणि की न्याईहै आकार जिसका और भिन्न भिन्न चक्र वाला और सुंदर होवे सो संपूर्ण काम फलके देने वाला हृषीकेश जानना ॥ १ ॥ पद्मनाभका लक्षण ब्रह्मपुराणमें कथन कीयाहै लाल है वर्ण जिसका और कमल और छत्र कर्के जो युक्त सो पद्मनाभ होताहै जो निर्धन पुरुष तिसका तुलसी कर्के पूजन सदा करताहै सो धन वाला होताहै ॥ १ ॥ पद्मपुराणमें और कथन कियाहै बहुतियां वर्णों वालेहैं चक्र जिसमें सो दैत्योंका शत्रु और कमलकी न्याई हैं नेत्र जिसके और गदाहै हस्थ जिसके और अधोक्षज ॥ १ ॥ और दिन दिन में दुःखके देनेवाला पद्मनाभ देव होताहै तिसकारणतें पुरुषोंने बहु तियां चक्रों वाला न पूजना चाहिये ॥ २ ॥

विष्णुरहस्ये अतसीपुष्पसंकाशोविंदुनापरि
शोभितः पद्मनाभइतिख्यातोदुर्लभस्सर्वकाम
दः ॥ १ ॥ नानावर्णाशिलाचैवपद्मनाभस्यदृ
श्यते दृष्टायेनेदृशीमूर्त्तिस्सतांयत्नेनपूजयेदि
ति ॥ २ ॥ वाराहे पद्मनाभःस्थूलचक्रःशुक्लव
र्णःसुशोभनः दीर्घद्वारगृहांकस्थंचक्रंचोन्नत
नाभिकम् ॥ १ ॥ वनमालातुकंठेचश्रीवत्सांक
श्चदृश्यते पद्मनाभोभवेद्देव.कुर्याच्छत्रुपराजय
म् २ ललाटेशेषनागस्तुशिलार्द्धेचसकांचनम्
सुवर्णाभंयस्यचक्रंसुखसौभाग्यवर्धनामिति ३

विष्णुरहस्यमें और कथन करतेहैं अतसीपुष्पेति अलसीके पुष्पकी न्याई है प्रकाश जिसका और बिंदु करके शोभित सो संपूर्ण कामके देनेवाला और दुर्लभ पद्मनाभ कथन किया है ॥ १ ॥ जिस पद्मनाभकी नाना वर्णों वाली शिला देखिये ऐसी मूर्त्ति जिसने देखी सोपुरुष यतन करके तिसका पूजन करे ॥ २ ॥ वराह पुराणमें और कथन किया है स्थूलहै चक्र जिसमे और शुक्लवर्ण वाला होवे और सुंदर और दीर्घद्वारमे गृहका चिह्न वाला और उन्नत नाभि जिसमे चक्र होवे ॥ १ ॥ और जिसके कंठमे बनमाला और श्रीवत्सांक देखिये सो शत्रुवांकों जीतने वाला पद्मनाभ देव होताहै ॥ २ ॥ जिसके मस्तकमें शेषनागका चिह्न होवे और अर्ध शिलामें सुवर्णकीयां रेखां होण और जिसका चक्र सुवर्णकी आभा वाला होवे सो सुख और सौभाग्यको वधाने वाला होताहै ॥ ३ ॥

तथा मुखेसूक्ष्मंमध्यसूक्ष्ममंतःसूक्ष्मंचदृश्य
ते सपद्मनाभोविज्ञेयःसौख्यदःसर्वकामदइति
४ ॥ दामोदरलक्षणं पुराणसंग्रहे दामो
दरंनथास्थूलंमध्यचक्रप्रतिष्ठितम् दूर्वाभंद्वारि
संकीर्णंपीतरेखायतंशुभम् १ चक्रद्वयसमायु
क्तंपूजयेत्सुखसंपदे इति २ विष्णुरहस्ये स्थू
लोदामोदरोज्ञेयःसूक्ष्मचक्रोभवेत्तुयः चक्रेतुन
मध्यदेशस्थेपूजितस्तुसुखप्रदः १ पूर्वद्वारंतुसं
कीर्णंपीतवर्णश्चदृश्यते अनेकमूर्त्तिसंभिन्नस्स
र्वकामफलप्रद इति २

और तैसे कथन करतेहैं जिसका मुखभी सूक्ष्महोवे और
मध्यभीसूक्ष्मदेखिये और अंतमेंभीसूक्ष्म तिसकोंपद्मनाभ जानना
सो सौख्य और संपूर्णकामनाके देनेवालाहोताहै ४ दामोदरका
लक्षण पुराणसंग्रहमें कथन कियाहै जो स्थूलहोवे और जिसके
मध्यमें चक्रस्थितहोवे और घासकीन्याईहै आभा जिसकी और
द्वारमें संकीर्ण होवे और पीतरेखाककें युक्तहोवे १ और दोच
क्रों करकें युक्तहोवे सो दामोदरहोताहै सुख और संपदाके वा
स्ते पुरुष तिसकापूजनकरे २ विष्णुरहस्यमें और कथन करतेहैं
जो सूक्ष्मचक्रवालाहोवे सो स्थूल दामोदर जानना और जिस
के मध्यमें चक्र स्थितहोवे सो पूजनेवालेकों सुखदेताहै १ जि
सका पूर्व द्वार संकीर्णहोवे और पीतवर्णदेखिये और अनेकमूर्ति
यों करकें भिन्नहोवे सो संपूर्ण कामकेदेने वाला होताहै २

वाराहे स्थूलोदामोदरोज्ञेयः सूक्ष्मरंध्रोभवेद्यदि चक्रेतुमध्यदेशस्थेपूजितस्तत्रसिद्धिद इति १ तथा उपर्यधश्चचक्रेद्वेनातिदीर्घंमुखविलम् मध्येचरेखालंवैकासचदामोदरःस्मृतइति १ ब्रह्मांडेदामोदरश्चविज्ञेयश्चक्रद्वयसमान्वितःरक्तपुष्पैस्तमभ्यर्च्य सर्वान्कामानवाप्नुयादिति १ मध्यस्थूलःप्रतिष्ठोत्थचक्रवान्द्विरदाकृतिः द्वारदेशेतिसंकीर्णःपीतरेखस्तुदामवान् २दामोदराभिधानोयंविज्ञेयोगंडकेमणिः पुष्णायादपितांसिद्धिंसेवितः श्रेष्ठभावतइति ३

वराह पुराणमें और कथन कियाहै स्थूल इति अकर मुखसूक्ष्म खुड वालाहोवे सो स्थूल दामोदर जानना और जिसके मध्य देशमें चक्र स्थित होवे सो पूजने वाले कों सिद्धिके देने वाला होताहै १ ॥ और तैसें कथन करतेहैं उपर और अधा दो चक्र होन और न अतिशय कर्के दीर्घ जिस के मुखमें विल क्या खुड होवे और मध्यमें लंबी एक रेखा होवे सो दामोदर कथन कीताहै १ ॥ ब्रह्मांड पुराणमें औरक थन करतेहैं दो चक्रों कर्के जो युक्त सो दामोदर जानना तिसकों रक्तपुष्पोंकर्के जो पुरुष पूजताहै सो संपूर्ण कामनाकों प्राप्तहोताहै १ औरमध्यमें जोस्थूल और प्रकटचक्रवाला और हस्तिकी न्याईहै आकृति जिसकी और द्वारदेशमें संकीर्णहोवे औरपीतहै रेखाजिसमें औरपुष्पोंकी माला होवे गंडकीनदीकी यांजो शिला तिनोंमें मणिरूप यह दामोदर नामकर्के जानना श्रेष्ठ भावनाकर्के जो सेवताहै तिसकी सिद्धिकों पुष्ठकरताहै ३

लक्ष्मीदामोदरलक्षणं स्कांदे वर्तुलः कृष्ण
वर्णाढ्यो मध्यचक्रसमन्वितः श्वेतबिंदुसमायु
क्तो लक्ष्मीदामोदरः स्मृतः १ ॥ धनधान्यस
मृद्धिः स्यात्पुत्रपौत्रादिवर्धनः पशुवृद्धिकरो दे
वो गृहिणां सर्वकामद इति २ संकर्षणमूर्त्तिल
क्षणं ब्राह्मे ॥ द्वे चक्रे चाग्रलग्ने पूर्वभागश्च पु
ष्कलः संकर्षणाख्यो विज्ञेयो रक्ताभश्चातिशो
तिशोभन इति १ ॥ तथा द्वे चक्रे ह्येकसंलग्ने
भागैकं मुसलं भवेत् संकर्षणः स विज्ञेयो रक्ता
भश्चारुदर्शन इति १ ॥

लक्ष्मीदामोदरका लक्षण स्कंदपुराणमें कथन कियाहै वर्तुल
इति वर्तुल क्या गोलाकार और कृष्णवर्ण करके युक्त और मध्य
मे जो चक्र तिसकरके युक्त और श्वेत बिंदु करके जो युक्त सो ल
क्ष्मीदामोदर कथन कीताहै १ ॥ सो देव धन और अन्नकी वृ
द्धि करताहै और पुत्र पौत्रादिकांकों वधाताहै और पशुवांकी
वृद्धिकों करदाहै और गृहस्थियां कों संपूर्ण कामना देता
है २ ॥ संकर्षण मूर्तिका लक्षण कथन कियाहै ब्रह्मपुराणमें
जिसके अग्रभागमें दो चक्र होण और पूर्वभाग वडा होवे
और रक्तवर्ण वाला और अति सुंदर होवे सो संकर्षण नामक
कें जानना १ और कथन करतेहैं दो चक्र एकमें लगेहुवे हो
ण और एकभागमें एक मुसल होवे और रक्त वर्ण वाला और
सुंदर दर्शन वाला होवे सो संकर्षण जानना १ ॥

वाराहे चक्रद्वयसमायुक्तःकपिलेनचसंयुतः ॥ सौसंकर्षणोनामयतिभिः पूज्यतेसदेति १ ॥ वामनपुराणे शंखचक्रगदाकूर्ममत्स्यांकोथप्र दृश्यतेसंकर्षणस्तुदेवानांसद्योलक्ष्मीप्रदायक इति १ वासुदेवमूर्तिलक्षणम् सद्विविधः शुद्धः शांताख्यश्चेति तत्राद्योब्रह्मवैखानससंहितयोः द्वारदेशसमेचक्रेदृश्येतेनांतरायके वासुदेवस्स विज्ञेयः शुक्लाभश्चसुतेजसः १ अग्निपुराणे वा सुदेवःस्मितद्वारःशिलालग्नद्विचक्रक इति १

वराहपुराणमें और कथन कियाहै चक्रद्वयेति जो दो चक्रों करकें युक्त होवे और कपिल वर्ण करकें युक्त होवे सो संकर्षण नामकरकें होताहै यतीयोंने सो सदा पूजना चाहिये १ ॥ वामन पुराणमें और कथन कियाहै जिसमें शंख और चक्र और गदा और कूर्म और मत्स्यका चिन्ह देखिये सो सं कर्षण देवतियोंकों तातू काल लक्ष्मीकों देताहै १ ॥ वासु देव मूर्ति का लक्षण कथन करतेहैं सो दो प्रकारका है शुद्ध और शांत नाम करकें तिनोंमें प्रथम शुद्ध वासुदेव का लक्षण ब ह्मपुराण और वैखानस संहितामे कथन कियाहै जिसके मुख में भिन्न भिन्न दो चक्र देखिये और शुक्ल वर्ण वाला होवे और बडे तेज वाला होवे सो वासुदेव जानना १ ॥ अग्नि पुराणमें और कथन कियाहै हसिताहै मुख जिसका और शिलामें ल गे हुवे दो चक्र होण सो वासुदेव होताहै १ ॥

विष्णुरहस्ये कृष्णानीलाशिलायस्यसमचक्राप्र दृश्यते वासुदेवःसाविज्ञेयःसर्वकामफलप्रदइ ति १ ॥ वाराहे द्वारभागेसमेचक्रेदृश्येतेनांतरी यके वासुदेवस्सविज्ञेयःशुक्लपीतांबरोव्ययः १ तथा वासुदेवोजगद्योनिःपीतवर्णेनाचिह्नितः चक्रेद्वारप्रदेशेचसौख्यदः परिकीर्त्तितइति १ तथा वामपार्श्वस्थितेचक्रेसितवर्णेनमिश्रिते वासुदेवःसविज्ञेयोविप्राणांभुक्तिमुक्तिदइति १ ब्रह्मांडे स्थूलाशिलामहाचक्रं श्यामचक्रंचवारु णं वासुदेवंचविज्ञेयंसर्वकामफलप्रदामिति १

विष्णुरहस्यमें और कथनकियाहै कृष्णनीलोंति जिसकी शिला कृष्ण और नीलवर्ण वालीहोवे और समचक्रवाली देखिये सो सं पूर्ण काम फलके देनेवाला वासुदेवजानना १ वराहपुराणमें और कथन कियाहै जिसकेमुखमें भिन्न भिन्न दो चक्रदेखिये और शुक्ल और पीतवर्णवालाहोवे सो वासुदेवजानना १ और कथन करतेहैं जो पीतवर्णकरके चिह्नित और जिसके मुखमे चक्रदेखिये सो जगद् योनि वासुदेवसुखकेदेनेवाला कथन कीताहै १ और कथन करतेहैं जिसके वाम पासेमें चक्र श्वेतवर्णकरके मि श्रितहोवे सोब्राह्मणोंको भुक्तिमुक्तिकेदेनेवालावासुदेवजानना १ ब्रह्मांडपुराणमें और कथनकियाहै स्थूलहै शिला जिसकी और बड़ेचक्रवाला और श्याम चक्रवाला होवे अथवा लाल चक्र वालाहोवे सोसंपूर्ण कामफलके देनेवाला वासुदेव जानना १॥

शांतवासुदेवलक्षणं वाराहे रेखापंचायुधध रोहिमांशुसदृशप्रभः नाभिचक्रधरःशांतोवा सुदेवः प्रकीर्त्तित इति १ प्रद्युम्नमूर्त्तिलक्षणं वैखानससंहितायाम् प्रद्युम्नःसूक्ष्मचक्रःस्या न्नीलांबुजनिभस्तथा सददातिश्रियंन्दृणामभ त्तयापिप्रपूजित इति १ गारुडे प्रद्युम्नःसूक्ष्म चक्रस्तुनीलवर्णस्तथैवच सुषिरःसूक्ष्मवहुलो दीर्घाकारस्तथाभवेदिति १ अनिरुद्धमूर्त्तिल क्षणं ब्राह्मे अनिरुद्धोद्विधाज्ञेयस्तत्रलक्षणभे दतः अनिरुद्धंतुनीलाभंवर्तुलंचातिशोभनम्

शांतवासुदेवका लक्षण वराह पुराणमे कथन कीयाहै रेखेति पंचरेखा और आयुधक्याशस्त्रकेधारणेवाला और चंद्रमाकी न्या ईहै प्रभा जिसकी और नाभिमे चक्रहोवे सोशांतवासुदेव कथ नकींताहै १ प्रद्युम्नका लक्षण वैखानस संहितामें कथन कियाहै जो सूक्ष्म चक्रवाला होवें और नीले कमलकी न्याईहै आभा जिसकी सो प्रद्युम्नकथन कीताहै सो अभक्तिक वेंभी पूजिआ हुआ पुरुषांकों लक्ष्मी देताहै १ गरुड पुरा णमें और कथन करतेहैं सूक्ष्महै चक्रजिसमे और नीले वर्णकी आभावाला होवे औरछिद्र और सूक्ष्म और वहुत दीर्घ आका रवाला होवे सो प्रद्युम्न होताहै १

अनिरुद्धमूर्त्तिका लक्षणकथन कीयाहै ब्रह्मपुराणमें तिसमेंलक्षण भेदतें अनिरुद्धकी मूर्त्ति दोप्रकारकीहै नीलीहै आभाजिसकी और गोलाकार और सुंदर

रेखात्रयंतुयद्द्वारे पृष्ठपद्मेनलांछितमिति १ ॥
कृष्णवर्णंसमद्वारंचक्रभित्तिसमीपगम् सूक्ष्म
चक्रंभवेदूर्ध्वंपार्श्वेवहुलपुष्पवत् अनिरुद्ध
मितिप्रोक्तंसर्वलोकैककारणमिति २ ब्रह्मपु
राणे कृष्णवर्णस्समद्वारश्चक्राभ्यांपरिभूषितः
सूक्ष्मचक्रंभवेदूर्ध्वंपार्श्वेवहुलपुष्पवत् १ अनि
रुद्धः पीतवर्णोवर्तुलश्चातिशोभनः सोनिरुद्ध
इतिख्यातः सर्वलोकैककारणमिति २

औरजिसके मुखमें तीन रेखाहोंण और पृष्टमें कमलक
चिह्नहोवे सो अनिरुद्ध कथनकीयाहै १ कृष्णवर्णमिति कृष्णहै
वर्ण जिसका और सम मुखवालाहोवे और चक्रकीयांजो भित्ति
यांतिनोंके समीपमें उपरसूक्ष्मचक्र होवे और पासेंमेंबहुल कथा
वसमेंके पुष्पकीन्याईहोवे सो संपूर्ण लोकका कारण अनि
रुद्धकथनाकियाहै २ ब्रह्मपुराणमें और कथन कीताहै कृष्ण वर्ण
वालाहोवे और सममुखवाला होवे और चक्रों करके भूषित होवे
और उपर सूक्ष्म चक्र होवे और पासेमें वहुल पुष्पकीन्याई हो
वे १ और पीत वर्ण वाला होवे और गोलाकार होवे सो सं
पूर्ण लोकका कारण अनिरुद्ध कथन कियाहै २

ब्रह्मांडे कृष्णवर्णस्समद्वारश्चक्रद्वारसमीपगम्
सूक्ष्मचक्रंभवेदूर्ध्वंपार्श्वेचक्रेणपुण्यधृक् अनि
रुद्धइतिप्रोक्तः सर्वलोकैककारणमिति ॥ १ ॥
वाराहे जपाकुसुमसंकाशंबनमालाविभूषितं
धनुर्बाणांबुजधरमनिरुद्धंविचेष्टितम् १ ॥ ए
तल्लक्षणसंयुक्तंसूक्ष्मचक्रंतुसंमुखम् सौवर्णरौ
प्यरेखाढ्यमनिरुद्धंविदुर्बुधा इति २ पुरु
षोत्तमलक्षणं ब्रह्मपुराणे प्राच्यादिष्वष्टका
ष्ठासुयस्योर्ध्वंदृश्यतेमुखं पुरुषोत्तमः सविज्ञे
योभुक्तिमुक्तिफलप्रदइति १ ॥

ब्रह्मांड पुराणमें और कथन कीताहै कृष्णहै वर्ण जिसका और
सम मुख वाला होवे और चक्र द्वार के समीपमें उपर सूक्ष्म
चक्र होवे पासेमें चक्र होने करके पुण्यके धारण वाला और
संपूर्णलोकका कारण अनिरुद्ध कथन कीताहै १
वराहपुराणमें और कथन कियाहे जपाकुसुमेति जपाके
पुष्पकी न्याई प्रकाशवाला और वनमालाकरके भूषित धनु और
बाण और कमलके धारणे वाला होवेसो अनिरुद्ध कथन कीता
है १ इस लक्षण करके जो युक्त और मुखमें सूक्ष्म चक्र वाला
होवे सुवर्ण और रूप्येकी रेखाकरके युक्तहोवे तिसको बुद्धिमान्
अनिरुद्धजानतेहैं २ पुरुषोत्तमकालक्षण ब्रह्मपुराणमें कथनकियाहै
पूर्वथीआदलेकरके ८ आठजो दिशातिनोंमें जिसकामुखदेखिये
सो भुक्ति और मुक्तिके फलको देने वाला पुरुषोत्तम जानना १

ब्रह्मांडे षट्चक्रोवर्तुलाकारोवनमालाविभूषि
तः पुरुषोत्तमोभवेद्देवोभोगमोक्षफलप्रद इति
॥ १ ॥ मध्यचक्रःसुवर्णश्चमस्तकेपृष्ठचक्रकः
पुरुषोत्तमोभवेद्देवःपूजकस्यशुभप्रदइति २
पुराणसंग्रहे अतसीपुष्पसंकाशोबिंदुनापरि
भूषितः पुरुषोत्तमउक्तोसौसर्वसौभाग्यवर्धनः
॥ १ अतिकृष्णोरक्तरेखोवृहच्चक्रस्तुवक्रवान्
क्वचित्कपिलसंयुक्तःस्थूलोवासूक्ष्मएववा २ ॥

ब्रह्मांडपुराणमें और कथन करतेहैं छे हैं चक्र जिसमें और गो
लाकारऔर बनमाला करके जो भूषित सो भोग और मोक्ष फल
के देनवाला पुरुषोत्तम होताहै १ मध्यमेंहै चक्र जिसके और
मस्तकमें सुवर्ण होवे और पृष्ठमें चक्र होवे सो पूजने वालेकों
शुभके देन वाला पुरुषोत्तम देव होताहै २
पुराण संग्रहमें और कथन करतेहैं अतसीति अलसीके पुष्प
की न्याईंहै प्रकाश जिसका और बिंदुकरके जो भूषित सो सपू
र्ण सौभाग्यके देने वाला पुरुषोत्तम होताहै ॥ १ ॥ अतिश
य करके कृष्ण वर्ण वाला होवे और रक्त रेखा जिसमें और ब
डे चक्र वाला होवे और किसेकस्थानमें कपिल वर्ण करके यु
क्त होवे और स्थूल वा सूक्ष्म होवे ॥ २ ॥

पुरुषोत्तमःसविज्ञेयोद्वारचक्रेणपंडितैःपाशांकु
शयुतश्चक्रंवामपार्श्वेसदाखग इति ३ नार
दीयेखगासनसमारूढोबाणासनशरोपमः उ
भेचक्रेप्रदृश्येतेसर्वसौभाग्यदायक इति १
विष्णुरहस्ये पारिजातध्वजोपेतोवर्तुलोवज्रसं
युतः पुरुषोत्तमस्सविज्ञेयःसर्वसौभाग्यदाय
कः १ एनंयोभजतेमर्त्यःशेषपर्यंकशायिनम्
पुत्रपौत्रकलत्राढ्योविष्णोर्लोकंसगच्छति २

पाश और अंकुश क्या कुंडा तिसककें जो युक्त और बामपासेमें सदा चक्रहोवे हेखग सो बुद्धिमानोने द्वार चक्रककें पुरुषोत्तम जानने योग्यहै ॥ ३ नारदीय पुराणमें और कथनकरतेहैं पक्षीके आसनमें जो आरूढ और बाणका जो आसन औरशरकीन्याईं है उपमा जिसकी और जिसमें दोचक्र देखियें सो सौ भाग्यके देनवाला पुरुषोत्तम होताहै ॥ १ ॥ विष्णु रहस्य मे और कथन कियाहै पारिजातकी ध्वजा करकें जो युक्त और गो लाकार और वज्र करकें जो युक्त सो संपूर्ण सौभाग्यके देने वा ला पुरुषोत्तमजानना ॥ १ ॥ एनमिति शेषनागका जो पलंघ तिसके उपर जो शयन करणे वाला पुरुषोत्तम तिसकों जो भजताहै सो पुत्र और पौत्र और स्त्री करकें युक्त होआ हुआ विष्णु लोककों प्राप्त होताहै ॥ २

वाराहे यस्यमूर्त्तेरुत्तमांगंचारुचक्रसमन्वितम्
सामूर्त्तिःस्वयेशानतन्नाम्नापुरुषोत्तमइति १ अ
धोक्षजमूर्त्तिलक्षणंब्रह्मांडे अतिकृष्णोरक्तरेखो
वृत्तदेहःसचक्रकः किंचित्कपिलसंयुक्तःस्थूलो
वासूक्ष्मएववा अधोक्षजइतिख्यातः पूजकस्य
शुभप्रद इति ॥ १ ॥ वाराहे पार्श्वेचक्रद्वयंसू
क्ष्ममधोवदनसंयुतः अधोक्षजस्तुविज्ञेयोयति
भिः पूजितः सदेति ॥ १ ॥

वराह पुराणमें और कथन करतेहैं जिसमूर्त्तिकाशिर सुंदर चक्र करके युक्त होवे सो मूर्त्ति स्वयेशाननामकरके पुरुषोत्तमहोताहै १ अधोक्षजमूर्त्तिका लक्षण ब्रह्मांड पुराणमे कथन कियाहै अतिशयकरकेजो कृष्ण और रक्तहै रेखा जिसमे औरगोलाकार और चक्रवाला और कुच्छक कपिलवर्ण करके युक्तहोवे और स्थूलवा सूक्ष्म होवे सो पूजन वालेकों शुभके देनवाला अधोक्षज कथन कीनाहै ॥ १ ॥ वराह पुराणमे और कथन करतेहैं पासमें दो सूक्ष्म चक्र होण और हेठ मुख वाला होवे सो अधोक्षज जानना और यतियों ने सो सदा पूजने योग्यहै ॥ १ ॥

अथनृसिंहमूर्त्तीनांसभेदंलक्षणान्युच्यंते पुराणसंग्रहे तेषांशुद्धोभवेदाद्योलक्ष्मीयुक्तस्ततःपरःबालश्चकपिलोयोगात्सर्वतोमुखएवच १ ॥ पातालाकाशकौविद्युदधोमुखविभीषणौ हारज्वालाकुक्षिपूर्वौविवृतास्योमहाभिधः ॥ २ ॥ अघोरपूर्वकश्चैतेनृसिंहाःपरिकीर्त्तिताः तेषांद्शावतारेषुराक्षसान्तविदारणौ ३ उक्तान्यत्रावशिष्टानांलक्षणानिक्रमादितः ४ शुद्धनृसिंहलक्षणं गारुडे वर्त्तुलस्थूलपर्यंतंस्पष्टचक्रसमन्वितम् हूस्वमुन्नतमुच्चैर्वादीर्घास्यमतिगह्वरम् १

इसतें उपरंत नृसिंहमूर्त्तीयां का लक्षण भेदके सहित कथन करतेहैं पुराण संग्रहमें तेषामिति प्रथम शुद्धनृसिंह और लक्ष्मीनृसिंह और बालनृसिंह और योगतें कपिलनृसिंह और सर्वतोमुख ॥ १ ॥ और पाताल नृसिंह और आकाशनृसिंह और विद्युन्नृसिंह और अधोमुखनृसिंह और विभीषण नृसिंह और हारज्वाला नृसिंह और कुक्षिनृसिंह और विवृतास्यनृसिंह और महानृसिंह ॥ २ ॥ अघोरपूर्वकयहनृसिंह कथनाकियेहैं तिनोकि दोनामदश्अवतारोंमें राक्षसांत औरविदारणकथनकीतेहैं ३ इहांक्रमतें अवशिष्ट क्या बाकी जो रहितेहैं तिनाके लक्षण कथनकरेंगे ॥ ४ ॥ शुद्धनृसिंहकालक्षण गरुडपुराणमें कथनकरतेहैं गोलाकार और स्थूलपर्यंत स्पष्टचक्र करके जो युक्त और हूस्व और उच्चा और दीर्घ और अतिगह्वरजो होवे ॥ १ ॥

स्फुरद्रेखावलियुतंनाभिर्यस्योन्नताभवेत् चक्र स्योभयपार्श्वेतुस्नुहीपुष्पाकृतिर्भवेत् ॥ २ ॥ केशभारंतुचैताक्ष्यंदृश्यतेचक्रपार्श्वतः नृसिंहःपीतवर्णस्तुमहाचक्रोमुखेगुरुः यतिःसंपूजयेदेनं गृहस्थः परिवर्जयेदिति ॥ ३ ॥ पुराणसंग्रहे नरसिंहोमहादेवःपृथुवक्त्रःसदंष्ट्रकः ब्रह्मचर्येणपूज्योसौनान्यथापूजितोभवेदिति ॥१॥ अथलक्ष्मीनृसिंहलक्षणं नृसिंहपुराणे वामपार्श्वे स्थितेचक्रेकृष्णवर्णः सविंदुकः लक्ष्मीनृसिंहो विख्यातो भुक्तिमुक्तिफलप्रद इति ॥ १ ॥

स्फुरदिति प्रकट जोरेखाकीपंक्ति तिस करकै जो युक्त और नाभिजिसकी उच्ची होवे और चक्रके दोनो पासयोंमे थोरकेपुष्पकी न्यांई आकृतिहोवे ॥ २ ॥ और चक्रकेपासेमे केशभारदेखिये और पीतवर्णवाला होवे और वडेचक्रवाला होवे और वडेमुखवाला होवे हेगरुड सो नृसिंह होताहै इसनृसिंहका यति पूजन करे और गृहस्थो इसका त्याग करे ॥ ३ ॥ पुराणसंग्रहमे और कथनकरतेहैं वडाहै मुख जिसका और दाडों वालाहोवें सोमहादेव नृसिंह होताहै पुरुष तिसका ब्रह्मचर्य करकै पूजनकरे ब्रह्मचर्यते बिनानकरे १ इसते उपरंत लक्ष्मीनृसिंहका लक्षण कथनकियाहै नृसिंहपुराणमें जिसके वामपासे चक्रस्थितहोवे और कृष्णवर्णवालाहोवे और बिंदुवाला होवे सो भुक्ति और मुक्तिके फलकोदेनेवाला लक्ष्मीनृसिंह कथन कीताहै १

पुराणसंग्रहे वामभागेस्थितेचक्रेवनमालावि
भूषितः लक्ष्मीन्नृसिंहोविज्ञेयोभुक्तिमुक्तिफल
प्रदइति १ ब्रह्मपुराणे नरसिंहस्त्रिविंदुःस्यात्क
पिलःपंचविंदुकः वामभागेपुष्कलस्तुलक्ष्मी
नरहरिः स्मृतइति ॥ १ तथा द्विचक्रंचवृहच्च
क्रंकपिलंकनकप्रभम् लक्ष्मीन्नृसिंहंतन्नामब्रह्म
चारिभिरर्चितमिति ॥ १ ॥ बालनृसिंहलक्षणं
पाद्मेसूक्ष्मरंध्रंद्विचक्रादंचवनमालाभिरन्वितम्
तद्बालनरसिंहाख्यंयतिसंसारमोचनमिति १॥

पुराण संग्रहमे और कथन करतेहैं वामभाग इति वामभागमें चक्रस्थितहोवे और वनमालाककेंजो भूषित सो भुक्ति मुक्तिके फलकों देनेवाला लक्ष्मीनृसिंह होताहै ॥ १ ॥ ब्रह्मपुराणमें और कथन करतेहैं जो तीनोविंदुवालाहोवे सो नृसिंहहोताहै और कपिलहैवर्ण जिसका और पंचहैं विंदु जिसमे और वामभागमें वडाहोवे सो लक्ष्मीनरसिंह कथन करीदाहै ॥ १ ॥ और कथन करतेहैं दोचक्रोंवालाहोवे वा बडे चक्रवालाहोवे वा कपिलवर्णवाला सुवर्णके रंगवालाहोवे तिसका नाम लक्ष्मीनृसिंह कथन करीदाहै सो ब्रह्मचारियोंने पूजने योग्यहै ॥ १ ॥ बालनृसिंहका लक्षण पद्मपुराणमें कथन कीताहै सूक्ष्महै रंध्र जिसमे और दोचक्रों करके युक्त और वनमालाककें जो युक्त सो यतियांकों संसारतें छुडानेवाला बाल नरसिंह कथन कीताहै १

कपिलनृसिंहलक्षणं पाद्मे नृसिंहःकपिलोज्ञे
यःस्थूलचक्रोग्रदंष्ट्रकः त्रिविंदुःपंचविंदुर्वाब्रह्म
चर्येणपूजितः १ ॥ ददातिवांछितंन्दृणामघौघ
स्याशुनाशकःअन्यथाजायतेक्लेशोनात्रकार्या
विचारणेति २॥ अग्निपुराणे नृसिंहः कपिलश्चै
वस्थूलचक्रस्सुशोभनः ब्रह्मचार्यधिकारोस्ति
नान्यथापूजनंभवेदिति ॥१ ब्रह्मपुराणे विवृता
स्यंवामचक्रंवर्तुलंकपिलप्रभम् नरसिंहंगृह
स्थानांभीतिदंविंदुभिर्वृतमिति ॥ १ ॥

कपिलनृसिंहकालक्षण पद्मपुराणमे कथन कियाहै स्थूलहै चक्र जिसमें और भयानक दाडोंवाला होवे और तीनविंदुवा पंच विंदुकर्के युक्तहोवे सो कपिलनृसिंह जानना ब्रह्मचर्यकर्के सो पूजिआहुआ ॥ १ ॥ पुरुषांके वाच्छित फलकों देताहै और पापांका जो समूहतिसकानाशकरताहै अन्यथाक्या ब्रह्मचर्यतें विना पूजित कियाहुआ क्लेशकों उत्पन्नकरताहै इसमे विचार न करणाचाहिये २ अग्निपुराणमे और कथनकरतेहैं स्थूलहै चक्रजिसमें और सुंदरहोवे सो कपिलनृसिंह कथनकीताहै तिसके पूजनका ब्रह्मचारीकों अधिकारहै ब्रह्मचर्यतें विना तिसका पूजन न करनाचाहिये१ ब्रह्मपुराणमें और कथनकरतेहैं वडा है मुख जिसका और वामभागमें चक्रहोवे और गोलाकार और कपिलवर्णकी न्याईं प्रभा जिसकी और विंदुवालाहोवे सो नृसिंह गृहस्थियांकों भयके देने वालाहोताहै ॥ १

पाद्मे यस्यदीर्घंमुखंपूर्वंकथितैर्लक्षणैर्युतं रेखा
श्चकेसराकारानरसिंहः सकापिलः ॥ १ ॥
अधोमुखनृसिंहलक्षणं ब्रह्मांडे पुरःपार्श्वेच
पृष्ठेवाचक्रैरप्यतिशोभितं अधोमुखमितिख्या
तमर्चकानांविमुक्तिदमिति १ विभीषणनृसिं
हलक्षणं पुराणसंग्रहे दीर्घाकारंदीर्घचक्रंमेच
काख्यंबृहत्तनुम् विभीषणमितिप्रोक्तंदीर्घदुः
खफलप्रदमिति १ हारनृसिंहलक्षणं पुराणसं
ग्रहे सूक्ष्मरंध्रंद्वि-चक्राढ्यंवनमालाविभूषितम्

पद्मपुराणमे और कथन करतेहैं जिसका दीर्घ मुख होवे और प्रथमकथनकीते जोलक्षण तिनकर्के युक्त होवे और केसरके आकारकीन्थाईहैं रेखा जिसमें सोकपिल नृसिंहकथन कीताहै १ अधोमुख नृसिंहका लक्षण ब्रह्मांड पुराणमे कथन कियाहै पुर इति पूर्वपासेमे वापृष्टमें चक्रोंकर्के जो युक्तहोवे सो पूजने वालेकों मुक्तिके देने वाला अधोमुख नरसिंह कथन कीताहै १ विभीषण नृसिंह का लक्षण कथन कीताहै पुराण संग्रहमे दीर्घहै आकार जिसका और दीर्घ चक्रवाला होवे सो बडेदुःखकेदेनेवाला मेचकनामकर्के विभीषणनृसिंह कथनकीताहै १ हारनृसिंहका लक्षण पुराण संग्रहमे कथन कीताहै सूक्ष्महै रंध्र जिसमे और दो चक्रों कर्के जो युक्त और बनमालाकर्के भूषित

तद्धारनरसिंहाख्यंनृणांसंसारमोचकमिति १
कुक्षिनरसिंहलक्षणं पुराणसंग्रहे अस्पष्टच
क्रमध्यस्थमल्पभारंमहोदरम् तत्कुक्षिनर
सिंहाख्यंवनवासिभिरर्चितमिति १ विवृता
स्यनृसिंहलक्षणं पुराणसंग्रहे विवृतास्यं
वामचक्रंवर्तुलंकपिलप्रभम् नरसिंहंगृहस्था
नांभीतिदंबिंदुभिर्वृतमिति १ महानृसिंहलक्ष
णं नृसिंहपुराणे भयानकमुखंचैवविकटंताम्र
वर्णकम् महानृसिंहसंज्ञंचपूजयेत्परमागतिः १

सो पुरुषांको संसारतें छुडाने वाला हारनरसिंह कथन को
ताहै १ कुक्षिनरसिंह का लक्षण पुराण संग्रहमे कथन
कीताहैं मध्यमे प्रकटचक्र न होवे और थोडाहै भार
जिसका और बडे उदर वाला होवे सो कुक्षिनरसिंह हो
ताहै सो बानप्रस्थियोंने पूजना चाहिये १ विवृतास्य नृसिंह
का लक्षण पुराणसंग्रहमे कथन कियाहै विवृतास्यमिति वडा
है मुख जिसका और वाम पासेमे चक्र होवे और गो
लाकार और कपिल वर्ण वाला होवे और बिंदु करके जो
युक्त सो नरसिंह गृहस्थियांको भय देताहै १ महानृसिंह
का लक्षण कथन कियाहै नृसिंहपुराणमे भयानकहै मुख जिस
का और विकट क्या उच्चानीवां और तांबेकी न्याईहै वर्णजि
सका सो महानृसिंहहोताहै तिसको पूजेतो परमगति होतीहै १

अघोरनृसिंहलक्षणं पुराणसंग्रहे दंष्ट्राकरा
लवदनंवृहच्चक्रसमन्वितम् अघोराख्यंनार
सिंहंयतीनांमोक्षदायकमिति ॥ १ ॥ अच्यु
तमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे चतुर्भिरष्टचक्रस्तुवाम
दक्षिणपार्श्वगैः अधिष्ठितोमुखेरम्यकुंडलद्वय
शोभितः ॥ १ ॥ शंखचक्रगदाशार्ङ्गवाणकौमो
दकीधरःमुसलध्वजपुष्पैश्चछत्रवज्रांकुशैर्वृतः
सोच्युतःकथितोनाम्नादुर्लभस्तपसाविना २
अघोरनृसिंहका लक्षण पुराणसंग्रहमे कथन कियाहै दंष्ट्रा कर्के
करालहै मुख जिसका और बडे चक्र कर्के जो युक्त सो यति
यांकों मोक्षके देन वाला अघोर नाम कर्के नरसिंह होताहै
१ अच्युत मूर्त्तिका लक्षण कथनकियाहै ब्रह्मांडपुराणमे वाम
और दक्षिण पासेमें चार चार चक्रों कर्के अधिष्ठित होवे और
मुखमे दो सुंदर कुंडल होण सो अच्युत होताहै १
शंखेति शंख और चक्र और गदा और धनुष और कौमोदकी
जोगदा तिसकों धारण वालाहोवे मुसल और ध्वजा और पुष्प
और छत्र और वज्र और कुंडा तिनो कर्के जोवृत होवे सो अ
च्युत नाम कर्के कथन कियाहै सो तपते बिनादुर्लभहै ॥ २ ॥

वाराहे अच्युतोमधुवर्णाभोभास्वच्चक्रोतिशोभ
नःपार्श्वेविंदुसमायुक्तोनैष्ठिकैरर्चितोभवेदिति १
तथा वहिश्चक्रसमायुक्तमंतश्चक्रद्वयान्वितं दे
वंतमच्युतंज्ञेयंसूक्ष्मरंध्रंसुशीतलम् २ तथा ऊ
र्ध्वेस्थूलमधोहीनंश्यामंचवहुलंमुखम् अच्युतं
नामदेवेशंतपोलोकप्रदायकमिति १ जनार्द
नमूर्त्तिलक्षणं ब्राह्मे द्वारद्वयेचतुश्चक्रोजनार्दन
इहोच्यते चक्रद्वयंमध्यगतंचक्रयुग्मंचपृष्ठतः १

वराह पुराणमें और कथन करतेहैं मखीरकी न्याईहै वर्ण जि
सका और प्रकाशमान चक्रवाला सुंदर और पासेमें विंदु करके
जो युक्त सो अच्युत होताहै तिसका ब्रह्मचारियोंने पूजन करणा
चाहिये १ औरकथनकरतेहैं बाहरचक्रकरके जो युक्त और अंतरमें
दो चक्रों करके युक्त होवे और सूक्ष्महै रंध्रजिसमें और सुशीतल
तिसको अच्युतदेवजानना २ औरकथनकरतेहैं उपरमे स्थूलहोवे
और अधामें हीन होवे और श्याम रंग वाला और बडाहै मुख
जिसका सो तपलोकको देन वाला अच्युत कथन कियाहै १
जनार्दन मूर्त्ति का लक्षण ब्रह्म पुराणमें कथन कियाहै द्वारद्वय
यिति जिसके दोनों मुखो में चार चक्रहोंण मध्य और पृष्टमें
दो दो चक्रोंवाला होवे सो जनार्दन कथन कीताहै ॥ १ ॥

ब्रह्मांडे पूर्वभागैकवदनःपश्चादेकास्यकायुतः
जनार्दनश्चतुश्चक्रः श्रीप्रदोरिपुनाशनः १ ॥
पाद्मे द्वारद्वयेचतुश्चक्रःसमद्वारविभूषितःजना
र्दनःसविज्ञेयःपुत्रलाभंप्रयच्छति ॥ १ ॥ तथा
शंखचक्रतमालांकोनीलस्थूलाकृतिःशुभः ज
नार्दनइतिख्यातोहिमांशुपरिशीतल इति १
पुराणसंग्रहे जनार्दनंविजानीयाद्वनमालावि
भूषितम्

ब्रह्मांड पुराणमे और कथनकरतेहैं पूर्वभागमे एक मुखहोवे औ
र पीच्छेतेभी एक मुख करके युक्तहोवे और चारहैं चक्र जिसमें
सो श्रीके देनवाला और शत्रुवांकों दूर करणे वाला जनार्दन
कथन कियाहै ॥ १ ॥ पद्मपुराणमें और कथन करतेहैं दोनोमु
खोंमें चार चक्रोंवाला होवे और सममुख करके भूषित होवेसो
पुत्रकों देने वाला जनार्दन जानना ॥ १ ॥ और तैसें कथन
करतेहैं शंख और चक्र और तमालका है चिह्न जिसमे नील
और स्थूलहै आकृति जिसकी और चंद्रमाकी न्याईं शीतल हो
वे सो जनार्दन कथन कियाहै ॥ १ ॥ पुराण संग्रहमें और
कथन करतेहैं जनार्दनमिति वनमाला करके जो विभूषित

ऊर्ध्वाधोद्वेसमेचक्रेसूक्ष्मचक्रेणचिह्नितः॥ १ ॥ वाराहक्षेत्रउत्पन्नश्चतुश्चक्रोजनार्दनइति ॥ २ ॥ ब्रह्मांडे श्यामंस्थूलंमहास्निग्धंमध्यचक्रं सुशोभनम् देवंजनार्दनंनाममहालक्ष्मीप्रदायकमिति १ उपेंद्रलक्षणं ब्रह्मांडे उपेंद्रोमणिवर्णाभोह्रस्वचक्रोतिशोभनः श्यामलःकोमलांगश्चचक्रपार्श्वेन्यचक्रयुक् १ तथा शंखचक्राब्जमालांकोनीलस्थूलाकृतिः शुभः सउपेंद्र इति ख्यातोभुक्तिमुक्तिफलप्रद इति १

उपर और हेठां दोचक्रहोण और सूक्ष्मचक्र करके जो युक्त सो जनार्दन जानना ॥१॥ वराह क्षेत्रमें है उत्पत्ति जिसकी और चार चक्रवालाहोवे सोभी जनार्दन जानना २ ब्रह्मांडपुराणमें और कथन करतेहैं श्यामहै वर्ण जिसका और स्थूलहोवे और बडा थिंदाहोवे और मध्यमेंहै चक्रजिसके और सुंदर होवेसो महालक्ष्मीकेदेनवाला जनार्दनदेव होताहै १ उपेंद्रकालक्षणब्रह्मांडपुराणमें कथन कियाहै मणिकीन्याईहै आभाजिसकी और छोटेचक्र करके युक्त और सुंदर होवे और श्याम और कोमलहै अंग जिसका और चक्र पासेमें अन्य चक्रकरके युक्तहोवे सो उपेंद्र कथन कियाहै १ और कथन करतेहैं शंख और चक्र औरकमलकीहै मालाजिसमें नील औरस्थूलहै आकृति जिसकी सो भुक्ति और मुक्तिके देनवाला उपेंद्र कथन कीताहै १ ॥

स्कांदे उपेंद्र इंद्रनीलाभश्छत्राकारो महाबलः स
मचक्रसमांगश्च पार्श्वे रेखात्रयान्वितः १ हरि
मूर्त्तिलक्षणं ब्राह्मे ऊर्ध्वमुखं विजानीयाद्धरितं ह
रिरूपिणं काममोक्षप्रदं चैव ह्यर्थदं च विशेषतः
१ तथा ऊर्ध्वमुखं विजानीयात् श्यामाभं वर्त्तुलं
शुभम् अधोबिंदुसमायुक्तं सर्वकामार्थसाधक
मिति १ ब्रह्मांडे अल्पद्वारसमोपेता हरिमूर्त्ति
रुदाहृतेति १

स्कंदपुराणमे और कथन करतेहैं उपेंद्र इति इंद्रनीलमणिकीन्या
ई है आभाजिसकी और छत्रकीन्याई आकार जिसका और बडे
बलवालाहोवे और समहै चक्रजिसमें और समअंगवाला होवे
और तीनरेखोंकर्के जो युक्त सोउपेंद्र कथन कियाहै १ हरिकीमू
र्त्तिकालक्षणब्रह्मपुराणमें कथन कियाहै ऊर्ध्वहै मुख जिसकाऔ
र हरित वर्ण वाला होवे सोहरि जानना काम और मोक्षकोंदे
ताहै और विशेषकर्के धनकों देताहै १ और वैसें कथन करतेहैं
ऊर्ध्वहै मुख जिसका और श्याम वर्णवाला होवे और गोला
कार और अधोबिंदुकर्के जो युक्त सो काम और अर्थकासाध
क जानना १ ब्रह्मांडपुराणमे और कथन करतेहैं अल्प मुखकर्के
जो युक्त सो हरिमूर्ति कथन कीतीहै १

गारुडे दूर्वाभमरकताभाचनाभिचक्रातथोन्नता
हरिमूर्त्तिरितिख्याताशंखमुद्रासमन्विता १ ॥
विष्णुरहस्ये अतसीपुष्पसंकाशाविंदुवज्रस
मन्विता पारिजातध्वजोपेतावर्त्तुलाचातिशोभ
ना १ प्रदक्षिणावर्त्तयुतावनमालाविभूषिता
साशिलाहरिसंज्ञास्याद्धनधान्यसुखप्रदेति २
पुराणसंग्रहे श्यामलंकोमलंस्वल्पद्वारंपार्श्वेसु
चक्रकं हरिमेनंविजानीयात्सर्वपापप्रणाशन
मिति १

जोघासकी न्याईं होवे और मरकतमणिकी न्याईं है आभा जिसकी और नाभिमेंहै चक्र जिसके और उच्ची होवे शंख और मुद्रा कर्के जो युक्त सो हरिकीमूर्त्ति कथन कीतीहै १ ॥ विष्णु रहस्यमें औरकथन करतेहैं अतसीपुष्पेति अलसीकेपुष्प कीन्याईंहै प्रकाश जिसका विंदुऔर वज्र कर्केयुक्तऔरपारिजा तध्वजा कर्के जो युक्त औरगोलाकार औरसुंदर १ औरप्रदक्षिणा वर्त्तकर्के युक्त और वनमालाकर्केजो भूषित सोशिला हरिसंज्ञा वालीहोतीहै सो धनऔर अन्न औरसुखको देतीहै ॥ २ पुराण संग्रहमें और कथन करतेहैं जोश्याम रंगवाला औरकोमल और छोटाहै मुखजिसका और पासेमे सुंदरहै चक्र जिसके सो संपू र्णपापके दूरकरणवाला हरिजानना १

अथ कृष्णमूर्त्तीनां सभेदलक्षणानि पुराणसं
ग्रहे कृष्णः सबालगोपालगोवर्धनधरोपिवा
त्रैलोक्यमोहनः कृष्णः सौभाग्यवरदस्तथा
१ ॥ रुक्मिणीविजयश्चूडामणिश्चाग्रेधनंजयः
सनातनःपारिजातस्यमंतकहरौतथा ॥ २ ॥
कंसकालियचाणूररिपुमर्दनपूर्वकःगोवर्धनश्री
संतानलक्ष्मीमदनवंशतः ३ उत्तरोह्युत्तरः किं
चगोवर्धनधरस्तथा भेदास्तेषामथोवक्ष्येलक्ष
णानियथाक्रमम् ४ तत्रकृष्णमूर्त्तिलक्षणं

इसतें उपरंत कृष्णमूर्त्तियांका भेदक साथ लक्षण कथन करतेहैं
पुराणसंग्रहमें कृष्णऔरबालकृष्ण औरगोपालकृष्ण औरगोवर्धन
धरकृष्णऔरत्रैलोक्यमोहन कृष्णऔरसौभाग्य वरद कृष्ण १ रु
क्मिणीकृष्णऔर विजयकृष्णऔर चूडामणि कृष्णऔरधनंजयकृष्ण
औरसनातनकृष्णऔरपारिजातहरकृष्ण औरस्यमंतकहरकृष्ण २
कंसेति कंसमर्दन और कालियमर्दन और चाणूरमर्दन और
गोवर्धन गोपाल औरश्रीगोपाल औरसनातन गोपाल और
लक्ष्मीगोपाल औरमदन गोपाल औरवंशगोपाल ३ औरगो
वर्धनधर गोपालराजकेउत्तर उत्तरतें भेदकथन कियेहैं औरक
मतें लक्षणाकों कथन करूंगा ४ तिसमे कृष्णमूर्त्तिका लक्षण

पाद्मे प्रदक्षिणावर्त्तयुतावनमालाविभूषिताया
शिलाकृष्णसंज्ञासाधनधान्यसुखप्रदेति १ ॥
ब्रह्मांडे समचक्राहारदेशेकृष्णवर्णासुशोभना
साकृष्णमूर्त्तिर्विज्ञेयापूजितासौख्यदायिनीति
१ तथा कृष्णःपीतःकृष्णतनुश्चक्रपार्श्वेतुचक्र
युक् हारतुल्याभवेन्नाभिःकूर्माकारस्तुपृष्ठतः
१ कृष्णोवृत्ताकृतिस्ताक्ष्र्यसर्वेषांपापनाशन
इति २ ॥

पद्मपुराणमें कथनकरतेहैं जोशिला प्रदक्षिणावर्त्तकर्के युक्त औ रवनमालाकर्के भूषित सो कृष्णसंज्ञावाली शिलाधन और अन्न और सुखकों प्राप्तकरतीहै १ ब्रह्मांड पुराणमें और कथन करते हैंमुखमेहैं समचक्र जिसके और कृष्णवर्णवाली और सुंदर सो कृष्णमूर्त्ति जाननी पूजीहोई सुखकों प्राप्त करतीहै १ औरक थन करतेहैं कृष्णऔर पीतऔर कृष्णहै शरीर जिसका औरपा सेमें चक्रकर्के युक्तहोवे और नाभि हारके सदृशहोवे और पृष्ठमें कूर्मके आकारकी न्याई होवे ॥ १ ॥ और गोलाकारहै आकृति जिसकी हेगरुड सोसंपूर्ण पापके दूरकरने वाली कृष्ण मूर्त्तिहोतीहै २

वालकृष्णलक्षणं ब्रह्मांडे उन्नतोमूर्धिकृष्णा
भोनिम्नोधस्स्यात्रिविंदुकः सबालकृष्णोविज्ञे
योदीर्घास्यःपुत्रभाग्यदः ॥ १ ॥ गोपालकृष्ण
लक्षणं ब्रह्मांडे कृष्णातिकृष्णोनस्थूलश्चक्रा
भ्यामुपशोभितः सगोपालइतिप्रोक्तोगोभूधा
न्यधनप्रदः ॥ १ गोवर्धनकृष्णलक्षणं वामन
पुराणे गोकर्णसदृशंचक्रंवज्ररूपंविशेषतः सु
वर्णरूप्यविंद्वाढयंचतुश्चक्राधिकंभवेत् ॥ १ ॥
कुलिशब्जांकश्चेद्देवेशः सुवर्णसदृशप्रभः गो
वर्धनोभवेद्देवः सोचलांश्रियमर्पयेत् २ ॥

बालकृष्णका लक्षण ब्रह्मांडपुराणमें कथन करतेहैं उन्नतइतिउ
च्चाहै मस्तक जिसका और कृष्ण है आभाजिसकी और अ
धातें नीवां होवे और तीनहैं विंदुजिसमे और दीर्घहै मुखजि
सका सो पुत्र और भाग्य के देनवालाबालकृष्ण जानना ॥ १
गोपालकृष्णका लक्षण ब्रह्मांड पुराणमें कथन करतेहैं बहुतका
ला और छोटीमूर्त्ति और दो चक्रोंकरके जो सुंदर सोगौवांऔर
पृथिवी और अन्न और धनको प्राप्तकरणे वाला गोपाल कृष्ण
कथनकियाहै १ गोवर्धनकृष्णकालक्षण कथनकियाहै वामनपु
राणमे गौकाजोकर्ण तिसकेसदृशहै चक्रजिसमें और विशेषतें व
ज्ररूप औरलाल औरश्वेत विंदुककेंजोयुक्त औरचारचक्रोंवाला
होवे १ और कुलिशऊरकमलकाहै चिह्नजिसमें और सुवर्णके
सदृशहैप्रभाजिसकीसोगोवर्धनदेवअचलश्रीकों प्राप्तकरताहै २

त्रैलोक्यमोहनकृष्णलक्षणं पुराणसंग्रहे क
ल्पद्रुमंकोमलांगंवनमालाविभूषितं कृष्णवर्णं
तथासूक्ष्मंसूक्ष्मचक्रेणसंयुतम् ॥ १ ॥ अंकुशंच
शरंचाप मूर्ध्वरेखासमान्वितं त्रैलोक्यमोहनंकृ
ष्णंसर्वसंपत्प्रदायकमिति ॥ २ ॥ सौभाग्यव
रदकृष्णलक्षणं पुराणसंग्रहे उन्नतःपृष्ठभा
गेस्यादधोभागेतुवर्त्तुलः नीलवर्णप्रतीकाशोध
नुर्बाणसमन्वितः १ सांकुशोवामपार्श्वेचवन
मालाविभूषितः सौभाग्यवरदः कृष्णःसर्वसं
पत्प्रदायक इति ॥ २ ॥

त्रैलोक्य मोहन कृष्णका लक्षण पुराण संग्रहमे कथन कियाहै कल्पद्रुममिति कल्पवृक्षकी न्याईंहै आकार जिसका और कोमलहैं अंग जिसके और बनमाला करके जो भूषित और कृष्णहै वर्ण जिसका और सूक्ष्म होवे और सूक्ष्मचक्र करके जो युक्त ॥ १ ॥ कुंडा और शर और बाणकाहै चिह्न जिसमे और ऊर्ध्वरेखा करके जो युक्त सो संपूर्ण संपदाकों देने वाला त्रैलोक्यमोहन कृष्ण कथन कीताहै २ सौभाग्य वरद कृष्णका लक्षण पुराणसंग्रह मे कथन कियाहै पृष्टभागमे उच्चा और अधोभागमे गोलाकार होवे और नीलवर्णकी न्याईं है प्रकाशजिसका धनुष और बाण करके जो युक्त १ और वामपासेंमे अंकुश क्या कुंडेका चिह्न होवे और बनमालाकरके जोभूषितसो संपूर्ण संपदाकों प्राप्तकरणेवाला सौभाग्य वरद कृष्ण होताहै २

रुक्मिणीकृष्णलक्षणं पुराणसंग्रहे स्निग्धं श्याममुखंसूक्ष्मंतप्तजांबूनदप्रभम् समचक्रसुशोभास्यंवामपार्श्वेसविंदुकम् १ ॥ अंकुशंवनमालाचऊर्ध्वरेखासमन्वितं रुक्मिणीवल्लभंदेवंरुक्मिणीकृष्णसंज्ञकमिति २ ॥ विजयकृष्णलक्षणं पुराणसंग्रहे धात्रीफलसमाकारःकृष्णवर्णेनसंयुतः धनुर्बाणसमायुक्तो ज्ञेयोविजयकृष्णकइति १ ॥ चूडामणिकृष्णलक्षणं स्कान्दे जंबूफलसमाकारः कुक्कुटासनसंस्थितः

रुक्मिणी कृष्ण का लक्षण पुराण संग्रहमे कथन कियाहै स्निग्धमिति स्निग्ध और श्यामहै मुख जिसका और सूक्ष्म और तप्त जो सुवर्ण तिसकी न्याईं है प्रभा जिसकी और सम चक्र करकें सुंदरहै मुख जिसका और वामपासेमें विंदु होवे १ ॥ अंकुश और बनमाला का है चिह्न जिसमे और ऊर्ध्व रेखा करकें जो युक्त सो रुक्मिणी का प्यारा रुक्मिणीकृष्ण नाम करकें होता है २ ॥ बिजय कृष्ण का लक्षण कथन कियाहै पुराणसंग्रहमे आमलेकी न्याईं है आकार जिसका और कृष्णवर्ण करकें युक्त धनुष और बाण करकें जो युक्त सो विजय कृष्ण जानना १ ॥ चूडामणि कृष्णका लक्षण स्कंद पुराण मे कथन कीताहै जंबूफलकी न्याईं है आकार जिसका और कुक्कुटासन मे जो स्थित

वलयाकृतिरेखाढयोह्यूर्ध्वरेखासमान्वितः १
धनुः पाशांकितोदेवश्चक्रद्वयसमन्वितः मा
लयावेष्टितश्चैवकृष्णश्चूडामणिःस्मृत इति २
धनंजयकृष्णलक्षणं स्कांदे सव्यापसव्यरेखा
भिर्भूषितः सूक्ष्मचक्रकः पार्श्वखुरयुतोदेवो
धनंजयविभुः शुभइति १ ॥ सनातनकृष्णल
क्षणं स्कांदे हिरण्यगर्भसंकाशः स्थूलचक्र
समन्वितः कृष्णःसनातनःश्रीमानष्टैश्वर्यफ
लप्रद इति १ ॥

और वलय आकृति ❁ क्या गोलाकार रेखा करके जो युक्त और ऊर्ध्व रेखा करके युक्त होवे ॥ १ ॥ धनुरिति धनुष और पाश का है चिह्न जिस मे और दो चक्रों करके युक्त और बन माला करके जो युक्त सो कृष्ण चूडामणि कथन कीताहै २ धनंजय कृष्ण का लक्षण स्कंद पुराण मे कथन कियाहै दहने और बाम पासे में रेखों करके जो भूषित और सूक्ष्महै चक्र जिसमे और पासे मे खुर करके जो युक्त सो धनं जय देव कथन कीताहै १ ॥सनातन कृष्ण का लक्षण स्कंद पुराण मे कथन कीताहै हिरण्य गर्भकी न्याईं है प्रकाश जिस का और स्थूल चक्र करके जो युक्त सो अष्टसिद्धि के फलकों देने वाला सना तन कृष्ण कथन कीता है ॥ १ ॥

स्यमंतकहरकृष्णलक्षणं स्कांदे असिवर्णः श्वेतस्थूलश्चक्रभागेतिशोभनः वनमालापरिवृतःपृष्ठेश्रीवत्सलांछनः स्यमंतहारीविज्ञेयः पुत्रकीर्त्यैश्चवर्धनः ॥१॥ कंसमर्दनकृष्णलक्षणं ब्रह्मांडे पूर्वभागैकवदनः पार्श्ववदनसंयुतः कंसमर्दीभवेत्कृष्णोनीलांबुदनिभः शुभ इति ॥ १ ॥ कालियमर्दनकृष्णलक्षणं ब्रह्मांडे दक्षादिवामपर्यंतमुखाधस्तात्सुशोभना रेखा स्यात्कृष्णवर्णाभाबिंदुत्रयविभूषिता कालीयमर्दनः साक्षात्सर्वशत्रुनिकृंतन इति ॥१॥

स्यमंतक हर कृष्णका लक्षण स्कंद पुराण मे कथन कियाहै असिकी न्याईं है वर्ण जिसका श्वेत और स्थूल होवे और चक्र भाग में सुंदर होवे और बन माला करके परिवृत होवे और पृष्ठ में श्रीवत्सका चिह्न होवे सो पुत्र और कीर्त्तिके वधान वाला स्यमंतक हर कृष्ण जानना १ कंसमर्दन कृष्णका लक्षण ब्रह्मांडपुराणमे कथन कियाहै पूर्वेति पूर्वभागमेहै मुख जिसका और पासेमे जो मुख तिस करके युक्त और नीला जो मेघ तिसकी न्याईंहै आभा जिसकी सो कंसमर्दन कृष्णहोता है १ कालीय मर्दन कृष्ण का लक्षण कथन कियाहै ब्रह्मांड पुराणमें दहनेतों लैकर बामपर्यंत और मुखतें हेठां सुंदर रेखा और कृष्ण बर्णकी न्याईं आभा जिसकी होवे सो साक्षात् संपूर्ण शत्रुवां के नाश करणवालाकालीय मर्दनकृष्णहोताहै १

चाणूरमर्दनलक्षणं ब्रह्मांडे रक्तविंदुद्वययुतः श्यामोदंतिभुजोपमः रेखादक्षिणतोवामेमुष्टिवदृढविंदुकःचाणूरमर्दनाख्यःस्यात्सर्वशत्रुनिकृंतनः १ गोवर्धनगोपाललक्षणंब्रह्मांडे वर्तुलोमस्तकेनिम्नःपार्श्वेरजतविंदुकःगोवर्धनाख्योगोपालोदीर्घरेखस्तुदक्षिणे सर्वकष्टविनाशीस्याद्गोभूधान्यधनप्रदइति १ श्रीगोपाललक्षणं पुराणसंग्रहे एतल्लक्षणसंयुक्तंदीर्घाकारंमहोदरं श्रीगोपालमिमंप्राहुः सरेखावंशनालकम् १

चाणूर मर्दन कृष्णकालक्षण कथन करतेहैं ब्रह्मांड पुराणमे दो रक्त विंदु करके जो युक्त और श्याम और हाथीके शुंडकी न्याईहै उपमा जिसकी दहने और वाम पासेमें रेखा होवे और मुष्टिकी न्याई दृढहै बिंदु जिसमे सो संपूर्ण शत्रुवांकों दूर करणे वाला चाणूरमर्दन कथन कियाहै १ गोवर्धनगोपालका लक्षणब्रह्मांडपुराणमे कथनकियाहै वर्तुल इति गोलाकार और मस्तकमें नीवां होवे और पासेमें श्वेत बिंदु होवे और दहने पासेमें दीर्घ रेखा होवे सो संपूर्ण कष्टके नाश करणे वाला और गौवां और पृथिवी और अन्न और धनकों देनेवाला गोवर्धन गोपाल कथन कीताहै १ श्रीगोपालका लक्षण पुराण संग्रहमे कथन करतेहैं इस प्रथम लक्षणकरके जो युक्त और दीर्घहै आकार जिसका और वडे उदरवाला होवे और बांसकी नालीकी न्याईं रेखाहोवें इसकों श्रीगोपालकथनकरतेहैं १

संतानगोपाललक्षणं ब्रह्मांडे दीर्घाकारःकृ
ष्णवर्णःसार्धचंद्रनिभाननः यःस्यात्संतानगो
पालः पुत्रपौत्रादिवर्धनः १

लक्ष्मीगोपाललक्षणं पुराणसंग्रहे कुक्कुटांड
समोपेतःश्रीधरोवनमालया वेणुलांगलचि
ह्नाभ्यांकुंडलाभ्यांचचिह्नितः १ लक्ष्मीगोपा
लकोदेवोदुर्लभोभुवनत्रये वित्तलाभप्रदः
संपद्भुक्तिमुक्तिफलप्रदः २ ॥

संतान गोपालका लक्षण ब्रह्मांड पुराणमे कथन कीताहै दीर्घ
है आकार जिसका और कृष्ण वर्ण वाला होवे और अर्ध
चंद्रमाकी न्याईहै मुख जिसका सो पुत्र और पौत्रकों वधाने
वाला संतान गोपाल होताहै १

लक्ष्मी गोपाल का लक्षण पुराण संग्रह मे कथन कियाहै कु
क्कुटि जो कुकुटीके अंडे की न्याई होवे और श्रीकें धा
रण वाला और बन माला और वेणु और लांगल और कुंड
ल इनो चिन्हो कर्के जो चिन्हित १ ॥ सो लक्ष्मी गोपा
लतीन भुवनो में दुर्लभ है और सो धनका लाभ और संपदा
और भुक्ति और मुक्ति के फल कों देताहै २ ॥

मदनगोपाललक्षणं ब्रह्मांडे योगोपालःपा
र्श्वभागेकल्पाख्यतरुयुग्भवेत् सस्यान्मदन
गोपालोमालाकुंडलभूषितः पुत्रपौत्रधनैश्वर्य
सर्वलोकैकवश्यद इति १ वंशगोपाललक्षणं
ब्रह्मांडे चक्रद्वयंचारुवेणुंविंदुत्रयसमन्वितम्
धनुर्वाणसमायुक्तंवंशगोपालसंज्ञकामिति १ ॥
गोवर्धनधरलक्षणं वैखानससंहितायाम्
घनश्यामश्चतुश्चक्रोविंदुत्रयसमन्वितः ऊर्ध्व
रेखासमायुक्तः पार्श्वेरजतविंदुकः १ ॥

मदन गोपालका लक्षण ब्रह्मांड पुराण मे कथन करतेहैं जिस के पासेमे कल्प वृक्षोंका चिन्ह होवे माला और कुंडलों करके जो भूषित सो पुत्र और पौत्र और धन उोर ऐश्वर्य और संपूर्ण लोको की वश्यताकों प्राप्त करणे वाला मदन गोपाल होताहै १ ॥ वंश गोपाल का लक्षण ब्रह्मांड पुराण मे कथन करते हैं दोहैं चक्र जिस में और सुंदर जो वेणु तिसकाहै चिन्ह जिस मे और तीन विंदु करके युक्त धनुष और बाण करके जो युक्त सो वंश गोपाल नाम करके होताहैं १ ॥ गो वर्धन धर का लक्षण वैखानससंहिता मे कथन कीयाहै घन श्याम इति मेघकी न्याईं जो श्याम और चारहैं चक्र जिस मे और तीन विंदु करकें युक्त और ऊर्ध्व रेखा करकें युक्त और पासे में श्वेत विंदु होवें १ ॥

स्वर्णविंदुसमायुक्तोवनमालाविभूषितःगोवर्ध
नधरोदेवोगोभूधनविवर्धनः २ वैकुंठमूर्त्तिलक्ष
णं ब्राह्मे वैकुंठोमणिवर्णाभश्चक्रमेकंतथांवु
जम् द्वारोपरिभवेद्रेखाकांच्याकारासुशोभने
ति १ ॥ अग्निपुराणे वैकुंठएकचक्रोवैमणया
भःस्वच्छरेखिक इति ॥ १ ॥ वैखानससंहि
तायाम् वैकुंठोमणिवर्णाभश्चक्रमेकंतथांवुजं
द्वारोपरितथारेखाचक्रचिह्नसंयुतः॥ १ ॥

और सुवर्णकीयां विंदुकर्के युक्त और वनमालाकर्के जो भूषित सो देव गौवां और पृथिवी और धनकों वधाने वाला गोवर्धनधर होताहै २ वैकुंठ मूर्त्तिका लक्षण ब्रह्म पुराण मे कथन करते हैं मणिके वर्णकी न्याईंहै आभा जिसकी एक चक्र और कमलका है चिन्ह जिसमे और मुखमें रेखा होवे और सुंदर तडागी का है आकार जिस मे सो वैकुंठ मूर्त्ति होतीहै १ ॥ अग्नि पुराण में और कथन करते हैं एक है चक्र जिसमे और मणिकी न्याईं है आभा जिसकी और सुंदर रेखा वाला होवे सो वैकुंठ कथन कियाहै १ ॥ वैखानससंहितामें और कथनकरतेहैं वैकुंठइति मणिके वर्णकी न्याईं है आभा जिसकी चक्र और कमलकाहे चिह्नजिसमे और मुखके उपररेखाहोवे और चक्रके चिन्ह कर्के जो युक्त सो वैकुंठ होताहै ॥ १

वैकुंठोमणिवर्णाभोवामपार्श्वैकचक्रकः द्वारो
परितथारेखापद्माकारासुशोभनेति ॥ २ ॥
तथा अतिस्निग्धः सुवृत्तश्चवर्तुलद्वारसंयुतः
विलमध्येतथाचक्रंदृश्यतेत्यंतशोभनम् ॥ १ ॥
ब्रह्मांडे ॥ वैकुंठोमणिवर्णाभोवामपार्श्वैकच
क्रकः चक्रस्थदक्षिणेपार्श्वेद्युमणिर्भास्वरोभ
वेत् वहुलाकारसंयुक्तोमोक्षादिफलदायक
इति ॥ १ ॥

मणिकी न्याई है आभा जिसकी और वामपासे मे एक चक्र होवे और मुखके उपर और कमलके आकारकी न्याई जो सुंदर रेखा होवे सो वैकुंठ कथन कीताहै ॥ २ ॥ और कथन करतेहैं अतिस्निग्ध और सुवृत्त और गोलाकार मुखकर्के जो युक्त और विलके मध्यमे अत्यंत सुंदर चक्र देखिये सो वैकुंठ होताहै १ ब्रह्मांडपुराण मे और कथन करतेहैं मणिकी न्याईहै आभाजिसकी और पासे मे एक चक्र होवे और चक्रके दक्षिण पासे मे सूर्यका चक्र होवे और नीले आकार कर्के जो युक्त सो मोक्षकों देने वाला वैकुंठ होताहै ॥ १ ॥

विष्णुरहस्ये पद्मरेखागदाकारलाछनंमध्यदे शतः वैकुंठोमणिवर्णाभश्चक्रमेकंतथाम्बुजम् ॥ १ ॥ तथा वैकुंठोमणिवर्णाभोवामतश्चैकच क्रकः द्वारोपरितथारेखापद्माकारागताशुभा १ हयग्रीवलक्षणं पाद्मे हयग्रीवश्चसंज्ञेयोयों कुशप्रतिरूपकः चक्रद्वयसमायुक्तःपूजितःसौ रूयदस्तत इति १ ब्रह्मपुराणे हयग्रीवोहया कारोरेखाचक्रसमीपगा वहुरूपसमाकीर्णःपृ ष्ठेस्यान्नीलरूपक इति ॥ १ ॥

विष्णुरहस्यमें और कथन करते हैं पद्मरेखेति पद्मकीहै रेखा जिसमें और मध्यमें गदाके आकारकी न्याई चिन्ह होवे और मणिकी न्याई आभा जिसकी चक्र और कमलकाहै चिह्न जि समें सो वैकुंठ होताहै ॥ १ ॥ और तैसे कथन करतेहैं मणि कीन्याई है आभा जिसकी और वाम पासे मे एकचक्र होवे और मुखमें कमलकाहै आकार जिसमे ऐसी रेखा होवे सोवै कुंठ होताहै १ हयग्रीवकालक्षण पद्मपुराणमे कथन कियाहै जो कुंडेकी न्याईहोवे और दोचक्र कर्के युक्त होवे सो हयग्री वनाम कर्के होताहै सोपूजिआ हुआ सुखकों प्राप्त करताहै १ ब्रह्मपुराणमे और कथन करतेहैं घोडेकाहै आकार जिस का और चक्रके समीप रेखा होवे और वहुत रूपों कर्के जो युक्त और पृष्ठमे नीला होवे सो हयग्रीव होताहै ॥ १ ॥

अग्निपुराणे हयग्रीवोंकुशाकाररेखानीलः स विंदुकइति १ तथा हयग्रीवोंकुशाकाररेखाः पंचभवंतिहि वहुविंदुसमाकीर्णोदृश्यतेनील रूपकइति १ तथा हयग्रीवाकृतिर्लंवारेखांका याशिलाभवेत्हयग्रीवाशिलासाक्षात्पूजिताज्ञा नदान्नृणामिति १ अश्वाकृतिमुखंयस्यसाक्षमा लंशिरस्तथा पद्माकृतिर्भवेद्वापिहयग्रीवस्त्वसौ मतः २ पुराणसंग्रहे हयग्रीवोपिभगवान्हृषि तादिविमिश्रितः अंकुशाकृतिकस्ताक्ष्यंचक्रद्व यसमान्वितः॥ १ ॥

अग्निपुराणमे और कथन करतेहैं हयग्रीवइति कुंडेकीन्याईहै आकार जिसका औरनीलीहै रेखा जिसमे औरविंदुवाला होवे सो हयग्रीवहोताहै १ और तैसे कथनकरतेहैं कुंडकाहै आकार जिसका और पंचरेखा वाला होवे औरवहुत विंदुकर्के युक्त दे खिये और नीलाहै रूपजिसका सोहयग्रीव होताहै १ औरक थन करतेहैं जोशिला घोडेकी न्याई लंवी होवे और रेखाकाहै चिह्नजिसमे सो हयग्रीव शिलाहोताहै सोपूजी होईपुरुषांको ज्ञान प्राप्तकरतीहै १ घोडेकीन्याईं है मुखजिसका और जिसके शिरमें रुद्राक्षमालाका चिह्नहोवे वा पद्मकीआकृतिवाला होवे सो हयग्रीवजानना २ पुराणसंग्रहमे और कथन करतेहैं अंकुश कीन्याईंहै आकृति जिसकी और और दोचक्रोंकर्के जो युक्तहै गरुडसोहृषि तादियोंकर्केमिश्रितभगवान्हयग्रीवकथनकीताहै १

पद्माकृतिस्तथापार्श्वेकुलिशाकृतिरेववा ज्ञान
दोमोक्षदोन्हणांभोगदोविनतासुतइति २वारा
हेहयग्रीवोंकुशाकारोरेखाचक्रसमन्वितःकृष्ण
वर्णःसमाख्यातोमहाविद्याप्रदोमतइति१तथा
कपिलोवर्तुलोह्यंतःस्पष्टचक्रसमन्वितःपंचविं
दुसमेपेतः परविद्याप्रदोनृणामिति १ चतुर्भु
जमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे चतुर्भुजश्चतुश्चक्रोनव
मेघसमद्युतिः मंडलाकारचक्रः स्यात्सर्वेषांभु
विदुर्लभ इति ॥ १

पद्माकृतिरिति पद्मकीन्याई आकृति वालावा कुलिशकी आ
कृतिवाला होवे हेगरुड सोपुरुषांकों ज्ञान और मोक्ष और भो
गकों देताहै २ वराहपुराणमे और कथन करतेहैं अंकुशकीन्या
ईहै आकार जिसका रेखा और चक्रकर्के जोयुक्त औरकृष्णहै
वर्ण जिसका सोमहाविद्याके देनेवाला हयग्रीव कथन कीताहै
१ और कथन करतेहैं कपिल और गोलाकार औरअंतरमेस्प
ष्टचक्रकर्के युक्त और पंचविंदुकर्के जो युक्त सो पुरुषांकों परवि
द्याके देने वाला हयग्रीव कथन कीताहै १ चतुर्भुज मूर्त्तिका
लक्षण ब्रह्मांड पुराणमे कथनकीताहै चारहैं चक्र जिसमे और
नवीन मेघकी न्याईहै प्रकाश जिसका और मंडलाकारहै च
क्रजिसमे सोचतुर्भुज पृथिवीमे दुर्लभहै ॥ १ ॥

चक्रद्वयंमुखेयस्य श्यामांगोवर्त्तुलाकृतिः देवो गदाधरोनामराजसूयफलप्रद इति १॥ तथा चक्रद्वयंतुवदनेसमंताद्वर्तुलाकृतिः देवंगदाधरंकृष्णंराजसूयफलप्रदमिति॥ १ ॥ पुंडरीकाक्षलक्षणं ब्रह्मांडे पार्श्वेवामूर्ध्निपृष्ठेवा चामरद्वयसंयुता पुंडरीकाक्षमूर्त्तिःस्यात्सर्वलोकवशंकरीइति १ तथा द्वारोपरितथारेखापद्माकारासुशोभना पार्श्वेवामूर्ध्निपृष्ठेवानयनद्वयसंयुतेति ॥ १ ॥

चक्रद्वयमिति जिसके मुखमे दोचक्रहोण और श्यामहै अंग जिसका और गोलाकारहै आकृति जिसकी सो राजसूय यज्ञ केफलकोंदेनेवाला गदाधरनाम कर्के देवहोताहै ॥ १ ॥ और कथन करतेहैं जिसके मुखमे दोचक्रहोण और चारे ओरतें गोलाकारहोवे सो राजसूयके फलकोंदेनेवाला गदाधरदेवहोताहै ॥ १ ॥ पुंडरीकाक्षका लक्षण ब्रह्मांड पुराणमे कथन कियाहै जिसके पासेमे मस्तकमे वापृष्टमे चौरीयोंके दो चिह्नो कर्के जो युक्त सो संपूर्णलोक कों वश करणे वाली पुंडरीकाक्षकी मूर्तिहोतीहै ॥ १ ॥ और तैसे कथनकरतेहैं जिसके मुखमे कमलकी न्याईहै आकार जिसका ऐसीरेखाहोवे और पासेमे वा मस्तक वापृष्टमे नेत्रोंके दो चिन्हहोण सो पुंडरीकाक्षहोताहै १

पुंडरीकमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे एकचक्रयुतोवक्रे श्वेतवर्णसमन्वितः पुंडरीकःसमाख्यातः पूजितोमोक्षदायकइति ॥१॥ सुदर्शनमूर्त्तिलक्षणं पुराणसंग्रहे सुदर्शनंत्रिधाज्ञेयंलक्षणांतरभेदतः शुद्धंसुदर्शनंचैवतथोभयसुदर्शनं सुदर्शनसमाख्यंचज्ञेयंलक्षणकोविदैरिति ॥ १ ॥ तत्रादौ शुद्धसुदर्शनलक्षणं पुराणसंग्रहे एकचक्रः शिरोदेशेपार्श्वेशंखादिचिह्नितः असौ सुदर्शनोदेवः पूजनात्सर्वकामदः ॥ १ ॥

इसतें उपरंत पुंडरीक का लक्षण ब्रह्मांड पुराणमे कथन किया है एकचक्रेति जिसके मुखमे एकचक्रहोवे और श्वेतवर्णकर्के जो युक्त सो पुंडरीक कथन कीताहै सो पूजिआहुआ मोक्षकों देताहै ॥ १ ॥ सुदर्शन मूर्त्तिका लक्षण पुराण संग्रहमे कथन करतेहैं लक्षणाकों जानने वाले जो बुद्धिमान् तिनोंने लक्षणांतर भेदतें सुदर्शन तीन प्रकारका जानीदाहै कौनसें शुद्धसुदर्शन १ और उभय सुदर्शन २ और समसुदर्शन ३ प्रथम शुद्ध सुदर्शनका लक्षण कथनाकियाहै पुराण संग्रहमे जिसके शिरमे एकचक्रहोवे और पासेमे शंखादि चिन्हहोवे सो पूजनतें संपूर्णकामके देनेवाला शुद्ध सुदर्शन देव होताहै ॥ १ ॥

अतिसूक्ष्मंश्यामवर्णंसरघाकारकंमुखे कोमलं वर्त्तुलंस्निग्धंनराणांभुविदुर्लभमिति २ धूम्रवर्णंतथारूक्षंरक्तकेसरमंडितं सछिद्रंविलहीनं चग्रहस्थःपरिवर्जयेदिति ॥ ३ ॥अथोभयसुदर्शनलक्षणं पुराणसंग्रहे एकचक्रंशिरोभागेतथाधोप्येकचक्रकम् श्यामवर्णंसूक्ष्मरूपंनवांकेनापिचिह्नितम् ॥ १ ॥ सुदर्शनंचोभयाख्यंदेवानामपिदुर्लभ एनंयःपूजयेन्नित्यंसर्वान्कामानवाप्नुयादिति ॥ २ ॥

अतिसूक्ष्ममिति जो अतिसूक्ष्म होवे और श्यामहै वर्ण जिसका और सरघा मक्खीके आकारकी न्याईंहै मुख जिसका और कोमल और गोलाकार होवे और चिंदा होवे सो पुरुषांको पृथिवीमे दुर्लभहै ॥ २ ॥ धूम्रकी न्याईंहै वर्ण जिसका और रूक्ष और रक्तकेसर करके भूषित और छिद्रहै जिसमे और छिद्रसे हीन जो तिसका गृहस्थीत्याग करे ॥ ३ ॥ इसतें उपरंत उभय सुदर्शनका लक्षण कथन कियाहै पुराण संग्रहमे जिसके शिरमे और हेठमें एक चक्र होवे और श्यामहै वर्ण जिसका और सूक्ष्म रूप वाला होवे और अंक करके चिह्नित नहोवे ॥ १ ॥ सोउभय सुदर्शनहोताहै सोदेवतियांको दुर्लभहै इसका जो पुरुष नित्य पूजन करताहै सो संपूर्ण कामनाकों प्राप्त होताहै ॥ २ ॥

समसुदर्शनलक्षणं तत्रैव द्वाभ्यांशिरसिच क्राभ्यांपंक्त्याकारेणभूषितः श्यामवर्णःपार्श्वे भागेराजशंखादिसंयुतः ॥ १ ॥ समःसुदर्शनो देवोभूतलेतीवदुर्लभः पूजनीयस्सदासद्भिर्भु क्तिमुक्तिफलप्रद इति ॥ २ ॥ योगेश्वरलक्ष णं ब्रह्मपुराणे दृश्यतेशिखरेलिंगं शालग्रा मसमुद्भवं सवैयोगेश्वरोनामब्रह्महत्यांव्यपोह ति १ ॥ विष्णुपंजरलक्षणं पद्मपुराणे वज्र कीटोद्भवारेखाःपरिभूताश्चयत्रवै शालग्रामशि लायास।.विष्णुपंजरसंज्ञिता ॥ १ ॥

समसुदर्शनका लक्षण पुराण संग्रहमे कथन कियाहै द्वा भ्यामिति पंक्तिके आकार कर्के शिरमें दो चक्रों कर्के जो भूषित और श्यामहै वर्ण जिसका और पासमे राज शंख कर्के जो युक्त ॥ १ ॥ सो सम सुदर्शन देव श्रेष्ठपुरुषोंने सदा पूजने योग्यहै किसकारणतें भुक्ति और मुक्तिके फलकों देनवाला और पृथिवीमे दुर्लभहै २ योगेश्वरका लक्षण ब्रह्मपुराणमे कथन कियाहै जिसके शिखरमें शालग्रामतें उत्पन्नहुआ जो लिंग सोदेखिये सो ब्रह्महत्याके दूर करणे वाला योगेश्वर नाम कर्के देवहै ॥ १ ॥ विष्णु पंजरका लक्षण पद्मपुराणमे कथन कियाहै जिस शिलामे वज्रकीटोद्भवरेखाहोण सो शालग्राम शिला विष्णु पंजर संज्ञा वाली होतीहै १ ॥

अतसीपुष्पसंकाशोबिंदुनापरिभूषितः सुदर्श
नःस्मृतोदेवःश्यामोभूमिसुखप्रद इति २ ब्र
ह्मपुराणे सुदर्शनस्तथादेवःश्यामवर्णोमहाद्यु
तिःवामपार्श्वेगदाचक्रेरेखाचैवतुदक्षिणेइति १
ब्रह्मांडे एकचक्रंशिरोदेशेकृष्णवर्णमुखस्तथा
सुदर्शनस्सविज्ञेयस्सर्वपापप्रणाशन इति १
पाद्मे चक्राकारेणपंक्तिश्चयत्ररेखामयीभवेत्
ससुदर्शनइत्येवंख्यातः पूजाफलप्रद इति १

अतसीति अलसीके पुष्पकी न्याईंहै प्रकाश जिसका औरबिंदु
कर्के भूषित औरश्यामसो पृथिवी और सुखको देनेवाला सुदर्श
न कथन कियाहै २ ब्रह्मपुराणमे और कथन करतेहैं श्यामव
र्णवालाहोवे और बडाहै तेजजिसका और वाम पासेमें गदा
और चक्रहोवे और दहनेमे रेखाहोवे सोसुदर्शन देवहोताहै १
ब्रह्मांडपुराणमे और कथन कियाहै जिसके शिरमे एक चक्रहो
वेऔर तैसे कृष्ण वर्णवाला मुखहोवे सोसंपूर्णपापके नाशकरणे
वाला सुदर्शन जानना १ पद्मपुराण मे और कथन करतेहैं
जिसमे चक्राकारकी न्याईं रेखा वाली पंक्तिहोवे सो सुदर्शन
जानना सो पूजित किया हुआसंपूर्ण फलको देताहै १

तथा सुदर्शनंतथाज्ञेयंसर्वपापप्रणाशनं पद्मा
सनंवृहच्चक्रं निम्ननाभिसुदर्शनं यतिभिःपू
जनीयंचह्येकचक्रंसरक्तकमिति १ तथा सुद
र्शनंकृष्णवर्णमुत्तमंपरिकीर्त्तितं मधुवर्णमध्यमं
स्यात्कपिलंतुपरित्यजेदिति १ तथा नवांकितं
कृष्णवर्णविंदुनापरिशोभितं स्वर्णरेखासमायु
क्तंनशाणांभुक्तिमुक्तिदमिति १

और तैसे कथन करतेहैं तथेति कमलकी न्याईहै आसन जिस
का और बडाहै चक्र जिसमें और नीवींहै नाभि जिसकी और
रक्तवर्ण वाला है एकचक्रका है चिन्ह जिसमे सो सुदर्शन
जानना तिसका यतियोंने पूजन करणे योग्यहै १ और तैसेंक
थन करतेहैं कृष्ण वर्ण वाला जोसुदर्शन सोउत्तम कथन किया
हे और जोमखीरके रंग वाला होवेसो मध्यम होताहैऔरजो
कपिलवर्ण वाला होवे तिसको त्यागना चाहिये १ और तैसेंक
थन करतेहैं नहि है चिन्ह जिसमे और कृष्णहै वर्ण जिसका
और विंदु करके भूषित और सुवर्णकी रेखा करके जो युक्त सो
सुदर्शन पुरुषोंको भुक्ति और मुक्तिको देताहै १

अथयज्ञमूर्त्तिलक्षणंब्रह्मांडे यज्ञमूर्त्तिस्तुभगवान्पीतरक्तादिमिश्रितः द्वारस्यवामतश्चक्रेस्रुक्चिह्नंदक्षिणेतथा १ पुराणसंग्रहे पीतरक्तायज्ञमूर्त्तिरितिवेदविदोविदुः १ अथ दत्तात्रेयलक्षणम् पीतारुणासिताभश्चह्रस्वपृष्ठोन्नतोभवेत् अक्षमालाकृतिःपृष्ठेदत्तात्रेयः शुभप्रदः १ तथा कृष्णोरक्तश्चपीतश्चदत्तात्रेयाभिधोभवेदिति १

इसतें उपरंत यज्ञमूर्तिका लक्षण ब्रह्मांडपुराणमे कथन कियाहै यज्ञमूर्त्तिरिति पीत और लाल रंगकर्के जोमिश्रित और मुखके वामपासेमे चक्रहोवें और दहनेमे सुरचेका चिह्नहोवे सो यज्ञमूर्ति भगवान् होताहै ॥ १ ॥ पुराण संग्रहमे उोर कथन करतेहैं पीत और रक्तरंग वाली जोशिला तिसकोंवेदकें जाननेवाले यज्ञमूर्तिजानतेहैं १ दत्तात्रेयका लक्षण कथन कियाहै पीत और लाल और कृष्ण है आभा जिसकी और ह्रस्वहै पृष्ठ उोर उच्चा होवे उोर पृष्ठमे रुद्राक्षमालाकी आकृतिहोवे सो शुभके देनेवाला दत्तात्रेय होताहै ॥ १ ॥ और कथनकरतेहैं कृष्ण और रक्त और पीतहै वर्ण जिसका सो दत्तात्रेय होताहै १

शिशुमारलक्षणं ब्रह्मांडे शिशुमारोदीर्घ
कायः शिल्पादिव्यांगगव्हरः परतः पृष्ठभागे
तुचक्रेणैकेनसंयुतःसर्वाधारस्सविज्ञेयःसर्वसि
द्धिप्रदोनृणामिति ॥ १ ॥ पृष्ठभागेचैकचक्रंव
क्रेचक्रद्वयंभवेदिति २ ॥ अथहंसमूर्त्तिलक्षणं
ब्रह्मांडे हंसस्तुधनुषाकारोनीलश्वेतविमिश्रि
तः चक्रपद्मसमोपेतःकेवलंमुक्तिदोभवेदिति
॥ १ गारुडे हंसः शंखाकृतिर्द्युक्तोनाभिचक्र
स्तथोन्नतः दक्षिणेधनुषाकारोवामेकुमुदपुष्प
कम् दृश्यतेभिन्नवर्णस्तुमोक्षवर्गप्रदःशुभइति१

शिशुमारका लक्षण ब्रह्मांड पुराणमे कथन कियाहै शिशुमार इति दीर्घहै काया जिसकी और दिव्य क्या सुंद रहै अंग जिसका और पृष्टकेचारे औरतें एक चक्र करकें जो युक्त सो पुरुषां कों संपूर्ण सिद्धिके देनेवाला और संपूर्णकाआधार शिशुमार जानना ॥ १ ॥ पृष्टभागमें एक चक्र होवे और मुखमें दोचक्र होण सोभी शिशुमार जानना ॥ २ ॥ हंसमूर्त्तिका लक्षण कथन कियाहै ब्रह्मांडपुराणमे धनुषकी न्याईहै आकार जिसका नील और श्वेत वर्णकरकेंमिश्रित और कमल और चक्र करकें जो युक्त सों केवल मुक्ति कों देनेवाला हंस कथनकियाहै १ गरुड पुराण मे. और कथनकियाहै शंखाकृति जो होवे और नाभिमेंहै चक्र जिसके और तैसेंउच्चा और दहनेमें धनुषका आकार और वाममें कुमुद पुष्पकाचिह्न देखिये और भिन्नहै वर्ण जिसका सों मोक्षके देनेवालाहंस कथन कियाहै ॥ १ ॥

परमहंसमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे परमहंसःखगे शानशिखंडिगलसन्निभः स्निग्धश्चायतवृत्त श्चवर्त्तुलद्वारसंयुतः तथा विलमध्येतथाचक्रे दृश्यतेयत्रशोभने चक्रस्यदक्षिणेपार्श्वेद्युमाणि र्भास्वरोभवेत् १ वाराहरेखायद्वामेदृश्यतेवि नतासुत मूर्त्तिःपरमहंसाख्याचतुर्वर्गफलप्रदे ति ॥ १ ॥ लक्ष्मीपतिलक्षणं ब्रह्मांडे मुखेवा पार्श्वतोवापिमयूरगलसन्निभःकृष्णवर्णःसूक्ष्म चक्रःपृथुलास्यः स्त्रगन्वितः लक्ष्मीपतिरिति ख्यातो लक्ष्मीसंपत्तिदायक इति ॥ १ ॥

परम हंस मूर्त्तिका लक्षण ब्रह्मांड पुराण मे कथन कियाहै परमहंस इति हेगरुड जो मोरके गलकी न्याई चि न्नोंवाला होवे और थिंदा और विस्तारवाला गोलाकार और गोलाकार मुख करके युक्त सो परम हंस होताहै ॥ १ ॥ और तैसे कथन करतेहैं जिस शिलाकेविलके मध्यमे सुंदरदोचक्र होवें और चक्रके दहने पासेमे सूर्यका चिह्न होवे ॥ १ ॥ जि सके वाम पासेमें सूकरकी न्याई रेखा देखिये सो हेगरुड धर्म अर्थ काम मोक्षके फलकों देने वाली परमहंस की मूर्त्ति कथन कीतीहै ॥ १ ॥ लक्ष्मी पतिका लक्षण ब्रह्मांड पुराणमे कथन कीताहै मुखमें और पासेतें मोरके गलके सदृश होवे और कृष्णहै वर्ण जिसका और सूक्ष्महै चक्र जिसमे और व डाहै मुख जिसका और मालों करके जो युक्तसो लक्ष्मीकी जो संपदा तिसकों देने वाला लक्ष्मी पति कथन कीयाहै १

गरुडध्वजमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे स्वर्णशृंगखुरः सौम्योवर्त्तुलः स्निग्धकेसरः चक्रेमध्यगते कृष्णेरेखाविंदुविभूषितः ॥ १ ॥ लक्ष्मीकरोवै नतेयगरुडध्वजसंज्ञक इति ॥ २ ॥ वटपत्र शायिलक्षणं ब्रह्मांडे वटपत्रशायीभगवान् वर्त्तुलोऽत्यंतशोभनः क्षीरबुद्बुदवत्तार्क्ष्यनीलश्वे तविमिश्रितः ॥१॥ वक्रस्यवामतःशंखोदक्षिणे पद्ममेवच वदनैकमध्यदेशेचतुश्चक्रस्त्रिविंदुक इति ॥ २ ॥

गरुडध्वजमूर्त्तिकालक्षण ब्रह्मांडपुराणमे कथन कियाहै स्वर्णेति सुवर्णका है शृंग और खुर जिसमें और सोम्य और गोला कार और स्निग्ध केसर वाला और मध्यमे कृष्ण चक्र होवे रेखा और बिंदु करके जो भूषित ॥ १ ॥ हेगरुड सो लक्ष्मीके करणे वाला गरुड्ध्वज होताहै ॥ २ ॥ इसतें उपरंत बटपत्र शायीका लक्षण ब्रह्मांड पुराणमे कथन कियाहै गोलाकार औ र अत्यंत सुंदर और दुग्धके बुलबुलेकी न्याई होवे हेगरुड नी ल और श्वेत करके मिश्रित ॥ १ ॥ मुखके वामपासे शंख और दहनेमें कमलका चिह्न होवे और मुखके मध्यदेशमे चार चक्र होण और तीनहैं विंदु जिसमे सो बटपत्रशायी भगवान् कथ न कीताहै ॥ २ ॥

शेषशायिलक्षणं ब्रह्मांडे फणाकाराशिला यस्यमुखेचक्रद्वयंभवेत् शेषशायसिचक्रेद्वे कृष्णवर्णोमहाद्युतिः ॥१॥ऊर्ध्वरेखासमायुक्तो वनमालाविभूषितःशेषशायीतिविख्यातःसर्वै श्वर्यप्रदायक इति ॥ २ ॥ विश्वंभरमूर्त्तिल क्षणं ब्रह्मांडे चक्राणांचापिविंशत्यायुक्तोविश्वं भरःशुभः भुक्तिमुक्तिप्रदोन्दणामंतेमोक्षप्र दायकइति ॥ १ ॥

शेषशायीका लक्षण कथन कियाहै ब्रह्मांड पुराणमे फणेति जिसकी शिला फणके आकार की न्याईं होवे और मुखमें दोचक्र होण सो शेषशायी होताहै अथवा दो चक्रों वा ला होवे और कृष्ण वर्ण वाला और बडे तेजवाला १ ॥ और ऊर्ध्व रेखा कर्के युक्त और बन माला कर्के भूषित सो संपूर्ण ऐश्वर्यके देने वाला शेषशायी कथन कीताहै ॥ २ ॥ विश्वंभ रमूर्त्तिका लक्षण ब्रह्मांड पुराणमे कथन करतेहैं बीस चक्रों क र्के जो युक्त सो विश्वंभर कथन कीताहै सो पुरुषांकों भुक्ति और मुक्तिकों देताहै और अंतमे मोक्षकों देताहै ॥ १ ॥

पीतांवरमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे स्निग्धोगोरोचना कारस्सचक्रोवर्त्तुलोऽपिवा पीतांबरधरोदेवस्सौ स्यद: शुभदोऽर्चितइति १॥ तथा द्वारदेशेभवे च्चक्रंबहुवर्णसमन्वित: पीतांबरधरोदेवस्सौ स्यैकफलदोर्चितइति १ सत्यवीरश्रवसोलक्ष णंब्रह्मांडेसवर्त्तुलोहृदयचक्र:सर्वांगेहेमविंदुक: सत्यवीरश्रवा:प्रोक्त:सर्वसौभाग्यवर्धनइति १ तथा वर्तुल:पंचवक्र: स्यात्सर्वांगेहेमाविंदुक: सत्यवीरश्रवानामसर्वसौभाग्यवर्धनइति १

पीतांवर मूर्त्ति का लक्षण ब्रह्मांड पुराणमे कथन कीताहै स्निग्ध इति स्निग्ध और गोरोचनके रंग वाला और चक्र वाला और गोलाकार होवे सो पीतांवर देव होताहै पूजिआ हुआ सो सुख और शुभकों देताहै १ ॥ और कथन क रतेहैं मुखमें एक चक्र होवे और बहुत वर्णकर्के जो युक्त सो पितांबर पूजिआ हुआ सुखकों देताहै १ ॥ सत्य वीर श्रव का लक्षण ब्रह्मांड पुराण मे कथन कीताहै गोलाकार और हृदयमे हैं चक्र जिसके और संपूर्ण अंगमे सुवर्णकी विंदु वाला होंवे सो सौभाग्यके देने वाला सत्यवीरश्रवा कथन कियाहै १ और कथन करतेहैं गोलाकार और ५ पंच मुखों वालाहोवे और संपूर्ण अंगोंमे सुबर्णकीयाहैं विंदुजिसमे सो सौभाग्यकों वधानेवाला सत्यवीरश्रवा कथन कियाहै १॥

अथामृताहरणमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे वर्त्तुलोह्रस्व
वदनोह्रस्वचक्रोऽतिकोमलः अमृताहरणोदेवो
नीलोत्पलसमप्रभइति ॥ १ ॥ नरमूर्त्तिलक्षणं
ब्रह्मांडे नरमूर्त्तिस्तुभगवानतसीकुसुमप्रभः ए
कचक्रसमोपेतोब्रह्मसूत्रंचपार्श्वके १ ॥ अथशे
षमूर्त्तिलक्षणं पाद्मे नागवत्कुंडलीभूतरेखा
पंक्तिस्सशेषकइति १ ॥ ब्रह्माण्डे अथवाकुंड
लीभूतनागभोगसमन्वितः शेषमूर्त्तिस्तुभगवा
नशेषैश्वर्यदायकइति १ ॥

इसतें उपरंत अमृताहरण मूर्त्तिका लक्षण ब्रह्मांड पुराणमे कथन कियाहै वर्तुल क्या गोलाकार और ह्रस्वहै मुख जिसका और ह्रस्वहै चक्र जिस मे और कोमल और नीले कमलकी न्याईंहै प्रभा जिसकी सो अमृता हरण देव होताहै ॥ १ ॥ नर मूर्त्तिभगवान्का लक्षण ब्रह्मांड पुराणमे कथन कियाहै अलसीके पुष्पकी न्याईंहै प्रभा जिसकी और एकचक्र करकें जो युक्त और पासेंमे यज्ञोपवीतका चिह्न होवे सो नरमूर्त्ति भगवान् होताहै १ ॥ इसतें उपरंत शेष मूर्त्ति का लक्षण पद्म पुराण में कथन करतेहैं नागकी न्याईं कुंडलीभूतहै रेखोंकी पंक्ति जिसमे सो शेष नाग मूर्त्ति होताहै १ ॥ ब्रह्मांड पुराणमे और कथन करतेहैं अथवा कुंडलीभूत नाग भोग करकें जोयुक्त सो संपूर्ण ऐश्वर्य के देने वाली शेष मूर्त्ति होतीहै १ ॥

अथगरुडमूर्त्तिलक्षणं पाद्मे पक्षाकारेचचक्रेद्वे
मध्येलंबाचरेखिका गरुडस्सतुविज्ञेयोभुक्तिमु
क्तिप्रदायकइति १ ब्रह्माण्डे द्विपक्षाभ्यामुपेतं
यद्गरुडंभुविदुर्लभंदुर्लभंसमचक्रंचकलौकल्मष
नाशनं तथा कल्मषौघविनाशीस्याद्वलयाकार
रेखया सुवर्णनिभयाद्वित्रिचतुष्टयसमेतया १
बनमालिमूर्त्तिलक्षणम् शिलाशुभ्राचसुश्लक्ष्णा
शुभचक्रासुशोभना बनमालीसाविज्ञेयोह्याशु
मोक्षफलप्रदइति ॥ १ ॥

इसतैं उपरंत गरुड मूर्त्तिका लक्षण पद्मपुराणमे कथन करतेहैं पक्षेति खंबके आकारकी न्याई मध्यमे दोचक्र जिसमे और लंबीहै रेखा जिसमे सो भुक्ति और मुक्तिके फलको देनेवाला गरुड जानना ॥ १ ॥ ब्रह्मांड पुराणमे और कथन करतेहैं जो गरुड दोपंखोंकर्के युक्त सो पृथिवीमे दुर्लभहै अथवा समहै चक्र जिसमे सोभी दुर्लभहै सो कलियुगमे पापांका नाशकरता है ॥ १ ॥ और तैसे कथन करतेहैं सुवर्णकीन्याई दो तीन वा चार जो वलयाकार रेखा तिन कर्के जो युक्त सो गरुड कलियुगमे पापोंका जो समूह तिसका नाश करता है १ बनमालि मूर्त्तिकालक्षण कथनकरतेहैं श्वेत जो शिला और कोमल और शुभ चक्र कर्के सुंदर सो तात्काल मोक्ष फलको देने वाला वनमाली जानना ॥ १ ॥

मुरारिमूर्त्तिलक्षणं पुराणसंग्रहे मध्येचक्रंशि
लासूक्ष्मंदक्षिणांगेचपुष्कलम् मुरारिंदैवतंदेह
कुष्ठव्याधिविनाशनमिति १ मुकुंदमूर्त्तिलक्षणं
पुराणसंग्रहे अल्पास्योवहुचक्रश्चश्यामवर्णं
स्तथोज्वलःमुकुंदःसर्वपापघ्नः पांडुरेवफलप्रद
इति १ ब्रह्मांडे षण्मुखेनमुकुंदाख्यस्सतांमुक्ति
प्रदायक इति १ श्रीवत्सलांछनलक्षणं पुरा
णसंग्रहे श्रीफलाकारसदृशंपीतंचसहचक्रिणं
श्रीवत्सलांछनंनामस्त्रीहत्यापापनाशनम् १ ॥

मुरारि मूर्त्तिका लक्षण पुराण संग्रह मे कथन कीयाहै मध्ययि
ति मध्यमें है चक्र जिसके और सूक्ष्महै शिला जिसकी और द
क्षिण पासे मे वडा होवे सो देहमें जो कुष्ठ रोग तिसको दूर
करणे वाला मुरारि देवता होताहै ॥ १ ॥ मुकुंदमूर्त्तिकालक्षण
पुराणसंग्रहमें कथन कीयाहै अल्पहै मुख जिसका और वहुतहैं
चक्र जिसमें और श्याम है वर्ण जिसका और उज्वल होवे
सो संपूर्ण पापको दूरकरणेवाला मुकुंदहोताहै पांडु वर्णवाला
भी फलको देताहै १ ब्रह्मांड पुराणमें और कथन करतेहैं छे
मुखों वाली जो मूर्त्ति सो मुकुंद नामककैं होतीहै और श्रेष्ठपु
रुषोंको मुक्तिदेतीहै १ श्रीवत्सलांछनका लक्षण पुराण संग्रहमे
कथन करतेहैं गोलाकार और पीतहै वर्ण जिसका और चक्र
वाला होवे सो स्त्रीहत्याका जो पाप तिसको नाशकरणेवाला
श्रीवत्सलांच्छन होताहै ॥ १ ॥

श्रीफलाकारसदृशं पीताभं वामचाक्रिणम्
श्रीवत्सनामदेवेशंहत्याकोटिविनाशनमिति१
धरणीधरमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे वर्त्तुलोद्वारचक्र
श्चशिलास्थूलः सुशोभनः धरणीधरस्सविज्ञे
यः सर्वयज्ञफलप्रदइति १ योगराजमूर्त्तिलक्ष
णं विष्णुरहस्ये वामांगेपुष्कलंस्निग्धंद्विचक्रंच
सुसूक्ष्मकम् स्थिरासनंकृष्णवर्णनाभियुक्तं
चयद्भवेत् तद्ज्ञेयंयोगराजस्यलक्षणंयोगदा
यकम्॥ १ ॥

और तैसें कथन करतेहैं श्रीफलेति श्रीफलके आकारके सदृश क्या गोलाकार और पीत वर्ण वाला और वाम पासे में चक्र होवे सो क्रोड हत्याके दूर करणे वाला श्रीवत्स नाम कर्के देव होताहै १ धरणीधर मूर्त्ति का लक्षण कथन कीयाहैं ब्रह्मांडपुराणमे गोलाकार और मुखमें चक्र होवे और स्थूलहै शिला जिसकी और सुंदर सो संपूर्ण यज्ञके फलको देने वाला धरणिधर जानना १ योगराज मूर्त्तिका लक्षण विष्णु रहस्यमे कथन कीताहै वाम भागमें बडा होवे और थिंद्दा और दोहैं चक्र जिसमे और सूक्ष्म और स्थिरहै आसन जिसका और कृष्ण वर्ण वाला होवे और नाभि कर्के युक्त होवे सो योगकों देने वाला योगराज जानना १

श्रीमूर्त्तिलक्षणं पुराणसंग्रहे अधोधस्तात्त्रि
वदनःषट्चक्रःश्यामलोविभुः श्रीमूर्त्तिरिति
विख्यातः सर्वसौभाग्यदायक इति १ स्कांदे
शंखचक्रादिकमलकमंडलुनिशाकरैः मुखत्र
येणसंयुक्तः श्रीमूर्त्तिस्तुशुभप्रदः १ श्रीसहा
यमूर्त्तिलक्षणं पुराणसंग्रहे चक्रैस्तुकेवलैर्यस्तु
पंचाभिरुसमलंकृतः वनमालांकितश्चैवसंज्ञेयः
श्रीसहायकइति ॥ १ ॥

श्रीमूर्त्तिका लक्षण पुराण संग्रहमे कथन कियाहै अधइति जिसके अधा अधातें तीन मुख होण और छे ६ चक्रों वाला और श्याम वर्ण वाला और विभु सो संपूर्ण सौभाग्य के देने वाला श्रीमूर्त्ति कथन करींदाहै १ स्कंद पुराणमें और कथन करतेहैं शंख और चक्र और कमल और कमंडलु और चंद्रमा इनों करके और तीन मुखां करके जो युक्त सो शुभके देने वाला श्रीमूर्त्ति होताहै १ श्रीसहाय मूर्त्तिका लक्षण पुराण संग्रहमे कथन कियाहै केवल पंच चक्रों करके जो अलंकार कीयाहुआ और वनमालाकाहै चिन्ह जिसमे सो श्रीसहायक जानना १

देवदेवमूर्त्तिलक्षणं स्कान्दे सर्वाभस्सूक्ष्मवद
नःपीतरेखः सलक्ष्मकः विदिक्षुदिक्षुसर्वासुदृ
श्यतेचसमंततः १ सदेवदेवोविज्ञेयः पुराणपु
रुषोत्तमः २ कपिलमूर्त्तिलक्षणं स्कांदे। कपि
लोवर्त्तुलोऽत्यंतस्पष्टचक्रसमान्वितः पंचाविंदुस
मोपेतःपरविद्याप्रदोनृणामिति १ अव्ययमूर्त्ति
लक्षणं ब्राह्मे प्रदक्षिणावर्त्तयुतोवनमालाविभू
षितःकृष्णवर्णयुतश्चापिधनधान्यसुखप्रदः १

देवदेव मूर्त्तिका लक्षण स्कंद पुराणमे कथन कियाहै सर्वाभ इति संपूर्णमेहै आभा जिसकी और सूक्ष्म मुख वाला और पीतहै रेखा जिसमे और चिन्ह वाला और संपूर्ण दिशा और विदिशा में चारें औरतें जो देखिये ॥ १ ॥ सो पुराण पुरुषोत्तम देवदेव जानना २ ॥ कपिल मूर्त्तिका लक्षण स्कंद पुराणमे कथन कियाहै गोलाकार अत्यंत स्पष्ट चक्र करकें युक्त और पंच विंदु करकें जो युक्त सो पुरुषांकों परविद्याके देने वाला कपिलदेव होताहै १ अव्यय मूर्त्तिका लक्षण कथन कीताहै ब्रह्मपुराणमें प्रदक्षिणावर्त्त करकें युक्त और बनमाला करकें भूषित और कृष्ण वर्ण करकें जो युक्त सो धन और अन्न और सुखके देने वाला अव्यय होताहै १

क्षीराब्धिशायिलक्षणं स्कान्दे एकचक्रंचवदने पंचायुधलसत्तनु पृष्ठेसवर्त्तुलंलाक्षाक्षीरकांति समन्वितम् १ चक्रस्योभयपार्श्वेतुफणिपंजरशोभितम् सवर्त्तुलंतथास्निग्धंक्षीराब्धिशयनंविदुरिति २ मुसलायुधमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे मुसलाकाररेखाभिरेकचक्रेणसंयुतः मुसलायुधनामासौशंखचक्रगदान्वितः पूजनाच्चैवसर्वेषांभुक्तिमुक्तिफलप्रद इति १ ॥

क्षीराब्धि शायीका लक्षण स्कंद पुराणमे कथन कियाहै एक चक्र मिति जिसके मुखमे एक चक्र होवे और ५ पंच बाणो करके प्रकाशमानहै शरीर जिसका और पृष्ठमे गोलाकार और लाख और क्षीरकी कांति करके युक्त ॥ १ ॥ और चक्रके दोनो पासयोंमें सर्पके देह करके युक्त और गोलाकार और जो थिंदा तिसको क्षीराब्धि शायी जानतेहैं २ मुसलायुधमूर्त्तिका लक्षण कथन कीताहै ब्रह्मांडपुराणमें मुसलक्या मोहलेके आकारकी न्याई जो रेखा और एक चक्र करके जो युक्त शंख और चक्र और गदा करके जो युक्त सो मुसलायुध नाम करके देव होताहै पूजनतें सो संपूर्णकों भुक्ति और मुक्तिके फलकों देताहै १

चक्रपाणिमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे पूर्वभागेत्रिव
दनःपश्चादेकास्यसंयुतः चक्रपाणिरितिख्या
तश्चक्रवर्त्तित्वदायकः १ ॥ वहुरूपमूर्त्तिलक्षणं
ब्रह्मांडे अभ्यंतरेपृथक्चक्रोवहुलास्यः समं
ततः वहुरूपीसमाख्यातः पूजितोमोक्षदाय
कः १ ॥ अथजगद्योनिमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे
द्वारचक्रोरक्तवर्णोजगद्योनिःसुखप्रदइति १ ॥

चक्रपाणिकी मूर्त्ति का लक्षण ब्रह्मांड पुराण मे कथन कियाहै पूर्वभागयिति पूर्वभाग मे तीन मुख होण पीछेतें एक मुख करकें जो युक्त सो सारी पृथिवी के राज्यकों देने वाला चक्रपाणि कथन कीताहै ॥ १ ॥ वहु रूप मूर्त्ति का लक्षण व्रह्मांड पुराण मे कथन कीताहै जिसके मध्य मे एक चक्र होवे और बडे मुख वाला होवे सो पूजित्र्प्रा हुआ मोक्षकों देने वाला बहुरूपी कथन कीताहै ॥ १ ॥ इसतें उपरंत जगद्योनि मूर्त्ति का लक्षण ब्रह्मांड पुराण मे कथन कीता है मुख मे चक्र वाला होवे और रक्त वर्ण वाला होवे सो सुखकों देने वाला जगद् योनि होताहै १ ॥

त्रिमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे ऊर्ध्वाधस्तुत्रिवदनःष ट्चक्रःश्यामलांगधृक् त्रिमूर्त्तिरितिविख्यातः सर्वसौभाग्यदायकः १ ॥ वामने चक्रत्रयस मेतश्चत्रिमूर्त्तिःस्याच्छुभप्रदइति १ ॥ विष्व क्सेनमूर्त्तिलक्षणं स्कांदे पद्मकोशप्रतीका शोनवचक्रसमन्वितः विष्वक्सेनस्तुभगवान श्वमेधफलप्रदः १ ॥ पुराणसंग्रहे अष्टचक्र श्चतुर्वक्त्रःश्रीचक्रेणसमन्वितः श्वेतरेखास मायुक्तःकृष्णवर्णःस्थिरासनः १ ॥

त्रिमूर्त्तिका लक्षण ब्रह्मांड पुराण मे कथन कीताहै ऊर्ध्वेति उ पर और अधा में तीन मुखों वाला होवे और छे ६ हैं च क्र जिस में और श्याम अंग के जो धारणे वाला होवे सो संपूर्ण सौभाग्यके देने वाला त्रिमूर्त्ति कथन कीताहै १ ॥ वा मन पुराण मे और कथन करते हैं तीन चक्रों करकें जो युक्त सो शुभ कों देने वाला त्रिमूर्त्ति होताहै १ ॥ विष्वक्सेन मूर्त्ति का लक्षण कथन कीयाहै स्कंद पुराणमें कमल की डोडी की न्याईं हैं प्रकाश जिस का और ९ नौ चक्रों करकें जो युक्त सो अश्वमेध फल कों देने वाला विष्वक्सेन होताहै १ ॥ पुराण संग्रह मे और कथन करतेहैं ॥ आठ ८ हैं चक्र जि समे और चारहैं मुख जिस मे और श्री चक्र करकें युक्त औरश्वेत रेखा करकें जो युक्त ओर कृष्ण है वर्ण जिस का और स्थिर आसन वाला होवे ॥ १

शंखचक्रगदायुक्तोधनुर्वाणसमन्वितः यज्ञसूत्रधरः श्रीमान्विष्वक्सेनःप्रकीर्त्तितः ॥ २ ॥ हैहयमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मांडे गर्भागारेतुचक्रेद्वे पद्मंदक्षिणतोवहिः पद्मपत्राकृतिर्वापिहेमवर्णसमाकुलः हैहयस्तुभवेद्देवस्सर्वसिद्धिप्रदायकः॥ १ ॥ इतिशालग्राममूर्त्तिलक्षणम्

शंखेति शंख चक्र और गदा करके जो युक्त धनुष और बाण करके जो युक्त यज्ञसूत्रके धारणेवाला सो शोभावाला विष्वक्सेनहोताहै ॥ २ ॥ हैहय मूर्त्तिका लक्षण ब्रह्मांड पुराणमे कथन कीयाहै जिसके गर्भमें दोचक्रहोंन और दक्षिणके बाहरकी तरफमें कमलका चिह्नहोवें वा कमलके पत्रकी आकृतिवाला होवे और सुवर्णके रंगवालाहोवे सो संपूर्ण सिद्धिके देनेवाला हैहयदेव होताहै ॥ १ ॥ एहशालग्राममूर्तियोंकालक्षण समाप्त भया ❀

अथ शालग्रामशिलास्नानजल महिमा

॥ स्कांदे ॥ शालग्रामभवोदेवोदेवेश्वरयुतो भवः उभयोःस्नानतोयेनब्रह्महत्यानिवर्त्तते ॥ १ ॥ पाद्मे ॥ सस्नातःसर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुदीक्षितःशालिग्रामशिलातोयैर्योभिषेकंसमाचरेत् ॥ २ ॥ गंगागोदावरीरेवास्सद्योमुक्तिप्रदास्तुयाः निवसंतीहतीर्थानिशालग्रामशिलाजले ३ अम्बरीषगृहेतेषांदासोहंवशगःसदा हरेःस्नानावशेषंचजलंयस्योदरेस्थितम् ४ ॥

अब शालग्राम शिलाके स्नान वाले जलके साथ स्नान करनेकी महिमा लिखीहै स्कंदपुराणमे ॥ शालग्राम पर्वत भव जो देवता और देवेश्वरके युक्त जो महादेव इन दोनोंके स्नान जल के साथ ब्रह्महत्या दूर होतीहै ॥ १ ॥ पद्मपुराणमे कहाहै सोई पुरुष सारेतीर्थोंमें न्हायाहै और सारेयज्ञोंमे दीक्षित भी ओहीहै कौन जो शालग्रामकी शिलाके स्नान कराये होए जलों करके आप मार्जन कर्ताहै ॥ २ ॥ गंगागोदावरीरेवा इत्यादिक नदियां शीघ्र स्नान मात्र करके मुक्ति देने वालियां जौनसीयां हैं सो सारियांही नदियां और तीर्थ शालग्राम शिलाके जलमैं निवास कर्तेहैं ३ ॥ अंबरीषके प्रति भगवान् कहतेहैं हे अंबरीष हरिका स्नानावशेष जल जिसके उदरमें नित्य स्थितहै उनके घरमेमैं दासहोकररहताहुं ॥ ४ ॥

अंबरीषप्रणम्योच्चैः पादपांशुः प्रगृह्यतां गर्जं
तितावदन्यानितीर्थानिभुवनत्रयेयावन्नप्राप्य
तेतीर्थंशालिग्रामाभिषेकजं ५ जन्मप्रभृतिपा
पानांप्रायश्चित्तंयदीच्छसि शालग्रामशिलावा
रिपापहारिनिषेव्यतां ६ नृसिंहपुराणे गंगा
प्रयागगयपुष्करनैमिषारण्यपुण्यानियानिकुरु
जांगलयामुनानि कालेनतीर्थसलिलानिपुनं
तिकालेपादोदकंभगवतःप्रपुनातिसद्यः ७ ॥

हे राजन अंबरीष तूं भी प्रणाम कर्के उनके पादों की धूलि ग्रहण कर ओह वडी श्रेष्ट है और त्रिलोकी मे तीर्थ उतना हि काल गर्जन कर्तेहैं जितना काल शालग्राम शिलाके स्नान करणे वाला तीर्थरूप जल नहि प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥ हे अंबरीष जन्मतें लेकर पापोंके प्रायश्चित्तकी जेकर इच्छा करताहैं तो पापोंक दूरकरणेवाले शालग्रामशिलाके जलकासेवनकर ६ ॥ नृसिंहपुराणमे कहाहै गंगा प्रयाग गया पुष्कर नैमिषारण्य और जौनसें पवित्र कुरुजांगल यमुनाके किनारे के देशहैं सो काल कर्के पवित्र कर्तेहैं और तीर्थोंके जल ओहभी चिरकाल कर्के पवित्र कर्तेहैं जौनसा भगवान् जीके चरणों का जलहै सो शीघ्र पवित्र कर्ताहै ॥ ७ ॥

स्मृत्यंतरे: देहःशुद्ध्यतिवाह्योऽद्भिरंतरात्मोद कंहरेः नित्येनैमित्तिकेकाम्येपीत्वाभुक्त्वानदु ष्यति ॥ ८ ॥ विष्णुपादोदकंपीत्वाशालग्रा मशिलाभवं विशेषेणहरेत्पापंब्रह्महत्यादिकं नृणाम् ॥ ९ विष्णुरहस्ये विष्णुपादोदकंपीत्वा पश्चादशुभशंकया यआचामतिसंमोहाद्ब्रह्मह त्यांसविंदति॥ १० ॥बृहन्नारदीये ॥ तुलसीद लसंमिश्रंजलंसर्षपमात्रकं गंगायास्तुपुना त्येकंकुलानामेकविंशतिम् ॥ ११ ॥

स्मृत्यंतरमे लिखाहै किदेहजोहै सोवाहरसें जलकरके शुद्धहो ताहै और अंतरात्मा हरिके चरणोदककरके शुद्धहोताहै सो हरि का चरणामृत कैसाहै नित्यनैमित्तिक काम्यकर्मके आद औरभो जनके पीछे उसका पान करके पुरुष उच्छिष्ट नहिहोताहै ८॥ विष्णुकेपादोंका जल शालग्रामकी शिलासें उत्पन्न होएआ हुया विशेषकरके पुरुषोंके ब्रह्महत्यादि पापोंकों हर्ताहै ॥ ९ ॥ विष्णु रहस्यमे लिखाहै विष्णुके पादोंका जल पान करके पी छेसे अपवित्रता की शंका करके जो आचमन कर्ताहै अज्ञा नसें सो ब्रह्महत्या कों प्राप्तहोताहै १० बृहन्नारदीयमे कहाहै तुलसी दलके साथ मिला हुया श्रीगंगाजीका जल सरेयों के दाने तुल्य पान करा हुया इकीस कुलोंकों पवित्रकर्ताहै ॥ ११

क्रियायोगसारमेलि० ॥ ततःपादोदकंप्राज्ञोम
हाविष्णोःपरात्मनः समस्तपातकध्वंसिगृह्
णीयाद्भक्तिभावतः ॥ १२ ॥ कणमात्रंवहेद्य
स्तुविष्णुपादोदकंशुभं सस्नातःसर्वतीर्थेषुजै
मिनेसत्यमुच्यते ॥ १३ ॥ स्पृशेत्पादोदकंवि
ष्णोर्गंगास्नानफलंलभेत् गांगेयसलिलंविप्र
विष्णुपादोदकंयतः ॥ १४ ॥ पापव्याधिविना
शार्थंविष्णुपादोदकौषधं पापिनोऽपिनरस्तच्च
पिबंतुप्रतिवासरम् ॥ १५

क्रियायोगसारमैं लिखाहै तिसकारणसैं विष्णुके पादोंका जल सारेहीपापोंका नष्ट करने वाला भक्तिभावना सैं पुरुष ग्रहण करे ॥ १२ ॥ जोपुरुष विष्णुके पादोंका शुभ जल किणका मात्रभी धारण कर्ताहै हेजैमिने सोपुरुष सारे तीर्थोंमें न्हाया एहवात सत्य कथन करीहै ॥ १३ ॥ विष्णुके चरणोंका जल जो स्पर्श करेसो गंगाजिके स्नानका फल पावताहै क्यों कि जिसकारणसें हेविप्र गंगाजीकाभी जल विष्णुके हिपादोंका जलहै ॥ १४ ॥ पापरूपी व्याधिके विनाश वास्ते विष्णुके पादोंकाजलही औषधहै इसकारणसैंही प्रति दिन तिसका पापी पुरुष पान करे ॥ १५ ॥

अकालमरणंनास्तिनचसंसारजंभयं स्पृशतः
पादसलिलंकेशवस्यमहात्मनः ॥१६॥ विष्णु
पादोदकंशुद्धंतुलसीपत्रमिश्रितं योवहेच्छिर
सानित्यंतस्यपुण्यंवदाम्यहम् १७ ब्रह्महत्या
दिभिःपापैर्विमुक्तोविष्णुरूपधृक् अंतेविष्णु
पुरंगत्वाविष्णुनासहमोदते ॥१८॥ अनर्हंमम
नैवेद्यंपत्रंपुष्पंफलंजलं शालग्रामशिलास्पृ
ष्टंसर्वंयातिपवित्रताम् ॥१९॥ स्कांदे ॥ सुल
भंकिंनसेवतशालग्रामशिलाजलं यस्यस्प
र्शनमात्रेणपूतोभवतिमानवः॥ २० ॥

महात्मा केशव विष्णुजीके पादोंका जल स्पर्श करने वाले पुरुषकों अकाल मृत्यु नहिहोंताहै और संसारका भय नहिहोताहै ॥ १६ ॥ शुद्धनिर्मल जो विष्णुके पादों का जल तुलसी दलके साथमिला हुया तिसकों शिरकर्के जो धारणकर्ताहै तिसके पुण्यका माहात्म्यकहताहुं ॥ १७ ॥ सोब्रह्महत्यादिपापों सें निर्मुक्तहोआ हुआ विष्णुका रूपधारकर अंतमें विकुंठ लोकमे जाकर विष्णुके साथ सुख भोगताहै ॥१८ ॥ और अनर्ह क्या अयोग्य जो स्पर्शादि दोषोंकर्के पत्र पुष्प फल एह सभ शालग्रामकीशिलाकर्के स्पर्शकरेहोएपवित्रताकोंप्राप्त होंतेहैं ॥१९॥ स्कंदपुराणमेंकहाहै ॥ सुखालींवस्तु जो शालग्राम शिलाका जल तिसकों लोक क्यों नहि सेवता जिसके साथ स्पर्शमात्र कर्के मनुष्य पवित्र होजाताहै ॥ २० ॥

पिबंतियेनरानित्यंशालग्रामशिलाजलं पंच
गव्यसहस्रैस्तुप्राशितैःकिंप्रयोजनम् ॥ २१॥
शालग्रामशिलायत्रतत्तीर्थंयोजनत्रयम् तत्र
दानंचहोमश्चसर्वंकोटिगुणंभवेत् २२ ॥ शाल
ग्रामशिलातोयंयःपिबेद्बिंदुनासमं मातुःस्त
न्यंपिबेन्नैवसभवेन्मुक्तिभाङ्नरः २३ अत्रवि
शेषःविष्णुपादोदकंयस्तुकरेणपिवतेयदि समू
ढानरकंयातियावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ २४ ॥

जौनसे नित्यं प्रति शालग्रामकी शिलाकाजल पान कर्तेहैं ति
नोंकों हजारों वार पंचगव्य खाने कर्के क्या प्रयोजनहै ॥ २१
जिस स्थानमैं शालग्रामकी शिलाहै ओह स्थान तीन योजन
तक तीर्थ रूपहै उहां दान होम यज्ञादिकिये होए क्रोडगुणा
अधिक पुण्य वाले होतेहैं ॥२२ ॥ जो शालग्रामकी शिलाका
जल विंदुके समानभी पानकरे सो मुक्तिका भागी पुरुष माता
के स्तनपानकों नहि कर्ताहै ॥ २३ ॥ इसमे विशेषहै॥ वि
ष्णुकेपादोंका जल एक हाथ कर्के जो पानकर्ताहै सो मूढ
पुरुषनरककों जाताहै जितनाकाल चौदां इंद्रहैं ॥ २४ ॥

छिन्नस्तेनमहाभागगर्भवासःसुदारुणः पीतंये
नमहाविष्णोःशालग्रामशिलाजलम् २५ पा
दोदकेनदेवस्यहत्याकोटिंसमंततः शोधयंति
नसंदेहस्तथाशंखोदकेनच २६ स्कांदे प्रा
यश्चित्तेसमुत्पन्नेकिंदानैःकिमुपोषणैः चांद्राय
णैश्चकिंतीर्थैः पीत्वापादोदकंशुचिः २७॥ पा
द्मे क्रियायोगसारे॥ विष्णोः पादोदकंविप्रयः
पिबेद्वैष्णवोत्तमः पातकंतच्छरीरस्थंतत्क्षणा
देवनश्यति॥ २८॥

हेमहाभाग जिस पुरुषने महाविष्णुकी शालग्राम शिलाकास्ना न कराया हुया जल पान कराहै तिसने दारुण गर्भ बास होना काट दियाहै ॥ २५ ॥ और देवताके पादोदक कर्के चारो ओर सें हत्या कोटिकों शोधन कर्ताहै और इसीप्रकार शंखके जल कर्के शोधनकर्ताहै २६ स्कंदपुराणमे कहाहै प्रायश्चित्तके उत्पन्न होएहो दानोंकर्के और निराहार व्रतों कर्के चांद्रायणो कर्के और तीर्थ स्नानोंकर्के क्या प्रयोजनहै क्योंकि विष्णुका चरणामृतपान कर्के हीशुद्धहोजाताहै २७ पद्मपुराणके क्रियायोगसारमे लिखा है हे विप्र जो वैष्णवोत्तम विष्णुका पादोदक पान करे तिसके देहमे जितनेकपाप स्थितहैं सो सारेही तत्क्षणमे नष्ट होजातेहैं ॥ २८ ॥

यथौषधेनदेहस्थंहन्यतेदेहिनोविषं तथैवपा
तकंसर्वंविष्णुपादोदकंहरेत् २९ ॥ विष्णुपा
दोदकंस्पृष्ट्वातत्फलंप्राप्यतेजनैः सप्तद्वीपांम
हींदत्त्वाद्विजेभ्योयत्फलंलभेत् ३० ॥ तत्फलं
लभतेमर्त्योविष्णुपादोदकंस्पृशन् दीपिका
शतदानेनयत्पुण्यंपरिकीर्तितम् ३१ तस्माद
भ्यधिकंपुण्यंलभेत्पादोदकंस्पृशन् बहुनात्र
किमुक्तेनसंक्षेपादुच्यतेमया विष्णुपादोदक
स्पर्शान्मुक्तिमाप्नोतिमानवः ३२ भूयोभूयोपि
विप्रेंद्रसुदृढंकथ्यतेमया पुनर्नलभतेजन्मवि
ष्णुपादोदकंस्पृशन् ३३ ॥

जैसे देहिके देहमे स्थित जो विष सोह जैसे औषधी करकै दूर
होताहै इसीतरह देहिके सारे पापों कों विष्णुका चरणोद
कदूरकर्ताहै ॥ २९ ॥ और विष्णुके पादोदककों स्पर्श करकै
पुरुषोंकों सो फल प्राप्त होताहै जो सप्तद्वीपवाली पृथिवीदा
न करकै होताहै ॥ ३० ॥ विष्णुके पादोदककों स्पर्श कर्ते हो
ए सोपुण्य पुरुषोंकों प्रातहोताहै जोफल सौदीपिका दानकर
ने करकै होताहै परंतु तिससे अधिकपुण्य विष्णुके पादोदक
कों स्पर्शकर्तेहोताहै ॥ ३१ ॥ वहुत इसमे क्याकहनाहै संक्षेप
करकै एहवातकहीदीहै सोक्या वातहै कि विष्णुके पादजल
स्पर्श करनेसैं मानव मुक्तिकों प्राप्तहोताहै ॥ ३२ ॥ हेविप्रेंद्र वा
रंवार मैंने दृढनिश्चयवालीवातकहीदीहै क्याविष्णुके पादोद
ककों स्पर्श करकै फिरजन्मकों नहिलभताहै ॥ ३३ ॥

बृहन्नारदीयेसूतशौनकसंवादेसेतिहासंनारा
यणचरणोदकमाहात्म्यंवर्ण्यते ॥ संगात्स्नेहा
द्भयाल्लोभादज्ञानादपियोनरःविष्णोरुपासनां
कुर्यादक्षयंसुखमश्नुते १ हरिपादोदकंयस्तु
क्षणमात्रंतुधारयेत् सस्नातः सर्वतीर्थेषुहरेः
प्रियतरोभवेत् ॥ २ ॥ अकालमृत्युहरणंसर्व
व्याधिविनाशनं सर्वपापक्षयकरंविष्णोः पा
दोदकंशुभम् ॥ ३ ॥ अत्राप्युदाहरंतीममिति
हासंपुरातनं पठतांशृण्वतांचैवसर्वपापप्रणा
शनम् ॥ ४ ॥

बृहन्नारदीय पुराणमे सूतशौनक संवादमें इतिहासके सहित ना
रायणजीके चरणामृतका माहात्म्य वर्णन करीदाहै ॥ जौनसा
कोई पुरुष सत्संग वश करके और स्नेहसें वा किसीके भयसें
अथवा लोभसें वा विना जाने विष्णुकी उपासना करताहै सो
अक्षय सुखभोगताहै १ ॥ जो हरिके चरणोदककों क्षणमात्र
धारताहै सो सारेतीर्थोंमें स्नात हुया हुया हरिका प्यारा होता
है ॥ २ ॥ विष्णुके पादोंका जल पान करना अकाल मृत्यु
कों हरताहै सारियों व्याधियों का नाशकर्ताहै और सारे पा
पक्षयकर्ताहै ऐसा शुभ माहात्म्य वालाहै ॥ ३ ॥ अब इस च
रणोदक पानमें प्राचीन एककथानक कथन कर्ताहुं कैसाहै प
ढने सुनने वालेयोंके सारे पापक्षय करने वालाहै ॥ ४ ॥

सूतउवाच आसीत्पुराकलियुगेकलिकोनाम
लुब्धकः परदारपरद्रव्यहरणेसततंरतः ५ ॥
परनिंदापरोनित्यंजंतुपीडाकरस्तथा हतवा
न्ब्राह्मणान्गाश्चशतशोथसहस्रशः ६ देवस्व
हरणेनित्यंपरस्वहरणेरतः इत्युक्तःसततंवि
प्राःकीनाशानामधीश्वरः ७ कदाचित्पथिगग
च्छंतमुत्तंकमृषिपुंगवं द्रव्यापहरणंकृत्वाबंध
यामासयत्नतःतदोवाचमहातेजाःकलिकंसमु
निपुंगवः ८ अहोदुःखंमनुष्याणांममताकुलचे
तसां महापापानिकृत्वऽपिपरान्मुष्णंतियत्नतः९

सूतजी कथन करैं भये पूर्व एकसमय कलियुगमे कालिक नाम वाला एक वंधकी होता भया कैसाथा पराईयां स्त्रियां पराये द्रव्य के हरनेमैं सर्वदाकाल रतथा ॥ ५ ॥ और दूसरेकी निंदा करनी जीवोंकों मारना नित्यंप्रति और सैकैडेहजारांगौयां व्राह्मणोकों मारता भया ॥ ६ ॥ और देवता का द्रव्य नित्यं प्रति चुराय लेता पराया धन हरताथा हेविप्राः इस प्रकारका कथन कराहै सो कीनाशोंका अधिपति ॥ ७ ॥ किसी कालमे रस्तेपे जाते हुए श्रेष्ठ उत्तंकऋषिके द्रव्यकोलूट कर फेर यत्नसे तिसकों वांधता भया तद वडे तेज वाला सो उत्तंक ऋषि कलिककों कहताभया ॥ ८ ॥ वडा आश्चर्य है ममता करकैं व्याकुल चित्त वाले मनुष्यों कों वडा कष्टहै जो वडे पाप करकैं दूसरोंकों यत्नसे हरतेंहैं ॥ ९ ॥

अर्जितंतुधनंसर्वंभुंजतेवांधवाःसदास्वयमेकत
मोमूढस्तत्पापफलमश्नुते १० इतिब्रुवाणंतमृ
षिंविमुच्यभयविह्वलः कालिकः प्राहसहसा
क्षमस्वेतिपुनःपुनः ॥ ११ ॥ तत्संगस्यप्रभावे
णहरिसंनिधिमात्रतः गतपापोलुब्धकश्चसोऽ
नुतापीदमब्रवीत् ॥ १२ मयाकृतानिपापानि
महांतिसुवहूनिच तानिसर्वाणिनष्टानिविप्रेंद्र
तवदर्शनात् ॥ १३ ॥

इकठे करे होए धनकों सारेही वांधव सर्वदा काल भोगतेहैं
और आप इकलाहीमूढ पुरुष तिस पापकें फलकोंभोगताहै
१० ॥ इस प्रकार कहतेंहोए तिस ऋषिकोंत्याग करकें भयकर
व्याकुल कालिक वारं वार ऐसे कहता भया क्षमा करो ११ ॥
तिसके संगके प्रभाव करकें और हरिकी संनिधिमात्रसें दूर हो
गए पापजिसके ऐसालुब्धक पश्चात्ताप कर युक्त एह वाक्यक
हताभया ॥ १२ ॥ क्या वाक्यहै सो कहनें लगा हेविप्रेंद्र मैंने
वडे २ वहुत पाप करेहैं परंतु सो सभी तुमारे दर्शनसें नष्ट
हो गए हैं ॥ १३ ॥

अहंवैपापधीर्नित्यंमहापापंसमाचरं कथंमेनि
ष्कृतिर्भूयात्कंयामिशरणंविभो ॥ १४ ॥ पूर्व
जन्मार्जितैःपापैर्लुब्धकत्वमवाप्तवान् अत्रा
पिपापजालानिकृत्वाकांगतिमाप्नुयाम् ॥ १५
अहोममायुः क्षयमेतिशश्वत्पापानियानिसमु
पार्जितानि प्रतिक्रियानैवकृताकदाचिद्गतिश्च
कास्यान्ममजन्मकिंवा १६ अहोविधिःपापरेते
कुलेमांकिंसृष्टवान्दाररतं तुमह्यांकथंनतत्पाप
फलंचभोक्ष्ये कियत्सुजन्मस्वहमुग्रकर्मा १७

निश्चय कर पाप वुद्धिवाला नित्यं प्रति वडे पाप कर्ता भया हे विभो कैसें मेरी पापों सें मुक्ति होवेगी और किसकी शरण कों प्राप्त होआं ॥ १४ ॥ पिछले जन्मके इकठे करे होए पापों करकें लुब्धक जन्म को प्राप्त होता भया अब इहां भी पापोंकें समूह करे हैं आगे किस गतिकों प्राप्त हो आंगा ॥ १५ ॥ अहो क्या वडे आश्चर्य की वातहै आयुमेरी क्षयहोतीहै निरंतरमैनें सर्वदाकाल पापहीइकठेकरेहैं पर उनकीप्रतिक्रिया क्याहटाने का कुछ उपाय नहिकरा नजानेमेरीक्या गति होनीहै और क्या जन्म होनाहै ॥ १६ ॥ वडेखेदकी वातहै ब्रह्माजो है सोमेरेकों पापी कुलमे क्यों उत्पन्न कर्ता भया और सो दाररत मैं उग्रकर्म करने वाला कितने जन्मों मैं उन पापोंकाफल भोगांगा १७ ॥

एवंविनिंदन्नात्मानमात्मनालुब्धकस्तदा संत
तापाग्निसंतप्तः सद्यःपंचत्वमागतः ॥ १८ ॥
उत्तंकः पतितंप्रेक्ष्यलुब्धकंतदयापरः ॥ विष्णु
पादोदकेनैवमभ्यषिंचन्महामतिः ॥ १९ ॥ ह
रिपादोदकस्पर्शाल्लुब्धकोवीतकल्मषः दिव्यं
विमानमारुह्यमुनिमेतदथाब्रवीत् ॥ २० कलि
कउवाच उत्तंकमुनिशार्दूलगुरुस्त्वंममसुव्रत
विमुक्तस्त्वत्प्रसादेनमहापातकसंकटात् ॥ २१
ज्ञानंतउपदेशान्मेसंजातंमुनिसत्तम तेनमेपा
पजालानिविनष्टान्यतिवेगतः ॥ २२ ॥

इसप्रकार तिस समय लोभीपुरुष अपने करके आत्माकी निं
दा कर्ताहुया अंदरके संतापकी अग्निकर तपया हुया शीघ्र पं
चत्व भावकों प्राप्त होगया अर्थात् मृत होगया ॥ १८ ॥ तद
नंतर होकर डिगेहोए लुब्धककों देखकर दया युक्त होएआ हु
या सो महामति उत्तंग तिसकों विष्णु के चरणामृत करकें सिं
चन कर्ता भया ॥ १९ ॥ तो हरिके चरणोदक स्पर्श होनेसें
दूर होगएहें पाप जिसके ऐसा लुब्धक दिव्य विमानके ऊपर
वैठके मुनिकों एह वाक्य कहता भया ॥ २० ॥ कलिक कह
ने लगा हे उत्तंक हे मुनियोंमें श्रेष्ठ तूंमेरा गुरुहैं हेश्रेष्ठ व्रत वा
ले तेरी कृपासें महापापोंके कष्टसें मुक्त होगयाहां ॥ २१ ॥
और हे मुनिसत्तम तेरे उपदेशसें मेरेकों ज्ञानउत्पन्न होएआहे
तिस करकें मेरे पापोंके समह वडे वेगसें नष्ट होगएहैं ॥ २२ ॥

हरिपादोदकंयस्मान्मयित्वंसिक्तवान्मुने प्रा
पितोस्मित्वयातस्मात्तद्विष्णोः परमंपदम् २३
धन्योहंकृतकृत्योऽस्मिगुरुस्त्वंममसुव्रत तस्मा
न्नतोस्मित्वाविद्वन्यत्कृतंतत्क्षमस्वमे ॥ २४ ॥
सूतउवाच इत्युक्त्वादेवकुसुमैर्मुनिश्रेष्ठमवा
किरत् प्रदक्षिणत्रयंकृत्वानमस्कारंचका
रसः ॥ २५ ॥

हेमुने जिस कारणसें मेरेमैं हरिके चरणों का जल तुसी सिंच
न कर्तेभये तिस कारणसें ही हरिके परम पदकों प्राप्त कराहां
॥ २३ ॥ हे सुव्रत तैंने मेरेकों कृतकृत्य कराहै मेरा गुरुहैं हे
विद्वन् तिस कारणसें तुमारेकों नमस्कार कर्ताहां और जो कु
छ मैंने अछा वुरा कराहै सो मेरेकों क्षमा करो ॥ २४ ॥ सूत
जी कहते हैं हे ऋषियो सो लुब्धक कलिक स्वर्गके पुष्पों
कर्के मुनि श्रेष्टके ऊपर वर्षा कर्ता भया औंर तीन प्रदक्षिणा
कर्के फिर नमस्कार कर्ताभया ॥ २५ ॥

ततोविमानमारुह्यसर्वकामसमन्वितं अप्सरो
गणसंकीर्णंप्रपेदेहरिमंदिरम् ॥ २६ ॥ एत
दृष्ट्वाविस्मितोऽभूदुत्तंकस्तपसांनिधिः शि
रस्यंजलिमाधायह्यस्तौषीत्कमलापतिम् २७
तेनस्तुतोमहाविष्णुर्दत्तवान्वरमुत्तमम् ॥ वरे
णतेनोत्तंकोऽपिप्रपेदेपरमंपदम् ॥ २८ इति
हरिपादोदकमाहात्म्यवर्णनम्

तिस सें उपरंत सम्पूर्ण कामनां कर्के भरा हुया जो विमान ति
स पर वैठके अप्सरांगण गंधर्वों कर्के संयुक्त हरिके मंदिर मैं
प्राप्तहोजाता भया ॥ २६ ॥ तो इसतरौंका आश्चर्य देखके वि
स्मय युक्त होएआ हुया तपोंका निधि सो उत्तंक शिरमैं अं
जलि वांधकर क्या हाथ जोडकर कमला पति भगवान् जी
की स्तुति कर्ता भया ॥ २७ ॥ तद तिस कर्के स्तुत कर्के होए
महाविष्णु तिसकों श्रेष्टवर देतेभये जिसवरकर्के उत्तंक भी पर
म पदकों प्राप्तहोजाता भया ॥ २८ ॥ एह हरिचरणोदक
माहात्म्य वर्णन समाप्त भया

भक्तमालायांचरणोदकमाहात्म्यंसेतिहासमा
ह ॥ अथश्रीरंगभक्तेस्तुमाहात्म्यंकथयाम्यह
म् पुष्करात्पश्चिमेग्रामोधौसानाम्नेतिविश्रुतः
॥ १ ॥ तत्रश्रीरंगनामासीद्वैश्योजैनपथेस्थि
तः ॥ तस्यदासेमृतेयातोयमदूतःसएकदा ॥
२ ॥ वणिग्द्वारिसमागत्यदर्शयित्वात्मनोव
पुः उवाचवणिजंपापाद्यमदूतोभवंवणिक् ॥ ३
हरिभक्तिंविनासर्वेसदानरकभाजिनः इदानीं
पश्यप्रत्यक्षेयोऽसौवैश्यवृषोमहान् ॥ ४ ॥

अब भक्त मालामें चरणोदक का माहात्म्य इतिहासके सहित वर्णन करते हैं ॥ अब श्रीरंगकी भक्तिके माहात्म्य कों कहताहुं पुष्करतीर्थके पश्चिम पासें धौसा नामक एक ग्रामहै १ ॥ तिसमें श्रीरंगनाम करकें जैनोंके मत में स्थित वाणियां था तिसके दासके मृतहोगए होए एकदिन यमदूत ॥ २ ॥ वाणियेंके द्वारेमें आकरतिसकों अपनादेह दिखायके वाणिएं कों कहताभयाकि मैं वाणिआं पापसें यमदूत होताभया ३ हे वाणिआं हरिकी भक्तिविना सारेही सर्वदाकाल नरकोंकेभागी हैं हेवैश्य अब प्रत्यक्ष दृष्टांतदेखलै जौनसा एह वडा वैलहै ४

तस्यशृंगेगतश्चाहंस्वर्णकारमिमंपुनः॥ परदार
रतंदुष्टंहत्वानेष्येयमालयम् ॥ ५ इत्युक्तांत
र्दधेदूतस्तत्कालेतत्रसंस्थितं स्वर्णकारंसतुवृषः
शृंगाभ्यांनिजघानह ॥ ६ ॥ इतिदृष्ट्वामहाश्चर्यं
श्रीरंगः स्वमतंतदा त्यक्ताकस्यापिशिष्योऽभू
द्वैष्णवस्यातिभक्तितः ॥ ७ ॥ हरिपूजारतोनि
त्यंहरिनामपरायणः ददावन्नंचपानीयंक्षुत्पिपा
सातुरायसः ॥ ८ ॥ स्वर्णकारस्तुदूतेनहत्वा
नीतोयमालयं पुनरागत्यस्वग्रामेजातःप्रेतो
तिहिंसकः॥ ९

तिस वैलके शृंगमै प्राप्त होएआ हुय, मैं इस परस्त्री गमन क
रने वाले दुष्ट सुनेयारे कों मारके यम पुरीकों लेजावोंगा ५ ॥
ऐसें कह करकें दूत उहां छपगया उसीसमय तहां वैठेहोए सु
नेयारकों सोवैल अपने शृंगां करकें मारदेताभया ॥ ६ ॥ इस
महाश्चर्यकों देखके श्रीरंग उसी समय अपने मतकों त्याग क
र किसी वैष्णव का शिष्य भक्ति पूर्वक होता भया ७ हरिकी
पूजा करनेमैं युक्त होगया और हरिके नाम जपने मैं तत्पर र
हने लगा औरभूखेंप्यासेयांकों अन्नपाणि देनेलगा और अनेक
तरोंके श्रेष्टकर्म करने लगा ॥८ और सो जो स्वर्णकार धर्मरा
जा की पुरीमैं प्राप्त करा उहां पापफल भोगने के वास्ते
अपने ही नगरमैं आके वडीहिंसाकरनें वाला प्रेत हुया ॥९ ॥

वहून्संतापयामासहरिभक्तिविवर्जितान् एक
दास्वर्णकारःसः प्रेतः स्वतनयंरुषा १० दर्श
यामासचात्मानंततोभीतस्ततत्सुतः नकिंचि
न्मन्यतेसाधुःस्मरंस्तंप्रेतमुल्कचम् ॥ ११ प्रत्य
हंचिंतयामासराजन्शुष्कोवभूवसः एकदानि
शितंपुत्रंहंतुंसपुनरागतः ॥ १२ ॥ ततउत्था
यतत्पत्नीप्रार्थयंतीसमागता किमर्थंहंसिभोपु
त्रंवदाभीष्टंकरोमितत् ॥ १३ ॥

तो क्या करने लगा जौनसें हरिकीभक्तिसें रहित हैं ति
नकों वडा संताप दुःख क्लेश देता भया एक दिन सो
इस्वर्णकार क्रोध कर्कें अपने पुत्रकों अपना प्रेतका
रूप दिखावता भया तिससें सो पुत्र भयभीत होगया
॥ १० ॥ तद तिस उल्कच प्रेत कों स्मरण कर्ता हुयाम
नमैं कुछ तिसकों अछा नहि लगता भयातो प्रतिदिन चिंता
कर्ता हुया सो सूक गया चेष्टा दूरहो गई एक दिन ओह
प्रेत पुत्रको मारने वास्ते रातकों आया ११ ॥ तो पुत्र उसका
भयसें करलाया उसका शब्द सुन उसकी माता उस प्रेतकी
स्त्री प्रार्थना कर्ती होई चली आई तिसकों कहनें लगी किस
वास्ते पुत्रकोंमारताहैं जो तेरीइच्छाहै सो कहो मैं करूंगी। १२

इतिश्रुत्वावचस्तस्याः पत्न्याः संपश्यतोहरः
प्रेतःप्रोवाचयेनस्यात्सद्गतिस्तत्कुरुष्वभोः १४
इतिश्रुत्वातुसाप्राहकथंतेसद्गतिर्भवेत् तदाहप्रे
तोहंत्वस्यशरीरेप्राविशाम्यथ १५ त्वंतुश्रीरंग
पूजायाभगवच्चरणामृतं आनीयदेहिमेशीघ्रंत
दास्वर्गंव्रजाम्यहम् १६ इत्युक्तासाकरोत्सर्वं
तदासप्रेतबंधनात् मुक्तोवभूवतत्पुत्रः स्वस्थो
जातस्तदैवहि १७

इह वाक्य पत्नीका श्रवण कर पश्यतो हर जो स्वर्णकार प्रेत कहनेलगा जिसकर्के मेरी सद्गति होवे ऐसाकर १४ इहवचन प्रेतकासुनकर सो कहनेलगी किसतरां तेरी सद्गति होवेगी सो कथनकर तदप्रेत कहनेलगा मैं तो इसवालकके देहमै प्रवेश कर्ता हुं १५ तूं श्रीरंगकी पूजासें भगवान्‌जीकाचरणामृत ल्या कर मेरेकोंदे तदशीघ्र स्वर्गकों चलाजाताहुं १६ इस प्रकारक थनकरी होई उसीतरांसें सभी कुछ कर्ती भई तद सो प्रेतयोनी केबंधनसें मुक्त होताभया और पुत्र उसका उसी कालमें राजी प्रसन्न होजाता भया १७

एवंश्रीरंगभक्तेश्चमाहात्म्यंकथितंमया यः
शृणोतिनरोभक्तयालभतेभक्तिमुत्तमाम् १८
इतिशालग्रामशिलोदकमाहात्म्येश्रीरं
गचरितंसमाप्तम् ॥

इस प्रकार श्रीरंगकी भक्तिका माहात्म्य मैंने कथन कराहै जो इस कथाकों भक्ति कर्के सुनताहै सोभी उत्तमभक्तिकों लभताहै १८ इति श्रीभक्तिमाहात्म्ये भगवच्चरणामृतमहिमवर्णनम् ॥

अथकेशवार्चनेपुष्पमाहात्म्यं तत्रहारीतः तुल
स्यौपंकजेजात्यौकेतक्यौकरवीरकौ शस्तानि
दशपुष्पाणितथारक्तोत्पलानिच १ स्कांदे ॥अ
पराधसहस्राणिह्यपराधशतानिच कमलैकेनदे
वेशयोर्चयेत्कमलापतिम् २ वर्षायुतसहस्रस्य
पापस्यकुरुतेक्षयं पत्रैणैकेनकेतक्याःपूजितोग
रुडध्वजःसहस्रमब्दंसंप्रीतोभवेच्चमधुसूदनः३
सुवर्णकेतकीपुष्पंयोददातिजनार्दने कोटिज
न्मार्जितंपापंदह्यतेगरुडध्वजः ॥ ४ ॥

अब विष्णुकी पूजामें पुष्पचढानेका माहात्म्य लिखतेहैं तिसमें हारीतका वाक्यहै विल्वपत्री तुलसी पंकज कमल मालतीचंवेली केतकी करीर एह दशतरहके पुष्पश्रेष्टहैं और लालरंगके कमलभी श्रेष्टहैं १ स्कंद पुराणमें कहाहै अपराधोंके हजारां और अपराधोंके सैंकडे दूर होतेहैं उसके जो देवतयोंके स्वामी कमला पतिका एक कमलके साथ पूजन कर्ताहै २ और केतकीके एक पत्र कर्के पूजा करेहोंए गरुडध्वजजी दशहजार वर्षके पापोंका क्षय कर्तेहैं ३ और हजार वर्ष प्रसन्न रहतेहैं और सोनेका केतकी पत्र वनाके जो जनार्दनजीकों चढाताहै तिसके क्रोडजन्मके पाप गरुडध्वजजी नष्ट कर्तेहैं ॥ ४ ॥

पुनस्तत्रैव ॥ येर्चयंतिजगन्नाथंकरवीरैःसिता
सितैःचतुर्युगाणिदेवेंद्रःप्रीतोभवतिकेशवः५पा
द्मे मंजरींसहकारस्यकेशवोपरिनारदयेर्पयंति
महाभागागोकोटिफलभागिनः ६ कदंवपुष्प
गंधेनकेशवार्चासुवासिताकोटिजन्मार्जितंपापं
निर्हंतिनिश्चितंमुने ७ पद्मान्यंवुसमुत्थानिर
क्तनालोत्पलेतथा सितोत्पलंचकृष्णस्यदयिता
निसदानृप ॥ ८ ॥

फिर और उसीमैं लिखाहै ॥ जो पुरुष श्वेतरंगके जांश्याम रंगके करीरपुष्पों कर्के जगन्नाथजीकों पूजतेहैं तिनके ऊपरकेश वजी चार युग प्रसन्न रहतेहैं ५ पद्मपुराणमे लिखाहै ॥ हेनारद आम्र वृक्षके पुष्पोंकी मंजरी जौनसें वडेभगवान् केशवजीके ऊपर चढातेहैं सो क्रोडगौयांदान करनेके फलभागी होतेहैं ६ और कदंवके पुष्पोंकी सुगंधि कर्के भगवान्की प्रतिमा सुगंधि वाली करीहै हे मुने तिनके कोटि जन्मोंमैं इकठे करे होए पापोंकों भगवान् दूरकर्तेहैं ७ और जलमैं उत्पन्न होएहोए जो कमल और लाल पत्रों वाले कमल नीले कमल और श्वेत कमल सर्वदा काल कृष्णजीकों प्यारेहैं ॥ ८ ॥

योऽर्चयेत्केतकीपुष्पैः कृष्णंकलिमलापहं पुष्पे
पुष्पेऽश्वमेधस्यफलमिच्छातिभूमिप ॥९॥ स्व
यमाहृत्यपुष्पाणिभिक्षाशीकेशवार्चने यःकरो
तिसराजेंद्रवंशानामुद्धरेच्छतम् ॥१०॥ वृहन्ना
रदीये॥ मनोहरैश्चगंधैश्चपुष्पैश्चापिमनोहरैः
अभ्यर्च्यविष्णुमीशंवा तत्तत्सारूप्यतांव्रजेत्
॥ ११ ॥ पद्मपुराणे पद्मपुष्पेणयोविष्णुंशिवंवा
र्चतिमानवः सयातिविष्णुभवनंकुलत्रयसम
न्वितः ॥ १२ ॥

जो पुरुष कलियुग की मलकों दूर करनेवाले भगवान् जी का केतकीके पुष्पोंकर्कै पूजन करेगा हे भूमिप सो एक २ पुष्पमैं अश्वमेधके फलकी इच्छाकर्ताहै ॥९ ॥ औरजो भिक्षामांगने वाला आप पुष्पोंकों उत्तारकर केशवजीकी पूजा करताहै सो हेराजेंद्र वंशोंके सौकों उद्धारकर्ताहै ॥१०॥ वृहन्नारदीय मैं लिखाहै मनकों हरने वाली सुगंधि कर्कै और मनकों हरनें वाले पुष्पोंकर्कै विष्णुजी अथवा शिवजी कों पूजन कर्कै उनकी २ सारूप्यताकों प्राप्तहोवेगा ॥ ११ ॥ पद्मपुराणमैं लिखा है ॥ पद्मके पुष्प कर्कै जो विष्णुकों पूजताहै औरशिवजीकों सो तीनकुलोंके सहित विष्णुलोक वैकुंठमैं जाताहै ॥ १२ ॥

हरिंचकेतकीपुष्पैःशिवंधत्तूरकैस्तथा सर्वपाप विनिर्मुक्तोवसेद्विष्णुपुरेयुगम् ॥१३॥ हरिंचच म्पकैः पुष्पैरर्कपुष्पैश्चशंकरं समभ्यर्च्यमहा भागतत्तत्सालोकतांव्रजेत्॥ १४ ॥ जातीपुष्पैः शिवंपूज्यवंधूककुसमैर्हरिम् सर्वपापविनिर्मु क्तोमेरुमूर्न्धियुगंवसेत् ॥ १५ ॥ मालतीकुसमै र्विष्णुंरुद्रंपुष्पैर्मनोहरैः शमीपुष्पैश्चराजेंद्रस र्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ १६ ॥

और केतकीके पुष्पोंकर्के जो हरिकों पूजतेहै और धतूरेके पुष्पों कर्के शिवजी को पूजतेहै सोसम्पूर्ण पापोंसें मुक्त होए हुए एक युग पर्यंत विष्णु लोकमें वसतेहैं ॥ १३ ॥ हरि विष्णुजी कों चंवे के पुष्पों कर्के और शंकर महादेव जीकों अर्कके पुष्पोंकर्के पूजनकर वडे भाग्य युक्त पुरुष उनकी सारूप्यताकों प्राप्त होताहै ॥ १४ ॥ चंवेलीके पुष्पों कर्के शिवजीकी पूजा कर वंधूक दुडुंज वा गुलदुपहरके पुष्पों कर्के हरिकी पूजाकर संम्पूर्ण पापोंसें निर्मुक्त होएआ हुया एक युग पर्यंत मेरुकें मस्तक पर निवास करेगा ॥ १५ ॥ और मालती कें पुष्पोंकर्के विष्णुकी पूजा कर मनकों हरने वाले पुष्पों कर्के रुद्रजी का पूजन कर अथवा शमी जंडीकें पुष्पों कर्के पूजा कर सम्पूर्ण कामना कों प्राप्त होवेगा ॥ १६ ॥

पाद्मेकार्तिकमाहात्म्ये पद्मैःपद्मालयाभर्त्ताह्यर्चितः पुंडरीकदृक् ददातिवैष्णवसुतान्भक्तिमव्यभिचारिणीं १७स्कांदे अपर्युषितनिश्छिद्रैः पुष्पैर्जंतुविवर्जितैःहयमारोद्भवैर्नित्यंपूजयेन्मधुसूदनं १८ मल्लिकाकुसुमंजातीकुसुमंचविशिष्यते जातीपुष्पसहस्रस्ययोमालांसंप्रयच्छति वैष्णवोपिभवेद्भक्तथातस्यपुण्यफलंशृणु १९ कल्पकोटिसहस्राणि कल्पकोटिशतानिच वसेद्विष्णुपुरेविप्रकृष्णतुल्यपराक्रमः ॥ २० ॥

पद्मपुराणके कार्तिक माहात्म्य मैं कहाहै और कमलके पुष्पों करकैं लक्ष्मीका स्वामी कमलोंकी दृष्टि वाला पूजन कराहुया वैष्णव भक्ति कर युक्त पुत्र देताहै और अनिश्चल भक्ति देताहै ॥ १७ ॥ स्कंदपुराणमैं लिखाहै पूर्व दिनके वासे पुष्प नहो वें और छिद्र नहि तिनमैं होवें और कीट छोटे जीवना होवें ऐसे हयमार गंडीरेके पुष्पों करकैं मधुसूदन जीकों पूजनकरे ॥ १८ ॥ और सभनों पुष्पोंमैं मालती और चमेलीइनके पुष्प वडे श्रेष्टहैं जो पुरुष चंवेली के हजार पुष्पोंकीं माला विष्णुजीकों चढावताहै तिसके पुण्य का फल मेरेसें सुन ॥ १९॥ क्या जो ऐसी माला चढावताहै सो कल्पोंके हजारों सैकडे कोडों वर्ष विष्णुके तुल्यपराक्रम वाला वैकुंठमैं निवास कर्ताहै ॥ २०॥

वर्णानांतुयथाविप्रस्तीर्थानांजाह्नवीयथा सुरा
णांतुयथाविष्णुः पुष्पाणांमालतीतथा ॥ २१ ॥
मालत्यादिवनेष्वेवंयोर्चयेद्गरुडध्वजं जन्मदुः
खजरारोगैर्मुक्तोमुक्तिमवाप्नुयात् २२॥ केतक्यु
द्भूतकुसुमैःपूजयेद्गरुडध्वजं समासहस्रंसुप्री
तोजायतेमधुसूदनः॥ २३ ॥ मल्लिकाकुसुमैर्दे
वंवसंतेगरुडध्वजं योर्चयेत्परयाभक्त्यासया
तिपरमांगतिम् ॥ २४ ॥

चारवर्णोंमें श्रेष्ठ जैसें ब्राह्मणहै और तीर्थोंमें गंगाजी जैसें श्रेष्ठ है और देवतोंमें विष्णुजी जैसें श्रेष्ठहैं इसीतरांसें पुष्पोंमें मालती श्रेष्ठहै ॥ २१ ॥ जोकोई पुरुष मालतीसें आद लेकर फूलोंकी बाडियोंमें गरुडध्वज भगवान् जीका पूजन कर्ताहै सो जन्मदुःख वृद्धावस्था व्याधियां रोग इनोंकर मुक्त होएआहुया मुक्तिकों प्राप्त होताहै ॥ २२॥ केतकीके उत्पन्न होएहुए पुष्पों करके जो गरुडध्वज जीकों पूजताहै तिसपर मधुसूदन भगवान् जी हजारवर्ष प्रसन्न रहते हैं ॥ २३ ॥ और पुरुषवसंत ऋतुमें गरुडध्वज भगवानूजी कों मालतीके पुष्पों कर पूजताहै परम भक्तिके साथ सो परम गति कों प्राप्त होताहै ॥ २४ ॥

सुगंधैर्मल्लिकापुष्पैरर्चयित्वानरोत्तमम् सर्व
पापविनिर्मुक्तोविष्णुलोकेमहीयते ॥ २५ ॥ यः
पुनः पावनैः पुष्पैर्वसंतेगरुडध्वजं अर्चयेत्पर
याभक्त्यासयातिपरमंपदम् ॥ २६ ॥ योवि
ष्णुंचवलापुष्पैःपूजयेत्पापनाशनं सपूतः
परमंस्थानं वैष्णवंव्रजतेध्रुवम् ॥ २७ ॥ अ
गस्त्यकुसुमैर्देवंयेर्चयतिजनार्दनं एतेषांदर्शना
देवनरकाग्निःप्रशाम्यति ॥ २८ ॥ नतत्करो
तिविप्रेंद्रतपसातोषितोहरिः यत्करोतिहृषीके
शोमुनिपुष्पैरलंकृतः ॥ २९ ॥ ??

और सुगंधिवाले मालतीके पुष्पोंकर्के नरोत्तमजी कों पूजनक
के सारेपापोसें रहित होएआ हुया विष्णुलोक मैं महिमा कों प्रा
प्त होता है ॥ २५ ॥ और जोकाई वसंतऋतु मै पवित्र पुष्पों
के साथ परम भक्ति कर्के पूजन कर्ताहैं सो परमपदकों प्राप्तहो
ताहै ॥ २६ ॥ और जोकोई पुरुष पापोंके नाशकरने वाले वि
ष्णुकों वलाके पुष्पों कर्के पूजनकर्ताहे सोपवित्रहुया २ परम
श्रेष्ट जो वैष्णव स्थान तिनकों प्राप्त होताहै निश्चय कर्के ॥२७॥
अगस्त्यके पुष्पों कर्के जो जनार्दन भगवान्‌जीका पूजन कर्ता
है तिसके दर्शन मात्र सें नरकोंकी अग्नि शमन होतीहै ॥ २८ ॥
हेविप्रेंद्र तपकर्के प्रसन्न करे होए हरिनारायण ऐसा कामनहिं
कर्ते हैंन क्या ऐसाफल नाहि देते हैंन जोफल मुनि अगस्त्य के
पुष्पों कर्के पूजाकरे होए फल सिद्ध कर्ते हैंन ॥ २९ ॥ !

मुनिपुष्पार्चनंविष्णोः कार्तिकेपुरुषोत्तम ददा
त्यभीप्सितंकामंशशिसूर्यग्रहोयथा॥३०॥ब
कुलाशोककुसुमैर्येर्चयंतिजगत्पतिं अशोका
स्तेभवंतीहयावत्सोमदिवाकरौ॥३१॥गंधा
ढ्यैर्विविधैर्वन्यैःकुसुमैःश्वेतकोमलैः शक्त्याभ्य
र्च्यहृषीकेशंश्वेतद्वीपेवसेन्नरः ॥३२॥ शुभ्रा
शुभ्रैर्महागंधैःकुसुमैःपंकजैस्तथा अधोक्षजं
समभ्यर्च्यनरोयातिहरेःपदम्॥३३॥

हेपुरुषोत्तम कार्तिक महीने मैं जोकोई पुरुष आगस्त्य पुष्पों
करकें विष्णुका पूजन कर्तेहैं तिनकों वांछित कामना देतेहै जै
सें सूर्य चंद्रमाका ग्रहण देताहै॥३०॥ बकुल अशोकके पु
ष्पों करकें जो जगत्स्वामी का पूजन कर्तेहैं सो इसलोकमैं अ
शोक होतेहैं जितना काल सूर्य चंद्रमा है॥३१॥ और गं
ध करकें युक्त अनेक तरोंके वनके श्वेत कोमल पुष्प करकें यथा
शक्ति हृषीकेशका पूजन कर पुरुष श्वेतद्वीपमैं निवास कर्ताहै
॥३२॥ और श्वेतरंग केवा और किसी रंगके बहुत सुगं
धिवाले पुष्पों करकें अथवा कमलों करकें अधोक्षज भगवान्
जीका पूजनकर पुरुष हरिके पदकों जाताहै ॥३३॥

अभ्यर्च्यकुंदपुष्पैश्चकेशवंकल्मषापहं प्रयाति
भुवनंविष्णोः सिद्धचारणसेवितम् ॥ ३४ अ
शोककुसुमैरम्यैर्जनशोकभयापहं पूजयित्वा
हरिंविष्णोः पदंयातिसनातनम् ३५ तिलक
स्योज्ज्वलैरम्यैःपुष्पैःसंपूज्यकेशवं धूतपापो
निरातंकः कृष्णस्यानुचरोभवेत् ॥ ३६ ॥
मंजरींसहकारस्यकेशवोपरिनारद प्रयच्छति
नरःसत्रकोटिपुण्यफलंलभेत् ॥ ३७ ॥ पुष्पेषु
सुमहत्पुण्यंकोमलेषुचनारद ॥ तुलसीदलसं
श्लिष्टंपवित्रंकेशवार्चने ॥ ३८ ॥

और कुंदके पुष्पों करके पापोंके नाश करने वाले केशवजी
कों पूजन कर सिद्धचारणों करके युक्त जो लोकहै विष्णुभवन
तिसकों जाताहै ॥ ३४ ॥ और लोकों के शोक मोहभय इनके
दूर करने वाले देवता हरिकों रमणीक अशोक पुष्पों करकेंपू
जनकर सनातन विष्णुके लोकमैं जाताहै ॥ ३५ ॥ केशवजी
कों रमणीक तिलक वृक्ष के उज्वल पुष्पों करके पूजन कर धू
तपाप क्याहैं धोते गए पाप जिसके ऐसा दुःखोंसे रहित हो
एआ हुया श्रीकृष्ण जीका अनुचर होताहै ॥३६ ॥ हेनारद आ
म्र वृक्षकी मंजरी जोकोई केशव जीके ऊपर चढाताहै सोक्रो
ड यज्ञकरनेंके पुण्यका जो फल तिसकों लभताहै ॥ ३७ ॥ हे
नारद नारायणजीकें ऊपर कोमल पुष्प चढानेका तों वहुतही
पुण्यहै परंतु तुलसी दलके साथ मिला हुया केशवजीकी पू
जामैं वडा पवित्रहै ॥ ३८ ॥

अगस्त्यकुसुमैर्देवंयर्चयंतिजनार्दनं तेषांतद्दर्शं
नादेवनरकाग्निःप्रशाम्यति ३९ ॥ नतत्करोति
विप्रेंद्रतपसातोषितोहरिः यत्करोतिहृषीकेशो
मुनिपुष्पैरलंकृतः ४० ॥ विहायसर्वपुष्पाणिमु
निपुष्पेणकेशवं कार्तिकेयोर्चयेद्भक्त्यावाजिपे
यफलंलभेत् ४१ ॥ मुनिपुष्पकृतांमालांयःप्र
यच्छतिकेशवे देवादयोपिभक्तिंचकुर्वंतेतस्यशं
कया ४२ ॥

जोपुरुष देवता जनार्दन जीकों अगस्त्यमुनिकेपुष्पों करकेपूजन
कर्तेहैं तिनके दर्शनमेसें सोजोपाप रूप नरकाग्निहै सोशमनहो
तीहै ॥ ३९ ॥ हेविप्रेंद्रतपकर्के प्रसन्न करेहोए हरिसो फलनहि
देतेहैं क्या देतेहैंजो फल अगस्त पुष्पोंके साथ अलंकृत क्या
शृंगार करे होए देतेहैं ४० सारेतरांके पुष्प त्यागकर कार्तिकम
हीनेमैं मुनिअगस्त पुष्पोंकेसाथजो पूजनकर्ताहै केशवभगवान्
जीका सो वाजिमेध यज्ञके फलकों लभताहै ॥ ४१ ॥ औरजो
कोई पुरुष मुनि अगस्त पुष्पोंकी बनीहोईमाला केशवजी कों
देताहै तिसकेभयकी शंका कर्के देवता लोकउसकी भक्तिकर्ते
है ॥ ४२ ॥

सनत्कुमारसंहितायां मालतीकुसुमैःरम्यै किंचिच्छ्वेतैर्मनोहरैः समभ्यर्च्यहृषीकेशंजन्मदुःखाद्विमुच्यते ॥ ४३ ॥ कदंबकुसुमैर्देवमर्चयेन्मधुसूदनं दृष्ट्वाकदंवपुष्पाणिप्रीतोभवतिमाधवः ॥ ४४ ॥ सकृत्कदंवपुष्पेणपूजयेद्धेलयाहरिं सप्तजन्मानिदेवर्षेतस्यलक्ष्मीर्नदुर्लभा ४५ कदंवपुष्पगंधेनकेशवोयेनतोषितः जन्मायुतार्जितंपापंदहतेनात्रसंशयः ॥ ४६ ॥

सनत्कुमार संहिता मैं लिखाहै ॥मनकों हरन वाले किंचित्श्वेत रमणीक मालतीके पुष्पों करकें हृषीकेश जीकों पूजन करकें जन्म मरणके दुःखसें मुक्त होताहै ॥ ४३ ॥ जो पुरुष कदंवके पुष्पों करकें देवता मधुसूदन जीकी पूजा करता है तिसके कदंव पुष्प देखके माधवजी प्रसन्न होतेहैं ॥ ४४ ॥ जो कोई पुरुष एकभी कदंवके पुष्प करकें हेलाके साथ क्या लीलाके साथ पूजनकर्ताहै हेदेवर्षे सात जन्म तिसकों लक्ष्मी दुर्लभ नहिहै ॥ ४५ ॥ और कदंव पुष्पकी गंधि करकें जिसने नारायण प्रसन्न करेहैं सो दसहजार जन्मोंके इकट्ठेकरे पापों कों दग्ध कर्ताहै इसमैं संशय नहिंहै ॥ ४६ ॥

वर्षाकालेतुदेवेशंकदंवकुसुमैर्हरिं येर्चयंतिनते
षांचसंसारेपुनरागमः॥ ४७ पद्मपुराणेक्रिया
योगसारे ॥ सदाचंपकपुष्पेणयोर्चयेत्कमलाप
तिं सगच्छेत्परमंधाममविमुक्तःसर्वपातकैः॥ ४८
यावंतिस्वर्णपुष्पाणिदीयंतेचक्रपाणिनः ताव
द्युगसहस्राणिस्थीयंतेविष्णुमंदिरे ॥४९ ॥ मे
रुतुल्यसुवर्णानिदत्वाभवतियत्फलं एकेनस्वर्ण
पुष्पेणहरिंसंपूज्यतत्फलम् ॥ ५० ॥

जो कोई वर्षा ऋतुमैं कदंवके पुष्पों कर्के देवेश हरिका पूज न कर्तेहैं तिनका संसारमैं फिर आगम नाहिं होताहै क्या. जन्म नाहिं होताहै ॥ ४७ ॥ पद्म पुराणके क्रियायोगसार मैं लिखा है जो पुरुष सर्वदा काल चंवेके पुष्पों कर्के कमलापतिकों पूजतेहैं सो सारे पापोंसें मुक्त होएआ हुआ परम धामकों जाताहै ॥ ४८ ॥ जितने स्वर्णके पुष्प चक्रपाणि भगवान् जीके ऊपर दान करीदेहैं उतने हजार युग विष्णुके मंदिर मैं स्थित होतेहै ॥ ४९ ॥ सुमेरु पर्वतके तुल्य सुवर्णका दान कर्के जो फल होताहै सो फल एक सुवर्णके पुष्प साथ हरि का पूजन कर्के होताहै ॥ ५० ॥

फलंचंपकपुष्पस्यब्रवीम्यहमशेषतः आकर्णा
यद्विजश्रेष्ठसेतिहासमनुत्तमम् ५१ सुवर्णोना
मभूपालोवलवान्सर्वशास्त्रवित् आर्यावर्तेषुस
र्वेषुवभूवप्रभुरुत्तमः॥५२ राज्यश्रियाविद्यया
चतपसाचसभूपतिः अतिप्रमत्तोविप्रर्षेसदापा
परतोऽभवत् ॥ ५३ पाषंडमंत्रिणांवाक्यैर्विना
दोषैरपिद्विज धनलोभात्तिनराज्ञादंडयंतवहवो
जनाः ॥ ५४ ॥

चंबेके पुष्पचढानेका माहात्म्य संपूर्णतासें कहताहुं हेद्विजश्रेष्ठ
तिसमैं एक बडा उत्तम इतिहास श्रवणकर ॥ ५१ ॥ सुवर्ण
नाम कर्के एकसारे शास्त्रों के जानन वाला वलवान् परा
क्रमी राजा सारेआर्यावर्त देशमैं उत्तम होताभया ॥ ५२ ॥
सोराजा राज्यलक्ष्मीकर्कें विद्या कर्के तपकर्कें हेविप्रर्षे वडाम
स्तहोएआ हुया सर्वदा काल पाप कर्ममैं रत होताभया ॥५३
हेद्विज सो पाषंडिजो मंत्रिये तिनकी शिक्षा कर्कें औरधनकेलो
भतें अपराधके विनाही वहुतलोक दंड युक्त करीदे होए ५४

अन्यायोपार्जितंवित्तंगीतवाद्यादिभिर्नृपः सम
स्तंनाशयामासयज्ञदानविवर्जितः ५५ नज्ञा
तिपालनंचक्रेनदेवद्विजपूजनं नचपावकसंतु
ष्टिंराजापापविमोहितः ॥ ५६ ॥ नचकारातिं
थेःपूजांजहारगुरुयोषितां पपौचमदिरांनित्यं
सभूपः पापमोहितः ॥ ५७ ॥ कृतानितेनपा
पानियानियान्यविवेकिना अपिवर्षशतैः श
क्ताः संख्यातुंतानितानिकः ॥ ५८ ॥

और अन्यायकर्या अनीतिकर्के इकट्ठाकियाहुया जो धन तिसकों गायन वाद्य नृत्यादिइनकर्के यज्ञदानादियेंसें विनासारे उसधनकों नष्टकर्ताभया ५५ नातो उहराजा जातिवालेयोंका पालन कर्ताभया औरना उसनेदेवता ब्राह्मण पूजनकरे और पापोंके साथ मोहित होएहुएने अग्निभी प्रसन्न नहिकरी क्या हवनादि नहिकरे ॥ ५६ ॥ और ना तिसनें अतिथियोंका पूजन करा और सुंदरगुरु अपने कीस्त्रीकों हरलेनाभया और सो भूपपाप कर मोहित होएआहुया नित्यंप्रति मदिराकें पान कर्ताभया ॥ ५७ ॥ हेद्विज बिनाविचार वाले तिसने जोनसें जिनने २ क पापकरेहैं निश्चयकर्के तिनकी संख्या करनें को सौबर्ष कर्के भी समर्थ नहिंहो सकताहै ॥ ५८ ॥

एकदासमहीपालःकामेनपरिमोहितः जगा
मवेश्यानिलयंनिशीथेभूरितारके ॥ ५९ ॥
तमायांततंतोदृष्ट्वाभूपालमुजूज्वलाह्वया स
हसोत्थायापर्यंकाच्चक्रेतत्पादवंदनम् ६० प्र
क्षाल्यतत्पादयुगंभृंगारसलिलैश्चसा मंचे
न्निवेशयामासदोर्भ्यामालिंग्यतंनृपं ॥ ६१ ॥
तत्प्रेमामृतधाराभिः सिक्तोऽसौपृथिवीपतिः
तस्मिन्सुष्वापपर्यंकेतयासहकुतूहली ॥ ६२ ॥

एकदिन सो महीपाल राजा कामदेव करमोहित होएआ हुया वहुत हैं तारे जिनमैं ऐसे अर्धरात्रकेसमय वेश्याके घरमैं चला जाता भया ॥ ५९ ॥ तिसआउते राजाकों देखकर तिससें उपरंत अपने पलंघ सें शीघ्र उठकर सो उजूज्वल वेश्या तिसके पादवंदना कर्ती भई ॥ ६० ॥ फिर इससें उपरंत गंगासागरके जलोंकर्कें दोनों पादकमल धोयकर वाहुयों के साथ आलिंगन कर तिसराजाकों मंचक्या पलंघके ऊपर विठायलेती भई ६१ तद तिसमय तिसके प्रेमरूपी अमृतकीधारांकर्कें सिंचितहोएआ हुयाकुतूहल वाला क्या वडी इच्छावाला तिसवेश्याके उसपलंघपर शयन कर्ता भया ६२

ततः सागणिकाप्रीत्याहसंतीनवयौवना ददौ
चंपकपुष्पाणांतस्मैभूमिभुजेस्त्रजम् ॥ ६३ ॥
पुष्पमाल्यात्पुष्पमेकं तस्मात्पततिहस्तगात्प
पातधरणीपृष्ठेगंधव्याप्तदिगंतरम् ॥ ६४ ॥
तच्च्युतंकुसुमंदृष्ट्वासराजात्यंतसंभ्रमात् न
मोनारायणायेतिजगादोंकारपूर्वकम् ॥ ६५ ॥
नारायणायेतिवाक्येनसर्वाणिपातकानिच स्व
र्णपुष्पप्रदानेनतस्यनष्टानिभूपतेः ॥ ६६ ॥

तिससें उपरंत नवीन युवावस्था वाली सो गणिका हास्य कर्ती २ वडी प्रीतिसें तिसराजाके तांई अतिसुंदर चंबेके पुष्पोंकी माला देती भई ॥ ६३ तद तिस राजाके हाथमें तें मालाका एकपुष्प सुगंधिकर युक्तजो उहांकी पृथिवी तिसपर डिगपडता भया ॥ ६४ सो राजा वडे संभ्रम सें तिससें डिगहोए पुष्पकों देखकर ओंनमोनाराणाय ऐसें उच्चारण कर्ता भया ॥ ६५ तद ओंनमोनारायणाय ऐसें वाक्यके कहने करकें और चंबेका पुष्प दान करने करकें तिस भूपालके सारे पापनष्ट हो गए ॥ ६६ ॥

ग्रामिणोऽप्यस्यसर्वेपि समागम्यातिदुर्नयं त
स्यामेवनिशायांतेजघ्नुर्वेश्यागृहेस्थितम् ॥ ६७
नेतुंतमथभूपालंसर्वपातकिनांवरं किंकरान्प्रे
षयामास क्रुद्धोवैवस्वतोद्भुतम् ॥ ६८ ॥ तेना
ज्ञप्तास्ततोदूताःपाशमुद्गरपाणयः अतिवेगा
त्समायाताः क्रोधसंरक्तलोचनाः ॥ ६९ ॥
तंवद्ध्वाचर्मपाशेनज्वलज्ज्वलनलोचनाः उद्य
मंचक्रिरेगंतुंयमदूतायमालयं ॥ ७० ॥

और उधरसें दुष्टनीति वाले दुखदाई राजाकों उसीके नगर वासी लोक वेश्याके घरमें आये होए राजाकों जानकर सारे ही इकठे होके वेश्याके घरमैं बैठे होए कोंही उसी रातमैं मार देतेभये ॥ ६७ ॥ तद पापियों मैं श्रेष्ट तिस भूपालकों ल्याउने के वास्ते क्रोधकों प्राप्तहोएआ हुया सूर्यका पुत्र धर्मराज वडेभय के करनेवाले दूतोंकों भेजता भया ॥ ६८ ॥ तिसनें आज्ञाकरे होए दूत तिससें उपरंत पाश मुद्गर हाथोंमैं लेकेक्रोधकर लाल नेत्र जिनके ऐसे सोवडे वेगसें आय प्राप्त भये ॥ ६९ ॥ तोअग्नि की न्याईं वलतेहैं नेत्र जिनके ऐसे चर्मकी फांसीके साथ वांधकर यमालय मैं जाने कों उद्यम करतेभये क्या तियार होते भये ॥ ७० ॥

ततोनारायणप्रेष्याः शंखचक्रगदाधराः आ
जग्मुर्गरुडारूढास्तंनेतुंपृथिवीपतिम् ॥ ७१
॥ पाशेनपाशितंदृष्ट्वातंनृपंविष्णुकिंकराः ज
घ्नुश्चक्रैर्गदाभिश्चयमदूतान्रुषापथि ॥ ७२ ॥
तंत्यक्त्वात्यंतसंत्रस्तायमदूताःप्रदुद्रुवुः वि
ष्णुदूतगदाचक्रप्रहारशतजर्जराः ॥ ७३ ॥
अथतंपृथिवीपालंविष्णुदूतामहावलाः पीत
कौशेयवासोभिः स्वर्णालंकारभूषिताः ॥ ७४

तिससें उपरंत विष्णु भगवान् जीकेदूत शंखचक्र गदा पद्म धारण करणे वाले गरुडके ऊपर चढेहोए तिस पृथिवीपतिके ले जानेकों ओहभी आयजाते भये ७१ उस समय विष्णुके किंकर फांसीके साथ वंधेहोए तिस राजाकों देखकर वडेक्रोधकर्के मार्ग के वीचही यमदूतोंकों चक्र गदा शस्त्रों कर्के मारते भये ॥ ७२ ॥ तों यमके दूत अत्यंत त्रास कर युक्त तिसकों त्याग कर विष्णु के दूतोंके गदाचक्र शस्त्रोंके प्रहारकर जर्जरीभूत क्या छिन्न भिन्न अंगों वाले दौड जाते भये ॥ ७३ ॥ इससें उपरंत महावली विष्णुके दूत पीले पट्टके वस्त्रोंवाले स्वर्णके अलंकार भूषणों करके युक्त तिस राजाकों लेजातेभये ॥ ७४ ॥

स्तूयमानोमुनिगणैर्वेदवेदांगपारगैः विष्णुदू
तैः परिवृतोहरेः सालोक्यमाययौ ॥ ७५ ॥
अथोत्थायस्वयंविष्णुश्चतुर्भिर्दीर्घवाहुभिः त
मालिंगितवान्भूपंप्रोक्तवांश्च द्विजोत्तम ७६ ॥
भगवानुवाच ॥ नृपतेकुशलंब्रूहिसर्वपुण्यवतां
वर किमस्त्यसाध्यंभवतातदाज्ञापयसांप्रतं
॥ ७७ ॥ ॐनमोनारायणायेतिवारैकमपियो
वदेत् नित्यंतस्यानुपाल्योहंसमेभ्रातासमेपि
ता ॥ ७८ ॥

तो उहां वेदवेदांग शास्त्रके पारकों जानण वाले मुनि लोकों केसमूह कर्के स्तुत करा हुया विष्णु दूतोंके साथ परिवारिया हुया विष्णुको सालोक्यमुक्ति क्याहै तुल्य रूपता तिसकों प्राप्तहोताभया ७५ इससें उपरंत जद उहां प्राप्तभया तद आप विष्णुजी वडीयें लंवीये चारों वाहोंके साथ तिस राजाकों आलिंगन कर्तेभये क्या गलेमैं मिलावते भये हे द्विजोत्तम और एह वाक्य कहते भये ७६ ॥ क्या भगवानूजी कहनेलगे हे सारे पुण्यवालेयोंमैं श्रेष्ट राजनू तेरेकों कुशलहै क्या राजी प्रसन्नहै ना और तेरेकों कोई कार्य असाध्यहै क्या नाहिं भी सिद्ध होने बालाहै सो मेरेकों आज्ञाकर ७७ ॐनमोनारायणाय ऐसें जो पुरुष एक वारभी कहे तिसका नित्यंप्रति पालक हां उौर सोमेरा भ्राताहै अरसोई मेरा पिताहै ॥ ७८ ॥

नारायणायेतिनाम कदाचिद्यः स्मरेन्नरः सा
धयाम्यखिलंतस्यपितुः पुत्रइवोत्तमः ७९ ॥
मद्भक्तोसिनृपश्रेष्ठतस्मान्निजमनोरथं प्रकाश
यद्रुतंभ्रातः किंनदास्यामितेधुना ॥ ८० ॥ रा
जोवाच सर्वमेवदयासिंधोत्वयादत्तंनसंशयः
पापिनापिमयाप्राप्तं तवस्थानंसुदुर्लभम् ८१
व्यासउवाच तस्यानेनतुवाक्येनप्रसन्नः कम
लापतिः स्नेहान्निवेशयामासभूपालंतंनिजा
सने ॥ ८२ ॥

ॐनमोनारायणाय एह नाम एक वारभी जो कदीं पुरुष स्म
रण करे तद तिसके सारे कार्य साधन कर्ताहुं जैसें पिताके का
र्य उत्तम पुत्र साधन कर्ताहै ॥ ७९ ॥ हेराजेयोंमैं श्रेष्ट तूंमेरा
भक्तहैं इस कारणसें अपने मनका मनोरथ क्या अभिप्राय शी
घ्र प्रगट कर हे भ्रातः सो तेरा कार्य क्या नहिं देवूंगा ना दे
वूंगा ८० भगवान जीके मुखसें इतना वचन सुनतेही राजा क
हन लगा हेदया के समुद्र सभी कुछतुमारा दिया हुयाहै इसमैं
कुछसंशय नाहिहै क्योंकी वडे पाप करने वाले मैने एह दुर्ल
भ स्थान प्राप्त होएआहै इसीमैं सभी कुछआयगया ८१ ॥
इतनी कथा सुनायकर फिर व्यासेदवजी वोले हेमुने तिसरा
जाकें इस वाक्य कर्के कमलापति भगवान् प्रसन्न होएके व
डे स्नेह प्रीतिसें तिस राजाकों अपने कमलासन पर विठाय
लेते भये ॥ ८२ ॥

ततः सुवर्णालंकारैर्विश्वकर्माविनिर्मितैः चकरा
डंबनंतस्यस्वयमेवदयापरः ॥ ८३ ॥ अथना
नाविधैर्भक्ष्यैर्देवानामपिदुर्लभैः तोषितःसम
हीपालोविष्णुनाशत्रुजिष्णुना ॥ ८४ ॥ एवं
प्रतिदिनंतस्थौसराजाविष्णुमंदिरे मन्वंतरस
हस्राणि द्वितीयइवकेशवः ॥८५ ॥ अथपुण्या
वसानेतुपुनरागत्यमेदिनीं जातिस्मरोमहा
भागः सार्वभौमोवभूवसः ॥ ८६ ॥

तिससें उपरंत विश्व कर्मा कर्के वनाए होए स्वर्णके रत्नोंकर जडित भूषणों कर तिस राजाका आप दयामैं तत्पर होए हुऐ भगवान्जी शृंगार कर्त्तेभये ८३ फिर देवता लोकों कों जो दुर्लभ अनेक प्रकारोंके भक्ष्य भोज्यहैंन तिनों कर्के शत्रुयोंकों जीतने वाले विष्णुनें सो राजा प्रसन्न करा ८४ इस प्रकारकेआदर सन्मानपूर्वक रोजकेराजामन्वंतरोंकेहजारां दूसरे केंशव जीकी न्याई ही विष्णुके मंदिर वैकुंठमैं स्थित होताभया ॥ ८५ ॥ इससें उपरंत उस पुण्य फलके अंतमैं फिर पृथिवी लोकमैं आयकर सो महाभाग पूर्व जन्म जिसकों स्मरण और सार्वभौम क्या चक्रवर्ती राजा होता भया ८६ ॥

नववर्षसहस्राणिनववर्षशतानिच प्रजानांपा
लनंचक्रेसराजाधर्मतत्परः ॥ ८७ पूजयामा
ससततंभक्त्यापरमयाहरिं चारुचंपकपुष्पैश्च
नैवेद्यैर्विविधैश्चसः ॥ ८८ ॥ आयुःशेषंसभूपा
लोमरणंजाह्नवीजले समासाद्ययौमोक्षंप्र
सादाच्चक्रपाणिनः ॥ ८९ ॥ व्यासउवाच ॥वि
प्रचंपकपुष्पस्यप्रभावोयंप्रकीर्तितः चंपकैर्ह
रिमभ्यर्च्यमुक्ताःस्युःपापिनोपिच ॥ ९० ॥

तो सो राजा धर्ममें तत्पर होए हुया नौहजारनौंसेवर्ष प्रजाका पालन कर्ताभया ८७ और परमभक्ति करके सर्वदाकाल हरिकों पूजता भया सुंदर चंबेके पुष्पों करके और अनेक तरोंके नैवेद्यों करके ८८ जद तिसकी आयुपूर्ण होजाती भई तद गंगा जीके किनारे जायकर मृत्युकों प्राप्त होकर चक्रपाणि भगवान् जीके प्रसाद कृपासें मोक्षकों प्राप्त होताभया ॥ ८९ ॥ इतनी कथा सुनाय कर फिर व्यासदेवजी कहने लगे हेंविप्रऋषे चंबेके पुष्प चढानेका प्रभाव कथन कराहै जिस चंबेके पुष्पों करके हरिका पूजन कर पापि पुरुषभी मुक्त होतेहैं ॥ १० ॥

स्फुटंचंपकपुष्पेणपूजितोभगवान्हरिः अचिरे

णैवविप्रर्षेददात्यभिमतंफलम् ९१ येयजंति

परात्मानमिच्छयावाप्यानेच्छया तेप्रयांतिपरं

धामविमुक्ताः सर्वपातकैः ॥९२॥ हरौप्रसन्ने

दुरितीनकोपिरुष्टेचतस्मिन्सुकृतीनकोपि यतः

सराजाकृतपातकोपिजगाममोक्षंकृपयामुरारेः

॥ ९३ ॥

प्रगट जे वातहै की चंवेके पुष्पों कर्के पूजा करे होए हरि हेवि
प्रर्षे थोडे कालकर्के ही अभिमत फल क्या वांछित फल देते
हैं ॥ ९१ ॥ जो पुरुष इच्छा कर्के वा विना इच्छासें परा
त्मा हरि कों पूजतेहैं सो सारे पापों कर्के मुक्त होए हुए परम
धामकों जातेहैं ॥ ९२॥ ऐसे ओह भगवान् हरि हैंन. जिनके प्र
सन्न होएदे पापी कोई नहिहै और जिनके क्रोधी होए हुए
पुण्यवान्कोई नहिहै देखो जिनकी कृपासे पापकरने वाला सो
राजामोक्षमार्गेकों प्राप्त होताभया ॥ ९३ ॥

विश्वार्णवंनिम्नमिमंतितीर्षुर्दिव्यैस्तुगंधैश्चंपकजैः प्रसूनैः नारायणंपद्मदलायताक्षंमर्त्योंययौविप्रविहायपापम्॥ १४ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेपुष्पार्पणमहिमवर्णनम्

ऐसे प्रभाव वाले तिनकों जान कर बडे डूंगे संसार समुद्र कों तरने की इच्छावाला दिव्य सुगंधिवाले चंबेके पुष्पों कर्के पुरुष पद्मपत्रकी न्यांई विशाल नेत्रों वाले भगवान जीका पूजन कर हे विप्र पापो कों त्यागके नारायणकी सालोक्यताकों प्राप्त होताहै १४ एह पद्मपुराण के क्रियायोगसारमैं भगवानूजीके ऊपर पुष्प चडानेका माहात्म्य वर्णन होचुका ॥

अथविष्णूपरितुलसीदलार्पणे माहात्म्यंव
र्ण्यते पाद्मेदेवदूतविकुंडलसंवादे ॥ आरोप्य
तुलसींवैश्यसंपूज्यत्तद्दलैर्हरिम्‌ वसंतिमोदमा
नास्तेयत्रदेवश्चतुर्भुजः ॥१॥ प्रथमतो तुलसी
वर्णनम्‌ जैमिनिंप्रतिव्यासवाक्यम्‌ इंद्राद्यैर्दै
वतैः सर्वैस्तुलसीभगवत्यसौ संसेव्यासर्वदा
विप्रचतुर्वर्गफलप्रदा ॥ २ ॥ स्वर्गेमर्त्येचपाता
लेतुलसीदुर्लभामता चतुर्वर्गफलप्रेप्सुस्तस्यां
भक्तिंकरोत्यसौ ॥ ३ ॥

अवविष्णु जीके ऊपर तुलसीदलचढानेकी महिमा वर्णनकर्ते
हैं ॥ पद्मपुराणमैं देवदूतविकुंडलके संवादकर्के॥हेवैश्य जोपु
रुष घरमैं तुलसी लगाकर तिसके दलोंकेसाथ हरिका पूजनक
र्कै प्रसन्न मन वाले तहां निवासकर्तेहैं जहां देवता चतुर्भुजजी
निवासकर्तेहैं ॥ १ ॥ प्रथम तुलसी के वर्णनमैं जैमिनिकेप्रति
व्यास देवजीकावाक्यहै ॥ हेविप्र सर्वदाकाल चार वर्गफलदे
नेवाली एहभगवती तुलसीसो इंद्रादिदेवतेयोंने सेवीदीहय
॥ २ कैसीतुलसीहै स्वर्ग मर्त्य पाताल इनोंतीनों लोकोंमैं वडी
दुर्लभहै औरजोकोई चार वर्ग धर्मअर्थ काम मोक्ष इनकीइ
च्छावाला इस तुलसीमैं भक्तिकरे ॥ ३

यत्रैकस्तुलसीवृक्षस्तिष्ठति द्विजसत्तम तत्रैव
त्रिदशाः सर्वेब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ४ ॥ केश
वः पत्रमध्येचपत्राग्रेचप्रजापतिः पत्रांतेचाशि
वस्तिष्ठेत्तुलस्याः सर्वदैवहि ॥ ५ ॥ लक्ष्मीःस
रस्वतीचैवगायत्रीचंडिकातथा शचीचान्यादेव
पत्न्यस्तत्पत्रेषुवसंतिहि ॥ ६ ॥ इंद्राग्नीशम
नश्चैवनिर्ऋतिर्वरुणस्तथा पवनश्चकुवेरश्च
तच्छाखायांवसंत्यमी ॥ ७ ॥

हे द्विजसत्तम जहांमैं एकतुलसीका वृक्षलगा हुयाहै तहांमैंही ब्र ह्मा विष्णु शिव इत्यादि सभदेवता निवासकर्तेहैं ॥४॥ और कैसाहै एह तुलसीवृक्ष जिसके पत्रके मध्यमैं केशव विष्णुजी निवास कर्तेहैं और पत्रकेअग्रमैं प्रजापति ब्रह्मा निवास कर्ताहै और पत्रके अंतमें सदा शिवजी रहतेहैं ५ ॥ और लक्ष्मी सरस्वती गायत्री चंडी औरइंद्राणी और जो शक्तियांहैं देवतें यों कीयां स्त्रियां सो सभी तिसके पत्रोंमैं निवास कर्तीयांहैं ६ और इंद्र अग्नि शमनक्या धर्म राज निर्ऋति वरुण और पवन कुवेर एह सभी दिशों के पालक तिसकी शाखामैं निवास कर्तेहैं ७ ॥

आदित्याद्याग्रहाःसर्वेविश्वेदेवाश्चसर्वदा व
सवोमुनयश्चैवतथादेवर्षयोऽखिलाः ॥८॥ वि
द्याधराश्चगंधर्वाः सिद्धाश्चाप्सरसस्तथा तुल
सीमूलमासाद्यसर्वदानिवसंतिहि ॥ ९ ॥ गं
गाचयमुनाचैवनर्मदाचसरस्वती गोदावरीचंद्र
भागास्तथान्याः सरितोऽखिलाः ॥१० ॥ को
टिब्रह्मांडमध्येतुयानितीर्थानिभूतले तुलसीम
लमाश्रित्यतान्येवनिवसंतिवै ॥ ११ ॥

आदित्यादि सारेही नौ ग्रह और विश्वेदेव भी सर्वदा काल और आठ वसु मुनि देवर्षि सारेही ॥ ८ ॥ विद्याधर गंधर्व सिद्ध अप्सरा इत्यादि सारेही तुलसीकी छायामैं आश्रित होके निवास कर्तेहैं ॥ ९ ॥ और गंगा यमुना सरस्वती नर्मदा गोदावरी चंद्रभागा तैसेही और सारियां नदियां भी ॥ १० ॥ और क्रोड ब्रह्मांडके मध्यमैं और पृथिवी तलमैं जितनेक तीर्थ हैं सोसारे तुलसीके मूल कों आश्रित होके निवास कर्तेहैं ॥ ११ ॥

सर्वदेवमयीदेवीतुलसीविष्णुवल्लभा यत्रतिष्ठ
तितत्रैवतिष्ठंतिसर्वदेवताः ॥ १२ ॥ पाद्मे पुन
स्तत्रैव तुलस्यारोपणमहिमा ॥ तावद्वर्षसह
स्राणियावद्बीजदलानिच वसंतिवैष्णवेलोकेतु
लसींरोपयंतिये ॥ १३ ॥ रोपणात्पालनात्से
काद्दर्शनात्स्पर्शनादपि तुलसीदहतेपापंवा
ङ्मनःकायकर्मजम् ॥१४ नपश्यंतियमंवैश्य
तुलसीवनरोपणात् सर्वपापहरंसर्वकामदंतुल
सीदलम् ॥ १५ ॥

सारे देवतों के रूप वाली देवी तुलसी विष्णुकी प्यारी जहां स्थित रहतीहैं तहांही सारेही देवता निवास कर्ते हैं ॥ १२ ॥ अब पद्मपुराणमें तुलसी लगाने की माहिमा लि ॥ जितनेक तुल सी के पत्र और बीज होतेहैं उतने हजार वर्ष तुलसी लगानें वा ले विष्णु लोकमैं निवास कर्तेहैं ॥ १३ ॥ तुलसी कों लगाने सें और पालना करनें सें और सिंचन करनेसें और दर्शनसें इ सके स्पर्शसें इतने कर्म करने सें तुलसी मन वाणी देह केकर होए पाप दग्धकर्तीहै १४ और तुलसीका वन लगानेसें मृत हो कर पुरुष यमकों नाहिं देखता है सारे पापों के हरणे वाला और संपूर्ण कामनां के देनेवाला तुलसीका दलहै ॥ १५ ॥

तुलसीकाननंवैश्यगृहेयस्मिंस्तुतिष्ठति तद्गृ
हंतीर्थभूतंहिनोयांतियमकिंकराः ॥ १६ ॥ वि
ष्णुपूजनसंसक्तस्तुलसींयस्तुरोपयेत् युगायु
तमथैकंतुरोपकोमोदतेदिवि ॥ १७॥ आम्रा
णांतुसहस्रेणपिप्पलानांशतेनच यत्फलंतुत
दैकेनतुलसीविटपेनतु १८ ॥ पाद्मेकार्त्तिकमा
हात्म्ये ॥ यावच्छाखाप्रशाखाभिर्बीजपुष्पदलै
र्मुने रोपितातुलसीपुंभिर्वर्धतेवसुधातले॥१९

हे वैश्य जिसके घरमैं तुलसी का वन स्थितहै सो घर तीर्थ रू
पहै तहां यमके किंकर दूत नाहिं आवतेहैं १६ ॥ विष्णु भग
वान् जीकी पूजा करने वालाजो पुरुष अपने घरमैं तुलसी
कों लगावताहै सो पुरुष युगों के अयुत एक लाखवर्ष स्वर्ग
मैं आनंद भोगताहै ॥ १७ आम्रोंके एक हजारवृक्ष लगाने
कर्कै और पिप्पलोंके सैंकडे लगाने कर्कै होताहै सो फल ए
क तुलसी का वृक्ष लगाने कर्कै होताहै ॥ १८ ॥ पद्म पुरा
ण के कार्तिक महात्म्यमेंलि ॥ ० जितनीयां कशाखां कर्कै
और प्रशाखां कर्कै और पुष्पदलों कर्कै हेमुने पुरुषोंने लगाईं
होईं तुलसी पृथिवीतल मैं उसकीसंतान वसुधा तल मैं वधतीहै
॥ १९ ॥

तेषांवंशेतुयेजातायेभविष्यंतियेगताः आक
ल्पयुगसाहस्त्रंतेषांवासोहरेर्गृहे २० ॥ अथतु
लस्याःसेकमहिमावर्ण्यते ॥ तुलसींसिंचये
द्यस्तुअल्पोदकमात्रकैः तुलस्याःशृणुराजेंद्रत
स्यपुण्यमनंतकम् । २१ । पाद्मेक्रियायोगसा
रे वैशाखेऽक्षतधाराभिरद्भिर्यस्तुलसींजनः से
चयेत्सोऽश्वमेधस्यफलमाप्नोतिनित्यशः ॥२२
अथतुलस्यारक्षणेमाहात्म्यंवर्ण्यते क्रियायो
गसारे तृणानितुलसीमूलात्यावंत्यवहतानिवै
तावतीब्रह्महत्यांवैछिनत्त्येवनसंशयः॥ २३ ॥

और तुलसी लगाने वालेके वंशमैं जो जन्मे होएहैं औरम
र गएहैं और जोनसें जन्मेंगे तिनका निवास कल्प पर्यंत यु
गों के हजारां हरिके मंदिरमैं होताहै ॥ २० ॥ अब तुलसी
कों सिंचन करनेकी महिमालि ० ॥ जो पुरुष थोडेभी जल
करकें तुलसी कों सिंचन कर्ताहै क्या जलदान कर्ताहै हेरा
जेंद्र तुलसी कों जलसिंचन करने का अनंत फल श्रवण कर
॥ २१ ॥ पद्म पुराणके क्रियायोग सारमैं लि ० ॥ वैशाख म
हीनेमैं अक्षत धारा करकें जो पुरुष सेचन कर्ताहै सो पुरुष नि
त्यंप्रति अश्वमेध के फलकों प्राप्त होताहै ॥ २२ ॥ अथ तुल
सी की रक्षा करनेका माहात्म्य लि ० पद्म पुराणके क्रियायो
ग सारमैं जितनेक तृण घास तुलसीके मूल देशसें दूरकर्ताहै
उतनीयांही ब्रह्महत्या छेदन कर्ताहै इसमैं संशय नहिहै २३

छिंदंतितृणजालानितुलसीमूलजानिये स्वदे
हस्थब्रह्महत्यांछिंदंतिसहसाहिते ॥ २४ ॥
कंटकावरणंचापिद्वातिंकाष्ठःकरोतियः तुल
स्याः शृणुराजेंद्रतस्यपुण्यफलंमहत् ॥ २५
यावद्दिनानिसंतिष्ठेत्काष्ठकावरणंनृप कुलत्रय
युतःसोपितिष्ठेद्ब्रह्मपदेयुगम् ॥ २६ ॥ प्रा
कारकल्पकोयस्तुतुलस्यामनुजेश्वर कुल
त्रयेणसंयुक्तोविष्णोः सायुज्यमाप्नुयात् २७

जो पुरुष तुलसीके मूल देशमैं जन्म होए तृण घासके स
मूह तिनकों छेदन करैहैं सो पुरुष अपने देहमैं स्थितजो ब्रह्म
हत्याहैं तिनकों शीघ्र छेदतेहैं ॥ २४ ॥ और जो पुरुष कंटे
योंका आवरण वा काष्टका आवरण क्या गोलाकार तिसके
चारो और जो तुलसीकी रक्षाके लिये करैहैं हेराजेंद्र तिस पुण्य
का वडाफल श्रवणकर ॥ २५ ॥ हेनृप तुलसीके चारों पासें
काष्ठका वरण जितने दिन रहताहै उतना काल पर्यंत पुत्रस्त्री
इनके युक्त ब्रह्माके पदमैं स्थितरहताहै २६ हेमनुजेश्वर तुलसी
की रक्षाके लिये जो प्राकारक्या कोट बनातेहैं सो तीन कुलों
के सहित विष्णुकी सायुज्य मुक्तिकों प्राप्त होतेहैं ॥ २७ ॥

निदाघसमयेतुलस्याउपरि छत्रादिकरणेनम
हिमावर्ण्यते ॥ पाद्मे ॥ चंद्रातपंवाछत्रंवात
स्यैयस्तुप्रयच्छति विशेषतोनिदाघेषु समुक्तः
सर्वपातकैः ॥ २८॥ अन्यजीवेभ्यस्तुलस्याः
रक्षणे माहात्म्यंवर्ण्यते ॥ क्रियायोगसारे ॥
गोभ्योजोष्ट्रखरेभ्यश्चमाहिषेभ्यश्चरक्षति शि
शुभ्यस्तुलसींयस्तुतंरक्षेत्केशवः स्वयम् ॥
२९ ॥ तुलस्यधः संमार्जनादिमहिमा वर्ण्य
ते गोमयैस्तुलसीमूलेयः कुर्यादनुलेपनं संमा
र्जनंचविप्रर्षेतस्यपुण्यफलंशृणु ॥ ३० ॥

गर्मीके दिनोंमें तुलसीके ऊपर छत्तरी लगानेकी महिमा वर्ण
न कर्तेहैं पद्म पुराणमें लिखाहै ॥ जो पुरुष चांदनीकी निवृत्ति
के वास्ते वा सूर्यकी धूप निवृत्तिके वास्ते छतरी लगातेहैं और
विशेष करके ग्रीष्म ऋतुमें जो तिसकेताईं देतेहैं सो सम्पूर्ण पा
पोंकरके मुक्तहोतेहैं ॥ २८ अब गौयां महिषियांसें आद लेकर
पशुयोंसें रक्षा करनेकी महिमा लि॰ क्रियायोगसारमें ॥ गौ
यांसें बकरियांसें ऊंटोंसें गधेयोंसें और महिषियोंसें और बा
लकोंसें जो तुलसी की रक्षाकर्तेहैं तिनकी रक्षा केशवजी आ
पकर्तेहैं ॥ २९ अब तुलसी केनीचे सोतना लेपन लगाना इ
सकी महिमालि॰ ॥ जोपुरुष तुलसी के मूलमें गोहेके साथ
सुंदर लेपन लगाते हैं और हेविप्रर्षे नीचे सें शोधन कर्ते हैं
तिनके पुण्यका फल श्रवण कर ॥ ३० ॥

रजांसितत्रयावंतिदूरीभूतानिजैमिने तावत्क
ल्पसहस्राणिमोदतेविष्णुनासह ॥ ३१ ॥ द
र्शनमाहिमा पाद्मे प्रभातेतुलसींपश्येद्भक्तिमा
न्योनरोत्तमः सविष्णुदर्शनस्यैवंफलंप्राप्नोति
चाक्षयम् ३२ पूजनमाहिमा पाद्मे दूर्वाभिरक्ष
तैः पुष्पैर्नैवेद्यैस्तुलसींशुभाम् समाराध्यनरो
भक्त्याविष्णुपूजाफलंलभेत् ३३ येनार्चिता
भगवतीतुलसीकदाचिन्नैवेद्यपुष्पवरधूपघृतप्र
दीपैः धर्मार्थकामामृतदापवित्राकिंतस्यविष्णु
चरणापचितिप्रयोगैः ॥ ३४ ॥

हेजैमिने तुलसीके नीचेसें जितनीक रज धूलि दूरहोईहै उत
नेहीहजारां कल्प विष्णुके साथ आनंद भोगताहै ॥३१॥ अब
तुलसीके दर्शनकी महिमा लिखतेहैं पद्मपुराणमे कहाहै जौ
नसा भक्तिवाला पुरुष प्रातः काल तुलसीकों देखताहै सो वि
ष्णुके दर्शन करनेके अक्षय फलकों प्राप्त होताहै ॥ ३२ ॥ अ
ब तुलसी की पूजाका माहात्म्य पद्मपुराणमें लि० ॥ दूर्वा अ
क्षत पुष्पों करकें नैवेद्यों करकें पुरुष भक्तिके साथ शुभतुलसीका
आराधन करकें विष्णुकी पूजाकरनेके फलकों लभताहै ॥ ३३
और जिसने भगवती तुलसी कदाचित् श्रेष्टनैवेद्य पुष्प धूप
घृतके दीपों करकें पूजन करीहै धर्म अर्थ काम मोक्ष इनचार
पदार्थोंके देनेवाली तिसकों विष्णुके चरणोंकी पूजा करकें क्या
प्रयोजनहै ॥ ३४ ॥

स्थानेषुदोषरहितेषुसुरौघसेव्यायेरोपयंतीतुल
सींहरितुष्टिकर्त्रीं तुष्टोहरिस्त्रिजगता मधिपोमु
रारिस्तेभ्योददातिपरमंपदमाशुविप्र ३५ ॥
तुलसीसमीपेपितृयज्ञादिकरणे माहिमावर्ण्यते
पाद्मे यज्ञंव्रतंचपितृपूजनमच्युतार्चादानंयद
न्यदपिकर्मशुभंमनुष्याः कुर्वंतिदोषरहितेतुल
सीतलेच तान्यक्षयानिसकलानिभवंतिनूनं
३६ स्कांदे तुलसीकाननच्छाया यत्रयत्रभवे
द्द्विज तत्रश्राद्धंप्रकर्तव्यंपितॄणांप्रीतिहेत
वे ॥ ३७ ॥

और देवतेयोंके समूह कर्के सेवन करी होई तुलसी कों दोष रहित स्थानोंमैं जौनसे पुरुष तुलसी कों लगातेहैं हरिकों प्रसन्न करनें वाली हेविप्र तीनलोकोंके अधिपति जो नारायण बिष्णुसो प्रसन्न मनवाले होए हुए तिनके तांई शीघ्र ही परम पद देतेहैं ॥ ३५ ॥ अब तुलसीके पास श्राद्धादिकरनेकी महिमा लि॰ पद्मपुराणमैं हेमुने जोकोई मनुष्य दोष रहित तुलसीके तल नीचे यज्ञव्रत दान पितरों का पूजन विष्णुकी पूजा और जोकुछ शुभकर्म कर्तेहैं सो सारेही निश्चय कर्के अक्षय फलवाले होजातेहैं ॥ ३६ ॥ स्कंदमैं लिखाहै हेविप्र तुलसीके वृक्षों की छायाजहां २ होवे तहां मैं पितरोंकी तृप्तके कारण श्राद्ध करणा चाहिए ॥ ३७ ॥ ?

पितृपिंडार्चनंश्राद्धेयैः कृतंतुलसीदलैः तर्पि
ताःपितरेस्त्यंतयावच्चंद्रार्कतारकाः ॥ ३८ ॥
तुलसीमृत्तिकायत्रकाष्ठंपत्रंचवेश्मनि तिष्ठति
मुनिशार्दूलनदूरेवैष्णवंपदम् ॥ ३९ ॥ अभि
न्नपत्रांहरितांहृद्यांमंजरिसंयुतां क्षीरोदार्णवसं
भूतांतुलसींदापयेद्धरेः ४० नारायणोपरितुल
सीदलार्पणेमहिमा पाद्मे देवदूतविकुंडल
संवादे ॥ तावद्गर्जंतिरत्नानिकौस्तुभादीनिभू
तले यावन्नप्राप्यतेकृष्णेतुलसीकृष्णमंजरी
॥ ४१ ॥

और जिन पुरुषोंने तुलसी दलोंके साथ श्राद्धमैं पितरोंके पिं
डका पूजनकरा तिन पुरुषोंने अत्यंत कर्के जव तक चंद्रमा सूर्य
तारेहैं उतना काल तृप्त करेहैं ॥ ३८ ॥ हेमुनियोंमैं श्रेष्ठ तुल
सी की मृत्तिका काष्ठ पत्र जिसघरमैंहैं तिनकों वैष्णव पददूर
नहिहै ॥ ३९ ॥ नहि किसी प्रकार कर्के भी भेदे होए
हरे रंगके पत्रों वालि मनोहर मिंजरोंके सहित क्षीर समुद्रसें
उत्पन्न होइं हुई तुलसीकों हरिके तांई देवे क्या ऊपर चढावें
४० ॥ नारायणजीके ऊपर तुलसी चढानेकी महिमा देव दूत
विकुंडल के संवाद कर्के पद्म पुराणमैं सें लि० ॥ पृथिवीमें
कौस्तुभादिक मणियां उतनाही काल गर्जनाकर्तीहैं जितनाका
ल कृष्णजीकों तुलसी दल मंजरी नहि प्राप्तहोंई ॥ ४१ ॥

तुलसीगौरकृष्णाख्यातयाभ्यर्च्यजनार्दनं न
रोयातितनुंत्यक्त्वा श्रीविष्णोःशाश्वतींगतिम् ॥
४२ ॥ पाद्मे वृंदावासुदेवोपाख्याने सत्यं
प्रीतिकरंविष्णोः कोपस्तस्यतुतामसः भाव
द्वयंहरौजातंतत्तद्वर्णद्वयंह्यभूत् ॥ ४३ ॥ श्या
मापितुलसीविष्णोः प्रियागौरीविशेषतः वि
ष्णुरहस्ये यत्फलंसर्वतीर्थेषुसर्वपत्रेषुयत्फलं
तुलसीदलेनदेवर्षेप्राप्यतेकेशवार्चनात् ४४ ॥
स्कांदे किंकरिष्यतिसंरुष्टोयमोपिसहकिंकरैः
दलैस्तुलस्यादेवेशःपूजितोयेनदुःखहा ४५ ॥

श्यामा तुलसी और गौर तुलसी तिसके साथ जनार्दनजीकों पूजन कर्के पुरुष इस देहकों त्यागकर विष्णुकी शाश्वत गतिकों प्राप्त होताहैं ॥ ४२ ॥ पद्म पुराणके वृंदा वासुदेवजीके उपाख्यान में लि०॥ विष्णुका सत्य प्रीतिकरने वालाहै कोपतिसका तमोगुणहै एहदोभाव हरिमैं उत्पन्न होएतो सोई २ दो वर्ण रंगभीहोगए ॥ ४३ ॥ श्यामा तुलसी भी विष्णुकी प्यारी है गौरी भी प्यारीहै विशेष कर्के ॥ विष्णुरहस्यमैं लि० ॥ हेदेवर्षे जो फल सारेतीर्थोंमैं स्नान कर्के होताहै और जो फल सभतरांके फल पत्र चढाने कर्के होताहै सो फल एकतुलसीके दलसाथ केशवजीकी पूजासैं होताहै ॥ ४४ ॥ स्कांदमैं विशेष वाक्य लिखाहै ॥ क्या जिसने दुःख दूर करने वाले देवेश हरि तुलसीके दलों कर्के पूजेहैंन तिसकों अपने दूतोंके साथ क्रोधी होएआ हुया यम भी क्या करेगा ॥ ४५॥

मणिकांचनपुष्पाणितथामुक्तामयानिच तुलसी
दलमात्रस्यकलांनार्हंतिषोडशीं ॥ ४६ ॥ तुल
सीमंजरीभिश्चकुर्याद्धरिहरार्चनं नसगर्भगृहं
यातिमुक्तिभागीभवेन्नरः ॥ ४७ ॥ पुराणांतरे
लिंगमभ्यर्चितंदृष्ट्वाप्रतिमांकेशवस्यहि तुल
सीपत्रनिकरैर्मुच्यतेब्रह्महत्यया ॥ ४८ ॥ गारु
डे ॥तन्मूलमृत्तिकांचांगेकृत्वास्नातिदिनेदिने द
शाश्वमेधावभृथस्नानजंलभतेफलम् ॥ ४९ ॥

मणियां कांचनके पुष्प और मोतियों कर्के जडित स्वर्णके पुष्प तुलसी दलमात्र की सोलहमी कलाकों नहि प्राप्त हो सकतेहैं ४६ ॥ और तुलसीकीयां मिंजरां कर्के हरि हर जीका पूजन कर्ताहै सो गर्भवास मैं नहि जाताहै क्या मुक्ति का भागी पुरुष हो जाताहै ॥ ४७ ॥ पुराणांतरमैं लि० ॥ तुलसी के पत्रसमूहों कर्के पूजनकरा हुया शिव लिंग का और केशव जीकी प्रतिमा का दर्शन कर्के ब्रह्महत्या सें मुक्तहोताहै ॥ ४८ ॥ गरुड पुराण मैं लि० ॥ तुलसी के मूलकी मृत्तिका अंगोंमैं लगाकर प्रति दिन जो स्नान कर्ताहै सो दशाश्वमेध मैं स्नान करने के फलकों लभताहै ॥ ४९ ॥

तुलसीदलजांमालामेकादश्यांविशेषतः मु
च्यतेसर्वपापेभ्योयद्यपिब्रह्महाभवेत् ॥ ५० ॥
श्रीभगवद्वाक्यं॥तुलसीपत्रमादाययः करोतिम
मार्चनं नपुनर्योनिमायातिमुक्तिभागीभवेत्तुसः
॥ ५१ ॥ स्कांदे ॥ तुलसीगंधमादाययत्रगच्छ
तिमारुतः विदिशश्चदिशःपूताः भूतग्रामश्चतु
र्विधः ॥ ५२ ॥ योर्चयेद्धरिपादाब्जं तुलस्याः
कोमलैः दलैः नतस्यपुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्क
थंचन ॥ ५३ ॥

तुलसीके दलोंकी वनाई होई माला विशेष करकें एकादशी के दिनमैं श्रीपतिको चढातेहैं सो सभनोंपापों सें मुक्त होतेहैं जेकर ब्रह्महत्यावाले भीहोवें तदभी मुक्त होजातेहैं ॥ ५० श्रीभगवान जीका वचन लि० जो कोई तुलसीका पत्र ले करकें मेरी पूजा कर्ता है सो फिर योनि क्या गर्भवास मैं नहि आवताहै सो मुक्ति काभागी होताहै ॥ ५१ स्कंदमैं लि० तुलसीकी सुगंधि लेके वायुजहां कों चलताहै तहां कीयां दिशां विदिशां भूतग्राम चारप्रकारके पवित्र होजातेहैं ॥ ५२ ॥ और जो पुरुष तुलसी के कोमल दलों करकें हरिके चरण कमलों कों पूजताहै तिसकी ब्रह्मलोक मैं कदीं भी पुनरावृत्तिनहि होतीहै क्या उोह परत कर नाहि आवताहै ॥ ५३ ॥

पूज्यमानाचतुलसीयस्यवेश्मनितिष्ठति तत्रै
वसर्वश्रेयांसिवर्धंतेहरहर्द्विज ॥ ५४ ॥ पुष्क
रादीनितीर्थानिगंगाद्याःसरितस्तथा वासुदेवा
दयोदेवा वसंतितुलसीदले ॥ ५५ पाद्मे तु
लसीदलपत्राणिये यच्छतिजनार्दने कार्त्तिकेस
कलंवत्सपापंजन्मायुतंहरेत् ॥ ५६ ॥दृष्टास्पृ
ष्टाथवाध्यातार्कीर्तितानमितानुता रोपितासेचि
तानित्यंपूजितातुलसी शुभा ॥ ५७ ॥ नव
धातुलसीभक्तिंयेकुर्वंतिदिनेदिने युगकोटिस
हस्राणितन्वंतिसुकृतंमुने ॥ ५८ ॥

और हेद्विज पूज्यमान तुलसी जिसके वेश्ममैं क्या घरमैं स्थित है तहांमैं दिन प्रति दिन कल्याणां वधातियांहै ॥ ५४ ॥ तुलसी के दलमैं पुष्करादि तीर्थ गंगादिक नादियां वासुदेव जीसैं आद लेकर संपूर्ण देवता निवास कर्तेहैं ॥ ५५ ॥ पाद्ममैं लिखाहै जो पुरुष तुलसी दल पत्र जनार्दन भगवानजी पर चढावताहै कार्तिक महीनेमैं सारेहि हेवत्स तिसके दश हजार जन्मके पाप दूर होतेहैं ५६ ॥ तुलसी का प्रातः काल दर्शन करना उसके साथस्पर्शकरना तुलसीकाध्यान करना अरकीर्तन करी होई नमस्कार करीहोई अपनेघरमैं और सिंचनकरी होई और नित्यं प्रतिशुभ दायक पूजन करीहोई ५७ नौ प्रकार की भक्ति दिन २मैं जोकर्तेहैं सो युगों के क्रोडां हजारा पुण्य कों विस्तार कर्तेहैं ॥ ५८ ॥

प्रसंगाल्लक्षतुलसीदलार्पणेमाहात्म्यमाह स्कं
दपुराणे तुलसीदललक्षेणयोर्चयेद्द्वारकापतिं
जन्मायुतसहस्त्रस्यपापस्यकुरुतेक्षयम् ॥ ५९॥
पाद्मे तुलसीलक्षपत्रेणकार्त्तिकेयोर्चयेद्धरिम् प
त्रेपत्रेमुनिश्रेष्ठमौक्तिकंलभतेफलं ॥ ६० ॥ तु
लसीदललक्षेण पूजयेत्कमलापतिं लक्षैक
वाजिमेधस्यफलंप्राप्नोतिमानवः ॥ ६१ ॥

अब प्रसंग वशसें तुलसी की लक्षावलि चढाने का माहात्म्य कहतेहैं स्कंद पुराणमें। लाख तुलसी दलके साथ जो द्वारका के स्वामि कृष्ण जीकों पूजतेहैं सो दश हजार जन्मोंके इकठे करेहोए पापोंका क्षय कर्तेहैं ॥ ५९ ॥ पद्म पुराणमें लि० जो पुरुष कार्तिक महीने मैं लक्ष तुलसीके पत्रों कर्के हरिकों पूजतेहैं सो पुरुष एक २ पत्रमैं मोति चढाने के फलकों लभते हैं ॥ ६० ॥ और जो पुरुष कमलापतिकों तुलसी दलों के लक्ष कर्के पूजन कर्तेहैं सो मानव लक्ष अश्वमेधके फलकों प्राप्त होतेहैं ॥ ६१ ॥

पाद्मेकार्त्तिकमाहात्म्ये पृथुनारदसंवादेनेतिहा
समवतारयति ॥ पृथुरुवाच आराधयंतिसर्वे
पिविष्णुंभक्तार्तिनाशनं यज्ञैर्दानैर्व्रतैस्तीर्थैस्तु
लसीवनसेवनैः ॥ १ ॥ विष्णुप्रीतिकरंतेषांवि
ष्णुसान्निध्यकारणं यत्कृत्वैतानिचीर्णानिसर्वा
ण्यपिभवंतिहि ॥ २ ॥ तद्ब्रूहिसर्वंमेविज्ञसर्वशा
स्त्रार्थवित्प्रभो ३ नारदउवाच साधुपृष्टंत्वयाता
तशृणुष्वैकाग्रमानसः इतिहासकथांदिव्यां
कथ्यमानांपुराभवाम् ॥ ४ ॥

अब तुलसी चढानेका माहात्म्य पद्मपुराणके कार्तिक माहात्म्य मैं पृथुनारदके संवाद करकैं कथन करतेहैं ॥ पृथुराजा नारदजी केप्रति कथन कर्ताभया हेऋषे भक्तोंकी पीडा नाश करने वाले विष्णुजीकों यज्ञदान व्रततीर्थ स्नानादि तुलसीके वनकी सेवाक कैं सारेही आराधन करतेहै ॥ १ और विष्णुकी प्रीति करने वाले और विष्णुकी सान्निध्यताके कारण जो व्रतदानादिसारे हिजिसएक कर्मकों करकैं तिन सभनोंके करनेका फलहोता है ॥ २ ॥ हेप्रभो सभनों शास्त्रोंके अर्थजानने वाले हेविज्ञएह सभी मेरे प्रति कहो ॥ ३ ॥ इतना वाक्य श्रवण करकैं नारदजी कथन करतेभये हेतात वडी अछी वात पूछीहै अवएकाग्र मनवा ला होके श्रवणकर इसबातमैं पूर्व होई हुई दिव्यकथा कथन करी होई श्रवण कर ॥ ४ ॥

कांचीपुर्य्यांपुराचौलश्चक्रवर्तीनृपोभवत् यस्य
नाम्नैवतद्देशाश्चौलाःस्फीताःकिलाभवन् ॥ ५
यस्मिञ्छासतिभूचक्रेनदरिद्रोनदुःखितः पाप
वुद्धिः सरुग्वापिनैवकाश्चिदभून्नरः ६ ॥ यस्या
प्यनंतयज्ञस्यताम्रपर्ण्यास्तटावुभौ सुवर्णयूप
शोभाढ्यावास्तांचक्ररथोपमौ ॥ ७ ॥ सकदा
चिदगाद्राजाह्यनंतशयनंमुने यत्रासौजगतां
नाथोयोगनिद्रामुपासते ॥ ८ ॥

पूर्वं एकसमयकांचीपुरीमैं चौलनाम कर्के चक्रबर्ती राजाहोता
भया जिसके नामकर्के उोह देशभी चौलनामकर्के प्रसिद्धहोतेभ
ये ॥ ५ जिसराजाके भूचक्र कों शासना कर्तेहोए दरिद्री और
दुखी कोईनहि होताभया और पाप वुद्धि वाला अर रोगीभी
कोईनहि होताभया ॥ ६ ॥ जिसअनंत यज्ञके ताम्रपर्णी के दो
नौंकिनारे चक्ररथकी उपमा वाले सुवर्णके यूपोंकी शोभाकर
युक्त होतेभये ॥ ७ ॥ हेमुने सोराजा एकसमय अनंतशयन जी
के जाताभया जहां एह भगवान् जगतके स्वामि योगनिद्रा
कर्तें हैं ॥ ८ ॥

तत्र श्रीरमणंदेवंसंपूज्यविधिवन्नृपः माणि
मुक्ताफलैर्दिव्यैः स्वर्णपुष्पैश्चशोभनैः ॥ ९ ॥
प्रणम्यदंडवद्भूमावुपविष्टः सतत्रवै तावद्ब्राह्म
णमायांतमपश्यद्देवसान्निधौ ॥ १० ॥ देवार्चना
र्थमायातंतुलस्युदकपाणिनं स्वपुरीवासिनंत
त्रविष्णुदासाह्वयंद्विजम् ॥ ११ ॥ तत्राभ्यर्च्यस
देवर्षिर्देवदेवंजनार्दनम् विष्णुसूक्तेनसंस्नाप्य
तुलसीमंजरैर्जलैः ॥ १२ ॥ तुलसीपूजनात्तस्य
रत्नपूजातिरस्कृता आच्छादितांसमालोक्य
राजाक्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥ १३ ॥

तहां श्रीरमण देवताजी कों शास्त्रोक्तविधिसें सो राजा शो भायमान स्वर्ण के पुष्प मणियां मोति दिव्य भूषणों के साथ पूजा कर्के ॥ ९ ॥ दंडवत् भूमिमैं प्रणाम कर्के तहां पासही बैठ जाता भया इतने मैं एक ब्राह्मण कों सामग्री हाथमैं लिये होए कों राजा देखता भया विष्णुजीके पासमैं ॥ १० ॥ देवता की पूजा करने कों आया तुलसी जलका कमंडलु हाथमैं लिये होए अपनी पुरीमैं ही निवास करने वाले विष्णुदास कों देखता भया ॥ ११ ॥ तहां सो ब्राह्मण देवतेयों के देवता जनार्दन जीकों विष्णुसूक्तके साथ स्नान कराके फिर तुलसीकीयां जोमिंजरां तिनकेसाथ शृंगार कर्ता भया ॥ १२ ॥ परंतु तुलसी की पूजा सें रत्नों की पूजाका शृंगार आच्छादित होगयातो क्रोध कर राजा कहता भया ॥ १३ ॥

राजोवाच ॥ सुवर्णमणिमुक्तादिशोभाढ्यार्चा कृतामया विष्णुदासकथंसेयमाच्छन्नातुलसी दलैः ॥ १४ ॥ विष्णुभक्तिंनजानासिवराकोसि मतोमम यस्त्वमामतिशोभाढ्यांपूजयाच्छाद यस्यहो ॥ १५॥ इतितद्वचनंश्रुत्वासक्रोधःसद्वि जोत्तमः राज्ञःगौरवमुल्लंघ्यजगादवचनंतदा ॥ १६ ॥ विष्णुदासउवाच ॥ राजन्भक्तिंनजा नासिगर्वितोसिनृपश्रिया किंचिद्विष्णुव्रतंस म्यकृत्वयाचीर्णंवदस्वतत् ॥ १७ ॥

राजा बोला हेद्विज सुवर्ण मणियां पुष्पादियों के साथ शोभायुक्त मैंनेपूजा करी होई थी सो तैंने तुलसी दलों के साथआच्छादित करी है क्या ढक दीहै ॥ १४ ॥ निर्धनहैं और विष्णुकी भक्ति नाहिं जानताहैं कैसी होतीहैं किसतरां जो इस अतिशोभाकर युक्तकों पूजाके साथ ढकादियाहै ॥ १५ ॥ ऐसा तिसका वचन सुनकर क्रोधके सहित ब्राह्मण राजा की वडेयाई कों भी उलंघन कर वाक्य कहता भया तिस समय॥ १६ ॥ विष्णुदास बोला हेराजन् तूंराज्य लक्ष्मी करके मस्तहैं भक्तिकों नाहिंजानता हैं अच्छा जेकर तैंने कोंई पीछे विष्णुव्रत कराहैं तद कथन कर १७

नारदउवाच ॥ तद्ब्राह्मणवचःश्रुत्वाप्रहस्यसनृ
पोत्तमः विष्णुदासंततोगर्वादुवाचवचनंद्विजं
१८ ॥ इत्थंचेद्वदसिविप्रविष्णुभक्त्यातिगर्वि
तः भक्तिस्तेक्रियतेकेनदरिद्रेणाधनेनच १९
यज्ञदानादिकंचैवविष्णुतुष्टिकरंस्मृतम् ना
पिदेवालयंविप्रकृतंपूर्वंत्वयाक्वचित् २० ॥ ई
दृशस्यापितेगर्वएषस्तिष्ठतिभक्तिजः तच्छृण्वं
तुवचोमेद्यसर्वेप्येतेद्विजोत्तमाः २१ ॥

नारदजी कथन कर्तेहैं हेराजन् सो नृपोत्तम चौल राजा तिसब्रा
ह्मणका बचन सुनके हास्य कर तिससें उपरंत विष्णुदास ब्रा
ह्मण कों गर्वसें वाक्य कहता भया १८ ॥ हेविप्र बिष्णुकी भ
क्ति कर्के बडा गर्वित हैं जोतूं ऐसे कहता हैं परंतु तैंने निर्ध
न दरिद्रि ने क्या भक्ति करणी हे १९ ॥ विष्णुकी प्रसन्न
ता करने वाले यज्ञदाना दि कर्म कहे हैन हेविप्र कहीं तैंने
अब तक देवता का मंदिर नहि वनाया हैं २० ॥ इस तरां
के दरिद्र भावतें भी तेरेकों भक्तिसें गर्व वना हुया हैं हेद्वि
जोत्तमाः सारे हो तुम मेरा वचन सुनो- २१ ॥

साक्षात्कारमहंविष्णोरेषवाशुगमिष्यति ततः
सर्वेपिपश्यंतुभक्तिंममतवापिहि २२ ॥ इत्यु
क्त्वासनृपोगच्छन्निजंराजगृहंनृप आरेभेवैष्णवं
सत्रंकृत्वाचार्यंतुमुद्गलम् २३ ॥ ऋषिसंघस
माघुष्टंवह्वृचंवहुदक्षिणम् यद्ब्रह्मकृतंपूर्वंगया
क्षेत्रेसमृद्धिमत् २४ ॥ विंष्णुदासोपितत्रैवत
स्थौदेवालयेव्रती पंचैतान्नियमान्कृत्वाविष्णु
तुष्टिकरान्सदा २५ ॥

साक्षात्कार विष्णु के एह ब्राह्मण जाता है वामैं जाताहुं एह सारे ब्राह्मण मेरी भक्ति कों और इस की भक्ति कों देखें २२ ॥ हेराजन् ऐसा कहके सो राजा अपने घरों मैं चला गया तहां जाके मुद्गलजी कों आचार्य वनाय कर वैष्णव यज्ञ का आरंभ कर्ता भया २३ ॥ कैसा यज्ञ है ऋषियों के समूह कर्के युक्त अर वह्वृच और वहुतहैं दक्षिणा जिसमैं फिर कैसा हैं जैसें गया क्षेत्रमैं समृद्धि वाला पूर्व समय ब्रह्मा ने किया तिस की न्यांईहै २४ और सो विष्णुदास विष्णु व्रत धारण कर्के तिस मंदिर मैं ही स्थित होजाता भया क्या कर्के विष्णु की प्रसन्नता करने वाले पांच नियम धारण कर्के २५ ॥

माघोर्जयोर्व्रतंसम्यक्कुलसीवनपालनं एकाद
शीव्रतंजप्यंद्वादशाक्षरविद्यया २६ उपचारैः
षोडशभिर्गीतवादित्रमंगलैः नित्यंविष्णोस्त
थापूजांव्रतान्येतानिसोकरोत् २७ नित्यंचसं
स्मरन्विष्णुंगच्छन्भुंजन्स्वपन्नपिसर्वभूतस्थितं
विष्णुमपश्यत्समदर्शनः २८ ॥ कदाचिद्वि
ष्णुदासोथकृत्वानित्याविधिंनृप पाकंचाप्यक
रोत्तावद्दहरत्कोप्यलक्षितः २९ ॥

और माघ महीने के और कार्तिक महीने के व्रत तुलसी
के वन का पालन एकादशी का व्रत और द्वादशाक्षर बि
द्याका जप २६ ॥ षोडशोपचार पूजन विष्णु पदोंका गाय
न वाजे वजानें मंगल कृत्य करने विष्णु की पूजा इत्या दि
नियम सो कर्त्ता भया २७ ॥ और नित्यं प्रति विष्णु का च
लते फिरते बैठे भोजन कर्त्ते शयन करे होए स्मरण कर्ते
रहना और सारे जीवोंमैं हरिको देखना अर हरिमें सभजीव
देखने इसतरां का समदर्शी होताभया २८ हेंनृप एकदिनवि
ष्णु दास नित्य विधि कों कर्के भोजन वना वता भया इतने
मैं अलिक्षत होके कोई भोजन कों हरता भया २९ ॥

तमदृष्ट्वाप्यसौपाकंपुनरेवाकरोन्नहि सायंका
लार्चनस्यासौव्रतभंगभयादिव ३० ॥ द्वितीये
ह्नितत: पाकंकृत्वायावत्सविष्णवे उपहार्थ्या
र्पणंकर्त्तुंगत:कोप्यहरत्पुन: ३१ ॥ एवंसप्त
दिनंतस्यपाकंकोप्यहरन्नृप तत:सविस्मय:सो
थमनस्येवंव्यचारयत् ३२ ॥ अहोनित्यंस
मभ्येत्यपाकंकोहरतेमम क्षेत्रसंन्यासिन:स्था
नंनत्याज्यंममसर्वथा ३३ ॥

तद आकर देखने लगा तो भोजन नहि देखा. तो फिरसायं
काल पूजाके भंग होने के भयसें नहि वना वता भया ३० ॥
दूसरे फिर दिन उसीसमय भोजन वनायके पूजाके नैवेद्यके लि
ये ठाकुर जी कों लेने गया तद फिर अलक्ष्य रूप होके कि
सीनें हरलिया ३१ हेराजन् इसी तरां कोई सात दिन पर्यंत
भोजन तिसका हरलिये जाता भया तद सो विस्मय कर युक्त
मनमैं ऐसा विचार कर्ता भया ३२ ॥ वडा आश्चर्यहै कौन आ
के नित्यं प्रति भोजन चुराके लेजाताहै संन्यासियों का एह क्षेत्र
है मेरेकों त्यागना भी नहि चाहिए ॥ ३३

पुनःपाकंविधायान्नंभुज्यतेयदिवामया सायंका
लार्चनंविष्णोःपरित्याज्यंकथंमया ३४ मया
पाकंविधायैवंभोक्तव्यंचकथंभवेत् अनिवेद्यह
रौसर्वैर्वैष्णवैर्नतुभुज्यते ३५ उपोषितोहंचकथं
तिष्ठाम्यत्रव्रतेस्थितः अद्यसंरक्षणंसम्यक्पाक
स्यात्रकरोम्यहम् ॥ ३६॥ इतिपाकंविधायासौ
तदैवालक्षितः स्थितः तावद्ददर्शपुरुषं पाका
न्नहरणेस्थितम् ॥ ३७ ॥ क्षुत्क्षामंदीनवदनम
स्थिचर्मावशेषितं तमालोक्यद्विजाग्र्योभू
त्कृपयान्वितमानसः ॥ ३८ ॥

जेकर फिर भोजन वनाके भोजन कर्ताहुं तद विष्णु भगवानकी पूजा सायकाल समयकी किसतरां त्यागनीहै ३४ ॥ और जे कर ऐसेही पाक वनाके विष्णुकों नैवेद्य लगाये विना कैसें खाणा है सो वैष्णवो ने नहि खाणा योग्यहै ॥ ३५ ॥ और उपोषित कया विना भोजन खाये व्रतमैं स्थित होएआ हुया कैसें स्थित होआंगा अछा आज भोजनकी रक्षा करूंगा ॥ ३६ ॥ ऐसानिश्चय कर्के भोजन वनाया और छिपकर्के स्थित होगया तद इतनेमैं भोजन चुराने मैं युक्त होए हुए एक पुरुष कों देखता भया ॥ ३७ ॥ कैसा पुरुष क्षुधा कर्के कृश दीन मुखवाला अस्थियां चर्ममात्र शेष रहाहुया ऐसे तिसकों देखकर सोब्राह्मण कृपा युक्त होता भया ॥ ३८ ॥

विलोक्यान्नहरं विप्रस्तिष्ठतिष्ठेति चाब्रवीत् कथं भवान्नीरूक्षं घृतमेतद्गृहाण भो ३९ इत्थं ब्रुवाणं विप्राग्र्यमायांतं स विलोक्य च भीत्या वेगाद्धावत्समूर्छितः स पपात ह ४० विभीतं मूर्छितं दृष्ट्वा पुरुषं स द्विजोत्तमः वेगादभ्येत्य कृपया स्ववस्त्रांतैरवीजयत् ४१ अथोत्थितं तमेवासौ विष्णुदासोऽव्यलोकयत् साक्षान्नारायणं देवं शंखचक्रगदाधरम्॥ ४२ ॥

भोजन चुराने वाले ब्राह्मणकों देखके कहता भया खडा हो२ कैंसे रूक्ष भोजन करेंगा घृतभीलेजा ॥ ३९ इसप्रकारके वचन कहते होए विप्राग्र्य श्रेष्ट ब्राह्मणकों और अपने पीछे आवते होएकों देखकर वडेतिसके भयसें वेगकर दौडता २ सो पुरुष मूर्छित होकें गिड पडताभया ४० तो सो ब्राह्मण भयकर्के युक्त अर मूर्छाकों प्राप्तहोएहुएको देखकर वडेंवेगसें तिसके पासप्राप्त होकर कृपा कर्के वस्त्रके अंतसाथ वीजन कर्ताभया क्या झोलताभया ॥ ४१ ॥ तो इससें उपरंत चैंतन्यता कों प्राप्तहोनेसें उपरंत ऊढखडें होए हुए तिसकों देखता भया क्या शंख चक्र गदा पद्म के धारण करने वाले साक्षात् नारायण जी कों देखता भया ॥ ४२ ॥

पीतांबरंचतुर्वाहुंश्रीवत्सांककिरीटिनं अतसी
पुष्पसंकाशंकौस्तुभोरः स्थितंविभुम् ॥ ४३ ॥
तंदृष्ट्वासात्त्विकैर्भावैरावृतोद्विजसत्तमः स्तोतुं
चापिनमस्कर्त्तुंतदालंनवभूवसः ॥ ४४ ॥ अथ
शक्रादयोदेवास्तथैवाभ्याययुस्तदा गंधर्वाप्स
रसश्चापिजगुश्चननृतुस्तदा ॥ ४५ ॥ विमान
शतसंकीर्णंदेवर्षिगणसंकुलं गीतवादित्रनिर्घो
षस्थानंतच्चाद्भुतंह्यभूत् ॥ ४६ ॥

फिर कैसे हैन पीले वस्त्र जिनके चार भुजों कर युक्त श्रीवत्स के चिह्न वाले किरीट मुकुट धारण कराहुया और अलसी के पुष्पकी न्यांई शोभा जिनकी और कौस्तुभ मणि है हृदयमैं स्थित जिनके ऐसे विभुकों ॥ ४३ ॥ देखके द्विज सत्तम सात्विक भावों करके युक्त होता भया और स्तुति करने कों नमस्कार करने कों तिस समयसमर्थ नाहिं होता भया ॥४४ इतने मैं शक्रादिक देवता उहां मैंही सारे चले आवते भये और गंधर्व अप्सरां एहसभ गायन कर्ते भये और नृत्य कर्ते भये ४५ और सोस्थान सैकडे विमानों कर भरगया अर देवर्षियों करके युक्तहोता भया और गायनके वाजयों के शब्द होते भये ऐसा स्थान तिस समैं अद्भुत रूपवाला होता भया ४६ ॥

ततोविष्णुःसमालिंग्यस्वभक्तंसात्त्विकव्रतं सा
रूप्यमात्मनोदत्त्वानयद्वैकुंठमंदिरं ४७ विमा
नवरसंस्थानंगच्छंतंविष्णुनासह दीक्षितश्चौ
लनृपतिर्विष्णुदासंविलोक्यच ॥ ४८ ॥ स्वगु
रुंमुद्गलंवेगादाहूयेत्थंवचोब्रवीत् चौलउवाच ॥
यत्स्पर्धया.मयाचेदंयज्ञदानादिकंकृतं सविष्णु
रूपधृग्विप्रो यातिवैकुंठमंदिरम् ॥ ४९ ॥ दी
क्षितेनमयासम्यक्सत्रेऽस्मिन्वैष्णवंकृतं हुतम
ग्नौकृताविप्रादानाद्यैः पूर्णमानसाः ॥ ५० ॥

तिससें उपरंत विष्णु भगवान् सात्विक व्रतों वाले अपने भक्त कों आलिंगन कर क्या गलके साथ मिलाय के अपनी सारूप्य मुक्तिकों देकर वैकुंठ मंदिरमैं लेजाते भये ॥ ४७ ॥ उससमय श्रेष्ट विमानमैं स्थित विष्णु भगवानूजी के साथ जाते होएकों देख कर दीक्षा मैं वैठा हुया चौलराजा वडी शीघ्रतासें अपने गुरु मुद्गलजी कों वुलाय कर इसप्रकार वचन कहता भया ४८ ॥ चौलराजा कहताभया हेगुरो जिसकी स्पर्धा कर इसप्रकारके यज्ञदानादि करेहैं सो व्राह्मण विष्णुकारूप धारे होए वैकुंठ मंदिरमैं जाताहै ॥ ४९ ॥ और दीक्षित होए मैने क्या यज्ञमें बैठे होए मैंने वैष्णव कर्मकियाहै अग्नि मैं हवन करेहैं और दानादिकर्के व्राह्मणोंके मनोरथ पूर्ण करेहैं ५०

नैवाद्यापिसमेदेवःप्रसन्नोजायतेध्रुवं भक्त्यैवत
स्यविप्रस्यसाक्षात्कारंददौहरिः ॥ ५१ ॥ त
स्माद्दानैश्वयज्ञैश्चनैवविष्णुःप्रसीदतिभक्तिरेव
परंतस्यनिदानंदर्शनेविभोः॥५२॥ नारदउवा
च ॥ इत्युक्त्वाभागिनेयस्यचाभ्यषिंचन्नृपासने
आवाल्याद्दीक्षितोयज्ञेह्यपुत्रत्वमगाद्यतः ५३
तस्मादद्यापितद्देशेसदाराज्यांशभागिनः यज्ञ
वाटयांततोभ्येत्यवह्नि कुंडाग्रतःस्थितः ॥ ५४
त्रिरुच्चैर्याजहारासौविष्णुंसंवोधयन्निव वि
ष्णोभक्तिंस्थिरांदेहिमनोवाक्कायकर्मभिः ५५

और सो देवता आज तक मेरेपरप्रसन्न भी नहिहोए और तिसब्रा
ह्मणकिभक्ति कर्के तिसकों साक्षात्कर देतेभये नारायणजी ५१ ति
सकारणसें जानलियाहै कियज्ञदान ब्रतोंकर्के विष्णु प्रसन्न नहि
होताहै तिस भगवान् के दर्शनमें भक्तिही कारणहै॥५२॥ नारद
जी कहतेहैं हेराजन् इसप्रकारकथन कर्के सोराजा अपनी भगि
नीके पुत्रकों राज्यासन मै अभिषेक कर्ताभया क्याराज्य तिलक
तिसकों दताभेया क्योंकि वाल्यावस्थासें लेके यज्ञमें दीक्षित
था इसकारणसें तिसके संतान नहिंथी ॥५३ ॥ और तिसका
रणसें आज तकर उसदेश मैं भागिनेयही राज्यांश के भागीहै
उससें उपरंतराजा यज्ञवाटिमैं प्राप्त होकरहवन कुंडके आगे स्थि
तहोके ५४ तीनवार ऊंचे विष्णुकों वुलावता हुयाकहताभया
हेविष्णो मन वाणी कर्म कर्के अपनी स्थिर भक्तिदे औरमहि
मांगताहूं ॥ ५५ ॥

इत्युक्त्वासोपतद्वह्नौसर्वेषामेवपश्यतां मुद्गल
स्तुतदाक्रोधाच्छिखामुत्पाटयत्स्वकाम् ५६ ॥
ततस्त्वद्यापितद्गोत्रेमौद्गलाश्चाशिखाभवन् ता
वदाविर्भवद्विष्णुःकुंडाग्रेभक्तवत्सलः ॥ ५७ ॥
तमालिंग्यविमानाग्र्यं समारोहयदच्युतः ॥
ततोदत्त्वात्मसारूप्यंवैकुंठमनयद्विभुः ॥ ५८ ॥
योविष्णुदासः सतुपुण्यशीलो यश्चौलभूपः
ससुशीलनामा एतावुभौतत्समरूपभाजौ
द्वास्थौकृतौतेनरमाप्रियेण ॥ ५९ ॥ इतिश्रीप
द्मपुराणेकार्तिकमाहात्म्येविष्णुदासचौलोपा
ख्यानेतुलसीमहिमवर्णनम् ॥

ऐसा कहके सभनों केदेखते२सोराजा अग्निमें डिग पडता भया और मुद्गल ऋषि उससमय क्रोधसें अपनी शिखा पुटता भया ५६ तिससें उपरंत आजतकर मुद्गल गोत्रके अशिख होतेभये इतने मेंकुंडके आगेविष्णु भगवानूजी प्रगट होतेभये ५७ और भक्तवत्स ल तिसकों आलिंगन करके विमान पर विठाय लेतेभये औरअप नी सारूप्य मुक्ति देकर विभु परमेश्वरजी वैकुंठमें ले जातेभये ५८ उहां जाके जो विष्णुदास था सोपुण्यशील हुया और जोचो लराजाथासोशील नामा द्वारपालहुया एहदोनं परमेश्वरके समा नरूपवाले होतेभये औरमाप्रियभगवानूजीनेदोनो द्वारपालवनाए ५९ एह पद्मपुराणके कार्तिक माहात्म्यमें विष्णुदास और चोर राजाके उपाख्यानमें तुलसीकीमहिमाका वर्णनसमाप्तहुयाहै ॥

अथविष्णोरुपरिदूर्वार्पणमाहात्म्यम् ॥ वि
ष्णुरहस्ये दूर्वांकुरंहरेर्यस्तुपूजाकालेप्रयच्छति
पूजाफलंशतगुणंसम्यगाप्नोतिमानवः ॥ १ ॥
स्कांदे गृहदूर्वामयैःपुष्पैःतथाकाशकुशो
द्भवैः भूधरंसमलंकृत्यविष्णुलोकंव्रजेन्नरः
॥ २ अथविल्वार्पणमहिमा ॥ सकृदभ्यर्च्यगो
विंदंविल्वपत्रेणमानवः भक्तिभागीनिरातं
कःकृष्णस्यानुचरोभवेत् ॥ १॥ स्कंदपुराणे
विल्वपत्रेणयःकृष्णंकार्त्तिकेकलिनाशने पूज
येत्तुमहाभक्त्यामुक्तिस्तस्यमयोदिता ॥२

अव विष्णुके ऊपर दूर्वा चढाने का माहात्म्य लि० विष्णुरह
स्यमैं ॥ हरिनारायण जी की पूजा के समय जो दूर्वा चढाव
ताहै सो मानव पूजासैं सौ गुणा अधिक फलकों प्राप्त होताहै
१ ॥ स्कंदमैं लि० घरकीयां दूर्वा कर्के और पुष्पों कर्कै उौर
काई कुशा कर्के गिरिधारीकों अलंकार कर विष्णुके लोकमैं
जाताहै ॥२ अव विल्वपत्र चढाने की महिमा लि० ॥ एकवा
र विल्व पत्रके साथ गोविंदजी का पूजन कर्के दःखोंसें रहित
होएआ हुया कृष्णजीका अनुचर होताहै १ स्कंदमैं लि० पा
पोंके नाश करने वाले कार्ति० महीने विल्वपत्र के साथ महा
भक्ति कर्कै मेरी पूजा करे सो मुक्तिका भागी होताहै ॥ २॥

नरसिंहपुराणे नरसिंहंचयोभक्त्याविल्वपत्रै
रखंडितैः सर्वपापविनिर्मुक्तःसर्वभूषणभूषितः
कांचनेनविमानेनविष्णुलोकेमहीयते ॥ १ ॥
अथशमीपत्रार्पणमाहात्म्यम् शमीपत्रैश्चयेदेवं
पूजयंत्यसुरद्विषं यममार्गमहाघोरंतैनिस्तीर्णं
तैस्तुनारद ॥ १ ॥ अथधात्रीफलपुष्पैर्वि
ष्णवर्चनमहिमा स्कांदे धात्रीवृक्षप्रसूनैश्चयो
र्चयेच्चक्रचिह्नितं पुष्पेपुष्पेश्वमेधस्यफलं प्राप्नो
तिनारद १ धात्रीपत्रैर्नवीनैश्चकोमलैर्हरिम
र्चयेत् यमलोकेमहाघोरेनवसंतिमहामुने २

नरसिंह पुराणमैं लि०॥नरसिंह जीकों अखंड विल्व पत्रों करकें जो भक्तिके साथ पूजन कर्ताहै सो सारे पापों करकें रहित संपूर्ण भूषणों करकें भूषित कांचन के विमान करकें विष्णुलोक मैं महिमा कों प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥ अब विष्णुके ऊपर जंडीके पत्र चढाने की महिमा लि०॥ जो पुरुष असुरों के द्वेषी देवताकों जंडीके पत्रोंके साथ पूजतेहैं हेनारद तिनोंने महाघोर यम मार्ग तरलियाहै ॥ १॥ अब आमलीके फल पुष्पोंके साथ विष्णु पूजाकी महिमा लि० ॥ आमली वृक्षके पुष्पोंकरकें जो चक्रके चिह्न वाले भगवान्‌जी का पूजन कर्ताहै हेनारद सो पुरुष एक २ पुष्पमैं अश्वमेधके फलकों प्राप्त होताहै १ और नवीन आमलीकें फलों करकें हरिकों पूजतेहैं हेमहामुने सो यमलोक मैं नहि निवास कर्तेहैं ॥ २ ॥

अथधूपमाहात्म्यं वामनपुराणे स्नानकालेतुदेवस्यअगुरुंदहतेनरः प्रविष्टनासिकारंध्रेपापंजन्मायुतंव्रजेत् ॥ १ ॥ नारसिंहे महिषाख्यंगुग्गुलंयआज्ययुक्तंसशर्करं धूपंददातिराजेंद्रनरसिंहायभक्तिमान् ॥ २ ॥ सधूपितःसदातुष्टःसर्वपापविवर्जितः अप्सरोगणयुक्तेनविमानेनविराजते वायुलोकंसमासाद्यविष्णुलोकेमहीयते ॥ ३ कृष्णागुरुसमुत्थेनधूपेनश्रीधरालयं धूपयेद्वैष्णवोयस्तुसमुक्तोनरकार्णवात् ४

अब धूपका माहात्म्य वामन पुराणसें लि० ॥ देवता विष्णुके स्नान करने के समय जो नर अगरकों दग्ध कर्ताहै और उस अगर धूपके नासिका रंध्रमें प्रवेश करे होए दश हजार जन्मोंके पाप दूर होतेहैं ॥ १ ॥ नारसिंहमें लि० ॥ महिष नामा धूप गुगलकों घृत शर्करा युक्त हेराजेंद्र जो भक्तिमान् पुरुष नरसिंह जीकों धुखावता है २ सो धूपित करे होए सर्वदाकाल प्रसन्न सारे पापों कर्के रहित अप्सरोंके गणों कर्के युक्त विमानमें विराज मान होताहै ॥ और वायु लोकमें प्राप्त होकर विष्णुलोकमें महिमाकों प्राप्त होताहै ॥ ३ और काले अगरके बने होए धूप कर्के श्रीधर जीकें मंदिरकों धूप देताहै क्या सुगंधि युक्त कर्ताहै जो वैष्णव सो नरक समुद्रसें मुक्त होताहै ॥ ४ ॥

क्रियायोगसारे यस्तुधूपांद्विजश्रेष्ठचंदनागुरुवासितं दद्यान्मुरारयेयस्तुद्रुतंसिद्ध्यंतिवांछितम्॥ ५ ॥ धूपंयोयच्छतिविप्रहरयेघृतवासितम् सगच्छेद्विष्णुभवनंविमुक्तःसर्वपातकैः ॥ ६ ॥ नारायणाययोधूपंदद्याद्गुग्गुलवासितं सयातिपरमंधामयत्सुरैरपिदुर्लभम् ७ ॥ पाद्मे यो ददातिहरेर्धूपंसकर्पूरंसकेसरं युक्तंमृगमदेनापिसगच्छेद्वैष्णवंपदम् ॥ ८ ॥

क्रियायोगसार मैं लि० ॥ हेद्विजश्रेष्ठ चंदन अगुरु कर्के वासित युक्त धूपकों मुरारि के तांई धूपित कर्ताहै तिसके वांछित शीघ्र सिद्ध होतेहैं ॥ ५ ॥ हेविप्र घृतके साथ वासित धूपकों हरिके तांई देताहै सो सारे पापोंकों कर्के मुक्त होएआ हुया विष्णु लोकमैं जाता है ॥ ६ ॥ और जो पुरुष नारायण के तांई गुग्गलका धूप देताहै सो परम धामकों जाताहै जोन सा धाम देवतयों कों भी दुर्लभहै ॥ ७ पद्मपुराणमैं लि० ॥ जो पुरुष हरिके तांई केशरके सहित धूप देताहै अर कस्तूरी के सहित सो पुरुष वैष्णव पद मैं जाताहै॥ ८ ॥

स्कंदपुराणे कृष्णागुरुंचधूपंचधूपयेत्केशवाग्र
तःसवैष्णवोनरोज्ञेयोविमुक्तोनरकार्णवात् ९
पाद्मेपातालखंडेगुग्गुलंघृतसंयुक्तंदद्यात्कृष्णा
यभक्तिमान्युक्तंसुगंधद्रव्येणसगच्छेद्धरिमंदि
रम् १० ॥ अथविष्णोर्नैवेद्यभक्षणेमाहात्म्यं
गारुडे पादोदकंपिबेन्नित्यंनैवेद्यंभक्षयेद्धरेः
शेषाश्चमस्तकेधार्याइति वेदानुशासनं उच्छि
ष्टमवशिष्टंचभक्तानांभोजनद्वयमिति ॥ १ ॥

स्कंधपुराणमैं लि०जोकाला अगर और धूप केशवजीके आगे
धूपितकर्ताहै सो वैष्णवपुरुष नरकसमुद्रोंसे मुक्त होएआ हुया
जानना ॥ ९ ॥ पाताल खंडमैं लि० गुग्गलका धूप कृष्णजीं
के तांई जो भक्तिमान् पुरुष घृतसंयुक्त और सुगंधि
द्रव्यके सहित देताहै सो हरिके मंदिरमैं जाताहै ॥ १० ॥
अव विष्णुके नैवेद्य भक्षणका माहात्म्य लि०॥ गरुडमैं कहाहै
हरिके पादोंका जल और नैवेद्य नित्यं प्रति भक्षण करे और
जो वाकी हाथमैं लगा हुया रह जावे सो मस्तक मैं धारणकरे
एह वेदकी आज्ञाहै और जो उच्छिष्टहै विष्णुका और जो
बाकी रिहा हुया एह दोनों भक्तोंके भोजन कहेहै ॥ १ ॥

हलायुधेस्कंदपुराणे नैवेद्यशेषतुलसीविमिश्रं विशेषतःपादजलेनसिक्तं योश्नातिनित्यंपुरतोमुरारेःप्राप्नोतियज्ञायुतकोटिपुण्यम् २ ब्रह्मांडे षड्भिर्मासोपवासैश्चयत्फलंपरिकीर्त्तितं विष्णोर्नैवेद्यसिक्तान्नंभुंजतांतत्फलंभवेत् ॥३॥ विष्णुधर्मोत्तरे मुकुंदाशितशेषंतुयोहिभुंक्तेदिनेदिने सिक्तेसिक्तेलभेत्पुण्यंचांद्रायणशताधिकम् ॥ ४ ॥

हलायुधमें लि०स्कंदपु०से०॥ नैवेद्यका जो शेषहै तुलसी के साथमिला हुया और विशेषकर्के चरणामृत कर्के युक्त जो नित्यंप्रति भोजन कर्ता है सो यज्ञों के अयुत कोटि पुण्यको प्राप्तहोताहै २ ब्रह्मांडमें लि० छे महीनेयोंके उपवास व्रतों कर्के जो पुण्यकहाहै सो चरणामृत कर्के सिंचित विष्णुके नैवेद्यभक्षणमें फलकहाहै ॥ ३ ॥ विष्णुधर्मोत्तरमें लि० मुकुंदजी के भोजन शेष को जोनित्यंप्रति भोजन कर्ताहै सोसिंचन करे होए मैंसो सें भीअधिक चांद्रायणका फल लभता है ॥ ४ ॥

नारदसंहितायां गौरींप्रति शिववाक्यं अग्निष्टो
मसहस्रैस्तुवाजिपेयशतैरपि यत्फलंलभतेदे
विविष्णोर्नैवेद्यभक्षणात् ॥ ५ ॥ क्रियायोग
सारे देहस्थजातिपापानिब्रह्महत्यायुतान्यपि
भुंजतो हरिनैवेद्यंदासीचवशगाभवेत् ॥६॥ भु
क्तिर्मुक्तिस्सुरश्रेष्ठदैवतैरपिदुर्लभा संपूज्यकम
लाकांतं किंचिन्नैवेद्यमात्तियः ॥ ७ ॥

नारद संहितामें लि० गौरिकें प्रति शिवजी का वचनहै ॥ हजा
रं अग्निष्टोमों कर्के सैकडे वाजिपेयों यज्ञों कर्के हेदेवि जो पुण्य
होताहै सो विष्णुके नैवेद्यभक्षणसें होता है ५ क्रियायोगसारमें
लि० हरिकानैवेद्य खाने वालोका देह आयुतब्रह्महत्या कर्के युक्त
भी पापोंकोंत्यागता है और दासीवशीभूतहोतीहै ६ हेसुरश्रेष्ठ भु
क्तिमुक्ति देवतेयोंने भी वडी दुर्लभहै परंतु कमलाकांतजी कों पू
जन कर्के थोडा जो नैवेद्य भक्षण कर्ताहै तिसकों थोडे चिर का
ल कर्के विष्णुजी अपने तनुके प्रति लेजातेहैं ॥ ७ ॥

अचिरेणैवतंविष्णुर्नयतेस्वांतनुंप्रति नैवेद्यस्य
महाविष्णोर्गुणांकिंकथयाम्यहम् ८ यद्भुंजतो
केशवोपिस्यादधीनोद्विजोत्तम इति ९॥ स्कां
दे भुक्ताकेशवनैवेद्यंकोटियज्ञफलंलभेत् ब्रह्मचा
रीगृहस्थश्ववानप्रस्थोयतिस्तथा विष्णोर्नैवे
द्यभोक्तास्यान्नात्रकार्याविचारणा ॥ १० ॥
सेतिहासं विष्णोर्नैवेद्यभक्षणमाहात्म्यं पद्म
पुराणे जैमिनिंप्रतिव्यासवाक्यम्

हेद्विजोत्तम महा विष्णुके नैवेद्यके क्या गुणकहीं जिसके भोजन
करतेहोए केशवजी अधीन होतेहैं ९ स्कंदमैं कहाहै केशवजीके
नैवेद्यकों भोजन करके क्रोड यज्ञका फललभताहै इसबिष्णु के
नैवेद्यकों ब्रह्मचारी गृहस्थी वानप्रस्थी संन्यासी एहसभ
भक्षणकरण वाले होवें इसमैं विचार नहिहै ॥ १०
इति हासके सहित विष्णुके नैवेद्य भक्षण का माहात्म्य पद्म
पुराणमैं लि॰ जैमिनीके प्रति व्यासदेवजी का वाक्यहै

व्यासउवाच अत्रतेकथयिष्यामिसेतिहासंपुरा
तनं विष्णोर्नैवेद्यमाहात्म्यंसर्वपापप्रणाशनम्
१ सेतिहासंपुनर्वच्मिशृणुविप्रसमाहितः पुरा
सीत्सुजनिर्नामब्राह्मणःशुद्धवंशजः२ शांतोदां
तोदयायुक्तोदेवब्राह्मणपूजकः हरिपूजापरश्चै
वहरिस्मरणतत्परः ३ याचकक्लेशविध्वंसीस
त्यवादीजितेंद्रियःप्रातःस्नायीनिजाचारग्राही
हिंसाविवर्जितः ४

व्यासदेवजी कथन करतेहैं हेऋषेइसमैं तेरेकों पुरातन इतिहास कथन कर्ताहुं कैसामाहात्म्यहै जिसमे सारे पापोंके नाशकरने वाला विष्णुके नैवेद्यभक्षणका माहात्म्यहै ॥ १ हे विप्र साव धान मनवालाहोकेतूं श्रवणकर इतिहास फिरतेरेकों कहताहुं पूर्व एक समय शुद्धवंशमैं उत्पन्न होएआ हुया सुजनि नाम करकें ब्राह्मणहोताभया २ कैसाकी शांतदांतमनवाला दया कर कें युक्त देवता ब्राह्मणोंका पूजक और हरिकी पूजाकरणेमैं त त्पर और हरिका स्मरण करनेवाला ३ ॥ फिरकैसा ओह ब्रा ह्मण याचनाकरने वालेयोंके जो क्लेशहै क्या दरिद्रता तिसकों दानदें २ कर दूरकरनेवाला और सत्यवादी और इंद्रियांजीत यांहोईयां जिसने और प्राताकाल स्नान करना अपने आचार धर्ममैं प्रवृत्त और हिंसा क्रोधकरके रहित ॥ ४ ॥

एकादशीव्रतरतोज्ञातिपूजापरायणः कदाचि
त्सद्विजश्रेष्ठःस्वप्नेचक्षतकेशवम् ५ श्यामं
विकचपद्माक्षंस्मेरास्यंपीतवाससं स्वर्णकुंडल
मंजीरकिरीटोज्वलविग्रहं ६ कौस्तुभोद्भासि
तोरस्कंवनमालाविभूषितं चतुर्बाहुंशंखचक्रग
दापद्मधरंप्रभुम् ७ समस्तलक्षणैर्युक्तंस्वर्णय
ज्ञोपवीतकं संप्राप्यदर्शनंस्वप्नेसविप्रोजग
तीपतेः कृतांजलिस्तमस्तौषीद्रोमांचिततनु
र्मुदा ॥ ८ ॥

और एकादशीके व्रतकरनेमैं तत्पर और जाति वांधवों का पालनकरना इसमैं युक्त ऐसा सो द्विज श्रेष्ठ एकसमय स्वप्नमैं केशवजीकों देखता भया ५ कैसे केशवजीकों जो श्याम मनोहर वर्ण वाले विकसित कमलपत्रोंकी न्यांई नेत्रजिनके और मंदहासयुक्त मुख जिनका और पीले वस्त्र जिनके फिरकैसेहैं स्वर्णके कुंडल मंजीरभूषण किरीट मुकुट इनके साथ उज्जलदेह जिनका ६ और कौस्तुभमणिकर्कै प्रकासितहै हृदय जिनका और वनमाला कर्कै भूषित चार भुजों वाले शंख चक्र गदा पद्म इनकों धारण वाले प्रभुहैं ॥७॥ फिर कैसेहैं सारे सुंदर लक्षणों कर्कै युक्तस्वर्णके यज्ञोपवीत वाले ऐसैं तिनकों प्राप्त होकर सो ब्राह्मण रोंम जिसके देहमैं खडे होगये ऐसा सोहाथ जोडकर जगतके पतिविष्णु जीको स्तुत कर्ताभया ॥८॥

सुजनिरुवाच तुभ्यंनमोस्तुजगतः सकलस्य भर्त्रेसल्लोकशोकभयरोगविनाशनाय नारायणायकमलाहृदयप्रियाय धर्मार्थकामपरमामृतदायनित्यम् ॥ ९ ॥ पापानिदेवसकलानिमयाकृतानिमत्तेनमोहवृतयासततंमुरारे तस्माद्बिभेमिजगदंबुनिधेर्गभीरान्मामुद्धरस्वनिजभक्तगतिप्रदाय ॥ १० ॥ जानामियद्यपिहरेदुरितंमनुष्योऽयंमोहमाशुलभतेभुविकैटभारे पापंतथापिचमुदासततंकरोतितस्मान्नकोप्यहमिवास्तिजनोविमूढः ॥ ११ ॥

सुजनि ब्राह्मण कहता भया॥सारे जगत के पोषण करने वाले तुमारे तांई नमस्कार होवेकैसे तुमहो श्रेष्ठ लोकांके शोक मोह भय रोग इनके बिनाश करने वाले हो फिर कैसेंके तांई नारायणजीके तांई और कमला क्या लक्ष्मीके हृदयके प्यारे और नित्यं प्राते धर्म अर्थ कामपरम अमृत क्या मोक्ष इनकों नित्यं प्रतिदेनेवाले ९ हेदेव मुरारे निरंतर मैंनें मोह वृत्तिकर सभतरां के पाप करेहैं हेभगवन् तिस संसार रूपी गंभीर गहरे समुद्रसें डरताहों अपनेभक्तोंकों गति देनेवाले तिससें मेरा उद्धार कर ॥ १० हेहरे जेकर पापोंकों जानताभीहों तदभी मनुष्य जोहे हेकैटभारे सो शीघ्र मोहकों लभताहै अर पृथिवीमैं तदभी पाप कर्ताहै वडे हर्षयुक्त तदभी मेरे जैसा दूसरा कोई मूर्ख नाहिंहै ११

पुण्यद्रुमःसुखफलंसहसैवधत्तेकिंवेत्तिनैवनृहरे
कृतपातकोऽहं पुण्यद्रुमार्पणविधौममनास्ति
चित्तनाथप्रसीदभगवन्किमहंकरोमि ॥ १२ ॥
त्वत्पादपद्मयुगलंपरमामृतंचसततंविहायमम
चित्तमधुव्रतोयं नारीमुखंव्रजतिदेवमृतिप्रदा
यिश्लेष्मप्रकीर्णमनिशंकमलभ्रमेण ॥ १३ ॥
पाणिःप्रदानरहितोऽनृतभाषिवक्त्रंकर्णौचपाप
वचनश्रवणायदक्षौ दोषानिमान्ममहरेहरसे
वकस्य यस्मान्ममात्मशरणागतदोषहर्तः १४

हेनृहरे पाप करने वालामैं किसतरां सुखकों प्राप्त होंआं क्यों की पुण्यका वृक्ष शीघ्र सखकों लभताहै और पुण्यके वृक्षलगानेमैं मेरा चित्त नहिंहै हेनाथ प्रसन्नहो मैं क्या करां ॥ १२ ॥ हेंभगवन् मेरा चित रूपी भ्रमर सर्वदाकालतुमारे चरणारविंद परम अमृत रूपी तिनकों त्यागकर मृत्यु देने बाले श्लेष्मसें भरे होंए स्त्रीके मुखकों कमलके भ्रमकर्के वारंवार जाताहै १३ ॥ हेदेव एह मेरे हाथ किसीकों कुछनहि दे सकतेहैंऔर मुखमेरा झूठकहताहै और कार्ण पापोंके वचन सुननेमैं चतुर है हेहरे इतने मेरदोष अपना सेवक जानकर दूरकरो जिसकारणसें आप शरणागतों के दोष दूर करनेवाले ॥ १४ ॥

संसारघोरजलधौनृहरेकदाचित्त्वद्भक्तिनौरिव
दृढाचरणाद्रिवद्धा तत्रापिदैववशतोजनिवेदुरा
शायातस्तथैवसततंममदुःखकालः १५ संसा
रपारगमनायनसत्पथोस्तिकिंसर्वदुःखरहितः
सदयःप्रशस्तः अंधीकृतस्यममभोहमहातमि
स्त्रादृष्टिर्नतेप्रतिकदापिच यातिविष्णो १६ पा
पात्मनोपिममचित्तमिदंमुरारे नष्टंविशिष्टजन
कष्टविनाशकारिन् यस्त्वांसमस्तसुरवंदितपा
दपद्मंस्वप्नेऽपिकेशिमथनस्यविभोः समीक्षे १७

हेनृहरे इसघोर संसार रूपी समुद्रमें दैववशतें भक्तिरूपी तुमा
री वेडी चरण रूपी पर्वतोंसें वांधीहोईहै तहां मेरि प्रारब्धवशतें
दुष्ट आशाउत्पन्न भईसो मेरे दुःखकासमय प्राप्त होएआ है १५हे
भगवन् संसार रूपी समुद्र के पारजाने वास्ते और कोई दुः
खोंसें रहित दयावाला श्रेष्ट मार्गनहिहै क्यौं कि महामोह रूपी
अंधकार कर्कें अंधी होइ होई मेरीदृष्टितुमारे प्रति कदीभी नहि
जातीहै १६ हेमुरारे हेभक्तमनुष्योंके कष्टविनाशकरनें वाले पापीं
आत्माका एहमेरा चित्तनष्ट होगयाहै क्योंकी जोसंपूर्ण देवत
यों कर्कें वंदना करा हुयाहै पादपद्म जिनका ऐसे जो केशिकें म
थन करने वाले विभु तुमहो तुमारा स्वप्नमें दर्शन कर्ताभया १७

व्यासउवाच ॥ इतितेनस्तुतोदेवोभगवा
न्कमलापतिः उवाचप्रहसन्वाक्यंसंसारा
र्णवतारकः ॥ १८ ॥ श्रीभगवानुवाच भक्तिभि
स्तवंविप्रेंद्रतुष्टोहंनित्यमेवच तस्मात्तवाचिरेणै
वसर्वंभद्रंभविष्यति ॥१९॥ ब्राह्मणउवाच को
हंतस्थौपुराविष्णोकिंवापापंमयाकृतं पापिनो
पिममोद्धारः कथंपूर्वंत्वयाकृतः ॥ २० ॥ संसा
रेपुनरेतस्मिन्पातितोहंकथंत्वया एतत्सर्वंप्र
भोब्रूहियतस्त्वंसदयः सदा ॥ २१ ॥

व्यासदेवजी कथन कर्तेभये इसप्रकार तिसने स्तुत करे हुये भगवा
न् कमलापति संसार समुद्रसें तारने वाले हसते २ वाक्य कह
तेभये ॥ १८ ॥ भगवान्‌जीकथन कर्तेहैं हेविप्रेंद्र भक्ति कर्के तैंने
नित्य ही मैं प्रसन्न कराहां इस कारणसे तेरेकों थोडे कर्के सभतरां
कीकल्याणहोवेगी १९इतना वचन सुनतेही ब्राह्मणबोला हेभग
वन् पूर्व जन्म मैं मै कौनथा औ्रर कौन मैनेंपापकरे पापिजोंमैंथा
मेराउद्धार आपने किसप्रकारकराहै ॥ २० ॥ औ्रर उससंसार मैं
किसप्रकार डिगायाहां औ्रर जिस कारणसें सदाआपदयालु रह
तेहोइसका कारण सर्वदा मेरेकों कहो ॥ २१ ॥

श्रीभगवानुवाच अप्रकाश्यमिदंगुह्यंयद्यपि
द्विजसत्तम तथापितववात्सल्यान्निगदामिनि
शामय ॥ २२ ॥ पुरात्वंब्राह्मणश्रेष्ठपक्षिवंश
समुद्भवः स्थितोसिभूमिभागेचानिजकर्मविपा
कतः ॥ २३ ॥ क्षुधयातृषयाचापिसततंव्याकु
लोभवान् वभ्रामभक्षयन्कीटांनिर्झरस्थोदकंत
था ॥ २४ ॥ नानादुःखंसदाभुंजन्पक्षियो
निसमुद्भवः चतुर्वर्षसहस्राणिस्थितोसित्वंपुरा
क्षितौ ॥ २५ ॥

इस प्रकारका वचन श्रवणकर भगवान् जी कहने लगे हेद्विजस
त्तम एहवात जेकर प्रगट करनेवालि भी नहिंहै और वडी गुप्तहै त
दभी अवतेरी इस वत्सलता प्रीतिसें कथन कर्ताहुं तूंश्रवणकर
२२ ॥ हे ब्राह्मणश्रेष्ट पूर्व जन्ममैं तूंपक्षियोंके वंशमैं उत्पन्न हो
एआ हुया अपने किसी कर्म के विपाक क्या फलसें भूमिभागपर
स्थितथा २३ और निरंतर क्षुधातृषा करकें व्याकुल तूं एकदिन
मैं कीडेयोंकों भक्षणकर्ता २ और झरनेका जलपानकर्ता २ फि
रेया कर्ताथा २४ तद पक्षियोंकी योनिमैं उत्पन्न होएआ हु
याअनेकतरोंके दुःखभोगता हुयाचार हजार वर्षपर्यंत पृथिवी
लोकमैं पूर्व तूंरहा ॥ २५ ॥

एकदावलभद्राख्योब्राह्मणःसर्वतत्त्ववित् पूज
यामासमांभक्त्यानैवेद्याद्यैर्नदीतटे २६ सम
भ्यर्च्यसविप्रेंद्रोममनैवेद्यतंडुलं ययौतत्रैवनि
क्षिप्यभूयएवनिजगृहम् २७ ततोवृक्षात्समु
त्पत्यक्षुधयापक्षिणात्वया ममनैवेद्यसंबंधिभ
क्षितंसर्वतंडुलम् २८ ॥ समस्तपातकध्वंसिम
मनैवेद्यमुत्तमं भुक्त्वैवसद्योमुक्तोसिपातकैरति
दारुणैः ॥ २९ ॥ कदाचित्प्राप्तकालस्तुकाल
धर्मंगतेद्विज त्वामानेतुंमयादूताः प्रेषिताः सु
रथान्विताः ॥ ३० ॥

एकदिन सब तत्वार्थों के जानने वाला बलभद्र ब्राह्मण मेरेकों नदीके किनारे भक्ति करके नैवेद्यादिकों के साथ पूजन कर्ताभया ॥ २६ सो विप्रेंद्र मेरा पूजन करके मेरे नैवेद्यके चावल तहां मैं हीसुट करके फिर अपने घरमें चलागया ॥ २७ उसके चलेगये होए पीछे वृक्षसें उछल कर क्षुधायुक्त पक्षीनें तेनेंमेरे नैवेद्यके तंडुल सारेही खाय लिये ॥ २८ तब समतरों के पाप विध्वंसन करने वाला मेरा उत्तम नैवेद्य तिसकों खाय कर तूंशीघ्रही अत्यंत दारुण पापों करके मुक्त होगया ॥ २९ ॥ हेद्विज कालधर्मके व्यतीत होने हुए तेरा मरणे का समयजब प्राप्त हुआ तब मैंने अपने दूत रथके सहित तेरे ल्याउने वास्तेभेज दिये ३०॥

ततोरथेसमारोप्यभवंतंनष्टकल्मषं सद्योदूत
गणाः सर्वेसमायाताःपुरेमम ॥ ३१ ॥ युगको
टिसहस्राणिस्थितोसिममसन्निधौ भुंजन्सुखा
निसर्वाणिदुर्लभानिसुरैरपि ॥ ३२ ॥ ततोजा
तोसिविप्रेंद्रदुर्लभेब्राह्मणालये तत्रापिममभ
क्तिस्तेजातातिसुदृढापुनः ॥ ३३ ॥ क्रियायोगे
नमांनित्यंसमाराध्यद्विजोत्तम आयुषोंतेमत्प्र
सादात्पापघ्नंपदमाप्स्यसि ॥ ३४ ॥

तिससें उपरंत नष्ट होगये पाप जिसके ऐसेतेरेकों रथमैं चढाय कर दूत मेरें शीघ्र ही मेरे पुरमैं तेरेकों साथ लेके आय प्राप्त भये ॥३१॥ तद क्रोड युग हजार मेरे समीप पुरके मध्यमैं स्थित रहा जो देवता लोकोंको दुर्लभ सुखथे तिन कों भोगता हुया ॥३२॥ तिससें उपरंत हेविप्रेंद्र दुर्लभ ब्राह्मणोंके घरमैं फिर तूं जन्मता भया तहां मैंभी तेरेकों दृढनिश्चय वालि मेरी भक्ति होती भई ॥ ३३ ॥ हेद्विजोत्तम अब क्रिया योग कर्कें मेरेकों नित्यंप्रति आराधन कर आयु के अंत मैं पापों के नष्ट करने वाले पद क्या स्थान कों प्राप्त होवेगा ॥ ३४ ॥

यस्यतुष्टोऽस्म्यहं विप्र सपापात्मापिमोक्षभाक्
कदाचिद्यस्यरुष्टोस्मिसपुण्यात्मापिदुःखभाक्
॥ ३५ तस्माद्ब्राह्मणभद्रंतेभक्तोसिममसुव्रत
दास्यामिपरमंस्थानंयदलभ्यंसुरैरपि ३६ ब्रा
ह्मणउवाच ॥ त्वत्प्रसादाच्छ्रुतंनाथपूर्ववृत्तां
तमात्मनःइदानींश्रोतुमिच्छामियत्किंचिद्ब्रूहि
तत्प्रभो ३७ कस्यतुष्टोसिदेवेंद्रकस्यरुष्टोसिवा
प्रभो महत्याकृपयासर्वमेतन्मेवक्तुमर्हसि ३८

हेविप्र जिसके ऊपर मैं प्रसन्न होआंसो पापात्माभी मोक्षकाभागीहोताहै और जिसके ऊपरकदीमैं क्रोधीहोजाऊं सोपुण्यात्माभी दुःखोंकाभागीहोताहै ३५ तिसकारणसें हेब्राह्मणतेरेकों कल्याणहोवे हेसुव्रत तूं मेराभक्तहैं मैं तेरेकों परमस्थान देताहुं जो देवतयोंकोंभीदुःख करकें लभनेयोग्यहै ३६ इतनावाक्य सुनतेंही ब्राह्मण वोला हेनाथ तुमारे प्रसादसें अपना पूर्वला वृत्तांत श्रवण कराहै हेप्रभो अवजो कुछ श्रवण करनेकी इच्छा करताहुं सो मेरेकों कथन करो ३७ हेदेवेंद्र वडीकृपा करकें आप किस पर प्रसन्न होतेहो और किसके उपर वडा क्रोध कर्तेहों एह सभी मेरे प्रति कथन करो ३८

श्रीभगवानुवाच कर्मणायेनविप्रेंद्रतुष्टिर्मेहृदि
जायते क्रोधश्चतत्समस्तंतेकथयामिसमासतः
३९ योदयावान्द्विजश्चसर्वभूतेषुसर्वदा अहं
कारेणहीनश्चतस्यतुष्टोस्म्यहंसदा ४०कर्मकु
र्वन्मदर्थंयोश्रद्धाभक्तिसमन्वितः ब्रूतेयथार्थंपृ
च्छंतंतस्यतुष्टोस्म्यहंसदा ४१ कर्माणिकुरुते
यस्तुसुविचार्य्यपुनःपुनःगोब्राह्मणहितंकुर्वंस्त
स्यतुष्टोस्म्यहंसदा ४२

ऐसा सुंदर वचन सुनके भगवानजी बोले हेविप्रेंद्र जिस कर्म करकें मेरे हृदय मैं प्रसन्नता होतीहै और जिस कर्म करकें मैं क्रोधी होताहुं सो साराही कारण संक्षेपसें श्रवण कर ३९ ॥ जोकोई ब्राह्मण सभनों जीवोंमें सर्वदा काल दया वाला होवे और अहंकार जिसके मन में न होवे तिसके ऊपर सदा होमैं प्रसन्नहां ॥ ४० ॥ और जोकोई श्रद्धा भक्तिकर्कें संयुक्त मेरे निमित्त कर्म कर्ताहै और पूछने वाले कों यथार्थ कहताहै तिसके ऊपर मैं प्रसन्नहां सर्वदाकाल ॥ ४१ ॥ और जो कोई पुरुष वारंवार विचार कर कर्मोंकों कर्ताहै और गौ ब्राह्मणोंका हित प्यार कर्ताहै तिसके ऊपर सदामैं प्रसन्न हां ॥ ४२ ॥

ददात्यनुपकारिभ्योयोददातिद्विजोत्तमे मयि चित्तंसदायस्यतस्यतुष्टोस्म्यहंसदा ४३ कर्म णायेनतुष्टोस्मिनिरुक्तंतत्समासतः रुष्टोस्मि कर्मणायेनविप्रवच्मिशृणष्वतत् ४४ ॥ परहिं सरतोयस्तुनिर्द्दयःसर्वकर्मसु अहंयत्सर्वदाक्रु द्धःसमांनयतिशत्रुताम्४५असत्यभाषीक्रूरश्च परनिंदाकरस्तुयः परवर्त्तनविध्वंसीसमांनय तिशत्रुताम् ४६ अदृष्टदोषौपितरौस्त्रीभ्राताभ गिनीतथा मोहात्त्यजतियोमूढःसमांनयतिश त्रुताम् ४७॥

जोपुरुष अनुप कारियोंकेतांई दानदेताहै और उत्तम ब्राह्मणकेतां ईं देताहै अर मेरेमैं चित्त मन लगाहुया जिसका तिसके ऊपर स दाप्रसन्नहां ४३ हेद्विज जिनकर्मों कर्के मैं प्रसन्नसदा रहताहुं सो संक्षेपसैं कहदियेहैं और जिनोंकर्मोकेकरेहोए मैंरोषीक्याक्रोधी होताहुं सोसुन ४४ जोपुरुष हिंसा करनेमैं तत्पर रहताहै और सभतरोंके कामोंमैं निर्द्दयहै और अहंकारीहै जोसर्वदा काल क्रोध युक्तरहताहै सोपुरुष अपने शत्रुभावकों मेरेमें प्राप्त कर्ताहै ४५ और झूठकहने वाला अर क्रूरस्वभाव वाला और पराई निंदाकरनेंमैं तत्पर और परायी वृत्तिके नाशकरनेवाला सोमेरे कों शत्रुभावमैं प्राप्त कर्ताहै ४६ और जोकोई विना दोषोंके देखे माता पिता स्त्री भ्राता भगिनी इनकों मोहसैं त्यागदेताहै सो मेरेकों शत्रुता मै प्राप्त कर्ताहै ४७

पितुर्निर्भर्त्सनंयस्तुकुरुतेमूढधीर्नरः गुरोरव
ज्ञांविप्रेंद्रसमांनयातिशत्रुताम् ४८ दंपत्योर्भेद
नंयस्तुहेतुमात्रेणकेनचित् कुरुतेब्राह्मणश्रेष्ठ
समांनयातिशत्रुताम् ४९ विप्रस्वंदेवताद्रव्यं
परद्रव्यंचमानवः हरतेयस्तुविप्रेंद्रसमांनयाति
शत्रुताम् ५० आरामच्छेदिनोयेचजलाशयवि
भेदिनःग्रामनाशकरायेचतेषांरुष्टोस्म्यहंसदा
५१

और जोकोई मूढ बुद्धि वाला पिताका अनादर कर्ताहै औ
र हेविप्रेंद्र गुरुयों की अवज्ञा कर्ताहै सो मेरेकों शत्रुतामै प्राप्त
कर्ताहै ॥ ४८ ॥ और जोकोई पुरुष किसीकारण करके स्त्रीपु
रुषका भेद क्याविछोडा कर्तेहैं हेब्राह्मण श्रेष्ठ सों मेरेकों शत्रुता
मैं प्राप्त कर्तेहैं ॥ ४९ ॥ हेविप्रेंद्र जो कोई ब्राह्मण का द्रव्य
देवताका धन वा और किसीका द्रव्य चुरावताहै सो मेरेकों
अपने शत्रुभावमैं प्राप्त कर्ताहै ॥ ५० ॥ और जो आराम क्या
बागोंका छेदन कर्तेहैं जलके स्थान भेदन कर्तेहैं और जोग्रा
मोंका नाश करने वालेहैं तिनके ऊपर सर्वदा कालमैं क्रोधी
रहताहुं ॥ ५१ ॥ ॥

दिवसेमैथुनंयेचकुर्वंतेकाममोहिताः रजस्वलां स्त्रियंयांतितेषांरुष्टोस्म्यहंसदा ५२॥ येचभ्र ष्टातुरांनारींमोहाद्गच्छंतिसत्तम व्रतस्थांचस दातेमांनयंतिभुविशत्रुताम्॥ ५३ अमावास्यां तिथौयेचकुर्वंतिनिशिभोजनं भोजनद्वयमेकार्कं तेषांरुष्टःसदास्म्यहम्॥ ५४॥ आमिषंमै थुनंतैलंह्यमावास्यादिनेद्विज नयेत्यजंतिविप्रं द्रतेषांरुष्टोस्म्यहंसदा॥ ५५॥

और जोकोई काम करके मोहित दिन विषें मैथुन कर्तेहैं और जोकोई रजस्वला स्त्रीसें गमन कर्तेहैं तिनके ऊपर मैं सर्वदा काल क्रोधवाला रहता हों॥ ५२॥ हेसत्तम जोपुरुष भ्रष्ट आ तुर स्त्री कोंमोहसें गमन कर्तेहैं और व्रत मैं स्थित जो स्त्री तिस के साथ गमन कर्ते हैं सोलोक पृथिवीमैं मेरी शत्रुता कों प्राप्त होतेहैं॥ ५३॥ और जोकोई अमावास्या तिथि मैं रात्रिमैं भोजन कर्तेहैं और एक अर्कमैं क्या एक सूर्यमैं दोवार भोजन कर्तेहैं तिनके ऊपर सदाक्रोध वाला रहता हों ५४॥ हेद्विज अमावास्या के दिन जो कोई मांस और मैथुन और तैल इन कों भोजन सेवन मर्दन कर्तेहैं तिनके ऊपर सदाक्रोध वाला रह ताहुं॥ ५५॥

बहुनात्रकिमुक्तेनसंक्षेपात्त्वदाम्यहं निंदंतिवै
ष्णवान्येचतेषांरुष्टोस्म्यहंसदा ॥ ५६ ॥ व्यासउवाच. इत्युक्त्वाभगवान्विष्णुरदृश्योह्यभवत्त
दा. सचविप्रःसमुत्तस्थौत्यक्तनिद्रस्तुमंचतः
॥ ५७ ॥ केशवोक्तेनवाक्येनसविप्रोहरिभक्ति
कृत् संत्यज्यसकलंकार्यंक्रियायोगरतोभवत्
॥ ५८॥ नारायणस्यनैवेद्यंभुंजतोपिफलंत्विदं
हरिपूजाकृतः पुंसोनजानेकिंभविष्यति ॥ ५९
समासेनब्रवीमित्वांशृणुसत्तमजैमिने सकृत्कृ
त्वाहरेःपूजांप्राप्यतेहरिमंदिरे ॥ ६० ॥

और इसमैं वहुत कहने कर्के क्या है संक्षेप सैं कह देताहुं जोपुरुष वैष्णवों की निंदा कर्ता है तिसके ऊपर सर्वदाकाल क्रोध बाला रहता हों ॥ ५६ ॥ इतनी कथा सुनाय फिर व्यासदेवजी कहने लगे. इसप्रकार कथन कर्के भगवान् विष्णुजी तिससमय अदृश्य होजाते भये क्या. छिप जाते भये तद सोब्राह्मण दूर होगई निद्रा जिसकी ऐसा मंजे के ऊपरसैं उठ खडा होता भया ॥ ५७ ॥ और केशवजीके कहेहोए वाक्य कर्के सो ब्राह्मण हरि भक्ति के करने वाला सारे गृहस्थ के काम त्याग कर्के क्रियायोग करनेमैं तत्पर होता भया ॥ ५८ ॥ देखो नारायण को नैवेद्य खानेकातो एह फल है और एह खबर नाहि की पूजा करनेवाले पुरुषको क्या फल होता होगा ५९ हेऋषियोंमैं श्रेष्ट जैमिने संक्षेपसैं तेरेको मैं कहता हुं कि एकवारभी हरि विष्णु कीपूजाकर्के विष्णु मंदिर मैंप्राप्त होताहै ॥ ६० ॥

मानुष्यंदुर्लभंलोकेपूजातत्रापिचक्रिणः भक्ति
स्तत्रापिविप्रेंद्रदुर्लभापरिकीर्त्तिता ॥ ६१ ॥
संसाराब्धिं दुःखपूर्णंत्वपारंतर्त्तुंवांछायस्यचि
त्तेस्तिपुंसः भक्त्यानित्यंवासुदेवस्यपूजांकुर्या
न्नित्यंकर्मणासोऽखिलेन ॥ ६२ ॥
इतिश्री पद्मपुराणे क्रियायोगसारे नैवेद्यभक्ष
णमहिमवर्णनम् ॥

हेऋषे संसार मैं मनुष्य जन्म वडा दुर्लभहै उस मनुष्य जन्म मैं भगवान्जीकी पूजा दुर्लभहै और उस पूजामैं भी भक्ति वडी दुर्लभ कथनकरीहै ॥ ६१ ॥ हेजेमिने जेकर दुःखों कर्के भरे होए अर पारसेंरहित संसार समुद्रकों तरनेकी इच्छा है और जिसके चित्तमैंएह इच्छाहै संसार समुद्रसें पार हो जाहुं सोपुरुष भक्तियुक्त नित्य संपूर्ण कर्मों कर्कें वासुदेवजी की पूजाकरे६२॥एह श्रीपद्मपुराण के क्रियायोगसार मैं नैवेद्य के भक्षण का माहात्म्य कहा है ॥

भक्तमालायांसेतिहासनैवेद्यमाहात्म्यवर्णनम्
अथान्यत्संप्रवक्ष्यामिभक्तेर्माहात्म्यमुत्तमं म
हदाश्चर्यजननंहरिभक्तिप्रदायकम् ॥ १ ॥ प
श्चिमेपुष्करप्रांतेकर्मानाम्नीतिविश्रुता ब्राह्मणी
पतिपुत्राभ्यांरहिताबंधुवर्जिता ॥ २ ॥ निर्ध
नापिशुभाचाराभिक्षामात्रपरायणा एकदापर्य
टंतीसाभिक्षार्थंब्राह्मणीसती ॥ ३ ॥ श्रीजग
न्नाथमाहात्म्यंपुराणेशुश्रुवेक्वचित् तत्रगत्वा
जगन्नाथंदृष्ट्वासर्वेपिपापिनः ॥ ४ ॥

भक्तमाला मैं इति हासके साहित नैवेद्यके भक्षण का माहात्म्य वर्णन करतेहैं ॥ अब और उत्तम भक्तिकामाहात्म्य कथन कर्ता हुं कैसा वडे आश्चर्यके उत्पन्न करनेवाला और हरिमैं भक्ति वधानेवाला ॥१॥ पश्चिम देशमें पुष्कर तीर्थके समीप कर्मानामकर्के प्रसिद्ध ब्राह्मणी पति पुत्र बंधुवर्ग इनकर्के रहित उहां निवासकर्ती थी २ निर्धनभी थी परंतु श्रेष्ट आचारणवाली भिक्षामांगनेमैं तत्परथी एकादिमसो भिक्षामांगनेके निमित्तफिरती२ पतिव्रता ब्राह्मणी २ कहीं एक किसिस्थानमैं पुराणकी कथामैंसें श्रीजगन्नाथजी के नैवेद्यका माहात्म्य श्रवण कर्ती भई कयामाहात्म्य तहां जगन्नाथजी को पुरीमैं जायके पापी भी मुक्त हो जातेहैं ॥ ४ ॥

मुच्यंतेपापराशिभ्यः सत्यंसत्यंनसंशयः ।किं
चित्तत्रनुयः कश्चिदन्नंतस्मैनिवेदयेत् ५ भक्त्या
न्नंपरमप्रीत्यातस्मैतुष्यतिवैहरिः ॥ इहभुक्त्वा
परान्भोगानंते प्राप्नोतिसद्गतिम् ६ इतिश्रुत्वा
पुराणंसामाहात्म्यंभगवद्विभो. तत्रैवगत्वास्था
स्यामियावज्जीवंव्यचिंतयत् ॥ ७॥ तावदद्यापि
यत्किंचिल्लप्स्यामिभिक्षयात्वहम् सर्वंनिवेद्य
भोक्ष्यामिव्रतमेतन्मयाकृतम् ॥ ८ ॥

और पापोंके समूह सें मुक्त होताहै एह बात सत्यहै इसमें संशय नहिहै ॥ जोकोईतहां जाकर थोडाभी अन्न निवेदनकर्ता है॥५॥और परम प्रीति कर्के अन्न भोजन कर्ताहै तिसके तांई हरि प्रसन्न होतेहैं और इस लोकमें श्रेष्ट सुख भोग कर अंतमें श्रेष्ट गतिकों प्राप्त होताहै ॥ ६ ॥ इस प्रकार पुराणमें भगवान् विष्णुका. माहात्म्य श्रवण कर्के ऐसा. चिंतन कर्ती भई तहांमें जाकर जितना काल जीवित रहूंगी उतना काल उहां में स्थित रहोंगी ॥ ७ ॥ और जब लकर उहां नहि जाउंगी उतना काल जो कुछ भिक्षा कर्के अन्न लभया करूंगी सो सभ नारायणजी कों निवेदन कर्के भोजन करया करूंगी एह मैंने व्रत वा नियम धारण करलियाहै ॥ ८ ॥

एवंनिश्चित्यमनसाभिक्षाटनपरायणा प्राप्त
मन्नंतदारभ्यनिवेद्यहरयेपुनः ९ स्वयंस.बुभु
जेनित्यंभक्तिभावपरायणा अथैकस्मिन्दिने
श्रीमज्जगन्नाथंदिदृक्षवः १० आगतावैष्ण
वास्तत्रमार्गक्रमवशादथ तद्ग्रामीणाअपि
जनास्तैःसाकंगंतुमुद्यताः ॥११॥ सापिकर्मे
तिविख्याताब्राह्मणीवैष्णवैःसह ॥ जगामश्री
जगन्नाथंद्रष्टुंभक्तिपरायणा ॥ १२ ॥

इस प्रकार मनके साथ निश्चय करके भिक्षा मांगने मैं तत्पर उस
दिनसें लेकर प्राप्त होईहुई अन्नको हरिके तांई निवेदन कर
९ ॥ फिर पीछेसें भक्तिभावमैं तत्पर नित्यं प्रति सो भोजनक
र्तीभई इस प्रकार वर्तन करनेसें उपरंत एक दिन श्रीमज्जगन्नाथ
जीकों देखनेवाले ॥ १०॥ वैष्णव लोक मार्ग वशतें उस ग्राम
मैं आय प्राप्त भये तद उस ग्रामके लोकभी तिनके साथ जा
नेकों उद्यत भये ॥११॥ तो सो कर्मा ब्राह्मणी उनों वैष्णवों
के साथ श्रीमज्जगन्नाथजी के दर्शनकों भक्ति करने मैं तत्पर
होई हुई चली जातीभई ॥ १२ ॥

तत्रगत्वाजगन्नाथं दृष्ट्वाहृष्टावभूवसा भुक्त्वा
मृतसमंतत्रप्रसादान्नंमुमोदसा ॥ १३ ॥ एवं
दिनद्वयेजातेनस्वार्थंसापपाचवै अतोन्नंहरये
नैवदद्दौभुक्तंस्वयंपुनः ॥ १४ ॥ तृतीयेदिवसे
सातुसस्मारनिजकर्मतत् ततोतिचिंतयाविष्टा
महाशोकपराभवत् १५ आहस्वमनसेधिग्मां
यददत्त्वातुविष्णवे भुक्तंदिनद्वयंचान्नंतस्मायद
द्यकरोमिकिं ॥ १६ ॥

तहां पुरुषोत्तम पुरीमैं जाके जगन्नाथजी कों देखकर सो प्रस
न्न मन वाली होतीभई और अमृतके तुल्य प्रसाद क्या महा
भोगका अन्न खाय कर वडे हर्ष आनंद कों प्राप्त होती भई
१३ ॥ जद इस प्रकार दो दिन वीत गए सो अपने निमित्त
भोजन नहिंपकावतभिईं इसकारणसें हरिकों नैवेद्य नहिलगा
या और आप भोजन खातभिईं ॥ १४ ॥ तद तीसरे दिन इ
सकों अपने नित्य कर्मका स्मरण होताभया तद वडी चिंता
कर्के युक्त वडे शोकमैं तत्पर होतीभई ॥ १५ ॥ और अपने
मनमैं कहतीहै कि धिकारहै मेरेकों जोमैं विष्णुकें तांईं नहि
निवेद लगाके दोदिन भोजन खाय लियाहै तिस कारण सें
आजमैं क्या करां ॥ १६ ॥

इतिसंचिंत्यमनसाकिंचित्पप्रच्छवैष्णवं किम
द्याहंकरिष्यामितद्ब्रूहिभगवन्मम ॥ १७ ॥
निवेद्यहरयेचान्नंभोक्तव्यमितिमेव्रतं तदत्र
दिनयुग्मंतुभग्नंनैवेद्यभोजनात् ॥ १८ ॥ अतः
परमदत्त्वान्नंजगन्नाथायविष्णवे नभोक्तुमुत्स
हेतस्माद्यथायोग्यंवदस्वमे ॥ १९ ॥ इतिश्रु
त्वावचस्तस्यावैष्णवोवाक्यमब्रवीत् यद्येवंतेदृ
ढाभक्तिस्तदानैवास्तिदूषणम् ॥ २० ॥

इस प्रकार मन कर्के चिंतन कर किसीक वैष्णव कों पूछने लगी हेभगवन् मेरे तांई एह बात कहो मैं इसका क्या उपाय करां ॥ १७ ॥ मेरा एह नियमहै की हरिकों अन्न निवेदन कर भोजन कर्तीहां सो इहां आये हुये महाप्रसाद के खानेसें दो दिन भंग पडगया है इसके निमित्त क्या करां ॥ १८ ॥ और इससें उपरंत विष्णु जगन्नाथके तांई अन्न विना दिये तो नहि भोजन करूंगी परंतु इसमें यथायोग्य मेरेको कहो ॥ १९ ॥ एह तिसका वाक्य श्रवण कर्के वैष्णव बोला तेरी ऐसी भक्ति है तद तेरेकों कुछ दोष नहि है ॥ २० ॥

कुरुष्वनिजहस्तेनपाकंसंभोज्यकेशवं स्वयंभुं
क्ष्वनसंदेहोभक्त्यातुष्यतिवैहरिः ॥ २१ ॥ इ
तिश्रुत्वावचस्तस्यकर्मानाम्न्यातिहर्षिता भिक्ष
यातंडुलादीनिसमादायनिजस्थले २२॥प
क्त्वानित्यंनिवेद्यास्मैवुभुजेभक्तितत्परा एकस्मि
न्दिवसेसातुमहाभोगंददर्शह ॥ २३ ॥ दृष्ट्वा
सर्वरसोपेतंपरमान्नमनल्पकम् मनसाचिंतया
मासमाचाचारपरायणा ॥ २४ ॥ अहोसर्वर
सोपेतमन्नंभुक्तवंतपुनः॥ ददाम्यहंकदन्नंवैकथं
भोक्ष्यत्ययंप्रभुः ॥ २५

अपने हाथ करकें भोजन वनाय कर नारायणजी कों नैवेद्य ल
गायके पीछें आपभी भोजन कर नारायण हरि भक्ति करकें प्र
सन्न होतेहैं इसमें संदेह नहिहै ॥ २१ ॥ एहवचन तिसका श्र
वण करकें कर्मा ब्राह्मणी वडी प्रसन्न होई हुई भिक्षा मांग क
र तंडुलादि ल्यायके अपने स्थान पर ॥ २२ ॥ तिनकों नित्यं
प्रति पकाय कर निवेद लगायके भक्तिमें तत्पर होई हुई आ
पभी भोजनकर लेती भई एक दिनसो ब्राह्मणी महाप्रसादके ल
गानेके समयमंदिरमें जाय प्राप्त भई तहांतिसने महाभोगदेखा २३
तिसकों देखकर सभतरांके पदार्थोंकर युक्त परम श्रेष्ट अन्नोंककें
भराहुया सो आचारमार्गमें तत्पर मनमें चिंतन करनेलगी २४ दे
खो एहसंपूर्णरसों करयुक्तभोजनपदार्थ खानेवालेकों खोटा अन्न
वनायकर देतीहांसोएह मेरादियाहुया अन्नकेसेखाते होवेंगे २५

अतोहंप्रातरुत्थायकृत्वान्नंकृशरंद्रुतं भोजया
मिसदाप्रातः क्षुधयाभोक्ष्यतिप्रभुः॥२६॥ वि
चार्य्यैवहंदानित्यंप्रातरुत्थायसापुनः अकृत्वा
शौचमस्नात्वासासंमार्ज्यरुथलपुनः ॥ २७ ॥
मृत्पात्रेकृशरान्नंवैशैघ्र्यात्संपाद्यभक्तितः नि
वेद्यहरयेपश्चात्स्वयंस्नानंचकारसा ॥ २८ ॥
स्नात्वादृष्ट्वाजगन्नाथंपश्चात्तद्भुजेस्वयम् एवं
भक्तिपरासातुकृशरान्नंददौमुदा ॥ २९ ॥

आजसें लेकर प्रभुकों मैं प्रातःकाल उठके शीघ्रता सें खिचडी बनाके सदा सवेरे भोजन कराया करूंगी उस समय क्षुधा कर युक्त होतेहैं भोजन करलिया करेंगे २६ मनके साथ ऐसा विचार कर फिर प्रातःकाल उठके नित्यही ना अंदर कों शोधन करना ना शौच ना स्नान कुछबी काम नहि करके २७ मृत्तिकाके पात्रमें शतावी भक्तिसें खिचडीबनाय कर हरिकों निवेद लगायके पीछेसें आप स्नानादि कर्ती भई २८ स्नानादि करके जगन्नाथजी का दर्शन करना पीछेसें सोही नैवेद्य आप भोजन करलेना इसप्रकार भक्तिमें तत्पर सो बडे हर्ष आनंद करकें खिचडी निवेद लगावती भई ॥ २९ ॥

तद्भक्तिवशगोनित्यंजगन्नाथःकृपामयः बुभुज
कृशरान्नंतुसतस्याह्यंतरिक्षगः ३०एवंगतेषुका
लेषुकदाचित्कोपिवैष्णवः कर्मागृहेसमायातः
कृशरान्नार्पणक्षणेः३१ अनाचारेणतंदृष्ट्वाहरे
रन्नार्पणंनसत् जगर्हेकर्मसाधुःसआचारंचाथ
शिक्षयन् ३२ किमिदंकुरुषेमूढेह्यनाचारनिवे
दनं नेदंभोक्ष्यति देवेशस्तस्मादाचारतोर्पय
३३ उषस्युत्थायसंमार्ज्यगोमयेनोपलिप्यच
गृहंतत्रशुचिःस्नात्वापक्वाभक्ष्यंसमर्पय ३४ ॥

कृपा कर्ने वाले जगन्नाथ स्वामी ऐसी तिसकी भक्तिके वशीभूत होए हुए आकाश मैं स्थितहोकर नित्यही तिसकी खिचडी खाते भये ॥ ३० ॥ इसीतरां सें कितनाक समय वतीतहोए पीछे एकदिनकोई वैष्णव साधु खिचडी निवेद लगानेके समय कर्मा के घरमै आय प्राप्त भया ॥ ३१ ॥ तो अपनी नित्यही विधि कर्के निवेद नारायणजी कों लगाती होईकों देखकर कहने लगा हरिकों इसप्रकार भोजन देना अछा नहिहै और तिसके कर्मकों निंदा करने लगा फिर पीछेसें आचार पवित्रता शिक्षाकर्ता भया क्या विधि सिखावता भया ॥ ३२ ॥ कहने लगा हेमूढे एहक्या कर्तीहैं विना स्नानकरे ही निवेद लगातीहैं ऐसें नहि भगवानजी खातेहैं इसवास्ते पवित्र होंके नारायणजी कों नैवेद्य लगाना योग्यहै ॥ ३३ ॥ प्रात कालउठे स्थानशोधना गोहेके साथ लेपन लगाना फिरस्नान कर्के पवित्र होकर भोजन वनाना फिर पीछे नारायणकों नैवेद्य लगाना ॥ ३४ ॥

इत्युक्त्वासगतःसाधुःकर्माचिंतामवापसा अ
होद्यावधियद्दत्तंहरयेन्नंमुदामया ॥ ३५ ॥ न
भुक्तंतत्तुहरिणामामनाचारदूषितां धिगस्तु
मांततोमूढांक्षम्यतांमेहरिःप्रभुः ॥ ३६ ॥ इ
तिनिर्भर्त्स्यचात्मानमन्यस्मिन्दिवसेतुसा स्ना
त्वाचैवार्द्रवस्त्रेणसंपाद्यान्नंशुचौशुचिः ॥ ३७
वहुप्रकारंतद्भक्त्याजगन्नाथायचार्प्पयत् यथा
गत्यहरिस्तस्यावभुजेभक्तियंत्रितः ॥ ३८ ॥

ऐसा वचन कह करकें साधु चला गया पीछेसें कर्मा वडी परम चिंता कों प्राप्त होई की आजतक जो कुछ मैंने हरिकों अन्न दियाहै ॥ ३५ ॥ सो हरिने नहि भोजन करा अनाचार कर जामें देतीरही मूढमति वालि मेरेकों धिक्कारहै परंतु हरि मेरे अपराध कों क्षमाकरे ॥ ३६ ॥ इस प्रकार अपने आप की आपनिंदा कर फिर दूसरेदिन उसीतरां जैसें साधुने कहाथा प्रातःकाल घरकों शोधन कर स्नानकरा गिल्ला वस्त्र ऊपर लेके पवित्रहो कर पवित्र स्थानमैं खिचडी वनाई ॥ ३७ ॥ और भी कुछ वनाय भक्ति करकें जगन्नाथजी कों अर्पण कर्तीभई तद उसदिन जैसें रोज आयकर उसकी भक्ति करकें वधेहोए हरि भोजन करै भये ॥ ३८ ॥

परंतुतस्याआचारकरणेकष्टदर्शनात् स्वयमुद्वि
ग्नचित्तोभूज्जगन्नाथः कृपामयः ॥३९॥ स्वमठे
पूजकैर्दत्तमन्नंनैवाददेप्रभुःयतोमहत्प्रणालीतो
वारिनैवागमद्वहिः ॥४०॥ किंचोच्छिष्टमुखंलग्नं
दर्शयामासपूजकान् जगन्नाथस्ततःसर्वेदृष्ट्वा
तत्परमाद्भुतम् ॥४१॥ ततस्तत्पूजकाश्चिन्तांसं
प्राप्यातिमहत्तरां विभुक्षितास्थिताशत्रौददृशुः
स्वप्नमुत्तमम् ॥ ४२ ॥

परंतु तिसके आचार करणेमैं कष्टदेख कर आप उद्वेग कर यु क्तमन वाले कृपामय जगन्नाथजी होते भये ॥ ३९ ॥ तद उ ससमय पूजकोंने जो अन्न दिया तिसको नहि खाते भये जिस कारणतें वडे प्रणालेंसे जल करूली का बाहर नहि आ वता भया ॥ ४० ॥ और कुछक अपने मुखमैं उच्छिष्ठ लगा हुया पुजारियों को दिखावते भये तिसतें उपरंत सारेही तिस सें परम अद्भुत देखके ॥ ४१ ॥ सारेही पुजारी वडी चिंता कों प्राप्त होतेभये अन्न जलका त्याग कर रातकों भूखे होये सोय रहे तो उत्तम स्वप्न देखते भये ॥ ४२ ॥

जगन्नाथःसमागत्यवभाषेऽस्मानिदंवचः अ
ह्णोऽद्यान्ननभुक्तंयच्छृणुध्वंतस्यकारणम् ४३
कर्मानाम्नेतिमद्भक्ता ब्राह्मणीमत्परायणा तया
निवेदितंनित्यंकृशरान्नमदाम्यहम् ॥४४॥ भुं
जानोतिविसंतुष्टस्तद्भक्त्यानात्रसंशयः तांतुक
श्चिदुवाचाथमूढेनाचारतः कथं ॥ ४५ ॥ कृश
रान्नंददास्यितन्नभोक्ष्यतिहरिःस्वयं तस्मादा
चारपूर्वंतु कृत्वान्नंहरयेर्प्पय ॥ ४६ ॥

क्या स्वप्न हुवा की जगन्नाथजी आय कर हमारेको एह वच
न कहतेभये हेपूजकाः आज जोंमैने भोजन नहि खाया तिस
का कारण श्रवण करो ॥ ४३ ॥ क्या की कर्मा नाम वालि
ब्राह्मणी मेरेमैं तत्पर मेरी भक्तिनीहै तिस कर्के दिया हुवा कृ
शरान्न खिचडी नित्य भोजन् कर्ताहों ॥ ४४ ॥ और तिसकी
भक्ति कर्कें भोजन कर्ता हुवा वडी प्रसन्नता कों प्राप्त होताहुं
तिसकों कोइं कहताभया हेमूढे अनाचार कर्के कैसे निवेद ल
गातीहैं ॥ ४५ ॥ एहजो इस विधि कर्के कृशरान्न देतीहैं ति
सकों हरि भोजन नहि कर्तेहैं तिसकारणसें आचार पूर्वक भो
जन वनाय कर नारायणजी कों अर्पण कर ॥ ४६ ॥

इतितस्यवचःश्रुत्वाकर्माचातीवदुःखिता।महा
कष्टेनसंपाद्यनैवेद्यंमेसमर्पयत् ॥ ४७॥ तन्नैवे
द्यमहंभुक्त्वातद्दुःखेनातिदुःखितः युष्माभिर्द
त्तमन्नंचनस्पृष्टंपाणिनामया ॥ ४८॥ ममचो
द्विग्नमनसा विस्मृतंमुखमार्जनं ततउच्छिष्टम
न्नंमेलग्नमेतद्विवर्तते ॥४९॥ तस्माद्भवंतःशृण्वं
तुसंभोक्ष्यामिनिजेप्सितम् साकर्मातीवमे
भक्त्यायथापूर्वंयदृच्छया ५० कृशरान्नंददात्वे
षानतुक्लिश्यतुमत्कृते अद्यारभ्यैषनियमोमम
सर्वोविनश्यताम् ॥ ५१॥

एह तिसका वचन सुन करकें कर्मा वडे दुखकों प्राप्त होती भ
ई आज वडे दुः ख करकें भोजन वनाय कर मेरेकों निवेद ल
गावती भई॥ ४७ ॥ तिसका नैवेद्यमैं भोजन करकें और तिस
केदुःखककें दुःखित होएआ हुया तुमारा अन्न मैं ने आज हा
थ करकेंभी स्पर्श नहि कराहै ॥ ४८ ॥ और उद्वेग युक्त मन
वाले मेरेकों मुखका मार्जनभी भूलगया इस कारण सें जूठा
अन्न मेरे मुखमैं लगा हुया रह गयाहै ॥ ४९ ॥ तिसकारण सें
तुसी सारेहो सुनो औरमैं भोजन भीअपनी इच्छा पूर्वक करता
हुं परंतु सोकर्मा अत्यंत भक्ति करकें अपनी इच्छासें आगेकी
न्यांई देवे जेसें देतीथी ॥ ५० ॥ और खिचर्डा हीदेवे मेरे निमित्त
क्लेश मत करे और मेरेसारे नियम आजसें नष्ट होगयेहै ५१ ॥

कर्मायाः कृशरान्नंतुपूर्वंभोक्ष्याम्यहंमुदा ततः
परंभवद्दत्तमन्येषांतुनिवेदितम् ॥५२॥ भोक्ष्या
म्यत्रनसंदेहस्तस्मात्कुरुमदीरितं उक्तवान्यः
समाचारं तस्यैतेनसमंपुनः॥ ५३ ॥ भवं
तोयांतुतद्गेहे कर्मासंबोधयंतुवै कृशरान्नंयथा
पूर्वंकृत्वामह्यंददातुसा॥ ५४ ॥ ततोहंपरि
तुष्टःस्यां भोक्ष्यामिभवदर्पितम् एवंदृष्ट्वातुते
स्वप्ने वदंतं पुरुषोत्तमम् ॥ ५५ ॥

कर्माकी दीहोई खिचडी प्रसन्न तासें पहलेखाताहुं पीछेसें तु
मारा औरनों का दिया हु या निवेद खाता हुं ५२ ॥
इसमें संदेह नहिहै इसवास्ते मेरा कहा मानों क्या की जो उ
सकों सदाचार कही आयाहै फिर तिसके साथ जाके५३ तुमभी
सारेही उसके घरमें कर्माकों समझाओ क्या की भगवान् जीकह
तेहैं आगेकी न्यांई कृशरान्न मेरेकों देवे ॥ ५४ ॥ तदमै प्रसन्न
होएआ हुया तुमारा दियाहुया निवेद खाउंगा ऐसे पुरुषो त्तम
जीकों स्वप्नमें कहते होएकों देखकरके सो संपूर्ण पुजारी ५५

प्रातरुत्थायचैकत्रभुक्त्वागत्वातदालयं तंवैष्णवंसमादायसदाचारप्रवादिनम् ५६ कृत्वाग्रतस्तुतेसर्वेकर्माप्राहुर्विनीतवत् कर्मादेविनमस्तुभ्यंधन्यासित्वंशुचिव्रते ५७ त्वदर्थेखिद्यतेदेवःश्रीमान्वैपुरुषोत्तमः नैवेद्यंतुयथासर्वंदत्तवत्यसिसुव्रते ५८ तथैवदेहिदेवायमाचिरंकुरुकष्टदं त्वत्क्लेशात्क्लेशमाप्नोतिजगन्नाथोमहाप्रभुः ॥ ५९ ॥

सो दूसरे दिन प्रातः काल उठ करके इकठे होय भोजन कर फिर तिसके घर में जायके तिस वैष्णव को साथ लेकर जिस ने तिसको आचार कथन कराथा ॥ ५६ ॥ उसको आगे सो पुजारी सारेहि करके बडी नम्रता करके कहते भये हेकर्मा देवि श्रेष्ठ व्रतवालितुं धन्यहैं तेरेको नमस्कार होवे ॥ ५७ ॥ क्योंकि श्रीमान् पुरुषोत्तम देवता तेरे निमित्त वडा खेद पातेहैं और जोतूं नैवेद्य देती रही ॥ ५८ ॥ उसी तरां देवताके तांई दिया कर कष्टके देने वाला चिरमतलगा क्यों तेरे क्लेशके करनेसें भगवान् जी क्लेश पाते हैं ॥ ५९ ॥

तस्मात्त्यज श्रमं भद्रे निवेदय यथारुचि ॥ येनेनो
क्तं तु यत्पूर्वमाचारादन्नमर्पय ६० तदभक्तस्य
जानीहि भक्तौ नाचारचिंतनम् ॥ तवान्नं प्रथमं भु
क्त्वा कृशरं वै ततः परम् ६१ अन्यार्पितं प्रसादं तु ग्र
हीष्यति तदा हरिः ॥ अद्यारभ्य ततस्त्वं तु स्वेच्छया
न्नं विधाय च ६२ समर्पय यथा पूर्वं जगन्नाथाय
भक्तितः ॥ इत्येतदर्थमायाता वयं सर्वे तवाश्रमम्
॥ ६३ ॥

इस कारणसें हे भद्रे श्रम क्या खेद पाना त्यागदे जिसतरां तेरी इच्छा है उसतरां निवेदन लगा और जो इसने पिचले दिनमैं तेरे कों कहा था की आचार क्या पवित्रतासें अन्नादिया कर ६० ॥ सो आचार बिना भक्ति वालेकों जान और भक्तिमैं आचार विचार नाहि है तेरे दिये होए अन्नकों पहले खायके तिससें उपरंत ६१ ॥ और किसी का दियाहुया महाप्रसाद प्रभुजी ग्रहण कर्ते हैं इसकारणसें आजसें लेकर अपनी इच्छासें अन्न बनायकर ६२ सेंजकी न्यांई जगन्नाथजीकेतांई अर्पणकर हमसारे ही तेरे घरमैं भगवान्‌जीकी आज्ञासें इसी बातके कहणे वास्ते आये हैं ॥ ६३ ॥

अद्यारभ्यकुरुष्वैतत्प्रार्थयामोवयंमुहुः इतिश्रु
त्वावचस्तेषांकर्मादेव्यतिहर्षिता ६४ ॥ उवा
चवचनंतांस्तुप्रणम्याविहितांजलिः अहोनजा
नेहंकिंचिदाचारंवातथापरम् ६५ भवादृशो
क्तमेवाहंश्रुत्वाकारिषमर्चनं अतः परंभवंत
स्तुयद्वदंतिकरोमितत् ६६ इत्युक्तासासमुत्था
यनैवेद्यस्यचसाधनं कर्तुंव्यवसितासाध्वी
कर्मादेव्यतिभक्तितः ॥ ६७ ॥ पूर्व
वत्कृशरान्नंसासंपाद्यहरयेऽर्पयत् तेपिवैपू
जकाविप्राः समागत्यस्वमंदिरम् ॥ ६८ ॥

आजसें लेकर ऐसे कर एही हम तेरी वारं वार प्रार्थना कर्तेहैं
एह वचन तिनका सुनके कर्मा देवी वडी प्रसन्न हुई ६४ और
हाथ जोड विनती कर तिनकों ऐसें कहने लगी हेब्राह्मणो मैं
तो आचार विचार कुछनहि जानतीहां ६५ तुमारे जैसें पुरुषो
का कहना सुनके पूजन कर्ती रही अवइस सें उपरंत जिसत
रां आप कहते हो उसी तरां करोंगी ॥६६ ॥ इसप्रकार कथ
न कर्के सो उठखडी होई और नैवेद्यके वनानें कों सोक
र्मा देवी साधुवर्तन वाली आरंभ कर्तीभई वडीभक्तिसें ६७
पूर्व की न्यांई खिचडी वनाय कर हरिकों भोग लगावती भई
और सो पुजारि ब्राह्मण आयकर अपने मंदिरमें ॥ ६८ ॥

कृताह्निकाःसर्वंरसमन्नंसंपाद्यभक्तितः निवेद
यामासमुदाजगन्नाथायहृष्टवत् ॥ ६९॥यथापू
र्वंसजग्राहतत्सर्वंपुरुषोत्तमः मठप्रणालिकाद्वा
राद्वहिर्जातजलंतदा ७० दृष्ट्वामुमुदिरेसर्वे
यथा पूर्वंचपूजकाः एवंप्रभावःकर्मायाभक्तेर्वै
वर्णितोमया ७१ अद्यापितस्याः कृशरमत्तिपू
र्वंजनार्दनः तस्माद्भक्तिर्हिसर्वेषां कर्मणांवैगरी
यसी ७२ तया संतोष्यवह्वुशस्तेरुः संसार
सागरम् ॥ ७३ इति भगवन्नैवेद्य माहात्म्ये
कर्माचरितं समाप्तम्

स्नान संध्यादि कृत्य कर्के भक्तिप्रीति नाना प्रकारों के अन्न नै
वेद्यके वास्ते वनायकर प्रसन्न मनवाले वडेहर्षसें जगन्नाथजीकों
निवेद लगावते भये ॥ ६९ ॥ तद पुरुषोत्तमजी तिस सारे नै
वेद्यकों आगेकी न्यांई ग्रहणकरलेतें भये और मंदिरमे जल
निकलने के मार्ग प्रणाले सें तिससमय जलभी वाहर आगया
७० तिसकों आगे की न्यांई पुजारी लोक देखके प्रसन्न भयें
इसप्रकार का प्रभाव कर्मा की भक्तिका मैनें वर्णनकराहै७१ सो
अव भी जनार्दन भगवानूजी प्रीति पूर्वक कृशरान्न खातेहैं
तिसकारण सें सारे कर्मोंमैं भक्तिही श्रेष्ठहै ७२ तिसभक्ति कर्कें
वहुत लोक नारायण कों प्रसन्न कर संसार समुद्रकों तर गएहैं
॥ ७३ ॥ एह भगवानूजी के नैवेद्य लगाने के माहात्म्य में क
र्मा का चरित्र कहा है ॥

अथविष्णुंप्रतिनैवेद्यार्पणमाहात्म्यवर्णनम् ॥
पद्मपुराणे क्रियायोगसारे यस्तुयच्छतिकृष्णा
यशिशिरेगोपमूर्त्तये तिलानांमोदकंदिव्यंसग
च्छेद्धरेर्मंदिरम् ॥ १ ॥ योदुग्धमोदकंदद्यात्के
शवायमहात्मनेसपिवेदमृतंस्वर्गेमन्वंतरशता
वधिः ॥ २ ॥ सघृतंहरयेखंडंयस्तुयच्छतिजैमि
ने तस्यविष्णुः प्रसन्नात्माछिनत्तिभवबंधनम्
॥ ३ ॥ विचित्रंफाणितंयस्तुदद्याद्भगवतेद्विज
अंतेशक्रपुरेगत्वासभवेत्सुरवंदितः ॥ ४ ॥

अब और विष्णुके प्रति नैवेद्य लगाने का माहात्म्य वर्णन कर्तेहैं पद्म पुराणके क्रिया योगसारमैं ॥ जोपुरुष गोपमूर्ति कृष्णजीके तांईं शिशिर क्या माघ फाल्गुनमैं दिव्य तिलोंके मोदक निवेद लगाताहै सो हरिके मंदिरमैं जाताहै ॥१॥ और जाकोईं महात्मा केशव जीके तांईं दुग्धके बने होए मोदक देताहै सो पुरुष सौमन्वंतर पर्यंत स्वर्गमैं अमृतभोजन कर्ताहै ॥ २ ॥ और हेजैमिने घृतके सहित जो खंड नैवेद्य हरिके तांईं देताहै तिसके भव बंधन प्रसन्न मनवाले विष्णु काट देतेहैं ॥ ३ ॥ और हेद्विज भगवान् जी के तांईं विचित्र फाणित क्या गंदोडे निवेद लगाताहै सो अंत समय इंद्र पुरीमैं जायके देवतेयों कर वंदना करने योग्य होताहै ॥ ४ ॥

निर्मलांशर्करांयच्छेद्यस्तुकृष्णायभक्तिमान् मु
क्तिर्भूमिसुरश्रेष्ठदैवतैरपिदुर्लभा ॥ ५॥ नारसिं
हे ॥ हविःशाल्योदनंदद्यादाज्ययुक्तंसशर्क
रम् निवेद्यनरसिंहाययावकंपायसंतथा ॥६॥
समास्तंडुलसंख्यायायावतीस्तावतीर्द्विज वि
ष्णुलोकेमहाभोगान्भुंजन्नास्तेसवैष्णवः ॥७॥
गारुडे योदद्याद्विष्णवेविप्रसुपक्वंकदलीफलं
शक्राद्यास्त्रिदशाःसर्वेवंद्यन्तेतमहर्निशम् ८

जो भक्तिमान् पुरुष कृष्णजी के तांई निर्मल शर्करा क्या श्वेत खंड देतेहैं सो हेभूमिसुर श्रेष्ट देवतेयोंकों दुर्लभ मुक्तिहै सो तिन कों प्राप्त होतीहै ५ नरसिंहपुराणमैं कहाहै जोपुरुष घृतके सहित शर्करा युक्त हवि शालिका ओदन देताहै नरसिंहजीके तांई और यावक क्या कडा और पायस क्षीर देताहै ६ सौ चावलों की संख्याके वर्षहैं उतनी संख्याके बर्ष विष्णु लोकमैंमहाभोग भोगता हुया वैष्णव रहताहै ७गारुडमैं लिखाहै जोविष्णु के तांई हेविप्र पक्के होए फल देताहै तिसकों शक्रादि देवतासारे वंदना करतेहैं ८

पाद्मे ॥ कृष्णायनवनीतंयोददातिवैष्णवोजनः
तस्यपुण्यंनसंख्यातुंशक्रोप्यब्दशतैरपि ९ ॥
सशर्कराणिदुग्धानिकृष्णाययस्तुयच्छति त
स्यप्रसन्नोभगवान्ददात्यभिमतंफलम् १० प
क्वैस्तालफलैर्दिव्यैर्योर्चयेद्यदुनंदनं गर्भवासं
महादुःखंसभूयोलभतेनहि ॥ ११ ॥ योदद्या
दिक्षुनैवेद्यंदेवदेवायविष्णवे सोपितत्फलमा
प्नोतिकिमन्यैर्वहुभाषितैः ॥ १२ ॥

पाद्ममें लि० ॥जो पुरुष कृष्णजी के तांई वैष्णवोत्तम नवनी त क्या मखन निवेद देताहै उसके पुण्यकी संख्या करने कों सौ वर्ष कर्के इंद्रभी समर्थ नहि होसकता है ॥ ९ जो पुरुष कृष्णजी के तांई शर्करा के सहित दुग्ध देताहै तिसकों प्रसन्न होए हुए भगवान् अभिमत फल देतेहैं ॥ १० ॥ जो पुरुष य दुनंदन जीकों पक्केहोए ताल फलों कर्के पूजन कर्ताहै सो म हादुःख रूपीजो गर्भवास तिसकों फिर नहि लभताहै ॥ ११ ॥ और जो पुरुष देवतेयों के देवता विष्णु जीके तांई इक्षु गन्ने यों का नैवेद्य देताहै सो भी तिस फलकों प्राप्त होताहै और वहु त कहने कर्के क्याहै ॥ १२ ॥

पाद्मे क्रियायोगसारे ॥ अत्रतेकथयिष्यामिचे
तिहासंपुरातनम् व्यासउवाच भूयएवद्विजश्रे
ष्ठमहाविष्णोर्महात्मनः ब्रवीमिशृणुमाहात्म्यं
सर्वदुःखनिवारणम् ॥ १३ ॥ ब्राह्मणाः क्षत्रि
या वैश्याःशूद्राश्चाप्यंत्यजातयः हरिभक्तिंप्रप
न्नायेतेकृतार्थानसंशयः ॥ १४ ॥ हरेरभक्तो
विप्रोपिविज्ञेयःश्वपचाधमः हरिभक्तः श्वपा
कोपिविज्ञेयोब्राह्मणाधिकः ॥ १५ ॥ सकथंब्रा
ह्मणोयस्तुहरिभक्तिविवर्जितः सकथंश्वपचोय
स्तुभगवद्भक्तिमानसः ॥ १६ ॥

पद्म पुराणके क्रिया योग सारमैं लि० ॥ इसमैं प्राचीन इति
हास कथन कर्ताहुं व्यासदेव जी कथन कर्तेहैं हेद्विज श्रेष्ठ
अब फेर महात्मा विष्णुका सर्व दुख निवारण वाला माहात्म्य
कहताहुं तूं श्रवण कर ॥ १३ ॥ जौनसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य
शूद्र अंतजाति भी हरिकी शरण कों प्राप्त होएहैं सोई कृतार्थ
हैं ॥ १४ ॥ और जो ब्राह्मण हरिका अभक्त सोतो श्वपचसैं
भी क्या चांडालसैं भी अधिक जानना और जो चंडाल ह
रिका भक्त होवे सो ब्राह्मण सैंभी अधिक जानना ॥ १५ ॥
जो ब्राह्मण हरिकी भक्ति नहि कर्ता है सो ब्राह्मण कैसेंहै और
भगवान् जीकी भक्ति करनेमैं मन जिसका ऐसा चांडाल
कैसें है ॥ १६ ॥

व्याजेनापियदाविष्णुःस्वपाकेनप्रपूजितः त
दापश्येत्तमप्येषचतुर्वेदविदांवरम् ॥ १७ पुरा
सीञ्चक्रिकोनामशवरोलोकहर्षकृत् स्वजाति
वृत्तिहीनश्चयुगेद्वापरसंज्ञके॥१८॥ प्रियवादी
जितक्रोधः परहिंसाविवर्जितः दयालुर्दंभही
नश्चपितृसेवापरायणः ॥ १९ नकृतोवैष्णवा
लापोमोक्षशास्त्रंचनश्रुतं तथापिजातातच्चित्ते
हरिभक्तिरचंचला ॥ २० ॥ हरेकेशवगोविंद
वासुदेवजनार्दन इत्यादीनिस्मरन्नित्यंनामा
निसचचक्रिकः ॥ २१ ॥

जो विष्णु भगवान् श्वपाक चांडालने वहानेकर्के पूजन कीत्ता हुया सो एह वेद वेत्तोंमैं श्रेष्ठ तिस पूजन करने वालेकों देखते है ॥ १७ ॥ पूर्व एक चक्रिक नाम कर्के लोकोंके हर्ष करने वाला शवर भील होता भया द्वापर युगमैं अपनी जातीकीवृत्ति कर्के हीन होता भया ॥ १८॥ कैसाथा प्रिय वचन बोलने वाला क्रोध जितेया हुया जिसने परहिंसा कर्के रहित दयालु था दंभसें हीन और पितरों की सेवामैं परायण था ॥ १९ ॥ और वैष्णवोंके साथ आलापभी नहि करेया और मोक्ष शास्त्रभी नहि सुनातदवी तिसके मनमैं अचंचल हरिकी भक्ति होतीभई ॥ २०॥ हे हरे हे केशव हेगोविंद वासु देव जनार्दन इत्यादि नाम सो चक्रिक नित्य प्रति स्मरणकर्ता भया ॥ २१ ॥

वन्यंफलंसयत्किंचित्प्राप्नोतिद्विजसत्तम आदौ
ददातितद्वक्त्रेनिजेशवरवंशजः ॥ २२ ॥ तन्मा
धुर्य्यंततोज्ञात्वावक्त्रादानीयतत्पुनःददातिहर
येभक्त्यासुप्रीतः प्रतिवासरम् ॥२३ ॥ उच्छि
ष्टंवाप्यनुच्छिष्टंद्वयमेवनवेत्तिसः निजजातिस्व
भावोयंसततंमूर्ध्निवर्तते ॥ २४ ॥ कदाचित्सद्वि
जश्रेष्ठकाननाभ्यंतरेभ्रमन् फलमेकंप्राप्यवहु
पिप्पलाख्यस्यशाखिनः ॥ २५ ॥

हे द्विज सत्तम जो वनके फल तिसकों प्रात होतेहैं तिनकों
मुख अपनेमैं पहले पायके मीठा सलूना स्वाद जानके शवर
वंशमैं उत्पन्न होएआ हुया ॥ २२ ॥ उनकों मीठे २ जानकें
मुखसें निकालकर फिर तिनकों प्रसन्नमन वाला रोजके रोज
भक्तिकरकें नारायणकों देताभया २३॥ और उच्छिष्ट अनुच्छि
ष्ठ इन दोनों कों नहि भगवान जानते भये जिसके मूर्ध मैं अ
पनी जाती का स्वभाव वर्तता है ॥ २४ ॥ हेद्विज श्रेष्ठएक स
मय सो शवर वनके वीच भ्रमता हुया पिप्पल वृक्षके वहुत
फल तिसकों प्राप्त भये ॥ २५ ॥

अथासौहर्षितस्तच्चफलंसंप्राप्यचाक्रिणे सु
स्वादुभेदंज्ञातुंच निजवक्त्रांतरेददौ २६ तदासौ
तत्फलंयावन्निजवक्त्रांतरेद्विज प्रविवेशगलंया
वत्तत्फलंतस्यजैमिने २७ तावत्सव्येनहस्तेन
नगलवर्त्मवबंधसः यत्नाद्विधृत्यसव्येनपाणि
नासागलाद्द्विज ॥ २८ ॥ फलमेतन्मुदातस्मै
नददामिमुरारये नजातः कोपिसंसारेतदाह
मिवपातकी २९

इससें उपरंत हर्षित ओहहोएआ हुया फलोंकों प्राप्त होकर चक्रि भगवानजीके लिये स्वाद उसका जानणें कों अपने सुखमैं देता भया २६ हेजैमिने द्विज तदसो फल मुखमैं दिया हुया गलेमैं प्रवेश करता भया २७ उतनेमैं सोवामे हाथसें गलेके मार्गकों वंधन करलेता भया और दूसरे हाथसें गलके मध्यसें निकालने लगा २८ और चिंतनकर्नें लगा एह फल मुरारीकों नहि देंवां तद मेरेजैसा कोई दूसरा पापी इससंसार मैं नहि हुया २९

इतिसंचिंत्यकृतवान्यत्नंनिष्क्रामितुंततः तथा
पितत्फलंतस्यानिष्क्रांतंनगलाद्द्विज ३० हरे
रेकोसभक्तोसौछित्वापरशुनागलं आनीयत
त्फलंचाथददौदेवायविष्णवे ३१ अथछिन्नग
लोभूमौशवरोसौमहाशयः पपातमूर्च्छितोत्यं
तंव्यथाव्यथितमानसः ३२ तस्यभक्त्याततत
स्तुष्टोमहात्माभगवान्हरिः तत्संन्निधिंसमाया
तःस्वयमेवकृपामयः ॥ ३३ ॥

ऐसा चिंतन करकें तिसके निकालनेकों वहुत यत्न कर्ता भया तदभीसो फल तिसके कंठसे नहि निकलता भया ३० हेद्विज तदसो हरिकाएक दृढ निश्चयवाला भक्त परशु कुहाडेसें अपना गला काटकर फलकों निकालया ल्पाके सोफल हरि देवता विष्णुके तांई देताभया ॥ ३१ ॥ अव इससे उपरंत कटेहोए गल वाला महाशय शवर भील अत्यंत व्यथा पीडा करकें पीडित मूर्छित होके पृथिवी पर डिग पडता भया ३२ तद तिसकी भक्ति करकें प्रसन्न मन वाले महात्मा भगवान हरि प्रसन्न होए हुए आप कृपामय दयाका रूप उहां उसके पासमैं आवते भये ३३

रुधिरोक्षितसर्वांगंपतितंपृथिवीतले तंदृष्ट्वा
भगवान्विष्णुर्दयार्द्रोऽव्यथितोभवत् ॥ ३४ ॥
एतस्यसदृशोभक्तोममकोपिनविद्यते यतोग
लमिदंछित्वामह्यंफलमिदंददौ ॥ ३५ ॥ यथा
तेनचभक्तेनसात्विकंकर्मवैकृतं तथान्येनापिभ
क्तेनअद्यावधिकृतंनहि ॥ ३६ ॥ यद्दत्वामृ
त्युमाप्नोतितथावस्तुकिमस्तिमे धन्योयमिति
धन्योयंधन्योयंनात्रसंशयः ॥ ३७ ॥

रुधिर करके सिंचित होएहुए सारे अंग जिसके ऐसे तिसकों पृथि
वीतलमें पडे होएकों देखकर भगवान् विष्णु दयार्द्र और व्यथित
होते भये ३४ और कहने लगे इसके समान मेरा भक्त कोई
और नहिंहै जिसकारणसें इसनें अपना गलाभी काटकर फल
निकालके मेरेकों देता भया ३५ और जिस प्रकारका सा
त्विक कर्म इस भक्तने कराहैं ऐसा और किसी भक्तने भी आ
ज तकर नहिकरा ॥ ३६ ॥ और ऐसी क्या वस्तुहै जिसकों
देके मृत्युकों प्राप्त होताहै धन्यहै एहभक्त इसमैं कुछ संशय न
हिं है ॥ ३७ ॥

प्राणानपिचसंत्यज्यममसंतोषणंकृतं ब्रह्मत्वं
वाशिवत्वंवाशक्रत्वंवापिदीयते ॥ ३८ ॥ त
थामत्समयेतस्थभक्तस्यनहिविद्यते इत्युक्त्वा
स्थंतसंतुष्टोभगवान्गरुडध्वजः ॥ ३९ ॥ स्व
हस्तकमलेनाथतस्यमस्तकमस्पृशत् तद्ध
स्तकमलस्पर्शाच्छवरोसौगतव्यथः ॥ ४० ॥
समुत्तस्थौमहासत्वोनारायणपरायणः ॥ ४१
॥ व्यासउवाच ततोस्यभक्तश्रेष्ठस्यनिजवस्त्रे
णकेशवः पुत्रस्येवपितागात्रंरजः प्रोंछितवा
न्द्विज ॥ ४२ ॥

देखो जिसने अपने प्राण त्यागकर मेरी प्रसन्नता करीहै अब
इस कामक्या वदले इसको ब्रह्मभावदेवो वा शिव पदवी देवां
अथवा इंद्रभाव देवां क्या देवां ३८ तैसेही मेरा इसके जैसा
भक्त नहिहै ऐसा कह कर्के गरुडध्वज भगवान् वडे प्रसन्नहोते
भये ३९ ॥ फिर तिसका अपने कमलरूपी हाथकर्के मस्तक
स्पर्श कर्तेभये तो तिनकें हाथके स्पर्श करने कर्के व्यथातिसकी
दूर होगई ॥ ४० तोवडे पराक्रम युक्त होएआ हुया नारायण
की भक्तिमैं तत्पर उठखडा होता भया ४१ अवव्यासदेवजी
कथन करतेहैं हेद्विज तद इस भक्तकों केशवजी अपने वस्त्रके
साथ इसके अंगोंकी रजकों दूरकरते भये जैसें पिता पुत्रकी
रजदूरकरताहै ॥ ४२ ॥

चक्रहस्तंसमालोक्यमूर्तिमंतंजनार्दनं वाचा मधुरयास्तौषीदाप्तहर्षकृतांजलिः ॥ ४४ ॥ चक्रिकउवाच गोविंदकेशवहरेजगदीशविष्णो जानामियद्यपिनतेस्तुतियोग्यवाक्यैः स्तोतुंतथापिरसनाममवांछतित्वां स्वामिन्प्रसीदहरदोषमिमंप्रवृद्धम् ॥ ४५ ॥ त्यक्त्वाभवन्तमखिलेश्वरचक्रपाणे अन्यान्भजंतिमनुजाजगतीहमूर्खाः मूढास्तएवदुरितप्रकरैकधाम्निसानुग्रहममापिमय्यपिदेवयस्मात् ॥ ४६ ॥

चक्रहाथमैं लिये होए मूर्त्तिमान् क्या प्रत्यक्ष जनार्दनजी कों देखकर प्राप्त हुयाहै हर्ष आनंद जिसकों ऐसा सो हाथ जोडकर मधुर वाणीकर्कें स्तुति कर्ता भया ॥ ४४ ॥ चाक्रिक कहने लगा हेगोंविंदहेकेशव हेहरे हेजगदीश हेविष्णो यद्यपि तुमारी स्तुतिके योग्य नहि भी जानताहुं तदभी मेरी रसनाहेस्वामिन्तुमारी स्तुति करनेकी इछा कर्तीहै परंतु एह जो प्रवृद्ध दोषहै इसकों हर दूर करो ॥ ४५ ॥ हेअखिलेश्वर चक्रपाणे तुभारे कों त्याग कर जौंनसे और नोंकों भजतेहैं सोमनुष्य इस जगतमैं मूर्खहैं किस तरां जौनसें तुम पापोंके समूह का एक स्थान जोमैंहां ऐसे मेरेमैं हेदेव जिस कारणसें कृपा दृष्टि वाले हो ॥ ४६ ॥

यन्नामदेवभजतोभुवनैकनाथभक्तिर्नयद्यपिनृ
णांभवबंधहंत्री एकांतपापशवरान्वयजन्म
लब्धाविष्णोतथापिचभवान्मयिसुप्रसन्नः४७
यस्यप्रभोतवमनोज्ञपदारविंदस्पर्शंचतुर्मुख
भवाद्यपिदेववृंदाः नप्राप्नुवंतिविदितस्यमया
सलब्धस्त्वत्तोनकोपिसदयोनिजसेवकस्य४८
येनत्वयाभगवतात्रिदशैकवैरी कंसासुरोविनि
हतः कृतसर्वपापः सेंद्रामरप्रकरमर्त्यहितायपू
र्वंतस्मैनमः परममंगलदायतुभ्यम् ॥४९॥

हेदेव जिस भुवनोंके एक स्वामी तुमारे भजन कर्ते होए संसारके बंधन दूर करने वालि भक्ति नहि होई तद पुरुष निर्भाग्य हैंन कैसें जैसें एकांत पाप रूपी जोभीलों का वंश तिसमें जन्म पाय कर्के हेविष्णो तैसे मेरेमें तुसी प्रसन्न होएहो ॥४७॥ हेप्रभो जिन तुमारे मनकों हरने वाले चरण रूपी कमलों को स्पर्शकों ब्रह्मा शिवजी सें आद लेकर देव समूह नहि प्राप्त होतेहैं जौनसा स्पर्श सुख मैने जानाहैं सोसुख तुमारेसें मैने लभयाहै सो जानाहै की अपने सेवक पर तुमारे जैसा कोई दया करने वाला नहिहै ॥ ४८ ॥ जिस तैने भगवान ने देवतेयोंका एक वैरी कंस दैत्य करेहैं सारे तरोंके पाप जिसने ऐसासो देवतेयोंके हित वास्ते और मनुष्य समूहों के सुख वास्ते माराहै ऐसे परम मंगल देने वाले तुमारे तांई नमस्कार होवे ॥ ४९ ॥

येनत्वयासकलगोकुलरक्षणार्थं गोवर्द्धनाव्हय
गिरिर्विधृतोनखाग्रैः शक्रार्चितांघ्रिकमलाय
कृतप्रियायतस्मैनमोव्रजकुलस्तवकायतुभ्यं ॥
५० ॥ येनत्वयातिवलिनौयमलार्जुनौतौदे
वत्वमेवनिहितौवसुदेवजेन दुष्टश्चकालयव
नोयुधिधेनुकश्चतस्मैनमोस्तुनवमेघनिभायतु
भ्यम् ॥ ५१ ॥ श्रीदामरंकसुहृदर्थमनंतमूर्तेये
नत्वयामरपतेरचिताविभूतिः पूर्वंकृताभगवता
परमेश्वरेणतस्मैनमोस्तुनिजसेवकदुः खहंत्रे
॥ ५२ ॥

और हेभगवन् जिस तैने सारेही गोकुलकी रक्षा के लिये गोवर्धन नामा पर्वत नखों के अग्रभाग करके धारण करा है और इंद्र करके पूजित करेहैं चरण कमल जिनके और इंद्रका किया है प्यार जिनोंने ऐसे व्रजकुल के स्तवकतुमारे तांई नमस्कार होवे ५० ॥ और जिस तैने अत्यंत वलवान् यमलक्या दोनों इकठे अर्जुनोकें वृक्ष हेदेव वसुदेवके पुत्रहोए हुएतेंनें हत कीतेहैं और दुष्ट काल यवन युद्धमैं माराहै और धेनुक दैत्य जिस तैने मारा ऐसे नवीन मेघकी न्यांई आभा वाले तुमारे तांई नमस्कार होवे ॥ ५१ ॥ हेअनंत मूर्ते भगवन् जिस तैने अपने मित्र वडे निर्धन श्रीदामाके निमित्त हेअमरोंके पति विभूति ऐश्वर्य रचाहै और उसकों वडा करा ऐसे अपने सेवकोंके दुःख हनन करणे वाले तुमारे तांई नमस्कार होवे ॥ ५२ ॥

मायाभिरच्युतनिजाभिरनंतमूर्तेदुर्योधनोतिव
लवान्विनिपातितश्च येनत्वयाकुशिकपुत्रस
खेनविष्णोतस्मैनमोस्तुयदुवंशधरायतुभ्यम्
॥ ५३ ॥ पारिजातोजितोयेनविजिताःखंडला
दयः स्वजायाप्रीणनार्थायतस्मैतुभ्यंनमोनमः
॥ ५४ ॥ नरकोनिहतोयेनत्वयादेवोत्तमेनवै नृ
णांनरकदुःखंचतस्मैनित्यंनमोनमः ॥ ५५ ॥
वाणासुरस्यनिहतावाहवोयेनवैविभो लीला
जितमहेशायतस्मैतुभ्यंनमोनमः ॥ ५६

हेअच्युत हेअनंत मूर्ते तैंने अपनी माया कर्के अत्यंत वलवान् दुर्योधन डिगायदिया और हेविष्णो कुशिकके पुत्रके सखा होए हुए तेंने हे यादवोंके वंशकों धारण करने वाले ऐसे तुमारे कों नमस्कार होवे ॥ ५३ और जिस तैंनें अपनी स्त्री सत्यभामा की प्रसन्नता के लिये इंद्रादि देवता जीनकर पारिजात वृक्ष स्वर्ग सें जीतकर ल्याया ऐसे तुमारे तांई नमस्काहोवें ॥ ५४ ॥ और निश्चयकर देवतेओं मैं श्रेष्ट तैंने नरकासुरमारा और पुरुषांके नरक दुःख दूरकरे ऐसें तुमारे कों नित्यही नमस्कार होवे ५५ हेविभो वाणासुरकीयां वाहु काटके तिसकों जीतया और लीला कर्कें महेशजी जिनोंने जीते ऐसे तुमारेकों नित्यही नमस्कार होवे ॥ ५६ ॥

भूमेरपहृतोभारस्त्वयायेनमहात्मना क्षत्रिया
न्मायया हत्वातस्मैतुभ्यंनमोनमः ॥ ५७ ॥
व्यासउवाच ॥ इतितेनस्तुतोविष्णुः शबरे
णमहात्मना उवाचपरमप्रीत्यापरंवृणीष्वेतिजै
मिने ॥ ५८ ॥ चक्रिकउवाच ॥ परंब्रह्मपरं
धामपरमात्माकृपामयः अपश्यंत्वामहंसा
क्षाद्धरेकिमन्यद्वरंमम ॥ ५९ ॥ नध्याताभव
तोमूर्तिःपूजास्तुतिशतानिच नैवेद्यैर्दिव्यपुष्पै
श्चदिव्यधूपैः प्रदीपकैः ६० ॥

और जिस महात्माने तैने भूमिका सारा भार उतारैया क्ष
त्रियांको मायाकर्के मारके तिसतेरेतांई नमस्कार होवे ॥ ५७
इतनी कथा सुनाय फिर व्यासदेवजी बोले हे जैमिनि इस प्र
कार तिस महात्मा शबर कर्के स्तुतकरे होए विष्णुप्रस
न्न मन वाले प्रीति युक्त कहते भये जोतेरी इच्छाहै सो वरमांग
५८ इतना वचन भगवानूजीके मुखसे सुनतेही चक्रिक कह
ने लगा हे परंब्रह्म परं धाम परमात्मा कृपामय हे हरे तुम
कों साक्षात् इस मनुष्य दृष्टि कर्के मैंने देखयाहै इतसें
परैं तुमसें और क्या वरमांगू ॥ ५९ ॥ और तुमारी मूर्ति मैंने
ध्यान नहि करी पूजानकरी स्तुतियोंके सैकडे नहि पडे और
दिव्यधूप पुष्प दीप नैवेद्यों कर्के पूजा नहि करी ॥ ६० ॥

नतेस्मृतानिनामानिकदाचिद्भक्तितोमया त्व
त्पादसलिलंचैवविधृतंनहिमूर्धनि ॥ ६१ ॥ न
भुक्तंतवनैवेद्यंत्वद्व्रतंनमयाकृतं तथाप्यहम
पश्यंत्वांकिंकरोम्यपरैर्वरैः ॥ ६२ ॥ शवरान्व
यजातोस्मिसर्वधर्मवहिष्कृतः तथापिपादपद्मं
तेदृष्टमन्यैर्वरैस्तुकिम् ॥ ६३ ॥ त्वद्दर्शनंमहावि
ष्णोदैवतैरपिदुर्लभं तदेवाद्यमयाप्राप्तंवरैः कि
मपरैर्मम ॥ ६४ ॥

और तुमारे नाम मेने भक्तिसें नहि स्मरण करेहैं और तुमारे पादोंका जल मस्तकमैं नहि धारण करा ॥ ६१ ॥ और तुमारा नैवेद्य नहि खाया और ना तुमारा व्रत करा तदवी इस मनुष्य दृष्टि करकें मैनें तुमकों देखा इसथे परें और वर करकें क्या करनाहै ॥ ६२ ॥ शवर भीलों के वंशमैं जन्मा हुया सारे धर्मसें वाहर भीहां तदवी तुमारे चरण कमल देखेहैं और वरों करकें क्या करनाहै ॥ ६३ ॥ हे महाविश्णो तुमारा दर्शन देवतोंनेभी दुर्लभहै सो मैनें आज प्राप्त होएआहै औरनों वरों करकें क्या प्रयोजन है ॥ ६४ ॥

तथापिकमलाकांतवरंदित्सुर्यदिभवान् त्वयि
तिष्ठतुमेचित्तंमय्यस्तुत्वदनुग्रहः ॥ ६५ ॥
श्रीभगवानुवाच ॥ वचनामृतवर्षेणत्वदीयेन
महाशय संप्राप्तामहतीतुष्टिर्मयासेवकपालि
ना ॥ ६६ ॥ यदिदंवत्समेदत्तंत्वयापाल्यमनु
त्तमं अनेनात्यंततृप्तोस्मिभक्तिंगृह्णाम्यहतव
॥ ६७ ॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्त्वाभगवान्वि
ष्णुर्भक्तिग्राहीदयामयः तमालिंगितवान्भक्तं
चतुर्भिर्दीर्घवाहुभिः ॥ ६८

हेकमलाकांत तदभी आप जेकर मेरेकों वर देते हो तद ए
ह मेरेकों वर देओ की मेरा चित्त तुमारे मैं वना रहे एही
तुमारा मेरेकों वरहै ६५ ॥ इतनी वात भक्ति युक्त सुनके
भगवान जी कहने लगे हेमहाशय सेवकों के पालन क
रने वाले मैने तुमारे वचन रूपी अमृतकी वर्षा कर्के वडी
प्रसन्नता प्राप्त होईहै ६६ ॥ हेवत्स जो एह मैने तेरेकों व
र दिया है सो तैने पालना है इस कर्के में प्रसन्न अत्यंत हो
एआ हां तदमैं भक्ति तेरी कों ग्रहण कर्ता हुं ६७ ॥ व्यास
देवजी कथन करतेहैं इस प्रकार कथन कर्के भगवान् विष्णु
जो भक्ति कें ग्रहण करने वाले दयाका रूप तिस अपने
भक्त कों चारोही लंविये वाहीं सें आलिंगन कर्ते भये ६८ ॥

श्रीभगवानुवाच तुष्टोस्मिभवतोभक्तयावत्सच
क्रिकसत्तम तवाभिलषितंसर्वंक्षिप्रंसिद्धिंगमि
ष्यति ॥ ६९ भूयोपितंमहाभक्तमालिंग्यपरमे
श्वरः तत्रैवांतर्दधेविप्रविश्वात्माविश्वपालकः
७० ॥ सचक्रिकोतिसंहृष्टः हरिभक्तिपरायणः
पुत्रदारादिकंत्यक्त्वाजगामद्वारिकापुरीम् ७१
तत्रज्ञानंसमासाद्यप्रसादाच्चक्रपाणिनः आयु
षोंतेययौमोक्षंदेवानामपिदुर्लभम् ॥ ७२

फिर भगवान् जी कहने लगे हेवत्स चक्रिक सत्तम तेरी भ
क्ति करकें मैं प्रसन्न हां और तेरा मनका मनोरथ साराही
शीघ्र सिद्धिकों प्राप्त होवेगा ६९ ॥ फिर भी तिस महा भ
क्त कों परमेश्वर जी आलिंगन करकें विश्वके पालन कर
ने वाला हेविप्र उहां हीं अंतर्धान होगए क्या छिप ग
ए ७० ॥ उससें उपरंत सो चाक्रिक वडा प्रसन्न होएआ हुया
भक्तिमैं तत्पर स्त्रीपुत्रा दियों कों त्यागकर द्वारिका पुरि कों
चला जाता भया ७१ ॥ तहां जाके चक्र पाणिकी प्रसन्नता
सें ज्ञान कों प्राप्त होकर आयुके अंतमैं देवते यों कों जो
दुर्लभ मोक्ष है तिसकों प्राप्त होतभया ७२

तस्माद्भक्तिवशोदेवोभक्तिमात्रेणतुष्यति न
स्तोत्रैर्नचवित्तैश्चनतपोभिर्जपेनच ७३॥ फलं
यद्यपिचोच्छिष्टंदत्तंतेनद्विजोत्तम तथापितुष्टि
मान् विष्णुर्ज्ञात्वाभक्तिमचंचलाम् ७४ तस्मा
न्नारायणोदेवः संसारेस्मिन्मुमुक्षुभिः पूजित
व्यः सदाभक्त्याश्रद्धयाद्विजसत्तम ॥ ७५ ॥
येयजंतिदृढयाखलुभक्त्यावासुदेवचरणांवुजयु
ग्मं वासवादिविवुधप्रकरेड्यंतेव्रजंतिमनुजाः
खलुमोम् ॥ ७६ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेक्रि
यायोगसारेनैवेद्यार्पणमहिमवर्णनंनाम ॥

तिस कारण सें देवता भक्ति के वशहैं भक्ति मात्र करकें प्रस
न्न होतेहैं नाओह स्तोत्रों करकें वित्त धन करकें तपों करकें
और जपों करकें प्रसन्न होतेहैं ७३ ॥ देखो हेद्विजोत्तम जे
कर उच्छिष्ट फलभी देता रहा तद भी विष्णु भगवान्
अचंचल भक्ति तिसकी जानकर प्रसन्न होते भये ७४ जानों
की इस कारण सें नारायण देवता इस संसार मैं मोक्षकी
चाहना वालेयों ने हेद्विजसत्तम सर्वदा काल भक्ति श्रद्धा
करकें नारायण जी पूजने योग्यहैं ७५ जौनसें पुरुष वासु देव
भगवान् जीके चरण कमलोंके युगल दृढ भक्ति करकें पूजन क
र्तेहैं सोवासव इंद्रादि देवतेयोंके समूहों करकें स्तुति के योग्य
और निश्चयकर परमपद मुजकों प्राप्तहोतेहैं ७६ ॥ एह पद्म
पुराणके क्रियायोगसारमैं नैवेद्य लगाने की महिमा कहीहै ॥

अथ नैवेद्यार्पणमहिमप्रसंगान्नामदेवकथा
माहभक्तमालायाम् वामदेवसुतापुत्रोनामदे
वेतिविश्रुतःसजातोवर्द्धमानस्तुधूलिकेलिपरो
भवत् ॥ १ तत्रापिंवालकैःसार्धंनिर्मायरजसा
हरिं पूजयन्प्रत्यहंपूजामनुकुर्वन्निवार्भकः २
एवंगतेषुकालेषुसजातः सप्तहायनः माताम
हेनसार्धंसचिक्रीडाहर्निशंसुखी एकदाकार्य
योगेनवामदेवः क्वचिद्गतः ॥ ३ ॥ उक्त्वेदंनाम
देवायवत्सयामिदिनत्रयं कार्यमस्तिततस्त्वं
तुप्रातरुत्थायनित्यशः ॥ ४ ॥

अब नैवेद्य लगाने की महिमा के प्रसंगसें नाम देव छीं
वेकी कथा भक्त माला सें कहते हैं ॥ वाम देव नामा एक
छींवा था तिसकी कन्या का पुत्र नामदेव नामा प्रसिद्ध
हुया सो जन्मा हुया वधता २ धूलिके साथ क्रीडा करने
में तत्पर होता भया ॥ १ ॥ तहां भी वालकों के साथ मिट्टी
के हरि वनाय कर प्रति दिन पूजा कर्ता था और सो वालक
तिसके साथ नकल कर्ते भये ॥२॥ इस प्रकार समयके व्यतीत
होतेहुए सोसात वर्षका हुया परंतु सुख पूर्वक अपने मातामह
नाने वामदेवके साथ दिन रात्र क्रीडा कर्ता फिरता भया ॥३॥
एक दिनकिसी कामके वास्ते वामदेवकहीं जाताभया तोनामदे
वकों ऐसें कह गया हेपुत्रतीन दिन मेरे उहां लगनेहैं सो एक
काम घरकाहै सो तैंने नित्य ही करना प्रातःकाल उठके ॥ ४

गांदुग्ध्वाथशुचिर्भूत्वा गोविंदंपाययिष्यसि प
यस्तदात्वंभुंजीथाइत्येवंतुव्रतंमम ॥ ५ ॥
तथेत्युक्तोगतोवामदेवोग्रामांतरंतदा नामदेवो
पिगांदुग्ध्वापुटकेतद्विधायच ॥ ६ ॥ नी
त्वागोविंदभुवनेप्रातः प्रांजलिरब्रवीत् पिव
दुग्धंमहाराजमातामहनिदेशतः ॥ ७ ॥ म
यैवोपाहृतंचाद्यसतुग्रामांतरंगतः जल्पन्नेवं
नामदेवोगोविंदप्रतिमाग्रतः ॥ ८ ॥

प्रातः काल उठना गौकों दोहना पवित्र होकर दूध गोविंद जीकी प्रतिमाकों पिलाना फिर तेने भोजन करना ऐसा मेरा निश्चयहे ॥ ५ ॥ इतना वचन सुनते ही नामदेव ने तथास्तु कथन करा तो क्या ऐसे ही करा कंरूंग। ऐसे जदकहा तद वामदेव ग्रामांतरकों चला गया तो नामदेव नें गौको दोहन कर्के सो दूध डोने मैं पाय कर ६ ॥प्रातः काल गोविंदजीके मंदिरमैं ल्यायके हाथ जोड कर ऐंसे कहन लगा हेमहाराज मेरे कों नानेकी आज्ञाहै सोमैं दूध ल्याआ हां आप इसे पीओ ॥ ७ ॥ और सो आज ग्राम कों गया है घर का काम मैने ही कियाहै ऐसा कहता हुआ नामदेव गोविंद प्रतिमाके आगे स्थित होताभय ॥ ८ ॥

पिवतिस्मयदानैवतदासपुनरेवहि उत्थायो
त्थायदुग्धंतुगृहीत्वाप्रणिपत्यच ॥ ९ ॥ चिंत
यामासमनसासितानास्मिन्समाहृता अतोयं
नैबापिवतेतांदत्त्वादद्मितेपयः ॥ १० ॥ इत्युक्त्वा
सितया युक्तंकृत्वादुग्धंकरोतिच गृहीत्वापुनरु
त्थायप्रार्थयामासभूरिशः ॥ ११ ॥ नपपौप्र
तिमादुग्धंमनस्येवमचिंतयत् मांनजानात्य
तोनैवपिवत्येतत्पयोमम ॥ १२ ॥

जद प्रतिमा दुग्ध नहि पान कर्ती भई तदसो फेर तिस पात्र
को उठाय २ के प्रणामा कर कर्के मुखमैं जोडता भया ९ ॥
तद्भी नहि पान कर्ती भई तो मनमैं चिंतन करने लगा इस
मैं मैने खंड नहि पाईहै इसवास्ते नहि पीतेहैं खंड पाउंगा तद
पीएँगे ॥ १० ॥ ऐसा कहके दुग्ध कों खंडके युक्त किया
ग्रहण कर्के फिर हाथमैं लेकर वडी प्रार्थना कर्ता भया ११ ॥
जद फिरभी नहि प्रतिमा ने दुग्ध पान करा तद मनमैं ऐसे
चिंतन कर्ता की एह मेरेकों जानते नहिहैं इस वास्ते मेरे हा
थसें दूध नहि पीतेहैं ॥ १२ ॥

अहंतुवामदेवस्यसुतापुत्रोनसंशयः तिष्ठाम्य
त्रैवभवनेजानेत्वांत्वन्नवेत्सिमाम् ॥ १३ ॥ इ
त्युक्त्वादुग्धमादायपुनरुत्थाययत्नतः प्रसी
दमेपिबपयोमुहुरेवमुवाचतम् ॥ १४ ॥ एवं
प्रार्थयमानस्यसंपूर्णंदिनमत्यगात् नपपौप्र
तिमादुग्धंततश्चिंतापरोभवत् ॥ १५ ॥ किं
चाहमशुचिःकिंवापात्रमेतत्पयोशुचि अतः
प्रातःसमुत्थायस्नात्वाप्रक्षाल्यभाजनम् १६

ऐसा चिंतन करके कहने लगा हे महाराज मैं तो वामदेवकी पुत्री का पुत्रहों और इहांही रहताहुं आप मेरेकों नहि जानतेहो मैं तुमकों जानता हुं ॥ १३ ॥ ऐसे कहके दुग्ध लेकर फिर उठाया यत्नसें उनके मुखमैं लगाया वारं वार ऐसे कहने लगा हे भगवन् आप प्रसन्न हो इस दूध कों पीओ १४ इसीतरासें प्रार्थना करतेहोए सारा दिन वीत जाता भया और प्रतिमा भी दुग्ध नहि पान करती भई तद वडी चिंता मैं तत्पर होता भया ॥ १५ ॥ और मनमैं विचारता भया कीमैं अपवित्रहां जां एह पात्र उच्छिष्टहै जिसकारणसें नहिपीतेहैं अछा प्रातःकाल उठके स्नान करके भांडा दूध का ध्योय कर ॥ १६ ॥

दास्यामिससितंदेवंततःपास्यसिनिश्चितं कथ
मन्नमहंभोक्ष्येगोविंदेस्मिन्बुभुक्षिते ॥ १७ ॥
इतिनिश्चित्यशिष्येसरात्रौत्यक्ताशनोदकःमा
त्रानिशंप्रार्थ्यमानोबुभुजेनैवकिंचन ॥ १८ ॥
अथप्रभातेचोत्थायस्नात्वासंमार्ज्यमंदिरं प
योदुग्ध्वाप्रतिष्ठाप्यपुनःस्नात्वासमाहितः ॥
॥ १९ ॥ ससितंदुग्धमादायपिबेतिमुहुरब्रवी
त् नपपौप्रतिमातत्रमनस्येवमचिंतयत् २० ॥
नस्नानंकृतमेतेननकृतंदंतधावनं स्नापयित्वां
भसावस्त्रंपरिधायाग्रतः स्थितः ॥ २१ ॥

और दूध काढकर पकायके उसमैं खंड मिलाय कर देऊंगा तद निश्चयकर पीलऐंगे परंतु इनके भूखे होएमैं कैसे अन्न भोजन करूं १७ ऐसा निश्चय करा अर अन्न जल कुछ नहि खाया पीया और माताने वहुतसी प्रार्थना भी करी तद भी भूषा प्यासा ही सोय रहा ॥ १८ ॥ रातके वीत जानेसें उपरंत उठकर आप मंदिर कों पवित्र करा गौका दूध चोयकर पकाया भांडेमैं पायकर फिर स्नान करा सावधान मनवाला ॥ १९ ॥ खंड पायके दूधमैं उनके पास ल्याके वारं वार कहने लगा अब दूध पीओ जद फिरभी प्रतिमानैं दुग्ध नहिपिया तो फिर ऐसा चिंतन कर्ताभया ॥ २० ॥ की इनोंने स्नान नहि कराहै फिर उनकों स्नान कराया वस्त्र पहराए आगे स्थित होके कहन लगा ॥ २१ ॥

पयोगृहीत्वापाणिभ्यामुवाचप्रणयान्वितः म
यापिनैवभुक्तंभोदिनमेकंसमत्यगात् ॥ २२
॥ अतःपिवमहाराजपयइत्यब्रवीन्मुहुः नप
पौप्रतिमादुग्धंज्ञात्वैतत्सरुरोदह ॥ २३ ॥
अथतत्रतुगोविंदप्रतिमानेत्रयुग्मतः अपश्य
च्चास्रुधारांवैदृष्ट्वावालोप्यभाषत ॥ २४ ॥
किंरोदिषिपिवस्येतन्नोचेदत्रैवजीवितं त्यक्ष्या
मिपश्यतस्तेद्यसत्यमेतन्नसंशयः ॥ २५ ॥

हाथों करकै दूधको ग्रहणकर नम्रताके युक्त कहने लगा हेभग
वन् एक दिन वीत गयाहै मैनेभी कुछनहि खायाहै ॥२२॥ हे
महाराज इस कारणसें आप इस दूधको पानकरो जद फिरभी
नाहि पान करा तद एह वात जानी उसने की अव नहिही पान
कर्ती तद रोने लगा ॥२३॥ इससें उतंत प्रतिमा के दोनो ने
त्रोसें अश्रुपात चलने लगे तो उनकों देख कर वोला ॥२४॥
वालक कहने लगा रोदन कर्तेहो और इसकों नहि पीतेंहो
अच्छा मै अपना जीवन इसी जगामैं त्यागूंगा देखते २ तुमारें
इसमैं कुछ झूठ नहिहैं सत्य कहता हुं ॥ २५ ॥

इत्युक्त्वातन्मुखेदुग्धंयोजयामासहृष्टवत् प्रति
माप्यपिवद्दुग्धमित्याश्चर्यंतरंमहत् ॥२६॥
पिवंतींतांपुनः प्राहनामदेवोतिहार्षितः सर्वंपि
वसिगोविंदमदर्थंनैवरक्षसि ॥ २७ ॥ तव
पीतावशिष्टंतुमातामहसमर्पितं वुद्धंचार्पितम
स्माभिरतोविज्ञापयाम्यहम् ॥ २८ ॥ इति
श्रुत्वाथसामूर्तिःसस्मितादुग्धमत्यजत् गृही
त्वातत्करेहृष्टोनामदेवोवुभुक्षितः ॥ २९ ॥

ऐसा कहकर्के फिर प्रसन्न मन वाला दुग्धका पात्र उनकेमुख मैं जोडता भया तदप्रतिमा तिस दुग्धकों पान करनें लगीएह आश्चर्यहै ॥ २६ ॥ जददूध पिया कर्तीथी तिसकों हार्षित हुया २ नामदेव कहने लगा हे गोविंद साराही दूध पीजातेहो मेरे निमित्त कुछ नहि रखतेहो ॥ २७ ॥ क्योंकी तुमारें पीनेसें शेषरहा हुया जो होगा सो अपने नानेकों दिखाउं गा तद सो सत्य मानेगा इस वास्ते तुमारी प्रार्थना कर्ताहुं ॥२८॥ इस प्रकारका वचन सुनके तिसका सों मूर्ति मंदहास्यकर्ती २ दुग्ध कों त्याग देती भई तिसकों हाथमैं लेकर प्रसन्न चित्त वाला भूषा हुया तिसकों पान करलेता भया ॥ २९ ॥

वुभुजेमातृदत्तंयद्गृहेभोज्यादिकंस्थितं केचि
दाश्चर्यमेवेतिश्रुत्वाश्रद्दधिरेनहि ॥ ३० ॥ के
चिद्वदंतिसत्यंस्याद्भगवान्भक्तवत्सलः केचिदा
गत्यसुमतिंपप्रच्छुरिदमादरात् ॥ ३१ ॥ इत्ये
तद्भक्तिमाहात्म्यंनामदेवस्यकीर्तितम् ॥

और घरमैं जो भोज्यादिक स्थितथा सो माताने दिया तिस कों भोजन कर्ता भया इसवातकों सुन कर कईक लोक आश्चर्य मानते भये और श्रवण कर्के निश्चय नहि कर्ते भये कीएह वात सत्य हय ॥ ३० ॥ और कोई कहैंकि भगवानजी कों भक्त प्यारेहैं भक्तोंकी इच्छा पूर्ण कर्तेहैं एह वात सत्यहै और कितनेक लोक आय २ कर वडे हर्ष आदर प्यारसें सुमति कों एह वात पूछते भये की एह वात कैसें हय ३१ एह इतनीकथा नामदेव की भक्तिकी कहीहै नैवेद्यकी महिमाहै ॥

अथकेशवोपरिव्यजनकरणमहिमवर्णनं कू
र्मपुराणे अनुलिप्यजगन्नाथंतालवृंतेनवीजये
त् ॥ वायुलोकमवाप्नोतिपुरुषस्तेनकर्मणा
॥ १ ॥ पाद्मेक्रियायोगसारे ॥ मयूरपिच्छव्य
जनैर्निदाघेपूजितोहरिः ददात्यभिमतंसर्वम
चिरेणैवसत्तम ॥ २ ॥ तालवृंतकवातेनपवि
त्रांवरवायुना यैर्ग्रीष्मेवीजितोविष्णुस्तेसर्वेस्व
र्गगामिनः ॥ ३ ॥

अब केशव भगवान् जीकों पंखा झोलने की महिमा कहतेहैं कूर्म पुराणमैं ॥ जो पुरुष जगन्नाथ जीकों गंधादियों कर लेप कर्के पक्खे के साथ वीजन करे क्या झोलै तदसो पुरुष तिस कर्मके प्रभाव कर्के वायु लोकमैं प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ पद्म पुराणके क्रियायोगसार मैं लि० हेसत्तम गरमी के दिनोंमैं मयूरके पिच्छकें साथ क्या मोरछडके साथ पूजे होए नारायण थोडे कालकरके ही अभिमत कामना देतेहैं २ और तालवृंतकी वायु कर्के क्या पंखेके साथ और वस्त्रकी वायु कर्केजो ग्रीष्म ऋतुमैं वीजन कर्तेहैं क्या झोलतेहैं सो सारेही स्वर्गके गामीहोतेहैं ॥ ३ ॥

अथचामरमाहात्म्यंकूर्मपुराणे चामरैर्वीजयेद्य
स्तुदेवदेवंजनार्दनम् तिलप्रस्थप्रदानस्यफलं
प्राप्नोत्यसंशयम् १ दद्याद्देवायचामरंमणिदंड
विभूषितं हेमरूप्यादिकंदंडंतस्यपुण्यफलंशृ
णु ॥ २ ॥ चामरव्यग्रहस्ताग्र दिव्यस्त्रीप
रिवारितः महाभोगविमानस्थश्चिरंदेवपुरेव
सेत् ॥ ३ ॥

अव भगवान् जीकों चौरी करने की माहिमालि० कूर्म पुरा
णमें कहाहै जो पुरुष देवदेव जनार्दनजीकों चौरी कर्ताहै सो
प्रस्थ प्रमाण तिलोंके दानकरनेके फलकों प्राप्तहोताहै ॥१॥ औ
र जोकोई पुरुष मणियोंके साथ शोभायमान दंडवालि अथ
वा सोने चांदीके दंडवालि चौरी विष्णु कों देताहै तिसके पु
ण्यकाफलश्रवणकर ॥ २ ॥ क्याफल होताहै चौरियां जिनके
हाथमें झोलनेमें तत्पर हाथों के अग्रभाग जिनके ऐसियों दि
व्यस्त्रियों कर परिवारेया हुया महाभोगोंकर युक्त विमानपर च
ढ कर्के देवपुरीमें जायकर चिरकाल निवास कर्ताहै ॥ ३ ॥

अथदर्पणमाहात्म्यं कूर्मपुराणे ॥ दर्पणस्यप्रदानेनरूपवान्दर्पवान्भवेत् दर्शयित्वातथातंचनाभागस्त्वथजायते ॥ १ ॥

अबभगवानजी कों सीसा दिखानेका माहात्म्य लिखतेहैं कूर्म पुराणमैं कहाहै भगवानूजी कों सीसे के दिखाने कर्के सुंदर रूपवान् दर्पित अहंकार वाला होताहै और उनकों सीसा दिखाने कर्के अभागी नहिहोताहे ॥ १

अथनृत्यगीतादिमहिमवर्णनं विष्णुधर्मोत्तरे॥
ततः प्रमुदितैर्भक्तैस्तालवीणादिभूषितैः कार
येद्गीतनृत्यादिकुर्याच्चानंदयनूजनम् ॥ १ ॥ वि
सृज्यलज्जांयेऽधीतेनृत्यतेगायतेपिच कुलकोटि
समायुक्तोलभतेमामकंपदम् २ ॥ योनृत्यति
प्रहृष्टात्माभक्तिभावैरनेकधा सनिर्दहतिपापा
निमन्वंतरकृतान्यपि ॥३॥ नारदः नृत्यतांश्री
पतेर्गेहेतालिकावादनैर्भृशं उड्डीयंतेशरीरस्थाः
सर्वेपातकपक्षिणः ॥ ४ ॥

अब विष्णुके आगे नृत्यगीतकी महिमा लिखतेहैं विष्णुधर्मोत्तरमैं कहाहै ॥ भगवानूजीकी आर्ति कर्के पीछे प्रसन्न मन वाले भक्तोंने ताल वीणादियोंकर्के भूषितोंने गीत नृत्य करना योग्यहै आनंदके उत्पन्न करने वाला ॥१ ॥ और जो पुरुष लज्जाका त्याग कर्के गायन कर्ताहै और नृत्य कर्ताहै सोक्रोड कुल कर्के युक्त मेरे पदकों प्राप्त होताहै २ जो पुरुष प्रसन्न चित्त अनेकतरों केभक्तिभाव कर्के विष्णुके आगे नृत्य कर्ताहै सो सेकडे मन्वंतरों केकरेहोए पापोंकों दग्धकर्ता है ॥ ३ ॥ नारदजी कथन कर्तेहैं अतिशय कर्के ताडियां वजा कर श्रीपतिके मंदिरमै नृत्यकरने वाले पुरुषोंके शरीरमैं स्थित जोपापहैं सो पक्षिरूप होकर्के उडजातेहैं ॥ ४ ॥

कृष्णंसंतोषयेद्यस्तुसुगीतैर्मधुरस्वनैः सामवेद
फलंप्राप्यमोदतेविष्णुसन्निधौ ॥ ५ ॥ नारदी
ये विष्णोर्नृत्यंचगीतंचनटनंचविशेषतः ब्रह्म
न्ब्राह्मणजातीनांकर्तव्यंनित्यकर्मवत् ॥ ६ ॥वा
राहे ब्राह्मणोवासुदेवार्थेगायमानोनिशंपरं न
ववर्षसहस्राणिकुवेरभवनेवसेदिति॥ ७ ॥स्कां
देगीतंवाद्यंचनृत्यंचहास्यंविष्णुकथांमुने यःक
रोतिसपुण्यात्मात्रैलोक्येपरिसंस्थितः ॥ ८ ॥

और जोकोई मधुरस्वरोंवाले सुंदरगीतों करके कृष्णजीकों प्रस
न्न कर्तेहैं सो सामवेदका पाठ करनेके फलकों प्राप्तहो करकै वि
ष्णुके समीप आनन्द भोगतेहैं ॥ ५ ॥ नारदीयमै कहाहै हे ब्र
ह्मन् ब्राह्मण जाति वालेयोंकों विष्णुके आगे नाचना गायन
करना नाट्य करणा विशेष कर नित्यकर्मोंकी न्यांई करना यो
ग्यहै ६ वाराहमैं कहाहै ब्राह्मण जाति वाला वासुदेव जीके नि
मित्त वारंवार उत्कृष्ट गायन कर्ताहै सो नौहजारवर्ष कुवेरके भवन
अलका पुरीमैं निवास कर्ताहै ॥ ७ ॥ स्कंदमैं कहाहै हेमुनेगा
यन करणा वाजे वजाने नृत्य करना हांसी करणी विष्णुकी
कथा श्रवण करणी इतने काम विष्णुके निमित्त जो कर्ताहै
सो पुण्यवान् त्रिलोकी के ऊपर स्थितहै ८ ॥

क्रियायोगसारे विष्णोरायतनेयस्तुभक्तियुक्तः प्रनृत्यति सयातिब्राह्मणश्रेष्ठतद्विष्णोः परमं पदम् ॥ ९ ॥ यस्तुगायतिगीतानिभक्त्यानारायणाग्रतः सनृपत्वमवाप्नोतिगंधर्वाणांपुरेस्थितः ॥ १० ॥ पाद्मे वीणावेणुरवोत्थेन योगीतेनप्रभुंहरिं श्रावयेत्परयाभक्त्यासयातिपरियोग्यताम् ॥ ११ ॥ वल्लकीनिनदंशब्दं यः करोतिहरेर्विभोः पुरस्ताद्यद्विजश्रेष्ठसयातिहरिमंदिरम् ॥ १२ ॥

क्रिया योगसार में लिखाहै विष्णुके मंदिरमें भक्तिके युक्त जो नृत्य कर्ताहै हे ब्राह्मण श्रेष्ठ तिसविष्णुके परम पदको प्राप्त होताहै ॥ ९ ॥ जोपुरुष नारायणजी के अग्रमें गीत गायन कर्ताहै सो गंधर्वोंके पुरमें स्थित होएआ हुया राज्यभावको प्राप्त होताहै १० पद्मपुराणमें लिखाहै वीणा वेणुके शब्द कर्के उत्पन्न होए हुए गीतकर्के परम भक्तिके साथ हरि प्रभुको श्रवण करातेहैं सो तिस परमेश्वरकी योग्यताको प्राप्त होतेहैं ॥ ११ ॥ जोपुरुष विभु हरिके आगे वीणाका शब्दकर्तेहैं सो हरिके भक्तोंके आगे विष्णुके मंदिरमें जातेहैं ॥ १२ ॥

मृदंगवाद्येनयुतंनर्त्तनंयःकरोतिवै पुरस्ताद्वासु देवस्यसभवेद्विष्णुवल्लभः ॥ १३ ॥ वृहन्नारदीये ॥ देवतायतनेयस्तुभक्तियुक्तः प्रनृत्यति गीतानिगायतियदातत्फलंश्रृणुभूपते ॥ १४ ॥गंधर्वराजतांरागान्नृत्याद्रुद्रगणेशताम् प्राप्नोत्यष्टकुलैर्युक्तआकल्पंमोक्षभाङ्नरः ॥ १५ ॥ नरसिंहपुराणे गीतवाद्यादिकंनाट्यंशंखतूर्यादिनिः स्वनम् यःकारयतिवैविष्णोःसयातिसदनंहरेः ॥ १६ ॥

और जो कोई पुरुष मृदंग वाजे कर्के भगवान् जीके आगे नृत्य कर्तेहैं सो वासुदेवजीके आगे विष्णुके प्यारे होतेहैं ॥१३ वृहन्नारदीयमैं कहाहै देवताके मंदिरमैंभक्ति कर्के युक्तजो पुरुष नृत्यकर्ताहै और जद गीतगायन कर्ताहै तिसका फल श्रवण कर ॥ १४ ॥ राग गायन करनेसें गंधर्वोंकी राजताकों प्राप्त होताहै और नृत्य करनेसें रुद्रगणोंका ईशता कों प्राप्त होताहै और आठ कुलों कर्के युक्त कल्प पर्यंत मोक्षका भागी होताहै १५ ॥ नरसिंह पुराणमैं कहाहै गाना वाजे वजानें नाचना शंखादि वाजेयोंके शब्द करने अथवा करावताहै विष्णुके आगे सो हरिके लोकमैं जाताहै ॥ १६ ॥

पर्वकालेविशेषेणकामगःकामरूपवान् सुसं
गीतविदैश्चैवसेव्यमानोऽप्सरोगणैः ॥ १७ ॥
महार्हमणिचित्रेणविमानेनविराजितः स्वर्गा
त्स्वर्गमनुप्राप्यविष्णुलोकेमहीयते ॥१८॥ अ
थगीतनृत्यप्रसंगादितिहासमाह पुनर्भूयःप्रव
क्ष्यामिभक्तेर्माहात्म्यमुत्तमं यच्छ्रुत्वाजायते
भक्तिर्वासुदेवेमहात्मनि॥ १९ ॥ जगन्नाथपुरी
प्रांतेदेशेचैवोत्कलाभिधे विंदुविल्वइतिख्या
तोग्रामोब्राह्मणसंकुलः ॥ २० ॥

पर्व के समय विशेष कर्के कामग होताहै और कामदेव के रूपकी न्यांई होताहै और संगीत के जानन वाले और अप्सरों के समूहों कर्के सेवित होताहैं ॥ १७॥ और वडे मोलकीयां मणियों के चित्रों वाले विमान पर विराजमान होएआ हुया स्वर्गसें स्वर्ग कों प्राप्त होकर विष्णु के लोंकमैं महिमा कों प्राप्त होताहै ॥ १८ ॥ अब गीत नृत्य के प्रसंगमैं इतिहास कहते हैं ॥ अब फेर भुक्तिका उत्तम माहात्म्य कहताहुं जिसकों श्रवण कर्के वासु देव महात्मा मैं भक्ति होतीहै ॥ १९ ॥ जगन्नाथ पुरी के समीप उत्कल नामा देशमैं विंदुविल्वनामक ब्राह्मणों का भरा हुया ग्रामथा ॥ २०

तत्रोत्कलोद्विजोजातोजयदेवइतिश्रुतः विद्या
भ्यासरत शांतःपुरुषोत्तमपूजकः २१ अथतत्रै
वविप्रोन्योदेवशर्मेतिविश्रुतः अनपत्योवभूवा
सौजगन्नाथमुपागतः २२ नमस्कृत्यहरिंमूर्ध्ना
स्वीचकारकृतांजलिः यदिमेसंततिर्नाथत्वत्प्र
सादाद्भविष्यति ॥ २३ ॥ अपत्यंप्रथमंतुभ्य
मर्पयिष्याम्यसंशयम् प्रतिश्रुत्यमनस्येवंसया
तिनिजमंदिरम् ॥ २४ ॥

तिसमैं उत्कल जातीका ब्राह्मण जयदेव नामक विद्याका अभ्या
सी शांत रूपी पुरुषोत्तम जीका पूजन करने वाला निवास
कर्ताथा ॥ २१ ॥ उसीमैं और एक देवशर्मा नामक ब्राह्मण
निवास कर्ताथा सो ब्राह्मण अनपत्य क्या संतानसें रहितथा
सो एक दिन जगन्नाथ पुरीमैं आय प्राप्त भया ॥ २२ ॥ तहां
मंदिरमैं शिर कर्के हरिकों प्रणाम कर हाथ जोडके स्वीकार
कर्ता भया क्या सुखन कर्ता भया क्या हेनाथ तुमारी कृपा
कर्के मेरेघर संतान होवेगी ॥ २३ ॥ तद पहली संतान तुमारे
कों अर्पण करूंगा इसमैं संशय नहि है ऐसे प्रतिज्ञा कर्के
अपने घरमैं चला आया ॥ २४ ॥

ततः कालेनकियताकन्यैका प्रथमाजनि ततः
पुत्रानलभतसाधुवृत्तान्मनोहरान् ॥ २५ ॥
ततः समनसाऽस्मृत्वासपत्नीकोद्विजोत्तमःक
न्यांगृहीत्वाहर्षेण जगन्नाथमुपागतः॥ २६॥
नमस्कृत्यजगन्नाथंदेवशर्माब्रवीद्वचः देवदेवज
गन्नाथप्रसादःफलितोमम ॥ २७ ॥ प्रथमा
तनयाजातापुत्रास्तुतदनंतरं अतः प्रतिश्रुतां
कन्यांददामिप्रतिगृह्यताम्॥ २८ ॥

तिससें उपरंत कितने क समय करके प्रथम तिसके घर एक कन्या जन्मी तिससें उपरंत फिर श्रेष्ठ वर्तन वाले सुंदर पुत्र जन्मते भये ॥ २५ ॥ तद कितने चिर काल पीछे पत्नीके सहित सो द्विजोत्तम मनमें तिस प्रतिश्रुत सुखन कों स्मरण करके दूसरें दिन वडे हर्ष कर युक्त कन्याकों लेकर जगन्नाथ जीकेमंदिरमें आया ॥२६ ॥ जगन्नाथ जीके आगेनमस्कार करके देव शर्मा कहन लगा हेदेवतयों के देवता जगतूके स्वामी भगवान्जी तुमारा प्रसाद मेरेकों फलितहुयाहैं क्या मेरे मनका मनोरथ सिद्ध हुयाहै तुमारी कृपासें ॥२७॥ परंतु एक बातहै पहले कन्या जन्मी फिर उपरंत पुत्रहुए इसकारण सेंमैंतुमारे कों प्रथमसंतान सुखन करी होइ कन्याहै सो देताहुं इसकों तुम ग्रहण करो ॥ २८ ॥

इत्युक्त्वातांकरेणासौगृहीत्वातांप्रदर्श्यच पूजके
भ्योथवृत्तान्तमादितोव्याजहारसः ॥ २९ ॥
ततोवहिः समागत्यसोवतस्थौद्विजःक्वचित् रा
त्रौतस्यचैविप्रस्यपूजकस्यजगत्प्रभुः ॥ ३०॥
स्वप्नेसकथयामासजगन्नाथोद्भुतंवचः देवशर्म
न्प्रसन्नोस्मिस्वीकृतातेसुतामया ॥ ३१ ॥परं
नुजयदेवायदेह्येनांमत्प्रियोह्यसौ अहमेवस
विद्धिनात्रकार्याविचारणा ३२ ॥

ऐसैं कथन कर हाथसैं कन्याकौं पकड कर तिनकौं दिखायके और पुजारियौं कौं उसके चढाने का वृत्तांत आदसैं लेकर सुना देताभया ॥२९ फिर तिस मंदिरसैं बाहर आनकर कहींस्थानां तरमैं बैठ जाताभया क्या उहां निवास कर्ताभया ऐसे दिनबीतग या रात पडी जद शयन करा तिसने तो उसकौं स्वप्नमैं और पु जारियौंकौं स्वप्नमैं जगत्प्रभु कहते भये ॥३०॥ जगन्नाथजी क हनेलगे अद्भुत वाणी ककैं हेदेवशर्मन् तेरी कन्या मैं ग्रहण कर लई ॥ ३१ ॥ मेराप्यारा जयदेव नामा भक्तहै और मेराही सो रूपहै इसमैं कुछ विचार नहिहै सो एहकन्या उसकौं जा कें दान करदे मैं तेरे पर प्रसन्नहां ३२

पूजकोप्येवमेवाथस्वप्नंदृष्ट्वाप्रबोधितः देवश
र्मासमागत्यस्वप्नंप्रोवाचहर्षितः ॥ ३३ ॥ श्रु
त्वेदंदेवशर्मापिस्वप्नंसत्यममन्यत पूजकंतंन
मस्कृत्यगृहीत्वातनयांनिजाम् ३४ ॥ जगाम
जयदेवस्यसन्निधौहृष्टमानसः तंतूपर्णकुटीम
ध्येग्रामाद्बाहिरवैक्षत ॥ ३५ ॥ दरिद्रंनिरपेक्षंच
शास्त्रंपश्यंतमादरात् मनसानुजगन्नाथंध्यायं
तंमुदिताननम् ॥ ३६ ॥

और इसी तरां का स्वप्न पुजारीयों कों हुयाकी तुम उस ब्राह्मण कों जाके कहो की एह अपनी कन्या जयदेवकों दानकरदे ऐसे देखकर पुजारी उठखडा हुया और उस ब्राह्मणके पास जाके हर्ष युक्त पुजारी ब्राह्मण स्वप्नका वृत्तांत कहने लगा ॥ ३३ ॥ ऐसा स्वप्न तिसका सुनके देवशर्मा सत्य मानता भया फिर तिस पुजारीकों नमस्कार करी कंन्याकों साथ लेकर उहांसें चलता भया ३४ चलता २ प्रसन्न मन वाला जयदेवके पास चला गया तो क्या देखताहै शहरसें बाहर निरंतर स्थानमैं पत्रोंकी कुटियाके मध्यमैं बैठे हुए तिसकों देखताभया ॥ ३५ ॥ कैसा जयदेव है दरिद्री इच्छाकिसी वस्तूकी नहिजिसकों और आदरसें शास्त्रकों देखताहै और प्रसन्न हास्य युक्त मुख जिसका मनकर्कें जगन्नाथजी कों ध्यानकर रहाहै ॥ ३६ ॥

प्रणम्यजयदेवंतंदेवशर्माब्रवीद्वचःइयंमेतनया
ब्राह्मनूजगन्नाथाज्ञयामय ३७नाम्नापद्मा
तीतुभ्यंदीयतेनुगृहाणतां इत्युक्तोजयदेवस्तमु
वाचमधुरंवचः॥४८॥अहंनकन्यादानस्यपा
त्रंदीनोनिकेतनः ममापिनजिघृक्षाहितांकिमि
दंभाषसेवृथा॥ ४९ ॥ जगन्नाथाज्ञयेत्युक्त्वाय
न्मांवंचयसिस्फुटं कुतएवंमतिभ्रंशोगच्छग
च्छयथासुखम् ॥ ४० ॥

ऐसे जयदेवकों नमस्कार कर देवशर्मा कहने लगा हे ब्राह्मणों
मेंश्रेष्ट एहमेरी कन्याहै जगन्नाथ जीकी आज्ञा कर्के मैने ३७
पद्मावती नामकर्के तुमकों देनीहै इसकों आप ग्रहण करो इस
प्रकार जब ब्राह्मणने जयदेवकों कहा तब जयदेव मधुरवाणी क
र्के कहताभया ४८ हेद्विजमैं कन्यादान लेने का पात्र नहि हां
क्योंकी दरिद्रीहां घरवाहर मेरा नहिहै और मेरेकों गृहस्थकी इ
च्छाभी नहिहै क्यों वृथा वातां कर्ताहैं ॥ ३९ ॥ जोतूं जगन्नाथजी
की आज्ञा ऐसे कहकर्के मेरेकों ठगताहैं कहां सेंतेरी वुद्धिमारी
गई चलाजा २ जहां सें आयाहैं ॥ ४२ ॥

आनीयपूजकंतन्तुविशर्मातियत्नतःनिवेदया
मासमुहुस्तांचनस्वीचकारसः ॥ ४३ ॥ ततः
स्वतनयांतत्रस्थापयित्वा द्विजोब्रवीत् अयंतुते
पतिः पुत्रित्वयापूज्यश्चसर्वदा ॥ ४४ ॥ पति
सेवापरानारीसुखमक्षयमश्नुते इत्युक्तातादेव
शर्मायर्योपत्न्यासहाश्रमम् ॥ ४५ ॥ सापिक
न्यास्थितातत्रजयदेवस्यसन्निधौ जयदेवस्तु
तांप्राहगतौतौपितरौतव ॥ ४६ ॥

ऐसे जब तिसने कहा तब तिस पुजारि कों यत्नसें साथ ल्याय कर स्वप्नका वृत्तांत निवेदन कर्ता भया तबभी उह जयदेव नहि स्वीकार कर्ताभया ॥ ४३ ॥ तब सो ब्राह्मण अपनी कन्या कों तिसके पास कुटियासें बाहर बिठायकर कहने लगा हेपुत्रि ए हतेरा पतिहै तैंने इसकी आज्ञामें सर्वदा कालवर्तना एही तेरे कों पूजा कें योग्यहै ॥४४॥ क्योंको पतिकी सेवामें रहने वाली नारी अक्षय सुख भोगतीहै इसप्रकार की शिक्षा तिसकों दे कर्के अपनीस्त्रीके सहित आश्रमकों चलाआया ॥ ४५ ॥ सो कन्या तिनके आये होएपीछे तहां जयदेव के पास बैठी रही तो जयदेव तिसको कहने लगा तेरे मातापिता तो चले गएहैं तूक्यों इकल्ली इहां बैठीहैं ॥ ४६ ॥

त्वांविहायत्वमप्येकाकथंस्थास्यसिकानने अ
थपद्मावतीप्राहभगवन् किंब्रवीषिभो: ४७ ॥
सुतातुपितृदेयावैसमांतुभ्यंददौपिता अतस्त
वाहंत्वंचेन्नामतिभक्तामनागसम् ४८ ॥ त्य
क्ष्यसीत्यत्रकिंकुर्यांनाहमेकात्वयिस्थिते पद्मा
वतीवचः श्रुत्वाजयदेवोप्यचिंतयत् ॥ ४९ अ
नयासत्यमुक्तंहित्यागेदोषोमहान्मम तस्मा
दस्याःपितुर्गृहंगत्वाहमनयासह ॥ ५० ॥

ओह तो तेरेको छोड गयेहैं तूकैसे इकल्ली वनमें रहेगी इतना वचन कहनेसें उपरंत पद्मावती कहने लगी आप क्या कहते हो ॥ ४७ ॥ कन्या माता पिताने दान करीदीहै सो तो मेरेको तुमारे प्रति देगएहैं अब तुम मेरे पति हो मैंतुमारी भक्ति करने वाली दासीहुं ॥ ४८ ॥ निरपराध मेरेको आप त्यागदेओगे त द क्या करोंगी और तुमारे पास होनेसें इकल्ली नहिहां ऐसा सार्थरू वाक्य पद्मावतीका सुनकर जयदेवचिंतन करनें लगा ॥ ४९ ॥इसने तो सत्य कहाहै त्यागनेमैं अबमेरेको भी वडा दोष है अब इसकारणतें इसके साथ इसके पिताके घरमैं जाकर वेदविधिसें व्याह करल्याताहुं ५० ॥

इमांप्रतिग्रहीष्यामिविधिनानात्रसंशयः इति
निश्चित्यमनसाजयदेवउवाचताम् ॥ ५१ ॥ ए
ह्यागच्छत्वयासार्धंगच्छामित्वत्पितुर्गृहं वि
धिनातत्रतेपाणिंग्रहीष्यामिनसंशयः ५२ इ
त्येवंवचनंश्रुत्वाप्राहपद्मावतीपुनः त्वदाज्ञाक
रणंधर्म इत्येवंमांपिताब्रवीत् ॥ ५३ ॥ अतःप्र
सादोथमहानित्युक्त्वाग्रेस्थिताभवत् जयदेव
स्तयासार्धंदेवशर्मगृहंगतः ॥ ५४ ॥

इसकों वेदकी विधि कर्के ग्रहण करूंगा इसमें कुछ संशय न
हिहै इस तरां मनमें निश्चय कर्के जयदेव तिसकों कहता भया
॥ ५१ ॥ इधरआ अर मैं तेरे साथ तेरे पिताके घर चल
ताहुं उहां वेदकी रीतिसें तेरा पाणि ग्रहण करूंगा ५२ इसप्र
कार का वचन श्रवण कर्के पद्मावती फिर कहने लगी तुमा
री आज्ञा माननी एही वचन पिता मेरे कों कह गयाथा ॥ ५३
इस कारण सें महा प्रसाद है क्या तुमारी कृपा ऐसा कहके
आगे चल पडती भई जयदेव भी तिसके साथ देवशर्मा के
घरमें चला गया ॥ ५४ ॥

तमुक्त्वागद्गदंसर्वंप्रतिगृह्ययथाविधि पद्मावती
तेनसार्धमाजगामनिजगृहम् ५५ उभौतौदंप
तीतत्रएकप्राणौबभूवतुः नृत्यंतौचापिगायंतौ
श्रीकृष्णार्चनतत्परौ ॥ ५६ ॥ एकदाजयदेव
स्तुमनस्येवमचिंतयत् स्वयंकृतेनगीतेनतोष
यिष्याम्यहंहरिम् ॥५७॥ इतिनिश्चित्यनिर्मा
यगीतगोविंदनामकं ॥ गायंस्तुदेवदेवाग्रेप
त्न्यासहननर्तह ॥ ५८ ॥

तिसकों गद्गद वाणी कर्के कथन कर वेद विधि कर्के ग्रहण
कर फिर पद्मा वती तिसके साथ अपने घरमैं चली आई
॥ ५५ ॥ सोदोनो स्त्री पुरुष प्रीति कर्के एक प्राण होते भयेनृ
त्य करना गायन करना श्रीकृष्णजी की पूजामैं तत्पर होते भ
ये ॥ ५६ ॥ एक दिन जयदेव मनमैं ऐसा चिंतन कर्ता भया
की अपने बनाये होए गीत कर्के हरिकों प्रसन्न करूंगा ५७
ऐसा निश्चय कर्के गीतगोविंद नामक ग्रंथ बना कर उसकों
गायन कर्ता २ देवताके आगे पत्नीके साथ नृत्यकर्ता भया
॥ ५८ ॥

एवंनित्य व्रतंतस्यतत्रैकस्मिन्दिनेपुनः निवंध
रासचरितेश्रीकृष्णोराधिकांप्रति ५९ शिर
स्याधेहिमेपादमित्यर्थककरंहृदि समायातंन
तद्दातुंशशाकेश्वरतांस्मरन् ॥ ६० अन्यदन्वेष
माणोपिनलेभेताद्दशंपदम् संस्थाप्यपुस्तकं
स्नातुंजगामान्यद्विचिंतयन् ॥ ६१ ॥ तावज्जय
देवरूपेणकृष्णस्तत्रसमागतः पद्मावतीमुवा
चाथपुस्तकंदेहीमेप्रिये ॥ ६२ ॥

ऐसा नित्यका व्रतथा तिसका तहां एक दिनमैं गायन वनोत २ रास चरित के निवंधमैं श्रीकृष्णजी का वचन राधिकाके प्रति जद उसने मान करा हुयाथा उससमय । ५९ । हेराधे प्राणेश्वरि मेरे शिर पर पाद रख और अपराध क्षमा कर इस अर्थ के करने वाला पद हृदयमैं आया तो श्रीकृष्ण जीकी ईश्वरता स्मरण कर्ता हुया उहपद नहि देता भया ॥ ६० ॥ उसके जैसा और पाद ढूंडने लगा तोऐसा पद नहि मिला तद पुस्तककों छोड कर पद चिंतन कर्ता २ स्नान करने कों चला गया ॥ ६१ ॥ उसके गयें होये पीछे जयदेव का रूप धारण कर कृष्णजी आयके पद्मावतीकों कहणे लगे हेप्रिये मेरा पुस्तक दे ॥ ६२ ॥

पद्मावतीसमानीयददौतत्पुस्तकंद्रुतं गृही
त्वापुस्तकंतत्रजयदेवेनयत्कृतम् ६३मनसात
ल्लिलेखासौजयदेवस्वरूपधृक् पुनरुत्थायस
स्नातुंजगामातित्वरान्वितः ६४ कंचित्का
लमतीत्याथजयदेवः समागतः देवानभ्यर्च्य
भुक्त्वाचगृहीत्वापुस्तकंपुनः६५मनसाकल्पितं
पादंलिखितुंचसमुद्यतः ददर्शतत्रतत्पादंना
लिखद्यदयंपुरा ॥ ६६ ॥

इतना वचन सुन पद्मावती शीघ्र पुस्तक कों ल्याय कर तिस कों देदेती भयी तद जयदेव नेजो मन कर्के कल्पना करा हुया पदथा सो जयदेव का रूप धारे होए भगवानजी लिखते भये फिर पुस्तक उठा य के तिसकों दिया स्नान करनेकों चले गए ॥ ६४ ॥ फिर कितनाक काल व्यतीत हुया तो जय देव भीआया देवताकी पूजा करी भोजन खाय कर पीछे फिर पुस्तक कों लैकर लिखने लगे ॥ ६५ ॥ वो मनकर्के और कल्पना करा हुया पद लिखने लगा तोक्या देखताहै उसमें जौनसा पद पहले नहि लिखा था सो उहां लिखाहुया देखा ॥ ६६ ॥

अन्येनलिखितंज्ञात्वाप्राहपद्मावतींप्रियां अ
यिकेनेदमालेखिजानासित्वंशुचिस्मिते॥६७॥
नाहमेतत्पदंपूर्वमलिखंनाक्षरंमम इतिश्रुत्वा
वचस्तस्यप्राहपद्मावतीप्रिया ॥६८ ॥ नाथ
कोयंभ्रमस्तेऽद्ययद्येवंभाषसेवचः स्नातुंगतस्तु
तत्कालेपुनरागत्यसत्वरम् ॥ ६९ ॥ गृही
त्वापुस्तकंमत्तोलिखित्वात्वंपुनर्गतः स्नातुमेवं
नजानामिकोन्यस्त्वत्तोत्रलेखकः ॥ ७०॥

और किसी कर्के लिखाहुया जानकर प्यारी अपनी स्त्री पद्मा
वती कों कहने लगा हे शुचिस्मिते एहकिसने लिखाहै तूं जान
तीहै ॥ ६७ ॥ क्यों की एह पद पहलें मैंनेनहि लिखाथा और
मरे अक्षरभी नहिंहैं एहवचन सुनकर पद्मावती कहनेलगी॥६८
हेनाथ एहतुमारे कों क्या भ्रम हों एआहै जो तुम ऐसे कहते
हो जद स्नान करने कों आप गएथे तत्कालही फिर परत कर
आके ॥ ६९ ॥ शीघ्र मेरेसें पुस्तक लेकर कुछ लिखाथा फिर
चले गएहों स्नान करने कों ऐसामैं जानतीहां और तुमारे विना
कौनहै लिखने वाला ॥ ७० ॥

इतिश्रुत्वाप्रियावाक्यं जयदेवोऽतिविस्मितः अ
हर्निशंतमेवार्थंचिंतयन्नालभत्सुखम् ॥ ७१ ॥
तदातस्मिन्रात्रिशेषेस्वप्ने श्रीपुरुषोत्तमः उ
वाचजयदेवंतुसुस्वप्नंमुमुदेभृशम् ॥ ७२ ॥
स्वपत्नींसुभगांमेने श्रीपुरुषोत्तमदर्शनात् त
दारभ्यातिभक्त्यावैपत्न्यासहहरिंभजन् ॥७३
गायन्वैगीतगोविंदंनृत्यन्वैकेशवाग्रतः निर्मा
यगीतगोविंदंतोषयामासकेशवम् ॥ ७४ ॥

एह अपनी प्रियाका वाक्य श्रवणकर जयदेव वडे विस्मयकों प्राप्तहोएआ हुया दिनरात उसी वात कों चिंनत कर्ता हुया सुखनहि किसी समयभी लभताभया ॥७१॥ तद तिस समय रात्रिके पहर शेषमैं स्वप्नमैं आयकर श्रीपुरुषोत्तमजी जयदेवको कहते भये तद सुंदर स्वप्न देखकर अतिशयकरके प्रसन्नहोता भया ७२ ॥ और श्रीपुरुषोत्तमजी के दर्शनसें अपनी स्त्रीकों वडी भाग्यवान् मानता भया तिसदिनसें लेकर वडी भक्ति करके पत्नीके साथ हरिका भजन कर्ता भया ॥ ७३ ॥ और गीतगोविंदकों गायन कर्ता हुया नारायणके आगे नाचता हुया गीतगोबिंद ग्रंथकों समाप्तकर केशव भगवान्जी कों प्रसन्न कर्ता भया ॥ ७४ ॥

निवेद्यकृतकृत्योभूज्जयदेवोमहामनाः ७५इति
भक्तमालायांभगवद्भक्तिमाहात्म्ये जयदेवचरि
तं समाप्तम् ॥

और तिस पुस्तक कों भगवानजी के आगे निवेदन कर सो।
महामन वाला जय देव अपने आपमैं कृतकृत्य होता भया
७५ ॥ एह भक्तमाला ग्रंथके भगवानकी भक्तिके माहात्म्यमें
जयदेवका चरित्र समाप्त हुआ



अथविष्णुपूजायां रामनामोच्चारणमाहिम व
र्णनं नारसिंहे हिरण्यकशिपुंप्रतिप्रह्लादवा
क्यम् रामनामभवरोगभेषजंरामनामजपतां
कुतोभयं पश्यतातममदेहसंस्थित:पावकोपि
सलिलायतेधुना ॥ १ तदुक्तंदानरत्नाकरे प्रा
यश्चित्तसहस्राणिकृत्वाव्रतशतानिच कलौग
च्छंतिपापानिनविष्णो:स्मरणंविना ॥ २ ॥
पाद्मे देवदूतविकुंडलसंवादे । पश्यंतिवैष्णवा:
यत्रसत्यंसत्यंमयोदितं प्राहास्मान्यमुनाभ्रा
तासादरंहिपुन:पुन: ॥ ३ ॥

अब विष्णुकी पूजामैं रामनाम उच्चारण करनेकी महिमालिख
तेहैं नरसिंहपुराणमैं हिरण्यकशिपुकेप्रति प्रह्लादका वाक्य है हे
तातरामनाम संसार रूपी बंधनोंका औषधहै और रामनामजपने
वालयोंकों किसीसेंभी भय नाहिहै देख रामनामके प्रभाव कर्के
मेरेदेहमे अग्निलगाहुया अवशीतल जलकीन्यांई आवरण कर
रहाहै ॥ १ ॥ सोई कहाहै दानरत्नाकर ग्रंथमैं प्रायश्चित्तोंके ह
जारां व्रतोंके सैकडे कर्केभी कलियुगमैं पाप विष्णुके स्मरण
विना नहि दूरहोतेहैं २ ॥ पद्मपुराणमैं कहाहै देवदूत विकुंडलके
संवाद कर्के कहाहै दूतकहताहै हमारे प्रति यमुनाका भ्राताधर्म
राज कहता भया वारंवार आदर युक्त मैने तुमारेको सत्यकहाहै
जहां वैष्णव रहतेहोवें जहांदेखतेहोवें तहांतुमने नहि जाना ३

भवद्भिर्वैष्णवास्त्याज्यानतेस्युर्ममगोचराः ये
स्मरंतिसकृदूताःप्रसंगेनापिकेशवम् ४ दुरा
चारोदुष्कुलोपिसदापापरतोपिवा भवद्भिःस
र्वथात्याज्योविष्णुंचेद्भजतेनरः ५ गोविंदेतिज
पन्योहिम्रियेतयदिकुत्रचित् सनरोनयमंपश्ये
त्तंनचेक्षामहेवयम् ६ बहुनोक्तेनकिंवैश्यकर्त
व्यंपापभीरुणा स्मरणंवासुदेवस्यसर्वपापहरं
हरेः ७ तपस्तप्त्वानरोघोरमरण्येनियतेंद्रियः
यत्फलंसमवाप्नोतितच्छ्रुत्वागरुडध्वजम् ८

और वैष्णवोंको त्यागदेना उोहमेरे अधीन नहिहै सो वैष्णव कौनसे हैं जो प्रसंग करकेभी केशव जीका स्मरण कर्तेहैं ४ ॥ और दुराचारी भी पुरुष होवे और खोटे कुलमें जन्मा हुया सदा काल पाप कर्ममें रत होए जेकर विष्णुजीको भजताहोवे सो सर्वदाकाल तुमने त्याग देना ॥ ५ ॥ और जोकोई पुरुष गोविंद २ ऐसे जपता होए जेकर सो कहीं भी मृतहोजावे सोनरयमराजको नहिदेखताहै और तिसको हम नहि देखतेहैं ६ ॥ हे वैश्य इसमें बहुत क्या कहनाहै परंतु पापोंसें भय करने वालेने सारेपापोंके हरने वाले हरि वासुदेव कास्मरण करने योग्यहै ॥ ७ ॥ नर जो मनुष्यहै सो इंद्रियांजीत कर घोर बनके मध्यमें तप करके जिस फलको प्राप्त होताहै सो फल गरुड ध्वज भगवान जीका नाम सुनने सें प्राप्त होताहै ॥ ८ ॥

पृथिव्यांयानितीर्थानिपुण्यान्यायतनानिचता
निसर्वाण्यवाप्नोतिविष्णोर्नामानुकीर्तनात् । ९
तत्रैवप्रल्हादवाक्यं नगंगानगयासेतुर्नकाशी
नचपुष्करं जिव्हाग्रेवर्ततेयस्यहरिरित्यक्षरद्व
यम् । १० ऋग्वेदोथयजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्व
णः अधीतास्तेनयेनोक्तंहरिरित्यक्षरद्वयम् ११
अश्वमेधादिभिर्यज्ञैर्नरमेधैः सदक्षिणैः यजितं
तेनयेनोक्तंहरिरित्यक्षरद्वयम् १२ गवांकोटि
सहस्राणिकन्यानामयुतानिच दत्तानितेनये
नोक्तंहरिरित्यक्षरद्वयम् ॥ १३ ॥

और पृथिवीमैं जितनेतीर्थहैं औरपवित्रस्थानहैं तिनसारेयोंमैं स्नान
दान निवास करनेका जो फलहै सोफल विष्णुके नाम उच्चारण
करनेसे होताहै ९ उसीस्थानमैं प्रह्लादजीका वाक्यहै कया ऐसी
न गंगाहै न गयाहै न सेतुबंधरामेश्वरहै न काशी है न पुष्कर
तीर्थहै फलदेनेवाला जैसें जिसकी जिव्हाके अग्रभागमैं हरि
एह दोअक्षर स्थितहैं उसको जैसाफलहै १० ऋग्वेद यजुर्वेद
सामवेद अथर्वणवेद एह चारोंही वेदतिसनेपढे जिसनेहरि एह
दो अक्षर उच्चारण करेहैं ११ और बहुत दक्षिणाके सहित
अश्वमेध नरमेधादियज्ञ तिसनैंही करे जिसने मुखसें हरि एह
दो अक्षर उच्चारण करेहैं ॥ १२ ॥ और गौयांके हजारां क्रोडां
कन्या के दश हजार विधिके सहितदान करनेके तुल्य उसीको
फलहै जिसने मुखसें हरि एह दोअक्षर उच्चारण करेहैं ॥ १३

प्राणकांतारपाथेयंसंसारच्छेदभेषजं दुःखक्के शपरित्राणंहरिरित्यक्षरद्वयम् ॥ १४ ॥ जितंते नजितंतेनजितंतेनेतिनिश्चयः जिव्हाग्रेवर्तते यस्यहारिरित्यक्षरद्वयम् ॥ १५ ॥ असारभवसं सारसागरोत्तारकारणं व्यसनोत्तारकंदेविह रिरित्यक्षरद्वयम् १६ विरंचिसर्वस्वे नाम्नाहरेः कीर्त्तनतःप्रयातिसंसारपारंदुरितौघमुक्तः नरः ससत्यंकलिदोषजन्यंपापं निहत्याशुकिमत्र चित्रम् ॥ १७ ॥

प्राण रूपी कांतार वनका पाथेय है क्या रस्तेका खर्चा और संसार रूपी रोग छेदन करनेका भेषज औषध है और दुःख क्लेशोसें रक्षा करने वालाहै हरि एह जौनसे दो अक्षरहैं १४ तिस पुरुष ने सभी कुछ जीत लियाहै ३ जिसकी जिव्हाकेअ ग्रमैं हरि एह दो अक्षर वर्तमान रहतेहैं ॥ १५ ॥ और असा र क्या है सार जिसका नहि ऐसाजों भव संसार रूपी सागर है तिससेंपारउतारणें का कारण है और व्यसन जो दुःख तिनसें तारने वाले हरि एह दो अक्षर हें ॥ १६ ॥ विरंचिसर्व स्व ग्रंथमैं लिखाहै कि पुरुष जो है सो हरिके नाम कीर्तन क रने सें क्या उच्चारण करने सें पापोंके समूहों कों त्यागकर सं सारके पारकों उतरता है और सो पुरुष कलि केदोषोंसें उत्प न्न होएजो पाप तिनकों शीघ्र त्यागता है इसमैं क्या आ श्चर्यहै ॥ १७ ॥

शिवसर्वस्वे यावन्नकीर्त्तयेद्रामंकलिकल्मषसं
भवं तावत्तिष्ठतिदेहेस्मिन्भयंचात्रप्रवर्धते १८
च्यवनस्मृतौप्रायश्चित्तप्रकरणे श्रुतिस्मृतिपु
राणेषुरामनामसमीरितं तन्नामकीर्त्तनंभूयस्ता
पत्रयविनाशनम् १९ सर्वेषामेवपापानांप्राय
श्चित्तमिदंस्मृतंनातः परतरंपुण्यंत्रिषुलोकेषु
विद्यतेनामसंकीर्त्तनादेवतारकंब्रह्मदृश्यते २०
माण्डव्यस्मृतौसुरापो ब्रह्महास्तेयीचौरोभग्न
हतोऽशुचिः स्वाध्यायवर्जितःपापोलुब्धोनैष्कृ
तिकःशठः ॥ २१ ॥

शिव सर्वस्वमें लिखाहै जितना काल रामचंद्रजी को नहिकीर्त्तन करे उतना काल कालि कल्मष सें उत्पन्न जो पाप सो इस देहमें स्थित रहताहै और इस लोकमें भय वधावताहै १८ च्यवन स्मृति के प्रायश्चित्त प्रकरणमें लिखाहै श्रुतियां स्मृतियां पुराण इनमें राम नाम उच्चारण की महिमा लिखीहै और तिनके नामका उच्चारण तापत्रयों के नाश करने वालाहै ॥ १९ ॥ और एह राम नाम सारे पापोंके नाश करने वाला प्रायश्चित्त कथन कराहै और इससेंपरे त्रिलोकीमें पवित्र मंत्रकोई नहिहै क्यों जिस नाम के कीर्त्तनसें तारक ब्रह्म देखनेमें आताहै २० मांडव्य स्मृतिमें कहाहै सुरापान करने वाला ब्रह्महत्या वालास्वर्ण चुराणे वाला और चोर अर भागकरके युद्धसेंजोचला आया फिर मारा गया और स्वाध्याय कर्के रहित पापी वंधकी नैष्कृतिक शठ ॥ २१

पराशीवृषलीभर्त्ताकुंडाशीसोमविक्रयी सोपि मुक्तिमवाप्नोतिविष्णोर्नामानुकीर्तनात् २२या ज्ञवल्क्ये नतावत्पापमस्तीहियन्नाम्नानहतंहरेः अ.तिरेकभयादाहुः प्रायश्चित्तांतरंवृथा २३चतु र्वर्गचिंतामणौ श्रीभगवंतंप्रति रुद्रवाक्यं त्व न्नामकीर्त्तनाद्विष्णोपूतःपूज्योजनैरहं त्वंहासि सर्वजंतूनांमलंतेनहरिःस्मृतः २४वैष्णवाचिंता मणौ नारदंप्रति युधिष्ठिरवाक्यं श्रुतोधर्मोबहु विधोह्यनंतफलदोमया नामसंकीर्तनफलंतदा चक्ष्वमुनेऽधुना ॥ २५ ॥

परान्नखानेवाला वृषली शूद्रिणीकाभर्ता और पिताके प्रत्यक्ष होते जारतें उत्पन्न जो पुत्र तिसका अन्न खाने वाला और सोमरस वेच नेवाला सोभी विष्णुके नामोंके कीर्तनसें मुक्तिकों प्राप्त होता है २२ ॥ याज्ञवल्क्य स्मृतिमें कहाहै ऐसातो कोई पाप नहिहै जो हरिके नाम करकें दूरनाहि होताहै परंतु प्राय श्चित्त जो क हतेहैं सो अतिरेक भय सें वृथा कहते हैं ॥ २३ ॥ चतुर्वर्ग चिंता मणि मैं भगवान जीके प्रति रुद्रजीका वाक्यहै हेवि ष्णो तुमारे नाम के उच्चारण करने सें मैं पवित्रहो जनों करकें पू जा करेया जाताहुं आप सारे जीवोंके पाप दूरकर्तेहो इसवास्ते तुमारे कों हरि कहतेहैं ॥ २४ ॥ वैष्णव चिंतामणि मैं नारदजी केप्रति युधिष्ठिरजीका वाक्यहै हेऋषे तुमारे मुखसें अनंत फल देने वाले वहुत तरोंके धर्म श्रवण करेहैं अब नाम संकीर्तन का फल कथन करोसो श्रवण करने की मेरी इच्छाहै ॥ २५

श्रुत्वायुधिष्ठिरवचः परयामुदासप्राहेदमाशुमु
निपुंगवनारदोपि नामानुकीर्तनभरेणहरेर्नितां
तरोमांचसंहातिविचित्रितसर्वगात्रः २६ नारद
उवाच नदेशनियमोराजन्नकालनियमस्तथा
विद्यतेनात्रराजेंद्रविष्णोर्नामानुकीर्त्तने २७
कालोस्तिदानेयज्ञेवास्नानेकालोस्तियज्जपे वि
ष्णुसंकीर्तनेकालोनास्त्यत्रपृथिवीपते २८ ॥
गच्छंस्तिष्ठन्स्वपंश्चापिपिबन्भुंजन्भजन्स्थि
तःकृष्णकृष्णेतिसंकीर्त्यमुच्यतेपापपंजरात्२९

इस प्रकार युधिष्ठिर राजा का वचन श्रवण कर मुनि
यों मैं श्रेष्ठ नारद भी परम हर्ष कर्के शीघ्र ऐसे कहता भया कै
सा नारदहै हरिके नामों का जो कीर्तनभर तिस कर्के अतिश
य कर रोमों का समूह ऊंच होने कर्के क्या रोम २ खडा हो
ने कर्के विचित्र क्या प्रफुल्लित अंगो वालाहै २६ नारद जी क
हतेहैं हेराजन् युधिष्टिर इस परमेश्वर के भजन करने मैं काल
कानियम नहिहै और देशका भी नियम नहिहै २७ देश का
ल जोहै सो दान करने मैं हय और स्नान करने मैं हय यज्ञ क
रने मैं हय और मंत्रों के आराधनमैं भी हय हेपृथिवीपते वि
ष्णु संकीर्तन मैं काल देश कोई नहि हय २८ चलता २ पुरुष
खडा २ सोया हुया पान कर्ता हुया भोजन कर्ता हुया बैठा
२ हेकृष्ण २ ऐसें कीर्तन कर्के क्या इच्चारण कर्के पापरूपी
पिंजरेसें मुक्तहोता हय २९

सस्नातःसर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुदीक्षितः सर्वदान
फलंप्राप्तोयस्तुसंकीर्त्तयेद्धरिम् ॥ ३० ॥
उमाशिवसंवादे उमांप्रतिशिववाक्यम् हिम
वद्विन्ध्ययोर्मध्येजनाभागवतास्थिताः उच्चा
रयंतिरामेतियेतेभागवतोत्तमाः ॥ ३१ ॥ अब्
जाक्षिस्मरणंविष्णोर्वंह्वायासेनसाध्यते ओ
ष्ठस्पंदनमात्रेणकीर्त्तनंतुततोवरम् ॥ ३२

ओह पुरुष सारे तीर्थोंमैं स्नान कर आयाहै और सारे यज्ञोंमैं दीक्षा भी उसीकों हुईहै और सभतरां के दान भी उसीने करें हैं जो हरि के नामों का उच्चरण कर्ताहै ॥ ३० ॥ गौरी शिवजी के संवादमें गौरी के प्रति शिवजी का वाक्य है हिमाचल विंध्याचल इनदोनों पर्वतों के मध्यमें भगवान जी के भक्त लोक रहतेहैं परंतु राम २ मुखसें जो उच्चारण कर्तेहैं सो उत्तम भगवान् जीके भक्तहैं ॥३१ ॥ हेकमलकी न्यांई नेत्रों वालि विष्णु का स्मरण वडे यत्न करसिद्ध होताहै परंतु जिस भजनमे ओष्ठ पुटक हलताहै सोभजन अच्छाहै ३२

ईशोहंसर्वजगतांनाम्नांविष्णोर्हिजापकः सायं
सत्यंवदाम्येवं हरेर्नामगतिर्नृणाम् ३३ प्रायश्चि
त्तप्रकरणे रामेतिकीर्तनंराजन्सर्वरोगनिवारणं
प्रायश्चित्तंहिपापानांमुक्तिदंसर्वदेहिनाम् ३४
अथागमशास्त्रेवृहद्गौत्तमीये कुष्ठरोगीभवेल्लोके
वहुधाब्रह्महानरः सकृदुच्चारितंनामहरेस्तत्क्षप
यत्यहो ३५ ॥ विष्णुयामलेरुद्रंप्रति श्रीभगव
द्वाक्यम् ममनामानिलोकेस्मिन्सर्वदायस्तुकी
र्त्तयेत् तस्यापराधकोटीस्तुक्षमाम्येवनसंशयः ३६

मैं जोसारेजगतका स्वामी हां सो विष्णुके नामोंका ही स्मरण करनेके प्रभावसें हां सत्य ३ मैं तेरेआगेकहताहुं हरिका नामही पुरुषोंकी गतिहै ॥ ३३ ॥ प्रायश्चित्त प्रकरणमैं लि० हेराजन् राम ऐसे जो उच्चारण करनाहै भक्तिश्रद्धा कर्कै सो सारे रोगों का निवारण करने वालाहै और पापोंके शोधन करनेवाला सारें देह धारियां कों मुक्ति देने वालाहै ॥ ३४ ॥ आगमशास्त्रके वृहत् गौत्तमीयग्रंथमैं लि० ॥ इससंसारमैं कुष्ट रोगी वहुतहैं और वहुततरोंके ब्रह्महत्यारेहैं तदभी एकवार हरिका नाम उच्चारण कराहुया पापों को तत्क्षण दग्ध करलेताहै ॥ ३५ ॥ विष्णु यामलमैं रुद्रजीके प्रति श्रीभगवान्जीका वाक्यहै मेरेनामोंकों इससंसारमैं जोसर्वदाकाल कीर्तनकर्ताहै तिसके अपराधोंकेक्रोडांक्षमा करदेताहुं इसमैं संशयनहिहै ३६

गौत्तमीतंत्रे शिविराजानंप्रति नारदवाक्यम् नताद्दशंमहाभागपापंलोकेषुविश्रुतं याद्दशंधरणीनाथहरिनाम्नानदह्यते ३७ आश्वलायनतंत्रे येकीर्त्तयंतिनामानिविष्णोरतुलतेजसः सर्वधर्मबाहिर्भूतास्तेपियांतिपदंहरेः ३८ विरंचतंत्रेइंद्रद्युम्नंप्रतिब्रह्मवाक्यम् पूजयस्वजगन्नाथंसर्वतंत्रेषुगोपितं गुह्याद्गुह्यतरंनामकीर्तयस्वानिरंतरम्॥ ३९ ॥

गौतमीतंत्रमैं शिवि राजाके प्रति नारदजीकावाक्य है हेमहाभाग ऐसा पाप संसार मैं कोई मैंने नहिसुनाहै जो पाप हेपृथिवीके नाथ स्वामि हरिके नामकर्के दग्धनहि होता है ॥ ३७ ॥ आश्वलायन तंत्रमैं लि० ॥ जो पुरुष अतुल तेजवाले विष्णुके नामोंका कीर्तन कर्ते हैं सोसारे धर्मोंसेंभी बहिर्भूतहोवें तदभी हरिके पदकों जातेहैं ॥ ३८ ॥
विरंच्चितंत्रमैं इंद्रद्युम्न राजाके प्रति ब्रह्माका वाक्य है हेराजन् सारे तंत्रोंमें गुप्तजो जगन्नाथजी तिनकापूजन कर और गुप्तसें गुप्तजो उनका नाम तिसका सर्वदा जप कर ॥ ३९ ॥

यस्तुसंकीर्तयेन्नित्यंजगन्नाथमतंद्रितः विमुक्तः सर्वपापेभ्योमुक्तबंधः परंब्रजेत् ॥ ४० ॥ मेरु तंत्रे नाम्नांमुख्यतरंविष्णोजगन्नाथेत्युदीरितम् नातःपरतरंनामत्रिषुलोकेषुविद्यते ॥ ४१ ॥ नगंगास्नानमेतादृक्नकाशीगमनंतथा जग न्नाथेतिसंकीर्त्यनरःकैवल्यमाप्नुयात् ४२ नारा यणतंत्रे ब्रह्महास्वर्णहारीच सुरापीचापिवान रःनारायणेतिसंकीर्त्यमुच्यतेनात्रसंशयः ४३

जोपुरुष निरालस होके नित्यप्रति जगन्नाथजीका कीर्तन करताहै सो सारे पापोंसे मुक्त होएआ हुया मुक्तबंधन होके परं ब्रह्ममें प्राप्तहोताहै ॥ ४० ॥ मेरुतंत्रमें लि० ॥ नामोंमे मुख्यतर जो नाम जगन्नाथ ऐसे कथन करना चाहिए इससें परें श्रेष्टनाम त्रिलोकी में भी और नही है ॥ ४१ ॥ ऐसा नगंगाकास्नानहै नकाशी की यात्राहै जैसे जगन्नाथ ऐसे कह कर्कें पुरुष कैव ल्य पदकों प्राप्त होता है ॥ ४२ ॥ नारायण तंत्रमें कहाहै ब्रह्म हत्या करने वाला स्वर्ण चुराणे वाला और सुरापान करने वा ला जो नरहैं सो नारायण ऐसें कथनकर पापोंसें मुक्तहोताहै इसमें संशय नहिहै ॥ ४३ ॥

काश्यपपांचरात्रे नारदंप्रति श्रीभगवद्वाक्यम्
येगृह्णंति निरतरं ममपदंरामतिभक्तोत्तमाः
अंतः संभृतहर्षजातपुलकाजातप्रमोदाश्रवः
तेनिस्तीर्यभवार्णवंसुतकलत्राद्यैश्चनक्रैर्युतं तृ
ष्णावारिसुदुस्तरंमयिपुनस्सायुज्यमायांति वै
४४ ॥ वामनभवदासीये पृथिव्यांकतिधालो
कानजाताकतिनोमृताः मुक्तास्तेत्रनसंदेहोये
हरेर्नामकीर्त्तकाः ४५ ॥

काश्यप पांचरात्र ग्रंथमें नारद मुनिके प्रति भगवानजीकावाक्य है हेनारद जो पुरुष सर्वदाकाल मेरे इस राम पदमात्रकों ग्रहणकर्तेहैं क्या उच्चारण कर्तेहैं सो तो उत्तम भक्तहैं कैसें ओह भक्तहैं अंतः करण मैं इकठा हुया २ जोहर्ष आनंद तिसतें उत्पन्न हुया पुलक रोमांच जिनका और सुननेसें प्रसन्नता कर्के अस्रु हुईहै ऐसेजो पुरुष संसार रूपी समुद्रको तरकर्के मेरीसायुज्य मुक्तिकों प्राप्त होतेहैं कैसा ओह समुद्रहै तृष्णा रूपी समुद्र कर्कें भराहुया वड क्लेशकर तरने योग्यहै और स्त्री पुत्र पौत्रादि रूपी जो नक्र वडे २ जलजीव तिनों कर भरा हुया ॥ ४४ ॥ वामन भवदासीयग्रंथमैं लि० है पृथिवी में कितने तरोंके लोकहैं और कितने तरोंके मर गएहै परंतु इनमैंसे ओही पुरुष मुक्तहैं जो हरिके नामकों कीर्तन करने वालेहैं ॥ ४५ ॥

वसिष्ठतंत्रे हरिपूजापरोयस्तुहरिनामपरायणः
सस्नातः सर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुदीक्षितः ४६ ग्रं
थांतरे ॥ श्रीशब्दपूर्वंजयशब्दमध्यंजयद्वया
नंतरतस्तथैव त्रिः सप्तकृत्वोरघुनाथनामजप
न्निहंतिद्विजकोटिहत्याम् ४७ अन्यत्रापि अथ
पातकभीतस्त्वंसर्वभावेनभारतविमुक्तान्यसमा
रंभो नारायणपरोभव ४८ श्रीमद्भागवतेअजा
मिलप्रस्तावे परीक्षितंप्रतिशुकदेववाक्यम् न
तथाह्यघवान्राजन्पूयेततपआदिभिः यथाकृ
ष्णार्पितप्राणस्तत्पूरुषनिषेवया ४९

वसिष्ट तंत्रमें लि० है जोपुरुष हरिकी पूजामें तत्परहै और हरि
कानाम जपने मेंतत्परहै सोइपुरुष सारे तीर्थोंमें न्हायाहै और सारे
यज्ञोंमें दीक्षित भी ओही हय ४६ किसी ग्रंथमे ऐसेभी लिखा
है श्रीशब्दआदमें देना जय शब्द मध्यमें देना फिर रघुनाथ पद
के अंतमें दो जय शब्द देने ऐसें मंत्र बनायकर २१ इकीस वार
पाठ करे तद हेद्विज क्रोडकरी होइ हत्याकों दूरकरताहै ४७ और
कहिंभीलि० हेभारत जेकरतूं पापोंसें डरताहैं तद सभतरांके भाव
कर्के सारे आरंभ त्यागकर नारायणमें तत्परहो ४८ श्रीमद्भाग
वतके अजामिलकी कथाके प्रस्तावमें परीक्षितकें प्रति शुकदेव
जीका वचनहै हेराजन् इसप्रकार पापी पुरुष तप
आदियों कर्के पवित्र नहि होताहै जैसें श्रीकृष्णजीमें चित्त
लगाय कर तिनके भक्तों की सेवा करणे कर्के शुद्ध होताहै ४९ ॥

सध्रीचीनोह्ययंलोकेपंथाक्षेमोकुतोभयः सुशी
लासाधवोयत्रनारायणपरायणाः ॥ ५० ॥प्राय
श्चित्तानिचीर्णानिनारायणपराङ्मुखं ननिष्पु
नंतिराजेंद्रसुराकुंभमिवापगाः ॥ ५१ ॥ सकृ
न्मनः कृष्णपदारविंदयोर्निवेशितंतद्गुणरा
गयैरिह नतेयमंपाशभृतश्चतद्भटान्स्वप्नेपिप
श्यंतिहिचीर्णनिष्कृताः ॥५२॥ अत्रैवोदाहरंती
ममितिहासंपुरातनं दूतानांविष्णुयमयोः संवा
दस्तंनिबोधमे ॥ ५३ ॥

नहिहै काहूँसें भय जिसमैं ऐसा कल्याणका मार्ग इस संसारमैं एह बहुत सुखालाहै जिस मार्गमैं नारायण परायण सुशील श्रेष्ट व्रतों वाले साधु वर्ततेहैं ॥ ५० ॥ और नारायणसें पराङ्मुख जो पुरुष सो प्रायश्चित्त भी करे तद भी हेराजेंद्र तिसकों नहि पवित्र कर्तेहैं जिस प्रकार नदियां मदिराके कुंभकों पवित्र नहि कर्तीयांहैं ॥ ५१ ॥ एक वार भी कृष्णजी के गुणानु वाद श्रवण कर उनके चरणोमैं लगायाहै मन जिनोंनें सो पुरुष यमकों और फांसियांधारणे वाले यमके दूतोंको स्वप्नमे भी नाहिदेखतेहैं कैसे पुरुष हैं व्रतादियोंके करने करकैं शुद्ध होए हुएहैं ॥ ५२ ॥ अब इसमैं प्राचीन इति हास कथा कथन कर्ताहुं और विष्णुके दूत धर्म राजाके दूत इनोंका संवादतूं श्रवण कर ॥ ५३ ॥

अजामिलकथांवक्ष्येपरमाश्चर्यकारिणीं यस्मि
न्नामचमाहात्म्यंव्यक्तंचक्रेजनार्दनः॥ ५४ ॥आ
सीत्काश्चिद्द्विजःपूर्वमंतर्वेदीतिविश्रुतः कान्य
कुब्जोतिधनवान्सर्वधर्मविवर्जितः ॥५५ ॥ दुः
संगविवशाद्विप्रोवेश्यायांनिरतोभवत् मद्यंवा
पिपपौनित्यंमांसमश्नातिनित्यशः ॥ ५६ ॥
विसस्माऽनिजज्ञातिकर्मनामतथाहरेः एवंभूतो
बंधुवर्गैस्त्यक्तोग्रामसमीपतः ॥ ५७ ॥ निर्माय
भवनंवेश्यांसंरक्ष्यगृहिणीमिव उवासग्रामाद्वा
ह्येसचांडाल इवचापरः ॥ ५८ ॥

अब इसमें बडे आश्चर्यके करणेवाली अजामिलकी कथा कथन करतेहैं जिसमें भगवानजी अपनें नामके माहात्म्यकों प्रगटकरते भए५४पूर्व एक समय अंतर्वेदी देशके मध्यमैं कान्य कुब्जजाती वाला धनवान् सारे धर्मोसैंवाहर करा हुयाअजामिल नामकर्के ब्राह्मणनिवास कर्ताथा ५५ सो खोटी संगातिके वशतें वेश्या गमन करनेमैं तत्पर होताभया नित्य मदिरा पान कर्ता भया और मांसभी नित्यं प्रति खाता भया ॥५६॥ और सो ब्राह्मण अपनी जातिका जोब्रह्मकर्म और हरिकानाम तिसकों विसार देता भया इस प्रकार का जद होगया तद बांधवों ने मिल कर जातिसैं वाहर करदिया ॥५७॥ तद तिसनें ग्रामके वाहर सुंदर एक स्थान वनायकर जिसमें वेश्याकों विवाहित स्त्रीकी न्याईं रख कर दूसरे एक चांडालकी न्याईं निवास कर्ता भया५८॥

परंतु स्वगृहद्वारमंगनंचापिसर्वदा ब्राह्मणाश्र
मवत्स्फीतं ररक्षाजामिलंतुसा ५९ ॥ एवंनि
नायकतिचित्समास्तत्रद्विजाधमः गृहिण्यावे
श्यपयारेमे मद्यपानरतः सदा ॥ ६० ॥एकदा
तत्समीपेचग्रामेतत्रागतोतिथिः सायंकालेवि
ष्णुभक्तः शालग्रामशिलांवहन् ॥ ६१ ॥ कंचि
दाहातिथिःप्रेम्णानिश्यत्रानिवसाम्यहमस्थ
लंदर्शयवासार्थंसोब्रवीच्चातिदुर्जनः ६२

परंतु अपने घर का द्वार और वेडासर्वदा ब्राह्मणोंके आश्रम कीन्यांई वनाय रखतीभई ऐसे आश्रम में अजामिल कों भी रखतीभई ॥५९ इस प्रकार कितनेक वर्ष सो द्विजाधम गृहिणी वेश्याकर्के सर्वदा काल मद्य पान करने मे रत होएआ हुया व्यतीत कर्त्ताभया ६० एक दिन तिसघरके समीपवर्ती ग्राममें कोई शालग्राम की शिला लिये हुए सायं कालके समय अतिथि साधु आयकर प्राप्त होएआ ॥६१॥ किसीक पुरुष कों वडे प्रेमकर मधुर वाणीसें कहने लगा वा वा मैने रातभर रहनाहै कोई जगा मेरेंकों दिखा ॥ ६२ ॥ -

ग्रामाद्वाह्येमहानेकोधर्मात्माजामिलोद्विजः शु
श्रूषतिससर्वं र तुभोजनास्तरणादिभिः ६३ ॥
इत्युक्तःसगतोदुष्टःसोतिथिस्तत्रचागतः द्वा
रदेशादाजुहावनाम्नाचाजामिलस्यवै ॥ ६४ ॥
श्रुत्वातद्गृहिणीवेश्यासमागत्याब्रवीच्चतं को
सिकस्मादिहायातः किमर्थतमिहेच्छसि ६५
सउवाचततः साधुःपथिकोनिवसाम्यहम् ग
तःपूर्वमहंग्रामे तत्रत्योमामुवाचह ॥ ६६ ॥

सोदुष्ट पुरुष वोला हेसाधो ग्रामसें वाहर वडा एकधर्मात्मा अ जामिल ब्राह्मण निवास कर्ताहै सो भोजन विछावने और तरें की सेवा कर्के सेवताहै उहांचलाजा ॥ ६३ ॥ इसप्रकार कथन करा हुया सो अभ्यागत उहां आया अजामिलका नामले २ कर्के द्वारदेशसें वुलावता भया ॥ ६४ ॥ उसकी घरवालीवेश्या शब्द श्रवण कर उहां आके तिसकों कहने लगी तूं कौन हैं कहांसें आया हैं क्या तेरा प्रयोजनहै किसवास्ते तिसकों वुलाताहैं ॥ ६५ ॥ इतना वचन सुनकर साधु वोला मार्गमें चलनेवाला साधु हां रात भर रहनाहै सो मै पीछेके ग्राममे रातरहनेकी जगा मैंने पूछी उहांके लोक कहनेलगे शहरसें वाहर धर्मात्मा अजामिलहै उसके पास जा सोसभतरांसें तेरी टहल सेवा करेगा ॥ ६६ ॥

ग्रामाद्बाह्येतिधर्मात्माविप्रोऽजामिलसंज्ञकः त
अगच्छनिवासायसतेवासंप्रदास्यति ६७ ॥
इत्युक्तोहामिहायातः क्वचास्तेऽजामिलःसतु इ
तिश्रुत्वातुसावेश्यावहिर्वेश्मनितंतदा ६८ ॥
निवासायददौस्थानंसनास्तिभवनेऽधुना आ
गमिष्यतिचेत्त्वांतुनमस्यतिनसंशयः ६९ ॥
अथसाशीघ्रमागत्यग्रामेकंचिज्जनंतदा समा
नीयोत्तमान्नादिभोजनाद्यर्थमाहरत् ७० ॥

ग्रामसें वाहर धर्मात्मा अजामिल नामक ब्राह्मणहैउसके जा तेरे कों निवासके वास्तें स्थान देवेगा ६७ ॥ इसप्रकार कहा हुयामैं इहां आया हांसो अजामिल कहांहै ऐसें बचन सुनकर सोवेश्या उसी समैं तिसकों वाहरकें घरमैं ६८ ॥ निवासके वास्ते स्थान देके कहन लगी सोतो अब घरमैं नहिंहै जेकर आय जाताहै तदसोभी तुमकों नमस्कार करेगा इसमैं संशय नहिंहै ६९ इससें उपरंत सोशीघ्र ग्राममें आय कर किसी वाणिये कों साथ लेकर वडे २ सुंदर पदार्थ तिसके भोजनके वास्ते ल्यावती भई ७०

ततःप्रांजलिराहेदंकूपोयमुदकंततः गृहाणना
हमुदकंदातुंयोग्यांत्यजाधमा॥७१। इतिश्रुत्वा
द्विजस्साधुस्तद्बाहिर्मंदिरेस्वयं उपलिप्यशुचौ
देशेपक्वादेवंसमर्प्यच ॥७२॥ वुभुजेनिशिसु
ष्वापसप्रीतेनांतरात्मना अथार्धरात्रसमयेवा
रुणीमदाविव्हलः॥७३॥ अजामिलःसमायातो
निन्येतंसाद्भुतंगृहे अथरात्र्यांव्यतीतायांप्रभा
तेसोऽतिथिर्द्विजःगंतुंप्रवृत्तोद्वारिस्थआजुहाव
पुनश्चतम् ॥ ७४ ॥

तिससे उपरंत हाथ जोडकर वोली हेसाधो एह खूहाहै इसका जलनिकाल ले मैं अंत्यज म्लेछ जातीहां मैनेअपना हाथ नहि लगानाहै॥७१॥एहवचन सुनकर सो व्राह्मणसाधु तिसके घरके वाहर सुंदर चौका लगाय पवित्र स्थान वनायकर भोजन तियार करके विष्णुकों नैवेद्य लगाया आपभी भोजन करा प्रसन्नमनहो करके रात कों सोयरहा ॥७२॥ इससें उपरंत वारुणी मदिराके पान करके मस्त व्याकुल होएआ हुया आधी रातके समय अजामिल आया तद तिसकों वेश्याशीघ्र घरके अंदरले गई ॥७३॥ अव इससें उपरंत रातके व्यतीत होए हुए निर्मल प्रभात का समय जद हुया तद निद्रा त्याग परमेश्वर का स्मरण कर जाने लगा तव फिर द्वारमैं स्थित होकर अजामिलकों वुलाने लगा ॥७४॥

तदेवंरात्रिवृत्तांतमुवाचाजामिलायसा पुनराह
व्रजाशुत्वंगत्वातंचनमस्कुरु ॥ ७५ ॥ सदा
स्यतिवरंचैवंपुत्रंवरयमेप्रियं इतिश्रुत्वागतोद्वा
रितंसाधुंप्रणनामह ॥ ७६ ॥ तमाहसाधुः सं
तुष्टस्त्वयिदास्यामितेवरं ब्रूहीतिश्रुत्वाप्रोवाच
प्रांजलिः सोप्यजामिलः ॥ ७७ ॥ भगवन्ननप
त्योहंपुत्रोमेजायतामिति प्रार्थयामिवरंत्वत्तो
नान्यमिच्छाम्यहंवरम् ॥ ७८ ॥

सोवेश्या तिस रात्रिके वृत्तांतको अजामिलके तांई श्रवण क
रावती भई फिर कहने लगी सो जाने वालाहै तूंशीघ्र उसके पास
जाके नमस्कार कर ॥ ७५ ॥ सो तेरेको प्रसन्न होएआ हुया
जेकर तेरेको वर देवेगा तद मेरा प्यारा पुत्र वरना क्या एह क
हना की इस वेश्यामे पुत्रहोवे एह वचन सुनकर अजामिल द्वा
रपर जाके तिस साधुको प्रणाम कर्ताभया ॥ ७६ ॥ तद तिस
को सोसाधु बोला मैंतुमारे पर प्रसन्न हुयाहां तेरेको वर देताहुं
जो तेरी इच्छाहै सो वर मांग ले एह वाक्य श्रवण कर सो अ
जामिल हाथ जोड कर बोला ॥७७॥ हेभगवन् मैं विना संता
नके हां मेरे घर पुत्र होवे एही वर तुमारे सें मांगताहुं और कि
सीकी इच्छा नहिं कर्ताहुं ॥ ७८ ॥

इतिश्रुत्वावचस्तस्यसोऽतिथिःप्राहतंवचः अ
होतेभवितापुत्रः सत्यमेतन्नसंशयः ॥ ७९ ॥
परंतुतस्यनामाहोनारायणइतित्वया रक्षित
व्यमितिसोतःस्थापनीयोमदीरितम् ॥ ८० ॥ इ
त्युक्त्वासगतोविप्रोजामिलोप्यगमद्गृहं वेश्या
यैसर्वमाचष्टश्रुत्वासापिजहर्षच ॥ ८१ ॥ ततः क
तिपयेकालेजातेसागर्भवत्यभूत् सुषुवेदशमे
मासिपुत्रंसर्वांगसुंदरम् ॥ ८२ ॥

एह वचन सुनकर तिसका सो अतिथि साधु तिसकों कहने लगा अछा तेरे घर पुत्र होवे गा एह वात सत्यहै इस मैं संशय नहिहै ॥ ७९ ॥ परंतु तिसका नाम मेरे कहने सें नारायण ऐसे रखना और तिसकों अंदरमैं स्थापन करना ८० ॥ ऐसा कहकर सो व्राह्मण कहीं चला गया और अजा मिल भी अपने घर कों चला आया सो सारा वृत्तांत वेश्या के तांई कह दिया सुन कर उोह प्रसन्न भई ॥ ८१ ॥ तिससें उप रंत कितनेक समयके व्यतीत होगए पीछे सोगर्भवती होई दश म मासमैं सारे अंगोंसें सुदर मनोहर बालक जन्मती भई ॥ ८२ ॥

ततोनामापिचक्रेसनारायणइतिस्फुटं सोप्यव
र्द्धतकालेनयुवावस्थामुपागतः ॥ ८३ ॥ अजा
मिलोतिवृद्धोभूज्जरयाजर्जरीकृतः तथापिमदि
रापानंमांसाहारंनतत्यजे ॥ ८४ ॥ अथसो
जामिलोरोगान्म्रियमाणोगृहेस्थितः शय्या
यांसेवितः प्रीत्यारुदंत्यावेश्ययासह ॥ ८५ ॥
अथतंम्रियमाणंतुज्ञात्वावैवस्वतःप्रभुः प्राहदू
तान्दंडपाशहस्तानातिभयंकरान् ॥ ८६ ॥

तद नारायण एह स्फुट प्रसिद्ध नाम रखता भया तो सोवालक अपने समयकर्के युवावस्थाकों प्राप्तहोएआ ॥८३॥ अजामिल वृद्धाऽवस्थाकों प्राप्त होगया जरा कर्के जर्जरीदेह जिसकाहोग या तदभी मांस मदिरा कों नहि त्यागता भया ॥ ८४ ॥ इस सें उपरंत सो अजामिल रोगसें मरणके तुल्य घरमें स्थित श य्यापर लंवापड रहता भया तोरोदन कर्ती वेश्यानें वडीप्रीति कर्के सेवा करीदीभयी ॥ ८५ ॥ अव इससें उपरंत धर्म्मराज़ मरणे वालेतिसकों जानके वडे भयंकर दंडफांसियां हाथ वाले दूतोंकों कहता भया ॥ ८६ ॥

यातयूयंकान्यकुब्जोम्रियमाणोतिपातकी जा
त्याद्विजःकर्मणाऽसौचांडालादधिकोऽभवत् ॥
८७ तमानयित्वापाशेनबद्ध्वात्रनरकेषुच पा
तयध्वंनतंचाहंद्रष्टुमिच्छामिपापिनम् ॥ ८८॥
इत्याज्ञांशिरसाधृत्वागतास्तेयमकिंकराः दंड
पाशधराःसर्वेदीर्घदंष्ट्राभयंकराः ॥८९॥ आग
त्याजामिलगृहेतंपाशैर्बद्धुमुद्यताः तान्दृष्ट्वा
जामिलभीत्याजुहावतनयंनिजम् ९०

हेदूतो तुसी जाके उस अत्यंत पापी मरणे वाले कान्य कुब्जवा
ह्मण कों ल्याओ जो जाती कर्के ब्राह्मण कर्मों कर्के चांडालों
सें भी अधिक होता भया ॥ ८७ ॥ तिस कों फांसीयोंके सा
थ बांध कर नरकोंमे सुट देओ बाहर के बाहर मेंऐसे पापीका
दर्शन भी नहि करना चाहता हुं ॥८८ ॥ इह आज्ञा शिरकर
धारण कर्के सो यमकिंकर उहां चले आए दंडतें फांसीयां हाथ
मैंलिये होए लंबीयां जिनकीयां दाढां वडे भयंकर रूपोंवाले
॥ ८९ ॥ अजामिल के घरआय कर तिस कों फांसियो सें बां
धने लगे तिनकों देखकर भय करके अजामिल अपने
पुत्रकों बुलावता भया ॥ ९० ॥

अहोनारायणात्रेतिमांवध्नंतिभयंकराः नाराय
णाततः पाहीत्येवंपुत्रमभाषत ९१ वहुवारंवद
त्यस्मिन्विष्णुदूताःसमागताः शंखचक्रधराः
सर्वेतुलसीदामभूषिताः ९२ यमदूतान्भर्त्स
यन्तोविजहीतीतिवादिनः ततस्तुयमदूतास्तैर
युध्यंतमहात्मभिः ॥ ९३ ॥ ततोघोरतरंयुद्धंकृ
त्वातेविष्णुकिंकराः अजामिलंसमादायविमा
नेहरिमंदिरे ॥ ९४ ॥

वहुत दूर वालकोंके साथ क्रीडामैं आसक्त पुत्रकों ऊचे स्वरसें कहता भया हेनारायण शीघ्र इहांआ मेरेकों एह भयंकर वांधने लगेहैं इनसें रक्षाकर ऐसें पुत्रकों कहता भया ॥ ९१ ॥ इसी तरांसें वहुत वार कहते होएकों सुनके विष्णुके दूतचले आये कैसे वोह विष्णुके दूतहैं शखचक्रगदा पद्म धारेहोए तुलसीकी माला कर्के शोभायमान ॥९२॥ और यमके दूतों का तिरस्कार कर्ते २ कहते भये इसकों छोड देउ क्यौं तुमने पकडाहै ऐसें कहकर पीछेसें तिन महात्माके साथ यमदूतोंका युद्ध होता भया ॥ ९३ ॥ तद सो विष्णुके दूत वडा घोर युद्ध कर्के अजामिलकों विमान पर विठा यके विमल हरिके मंदिरमैं लेजाते भये९४ ॥

वैकुंठंप्रापयामासुरित्याश्चर्य्यमभूदहो ९४ अ
थतेयमदूतास्तुछिन्नहस्तोरुनासिकाः संप्राप्य
धर्मराजांतेरुदंतोवाक्यमब्रुवन् ॥ ९५ अवि
चार्य्यैवभवताप्रेष्यंतेकिंकरानिजाः अथवाचि
त्रगुप्तोयंसहसासंवदत्यहो ॥ ९६ ॥ वयंतत्र
गतानेतुंविप्रंचाजामिलंतदा विष्णुदूताः समा
गत्ययुद्धंकृत्वातिदारुणम् ॥ ९७ ॥ विनिर्जि
त्यचनः सर्वान्निन्युस्तंभुवनंहरेः पश्यास्मदी
यान्यंगानिचक्राच्छिन्नान्यनेकधा ॥ ९८ ॥

वैंकुंठ मे प्राप्त कर्तेभये एहवडे आश्चर्यकी वात होतीभई ॥ ९४
अव इससेंउपरंत क्या अजामिल कों लेजानेसें उपरंत यमके
दूत कटेगएहैं हाथपाउं जिनके ऐसेसो धर्मराजाके पास प्राप्त
होकर रोदन कर्ते २ वाक्यकहतेभये ॥ ९५ ॥ हेराजन् आप
विना विचारे अपने किंकर भेजते हो अथवा चित्रगुप्त सतावी
कर्ताहै जो कुछ विचार नहि कर्ताहै ॥ ९६ ॥ हमतिसकों ले
जाने वास्ते तहां गए अजामिलके घर तिस समयही विष्णुकेग
ण आय कर वडा घोरयुद्ध कर्के ॥ ९७ ॥ हमारे कों जीत लिया
तिसकों हरिके मंदिर लेगएहैं और चक्रों कर्के कटे होए हमारे
अंगोंकों देखो ॥ ९८ ॥

तमाप्यानयितुंचास्मास्छ्रीमन्तःप्रेषयंतिहित
स्मादियमवस्थानोयोनाभागंतमर्हति ॥९९॥
इति श्रुत्वावचस्तेषांयमराजोतिविस्मितः आ
हूयाचित्रगुप्तंतुपप्रच्छाजामिलस्यसः॥ १००॥
चित्रगुप्तोनिरीक्ष्याहनाजन्ममरणावधि पुण्य
लेशोनचास्त्यस्यानिश्चित्यैतद्ब्रवीम्यहम् १०१
किंतुप्राणांतसमयेदृष्ट्वादूतान्भयंकरान् ना
रायणेतिनामानंतनयंस्वमुपाव्हयत् ॥१०२ ॥

विनाविचारे आप हमारेकों भेजदेतेहो इसकारणसें एह ह. मारी अवस्था हुईहै जो वडे निर्भाग्यों वालेयोंके योग्यथी ॥ ९९ ॥ एह वचन तिनका श्रवण कर यमराज वडे विस्म, य आश्चर्य कों प्राप्त होएआ तो चित्रगुप्त को वुलाय कर अजा मिल का पुण्य पाप पूछता भया ॥ १०० ॥ उस समय चित्र गुप्त तिसका जन्म सें लेकर मरणे पर्यंत पाप पुण्य देख कर. कहने लगा हे महाराज जन्मसे मरणे पर्यंत पुण्य का इसकों लेशभी नहि है एह वात निश्चित कर मैं कहताहुं १०१ ॥ परंतु एहवातहै कि मरणे के समय भयं कर दूतोंकों देख कर नारायण नाम वाले अपने पुत्रकों वुलावता भया ॥ १०२ ॥

तदाजुहावपुत्रंसनतुतंजगदीश्वरं इतिश्रुत्वाव
वस्तस्यचित्रगुप्तस्यभास्करिः ॥१०३॥ गृही
त्वानिजदूतान्सवैकुंठंप्रययौद्रुतं तत्रगत्वाज
गन्नाथंविष्णुंनारायणंहरिम् ॥१०४॥ प्रणम्य
प्रार्थयामासबद्धांजलि पुटोयमः ॥ भगवन्न
धिकारोमेवृथातवगणैः कृतः ॥ १०५ ॥ म
हापातकिनांश्रेष्ठोजामिलोभूद्द्विजाधमः तमा
नेतुंमयादूताः प्रेषिताः जगदीश्वर ॥ १०६ ॥

तिस समय सो अपने पुत्रकों वुलावताभया कोई परमेश्वर कों नहि वुलाया एह चित्रगुप्त का वचन सुनकर यमराज ॥ १०३ अपने दूतोंकों साथ लेकर शीघ्र वैकुंठमें प्राप्त होताभया और तहां जाकर जगत्के स्वामी हरि नारायण विष्णुकों ॥ १०४ प्रणामकर हाथ जोडके यमराज कहन लगा हेभगवन् मेरा अधिकार तेरे गणोंनें वृथा करदियाहै ॥ १०५ ॥ महापापियों में श्रेष्ट अजामिल ब्राह्मणोंमें अधमथा तिसके ल्याउने कों हे जगदीश्वर मैने अपने दूत भेजेथे ॥ १०६ ॥

अथांतरेभवद्दासायमदूतान्निहत्यतं समानि
न्युरिहायंतेराजतेभवनंद्विजः॥ १०७॥ श्रु
त्वैतद्धर्मराजस्यवचनंभगवान्हरिः सस्मितं
शांतयित्वातंयमराजमभाषत ॥ १०८ ॥
अहोसत्यंनास्यपुण्यमाजन्ममरणावधि परं
तुमृत्युसमयेमन्नामोच्चारणादयम् ॥ १०९ ॥
विमुक्तः सर्वपापेभ्याआनीतोममकिंकरैः शृ
णुष्वसमयंमत्तोनिजचित्तेवधारय ॥ ११० ॥

इतनेमैं हेभगवन् तुमारे दास यमदूतों कों मारकर तिसकों ल्यावते भये सो द्विज एह तुमारे वैकुंठमैं विराजमानहै १०७ एह वचन धर्मराज का श्रवण कर हरि भगवान् मंदहास्य करके युक्त धर्मराज कों समझावते २ ऐसे कहने लगे॥ १०८ हे धर्मराज जो तूं कहताहैं सो सत्यहै क्या जन्मसैं लेकर मरणे पर्यंत इसने कुछ पुण्यका लेश नहिकरा परंतु मरनैं के समयमेरे नामके उच्चारणसैं १०९ सम्पूर्ण पापोंसें मुक्तहोएआ हुया मेरेकिंकरोंने इस लोकमैं ल्यायाहै अब आगे वास्ते मेरेसैं संकेत श्रवणकर सो अपने मनमे निश्चय धारण कर रख ११०

पापिनोपियथादंडंभवतोनाप्नुवातिहि तथाव
धार्यचित्तेवैविहरस्वमहीतले॥ १११ ॥ येनाम
संततमहोममशंकरस्यदेव्याभजंतिमनुजाभुवि
पापिनोपितांस्त्वंजहीतिनचतेतवदंडयोग्याश्र
स्मत्प्रिया इतिनतच्चरितंविचार्यम् ॥ ११२॥ त
त्रापियेविजहतिस्वकलेवराणिमन्नामभाषणपु
रस्सरमप्यचिंताःकिंचामलत्रिपथगातटभाजि
नोयेसंसेविताद्धतनवःखलुतेतिपूज्याः ११३ ॥

और पापी पुरुष भी जिस प्रकार तेरेसें दंडकों नहिं प्राप्त होवे उसप्रकारकी शिक्षा अपने मनमैं निश्चयसें धारणकर सुख पूर्वक पृथिवी लोकमैं विहार कर १११ और जो कोई पुरुष सर्वदा मेरा नाम जपे वा शिवजी का अथवा देवी का नाम जपे पृथिवी लोकमैं सो पापी भी होवे तदभी तिसकों तूं सा गदे क्योंकी तेरे दंडके योग्य नहिहैं सो मेरेप्यारेहैं इसमैं विस्मय की वात नहिहै क्या विचार करनाहै ११२ और उसमैं भी एक विशेषताहै क्या मेरेनाम जपनेमैं तत्पर निश्चिंत होके देह त्याग कर्तेहैं और निर्मल श्रीगंगाजी के किनारे मैं रहने वाले सो मेरे अर्धे देहके भागीहैं और वडे श्रेष्ठहैं ११३

एवंशिक्षामुरीकृत्यनमस्कृत्ययमोहरिं निजंगा
मगणैः सार्धंहृष्टः संयमनींपुरीम् ॥११४॥
तत्रापिनिजदूतेभ्यः शिक्षामाहहरेः कृताम्
इत्यजामिलसंवद्धंभक्तिमाहात्म्यमुत्तमम् ॥
॥११५॥ परमाश्चर्यजनकंनामसामर्थ्यबृंहितं
श्रुत्वाभक्तिमवाप्नोतिमहापापात्प्रमुच्यते ॥
॥ ११६ ॥ इत्यजामिलचरित्रंसमाप्तम् ॥

इस प्रकार की शिक्षा भगवान् जी की अंगीकार करकें और यमराजधर्म हरिकों नमस्कार कर प्रसन्न मन वाला अपने गणों के साथ संयमिनी पुरीकों चला आवताभया ॥११४॥ तहां आ के सो भगवान् जी की करी होई शिक्षा और नों दूतों कों भी सुनाय देता भया एह अजामिलक की भक्ति के माहात्म्य कर बांधीहोई कथा उत्तम ॥ ११५ ॥ परम आश्चर्यके उत्पन्न करने वाली नामकी समर्थ कर भरीहुयी इसकों श्रवण कर नारायण मैं भक्तिकों प्राप्त होताहै और भक्त महापापसें मुक्त होताहै ११६ ॥ एह अजामिलकी भक्ति का चरित्र समाप्तभया ॥

अथभक्तमालायांनाममाहात्म्यनिरूपणम् ए
कदानाममाहात्म्यं न.मदेवेनभक्तितः कथा
व्यक्तीकृतंलोकेतदाश्चर्यं निशामय ॥ १ ॥ म
हाधनोवाणिक्कश्चिद्दिदृक्षुर्विठ्ठलंप्रभुं समाया
तोतिभक्त्यावैधनान्यादायभूरिशः ॥ २ ॥ स्ना
त्वाभीमासरित्तोयेदृष्ट्वातंविठ्ठलंहरिं संपूज्य
विधिवद्भक्त्यारत्नालंकरणादिभिः ॥ ३ ॥ तु
लादानंचकारासौ हिरण्यस्ययथाविधिः तैर्द्र
व्यैस्तोषयामासयथायोग्यंद्विजान्सदा ॥ ४ ॥

अब भक्तमाल सें रामनामकी महिमा लिखतेहैं एकसमय नाम
देवनैं भक्तिसें नामका माहात्म्य प्रगटकरा सो संसारमैं आश्चर्य
रूप कथा श्रवण कर ॥ १ ॥ वडा धनवान् एक वाणियां वि
ठ्ठल भगवानजीका दर्शन करने वास्ते आया वडी भक्ति कर
संयुक्त वहुत तरोंके धन देने वास्ते ल्याया ॥ २ ॥ तोंभीमानदी
केजल्ल मै स्नान कर हरिभगवान विठ्ठलजी का दर्शनकर्कै वि
धिकर संयुक्त वडे प्रेमसें वस्त्र भूषणादियों सें पूजन करा ॥ ३
फिर वेदकी रीतिसें स्वर्णादिद्रव्योंका तुलादान कर्ताभया औ
र तिनों द्रव्यों कर्कै यथा योग्य व्राह्मण साधुयों कों प्रसन्न क
र्ता भया ॥ ४ ॥

अन्यैरपिधनैस्तत्रविठ्ठलप्रीतयेवणिक् दीना
नाथांस्तुसंतोष्यप्राहकोप्यस्त्यनागतः ॥५ ॥
दीयमानंधनंतस्मैदास्यामिह्यहामिप्सितं इति
तस्यवचः श्रुत्वासर्वेते ग्रामवासिनः ॥६ ॥
ऊचुः सादरमानास्तेनामदेवोतिवैष्णवः अ
याचीनियताहारीसदागोविंदपूजकः॥ ७॥ ना
यातिसक्कचिद्भक्तः संतुष्टोयेनकेनचित् इतिश्रु
त्वावचस्तेषांवणिगाहानिजात्मजम् ॥ ८ ॥

और अनेंकतरों के धन विठ्ठल भगवानजी की प्रीतिके वा
स्ते दीन अनाथ दरिद्रीयोंकों प्रसन्न कर बोला ऐसा तोकोंई इ
सशहरमैंनहि रहा जोकोंइ इहां नहि आयाहै ॥ ५ ॥ क्योंकि
दान करा हुया एह धन उसकोंभी मन मांगा हुया देउं एहति
सका वचनसुनके सारेही उहांके रहने वाले ६ वडे आदर पू
र्वक कहने लगे इहांएक नामदेव परम वैष्णवहै ओह किसीके
आउता नहिहै नकिसीको याचना कर्ताहै नियम का भोजन
कर्ताहै और सर्वदा काल गोविंद जीकी पूजामै लगारहताहै ७
आउता जाता किसीके नहि और जो कुछ थोडा वहुत उस
कों घरमै वैठेहुए देआवे उसीसे प्रसन्न रहताहै ऐसा वचन लो
कोंका सुनकर सोसाहूकार वाणियां अपने पुत्रकों कहता भया ८

गच्छत्वंतत्रयत्रास्तेनामदेवोहरिप्रियः प्रणिप
त्यविनीतात्मातंप्राहाद्यानयेहभोः ९इतिपितृ
वचःश्रुत्वागतः पुत्रोऽतिहर्षितः प्रणम्यनामदे
वंतंप्राहमेजनकःप्रभो ॥१० त्वांदिदृक्षतिधर्मा
त्मातत्रत्वंकृपयाचल श्रुत्वैतद्वचनंतस्यनामदे
वोब्रवीद्वचः ॥११॥ प्रायोनयामिकुत्रापिकोहंय
न्मांदिदृक्षति सदाताधर्मशीलोमेकिंचिद्दातुमि
हेच्छति ॥ १२ ॥

पुत्रकों कहने लगा तूंउस जगा जा जहां नामदेव हरिका प्या
रा रहताहै तिसकों प्रणाम कर नम्र आत्मा वाला होके उसकों
इहां किसीउपाय कर्के ल्या ॥ ९ ॥ एह पिताका वचन सुन क
र पुत्र प्रसन्न मनवाला उहां चलागया नामदेवकों प्रणाम कर
बोला हेसाधो मेरापिता १० तुमारे दर्शन करनेकी इच्छा कर्ता
है तहां आप कृपा कर्के चलो इतना वचन सुनते ही नामदेव
कहता भया ॥११॥ असलसें मैं आज तक कहीं गया नही
हां परंतु मै कौन हां जो मेरा दर्शन करनेंकी इच्छा कर्ताहै मैने
जान लियाहै की ओह दाता धर्म करने वालाहै कुछ मेरे कोंभी
देनेकी इच्छा कर्ताहै ॥ १२ ॥

तज्ज्ञानामिनमेवांछाधनेवान्यत्रकुत्रचित् प्राण
धारणमाहारंददातिविठ्ठलःप्रभुः ॥१३॥ इति
पित्रेप्रवक्तव्यंगच्छवत्साविचारयन् ततःसवै
श्यपुत्रस्तुपितुरंतिकमागतः १४॥ उवाचनाम
देवस्यवचः सचपुनर्वणिक् प्राहपुत्रंपुनर्गच्छ
प्रसाद्यानयतंसुत ॥ १५ ॥ ततः सग्रामवृद्धै
स्तुसाकंतत्रपुनर्गतः उवाचप्रांचालेर्भूत्वातथा
हंपुनरागतः ॥ १६ ॥

सोमैजान लियाहै परमेरी इच्छानहिहैं धनलेनेकीन औंर किसी वस्तुकी और प्राणोंके धारणकरनेकानिर्वाह मात्र अन्न विठ्ठलभगवान्जी देहींदेतेहैं ॥ १३ ॥ एह बात अपने पिताकों कहदेहेपुत्र विचार मत कर औंर उहां जाके पिताकों कहदे ओह नहि आवताहै इतना वचन सुनके वैश्यका पुत्र पिताके पासचला आया ॥ १४ ॥ और नामदेवके वचन तिसकों सुनाय दिये की ऐसें कहताहै तद वाणियां पुत्रकों कहने लगा फिर उहां जाके तिसकों प्रसन्न कर इहां ल्या ॥ १५ ॥ तद फिरसो वाणियेका पुत्र ग्रामके वृद्ध पुरुषोंकों साथ लेके उहां गया तद नामदेवने पूछा अवकेसें आया तो बालक कहने लगा हे साधो मैं फिर तुमारे उहां लेजाने वास्ते बुलाने कों आयाहां ॥ १६ ॥

शृणुमेपितृवचनंयावत्त्वंनैषिमेगृहं तावदन्नंच
पानीयंनग्रहीष्याम्यहंध्रुवम् ॥१७॥ इतिप्रति
ज्ञांकृत्वासमरणेकृतनिश्चयः उत्कंठितोभवं
तंवैद्रष्टुंनास्त्यत्रसंशयः ॥१८॥ भवंतंभगवद्भ
क्तंजानातिभक्तवत्सलं नायातःस्वयमेचात्रत्व
दागमननिश्चयात् ॥ १९ ॥ अथैवंवचनंतेषां
वृद्धानांतत्सुतस्यच श्रुत्वासनामदेवोपिसमुत्त
स्थौप्रहृष्टवत् ॥ २० ॥

फिर कहने लगा हेसाधो मेरे पिताका वचन सुनो जो उोह क
हताहै जितनाकाल आप मेरे घरमैं नहि आओगे उतना काल
अन्न पाणी ग्रहण नहि करूंगा निश्चय कर्के ॥ १७ ॥ ऐसी प्र
तिज्ञा करके मरणे मैंभी निश्चय वाला होके तुमारे दर्शन करने
की चाहना वाला वैठाहै इसमै संशय नहिहै ॥ १८ ॥
और तुमारे कों भक्तवत्सल भगवानका भक्तजानके आप नहि
आयाहै की जरूर मेरे पर कृपा करेंगे क्या मेरे घरजरूर आवें
गे इस निश्चयसें ॥ १९ इसप्रकार के वचन तिनके श्रवण कर
वृद्धोंके और तिसवालक के नामदेव प्रसन्नमन वाला होके उ
ठ खडा होता भया ॥ २० ॥

जगामवणिजोगेहेयत्रदानंकरोतिसः वैश्योद्द
ष्ट्वानामदेवंसमुत्थायातिहर्षितः॥२१॥पाद्या
द्यैः पूजयित्वातंप्रोवाचविहितांजलिः प्रसीदतु
भवानद्ययद्ददामिगृहाणतत् २२ तद्वैश्यस्यव
चःश्रुत्वानामदेवोप्यभाषत अहोतदर्थंनाया
तोनमेवांछाधनादिषु ॥ २३ इतिजानंत्यमीस
र्वेतस्मादेतत्क्षमस्वभोः इतिश्रुत्वातुसवणिक्त
त्पादौप्रतिगृह्यच ॥ २४ ॥

सो नामदेव तिनके साथ वाणियेके घरमैं जाता भया जहां वै ठके उह दान कर्ताथा जद उसके सन्मुखगया सो उसको देखकर वडे हर्ष आनंदसे उठ खडा भया ॥ २१ ॥ पाद्य अर्घ्य आचमनादियों सें पूजन कर हाथ जोडके बोला हेसाधो आप मेरे पर प्रसन्न होवो और जो कुछ तुमको देताहुं सो मेरे सें ग्रहण कर लेवो ॥ २२ ॥ एह वाक्य तिस वाणिये का सुन कर नामदेव कहता भया हे धर्मशील मैं दान लेने कों नहि आयाहां और नमेरी इछाही है धनादियों में ॥ २३ ॥ एह वात सारे लोक जानते हैं इसकारणसे मेरे पर क्षमा कर इतना वाक्य सुनते ही तिसके पाद वाणियेने पकड लिये ॥ २४ ॥

नतत्याजसतत्पादौनामदेवोऽब्रवीत्तदा देहिमे
भिहितंद्रव्यंत्वत्प्रीत्यास्वीकरोम्यहम् ॥ २५ ॥
इत्युक्त्वातुलसीपत्रमेकमादायतत्रह रामेत्य
स्यार्धमलिखत्प्राहतंवणिजंपुनः॥ २६ ॥एतत्प
रिमितंद्रव्यंदेहिमेयदिदास्यसि इतिश्रुत्वावच
स्तस्यप्राहतंसवणिक्पुनः ॥ २७ ॥ उपहा
सोनयोग्यस्तेममभक्तस्यसुव्रत गृहाणयद्ददा
मीहस्वेच्छयाहंप्रसीदभोः ॥ २८ ॥

सो वाणियां तिसके पादों कों नहि त्यागता भया तद नामदे
व कहनेलगा हेसाधु अच्छा जेकर देताहैं तद उतना द्रव्यदे
जितना मैं मांगता हों तेरी प्रसन्नताके लिये ग्रहण कर्ताहुं
२५ ॥ ऐसे कह कर्के उहांसेंही एक तुलसी का पत्र लें कर
राम इसका आधा पद रा मात्र लिखके फिर वाणियेकों
कहता भया ॥ २६ ॥ हे वाणिक् जेकर देताहैं तद इसके
साथ तोल कर दे एह वचन तिसका सुनतेही वाणियां फिर
कहने लगा ॥ २७ ॥ हेसुव्रत में जो तुमारा भक्तहां मेरेसाथ
हांसी करनी योग्य नहिहै हे साधो जो मैं अपनी इच्छासें देता
हुं उतना ग्रहण करो ॥ २८ ॥

श्रुत्वैतद्वचनंतस्यनामदेवोब्रवीत्पुनः नोपहा
संकरोम्यद्यतावत्सर्वाधिकंभवत् ॥ २९ ॥ स
त्यमेतन्नसंदेहोनकिंचित्तत्समंभुवि इतिश्रुत्वा
सवैश्यस्तुसौवर्णतोलिकांतुलाम् ॥ ३० ॥ समा
दायतुतत्पत्रंरामनामार्धसंयुतम् एकतः स्थाप
यामासहिरण्यमपिचैकतः ॥ ३१ ॥ नसमंतु
लसीपत्रेणासीत्तत्कनकंपुनः सुवर्णानिसमा
दायपूरयामासयत्नतः ॥ ३२ ॥

एह वचन तिसका सुनके नामदेव फिर कहता भया मैं हांसी नहिकर्ताहुं एह सभनोंसें अधिकहै । २९ । सत्यवातहै आप संदेह मत करो इसके वरावर की वस्तु पृथिवीमैं भी नहिहै इस तरांका वचन सुनके सो वैश्य सुवर्ण तोलने वाली तुला कंडी लेके ॥ ३० ॥ रामनाम के अर्धकर संयुक्त तुलसी पत्रकों एक पासे पाय कर दूसरे पासे सुवर्ण कों स्थापन करके ३१ तोलने लगा तो तुलसी पत्रके साथ ओह सुवर्ण वरावर नहि हों ताभया और सुवर्ण लेकर यत्नसें उसमैं पूरता भये ॥ ३२॥

नययौतत्रसाम्यंतत्पुनरन्यांतुलांदधे तत्रापिन
ययौसाम्यंनामार्धस्यतुतद्धनम् ॥ ३३ ॥पुन
र्निर्मायमहतींतुलांसंस्थाप्यसर्वशः धनानितो
लयामासनययौसमतांपुनः ॥ ३४ ॥ततस्तंव
णिजंप्राहनामदेवोतिविस्मितः अहोयावंतिदा
नानिव्रतानिचमहीतले ३५॥ तीर्थानिचोपवा
साश्चतेषांयत्फलमीरितंवै संकल्प्यतज्जलंत
त्रदत्त्वातोलयपश्यभोः ॥ ३६ ॥

उसतुला मैं स्वर्णादि उसनामार्धके साथ बरावर नहि होए तद
और तुला उनोंने ग्रहण करी तिसमैंभी नामार्धके साथ सोधन
बरावर नहि होएआ ॥ ३३ ॥ तोफिर वहुत वडी एक तुला व
नाके उसमैं सभी कुछ स्थापन कर धनोंकों तोलते भये तदभी
राम नामार्धके साथ बराबर नहि हुया ३४ उससमय नामदेव
विस्मय युक्त होएआ हुया वाणिये कों कहता भया हेसाहुका
र अव देख जितनेक दान व्रत महीतल मैंहैं ॥ ३५ ॥ और
तीर्थहैं उपवास व्रत जितनेहैं तिनका जोफलहै तिसकों संकल्प
करकें उसका जो जलहै सो उसमैं पायकर तोलके देख ३६॥

इतिश्रुत्वावणिक्तीर्थव्रतादीनांफलानितु संक
ल्प्यप्रददौतत्रनसाम्यंजग्मुरएवपि ॥ ३७ त
तस्तुपरमाश्चर्यंदृष्ट्वासर्वेतिविस्मिताः उवाच
नामदेवस्तानेतन्मेपरमंधनम् ॥ ३८ ॥ नैता
दृशंधनंलोकेकस्याप्यस्तीत्यतोमया नयाच्य
तेजनः कोपिमत्तः सर्वेहिनिर्धनाः॥ ३९ ॥इति
तस्यवचः श्रुत्वासाधुसाध्वितिवादिनः दृष्ट्
वातंप्रत्ययंचित्ते जगृहुर्नामचिंतनम् ॥ ४० ॥

एहवचन तिसका सुनके वाणियां व्रतउपवास तीर्थादियोंके फल संकल्प कर्के तिसमै जल छोड देता भया तदभी तिसकी थोडी समता कों प्राप्त नहि होता भया ॥ ३७ ॥ तदसारे लोक परमाश्चर्य देखकर विस्मयकों प्राप्त होते भये उससमय उनकों नामदेव कहता भया एहमेरा परम धनहै देखातुमने ३८ इसके जैसा धन संसारमैं किसीके पास नहिहै मेरेहीपासहै इसी कारणसें किसीकों याचना नहि कर्ता हुं मेरेसें सारेही निर्धन हैं मैं वडाहुं सभसें ॥ ३९ ॥ एह वाक्य तिसका श्रवण कर सारे लोक साधु २ कहने लगे क्या एह वात ठीकहै कुछ संदेह नहिहै इस तरांका निश्चय देखकर सारे लोक अपने२मनोंमैं नामका चिंतन कर्ते भये ॥ ४० ॥

एवंवैनाममाहात्म्यंपुराणेपरिकीर्त्तितं नामोच्चा
रणमात्रेणगजोमुक्तोवभूवह ॥४१॥ गणिकाच
दिवंयातारामनामप्रभावतः अजामिलोऽतिपा
पिष्ठोनारायणसुतस्यतु ॥ ४२॥ जगामपरमं
धामतस्मान्नामैवतारकं कृष्णेतिमंगलंनामय
स्यवाचिप्रवर्तते ॥४३॥ भस्मीभवंतिराजेंद्रम
हापातककोटयः इतिस्मृतिरभिव्यक्तामन्य
तेऋषिभिःसदा ॥ ४४ ॥

इस प्रकार नामका माहात्म्य पुराणों में कथन कराहै प्रत्यक्ष देखो नामके उच्चारण मात्र कर्के ग्राह ने ग्रसा हुया गज राज मुक्त होता भया ॥ ४१ ॥ और वेश्या रामनामके जपने के प्रभावसें स्वर्ग में जातीभई और अजामिल वडा पापीथा सोभी पुत्र का नारायण नामलें कर्के ॥४२॥ परम धाम कों प्राप्त होताभया इस कारणसें रामनामही तारणें वालाहैं औरभी विशेष वाक्य लिखाहैं कृष्ण एह मंगल नाम जिसकी बाणी मैं प्रवृत्त रहताहै ॥४३॥ हेराजेंद्र तिसके महापापों कीयां क्रोडांभस्महोतियां हैं एह स्मृति वाक्य प्रसिद्ध सर्वदा काल ऋषियोनें मानीदा है ॥ ४४ ॥

तस्मान्नामसमोनास्तितपोयोगोव्रतंचवा अ
न्यानिपुण्यकर्माणिनाशुचिः कर्तुमर्हति ॥ ४५
तत्रनामस्मृतिर्विष्णोः सर्वशौचोत्तमोत्तमं का
म्यानांकर्मणांसिद्धौयनून्यस्ततद्धनंस्मृतम् ४६
तत्रांगवैगुण्यकृतोदोषोनर्थंकरोतिवै नामस्मृ
तौनचांगानिनच वैगुण्यमस्तिवै ॥ ४७ ॥ त
स्मान्नामस्मृतिर्लोकेसर्वेभ्योऽपिगरीयसी ना
मैवतावदेवेतिनिर्णीतंमुनिभिःपुरा ॥ ४८ ॥
गृहीत्वाविचरंस्तिष्ठेत्तथाप्येतन्नसंशयः ॥ ४९

इस कारणसें नामके समान कोई तप योग समाधि व्रत नहिहै और जितनेक पुण्य कर्महैं अपवित्र होए हुए कों करने को योग्य नहि होतेहैं ४५तहां नामकीस्मृति विष्णुकेकी सारेशौचोमें उत्तम पवित्र वस्तुहै और काम्यकर्मोंकी सिद्धिमैं मंत्रजपनेमैं अंगकी न्यूनता होजावे ओह दोषवडाअनर्थ कर्ताहै और नामके स्मरण मैंन अंगहैं न विगुणताहै ॥ ४७ इसकारणसें नामका स्मरण संसारमैं सभनोंसें वडाहै मुनियोंनें नामका उच्चारण ही करना पीछे२ निर्णयकराहै ॥ ४८ ॥ इसमंत्रकों ग्रहण कर्के विचरता हुया स्थित होएआ हुया चलता फिरता उच्चारण कर्तारहे ॥

तस्मान्नाम्नस्तुमाहात्म्यंनकोऽपिवक्तुमर्हति य
स्यनामस्मृतौभक्तिस्तस्यभक्तिर्हरौदृढा ५०
तदेवनाममाहात्म्यमनुभूतंयथापुरा तमेवकथ
यिष्यामिग्रंथांतेविस्तरादहम् ॥ ५१ ॥ इति
श्रीभगवद्भक्तिमाहात्म्येनाममाहात्म्यवर्णनम्

इस कारण सें नाम का माहात्म्य कोई भी कहने कों समर्थ नहिहै और जिसकी भक्ति नाम कें स्मरणमैं है उसीकी भक्ति हरिमे दृढ निश्चय वालिहै ॥ ५० ॥ जिस प्रकार नामका माहात्म्य पूर्व समय उत्पन्नहुयाहै तिसकी कथा विस्तारसें ग्रंथके अंतमैं कथन करूंगा ॥ ५१ ॥ एह श्रीभगवानजी की भक्ति के माहात्म्यमें राम नाम उच्चारण का माहात्म्य कथन कराहै

अथ विष्णवग्रे स्तोत्रसहस्रनामपुराणपाठमाहात्म्यं पाद्मे क्रियायोगसारे सत्कथाश्रवणे वुद्धिर्यस्ययस्यप्रवर्त्तते ससएवस्वयंविष्णुस्तस्मैविप्रनमोनमः १ सत्कथाश्रवणादेवविष्णुभक्तिः प्रवर्त्तते तस्यतस्यभवेद्ज्ञानंधर्ममोक्षप्रदंविदुः ॥ २ ॥ प्रभावंवासुदेवस्य श्रुत्वातृप्यंतियेजनाः ज्ञेयास्तेएवदेवेशाःपूज्याद्दश्याश्चसत्तम ॥ ३ ॥ यत्रयत्रमहादेववैष्णवीवर्त्तते कथा सान्निध्यंतत्रभगवान्नजहातिकदाचन ४

अब विष्णु भगवानजी के आगे स्तोत्र सहस्र नाम पुराणके पाठ का माहात्म्य पद्म पुराण के क्रियायोगसारमैं लिखाहै ॥ जिस जिस पुरुष की श्रेष्ट कथा श्रवण करने मैं वुद्धिहै सो २ आपविष्णुका रूप है हेविप्र तिसके तांई नमस्कार होवे २ ॥ १ ॥ श्रेष्ठकथा श्रवण करने सें विष्णु में भक्ति प्रवृत्त होतीहै और जिस २ कों भक्ति होतीहै तिस २ को धर्म मोक्षके देने वाला ज्ञान होता है॥ २॥जौनसें पुरुष वासुदेव भगवानजीका प्रभाव सुनके मनमें प्रसन्न होतेहैं हेसत्तम सो पुरुष देवेश का रूप जानने पूजाके योग्य हैं और देखनेके योग्यहैं ॥ ३ ॥ हे महादेव जिस २ जगामैं वैष्णवीकथा होती होवे तहां की सानिध्यता भगवान कदी नहिं त्यागते हैं ॥ ४ ॥

महाभागवतस्यापिपुराणस्यैकमक्षरं यःपठे
त्परयाभक्त्यागोप्रदानफलंलभेत् ॥५॥अन्यच्च
गीताध्यायंपठेद्यस्तुश्लोकार्धंश्लोकमेववा स
र्वपापविनिर्मुक्तोयातिविष्णोः परंपदम् ॥६॥वि
ष्णोर्नामसहस्त्रंतु पूजाकालेतुयःपठेत् अष्टाद
शपुराणानांफलंप्राप्नोतिमानवः ॥७॥नारदीये
यः शृणोतिपुराणानिसततंभक्तिसंयुतः तस्य
स्याद्विपुलाबुद्धिर्भूपधर्मपरायणा ॥ ८ ॥

जो पुरुष पूजाके समय महाभागवत पुराणका एकअक्षर भीप
रम भक्ति करके पाठ करे सोभी गौके दान करनेके फलकों प्रा
प्त होताहै ॥ ५ ॥ और भीलि ० गीताका एक अध्याय एक
श्लोक वा अर्ध श्लोक पाठ कर्ताहै सों सारे पापोंसें मुक्त होए
आ हुया विष्णुके परम पदकों प्राप्त होताहै ॥ ६ ॥ विष्णुका
सहस्र नाम स्तोत्र पूजाके समयजो पढताहै सो अठारां पुराणों
केपाठ करनेके फलकों प्राप्त होता है ॥७ ॥ नारदीय पुराणमें
लि ० जो पुरुष सर्वदा काल भक्ति युक्त पुराणों की कथा सुन
ता है हेराजन् तिसकी धर्म मैं तत्पर वहुत बुद्धि होतीहै ॥ ८

यः शृणोतिपुराणानिभक्तिमान्प्रयतः सदाहरि
भक्तिर्भवेत्तस्यसमस्तगुणदायिनी ॥ ९ ॥ पुरा
णश्रवणान्नृणांबुद्धिर्धर्मेप्रवर्त्तते धर्मात्पापा
निनश्यंतिज्ञानंशुद्धंचजायते ॥ १० ॥ स्कांदे॥
वैवस्वतभयंनास्तितथामरणजन्मनोः यःकथां
कुरुतेविष्णोः शालग्रामशिलाग्रतः ॥ ११ ॥

जो भक्तिवाला पुरुष सर्वदाकाल पवित्र होकर नियमसें पुराणों कों श्रवण कर्ताहै तिसकों सारे गुणोंके देनेवाली हरिकी भक्ति होतीहै ९ पुराणोंकी कथा श्रवण करनेसें पुरुषों की बुद्धि धर्म मार्गमें प्रवृत्त होतीहै धर्म करने सें पाप नष्ट होतेहैं और शुद्ध निर्मल ज्ञान होताहै ॥ १० ॥ स्कंद पुराणमें लिखा है जो पुरुष शालिग्राम की शिलाके आगे विष्णु भगवानजी की कथा कर्ताहै तिसकों धर्मराजसें भय नहिहै और मरणे जन्मनेका भी भय नहिहै अर्थात् ओह मुक्त होजाताहै ।११॥

गंधमाल्यादिनैवेद्यैर्धूपदीपैश्चलेपनैः गीतवा
द्यैस्तथास्तोत्रैश्शालग्रामशिलार्चनम् ॥ १२
कुरुतेमानवोयस्तुकलौभक्तिपरायणः कल्प
कोटिसहस्राणिरमतेविष्णुसन्निधौ ॥ १३ ॥
पाद्मेकार्त्तिकमाहात्म्ये कुर्वंतियेकथांविष्णो
र्येशृण्वंतिसुभावतः श्लोकार्धंश्लोकपादंवाल
भंतेगोशतंफलम् ॥ १४

और जो कोई पुरुष गंध पुष्प मालादि नैवेद्य धूप दीप लेपन गायन करताहै वाजे वजाने स्तोत्रोंके पाठ करने शालग्रामकी शिलाका पूजन ॥ १२ ॥ जो मानव कर्ताहै भक्तिमैं तत्पर कलियुगमैं सो कल्पों के हजारां क्रोंडां वर्ष विष्णुके समीप सुख भोग भोगताहै ॥ १३ ॥ पद्म पुराणके कार्तिक माहात्म्य मैं लिखाहै जो पुरुष प्रीतिभक्ति कें युक्त विष्णुकीयां कथां श्रवण कर्ते हैन वा आप सुनातेहैं एक श्लोक वा आधाश्लोक सौ सौ गौ दानकरनेके फलकों प्राप्तहो तेहैं ॥ १४ ॥

॥ नतथातुष्यतेयज्ञैर्नदानैर्गोगजादिभिः य
थाशास्त्रकथालापैस्तुष्यतेमधुसूदनः ॥ १५
सर्वधर्मान्परित्यज्यकार्त्तिकेकेशवाग्रतःशास्त्रा
वधारणंकार्यंश्रोतव्यंचमहामुने १६ श्रेयसा
लोभवुद्ध्यावायः करोतिहरेः कथां शिला
ग्रेमुनिशार्दूलजनानांतारयेच्छतम् ॥ १७ ॥

इतने प्रसन्न भगवान गौयां हाथी घोडे इनके दानों
कर्के नहि होतेहैं जितने शास्त्रकी कथा सुनने सुनाने सें मधु
सूदनजी प्रसन्न होतेहैं १५ सारे धर्मोंकों त्यागकर कार्त्तिक
महीने मैं शास्त्रकीयां कथां सुनानीयां श्रवण करवाणियां चाहि
ए १६ हेमहामुने अपनी कल्याण वास्ते जांलोभकी वुद्धि
कर्के जो हरि कीयां कथां कार्त्तिक मैं केशव विष्णुजीके आगे
कर्ताहै क्या शालिग्रामकी शिलाके आगे कर्ताहै सो अपने पी
छे के सौ जने कों तारताहै क्या उद्धार कर्ताहै १७

नियमेननरोयस्तुशृणुतेवैष्णवींकथां कार्तिके
तुविशेषेणगोसहस्रफलंलभेत् ॥ १८ ॥ प्रबो
धवासरेविष्णोःशृणुतेयोहरेःकथां सप्तद्वीप।
वनीदानफलंसलभतेमुने ॥ १९ ॥ कृत्वाभुवि
कथांविष्णोर्येर्चयंतिकथाविदं स्वशक्त्यामुनि
शार्दूलतेषांलोकोऽक्षयः स्मृतः२०॥ स्कांदे नि
त्यंवैष्णवशास्त्राणियेशृण्वंतिपठंतिच धन्या
स्तेमानवालोके तेषांकृष्णः प्रसीदति ॥ २१

जो पुरुष नियम कर्के रोज के रोज वैष्णवी कथाकों सुनताहै
और विशेष कर्के कार्तिक महीनेमें सों हजार गौं दान करने
के फलकों प्राप्त होताहै ॥ १८ ॥ और जोकोई विष्णुके प्रबोध
दिनमें हरिकीयां कथा सुनताहै सो सात द्वीप वाली पृथिवीके
दान करनेके फलकों प्राप्त होताहै ॥ १९ ॥ जौनसे पृथिवीलो
कमें विष्णुकी कथा कर्तेहैं और तिनका जोअपनी शक्ति कर्के
हे मुनिशार्दूल पूजन कर्तेहैं तिनके अक्षय लोक वने रहतेहैं २०
स्कंदमें कहाहै जौनसे पुरुष नित्यही वैष्णवशास्त्रोंकों सुनतेहैंप
ढतेहैं ओह मनुष्य संसारमें धन्यहैं तिनके ऊपर श्रीकृष्णजी प्र
सन्न होतेहैं ॥ २१ ॥

पठंतिवैष्णवंशास्त्रंभक्ताभागवतंहिये कल्पको
टिसहस्त्राणिकृष्णलोकेवसंतिते २२ ॥ श्लोका
र्धंश्लोकपादंवाश्रूयाद्भागवतंगृहे सहस्त्रशतसं
ख्याकैःकिमन्यैः शास्त्रसंग्रहैः ॥ २३ ॥ पुराणं
वैष्णवंशास्त्रंश्लोकंचैकमथापिवा श्लोकपादंपठे
द्यस्तुगोसहस्त्रफलंलभेत् ॥ २४ ॥ पुनस्तत्रैव
श्रोतव्यंविष्णुचरितंविष्णुभक्तैः सदानरैः पा
पक्षयार्थंदेवर्षेस्वर्गप्राप्त्यैचसर्वदा ॥ २५ ॥

जौनसे परमेश्वरके भक्त वैष्णव शास्त्र जो भागवत तिसकों प
ढतेहैं सो कल्पोंके हजारां क्रोडां वर्ष कृष्णजी के लोकमें वसदे
हैं ॥ २२ ॥ और जो पुरुष अपने घरमें भागवतका एक
श्लोक वाआधा श्लोक वा एक पाद नियमसें श्रवण करतेहैं ति
नकों सैंकडे हजारां शास्त्रोंकें संग्रह करकें क्या प्रयोजनहै ॥ २३
पुराण जोहैं वैष्णव शास्त्र तिनका श्लोकमात्र जां श्लोक पादश्र
वण करना अथवा आप पढना हजार गौयांके दान करनें के
फलकों प्राप्त होताहै ॥ २४ ॥ फिर तहां उसी पुराणमेंलि ०
विष्णुकी भक्ति करने वाले पुरुषों ने सर्वदा काल विष्णु भगवा
नजीके चरित्र पापोंके नाश करने के लिये और स्वर्गकी प्राप्ति
के लिये सुननें योग्य हैं ॥ २५ ॥ ?

स्कांदे नियमेननरोयस्तुशृणोतिविष्णुसत्क
थाः सप्तद्वीपावनीदानेयत्फलंतल्लभेन्मुने॥२६
श्रुत्वाविष्णुकथांपश्चाद्येर्चयंतिमधुद्विषं स्वश
क्त्यामुनिशार्दूलतेषांलोकाः सनातनाः ॥ २७
गीतवाद्यैस्तथास्तोत्रैः शालिग्रामशिलार्चनं
कुरुतेमानवोयस्तुकलौभक्तिपरायणः युगको
टिसहस्राणिरमतेविष्णुसन्निधौ॥ २८॥ पुस्तक
स्याप्यभावेतुविष्णुनामसहस्रकं स्तवराजंतुवि
प्रेंद्रगजेंद्रस्यतुमोक्षणम् ॥ २९ ॥

स्कंदपुराणमैं कहाहै जोनर नियम करकें विष्णुकी श्रेष्ठ कथा श्रव
ण कर्ताहै हेमुने सात द्वीप वाली पृथिवीके दानका जोफलहै
तिसकों लभताहै ॥ २६ ॥ जो विष्णुकीयां कथा श्रवण करकें
पछिसैं मधुद्विष भगवानजी कों पूजतेहैं अपनी यथा शक्ति क
रकें तिनके सनातन लोकवने रहतेहैं ॥ २७ ॥ गायन कर्ताहैं वा
जेवजाताहै स्तोत्रपाठ करताहै शालिग्रामकी शिलाकी पूजामें
जोमानव कलियुगमें भक्तिमें तत्पर होएआ हुया सो हजारां
क्रोडां युग विष्णुके समीप रमण कर्ताहै ॥ २८ ॥ जिसके घ
रमै पुस्तकनहि होवे हेविप्रेंद्र तो विष्णुका सहस्रनाम स्तवराज
गजेंद्र मोक्ष इनका पाठकरे ॥ २९ ॥

पूजाकालेतुदेवस्यगीताध्यायंमनुस्मृतिं पंच
स्तवंमहाभागमहाप्रीतिकरंहरेः ॥३०॥स्तोत्रा
णांपरमंस्तोत्रंविष्णोर्नामसहस्रकं कृत्वास्तो
त्रसहस्राणि पठनीयानिसुव्रत ॥ ३१ ॥ तेनैके
नमुनिश्रेष्ठपठितेनसदाहरिः प्रीतिमायातिदे
वेशो युगकोटिशतानिच ॥ ३२ ॥ विहायगी
तवाद्यानिपूजाकालेसदाहरेः पठनीयंसदाभ
क्त्याविष्णोर्नामसहस्रकम् ॥ ३३ ॥

देवता विष्णुकी पूजाके समय जो गीताका एक अध्याय भी पढ
तेहैं और अनुस्मृतिकों पढतेहैं एहजो पांच स्तवहैं सो हरि की
बडी प्रसन्नता कर्ने वालेहैं ॥ ३० ॥ स्तोत्रोंके मध्यमे विष्णु स
हस्रनाम स्तोत्र श्रेष्टहै हेसुव्रत हजारां स्तोत्र इकठे कर्के पढने यो
ग्यहैं ॥ ३१ ॥ परंतु तिस सहस्र नामके एक वार पढने कर्के
हेमुनिश्रेष्ट सर्वदा काल सैकडे युगों पर्यंत देवेश प्रसन्न रहतेहैं
॥ ३२ ॥ सर्वदाकाल हरिकी पूजाके समय गीत वाद्यादि त्याग
कर विष्णुसहस्रनाम भक्ति कर्के पढना योग्य है ॥ ३३ ॥

विष्णोर्नामसहस्राख्यं कलिकाले पठंति ये वेदा
नामपि पुण्यानां फलप्राप्तिर्भवेन्नृणाम् ॥ ३४ ॥
श्लोकेनैकेन देवर्षे विष्णोर्नामसहस्रतः पठनेन
फलं प्रोक्तं न तत्क्रतुशतैरपि ॥ ३५ ॥ मंत्रहीनं क्रि
याहीनं यत्कृतं पूजनं हरेः परिपूर्णं भवेत्सर्वं सह
स्रनामकीर्त्तनात् ॥ ३६ ॥ क्रियायोगसारे स्तौ
ति स्तोत्रैर्जगन्नाथं यो भक्त्या वैष्णवो जनः तस्य
प्रसन्नो भगवान्सर्वान्कामान्प्रयच्छति ॥ ३७ ॥

बिष्णुका सहस्रनाम कलियुगके समय जो पढतेहैं तिनो पुरुषां
ने पवित्र वेदोंके पाठ करने के फलकी प्राप्ति होतीहै ॥ ३४ ॥
हेदेवर्षे सहस्रनामके एक श्लोक पडने कर्के जो फल प्राप्त
होताहै सो सैकडे यज्ञों कर्के भी नहि होताहै ॥ ३५ ॥ और
जो मंत्रों कर्के क्रिया कर्केहीन जो हरिका पूजन कराहै सो
साराही हरि सहस्रनामके पाठ कर्के परिपूर्ण होजाताहै ॥ ३६
क्रियायोगसारमें लि॰ जोकोई वैष्णव पुरुष भक्तिके साथ स्तो
त्रों कर्के जगन्नाथजी की स्तुति कर्ताहै तिसके ऊपर प्रसन्न हो
ए हुए भगवान् सारियां ही कामना पूर्ण कर्तेहैं ॥ ३७ ॥

स्तोत्रपाठकरणेचेतिहासमवतारयति भक्तमा
लायां पुनर्भूयः प्रवक्ष्यामि भक्तेर्माहात्म्यमुत्त
मं यस्यश्रवणमात्रेणनरोमुच्येतसंसृतेः॥ १ ॥
पूर्वंयः कथितोऽत्रैवश्रीधरस्वामिसंज्ञितः तस्य
पूर्वव्यवस्थायांभक्तेर्माहात्म्यमुच्यते ॥ २ ॥
सएकदागृहेतिष्ठन्वनेशास्त्रार्थपारगः आहूतो
धनिनैकस्मिन्दिनेकेनचिदध्वरे॥३ तत्रगत्वाप्र
वान्विप्रोधनानिकतिचिद्द्विजः गृहीत्वातानि
चैकाकीश्रीधरोगृहमाव्रजत् ॥ ४ ॥

स्तोत्रादियोंके पाठकरणेके फलमैं इतिहास कथन कर्तेहैं भक्त
माला ग्रंथमैं॥फिर अब भक्तिका उत्तम माहात्म्य कथन कर्ताहुं
जिसके श्रवण मात्रसें पुरुष संसारसें मुक्तिकों प्राप्त होताहै ॥ १
पहिले जो कथन कराथा श्रीधरस्वामी तिसकी कथा पूर्व व्यव
स्थामैं भक्तिकी कथा कहीदीहै ॥ २ ॥ सो स्वामी घरमैंही नि
वास कर्ता हुया शास्त्रका चिंतन कर्तारहताथा एकादिनकिसी ध
नि साहूकार शिष्यनें यज्ञके विषेंवुलाया ॥ ३ ॥ तहां जा कर्कें
ब्राह्मण श्रीधरजो कितने तरोंके द्रव्योंकों प्राप्त होता भया तिन
कों ले कर्कें इकल्लाही श्रीधर वनमार्ग कर्कें अपनें घरकों
आवता भया ॥ ४ ॥

मध्यमार्गेमार्गचौराअनुयाताः सुहिंसितुं त
तस्तान्श्रीधरोज्ञात्वाशस्त्रपाणीन्भयंकरान्
५ त्रस्तःश्रीरामकवचं भक्त्यासस्मारसद्विजः
कवचस्यकृतेपाठेभ्रातरौरामलक्ष्मणौ ॥ ६ धनु
र्बाणधरौवीरौश्यामगौरकलेवरौ श्रीधरस्यस
मीपेतुगच्छंतौभीषयन्खलान्॥७ नापश्यच्छ्री
धरःकंचिच्चौरं दृष्ट्वातुतौपथि नप्रहर्तुंशक्नुवं
तःश्रीधरेणसमागताः ॥ ८ ॥

तब तिसकों मार्गके मध्यमे मार्ग चौर रस्ता लुटने वाले तिस कों मारने के लिये पीछे २ आवते भये तो श्रीधर स्वामी तिनकों शस्त्रधारी भयंकर रूपवाले अपने मारने कों पीछे आया कर्ते होएओं कों जानकर ५ ॥ त्रसेंयाहुया भक्ति प्रेमसें श्रीराम कवचका पाठ कर्ताभया तब उसीसमय पाठके करेहोए अपने भक्तकी रक्षाके वास्ते दोनों भ्राता रामलक्ष्मण ॥ ६ श्याम गौरशरीर वाले वडे शूरवीर धनुष बाण धारे श्रीधर के समीपर पीछे २ चौरों कों भय देते होए चलते भये ॥ ७ परंतु श्रीधर नाहि तिनकों देखताभया सो चौर तिनकों देखके श्रीधर के साथ आए होए तिसके मारणे कों समर्थ नहिहोतेभये ॥८ ॥

दृष्ट्वातयोः सौकुमार्यंसौंदर्य्यंचाप्यनुत्तमं मो
हितानप्रहर्त्तुंवैशक्तास्तद्भयतः खलाः ॥ ९ ॥
अथश्रीधरविप्रोपिनिजग्रामंयदागतः यदातौ
भ्रातरावंतर्द्दधातेरामलक्ष्मणौ १० ॥ अथचौ
राअदृष्ट्वातौवीरौचापशरायुधौ विरहार्त्ताःश्री
धर यद्वार्य्यागत्यसमास्थिताः॥११ दृष्ट्वाता
नूश्रीधरोविप्रःपप्रच्छविनयान्वितः यूयंत्वद्य
समायातायेमयासहतेध्रुवम् १२ ॥

ओह चौर तिन दोनोंको सुकुमारताक्या कोमलता और अत्यु
त्तम सुंदरतादेखकर मोहित होए हुए और तिनके भयसें प्रहार
करने कों समर्थ नहिहोते भये ९ ॥ इससें उपरंत जिस समय
श्रीधरजी अपने ग्राममैं चले आये तद सो दोनों भ्राता राम
लक्ष्मण अंतर्धान होगए क्या छिपगए ॥ १० तिससें उपरंत
ओह चौर धनुष बाण धारी शूरवीरों कों नहि देखके विरह
कर पीडित श्रीधरके पीछे आय के उसीके द्वारपर वैठ गए
११ ॥ तद तिनकों श्रीधर ब्राह्मण द्वारमैं वैठयांकों देखकर ब
डी नम्रतासें युक्त पूछने लगा तुमतो ओहीहो जो आज मेरे
साथ आयेहो ॥ १२ ॥

किमत्रब्रूतकार्यंवोयदर्थमिहतिष्ठत निवसिष्य
थचेदद्यवसतात्रगृहेमम ॥१३॥ इत्युक्ताःश्रीध
रेणाथतेहिचौराइदंवचः नवस्तुमिच्छामवयंत्व
यासहसमागताः।१४मार्गेऽद्राक्षंचयौवीरौश्या
मगौरकलेवरौ चापवाणधरौधीरावागच्छंतौ
त्वयासह॥१५ तौवयंद्रष्टुमिच्छामःक्वगतौतौप्र
दर्शय दृष्ट्वातौसुंदरौवीरौगच्छामोद्यनसंशयः१६

इहां तुमारा क्या कामहै कि जिसवास्तै वैठेहो जेकर निवास
करनें की इच्छाहै तद घरमें चलो वैठो निवास करो॥१३॥ इस
प्रकार श्रीधरजीने कथन करे होए चौर ऐसे कहते भये हमकों
निवास करने की इच्छा नहिहै ओहीहैंहम जो तुमारे साथ आ
येहैं॥१४॥ मार्ग के वीच श्याम गौर कलेवर वाले जिनों दो
शूरवीरों कों देखते भये धनुष वाण धारेहुए तुमारे साथ आ
या कर्तेथे॥१५॥ उनकों हम देखने की इच्छा वालेहैं ओह क
हांगएहैं उनकों दिखा हमारेकों उन सुंदर स्वरूप वाले शूर
वीरों कों देखके हमचले जावेंगे ॥ १६ ॥

श्रुत्वातेषांवचोविप्राः श्रीधरः प्राहतान्पुनः
अहोकिंवदताश्चर्यंयूयंसत्यवचः किमु १७ के
यूयंकुत्रवोवेश्मकावावृत्तिरिहास्तिवः ब्रूतसत्यं
ततोहंतौदर्शयिष्याम्यसंशयम् ॥१८॥ इतिश्रु
त्वावचस्तस्यचौराः सत्यंवभाषिरे वयंविप्रकु
लेजाताधर्मकर्मविवर्जिताः ॥१९॥ स्थित्वात
स्मिन्वनेचौरवृत्त्यास्माकंतुजीवनं दृष्ट्वावयं
भवंतंतौसधनंहिंसितुंतदा ॥ २० ॥

तिनका वचन सुनके श्रीधर ब्राह्मण तिनकों फिर कहनेलगा एह बात तुम सत्य कहते हो वा झूठहै वडा आश्चर्यहै मैंने नहि देखेहैं तुमने कैसे देखे ॥ १७॥ तुमीं आप कौन हो तुमारा घर कहांहै क्या तुमारी उपजीवकाहै तुम सत्यकहो तदमैं दिखावताहां इसमैं संशय मतजानो ॥१८॥ ऐसा वचन तिसका सुनके ओह चौरे सत्यही कहते भये हेब्राह्मण हम ब्राह्मणों के घर जन्मे होएहैं और धर्म कर्म कर्के वर्जितहैं ॥१९॥ तिस वनके मध्यमैं निवास कर्तेहैं और चोर वृत्ति कर्के हमारी जीविकाहै हम सारेहि तुमारेकों धनके समेत देखकर मारणे कोंपीछेआयेथे॥२०॥

समायातास्तदादृष्ट्वावीरौचापशरायुधौ भीष
यंतौतुतावस्मांस्तद्भयेनवयंपुनः ॥ २१ ॥ नहिं
सितोभवांस्तौतुत्वयासहसमागतौ प्रविष्टौगृ
हांतरितौनदृष्टौतौपुनर्द्विज ॥२२॥ इतिश्रुत्वाव
चस्तेषांश्रीधरोविनयान्वितः प्रणम्यधन्यायू
यंतुइत्युवाचपुनःपुनः ॥ २३॥ ततस्तेतमपृच्छं
तकिमिदंभाषसेद्विज तौदर्शयमहाभागप्रति
ज्ञातंपुराद्विज ॥ २४ ॥

तिस समय धनुष वाण धारणे वाले वीर हमारे कों पीछे आउ
ते देख कर हमारेकों भय देते हुए पीछे चले हम तिनके भय
कर्के तुमारेकों मार नहि सकते भये ॥२१॥ तिनके भयसें हम
ने नहिमारा सो पीछे २ तुमारे घरमें प्रवेश कर्ते भये फिर न
हि देखे ॥ २२ ॥ एह वचन तिनका श्रवण कर श्रीधर नम्रता
कर युक्त तिनकों प्रणाम कर कहने लगा तुम धन्यहो २ ऐसे
वारं वार कहता भया ॥ २३ ॥ तद ओह पूछने लगे हेद्विज एह
क्या कहताहैं हे महाभाग तैंने पहले प्रतिज्ञा करीहै अव तूं
दिखा ॥ २४ ॥

श्रुत्वैतद्वचनंतेषांश्रीधरःप्राहतान्पुनः अहोन नोगृहेतौमेभ्रातरौरामलक्ष्मणौ ॥ २५॥ ज्ञात्वा तुभवतोहंवैहिंसितुमांसमागतान् तदाश्रीरा मकवचमपठंविपिनेभयात् ॥ २६ ॥ रक्षितुं मांसमायातौदेवौतौभक्तवत्सलौ ग्रामपर्यंतमा यातावंतर्द्धानंगतौतदा ॥ २७ ॥ धन्याभवंतःपु ण्यावैभाग्यवंतोनसंशयाः यैर्दृष्टौजगतांनाथौ लोचनैरामलक्ष्मणौ ॥ २८ ॥

एह वाक्य फिर तिनका श्रवण कर श्रीधरजी कहने लगे ओह राम लक्ष्मण दोनों भ्राता हैंन सो तो मेरे घर नहिहैं ॥ २५ ॥ जिस समय वनके मध्यमें तुम मेरे मारणे को पीछे आये तद तुमकों चौर जानके मैं उस समय श्रीराम कवच का पाठ कर्ता भया वडे भयसें ॥ २६ ॥ ओह भक्त वत्सल देवताग्राम पर्यंत मेरी रक्षाके लिये आए फिर वो दोनों भ्राता छिप गएहैं २७ तुसीं धन्यहो वडे पुण्य वान्हो भाग्यों वालेहो जिनोंनें इहां अपने नेत्रों करकें जगतक नाथ देखेहैं ॥ २८ ॥

इतिश्रुत्वावचस्तस्यश्रीधरस्यचतस्कराः अ
स्त्राणिचूर्णयित्वातेवैराग्यंपरमंययुः ॥ २९ ॥
नमस्कृत्यचतेविप्रंश्रीधरंविनयान्विताःयदृच्छ
यागताःसर्वेचिंतयंतस्तुतौमुदा ३० ॥ तेपिया
तामहाभक्ताश्चौराश्चपिकलौयुगे तस्माद्भक्ति
समंनास्तिनृणांसुखकरंभुवि ॥ ३१ ॥ इतिश्री
भगवद्भक्तिमाहात्म्ये स्तोत्रादिपाठमाहिमवर्ण
नम् ॥ ॥

इह तिसका वचन सुनकर सारेही चोर अपने अपने शस्त्रास्त्र तोड कर परम वैराग्यकों प्राप्त होते भये ॥ २९ और सो चौंर श्रीधर ब्राह्मण कों नम्रता कर युक्त प्रणाम कर स्तुतिकर्के तिन के स्वरूपकों चिंतन कर्ते २ अपनी २ इच्छा पूर्वक चले जात भये प्रसन्नता पूर्वक ॥ ३० ॥ सोऐसे निर्दय चौर कलियुगमें महाभक्त होजाते भये तिसकारणसें भक्तिके समान सुखकरनेका उपाय पृथिवी में और नाहिहै ॥ ३१ ॥ एहभगवानकी भक्तिकी महिमामें स्तोत्र पाठकी महिमाका वर्णन समाप्तहुया ॥

अथविष्णोः पूजाप्रशंसावर्णनं गारुडे मनो
धृतिर्धारणास्य तत्समाधिर्ब्रह्मणिस्थितिः अमूर्त्तौ
चेत्स्थिरानस्यात्ततोमूर्त्तिंविचिंतयेत् १ ॥ साच
तुर्विंशतिर्मूर्तिः शालिग्रामशिलास्थिता द्वार
कादिशिलासंस्थो ध्येयः पूज्योथवाहरिः २॥ वृ
हन्नारदीये हरिपादार्चनरताः प्रयांतिपरमंपद
मिति ३ पाद्मे नित्यार्चनंहरेर्येनपित्रर्थंमुनिस
त्तम गंगायांपिंडदानंतुकृतंतेनदिनेदिने ॥ ४ ॥

अब विष्णुकी पूजा करनेकी महिमा का वर्णन लि० ॥ गरुड
में कहाहै मनकों विषयों सें हटाय कर एक स्थानमैं निश्चल क
रना क्या स्थापन करना उसमनकी धृतिका नाम धारणाहै औ
र उसी मनकी निर्गुण ब्रह्ममैं स्थिति होवे क्या उसब्रह्ममैं निश्च
ल होकर लगे जद उसकों समाधि कहते हैं जेकर ओहोमन अ
मूर्त क्या निराकार ब्रह्ममैं स्थिरनहि होवे तद मूर्ति क्या है सा
कारब्रह्म तिसका चिंतनकरे १ सोसाकार ब्रह्मकीयां चौवीसमु
र्तियां शालिग्रामकी शिलामैं स्थितहैं और सोभगवान् द्वारका
सें आद लेकर जोउत्तम क्षेत्रहे तिनमैं उत्पन्न होई हुईआं शि
लाके मध्यमे स्थित हरि ध्यान करने योग्यहै अथवा पूजने के
योग्यहै ॥ २॥ वृहन्नारदीयमैंलि० ॥ हरिके पाद पद्म पूजनेमैं
प्रीति वाले पुरुष परम पदकों जातेहैं ॥ ३ ॥ पद्मपुराणमैंलि०
हेमुनियोंमैं श्रेष्ट पितरों निमित्त जिसने प्रतिदिन हरिका पूजन
कराहै तिस पुरुषने दिन २ मैंपिंडदान कराहै ॥ ४ ॥

पितृनुद्दिश्ययैः पूजाकेशवस्यकृतानरैः हित्वा तेनारकींपीडांदिवंयांतिपितामहाः । ५ ॥ स्कांदेकार्त्तिकमाहात्म्यंकेशवस्यचपूजाभिःकार्त्तिके स्नानमात्रतः नरकान्मुक्तिमायांतिपितरः सपितामहाः॥ ६ धन्यास्तेमानुषेलोकेकलिकालेविशेषतः येकुर्वंतिहरेः पूजांपित्रर्थंपूजयंतिये॥७ किंदत्तैर्वहुभिःपिंडैर्गयाश्राद्धैतथापुनः यैरर्चितो हरिर्भक्त्यापित्रर्थंचदिनेदिने ॥ ८ ॥

पितरोंका उद्देश करके जिन पुरुषोंने केशवजी की पूजाकरीहै तिसके पितर नरकोंकी पीडा त्याग कर स्वर्गकों जातेहैं ॥ ५ स्कंदके कार्त्तिक माहात्म्य में लिखाहे पितरोंके निमित्त कार्त्तिक महीने में केशव भगवान् जीकी पूजा करके और स्नान मात्र करके पितामहादियों के सहित पितर नरको सें मुक्तिकों प्राप्त होतेहैं ॥ ६ ॥ मनुष्यलोक मै ओह पुरुष धन्यहैं और कलिकाल मैं विशेष करके धन्यहैं जौनसे पुरुष हरिकी पितरों कें निमित्त पूजा कर्त्तेहैं ॥ ७ ॥ और पितरों के निमित्त विष्णुकी पूजादिन २ करीहैं तिनोंने तिनकों गयामैं वहुतपिंड दानों करके क्या प्रयोजनहै ॥ ८ ॥

नित्यार्चितोहरिर्येनपित्रर्थंमुनिसत्तम गयायां पिंडदानंचकृतंतेनदिनेदिने ॥ ९ ॥ यमुद्दिश्य हरेः पूजाक्रियतेमुनिपुंगव उद्धृत्यनरकात्तंतु नयेदात्मपदंहिसः ॥ १० ॥ क्रियायोगसारे अनेनविधिनाविप्रप्रतिमासंजनार्दनं संपूज्य भक्तिभावेनमुक्तिमाप्नोतिमानवः ॥ ११ ॥ किं वाधनेनविप्रर्षेपूजाया जगतीपतेः भक्तिसंतुष्ट चित्तस्यभक्तिरेवात्रकारणम् ॥ १२ ॥

हेमुनि सत्तम पितरों के निमित्त जिसने हरिकी पूजाकरीहैं तिसनेंतो दिन २ में गयामै पिंडदान करेहैन ॥ ९ ॥ हेंमुनिपुंगव जिसका उद्देश करकें हरिकी पूजा करीदीहै उसकों नरकों सें निकाल कर हरि अपने पदकों लेजातेहैं ॥ १० ॥ क्रियायोगसार में लिखाहै हेविप्र इसविधि करकें महीनेके महीने जनार्दन जोकों भक्ति भाव करकें पूजन कर पुरुष मुक्तिकों प्राप्त होताहै ॥ ११ हेविप्रर्षे जगतके पति विष्णुकों धनकेसाथ क्या प्रयोज नहै क्योंकि भक्ति करकें संतोष मन वाले कों भक्ति ही कारणहै ॥ १२ ॥

मूर्खोवदातिविष्णायविज्ञोवदातिविष्णवे द्वयोर
पिसमंपुण्यंभावग्राहीजनार्दनः १३विधिहीना
मपिश्रेष्ठांपूजांश्रीकमलापतेः यः कुर्य्याद्भक्ति
भावेनसोपिस्यात्केशवप्रियः १४ विधिज्ञो
विधिनाविष्णुमभ्यर्च्चयत्फलंलभेत् अविधि
ज्ञोपिविप्रेंद्रभक्तश्चेत्तत्फलंलभेत् १५ यस्य
वैयावतीभक्तिर्देवदेवेजनार्दने तावत्येवफलं
वाप्तिस्तस्यनास्त्यत्रसंशयः ॥ १६ ॥

मूर्ख पुरुष विष्णाय नमः ऐसें कहताहै और बुद्धिमान् पुरुष विष्णवे नम ऐसें कहताहै परंतु दोनोंको एक सम पुण्य होता है क्योंकि जनार्दन भगवान् भावको ग्रहण कर्ते हैंन क्या भक्तिमें दृष्टि रखतेहैं १३ और जो कोई पुरुष कमला लक्ष्मीके पति विष्णुकी पूजा विधि करकें हीन कर्ताहै और जो कोई विधि पूर्वक श्रेष्टपूजा कर्ताहै भक्ति प्रीति भाव करकें सो दोनोंही एक जैसे केशव जीको प्यारे होतेहैं १४ हेविप्रेंद्र शास्त्रवेत्ता विधिके जानन वाला जो पुरुष विधि करकें विष्णुको पूजन कर जौनसा फल लभताहै सोई फल भक्तिवाला पुरुष बिना विधानके पूजन कर उसी फलको लभताहै १५ और जिस पुरुषकी देव देव जनार्दनजीमें जितनीक भक्तिप्रीतिहोवे उतनेही फलोंकी तिसको प्राप्ति होतीहै इसमैं संशय नहिंहै १६

ज्ञानमूलंसैवभक्तिर्भक्तिमूलंजगत्पतिः पूजा
मोक्षद्रुमोत्पत्तौमूलमाराधनंहरेः १७ अणु
मात्रमपिप्राज्ञः श्रद्धयाकुरुतेयदि तदक्षयंभ
वेत्सर्वंश्रद्धाधीनाः क्रियाःशुभाः १८ भक्त्या
यः पूजयेद्विष्णुंवारमेकमपिद्विज स्वस्थानंद
दतेविष्णुर्यतोभक्तिवशोहरिः १९ अभक्त्या
याहरेः पूजाक्रियतेभुविमानवैः सापूजाब्राह्म
णश्रेष्ठपूजाकालेवहंतिवै ॥ २० ॥

ज्ञानका जो मूलहै सोई भक्तिहै और भक्ति का मूल जगत्प
ति विष्णुहै और पूजा जौनसीहै सो मोक्षका वृक्षहै तिस वृक्ष
की उत्पत्तिका जो मूलहै सो हरिका आराधनहै क्या सेवाहै
१७ प्राज्ञ जो वुद्धिमान् पुरुष ओह जेकर श्रद्धा कर्कें कुछ
थोडा भी करे तद सो कर्म नाश रहित होजाताहै क्योंकी स
म्पूर्ण जोक्रिया हैन सो श्रद्धाके हि अधीनहैं १८ हे द्विज
श्रद्धाप्रीति कर्कें विष्णुकों जो एक वारभी पूजताहै तिसकों
भगवान्जी स्वस्थान वैकुंठदेतेहैं जिसकारणसें भक्तिकेही वशी
भूत हरिहै १९ और विना भक्ति के जौनसी पूजा पृथिवीमें
हैं मनुष्योंने करीदीहै सो पूजा उसीं पूजाके समयही फलप्राप्त
कर्तीहै फिर नहि उसका फल होताहै ॥ २० ॥

पुनस्तत्रैव ॥ हरिंसंपूजयेद्भक्त्यापशुपाशवि
मोचनं सर्वेंतरायानश्यंतिमनः शुद्धिश्चजाय
ते ॥२१॥ संसारेस्मिन्महाघोरेमोहानिद्रासमा
कुले येहरेः शरणंयांतिकृतार्थास्तेनसंशयः
॥२२॥ यावन्नायातिमरणंयावन्नायातिवैजरा
यावन्नेंद्रियवैकल्यंतावदेवार्चयेद्धरिम् ॥२३॥स
र्वेतीर्थानियज्ञाश्चसर्वेवेदाश्चसत्तमाः नाराय
णार्चनस्यैतेकलांनार्हंतिषोडशीम् ॥ २४ ॥

फिर उसी बृहन्नारदीयमैं लिखाहै कया जो पुरुष पशुयों के पाश मुक्त करने वाले हरिकों भक्ति कर्के पूजन कर्ताहै तिसके सारे जो अंतरायहैं विघ्न सों नष्ट होजातेहैं और मन की शुद्धि होतीहै ॥ २१ ॥ मोह अज्ञान निद्रा आलस्य इनों कर्के भरे होए इस महा घोर संसारमें जो हरिकी शरणकों प्राप्तहोतेहैं सो कृतार्थ पुरुषहैं इसमें कुछ संशय नहिहै ॥ २२ जितना काल मरण का समय नहि आया और जितना काल वृद्धावस्था नहिं आई और जितनाकाल इंद्रियोंकी व्याकुलता कया शिथिलतानहिंहोई उतनाकाल पर्यंतहरिका पूजनकरे॥२३ हेसत्तमाःसारे तीर्थ और यज्ञ और सारे वेद इनके करनेका फल हरिके पूजनकी सोलहमी कलाकों नहिप्राप्तहोतेहैं ॥ २४ ॥

सत्यंसत्यंपुनःसत्यमुद्धृत्यभुजमुच्यते वेदाच्छा
स्त्रंपरंनास्तिनदेवः केशवात्परः ॥ २५ ॥ सत्यं
वच्मिहितंवच्मिसारंवच्मिपुनःपुनः॥ असारेचैव
संसारेसारंवैविष्णुपूजनम्२६योभारतभुवंप्राप्य
विष्णुपूजापरोभवेत् नतस्यसदृशोलोकेयथावै
रवितेजसः २७अद्यापिदेवायिच्छंतिजन्मभारत
भूतलेकदापुण्येनमहताप्राप्स्यामःपरमंपदम् २८

व्यास देवजी कथन करतेहैं संसारके लोकों सुनोमैं भुजा उठाय कर सभकों सुनावताहुं वार वार सत्य कहताहुं २ कहताहुं क्यों वेदशास्त्रतें परें और दूसरा शास्त्र नहि और केशव विष्णुजी सें परें श्रेष्ठ देवता कोई नहिहै २५ मैं सत्य कह ताहुं सभका हितप्यार कहताहुं और सार वाक्यकथाहै सत्य वचन सो कहताहुं सारसें विनासंसारमें विष्णुकी पूजा करनी सारहै ओर कुछ नहिहै ॥२६॥जो पुरुष भारत खंड की भूमि मेंप्रात होकर विष्णुकी पूजा करनेमें तत्पर होताहै तिसके स मान लोकमें दूसरा कोई नहिहे जैसें सूर्य के तेज समान और तेजकोई नहिहै।२७॥देखो कैसा भारत खंडहै जिसमें स्वर्गनिवा सी देवता आजतकरभी भारतभूमिमें जन्म धारणेकी इच्छा क रतेहैं क्या कहते हैंकी किससमय किसीवडे पुण्यके प्रभाव करकें हम भारत रूपी परम पदमें प्राप्त होवेंगे क्या जन्मेंगे ॥ २८ ॥

दानैर्विविधैर्यज्ञैस्तपोभिर्व्रीविधशायिनं पूज
यित्वाकदायामोयत्वेपश्यंतिसूरयः २१ पाद्मे
कार्त्तिकमाहात्म्येपृथुनारदसंवादेनेतिहासमव
तारयति पृथुरुवाच ॥ हरिपूजनमाहात्म्यंश्रो
तुमिच्छामहेमुने त्वत्तोधर्मभृतांश्रेष्ठसर्वमाख्या
हितत्त्वतः १ श्रीनारद उवाच परोपहास्यमुद्दिश्य
करोतिहरिपूजनम् सयातिवैष्णवंधामकिंपुनः
श्रद्धयान्वितः २ अत्राप्युदाहरंतीममितिहासंपु
रातनं धूम्रकेशोमहापापीयथालेभपरांगतिम् ३

ऐसी इच्छा स्वर्गके लोक कर्ते हैनको ऐसा कौन सा कोई दा
नहै और अनेक तरांके यज्ञोंकर्के तपों कर्के अब्धि शायि विष्णु
जीकों पूजन कर कद हम भारत खंड में जावेंगे जिसकों सू
रि विद्वान् लोकदेखतेहै ॥ २१ ॥ पद्मपुराणके कार्त्तिक माहा
त्म्यमें पृथुनारदके संवादकर्के इतिहास कथन कर्तेहैं ॥ पृथुराजा
नारदजीके प्रति कथन कर्ता भया हेमुने तुमारेसें अब हरिकी
पूजाका माहात्म्य श्रवण करने की इच्छा कर्ताहुं हेधर्म धारियो
मेंश्रेष्ठ तत्वसें मेरेप्रति आप कथनकरो १ ॥ नारदजी कथन क
र्ते भये हेराजन् कोई दूसरा जो हरिका पूजन कर्ता होए उस
के साथ हांसी करणे कों सामने उसके पूजाकी नकल करें
ओह पुरुष वैष्णव लोकमें प्राप्त होताहे औरजो विधि कर्के श्र
द्धा कर युक्त पूजन करे उसके वास्ते तो क्या कहना की किस
पदकों प्राप्त होताहै २ इसवातमें प्राचीन इतिहास कथनकर्ताहुं
जिसप्रकारधूम्रकेशनामा महापापी परम गतिकोप्राप्तहोताभया ३

कलिंदपर्वतेरम्येनाम्नादीर्घपुरंपुरा तत्रराजा तिधर्मात्मासुबाहुः सोमवंशजः॥ ४ ॥ ब्रह्मण्यो विष्णुभक्तश्चप्रजापालनतत्परः तस्यात्मजोधूम्रकेशोज्येष्ठोराजेंद्ररूपवान् ॥ ५ ॥ क्रीडन्सत्रालकैर्दुष्टैर्दुष्टसंगात्सुदुर्मतिःद्यूतक्रीडारतोनित्यं तदर्थंतस्करायते ॥ ६ ॥ गूढः पिवतिमद्यंच यौवनेमत्स्यमांसभुक् मार्गयन्नागरीर्नारीर्विटयूथसमन्वितः ॥ ७ ॥

रमणीक क्या सुंदर जो कलिंद नामा पर्वत तिसमें दीर्घपुर नाम कर्के एक नगर वसताथा उहां का राजा चंद्रवंशीवडा धर्मात्मा सुवाहु नाम कर्के राज्य कर्ता था॥ ४ ॥ कैसा सो राजा ब्राह्मणों कों मानने वाला विष्णु भगवानजी का भक्त और धर्मसें प्रजाके पालन कर्णें में तत्पर था हेराजेंद्र तिसका वडा पुत्र वडे सुंदर रूपवाला धूम्र केश नाम कर्के होता भया ॥ ५॥ सो दुष्टबुद्धि वाले वालकों के साथ क्रीडा कर्ता हुया दुष्टोंके संग वशथें दुष्ट वुद्धि सो भी द्यूत क्रीडामे आसक्त होता भया और तिसके निमित्त चोरी कर्त्ता भया ॥ ६ ॥ और गुप्त २ मद्यपान कर्ता भया युवा वस्थामे मत्स्यका मांस खाता भया और दुष्टो के यूथ कर युक्त नगर कियां स्त्रियां ढूंढता फिरताथा ॥ ७

दूतिकाभिःछलेनापिधनेनचवलेनच अगम्या
ब्राह्मणीश्चापिनात्यजत्काममोहितः ॥ ८ ॥
पिताश्रुत्वानुतत्कर्मप्रासनंताडनंवहु अकार्षी
न्नचतस्याभूत्स्वभावंकर्तुमन्यथा॥ ९॥कदाचि
त्कंदुकक्रीडांकुर्वतातेनकंदुकः प्रहितोराजभ
वनेप्रागात्तस्यनिरीक्षया ॥ १०॥ स्वयंपश्चाद्ग
तस्तंत्रनवोढाराजभोगिनी तद्विमातातुसात
स्वरूपदर्शनमोहिता ॥ ११ ॥

उसराजकुमारने नगरकीयां सुंदरस्त्रियां दूतियों के द्वाराजां छल
कर्के वलात्कारसें भी अगम्या व्राह्मणीयां इतर जातियाँ वालि
यां काम कर्के मोहित होएने किसीकों नहि त्यागया सभनोंके
साथ भोग विलास कर्ता भया ॥८॥ तद उसके पिताने दुष्ट कर्म
तिसका श्रवण कर वहुत तरोंकी भी ताडना करी तदभी उसके
स्त्रभाव के श्रेष्ट करने कों सामर्थ नहिं होताभया ॥९॥ ऐसेही
वालकोंके साथ खिन्नू खेलते हुए तिनोंके तद उस राजकुमा
रने खिन्नू ताडन कर्के वालको के पासे सुटेया तद सो खिन्नू
राजाके अंदर महलोंमें पडातो उसके देखने कों पीछे चला
गया ॥१०॥जद आप राजा का पुत्र उहां पीछे खिन्नुके लेने
कों गयातो उहां नवीन व्याही हुई राजाकी राणी उसकी
विमाता मात्रैयां सो उसकोंदेख कर मोहित होगई ॥ ११ ॥

दूरतः कंदुकंतस्मैदर्शयंतीपुनः पुनः साव्री
डहास्यभावेनप्रोवाचमधुराक्षरम्॥१२॥अत्रा
गत्यगृहाणेमंकंदुकंचधनंतथा यद्यदिच्छासित
त्संवदास्यामिनृपनंदन१३इत्येवमादिश्रुतिक
र्णरोचनंवाक्यंहितस्यामधुरंमहाविदः अंधीकृता
त्मावुवुधेनपातकंप्रविश्यगेहंद्रुतमालिलिंगता
म्१४॥ज्ञात्वाचनृपतिस्तस्यकर्मचात्यंतदारु
णंदेशान्निस्सारयामासस्नेहाद्वध्यंनचावधत्१५

मोहित होई हुई सो दूरसें तिसके तांई खिन्नू दिखातीहो
ई ठोह पडाहै २ और लज्जाके सहित हास्य कर युक्त भाव
कटाक्ष कर्के मधुर वाणीकर्के कहती भई ॥ १२ ॥ क्या हेरा
जकुमार इहांमेरेपास आके इस खिन्नूकों भी ले और जिस२
की इच्छा कर्ताहैं सोभीले धनभीले ॥ १३ ॥ इसतरांके वा
क्य कर्णों कों सुखदेने वाले तिसके मधुरवचन सुन २ के
सो महा विद काम देव कर अंध होएआ हुया आत्मा जिस
का सो पापकों नहि जानता हुया उसके घरमें प्रवेशकर शीघ्र
तिसकों लिंगन कर्ताभया ॥ १४ ॥ तद तिसका अत्यंतवडा
उग्रकर्म जानकरराजापिता उसको अपने देशसें निकालदेता
हुया क्योंकी सोवधकेयोग्यथा परंतु पुत्रके स्नेहसें नहिमारेया १५

निःसारितोगृहाद्राज्ञाधूम्रकेशोनृपात्मजः वनं विवेशव्रीडार्तोनिर्जनंफलमूलभुक् १६ दस्युकर्मरतोनित्यंपथिकान्हंतिलुंठति ततोतिराजभीत्याचदूरेचगहनेवनम् १७ गच्छन्वनांतरंप्राप्तोदैवाद्वृंदावनंशुभं तत्रावात्सीद्दिवाभात्यारात्रौमधुपुरींययौ १८ चौर्यार्थंददृशेचित्रंवेश्यासद्मसुशोभनं वेश्यांचरूपसंपन्नांदृष्ट्वातस्यांव्यषज्जत॥ १९॥ चौर्येणधनमानीयतस्यैदत्त्वागृहेवसन् दिवावृंदावनंयातिराजकुल्यैरलक्षितः २०

सोराज कुमार धूम्रकेश राजानें घरसें निकाला हुया लज्जाका मारा फलमूल खाने वाला वनमें प्रवेश कर्ताभया ॥ १६ ॥ उस निर्जन वनमें चोरीके करनेमें रत और रस्ते आउने वालेयों कों लूटता भया तो उसवनसें भी राजाके भयकर्के वडेदूर गहन वनमें चला गया ॥ १७ ॥ फिर ऐसेंही वनसें वनांतरोंमें जाता २ प्रारब्ध वशकर्के वृंदावनमें चलागया तहां जाकर दिन में तोवृंदावनमें रहना रातकों मथुराजीमें चले जाता भया १८ उहां एक चोरी करनेकों वडा सुंदर शोभायमान वेश्याका घर देखा और रूपयुक्त वेश्याको देखकर आसक्तमन वाला होता भया ॥ १९ ॥ तद फिर क्या करने लगा चोरीकर्के धन ल्यावना उसकों देके उहां उसके घर निवास कर्ता भया दिनमें वृंदावन चलेजाता भया परंतु राजाके कुल वालों कर्के अलक्षित क्या उनकों इस वातकी खवर नहि ॥ २० ॥

सिंधुदेशोद्भवोविप्रोनाम्नासत्यव्रतःसुधीः वि
रक्त इंद्रियार्थेभ्यस्त्यक्त्वापुत्रगृहादिकम्२१वृं
दावनेस्थितःकृष्णमारराधदिवानिशं निःस्वः
सत्यव्रतोविप्रोनिर्जनेऽव्यग्रमानसः ॥ २२ ॥
कार्त्तिकेपूजयामासप्रीत्यादामोदरंनृप तृतीये
ह्निसकृद्भुंक्तेपत्रमूलफ तथा ॥ २३ पूजयित्वा
हरिंस्तौतिप्रीत्यादामोदराभिधम् ॥ २४ ॥

उहां वृंदा वन के मध्यमें सिंधुदेशका जन्मा हुया ब्राह्मण वि
द्वान् सत्य व्रत नाम इंद्रियोकेसुखसें विरक्त होएश्रा हुया स्त्री पुत्र
गृह त्यागकर निवास कर्ताथा ॥ २१ ॥ वृंदावनमें स्थित होके
दिनरात कृष्णजीकों श्राराधन कर्ता भया कैसा था जिसके पा
स कुछ नहि ऐसा सो सत्यव्रत ब्राह्मण सावधान मनवाला नि
र्जन वनमें ॥ २२ ॥ कार्त्तिक महीने प्रीति भक्ति करके हेराजन्
दामोदरजीका पूजन कर्ता भया तो तीसरे २ दिन एक वार
फलमूल पत्र जो कुछमिल जावे सो भोजन करलेता भया २३
श्रौर नारायण का पूजन करके वडीप्रीतिसें दामोदरजीकी स्तुति
कर्ता भया सो स्तुति श्रव श्रागे कथन करेंगे ॥ २४ ॥

सत्यव्रतउवाच नमामीश्वरंसच्चिदानंदरूपंल
सत्कुंडलंगोकुलेभ्राजमानं यशोदाभियालूख
लेधावमानंपरामृष्टमत्यंततोदूतगोप्या. २५॥
दंतंमुहुर्नेत्रयुग्मंमृजंतकराम्भोजयुग्मेनसातंक
नेत्रं मुहु:श्वासकंपत्रिरेखांककंठस्थितंनौमिदा
मोदरंभक्तवंद्यम् ॥ २६ ॥ वरंदेवदेहीशमो
क्षावधिंवानचान्यंवृणेहंवरेशादपीह इदंतेवपु
र्नाथगोपालवालं सदामेमनस्याविरास्तांकि
मन्यैः ॥ २७ ॥

सत्य व्रत कथन कर्ता भया सच्चिदानंद रूपी ईश्वर कों नम
स्कार कर्ताहुं कैसेहैंन शोभाय मान कुंडल कानोंमें जिनके
और फिर कैसेहैंन गोकुलमें प्रकाशमान और यशोदाके भय
करकें ऊखलके साथ वंधे होए इधर उधर फिर रहे हैंन फिर
कैसेहैंन रोदन करते होए दोनों नेत्रों सें अश्रुपात दोनों हाथ
रूपीं कमलों करके भय वाले नेत्रों कों पूंछते भये फिर कैसे
हैंन वारं वार ऊचे श्वास लेतेभये कंपाय मानहैं फिर कैसेहैं
न तीन रेखाहैं कंठमैं जिनके और वैठे होए जो भक्ति करकें
वंदना करने योग्यदामोदर तिनकों नमस्कार कर्ताहां ॥२६ ॥
हेदेव हेईश मेरेकोंमोक्षकी अवधि पर्यंत वरदानकरो और वर
देने वालेयोंके स्वामी जोतुमहोतुमारेसें औरकुछ नहिमांगता
हुंहेनाथ एहजो गोपालों का वालक रूपीतुमारा देहसो सर्व
दा कालमेरे मनमें प्रगटहोवे और वरोंसें क्या प्रयोजनहै२७

इदंतेमुखांभोजमत्यंतनीलैर्वृतंकुंतलैः स्निग्ध
वक्रैश्चगोप्यामुहुश्चुंवितंविंवरक्ताधरंमे मन
स्याविरास्तामलंलक्षलाभैः २८ नमोदेवदामो
दरानंतविष्णोप्रसीदप्रभोदुःखजालाब्धिमग्नं
कृपादृष्टिवृष्ट्यातिदीनंचरक्षगृहाणेशमामज्ञमे
वाक्षिदृश्यम् २९ कुवेरात्मजौवृक्षमूर्तीचयद्व
त्वयामोचितौ भक्तिभाजौकृतौचतथाप्रेमभक्तिं
स्वकांमेप्रयच्छनमोक्षेग्रहोमेस्तिदामोदरेह ३० ॥

॥ हेभगवन् एह जो तुमारा मुख रूपी कमल जो अत्यंत काले वर्णके चिक्कणे और कुंडलों करयुक्त केशों कर्के परिवारेया हुया और विंव फलकी न्यांईहै अधरोष्ट जिनके और गोपीयशोदाने वारंवार चुंवन कराहुया सोमेरे मनमें प्रगटहोवे और लक्षलाभों कर्के क्या प्रयोजनहै परिपूर्णहै ॥ २८ ॥ हेदेव दामोदर हेअनत हेविष्णो हेप्रभोतुमारेकों नमस्कार होवे और दुःखोंके जाल रूपीसमुद्रमें डूवेहोएमेरेकों प्रसन्नहोकर कृपाकोदृष्टि रूपीवृष्टि कर्के अतिदीनअनाथजोमेंहां मेरेकों ग्रहण करो और हेईशअज्ञ मूर्खजामेंहांमेरेकों अपनेनेत्रों कर्के देखो २९ हेदामोदरजिस प्रकारकुवेरके दोनोंपुत्रवृक्षयोनीमेंप्राप्त होए हुएमुक्त करेहैं भक्तिकों सेवन वाले अपनीयोनीकों प्राप्त करेहैं इसी प्रकार अपनी प्रेमभक्ति मेरेकोंदानकरो मोक्षके होनेमें मेरा कोई हठ नहिहै की जरूर मेरेकों मोक्षही देओ ॥ ३०

नमस्तेसुदाम्नेस्फुरद्दीप्रधाम्ने तथोदरस्थविश्व
स्थधाम्नेनमस्ते नमोराधिकायैत्वदीयप्रिया
यैनमोनंतलीलायदेवायतुभ्यम् ॥ ३१ ॥ ना
रदउवाच सत्यव्रतद्विजस्तोत्रंश्रुत्वादामोदरो
हरिः विद्युल्लीलाचमत्कारोहृदयेशनकैरभूत्
॥ ३२ ॥ अंतर्हितेपितद्रूपेविकलोविललापह
इतस्ततोधावमानः पुनः पूजाकरोतिच ३३

और सुंदर देणे वाले के तांई और प्रकाशमान स्थान वाले तांई नमस्कार होवे और उदर में स्थित जगत के पालन करण वाले तांई नमस्कार होवे और अनंत है लीला जिसकी तिस विष्णुके तांई नमस्कार होवे ॥ ३१ ॥ नारदजी कथन कर्ते भये हे द्विज सत्य ब्रतके मुख सें इस प्रकारकी स्तुति अपनी सुन कर्के दामोदर हरि भगवान् सोतिसके हृदयमें विजलीकी लीलाके चमत्कारकी न्यांई धीरे जैसे उनका रूप प्रगट होता भया ॥ ३२ ॥ फिर जिस समय सोरूपाछिपगया तदसो सत्यव्रत व्याकुल होकर विलाप कर्ता भया और इधर उधर उस रूपके ढूंडने वास्ते दौडता हुया फिरपूजाको कर्ता भया ॥३३ ॥

दैवादत्रागतः सोपिधूम्रकेशोनृपात्मजः लीनो
ददर्शतत्पूजां वैष्णवींचातिकौतुकाम् ॥३४॥ रा
त्रावागत्यवेश्म यैहास्यप्रीतिरसप्रदः उवाच
तस्यवृत्तांतंसविस्तारमुदीक्षितम् ॥ ३५ ॥ त
थैवपूजामकरोत्कृत्वाचप्रतिमांमुदा तथैवना
मगृह्णीयात्सदासौदुष्टमानसः ॥ ३६ ॥एवंब
हुविधवाक्यंकृत्वाविप्रस्तुवेश्यया रेमेरात्रौत
दाप्रीतोधृतोराज्ञोधिकारिभिः ॥ ३७

उस समय प्रारब्धवश करके राजाकापुत्र धूम्रकेश उहांआय गया और लीन होकर कहीं तमासेंसें वैष्णवी पूजाकों देखता भया ॥३४॥ और रात्रिके समय अपने घरमें आय कर हास्य प्रीतिकें रस देनेवाला प्रसन्नता युक्त देखना जिसका ऐसा सो विस्तारके सहित तिसका वृत्तांत कथन कर्ता भया ॥ ३५ ॥ और जिसप्रकार उसने प्रतिमा वनाई हुईथी उसी प्रकार प्रतिमा भगवानकी वनाय कर वडे हर्षसें उसीतरांसें पूजा कर्ता भया और सो दुष्ट मनवाला उसकी तरांसें नाम ग्रहण कर्ता भया ॥ ३६ ॥ इस प्रकार तिस ब्राह्मणका वाक्यादि पूजाकीन कल वेश्याके साथ रात्रिके समय तिसके साथ प्रसन्नतासें रमण कर्ताभयातोउसमैं राजाके अधिकारियोंने पकडालिया३७

तस्यापराधंसंचिंत्यहतस्तैःस्वयमालयं नीतोदू
तैस्तदीयैस्तंददर्शपितृराट्स्वयम् ३८ ज्ञात्वा
तस्यचतत्कर्मकार्त्तिकेहरिपूजनम् मथुरायांप
रीहासव्याजेनाखिलधर्मभृत् ॥ ३९ ॥ उत्थाय
चासनात्तूर्णमातिथ्यंतस्यचाकरोत् अर्घ्यास
नादिसंपूज्यस्वदूतांस्तानगर्हत् ॥ ४० ॥

तो तिसका अपराध चिंतन कर्के सोराजाके अधिका
रीतिसकों ताडन कर्तेभये तदसो मृतहो जाता भया उसकों रा
जा धर्मके दूत पकड कर ले जाते भये तो उसकों पितरोंका
राजा धर्म आप देखता भया ॥ ३८ ॥ तिसका सोकर्म जान
कर्के क्या कार्तिक महीनेमें इसने पूजा करीहै मथुरामें वैठ
कर्के दूसरेकों हास्य करणेके वहाने कर्के उसकी महिमा जा
नकर ॥ ३९ ॥ सारे धर्मोंके जानणे वाला धर्मराजा शतावी
आसनसें उठकर्के तिसका आतिथ्य सत्कार कर्ता भया और
अर्घ्य आचमनादियोंसें पूजन कर पीछेसें दूतोंकों तिरस्कार
कर्ता भया ॥ ४० ॥

यमउवाच रेदूताभ्रष्टविज्ञानान्धिग्युष्माञ्छा
सनातिगान् यतोनिवारिताःकुर्युस्तन्मुहुर्ना
त्रसंशयः ॥ ४१ ॥ कतिधाशिक्षितायद्भक्त्या
ज्योविष्णुपरायणः नाहंतस्यप्रभुर्दंडेयूयंदंडचि
कीर्षवः ॥ ४२ ॥ इत्युक्त्वापुनरेवाहधूम्रकेशंस
धर्मराट् अहोकष्टंधूम्रकेशतवदुःखंमहत्कृतम्
४३ ॥ मथुरामागतस्यापिकृतदंडस्यपार्थिवैः
शुद्धस्यापितथाचोर्जेकृष्णपूजांप्रकुर्वतः ४४ ॥

धर्म राजा जी कथन करने लगे रे दूता भ्रष्ट होगयाहै ज्ञान जिनका एसे तुमारे कों धिकारहै जो तुममेरी आज्ञासें वाहर वर्त्ततेहो जिस वातसें तुमारे कों हटाआ सोई वात तुम वारं वार कर्ते हो इसमें संशय नहिहै ॥४१॥ कितनी वार तुमारे कों शिक्षा करी है की विष्णुके भक्त पुरुष कों त्यागना तिन कों दंड करने कों में समर्थ नहि हां तुम उनकों दंड कर्नेकी इच्छाकर्तेहो ॥४२ ॥ ऐसें तिन दूतों कों कह कर्के फिर धर्म राज धूम्र केश कों कहनेलगा हेधूम्र केश वडे क्लेशकी वातहै तेरेकों इनोंने वडा दुःख दियाहै ॥४३॥ मथुरामें तूं आया हुया राजाने तेरे कों दंड भी देदिया शुद्ध होए हुए तेरेकों और कार्त्तिक में कृष्ण जीकी पूजा कर्ते होएकों ॥ ४४ ॥

वैकुंठपुरवासाययोग्यस्यतवशासना मृत्युना
नयनंचापियुज्येतनकदाचन ॥ ४५ ॥ धूम्रके
शउवाच सर्वथाजन्मपापेनयुक्तस्यैवतुमेविभो
कथंशुद्धिःप्रजायेतकुतोवैकुंठयोग्यता ॥ ४६॥
महदाश्चर्यमुक्तंतमहान्मेनुग्रहःकृतःकस्यपुण्य
स्यमाहात्म्यात्पापोहंयामिसद्गतिम् ४७ ॥
नाहंवेद्मिवपुण्यस्यपापस्यापिचलक्षणंत्वंन्मु
खाच्छिन्नसंदेहस्ततोयास्यामिसद्गतिम् ४८

तेरेकोंजो तूं वैकुंठ में वास करनेके योग्यहैं ऐसेकों दंड देना और मृत्युने ल्यावना एह कदीं भी योग्य नहि हय ॥४५॥ इतना वाक्य सुन कर धूम्र केश कहने लगा हेविभो जन्मसें लेकर पाप करने वाला जो मैंहां मेरेको दंड होना योग्यहै पापीकी दंडसें विना शुद्धि कैसें होनी और वैकुंठ की योग्यता कैसे होनीहै ॥ ४६ ॥ एह तुमने वडे आश्चर्यकी वात कहीहै तुमने वडी कृपा करीहै परंतु में किस पुण्यके माहात्म्य सें पापी में सद्गति कों प्राप्त होआं ॥ ४७ ॥ और हेधर्मराज पुण्य पाप के लक्षण में नाहि जानता हुं किपुण्य वस्तु क्याहै और पाप क्याहै सोतुमारे मुखसें सुनकर निःसंदेह क्या विना संशय वाला होएआहुया सद्गतिकों प्राप्त होवांगा ४८ ॥

यमउवाचनमस्कृत्यारविंदाक्षंनारायणमनाम
यं धर्मंतेहंप्रवक्ष्यामिधूम्रकेशशृणुष्वतत् ४९
वेदप्रणिहितोधर्मोह्यधर्मस्तद्विपर्ययः तत्रापि
द्विविधोधर्मः प्रवृत्तोथनिवृत्तिकः॥५०॥ अर्था
नुरागिणः पुंसः प्रवृत्तोधर्मउच्यते अर्थानर्थदृ
शः पुंसोभक्तस्यचहरौतथा ॥ ५१ ॥ निवृत्तः
प्रोच्यतेसद्भिरधिकारिव्यवस्थया एकएवहि
धर्मोपिफलेच्छानियुतायुतः ॥ ५२ ॥

इतना वाक्य तिसके मुखका श्रवण कर यमजी कथन कर्तेभये निर्विकार जो कमलकी न्यांई नेत्रोंवाले नारायण तिनकों नमस्कार कर हे धूम्रकेश तेरेकों धर्मके लक्षण कथन कर्ताहुं सोतूं श्रवण कर ॥ ४९ ॥ जोवेदमें कथन कराहै सो धर्महै तिसवेदमें जिसका निषेधहै क्या अमुक कर्म नहि करणा सो अधर्म पापहै उनदोनोंके मध्यमें धर्मभी दोप्रकारका है एक प्रवृत्तिमार्गकाहै दूसरा निवृत्ति मार्गकाहै ॥ ५० ॥ जिस धर्मके करणेमें अर्थ प्रयोजनोंकी इच्छाहैं सो प्रवृत्त कहीदाहै और अर्थमें अनर्थ देखना परमार्थ चिंतनकरणासंसारकी इच्छानहि जिसमें और हरि भक्ति करणे वालेकों निवृत्तिधर्म किहाहैं ॥५१॥ सोनिवृत्ति धर्म सत्पुरुषोंने अधिकारि व्यवस्थाकर्के कहाहै और सोधर्म एकहीहै परंतु फलका ग्रहण इन कर्के दोप्रकार का कहा जाता है ॥ ५२ ॥

अथान्यच्छृणुसंगोप्यंप्रीत्यावक्ष्ये नृपात्मज
येनधर्मेणगोविंदेभक्तिर्जायेतवैष्णवी ॥ ५३ ॥
श्रवणंकीर्त्तनंविष्णोः स्मरणंपादसेवनं अर्चनं
वंदनंदास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥ ५४ ॥ इ
तिपुंसार्पिताविष्णौभक्तिश्चेन्नवलक्षणा यैःकृ
ताभक्तियुक्तैश्चतेमुक्तानात्रसंशयः ५५ श्रीवि
ष्णोःश्रवणेपरीक्षिदभवद्वैयासकिः कीर्त्तने प्र
ल्हादः स्मरणेतदंघ्रिभजनेलक्ष्मीःपृथुःपूजने

हेराजाके पुत्र अब और बडी गुप्तवात तेरेकोंकहताहुं सोतूंश्रव
ण कर जिस धर्मकेकरणे करके वैष्णवभिक्ति गोविंदजीमे उत्प
न्नहोतीहै ॥ ५३ ॥ सोंनौ प्रकारकी भक्तिहै मुख्यतोविष्णुके गु
णोंकों श्रवण करना फिरउनका कीर्तनकरणा स्मरण कर्णा भ
गवानजीके चरणों की सेवाकरनी पूजाकर्णी नमस्कारकर्णी उ
नका दास्यभावकर्णा उनकेसाथ सख्यक्या मैत्रिभाव रखना अ
पना आप निवेदन करना ॥ ५४ ॥ एह नौलक्षणों वालीभक्ति
विष्णुकी भक्ति पुरुषों में अर्पित करीहै क्या स्थापन करीहै
एहजिन पुरुषोंने करीहै भक्ति युक्त मनवालेयोंने सो मुक्तपुरुषहैं
इसमें संशय नहिहै ॥५५॥ विष्णुके गुणसुननेमें राजा परीक्षित
होता भया शुकदेवजी सुनाने वाले होते भये प्रल्हाद स्मरण
करनेवालाहोता भया और चरणों की सेवामें तत्पर लक्ष्मी
होती भई पूजा करनेमें पृथु राजा होता भया

अक्रूरस्त्वभिवंदनेकपिपति दास्येतुसख्येर्जु
नःसर्वस्वात्मनिवेदनेबलिरभूत्पर्याप्तिरेषांपरा
५६ परहास्यपरेणापिकृष्णपूजाफलंत्विदम्
नामाभासेनशुध्यंतिमहापातकिनोजनाः ५७
तस्यवैकुंठनाथस्यपूजावैभवताकृता यद्घोर
नरकार्हस्यवैकुंठनयनंह्यभूत् ५८ तस्मान्नृपा
त्मजश्रेयः परंकिंचिन्नविद्यते शंखिनश्चक्रि
णोभूत्वाशालग्रामशिलासुच ५९

वंदनामे अक्रूर सेवामें हनुमान सख्यिभावमें अर्जुन और सर्वस्व के सहितआत्म निवेदन करनेमें बलिराजा होता भया इनकी पर्याप्तिहोती क्या भगवान इनकेगति होते भये ॥ ५६ ॥ पराई पूजा देख कर्के हांसी करनेमें तत्पर होए हुएने कृष्ण पूजाका एह फलहै और उस परमेश्वरके नामलेने कर्के महा पापी पुरुष शुद्धहोजातेहैं ॥ ५७ ॥ तैनेतो तिस वैकुंठ के स्वामीकी पूजा करीहैं जो पुरुष घोर नरकों के योग्य होताहै सो वैकुंठमें चला जाताहै ॥ ५८ ॥ तिस कारणसें हे राजके पुत्र परमेश्वरसें विना और कुछ कही कल्याण नहि प्रतीत होती है जो पुरुष शंख चक्रके चिन्हों वाला होकर शालिग्रामकी शिलामें ॥ ५९ ॥

समभ्यर्च्यंहरिंयांतिनरास्तद्वैष्णवंपदं अथ
वासर्वदापूज्योवासुदेवोमुमुक्षुभिः ॥ ६० ॥
शालग्रामशिलाचक्रेवज्रकीटविनिर्मिते अधि
ष्ठानंहितद्विष्णोःसर्वपापप्रणाशनम् ६१ सर्व
पुण्यप्रदंचैवसर्वेषामपिमुक्तिदं नरकंगर्भवा
संचतिर्यक्त्वंकृमियोनितां नयातिनृपपापोपि
शालग्रामाच्युतार्चकः ६२ इतिश्रीपद्मपुराणे
कार्तिकमाहात्म्येधूम्रकेशोपाख्यानेसमाप्तम्

नारायणजीका पूजनकर्तेहैं सो पुरुष वैष्णवपदकों प्राप्त होतेहैं अथवा जो मोक्षकी इच्छावालेहैं तिनोंने वासुदेवजीका पूजन करना ६० और वज्र नामक कीडे कर्के वनाए हुएजो शालिग्रामके शिला चक्र तिनमें सम्पूर्ण पापोंके नाश करने वालातिस विष्णुका अधिष्टानहै ॥ ६१ ॥ और सभतरांके पुण्य देने वालाहै सारे पापों के नाश करने वाला और सभनों कों मोक्ष देनें वालाहै और जो कोई पुरुष शालिग्रामकी शिलामें अच्युत भगवान् जीका पूजन कर्ताहै सो नरकों में नहि जाता है फिर उसका गर्भमें वास नहि होताहै और तिर्यक् योनिजो पशुपंछियो की तिसमें नहि जन्मताहै ॥ ६२ ॥ एह पद्मपुराण के कार्त्तिक माहात्म्यमें धूम्रकेशका उपाख्यान समाप्त हु ॥

अथभक्तमालायांसेतिहासं पूजामाहात्म्यमाह
अथान्यत्संप्रवक्ष्यामिपूजामाहात्म्यमुत्तमम् ॥
शृण्वतांप्रीतिजनकंकृष्णभक्तिप्रदायकम् १ ए
कारतिमतीनाम्नाब्राह्मणीदाक्षिणात्यजा पति
पुत्रविहीनासाधनिनीधर्मवत्सला ॥ २ ॥ क
दाचिद्भवनेतस्याः सायंकालेसमागतः साधुः
श्रीकृष्णभक्तश्चवालगोविंदपूजकः ॥ ३ ॥ तंद
ष्ट्वासासमुत्थायहर्षिताप्रणनामच पाद्यमाच
मनीयंचपानीयमुदकंशुचि ॥ ४ ॥

अब भक्तमालामें इतिहासके सहित पूजाका माहात्म्य कहते हैं ॥ अब और उत्तम पूजाका माहात्म्य कथन कर्ताहुं जोसुनने वालेयोंकों प्रीति उत्पन्न करने वाला और श्रीकृष्णमें भक्तिदेने वालाहै ॥ १ ॥ एक दाक्षिणीयोंके वंशमें ब्राह्मणी रतिमति नाम करकें प्रसिद्ध पतिपुत्रादियोंकररहित वहुत धनवाली और धर्म करनेमें प्रीति वाली निवास कर्तीथी ॥ २ ॥ एकदिन सायंकालके समय तिसके घर वालगोविंद जीका पुजारी श्रीकृष्ण जीका भक्त साधु एक आवता भया ॥ ३ ॥ तिसकों देखकर सोवड़े हर्ष आनंदसे उठ खडी होकर तिसकों प्रणाम कर्तीभई और पाद्य आचमन अर्घ पवित्र जल एह देतीभई ॥ ४ ॥

अन्नंस्वादुददौत हर्षाद्द्विजाय।तिथयेमुदा गृही त्वासर्वमातिथ्यंविप्रः संध्यामुपास्तवान् ५ ॥ वालगोविंदप्रतिमांवहिःसंस्थाप्यतत्पुरः निवेद्यसर्वंस्तुत्वाचक्षणंनेत्रेनिमील्यच ॥ ६ ॥ भोजयित्वाथसंस्थाप्यस्वयंहिवुभुजेपुनः रतिमती ददर्शाथवालगोविंदमद्भुतम् ॥ ७ ॥ विप्रंप्राहातिभक्त्यासाकृतांजलिपुटासती अहोब्रह्मकुलेजाता पतिपुत्रविवर्जिता ॥ ८ ॥

और तिस अतिथीकों स्वाददार अन्न वडे हर्षसें देती भई सो विप्र तिससें आतिथ्य सत्कार ग्रहण कर सायंकालकी संध्या कर्ता भया ॥ ५ ॥ फिर तिसने भोजन वनाय करवाल गोविंद जीकी मूर्ति वाहर निकाल कर राखी तिसकोअन्न वनयाहुया निवेदनकर्के क्षण मात्र नेत्र मीट कर फिर स्तुति कर्ता भया ६ इस तरां सें तिनकों भोजन खुलाय कर तिनकों किनारे स्थापन करा पीछे सें आप भोजन कर्ता भया तद उस समय सो रतिमती व्राह्मणी अद्भुत वाल गोविंदजीकी मूर्तिकों देखती भई ॥ ७ ॥ फिर वडी भक्ति प्रेम कर्के व्राह्मणकों कहनेलगी हाथ जोड कर हे साधो में व्राह्मणोंके घर जन्मी हुईयां औरना मेरा पतिहै नापुत्रहै वांधवों कर्के रहितहां ॥ ८ ॥

नजानेकांगतिंयास्मिकथंस्यात्सद्गतिर्मम अद्या
वधिचपापानि जानंत्यानकृतानिभोः॥ ९ ॥
धर्म्मंचापिनवाकार्षंपतिपुत्रशुचार्द्दिता अद्यैव
वालगोविंदंदृष्ट्वामेमतिरुत्थिता ॥ १० ॥ ए
तादृशमसुन्देवङ्कारयित्वास्ववेश्मनि संस्था
प्यपूजयिष्यामिइत्याज्ञांदेहिसुव्रत ॥ ११ ॥
तन्मन्त्रन्देहिमेविप्रपूजोपकरणम्वद शिल्पिन
ञ्चसमाहूयकारयामिगृहोत्तमम् ॥ १२ ॥

हेब्राह्मण आजतकर मेने जान करके पापभी नहि करेहैं परंतु तदभी नहि जानतीहां की किस गति कों प्राप्त होवांगी औ र किस प्रकार मेरी सद्गति होवेगी ॥ ९ ॥ और पति पुत्र के शोक कर पीडित होई दी मैंने धर्म्म भी नहि कराहै पर आज इस तुमारी बाल गोविंदजी की प्रतिमा देख कर मेरी वुद्धि उत्पन्न होईहै की में भी कुछ धर्म करां ॥ १० ॥ सो क्या इच्छा है की ऐसी ही इस देवताकी मूर्त्ति वनायकर अ पने घरमें स्थापन करकें पूजन करेयां करूं हेसुव्रत एह मेरे तां ई आज्ञा देओ ॥ ११ ॥ और हेविप्र तिनकामंत्र मेरे कों देओ और पूजाके उपकरण क्या सामग्रियां कहो में कारीगर कों वुलाय कर उत्तम घर वनवातीहुं ॥ १२ ॥

तावत्त्वयात्रवस्तव्यंप्रसन्नोभवसुव्रत इत्युक्तो
ब्राह्मणःसोथप्राहतांब्राह्मणप्रियाम् ॥ १३ पूर्व
कर्म्मविपाकेनविधवात्वमपुत्रिणी इदानींत्वंतु
धन्यासियस्यास्तेमतिरीदृशी ॥ १४ ॥ दृष्ट्
वेमंवालगोविंदंजातातेभक्तिरुत्तमा नमंत्रोनैव
सामग्रीभक्त्यातुष्यतिवैहरिः ॥ १५ ॥ सुप्रस
न्नोददातीष्टंप्रेमरज्जुनियंत्रितः श्रीकृष्णायनमो
स्त्वेतद्गृहाणमंत्रमुत्तमम् ॥ १६ ॥

हेश्रेष्ट व्रतवाले ब्राह्मण उतना काल तुम मेरे घरमें रहो जित
ना काल मूर्त्ति और इनका मंदिर पूजाके वर्तन नहि वने है
इस तरां सें कथन करा हुया ब्राह्मण तिस स्त्रीकों कहने लगा
॥ १३ ॥ पूर्व जन्मके करे होए कर्मों के फल कर्के तूं विध
वा और विना पुत्रके हुई हैं अव इस समय तूं धन्यहैं जिस
की परमेश्वर में ऐसी वुद्धि हुई है भक्ति करणे में ॥ १४ ॥ इ
स वाल गोविंद जीकों देखकर तेरेकों उत्तम भक्ति उत्पन्न
होई है इसभक्ति में ना मंत्र है ना सामग्री है नारायण ह
रि तो केवल भक्ति प्रीति कर्के प्रसन्न होते हैं ॥ १५ ॥ और
सो भगवान् प्रेम भक्ति रूपी रस्सीके साथ वंधे होए अभिमत
फल देते हैं इस वास्ते श्रीकृष्णायनमः एह जो मंत्र है इसकों
ग्रहण कर इसीसें सभी कुछ सिद्ध होवेगा ॥ १६ ॥

पतिपुत्रेयथाप्रेमतथास्याद्यदिकेशवे तदाशी
घ्रंसगोविंदोददात्यभिमतंप्रभुः ॥१७॥ ताव
त्तिष्ठामित्वद्भक्त्याशीघ्रमानयशिल्पिनं एवमु
क्तारतिमतीशीघ्रमाहूयशिल्पिनंम् ॥१८॥ द
र्शयामाससगोविंदप्रतिमामीदृशींकुरु इत्याज्ञा
प्यद्विजंचाथतर्पयित्वाधनांबरैः १९ ॥ विसस
र्जतदाविप्रंगोविंदंहृदिसंस्मरन् गतेविप्रेर
तिमतीगोविंदप्रतिमांशुभाम् ॥ २० ॥

ब्राह्मण कहने लगा हेसुव्रते जैसा प्रेम पति पुत्रमें होताहै ऐ
सा कदी केशव भगवानजीमें होवे तद शीघ्र गोविंदजी मन
कर्के चाहना करे होए फलदेतेहैं ॥ १७॥ अछातेरी इच्छा क
र्के उतना काल तेरेघरमें वेठताहुं तेरीभक्ति कर्के परंतुशीघ्रका
रीगर कों वुलाकरल्या ऐसेतिसने कथन करी होई रतिमतीशी
घ्रतासें शिल्पी क्या कारीगिरकों वुलायकरल्याई १८॥ प्रतिमा
कृष्णजीकी दिखाय कर कहने लगी ऐसी एक प्रतिमा मेरेकों
भी वनाके त्यार करदे ऐसे तिसकों आज्ञा कर्के पीछेसें तिसद्वि
जकों धनवस्त्रादियोंके साथप्रसन्न करतीभई ॥ १९ ॥ फिर ति
स समय उस ब्राह्मणकों विदाकर्ती भई पीछेंसें गए हुए तिस
के गोविंदजीकों हृदयमें स्मरण कर्ती हुई ॥ २० ॥

स्थापयामासतद्भक्त्यामहोत्सवपुरस्सरं एकपु
त्रेवजननीतंबालमिवसर्वदा ॥ २१ ॥ कर्मणा
मनसाबाचामुदापरिचचारसा विभीतकफलैः
सार्धमरिष्टफलमालया॥२२॥अलंचकारगोविं
दंदृष्टिदोषभयेनसा सर्वालंकरणैर्युक्तंमुखंकज्ज
ललांछितम् ॥२३॥ दृष्टिदोषोपशांत्यर्थंमातेव
पुत्रवत्सला चकारशीतसमयेददावुष्णंतथौष
धम् ॥ २४ ॥

फिरसों अपने घरमें सुंदर जो मूर्ति गोविंदजीकी तिसकों वडेउ
त्सव कर्के स्थापन कर पीछेसेंऐसा प्रेम तिसमें कर्तीभई जैसेए
कपुत्रकी माता सर्वदाकाल प्रेमकर्तीहै ऐसेबालककी न्याईं २१
और मनवाणी कर्म कर्के तिसकी दिन रात सेवा कर्तीभई और
विभीतक फलोंके साथअरिष्टफलोंकीमालाके साथ २२गोविंद
जीकी प्रतिमाकों अलंकार युक्त कर्तीभई दृष्टिदोषके भय कर्के
की इनकों दृष्टि किसीकी नहि लगे और सारे अलंकारोंकेयुक्त
तिस मूर्त्तिकों कर्के मुखतिसका कज्जलकर युक्त कर्तीभई २३ दृ
ष्टि दोषकी शांतिके लिये किसीकी मूख नजरनाहिलगजावे ऐसें
पुत्रहै प्यारा जिसकों ऐसी माताकी न्यांई और शीत कालकेस
मय रातको गर्मीकें करने वालियां उोषधीयां देतीभई ॥२४

रात्रौ।सातंतुगोविंदंसंस्थाप्यवालवद्हृदि आ
च्छाद्यांचलवस्त्रेणजातासुष्वापसुव्रता २५ ॥
मृत्काष्ठनिर्मितंचैववालक्रीडनकंतुसा तस्या
ग्रेस्थापयित्वासाक्रीडंतीचजहर्षच २६ प्रा
तः कालादनंचैवतैलाभ्यंगादिकंतथा आह्ला
दभाषणंचापिकुर्वंतीचमुमोदह ॥ २७ ॥ एवं
तुपुत्रबुद्ध्यासापूजयंतीजगत्पतिं गतेकतिपये
कालेशृण्वंतीचरितंहरेः ॥ २८ ॥

सो ब्रह्मणीरातके समय और वालकोंकी न्यांई हृदय पर स्था
पन कर्के गोविंद जीकों अपने वस्त्रके साथ आछादन कर
शयन करावती भई २५ और मिट्टी के काष्टके वने होए
वालकों के लिये खिडावने सो तिनके आगे स्थापन कर क्री
डा कर्तीहोई वडे आनंदकों प्राप्तहोतीभई ॥ २६ ॥ और प्रा
तः काल के समय भोजन देना तेल मर्दन कर्के स्नान करना
आल्हाद आनंदके भाषण करने तथा लोरीयां देनीयां इसतरह
सें कर्ती होई हर्ष आनंद कों प्राप्त होतीभई ॥ २७ ॥ इस
विधिसें पुत्रकी भावना रखकर जगत्पति का पूजन कर्ती भई
इसी तरां सें कितनाक काल व्यतीत होए पीछे हरिके चरित्र
श्रवण कर्ती भई ॥ २८ ॥

श्रीमद्भागवतंनामपुराणंद्विजविश्रुतं नवनी
तस्यचौर्य्यंतुयशोदायाविभीषिका ॥ २९ प
लायनंभगवतोमातुश्चाप्यनुधावनंश्रीकृष्णग्र
हणंचैवमात्राताडनमेवच ॥ ३० ॥ मृद्भक्षणंत
तःश्रुत्व पुत्रस्नेहेनतत्रसा ततोयशोदयादाम्ना
बद्धः कृष्णोदृढंरुषा ॥ ३१ ॥ श्रुत्वात्वेवंरति
मतीहाहा कृष्णेतिभाषिणी मूर्छितापतिताभू
मौप्राणांस्तत्याजतत्क्षणात् ॥ ३२ ॥

श्रीमद्भागवत नाम पुराण ब्राह्मण कर्के कथन कराहुया जिसमें एह कथा आईकी श्रीकृष्णजीने माखनकी चोरी करियशोदा ने उनकों भयदिया ॥ २९ ॥ उहांसें भगवानजी भाग गए तो माता यशोदा पीछेसें इनके पकडने कों दौडी श्रीकृष्णजीकों पकड कर ताडन कराक्या उनकों मारिया ॥ ३० ॥ पीछे सें मिट्टी खाई एह वात सुनकर पुत्रस्नेह कर्के यशोदा तहां जा कर बडे क्रोधकों प्राप्त होकर रस्सीसें बांधतीभई ॥ ३१ ॥ इस प्रकार रतिमती सुनकर हाहाकार कर कृष्ण २ कर्ती २ मूर्छा कों प्राप्त होकर भूमिपर डिग पडी और तत्क्षण प्राणों कों त्याग देती भई ॥ ३२ ॥

ततोहाहाकृता:सर्वेजनास्तत्रसमागताः कश्चि
दुत्थापयामासनोत्तस्थौसामृतायतः ३३ ॥
कृष्णप्रेमवशादेषामृतारतिमतीपुनः जगामकृ
ष्णसान्निध्यंयशोदेवनसंशयः ३४ ॥ नयोगो
नतपोध्यानंनज्ञानंनापिसत्क्रिया प्रेम्णैवरति
मतीमुक्ताभक्तेर्माहात्म्यतोध्रुवम् ॥ ३५ ॥ व
लिगेहेगतोविष्णुर्हेतुवामनरूपधृक् तंदृष्ट्वा
वलिपुत्रीसामनस्येवमचिंतयत् ॥ ३६ ॥

तिससे उपरंत हा हा कार कर्कै सारेही लोक तहां चले आ ये और कोई तो तिस कों पडी होई कों उठावता भया तद सो मरी होई थी नहि उठती भई सारेयों ने मिलकर पश्चात्ताप किया ॥ ३३ ॥ कहने लगे श्रीकृष्णजी के प्रे म वशथें एह रति मती मरगई है और यशोदाकी न्यांई श्री कृष्णजी की समी पता कों प्राप्त होगई है इसमें संशय नहि है ॥ ३४ ॥ देखो ऐसा न योगहै तपहै ध्यान नहिहै न ज्ञान भी ऐसा है न ऐसी कोई श्रेष्ट क्रिया है प्रत्यक्ष देखो प्रेम कर्कै रति मती भक्ति के माहात्म्य सें निश्चय कर मुक्त होगई है ३५ ॥ पूर्वं एक समय वलि राजा के घर वामन का रूप धारण कर विष्णु चलेगए तों उहां वलि की पुत्री तिनकों दे ख कर मनमें ऐसे चिंतन कर्ती भई ॥ ३६ ॥

अहोतिसुंदरोवालोधन्यामातानसंशयःयद्येकं
तनयोमेस्यात्पाययिष्यामिस्वंस्तनम् ॥३७॥
कृतार्थास्यामितिमुदासंकल्पंमनसाकृतम् सै
वागत्यब्रजेजातापूतनाबालघातिनी ३८॥ पा
ययित्वास्तनंद्वेषाद्यशोदागतिमापसा एवंद्वेषा
दपिगतामुक्तिंराक्षसकन्यका ॥ ३९ ॥ किंपुन
र्ब्राह्मणीपुण्याकृष्णपूजापरायणा ॥ ४० इति
श्रीभगद्भक्तिमाहात्म्येरतिमतीचरितंसमाप्तम्

ऐसा सुंदर जिसका एह वालक सो इसकी माता धन्यहै इसमें संशय कुछ नहिहै जेकर ऐसा पुत्रमेरा भी होवे तद अपना स्तन पानमें भी करावां ३७ फिर कृतार्थ होजातीहां ऐसा संकल्प मन कर्के करा तिसने सो मृत होंई हुई आके व्रज भूमिमें वालक मारने वाली पुतना हुई ॥ ३८ ॥ तो श्रीकृष्ण जी कों द्वेष भाव सें स्तनपान करा कर यशोदाकी गति कों प्राप्तहोजाती भई इसप्रकारके द्वेष भाव सें दैत्यकी पुत्री मुक्तिकों प्राप्त होगई ॥ ३९ ॥ तो एहतो ब्राह्मणीथी पुत्र भाव कर्के श्रीकृष्ण जीकी पूजा में तत्पर रहती थी इसकी क्या वात कहनीहै ॥ ४० ॥ एह भगवद् भक्ति माहात्म्यमें रति मती ब्राह्मणी का चरित्र समाप्तहुया है

अथहरेरलंकारदानेमाहात्म्यम् नंदिपुराणेअ
लंकारंचयोदद्याद्विप्रायचसुरायच सोमलोकेर
मित्वातुविष्णुलोकेमहीयते ॥ १ ॥ स्कांदे स्व
शक्त्यादेवदेवंचभूषणैर्भूषयंतिये हेमजैरत्न
जैःशुभ्रैर्मणिजैरपिशोभनैः॥२॥ तेषांफलंशता
नंदोनरुद्रोवासवादयः जानंतिमुनयोनैववर्ज
यित्वातुमाधवम् ॥ ३ ॥ पद्मपुराणे दद्यादाभ
रणंविष्णोरपूर्वंरत्नमुत्तमं सदाकल्पांतवसतिः
सोत्यर्थंविष्णुवेश्मनि ॥ ४ ॥

अब हरिकों भूषण देनेकी महिमा लिखतेहैं नंदिपुराणमें कहा है जोकोई पुरुष हरिके तांई अथवा ब्राह्मणके तांई भूषण देताहै सो पुरुष चंद्रमाके लोकमें सुख भोगकर विष्णुलोक में महिमाकों प्राप्तहोताहै ॥ १ ॥ स्कंद पुराणमें कहाहै जोकोई पुरुष स्त्रीदेवतयोंके देवता विष्णुकों स्वर्णके भूषणों करके अथवा रत्नों करके जडे होएओं कों और श्वेत रंगकी मणियोंसें शोभायमान भूषणोंके साथ भूषित कर्तेहैं ॥ २ ॥ तिनका फल शतानंद जोविष्णुजीहैं रुद्र महादेवजी और इंद्रादि देवता और मुनिलोक इनमेंसें विना माधवजीके और कोई नहि जानताहै ॥ ३ ॥ पद्मपुराणमें कहाहै जो पुरुष विष्णु भगवानजीकों अपूर्व उत्तम रत्नों करके जडित भूषण देताहै सो सदा काल कल्प पर्यंत निश्चय करके विष्णु लोकमें बसताहै ४

नरसिंहपुराणे सुवर्णाभरणैर्दिव्यैर्हारकेयूरकुंडलैः मुकुटैःकटकाद्यैस्तुयोविष्णुंपूजयेन्नरः। ५ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वाभरणभूषितः वसेद्विष्णुपुरेश्रीमान्यावदिंद्राश्चतुर्दश ६ भक्तमालायांहरेरलंकारदाने इतिहाससमाह अथान्यत्संप्रवक्ष्यामिभक्तेर्माहात्म्यमुत्तमं यस्यश्रवणमात्रेणकृष्णेभक्तिर्दृढाभवेत् ॥ ७ ॥ श्रीरंगनाथोयश्चास्तिदक्षिणेतीवविश्रुतः तत्समीपेवभूवैकावेश्याकामकलावती ॥ ८ ॥

नरसिंह पुराणमें कहाहै सुवर्णके भूषणोंकरके और दिव्यजोहारकेयूरकुंडलहैं मुकुट कटकइत्यादिभूषणोंकरके जोपुरुषविष्णुको पूजताहै ॥५॥ सोसारे पापोंकरके मुक्त होकर सारेभूषणों करके शोभायमान श्रीकर युक्त चोदांइंद्रोंकी अवधि पर्यंत विष्णुलोकमेनिवास कर्ताहै ॥ ६ भक्तमालामे विष्णुकों भूषण देनेका इतिहास कहाहै ॥ अब और उत्तम भक्तिका माहात्म्य कहतेहैं जिसके सुननेमात्र करके श्रीकृष्णजीमें दृढनिश्चय भक्तिहोतीहै ॥ ७ ॥ दक्षिणदेशमें जोनसे बडे प्रसिद्ध श्रीरंग नाथजीहैं तिनके समीप काम कलाके जानने वाली एक वेश्या निवास कर्तीथी ॥ ८ ॥

गीतनृत्यादिकुशलामोहिनीसर्वदेहिनां धना
ढ्यातिथिभक्ताचसाधुसेवापरायणा ॥ ९ ॥ ए
कदातद्गृहद्वारंदृष्ट्वास्फीतंसुसंस्कृतं महानुभा
वश्चैकस्तुविद्वान् धर्मात्कुलोद्विजः ॥ १० ॥ ब्रा
ह्मणाश्रमइत्येवंज्ञात्वातत्रोपविष्टवान् अथ
दृष्ट्वाथसावेश्याद्विजंविद्वांसमागतम् ॥ ११ ॥
रत्नानिस्वर्णमुद्राश्चकृत्वारजतभाजने ब्राह्म
णाग्रेनिधायाथकृतांजलिपुटास्थिता ॥ १२ ॥

कैसी सो वेश्याथी गाने नाचने में वडी कुशल थी और सभ
नों देहियों कों मोहन करने वाली और वडी धर्मवाली अ
भ्यागतोंकी भक्तिनी साधुयोंकीसेवामें तत्पर ॥ ९ ॥ एक समय
तिस के घरके वाहर की डेउडी वडी सुंदर वनी होई ब्राह्म
णोंके आश्रम की न्यांई प्रसिद्ध देखकर वडे प्रभाव वाला ध
र्मात्मा एक विद्वान् ॥ १० ॥ ब्राह्मणोंका घर मान कर्के तिस
के अंदरमें चला जाता भया तद तिसकों वेश्याने देखा वि
द्वान् पुरुष कोई है ऐसा जानकर क्या कर्तीभई ॥ ११ ॥
कि रत्न और स्वर्णकीयां मुद्रां चांदीके थालमें पायकर ब्राह्मण
केआगे रखदिये और प्रणाम कर्के हाथजोडकर वैठगई ॥ १२

अथविप्रस्तुतांदृष्ट्वाविनीतांददतींधनं उवाच कासिकल्याणिकस्यत्वंदयितावद ॥ १३ ॥ श्रुत्वेदंवचनंतस्यवारनारीवचोब्रवीत् स्वामिन्नहंतुदुर्भाग्यावेश्यास्मिन्नगरेस्थिता ॥ १४ ॥ इतिश्रुत्वावचस्तस्यामहाभागवतोब्रवीत् बाले नाहंतवार्हामिधनमेतन्नसंशयः ॥ १५ ॥ इत्थमेवहितुष्टोस्मीत्युक्त्वागंतुमनाअभूत् ततोवेश्या प्रणम्याहकृतांजलिपुटाद्विजम् ॥ १६ ॥

अब सो ब्राह्मण धनदेतीहुई तिसकों देखकर्के कहताभया तूं कौनहे किसकी स्त्रीहैं एह मेरेप्रति कथन कर १३ ॥ इसप्रकारका वाक्य तिसका सुनकर्के वेश्या कहती भई हे स्वामिन् में वेश्या दुर्भाग्या इस नगरमें रहने वालीहां ॥ १४ ॥ इहवचन तिसका सुनके वडा भक्त ब्राह्मण वोला हेवाले इसतेरे धनग्रहण करनेकों में योग्य नहीहां इसमें कुछसंशयनहिहै १५ ॥ और में इसी तरांसे तेरेपर प्रसन्नहां ऐसे कहके चलनेकी कामनावाला होताभया तद वेश्या हाथ जोड विनती करप्रणाम कर्के कहने लगी ॥ १६ ॥

ब्रह्मन्निदंधनंतुभ्यंमयासंकल्पितंमनः कथंने
ष्यामितद्ब्रूहिकिंचैकंप्रार्थयाम्यहम् १७ ॥
भवादृशानांविप्राणांन योग्यायद्यहंविभो तदा
कथंमेप्रीयेतभगवान्पुरुषोत्तमः ॥ १८ ॥ इति
श्रुत्वावचस्तस्याद्विजोवचनमब्रवीत् त्वयितुष्टो
स्तिश्रीरंगोभगवान्भक्तवत्सलः ॥ १९ ॥ वे
श्यापित्वंशुभाचारा साधुसेवापरायणा अतो
जानामितितुष्टोभगवान्जगदीश्वरः ॥ २० ॥

हेब्रह्मन् एहधन मैंनें मन कर्के संकल्पकर तुमारे तांइं देदियाहै अब कैसें परतकर लेजाउं आपकहो और एकमें प्रार्थना कर्तीहूं सोभी कहो ॥ १७ ॥ हेविभो तुमारे जैसे ब्राह्मणोंके जेकर योग्य नहिहां तद भगवान पुरुषोंत्तम कैसेंमेरे पर प्रसन्न होवेंगे ॥ १८ ॥ एहतिस वेश्याका वाक्य सुन कर्के सो ब्राह्मण कहता भया तेरेपर भक्तवत्सल भगवान् श्रीरंगजी प्रसन्नहींहैन ॥ १९ ॥ किसतरांकि वेश्या होकें तूं श्रेष्ठ आचार वालिहै और साधुयों की सेवामें तत्पर रहतीहै इसवातसें जानता हुं कि जगदीश्वर भगवान् तेरेपर प्रसन्नहैं ॥ २० ॥

इदंतुयद्धनंमह्यंदत्तंतस्यतुशोभनं कारयित्वातु
मुकुटंश्रीरंगायसमर्पय ॥ २१ ॥ इत्युक्तंवतंतं
विप्रंवेश्याप्राहकृतांजलिः भवानेवनगृह्णाति
तिश्रीरंगश्चकथंस्पृशेत् ॥ २२ ॥ इतिश्रुत्वा
वचस्तस्याः पुनर्विप्रउवाचतां भक्तिप्रियोसौ
लोकेषु निरपेक्षोग्रहीष्यति ॥ २३ ॥ इत्युक्त्वा
सगतोविप्रोग्रामांतरमुदारधीः सापिवेश्याति
भक्त्यावैस्वर्णकारमथाव्हयत् ॥ २४ ॥

और जौनसा धन तैनें मेरेकों दियाहै तिसीकाही अतिसुंदर रत्नो कर जडित मुकुट बनाय कर श्रीरंगजीकें अर्पण कर चढाय दे ॥ २१ ॥ इसप्रकार कथन कर्तेहोए तिस विप्रकों हाथ जोड कर वेश्या कहने लगी तुसीं पंडित पुरुष मेराधन नहिंग्रहण कर्ते हो तद साक्षात् भगवान् श्रीरंगजी कैसें तिसकों स्पर्श करेंगे ॥ २२ ॥ एहवचन तिसका सुनकें ब्राह्मण फिर कहने लगा सो भक्तिप्रियहैं उनकोंइच्छातो किसीवस्तु की नहिहै परंतु भक्ति कर्कें जो कुछदेवे सो ग्रहण कर्लेतेहैं इसकारणसें एह मुकुट भी ग्रहण कर्लेवेंगे ॥ २३ ॥ ऐसें कथन कर उदार बुद्धि वाला ब्राह्मण और ग्रामकों चला गया पीछेसें सो वेश्या अत्यंत भक्तिप्रीति कर युक्त होई हुई स्वर्ण कारकों बुलावती भई २४

अन्यान्यपिसुवर्णानिदत्त्वातस्मिन्सुवर्णके मु
कुटंकारयित्वासारत्नैश्चखचितंशुभम् ॥२५॥
एकस्मिन्दिवसेवेश्यामुकुटंरत्नमंडितं श्रीरंग
स्वामिनेदातुंमनश्चक्रेतदानिशि ॥ २६ ॥
तस्यामेवतुश्रीरंगःस्वप्नेसेवकमब्रवीत् प्रातरे
ष्यतिसावेश्यादातुंमेमुकुटंशुभम् ॥ २७ ॥ दृ
ष्ट्वामांपुष्पिणीसावैभविष्यतिनसंशयः स्वह
स्तेनैवमुकुटंमस्तकेमयथार्पयेत् ॥ २८ ॥

और भी सुवर्ण अपने घरसें तिस सुवर्णमें पायके रत्नोंके साथ जडाउ वडा सुंदर मुकुट वनायके रखती भई ॥ २५ ॥ एक दिन सो वेश्या रातके समय रत्नों कर खचित जो मुकुट तिसकों श्रीरंग स्वामिके तांई देने कों मन धारण कर्तीभई कि कछके दिन मुकुट झडाउं ॥ २६ ॥ जिस समयं उसनें चिंतन करा उसीरातकों श्रीरंग जी स्वप्नमें अपने सेवक कों कहने लगे सो कामकलावती वेश्या मेरेकों शुभ मुकुट देनें वास्ते आवेगी ॥२७॥ सो मेरे कों देख कर पुष्पवती क्या ऋतु मती होजावेगी इसमें कुछ संशय नहिहै तदभी अपने ही हाथ करके जैसे चढावे तैसे ही यत्न कर्णा क्या उसकों कहना अपनेही हाथ सें चढादे २८॥

तथात्वयाप्रकर्त्तव्यंप्रीतयेममपूजक संदेहोत्रन कर्तव्यःसाममातीववल्लभा ॥ २९ ॥ इतिदृष्ट्वातुस्वप्नंसःपूजकःप्रातरुत्थितः उक्त्वान्येभ्यश्च विप्रेभ्यःपूजांकर्तुंमठेगतः ॥ ३० ॥ अथसावारयोषापिस्नात्वाशुक्लांवरस्रजा शुक्लचंदनालिप्तांगीमुकुटंरौप्यभाजने ॥ ३१ ॥ कृत्वाकरेण चादायदासीभिर्बंधुभिःसह जगामसामठद्वारि महाभक्तिसमन्विता ॥ ३२ ॥

हेपूजक मेरी प्रसन्नता के वास्ते ऐसेही तैंने करना इस बातमें कुछ संदेह नहिहै क्यों कि सो मेरी बहुत प्यारी है ॥ २९ ॥ एह स्वप्न देख करकें सो पुजारी प्रातः काल जागेयाहुया और नें ब्राह्मणों कों स्वप्न कह करकें पूजा करने कों मंदिरमें चला गया ॥ ३० ॥ इससें उपरंत सो वार योषिता क्या वेश्या स्नान करकें सुंदर वस्त्र भूषण लगाय कर श्वेत चंदन का अंगोंमें लेप करलिया और मुकुट कों और सामग्री के सहित चांदी के थालमें पाय कर ॥ ३१ ॥ हाथकें ऊपर थाल लेकर दास दासियां वांधवों के सहित महा भक्ति कर संयुक्त मठ के द्वारपर जाय श्रीरंग जी के सन्मुख खड़ी होती भई ॥ ३२ ॥

दृष्ट्वातांपूजकःसत्यंरात्रिस्वप्नममन्यत आ
गत्यतामुवाचाथसमागच्छभयंजहि ॥ ३३ ॥
तवाज्ञावर्ततेविष्णोर्मुकुटंदातुमुत्तमम् धन्यासि
त्वंयतोभक्त्याएवंप्रीतोतिवैहरिः॥ ३४ ॥ इति
श्रुत्वावचस्तस्यपूजकस्यचस.पुनः नमस्कृत्य
जगामांतर्मठस्यमुदितानना ॥ ३५ ॥ दृष्ट्वा
श्रीरंगनाथंसामहानंदेममज्जह रजस्वलातदै
वाभूत्सावेश्यातीवलज्जिता ॥ ३६ ॥

पुजारी तिसकों देख कर्के रातका स्वप्न सत्यमानता भया और द्वारमें तिसकों आके कहने लगा तूं निःसंदेह अंदर चली चल कुछभी भय मनमें न हिंकर ॥ ३३ ॥ क्यों उत्तम मुकुट चढानेके वास्ते तेरेकोंही अपने हाथसे आज्ञाहै तूं धन्यहै जिसने ऐसी भक्ति कर्के प्रसन्न करे भगवान् ३४ ऐसा वाक्य तिस पुजारी के मुखसें सुन कर्के सो वेश्या फिर प्रणाम कर्के हास्यकर युक्त मुख वाली अंदर मंदिर के चली जातीभई ३५ तहां अच्छी तरां श्रीरंगनाथजी कों देख कर वडे आनंदमें मग्न होतीभई और तिस समयही रजस्वला होगई तद सो वडी लज्जाकों प्राप्त होतीभई ॥ ३६ ॥

तस्थौतत्रैवसंत्रस्तापूजकस्तांतदाब्रवीत् किं
तिष्ठसिशुभेगच्छदेह्यस्मैमुकुटंशुभम् ॥ ३७ ॥
श्रुत्वेदंप्राहसावेश्यास्प्रष्टुंनार्हास्म्यहंहरिं दर्श
नाद्देवदेवस्यजातास्मिचरजस्वला ३८ ॥ इति
श्रुत्वावचस्तस्याःपूजकःप्राहसास्मितः नते
दोषोस्तिसुश्रोणिदेह्यस्मैमुकुटंस्वयम् ॥ ३९॥
इतिश्रुत्वापिसावेश्यासंस्थाप्यमुकुटंमठे वहि
रागत्यसुस्नातावासोन्यत्परिधायसा ॥ ४० ॥

और त्रसी होई उसी जगा पर खडी होजातीभई तद पुजा
री कहने लगा हे शुभे क्यों खडी होगईहे क्यों नहि इनके
तांई मुकुट देती ३७ एह वचन सुनके सो वेश्या बोली
अबमें हरिके साथ स्पर्श करणेके योग्य नहि रहीहां क्योंकी
इनके दर्शन सें ही रजस्वला होगई हां कैसे स्पर्शकरां ३८
ऐसा वचन तिसका सुनके पुजारी हसता २ कहने लगा तेरे
कों कुछनहि दोषहै अपने हाथसें मुकुट चढादे ३९ ऐसें सुन
करकें भी सोवेश्या मंदिरमे सुंदर मुकुट स्थापन करवाहरआके
स्नान करा फिर और नवीन वस्त्र लगावती भई ॥ ४० ॥

मठेगत्वाथमुकुटंनीत्वारंगसमीपतः दातुंमुकुट
मारेभेनप्रापमस्तकंहरेः ॥ ४१ ॥ प्रतिमायाः
स्वपंत्यास्तुमस्तकमल्पसंस्थितं तदासंचिं
वेश्याहकिमर्थंमुकुटंकृतम् ॥ ४२ ॥ एवंसं
चिंत्यतुदतीतस्थौसभगवांस्तदा उत्थाप्यस्व
शिरस्तंतुजग्राहमुकुटंशुभम् ॥ ४३ ॥ पश्यतां
सर्वलोकानांमहाश्चर्यमभूदिदं अथसावारयो
षापिधन्याहर्षास्रुलोचना ॥ ४४ ॥

फिर मंदिर में जायकर श्रीरंगजी के समीप मुकट चढाने का आरंभकिया पर हरिके मस्तकपर्यंत नहि पहुचती भई ॥ ४१ ॥ और सो मुकुट सोई हुई प्रतिमाके शिरके ऊपर पूरा नहि आवता भया तद सो मनमें चिंतन करने लगी कीकिस वास्ते मुकुट वनाया जो इनके शिरपर पूरानहि आया ॥ ४२ ॥ ऐसें चिंतन कर्तीहोई खेद पाती खडी होगई तद भगवानजी तिससमय उसकी मनकी व्यथा जानके अपने शिरकों उठाकर उससुंदर शुभ मुकुट कों ग्रहण करलेने भये क्या शिर पर चढाय लेते भये ॥ ४३ ॥ इसवातकों देखते होए सभनों नरनारियों के मनमें महाश्चर्य होता भया वेश्याक्या और इसके आगे मुकुटके वास्ते शिर झुकाना क्या इससें उपरंत सो वेश्या हर्ष सें अश्रुपात जिसके नेत्रों से चलने लगे ऐसें सो अपने आपको धन्य मानती भई ॥ ४४ ॥

ननर्तगीतंगायंतीचानाय्यस्वगृहाद्धनं ॥ दीना
नाथदारिद्रेभ्योददौश्रीरंगतुष्टये ४५ तुष्टुवुस्तां
वारयोषांधन्याधन्येतिवादिनः सावेश्याविज
हौस्वीयंकर्म्मश्रीरंगसन्निधौ ॥ ४६ ॥ कृत्वाकु
टीमुवासाथभुक्त्वाकिंचिद्दयान्विता नृत्यगीतै
श्चसततंतोषयामासवैहरिम् ॥ ४७ ॥ एवंभ
क्तिपरावेश्यात्यक्त्वाकर्मतुलौकिकं श्रीरंगोपास
नांकृत्वासंप्राप्ताहरिमंदिरम् ॥ ४८ ॥

और प्रसन्न मन वाली नृत्य कर्ती २ गायन कर्तीभई और सा
रा धनअपने घरसें ल्यायके दीन अनाथ दरिद्रियोंकों दान कर
२ श्रीरंगजी की प्रसन्नताके लिये देति भई ॥ ४५ ॥ और उ
हांके लोक धन्य धन्य कह २ के तिस वेश्या की प्रशंसाक
र्ते भये और सोवेश्या श्रीरंभगवानूजी के सन्मुख अपने कुल
धर्मका त्याग कर्देती भई ॥ ४६ ॥ उससें उपरंत कुटिया व
नाय कर भगवानजीके सामने निवास कर्ती भई और जो कु
छ कोई भोजन देजावे उसकों खाय लेती भई और नित्यं प्र
ति नृत्य कर्के गायन कर्के श्रीरंग जीकों प्रसन्न कर्ती भई
॥ ४७ ॥ इसप्रकार-भक्ति करणेमे तत्परहोई हुई वेश्या लौकि
क काम त्याग कर श्रीरंगजीकी उपासना क्या सेवा कर्के हरि
के मंदिर वैकुंठधाम में प्राप्त होतीभई ॥ ४८ ॥

जातिभ्रष्टोमहापापीकृतघ्नोगोघ्नएवच भक्तया
हरिंव्रजेद्दिवंसत्यंसत्यंनसंशयः ४९ इतिश्री
भक्तमालायांभगवद्भक्तिमाहात्म्ये वेश्याच
रितंसमाप्तम्

देखो कैसी भक्तिकी महिमाहै जिस जातिका धर्मनहिहै जाति भ्रष्ट महापापी कृतघ्न गोहत्यारा भी होवे तदभी भक्ति के प्रभाव सें वैकुंठ लोकमें जाताहै इसमें संशय नहि है सत्य है ॥ एह भक्तमालाके भगवद् भक्ति माहात्म्यामें वेश्या चरित्र समाप्त भया ॥



अथभगवतोविष्णोर्यज्ञोपवीतार्पणमहिमा न
रसिंहपुराणे वृहच्छुक्लंचपीतंचस्वर्णपट्टादिनि
र्मितं यज्ञोपवीतंगोविंदेददेद्वदांतगोभवेत् १॥
यज्ञोपवीतदानेनविष्णवेब्राह्मणायच भवेद्विप्र
श्चतुर्वेदीशुद्धधीर्नात्रसंशयः ॥ २ ॥

अव भगवान् विष्णुजीकों यज्ञोपवीत देनेकी महिमालि ० नर सिंह पुराणमें कहाहे वहुत श्वेतरंगका वा पीले वर्णका अथ वा पट्टका वा स्वर्णकी तंतुयोंका वहुत सुंदर वना हुया यज्ञो पवीत गोबिंद जीके चढाए तद उस महिमा के फल करकें वे दांतके जानन वाला होताहै ॥ १ ॥ औरभी कहाहै विष्णुके तांई ब्राह्मणके तांई जोकोई यज्ञोपवीत देवे सोचारवेदोंके जा नन वाला और होताहै निर्मल बुद्धि वाला होताहै ॥ २ ॥

अथविष्णोः पूजने घंटावादनमहिमवर्णनम्
स्कांदेनारदंप्रतिब्रह्मवाक्यम् कृष्णार्चनाक्रियाकालेघंटानादंकरोतियः पुरतोवासुदेवस्यतस्यपुण्यफलंशृणु १ ॥ वर्षकोटिसहस्राणिवर्षकोटिशतानिच वसतेदेवलोकेतुह्यप्सरोगणसेवितः ॥ २ सर्ववाद्यमयीघंटाकेशवस्यसदाप्रियावादनाच्चभवेत्पुण्यंयज्ञकोटिशतोद्भवम् ३॥ वादित्राणांचशब्देनपूजाकालेहरेःसदा घंटाशब्देनपूर्णेनप्रीतोभवतिमाधवः ॥ ४ ॥

अब विष्णु भगवान् जीकी पूजाके समय घंटा बजानेकीमहिमा लिखतेहैं स्कंद पुराणमें नारदजीके प्रति ब्रह्माजीका कथन हैकया श्रीकृष्णजीकी पूजाके समय जोघंटा काशब्दकर्ताहै आगेवासुदेवजीके तिसके पुण्यका फल श्रवणकर ॥ १ ॥ सोपुरुष वर्षोंके सेकडे हजारां क्रोडां वर्ष अप्सरोंके समूह कर्के सेव्यमान होएआ हुया देवलोकमें निवास कर्ताहै ॥ २ ॥ एह जोघंटाहै सौसभनों वाजियोंका रूपहै और केशव जीकी सदासेंही प्यारी इसवास्ते तिनके आगेवजानेसें सेकडे क्रोडांयज्ञोंसें उत्पन्न हुयाजो फलसो होताहै॥ ३ ॥ और हरिकी पूजाकेसमय सभतरोंके वाजियोंके मध्यमे घंटेके शब्द कर्के पूर्ण करे होए माधवजी प्रसन्न होतेहैं ॥ ४ ॥

अथघंटाशब्दप्रसंगात्पूजाकाले अन्यवाद्यानां
माहात्म्यमाह स्कांदे वादित्रतंत्रीवाद्यैश्चगी
तमंगलसंस्तवैः यःस्नापयतिदेवेशंजीवन्मुक्तो
भवेद्द्विजः ॥ १ ॥ वेणुवीणानिनादंचकरोति
पणवंहरेः युवतीयोनिसंयोगं नयातिहरियोग
तः॥ २ ॥ मृदंगवादनयुतंपणवेनसमान्वितम्
अर्चनंवासुदेवस्यप्रत्यक्षंमोक्षदंनृणाम् ॥ ३
गीतंनृत्यंचवाद्यंचसामवेदस्यपाठनं पूजाका
लेतुविप्रेंद्रसर्वदाकेशवप्रियम् ॥ ४ ॥

अब हरिकी पूजाके समय घंटा बजानेकी महिमा के प्रसंगसें औरनों वाजेयोंको वजानेकी भी महिमा कहतेहैं स्कंद पुराणमैं कहाहै वाजेजो मृदंगादिक हैं और वीणादिक जोहैं इनकों वजाने करकें मंगल स्तुतियोंके गायन करकें जोपुरुष देवेश विष्णुजीकों स्नान कराताहै सोजीवन्मुक्त होताहै ॥ १ ॥ और जोकोई पुरुष वीणावंसी इनकाशब्द कर्ताहै पूजाके समय अथवा छैणे वजाताहै सोफिर मुडके हरियोगतें युवती स्त्रियों के योनि संयोगकों नहिजाताहै अर्थात् गर्भवासमैं नहि जाता है ॥ २ ॥ और जोकोई पुरुष मृदंगादि वाजेयों के युक्त छैणेयोंके साहित वासुदेवजीका पूजन कर्ताहै सो प्रत्यक्ष पुरुषों कों मोक्ष देने वाला है ॥ ३ ॥ हेविप्रेंद्र पूजासमय नृत्यकरणा गायन करणा वाजे वजाने साम वेदका पाठ करणा सर्वदा काल भग वानजी को प्याराहै ॥ ४ ॥

वादित्राणामभावेतुकुर्यात्पुस्तकवाचनं पूजा
कालेतुविप्रेंद्रविष्णुः प्रीतिकरंसदा ॥ ५ ॥
पाद्मे यस्तुशंखध्वनिंकुर्यात्पूजाकालेविशेषतः
तस्यपुण्यफलंवच्मिशृणुवत्ससमाहितः ६ ॥
अगम्यागमनाद्यैश्चविमुक्तःसर्वपातकैः अंते
विष्णुपुरंगत्वाविष्णुनासहमोदते ॥ ७ ॥ वी
णांवादयतेयस्तुपूजाकालेजगत्पतेः पंडिता
नामग्रणीःस्यात्समर्थः प्रतिजन्मनि ॥ ८ ॥

जिस मंदिरमैं वाजेनाहोंमें तहांपुस्तकोंका पाठ करणा पूजाके समय हेविप्रेंद्र एहभी विष्णुकों सदा प्याराहै ॥ ५ ॥ पद्मपुराणमें कहाहै जो पुरुष पूजाके समय विशेष कर्के शंखका शब्द कर्ता है हेवत्स तिस पुण्यका फल कहता हुं तूं सावधान मन वाला होके सुन ॥ ६ ॥ क्या फलहोताहै कि अगम्यागमनादि पापोंसे कें मुक्त होएआ हुया अंतमें बिष्णुके पुरजायकर विष्णुजीके साथही हर्ष आनंद भोगताहै ॥ ७ ॥ और जो कोई जगत्प तिकी पूजाके समय वीणा वजावताहै सो अगले जन्ममें पंडि तोंका अग्रिणी होताहै क्या वडा विद्वान् होताहै ॥ ८ ॥

मृदंगवाद्यकृद्यस्तुपूजायांकैटभद्विषः तस्यप्रस
न्नोदेवेशोदद्यादभिमतंफलम् ॥ ९ ॥ डमरुंडिं
डिमंचैवझल्लरींमधुरींतथा पटहंदुंदुभिंचैवका
हलंसिंधुवादिनीम् ॥ १० ॥ कांस्यंचकरतालं
चवेणुंवादयतेतुयः पूजाकालेमहाविष्णोस्त
स्यपुण्यंनिशामय ॥ ११ ॥ स्तेयाद्यैःपातकै
र्मुक्तोमंदिरंयातिचक्रिणः परमज्ञानमासाद्यत
त्रैवपरिमुच्यते ॥ १२ ॥

जो कोई पुरुष कैटभ द्वेषी भगवानकी पूजामें मृदंग वजाता है तिस परदेवेशजी प्रसन्न होए हुए अभिमत फल देतेहैं ॥ ९ और जो कोई महाविष्णुकी पूजामें डमरु डिंडिम झल्लरी घडे आल मधुरी और नगारा ढोल कहलां तुरी नृसिंहा सिंधु वादिनी ॥ १० ॥ और कंसियां ताडि वेणु वंसी इत्यादि वाजेयोंकों वजातेहैं तिनके पुण्यकाफल श्रवण कर ॥ ११ ॥ क्या स्वर्ण स्तेयादि महापापोंसें मुक्त होएआ हुया चक्रपाणि भगवानजीके मंदिरमें जाताहै और तहां मेंही परम ज्ञानकों प्राप्त होकर उहांही मुक्त हो जाताहै ॥ १२ ॥

वृहन्नारदीये मुखवाद्यकृतायेतुदेवतायतनेनराः विमानशतसंयुक्ताः कल्पंस्वर्गादिवासिनः ॥ १३ ॥ करशब्दंप्रकुर्वंतिदेवतायतनेतुये तेसर्वेपापनिर्मुक्ताविमानेशायुगद्वयम् ॥ १४ ॥ देवतायतनेयेतुघंटानादंप्रकुर्वते तेषांपुण्यंनिगदितुंकःसमर्थोस्तिपंडितः ॥ १५ ॥ भेरीमृदंगपटहमुरुजाद्यैश्चाडिंडिमैः संतोष्यदेवदेवेशं लभंतेतत्फलंशृणु ॥ १६ ॥

वृहन्नारदीयमें कहाहै जौनसें पुरुष देवताके मंदिरमें मुखोंके साथ बाजे वजाने वालेहैं सो सैकडे विमानों कर संयुक्त कल्पपर्यंत स्वर्गमें निवास कर्तेहैं ॥ १३ ॥ और जौनसे कोई देवता कें मंदिरमें ताडियां वजातेहैं सो सारे पापोंसें निर्मुक्त होए हुए दोयुगों पर्यंत विमानेकों स्वामी होतेहैं ॥ ॥१४ ॥ और जौनसें कोई देवता के मंदिरमें घंटेकाशब्द कर्तेहैं तिनका पुण्य कहने कों कौंन पंडित समर्थहै ॥ १५ ॥ और भेरियां नगारे मृदंग पटह ढोल मुरजा डिंडिम इत्यादि बाजों कर्के देवदेवेशजी कों प्रसन्न कर जौनसा फल लभताहै सो श्रवण कर ॥ १६ ॥

देवस्त्रीशतसंयुक्ताःसर्वकामसमन्विताः स्वर्ग
लोकमनुप्राप्यमोदंतेकल्पपंचकम् ॥ १७ ॥
पाद्मेक्रियायोगसारे यस्तुशंखध्वनिंकुर्यात्सं
पूज्यकमलापतिं तस्यपुण्यफलंवच्मिशृणुव
त्ससमाहितः ॥ १८॥ अगम्यागमनाद्यैश्च
विमुक्तःसर्वपातकैः अंतेविष्णुपुरंगत्वाविष्णु
नासहमोदते ॥ १९ ॥ देवतायतनेराजन्कु
र्वञ्छंखरवंनरः सर्वपापविनिर्मुक्तोब्रह्मणासह
मोदते ॥ २० ॥

सो पुरुष सैकडे देवलोककीयां स्त्रियों कर संयुक्त और सम्पूर्ण कामना संयुक्त स्वर्ग लोकमें प्राप्तहोकर पांचकल्प पर्यंत-सुखभोग भोगतेहैं ॥ १७ ॥ पद्मपुराण के क्रिया योगसार-में कहाहै जो पुरुष कमला लक्ष्मी के पतिको पूजनकर पीछे सें शंखकी ध्वनि कर्ताहै हेवत्स तिस पुण्यका फल कथन कर्ताहुं सो तू सावधान मनवाला होके श्रवण कर ॥ १८ ॥ क्या फल होताहै की अगम्यास्त्रियों के साथ गमन करे होए जो पापहोतेहैं तिन पापोंकर्के मुक्त होएआ हुया मृतहोकर विष्णुके पुर वैकुंठ में जायकर विष्णुके साथ सुखभोगताहै ॥ १९ ॥ और हेराजन् जो कोई देवताके मंदिरमें शंख काशब्द कर्ताहै सो सभनों पापोंसे निर्मुक्त होएआहुया ब्रह्माके साथ सुख भोगताहै ॥ २० ॥

काहलंनिनदंकुर्वन्देवतायतनेनरः सर्वपाप
विनिर्मुक्तःस्वर्गलोकाधिपोभवेत् ॥ २१ ॥
तालादिकांस्यनिनदंकुर्वन्विष्णुगृहेनरः यत्फ
लंलभतेराजंस्तच्छृणुष्वनराधिप ॥ २२ ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तोविमानशतसंयुतः गीयमा
नश्चगंधर्वैर्विष्णुनासहमोदते ॥ २३ ॥

मनुष्य जो है सो देवता के मंदिरमें कहलों का शब्द कर्ता हुया सारे पापोंसें निर्मुक्तहोकर स्वर्ग लोक का अधिपति होताहै ॥ २१ ॥ और विष्णुके घरमें तालादियोंका जांकं सियोंका शब्दकर्ता हुया हेराजन् जो फललभताहै हेनराधिप सो श्रवण कर ॥ २२ ॥ सो पुरुष सारे पापोंसें निर्मुक्त हो के सैकडेविमानों कर युक्त गंधर्व जिसके आगे गायनकर्तेहैं ऐसे सुखभोगों कर युक्त विष्णुके साथसुख भोगताहै ॥ २३ ॥

अथविष्णुपूजनेवस्त्रार्पणमहिमा अग्निपुराणे दुकूलपट्टकौशेयक्षौमकार्पासकादिभिः वासोभिःपूजयेद्देवं सुशुभैरात्मनःप्रियैः १ वस्त्राणिसुपवित्राणिसारवंतिमृदूनिच रूपवंतिहरेर्दत्त्वा सुदृशानिनवानिच २ यावद्वस्त्रस्यतंतूनांपरिमाणंभवत्यथ तावद्वर्षसहस्राणि विष्णुलोकेमहीयते ॥ ३ ॥ विष्णुधर्मोत्तरे रांकवंमृगरोमोत्थं कार्पासाद्यंतथाशुभं योदद्याद्देवदेवायसोश्वमेधफलंलभेत् ॥ ४ ॥

अब विष्णुभगवानजी कों वस्त्रचढानेकी महिमा लि० ॥ अग्निपुराणमें कहाहै पुरुष जोहै सो पट्टके कोशके क्षौम अलसीके और कार्पासके दुकूल दुपट्टे और वस्त्र जौंनसें वडे २ सुंदर अपनेप्यारे तिनोंके साथ देवताविष्णुजीकों पूजन करे अर्थात् सभतरोंके सुंदर २ वस्त्रचढावे ॥ १ ॥ और वडे पवित्र सारवाले और अत्यंत सुंदर रूपवाले कनारी तिल्लेकी वेलवूटी कर युक्त नवीन वडे कोमल और वरीक ऐसे सुंदर वने होए नारायणजी कों चढावे ॥ २ ॥ उनके चढानेसें एहफल होताहै की जितनीयांक वस्त्रदीतंतूहैं उतने हजार वर्ष विष्णु लोकमें महिमाकों प्राप्त होताहै ॥ ३ ॥ विष्णुधर्मोत्तरमें कहाहै पशमीना कार्पास अलसी इत्यादिवस्त्रोंके जो सभतरां के उपकरण देताहै सो अश्वमेधके फलकों प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥

पाद्मेउत्तरखंडे दिव्यांबराणियोदद्याद्धुत्सवेस
मुपस्थिते मन्वंतराणिवसेतमानवस्तंतुसंख्य
या ५ सर्वंपुरातनंवस्त्रंदूरीकृत्यमुरारये शीत
स्यवारणार्थायदद्याद्वस्त्रंचनूतनम् ६ विष्णुप्र
तिवस्त्रार्पणमहिमांतर्गतत्वात् ध्वजस्यापिवस्त्र
रूपतयातन्महिमानमाह ॥ नरसिंहपुराणे ॥
ध्वजंतुविष्णवेयस्तुगरुडेनसमन्वितम् दद्या
त्सोपिध्वजाकीर्णंविमानेनविराजितःविष्णुलो
कमवाप्नोतिसेव्यमानोप्सरोगणैः ॥ ७ ॥

पद्मपुराणके उत्तर खंडमें लि० ॥ जोपुरुष रामनवम्यादिक उत्स
वदिनोंके प्राप्त होएहुए विष्णुकों दिव्य क्या सुंदर रंगो कर संयु
क्त तिछे कनारी गोटेके वेलां बूटेयों कर युक्तवस्त्र देताहै सो
वस्त्रकी तंतूयों दी संख्याकर युक्त वैकुंठमें वसताहै ॥ ५ ॥
और पुरुष पुराणे वस्त्रसारें उतारकर शीतके निवार
ण वास्ते मुरारि भगवानजीके तांई नवीन वस्त्र देवे ॥ ६
॥ अव विष्णुजी के ऊपर वस्त्रचढाने की महिमाके अंतर्ग
त होनेसें ध्वजाकोंभी वस्त्र रूपहै इसवास्ते तिसके चढानेकी
भी महिमा इहां लि० नरसिंहपुराणमें कहाहै जो पुरुष
गरुडकी मूर्तिकर युक्त ध्वजा बनाके विष्णुके मंदिरमें चढाताहै
सो ध्वजों कर युक्त विमानमें चढकर अप्सरां जिसकी सेवा क
रेया कर्दीयांहैं ऐसें विष्णु लोकमें प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥

पद्मपुराणे पातालखंडे शौनकादीन्प्रतिसूतवा
क्यम् सूतउवाच ॥ अन्यद्व्रतंप्रवक्ष्यामिध्वजा
रोपणसंज्ञितं सर्वपापहरंपुण्यंविष्णुप्रीतिकरं
नृणाम् ॥ १॥ ब्राह्मणक्षत्रियविशांशूद्राणांचद्वि
जोत्तम सर्वदुःखोपशमनंसंसारच्छेदकारणम्
॥ २ ॥ यः कुर्याद्विष्णुभवनेध्वजारोपणमुत्तमं
संपूज्यतेविरिंच्याद्यैः किमन्यैर्वहुभाषितैः ॥ ३
हेमभारसहस्रंतुयोददातिकुटुंविने तत्फलंतुप
मात्रंस्याद्ध्वजारोपणकर्मणि ॥ ४ ॥

पद्मपुराणके पाताल खंडमें शौनकादियों के प्रति सूतजीका कहनाहै सूतजी कहने लगे हेशौनकादिकऋषियों और तुमारे प्रति ध्वजारोपण नामक व्रतकथन कर्ताहुं कैसाहै सारेपापों के हरने वाला और पुरुषों कों विष्णुकी प्रसन्नता करनेवाला सो कथन कर्ताहुं ॥ १ ॥ और हेद्विजोत्तम ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनों चारों वर्णोंके सारे दुःख शमन करने वाला और संसार के छेद का कारण है ॥ २ ॥ जो कोई पुरुष विष्णुके मंदिरमें उत्तम ध्वजा लगताहै सों पुरुष ब्रह्मादिक देवतेयोंनें पूज्जी दाहै और वहुत कहने कर्के क्याहै ॥ ३ ॥ जोकोई पुरुष कुटंबि ब्राह्मणके तांई सोनेका हजारभार देताहै उसकों जो फलहै सों ध्वजा रोपण कर्ममें तुच्छहै ॥ ४ ॥

ध्वजारोपणतुल्यंस्याद्गंगास्नानमनुत्तमम् अथ
वातुलसीसेवाशिवलिंगप्रपूजनम् ॥५॥ कार्त्ति
कस्यसितपक्षेद्वादश्यांप्रयतोनरः स्नानंकुर्यात्प्र
यत्नेनदंतधावनपूर्वकम् ॥ ६ ॥ नित्यकर्माणि
निर्वर्त्यपश्चाद्विष्णुंसमर्चयेत् धातारंचविधाता
रंपूजयेत्स्तंभकद्वये ॥ ७ ॥ हरिद्राक्षतगंधाद्यैः
शुक्लमाल्यैर्विशेषतः विंशतिहस्तमात्रंतुस्थंडि
लंचोपलिप्यह ॥ ८ ॥

सभसें उत्तम जो श्रीगंगाजीका स्नानहै सो ध्वजा चढानेके स
मानफलवालाहै अथवा तुलसीके वृक्षकी सेवा और शिवजी
के लिंगका पूजन इहभी दोनों ध्वजा चढाने के तुल्यहैं ॥ ५
कार्तिक महीने के शुक्लपक्षमें द्वादशीके दिन यत्न करकेंभी दं
त धावन पूर्वक पवित्र होकर स्नानकरे ॥ ६ ॥ पीछेसें नित्यकर्म
संध्यादि कृत्य समाप्त कर विष्णुजीका पूजन करे और हरिद्रा
अक्षत गंध पुष्पादियों करकें दोनों स्तंभोंमें धाता विधाता का
पूजन करे ॥ ७ ॥ और वीस हाथका स्थंडिल वनायकर ति
समें गोहेका लेपन देवे ॥ ८ ॥

आधायाग्निंस्वगृह्योक्तंचाज्यभागादिकंक्रमात्
जुहुयात्पायसंचैवघृतमष्टोत्तरंशतम् ॥ ९ ॥ त
तोमंगलवाद्यैश्चसूक्तपाठैश्चशोभनैः नृत्यैश्च
स्तोत्रपठनैर्नयेद्विष्णवालयेध्वजम् ॥ १० ॥
देवस्यद्वारदेशेवाशिखरेचमुदान्वितः सुस्थिरं
स्थापयेद्विद्वान्ध्वजंसुस्तंभसंयुतम् ॥११॥ गंध
पुष्पाक्षतैर्देवंधूपदीपैर्मनोहरैः भक्ष्यभोज्या
दिभिर्युक्तैर्नैवेद्यैश्चहरिंयजेत् ॥ १२ ॥

उस स्थंडिलमें अपने गृह्यके अनुसार अग्निस्थापन कर फिर क्रमसें आज्यभागादि हवन करे फिर अष्टोत्तर शत आहुति विष्णुके नामों करकें पायस जां घृतका हवन करे ॥९॥ हवनसें उपरंत मंगल वाजे वजतेहोवें वेदोंकीयां ऋचांके पाठोंकर्के नृत्य हास्य मंगल पूर्वक तिस ध्वजाकों विष्णुके मंदिरमें लेजावें ॥ १० ॥ सो ध्वजा देवता के द्वारदेशमे जां मंदिरके शिखर ऊपर प्रसन्नतापूर्वक अच्छे सुंदर दृढ स्तंभके सहित अच्छीतरांसें स्थापन करे जो वायु वेगसें पुटीनहि जावें ॥ ११ ॥ फिरगंध पुष्प धूप दीपोंकर्के मनोहर पुष्पों कर्के नाना प्रकारोंके नैवेद्यादियों कर्के हरिका पूजन करे ॥ १२ ॥

नमस्तेपुंडरीकाक्षनमस्तेविश्वभावन नमस्ते
स्तुहृषीकेशमहापुरुषपूर्वज १३ यत्रेदमखिलं
जातंयत्रसर्वंप्रतिष्ठितं लयमेष्यातियत्रैतत्तंप्रप
न्नोस्मिमाधवम् ॥ १४ ॥ यन्मुखाद्ब्राह्मणाजाता
बाहुभ्यामभवन्नृपाः वैश्यायस्योरुतोजाताः प
द्भ्यांशूद्रोभ्यजायत ॥ १५ ॥ मायासंगममात्रे
णवदंतिपुरुषंशुभम् स्वभावनिर्मलंशुद्धंनिर्वि
कारंनिरंजनम् ॥ १६ ॥

पूजाके पीछें इसप्रकार स्तुतिकरे हेपुंडरीक कमलकी न्यांई
नेत्रोंवाले तुमारे तांई नमस्कार होवे और हेविश्वके वधाने वा
ले तुमारे तांई नमस्कार होवे हेहृषीकेश महापुरुषों के पहले ज
न्मे होए तुमारे तांई नमस्कार होवे ॥ १३ ॥ जिस तुमारे वी
च इहचरा चरजन्माहै और जिसतुमारेमैं एह विश्व स्थितहै औ
र जिस तुमारेमें अंत लीन भी होताहै ऐसें माधव लक्ष्मीके स्वा
मिको शरणागत होताहुं १४ ॥ सो कौन माधवहै जिसके मुख
सें ब्राह्मण उत्पन्न भये और बाहुं सें क्षत्रिय उत्पन्न भये और
ऊरूपट्टों सें वैश्य उत्पन्न भये और जिसके पादोंसें शूद्रहोते
भये ॥ १५ ॥ और मायासंगममात्र करके पुरुषजिसकों कहतेहैं
और जोस्वभावककें शुद्धनिर्मल निरंजन निर्विकारहैतिसकों १६

सद्भक्तवत्सलंदेवंभक्तिगम्यंजनार्दनं निर्मलं
परमंसूक्ष्मंप्रणतोस्मिपुनःपुन ॥ १७ ॥ हृद
यस्थोपिदूरस्थोमाययामोहितात्मनां चिद्रूप
श्चपरानंदोसमेविष्णुः प्रसीदतु ॥ १८ ॥ यइ
दंकीर्त्तयेत्स्तोत्रंस्तोत्राणामुत्तमोत्तमम् सर्वपा
पविनिर्मुक्तोविष्णुसायुज्यमाप्नुयात् ॥ १९ ॥
इतिस्तुत्वानमेद्विष्णुंब्राह्मणान्भोजयेत्ततः आ
चार्यंपूजयेत्पश्चाद्दक्षिणाच्छादनादिभिः २०

और श्रेष्ट भक्तहैं प्यारेजिनकों भक्ति करकें प्राप्त होने वाले ज
नार्दनजी जो निर्मल परमसूक्ष्म रूप तिनकों वारंवार प्रणामक
तांहुं ॥ १७ ॥ औरजो परमेश्वर माया करकें मोहेहुए आत्मा
मन वालेयोंके हृदयमेंभी स्थितहैं तदभी तिनकों दूरप्रतीत होते
हैंसो चेतन्य रूप परानंद बिष्णु भगवान् मेरेपर प्रसन्न होवें १८
जोकोइं पुरुष उत्तम स्तोत्रोंके मध्यमें उत्तमजो एहस्तोत्रहै इस
कोंजो कोई पडेगा सोसारे पापोंसें निर्मुक्तहोकर विष्णुकी सा
युज्य मुक्तिकों प्राप्त होवेगा ॥ १९ ॥ इस प्रकार स्तुत करकें वि
ष्णुजी कों पीछेसें दंडवत् प्रणाम करे फिर पीछेसें ब्राह्मणोंकों
उहां मंदिरमेंही भोजन करायकर दाक्षिणा वस्त्र भूषणादियों क
कें अपने आचार्यकों पूजन करेक्या विदाकरे ॥ २० ॥

पुत्रमित्रकलत्राद्यैर्बंधुभिःसहवाग्यतः कुर्वीत पारणंतत्राविष्णुभक्तिपरायणः ॥ २१ ॥ यस्त्वे तत्कर्मकुर्वीतध्वजारोपणमुत्तमम् तस्यपुण्यफलंवक्ष्येशृणुत्वंसुसमाहितः ॥ २२ ॥ यद्वोध्वजोस्यविप्रेंद्रयावच्चलतिवायुना तावद्वैपापजालानिविनश्यंतिनसंशयः ॥ २३ ॥ महापातकयुक्तोपियुक्तोवाह्युपपातकैः ध्वजंविष्णुगृहे कृत्वासर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ २४ ॥

फिर आचार्य कों विदा करकें अपने पुत्रमित्र कलत्र भ्रातावांधव नौकर सभनोंकों साथ विठायकर विष्णुकी भक्तिमें तत्पर व्रतका पारणकरे क्या इनके साथ बैठकर मौनहोके भोजन करे ॥ २१ ॥ जोकोई इस ध्वजा रोपण कर्मकों कर्ताहै तिसकें पुण्यका फलकहता हुं तूं सावधान मन वाला होके श्रवण कर ॥ २२ ॥ हेविप्रेंद्र जिस पुरुषकी स्थापन करी होई ध्वजा जितना काल वायु करकें चलतीहै क्या कंपायमान होतीहै उतने ही उसके पापोंके समूहों कों नाश कर्तीहे इसमें संशयनहिहै ॥ २३ ॥ जोकोई पुरुष महा पापों कर युक्तहोवे वाउपपातकों करकें युक्तहोवे सोविष्णुके मंदिरमें ध्वजा लगाय करकें सारे पापोंसें मुक्त होजाताहे ॥२४ ॥

यावद्दिनानिवसतिध्वजोविष्णुगृहेद्विजाः ताव
द्युगसहस्राणिहरिसायुज्यमश्नुते ॥ २५ आरो
पितंध्वजंदृष्ट्वायेभिनंदंतिधार्मिकाः तेपिसर्वे
प्रमुच्यंतेमहापातककोटिभिः ॥ २६ ॥ शृणुध्व
मृषयश्चित्रमितिहासंपुरातनं सर्वपापप्रशमनं
नारदेनप्रभाषितम् ॥ २७ ॥ आसीत्पुराकृत
युगेसुमतिर्नामभूपतिः सोमवंशोद्भवःश्रीमा
न्सप्तद्वीपैकराट्स्वयम् ॥ २८ ॥

हेद्विजाः विष्णुजीके मंदिरमें ध्वजा जितनें दिन लगीरहे उतने
ही हजार युग पर्यंत हरिकी सायुज्य मुक्ति भोगताहैं २५ और
जौनसे धर्म बुद्धि वाले कोईक लोक मंदिरपर लगीहोई ध्व
जा देखकर प्रसन्न होतेहैं सोभी सारे महापापोंकीयों कोटि
योंकर्के मुक्तहोतेहैं ॥ २६ हेऋषियो इस ध्वजाकें महात्म कह
नेमें प्राचीन इति हास आश्चर्यके करनेवाला कहताहुं तुमश्रवण
करो कैसाहै पापोंके शमन करनेवाला और नारदजीका कथन
कराहुया॥ २७ ॥ पूर्वसत्य युगके आदमें सुमातिनाम कर्के चंद्र
वंशमें सप्त द्वीपोंका एक राजा शोभावाला होता भया २८ ॥

सर्वलक्षणसंपन्नः सर्वसंपद्विभूषितः सदाहरि
कथासेवीहरिपूजापरायणः ॥ २९ । हरिभक्ति
पराणांचशुश्रूषुरनहंकृतिः सर्वभूतहितः शांतः
नयज्ञः कीर्तिमाञ्छुचिः ॥ ३० ॥ तस्यभार्या
महाराज्ञीशुभलक्षणसंयुता पतिव्रतापतिप्रा
णानाम्नासत्यवतीश्रुता ॥ ३१ ॥ तावुभौदंपती
नित्यंजलदानपरायणौ तडागारामकूपादीन
संख्यातान्वितेनतुः ॥३२ ॥

फिर कैसा वोहराजाथा सारेशुभ लक्षणों करके युक्त सभतरांकी संपदा करके शोभायमान सर्वदा काल हरिकी कथा श्रवण करणी नारायण जीकी पूजामें तत्पर रहताथा ॥ २९ ॥ और नारायण जीकी भक्ति करने वाले पुरुषोंकी सर्वदा काल सेवा कर्ताथा और अहं कार रहितजिसके मनमें सभनों जीवोंकाहित चाहने वाला शांत रूप अरनीतिके जानणे वाला वडा पवित्र बडा बुद्धिमान्राजाथा ॥ ३० ॥ तिसकी राणी वडी शुभ क्या सुंदर लक्षणों वाली पतिव्रता पतिको प्राण रूप नाम करके सत्यवती प्रसिद्ध थी॥३१॥सोदोनों राजा राणी नित्यंप्रति जलदानमें तत्पर रहतेथे और तला खूहे वाग इत्यादि असंख्यात जिनोंने वनाएहैं ॥ ३२ ॥

सातुसत्यवतीनित्यंशुचिर्विष्णुगृहेसदा नृत्यं
त्यत्यंतसंतुष्टामनोज्ञामंजुभाषिणी ॥ ३३ ॥
सोपिराजामहाभागोद्वादशीद्वादशीदिने ध्व
जंविस्तारयामासमनोज्ञंवहुविस्तरम् ॥ ३४॥
एवंहरिपरंनित्यंराजानंधर्मकोविदम् तस्य
प्रियांसत्यवतींदेवाअपिसदास्तुवन् ॥ ३५ ॥
आययौदंपतीशिष्यैर्द्रष्टुकामोविभांडकः विभां
डकमुनिंश्रुत्वासमायांतंजनेश्वरः ॥ ३६ ॥

सो जो सत्यवतीहै नित्यं प्रति सर्वदा काल विष्णुजीके मंदि
रमें अत्यंत प्रसन्नता पूर्वक मनोज्ञ सुंदर मधुर भाषण करतीहो
ई नृत्य कर्तीथी ॥३३॥ और महाराजा भाग्यवान् द्वादशी की
द्वादशी दिनमें अतिसुंदर वडे विस्तार वाली ध्वजा विष्णुके
मंदिरमें लगावताभया ॥ ३४ ॥ इस प्रकार नित्यंप्रति भगवान्
जी की भक्तिमें तत्पर धर्मकोविद राजाकों और तिसकी प्या
री सत्यवती स्त्री कों देवता भी सर्वदाकाल स्तुतकर्तेभये की ध
न्य स्त्रीहैं ॥३५॥ उसका दर्शन करनें की कामना वाला शिष्यों
के साथ परिवारेया हुया विभांडक मुनि आवता भया तद आ
उते मुनिकों सुन कर्के राजा क्या कर्ता भया ॥ ३६ ॥

प्रत्युद्ययौसपत्नीकः पूजाविभवविस्तरम् कृ
तातिथ्यक्रियंशांतंकृतासनपरिग्रहम् ॥ ३७
नीचासनगतोभूपः प्रांजलिर्मुनिमब्रवीत् भग
वन्कृतकृत्योऽस्मित्वत्प्रसादान्मुनीश्वर ॥ ३८
स्पृष्टशन्करेणराजानंप्रत्युवाचातिहर्षितः ऋ
षिरुवाच यत्कृतंभवताराजंस्तत्सर्वंस्वत्कुलोचि
तम्॥३९॥विनयावनताः सर्वेपरंश्रेयोव्रजंतिहि
धर्मश्चार्थश्चकामश्चमोक्षश्चराजसत्तम ॥४०॥

सभनों कों साथ ले कर्के आगे जाए मिलताभया और विभव विस्तार पूर्वक आतिथ्यसत्कार कर्ताभया और कियाहै आसन परिग्रह जिसने ऐसे शांत रूपी मुनिकों ॥ ३७ ॥ नीचे आसन पर वैठके राजा हाथ जोड विनती कर मुनिकों कहताभया हे मुनीश्वर तुमारे आउने कर्के तुमारी कृपासें में कृतकृत्य हो गयाहां ॥३८॥इतनी बातके सुनतेही हर्ष युक्त होएआ हुया मुनि राजाकों पीठमें हाथ के साथ स्पर्श कर्ताहुया ऋषि कहने लगा हेराजन् जो जो कुछ तैने कराहै सो सभ तेरे कुलके योग्यहीहै ॥३९॥ क्योंकि विनती कर नम्र पुरुष परम कल्याणकों प्राप्त होतेहैं और हे राज सत्तम धर्म अर्थ काम मोक्ष एह चार पदार्थभी नम्रतासें लभतेहैं ॥ ४० ॥

विनयाल्लभतेसर्वंविनयात्किंनसाध्यते प्रीतो
स्मितवभूपालुसन्मार्गपरिवर्त्तिनः । ४१ स्व
स्तितेस्तुमहाभागयत्पृच्छामितदुच्यतां अर्ह
णावहव·संतिहरिसंतुष्टिकारकाः ॥ ४२ ॥ त्वं
नित्यमाहितमनाध्वजारोपणकर्मणि तवभा
र्यापिसाध्वीयंनित्यंनृत्यपरायणा ४३ ॥ किम
र्थमेतद्वृत्तांतंयथावद्वक्तुमर्हसि राजोवाच शृणु
ष्वभगवन्सर्वंयत्पृच्छसिवदामितत् ॥ ४४ ॥

और विनय नम्रतासें सभी कुछ लभताहै और विनयसें ऐसी कौन वस्तुहै जो सिद्धनहि होतीहै ना सभी कुछ सिद्ध होता है हे भूपाल अछे श्रेष्ठ मार्गमें वर्तने वालें तेरेपर में बहुत प्रसन्न हुयाहां ॥ ४१॥ तेरेकों कल्याण होवे और जो कुछमें पूछता हुं सो कथन कर क्यौं की विष्णुके प्रसन्न करणें वालियां वहुततरों कीयां पूजाहैं सो देखियां सुनियांहैं ॥ ४२ ॥ परंतु तूं सावधानमन वाला होएआ हुया और तेरी राणीभी पतिव्रता नित्यंप्रति नृत्य करणेमें तत्पर होके ध्वजा रोपण कर्ममें लगी रहती है ॥ ४३ ॥ सो एह किस निमित्तहै एह वृत्तांत मेरेकों यथावत् कहनेकों योग्यहो इतनी वात मुनिके मुख की श्रवण कर राजा कहता भया हे भगवन् ऋषे जो कुछ आप पूछते हो सो साराही कथन कर्ताहुं ॥ ४४ ॥

आश्चर्यंभूतंलोकानामावयोश्चरितंमुनेअहमा
संपुराशूद्रोमलिनोनामसत्तम ॥ ४५ ॥ कुमा
र्गनिरतोनित्यंसर्वलोकाहितेरतः पिशुनोधर्म
विद्वेषीदेवद्रव्यापहारकः ॥ ४६॥ महापातक
संसर्गाद्भक्ष्याभक्ष्यरतःसदा गोघ्नश्चब्रह्महा
चौरःसर्वप्राणिवधेरतः ४७ ॥ नित्यंनि ुरव
क्ताचपापोवेश्यापरायणः एवंस्थितःक्वचित्का
लमनाद्दस्यमहद्वचः ॥ ४८ ॥

हे मुने हमारा चरित्र लोंकांकों आश्चर्य रूपहै सभ लोक इस में विस्मित होतेहैं पिचले जन्म मैं शूद्रथा मलिन नाम कर्के हे सत्तम ४५ सो में नित्यही कुमार्गमें रत रहताथा और सा रेलोकों का अहित कर्ताथा वडा ठग्गथा धर्मके साथ द्वेष कर ना देवतेयोंके मंदिरोंसें द्रव्य चुराय लाताथा ॥ ४६ ॥ सो म हापापी योंके संसर्ग क्या साथसें भक्ष्य अभक्ष्य वस्तु सभ खा य लेताथा और गो हत्या ब्रह्महत्या और सभतरांकेजीवमारणे चौरी करणी इनमें तत्पर मन वाला रहताथा ॥ ४७ नित्यं प्रति कठोर बोलना पाप करना और वडेयों का कहना नहि मान कर्के वेश्याके साथ संभोग करणेमें तत्पर होए हुए कित ना काल वीत गया ४८

सर्वबंधुविनिर्मुक्तोदुःखीवनमुपागमम् मृगमां
साशनोनित्यंधर्ममार्गांधकृद्धिटः॥ ४९ ॥ एका
कीदुःखवहुलोह्यवसन्निर्जनेवने एकदाक्षुत्परि
श्रांतोनिदाघार्तःपिपासितः॥५०॥जीर्णदेवाल
येविष्णोर्निवासंकृतवानहम् शीर्णस्फुटितसं
धानमकार्षंचास्यभोमुने ॥ ५१ ॥ पर्णैस्तृणैश्च
काष्ठैश्चगृहंसम्यक्प्रकल्पितम् भूमिर्मयासं
भोगवात्सल्याल्लिप्तामुनीश्वर ५२ ॥

फिर मैं सारे वांधवोंकर्के त्यागया हुया दुःखित होकर वनमें चलाजाता भया तहां वन के मध्यमें नित्य प्रति मृगों के मांसोंकों भक्षण कर्ता भया और धर्म मार्ग में अंधा हुया हुग ॥ ४९ ॥ इकल्ला वहुते दुःखों कर युक्त निवास कर्ता भया एक समय क्षुधाकर व्याकुल गर्मी के साथ पीडित तृषा कर्के युक्त वनमें फिरता ॥ ५० ॥ उस वनके मध्यमें एक पुराणा विष्णु देवता का मंदिरथा तिसमें जाकर मैं निवास कर्ता भया और हेमुने पुराणे तिस भज्जे टूटे होए मंदिर कों कहीं २ सें वनावता भया ॥ ५१ ॥ और पत्र काष्ट तृण मृत्ति का इनां कर्के मैंने सो घर अच्छा वनाय दिया और हेमुनीश्वर में स्त्रीके संभोग करने की इच्छा प्रीतिसें उस मंदिर में भूमि लेपनादि लगाय कर अच्छीतरां वनावता भया ॥ ५२ ॥

तत्राहंव्याधवत्तस्थौहत्वावहुविधान्मृगान् ॥ आ
जीववर्त्तनंकृत्वावासराणांचविंशतिः॥५३॥ अ
थेयमागतासाध्वीविंध्यदेशसमुद्भवा निषादकु
लसंभूतानाम्नाकोकलिनीस्मृता ॥ ५४ ॥वंधुव
र्गपरित्यक्तादुःखार्ताजीर्णविग्रहा ब्रह्मन्क्षुधा
परिश्रांताशोचंतीस्वकृतांक्रियाम् ५५ ॥ दैव
योगात्समायाताभ्रमंतीविजनेवने इमांदुःख
वार्तांदृष्ट्वाजातामेविपुलाघृणा ॥ ५६ ॥

तिस वनमें व्याध हिंसकों की न्याई निवास कर्ता भया और तहां मेन वीसादिनों तकर वहुत तरोंके मृगमार २ कर्के जीव का कर्ता भया ॥ ५३ ॥ इससें उपरंत ऐसेंही विंध्याचल में उत्पन्न होई हुई एह पति व्रता निषादों के कुलमें जन्मी होई कोकिलनी नाम कर्कें प्रसिद्ध उहां मेरे पास आवती भई ५४ केसीथी एह वांधवों नेत्यागी होई वडी दुःखित जीर्ण देहवाली हेब्रह्मन् क्षुधा तृषाकर पीडित और अपनेकरे होए कर्मों कों शोचती हुई ॥ ५५ ॥ दैव योंगसें निर्जन वनमें फिरती २ मेरे पास आई तद इसकों देखकर मेरे मन में वडी दया उत्पन्न होती भई ५६ ॥

मयादत्तंजलंचास्यैमांसंचात्यंततृप्तिदंसैषाग
तश्रमाब्रह्मन्यथापृष्टामयातथा ५७॥ न्यवेद
यत्स्वकर्माणितानिशृणुमहामुने अहंकोकिल
नीनाम्नानिषादकुलसंभवा ॥ ५८ ॥ दामुक
स्यसुताब्रह्मन्न्यवसंविंध्यपर्वते परस्वहारिणी
नित्यंसदापैशुन्यवादिनी ५९ वंधुवर्गैःप
रित्यक्तायतोहंकृतवत्पतिम् कांतारेविजनेब्रह्म
न्नूत्वत्समीपमुपागता ॥ ६० ॥

हे मुने इसकों मैनेंजलदिया और तृप्तिकें करनेवाला मांसदिया हे ब्रह्मन् जद इसका थकेवा दूर होगया तद मैनें जिस तरां पूछी ऐसेही अपने कर्म निवेदन कर्तीभई ॥ ५७ ॥ हेमहामुने जो २ कुछ इसने अपने कर्म निवेदन करे सो श्रवण कर हे ब्रह्मन् एह कहने लगी में निषादों के कुलमें जन्मी हुईहां कों किलनी मेरानामहै ॥ ५८ ॥ दामुक नामा भीलकी पुत्री हां विंध्याचलके ऊपर निवास कर्तीहां नित्यंप्रति पराया द्रव्य चुराने वालीहां और सर्वदाकाल पिशुन कठोर वोलनें वाली हां ॥ ५९ ॥ और मैंनें और कोंई पति वनाया था इसवास्ते वांधवोंने मेरेकों त्यागदियाहै अव इस वनमें फिरती २ निर्जनमें तुमारे पास आय प्राप्त भईआं ॥ ६० ॥

तस्मिन्देवालयेविष्णोरहंचेयंचवैमुने दंपती
भावमाश्रित्यस्थितौमांसाशनौसदा ६१ तत्र
देवालयेरात्रौमुदितौमांसभोजनात् वद्ध्वाव
स्त्रंचदण्डाग्रेप्रमत्तौमद्यसेवनात् ॥ ६२ अत्यं
तहर्षसंपन्नावावांसम्यगनृत्यताम् तत्काल
मेवपंचत्वमावयोरभवन्मुने ॥ ६३ आगतायम
दूताश्चपाशहस्ताभयंकराः ययुर्वद्ध्वागृही
त्वावांप्राप्तुंसंयमनींयदा ॥ ६४ ॥

हे मुने तिसविष्णु देवता के मंदिर में और एह साध्वी दंपती भावकों आश्रित होकर सर्वदाकाल मांस खाने वाले हम निवास कर्ते भये ॥ ६१ ॥ तिसदेवताके मंदिरमें एक दिन मांस खानेसें प्रसन्न चित्त होए हुए और मद्य पान करणे सें प्रमत्त क्या मदमत्त हम दोनोही ॥ ६२ ॥ अत्यंत हर्ष कर संयुक्त दंड के आगे वस्त्र बांधकर हाथ में पकड के नृत्यकर्ते भये तो हे मुने उसी नृत्यके कर्ते २ हम तत्कालहीमें दोनों मृत होगए ६३ तद उसी समें फांसियां हांथों में लिये होय वडे भयंकर रूपों वाले यमदूत आगए और जद हमारे कों बांधकर संयमनी धर्मराजाकी पुरीमें प्राप्त करने वास्तेचलेथे ॥ ६४ ॥

कर्मणातेननौतुष्टोभगवान्मधुसूदनः स्वदूता
न्प्रेषयामासऋावयोर्हरणकारणात्॥६५॥ ता
नूचुर्देवदूतास्तेहरिनामपरायणाः देवदूताऊ
चुः भोभोदूताद्दुराचाराविवेकपरिवर्जिताः ६६
मुंचध्वमेतौनिष्पापौदंपतीहरिवल्लभौ विवेक
स्त्रिपुलोकेषुसंपदामादिकारणम् ॥ ६७ ॥ अ
पापेपापधीर्यस्यतंविंद्यात्पुरुषाधमं पापेत्वपा
पधीर्यस्यतंविंद्यादधमाधमम् ॥ ६८ ॥

हेसत्तम तिस हमारे नृत्य करने कर्के भगवान् मधुसूदनजी प्रस
न्न होए हुए उसी समय हमारेकों वैकुंठमें लेजानेके वास्ते अ
पने दूतों कों भेज देते भये ॥ ६५ ॥ तद सो देवदूतही हरि
के नाम जपने में तत्पर ऋाउतेही तिन यमके दूतोंकों कहने
लगे भोक्रूर स्वभाववाले दुराचारियो विचारसें रहितो ॥ ६६
इनों दोनों निष्पापी स्त्री पुरुष कों छोडदेओ एह हरिके प्या
रे हैं इनकों क्यों पकडेया है तुसी यमके दूतहो विचारनहि
है तुमारेमें विचार त्रिलोकी संपदांका ऋादिमुख्य कारणहै तु
मक्यों नहि देखते ॥ ६७ ॥ निष्पापी पुरुषमें जिसकी पापवु
द्धिहोवे तिसकों अधमपुरुषजानना और पापकरणे वालेमें नि
ष्पाप वुद्धि होवे जिसकी तिस पुरुषकों अधमोंसें भी अधम
जानना चाहिए ॥ ६८ ॥

यमदूताऊचुः युष्माभिः सत्यमेवोक्तमेतौपात
किसत्तमौ ज्ञेयौवैपापिनौदंडद्यौतस्मान्नेष्याम
हेवयम् ॥ ६९ ॥ श्रुतिप्रणिहितोधर्मोह्यधर्म
स्तद्विपर्ययः एतच्छ्रुत्वातुकुपितादेवदूताम
हौजसः प्रत्यूचुस्तान्यमभटान्प्रभाभासितदि
गंतराः ॥ ७० ॥ देवदूताऊचुः अहोकष्टंधर्म
दृशामधर्मः स्पृशतेमहान् ॥ ७१ ॥ यूयंकिम
र्थमद्यापिकर्तुंपापानिसोद्यमाःस्वकर्मक्षयपर्यं
तंमहापातकिनोपिच ॥ ७२ ॥

इतना वचन सुनकर यमके दूत कहने लगे तुसांनें सत्यही क
थन कराहै परंतु एह दोनोंतो पापियोंमें श्रेष्ट जाननेयोग्यहैं इ-
नोंने वडे पापकरे हैं दंडके योग्यहैं इस कारणसें इनकों हम
लेजातेहैं ॥ ६९ ॥ क्योंकी वेदोंने जो कथन कराहै सोई धर्महै ति
ससें और जोहै सोसभ अधर्महै इतनावचन सुनतेही वडे तेजप
राक्रमवाले देव दूत क्रोधकों प्राप्तहोते भये ॥ ७० ॥ और अपने
तेजकर्के प्रकासितकरेहैं दिशोंके अंतर जिनोंने ऐसे सो देवदूत
यमके दूतोंकों कहते भये वडे कष्टकी वातहै जो धर्म देखने वा
लोंको वडा अधर्मभी स्पर्श कर्ताहै ७१ तुसी किसवास्ते आज
तकरभी पापकरनेकों उद्यतहो और जो महापापीभी हैं सोंभी
अपने कर्मोंके क्षीण होने पर्यंतही नरकों में स्थितरहतेहैं ७२ ॥

तिष्ठतिनरकेनूनंयावदाचंद्रतारकं पूर्वसंचित पापानांनदृष्टानिष्कृतिःक्वचित् ॥७३॥ किमर्थं पापकर्माणिकरिष्यथपुनःपुनः श्रुतिप्रणिहितो धर्मःसत्यंसत्यंनसंशयः ७४ किंत्वाभ्यांचरि तान्धर्मान्प्रवक्ष्यामोयथातथम् एषाचनर्तनंच क्रेतथाचैवध्वजंदधत् ७५ एतौपापविनिर्मुक्तौ मुंचध्वंमाविलंबथ अंतकालेपियन्नामश्रुतवंतो पिवैसकृत् लभंतेपरमंस्थानंकिमुशुश्रूषणेर ताः ॥ ७६ ॥

और तुसीं जो हो सो जितना काल सूर्य चंद्रमा तारे हैं उतना काल तुम नरकों में रहोगे तुमने पूर्व संचित पापों की निष्कृति नाहिं कहिं भीदेखी है॥७३॥अब फिरकिस निमित्त वारंवारकरेया कर्तेहो और श्रुति वेदोंने कथन करा हुया ही धर्म है एह बात सत्यहै २ इस में संशय नाहिं है ॥७४॥ परंतु हमने जो कथन करे और वर्त्ते धर्म हैं सो यथा योग्य सुनाते हैं क्या एह जोहैं सो ध्वजा कों धारण कर्के ॥ ७५ ॥ नृत्य कर्ते भये इससें एह पापों सें मुक्त होगए हैं इनकों तुम छोड देओ मत विलंब करो और अंतके समय जिस परमेश्वर के नाम कों कथन कर्ने वाला परम स्थान कों लभता है जौनसा कोइ सेवाकर्ता होवे उसकी क्या वात कहनीइ ॥ ७६ ॥

महापातकसंयुक्तोयुक्तोवाह्युपपातकैः ईक्षिता
भगवद्भक्तैर्लभंतेपरमांगतिम् ॥७७॥ मुहूर्त्तंवा
मुहूर्तार्धंयस्तिष्ठेद्धरिमंदिरे सयातिपरमंस्था
नंकिमुशुश्रूषणेरतः ॥७८॥ उपलेपनकर्तारौ
संमार्जनपरायणौ एतौहरिगृहेनित्यंशीर्णसं
धानकारिणौ ॥७९॥ जलसेचनकर्तारौदीपदौ
हरिमंदिरे कथमेतौमहाभागौनयिष्यथयमां
तिके ॥ ८० ॥

जो पुरुष महापापों कर युक्त होव और उपपातकों करके भी युक्त होवे तद भी भगवानके भक्तों करके देखया हुया परम गतिकों प्राप्त होजाता है ॥७७॥ जो पुरुष एक मुहूर्त्त दो घडियां जां एक घडी हरिके मंदिर में बैठे सो परम स्थानकों जाताहै और जो सेवामें रतहै उसकी क्या वात कहनी है ७८ ॥ एह दोनो हरिनारायणके मंदिर में उपलेपन करणे वाले हैं संमार्जन क्या शोधना पवित्र करना और भज्जा टूटा इनों ने नवीन वनाया है ॥७९॥ और जल सिंचन कर्ते भये दीप जगाते रहे इतने श्रेष्ट काम कर्णे वाले इनकों तुम कैसे लेजाते हों ॥ ८० ॥

इत्युक्त्वादेवदूतास्तेछित्त्वापाशांस्तथैवच आरो

प्यावांविमानेतुययुर्विष्णोः परंपदम् ॥ ८१ ॥

आवांसामीप्यमापन्नौदेवदेवस्यचक्रिणः भुक्त

वंतौमहाभोगान्यावत्कालंशृणुष्वमे ॥८२॥ यु

गकोटिसहस्राणि युगकोटिशतानिच उषित्वा

विष्णुभवने ब्रह्मलोकंसमागतौ॥८३॥ तावत्का

लंचतत्रापिस्थित्वेंद्रपदमागतौ तत्रापितावता

भोगंभुक्त्वादिव्यमनुत्तमम् ॥ ८४ ॥

इस प्रकार देवता के दूत कथन करके फिर हमारीयां फांसि

यां काटकर विमानके वीच हमारेकों विठायके विष्णुके परम

पदकों चले जाते भये ॥ ८१ ॥ और हम दोनोंही देवतयों के

देवता चक्र धारणे वाळेकी समीपता कों प्राप्त होगए तहां जि

तना काल हम महा भोग भोगते रहे उतना काल मेरेसें श्रव

णकर ॥ ८२ ॥ उसलोकमें हम युगोंके सैंकडे हजारां क्रोड नि

वास करके फिर ब्रह्मलोकमें आये ॥ ८३ ॥ उतनाही काल ब्र

ह्मलोकमें निवास करके महा भोग भोगकरफिर इंद्रलोकमें आ

ये उहांभी अत्युत्तम भोग उतनाही काल भोगके ॥ ८४॥

ततः पृथिवीशतांप्रासौक्रमेणमुनिसत्तम अत्रापिसंपदतुलाहरिपूजाप्रसादतः ८५ अनिच्छयाकृतेनापिप्राप्तमेवंविधंफलम् सम्यगाराध्यविश्वेशंभक्तिभावेनमाधवम् ८६ ॥ प्राप्स्यामीतिपरंश्रेयइतिमेनिश्चितामतिः एतत्सर्वंनिशम्यासौविभांडकमुनीश्वरः ॥ ८७ ॥ अभिवंद्यमहीपालंप्रययौस्वंतपोवनं यइदंपुण्यमाख्यानंसर्वपापप्रणाशनम् वाचयेच्छृणुयाद्वापिध्वजारोपणपुण्यभाक् ॥८८ ॥ इतिध्वजारोपणमहिमासमाप्तः ॥

फिर क्रम कर्के हेमुनिसत्तम पृथिवीकी स्वामिता कों प्राप्त भये इहांभी देखो हरिकी पूजाके प्रसादसें अतुल संपदाहै ॥ ८५ ॥ इसप्रकारका फलतो विनाइच्छा श्रद्धा के करणेसें हुयाहै जेकर अछीतरां से विश्वके ईशकों आराधन कर भक्तिभाव कर्के परम श्रेयकों प्राप्त होआंगा एहमेरी निश्चयवाली बुद्धिहै ॥ ८६॥ एहसारा वृत्तांत विभांडक मुनीश्वर सुनके प्रसन्न होकर अपने तपोवनमें चलाआया और राजा कों अभि वंदन कर्के ॥ ८७ ॥ जोकोई पुरुष सारे पापों के नाश करने वाले इस पवित्र आख्यानकों सुनेगाजां पढेगा सो ध्वजा झढानेका जो पुण्यहै तिसके फलका भागी होवेगा ८८ एह ध्वजारोपणकी महिमा वस्त्रोंकी महिमाके वीचही लिखीहै

भक्तमालायांवस्त्रमाहात्म्येचेतिहासमाह यःपू
र्वंवल्लभाचार्यःसंप्रदायप्रवर्त्तकः प्रोक्तस्तस्य
सुतोनाम्नाविठ्ठलेतिबभूवह ॥ १ ॥ महाभक्तो
जितक्रोधोविजितेंद्रियसंचयः मथुरायांकलौ
येनद्वापरः प्रकटीकृतः ॥ २ ॥ सोपिकृष्णाज्ञया
दारपरिग्रहमथाकरोत् तस्यपुत्राश्चसप्तास
न्नामान्येषांब्रवीम्यहम् ३ रघुनाथोघनश्यामो
यदुनाथस्तथैवच श्रीमहोकुलनाथश्चवालकृ
ष्णस्तथैवच ॥ ४ ॥

भक्तमालामें वस्त्रके माहात्म्यमें इतिहास कथन कर्तेहैं जौनसा पीछे वल्लभा चार्य संप्रदाय प्रवृत्त करने बाला कथन कराहै तिसका पुत्र विठ्ठल नाम कर्कें होताभया ॥ १ ॥ सोकैसाथा बडा परमेश्वरका भक्त क्रोध जिसने जीतया हुयाऔर इंद्रियोंका समूह जिसने जीता हुया ऐसा भया जिसने कलि युगके विषें द्वापर प्रकट कराहैं ॥ २ ॥ सोभी श्री कृष्णजीकी आज्ञा कर्कें दाराका परिग्रह कर्ता भया क्या विवाह कर्ता भया तिसकें सात पुत्र होते भये उनके अब नामकथन कर्ताहुं ॥ ३ ॥ रघुनाथ १ घनश्याम २ यदुनाथ ३ श्रीमहोकुलनाथ ४ वालकृष्ण ५

श्रीगोविंदोगिरिधरः सर्वेतेवैष्णवोत्तमाः पित्रा
ज्ञयोषुः सर्वैतेस्थानंकृत्वानिजंनिजम् ॥ ५ ॥
वज्रनाभकृतामूर्तीःसप्तसप्ताभ्यपूजयन् तेषां
नामानिवक्ष्यामिसर्वपापहराणिवै ॥ ६ ॥ गोविं
ददेवःश्रीनाथस्तथागिरिधरःस्मृतः चतुर्भुजे
तिविख्यातोहरिदेवस्तथैवच ॥ ७ ॥ श्रीमत्के
शवदेवश्चतथावंशीधरःपरम् एतन्नाम्नापूजयं
तोनिजाचारप्रवर्तकाः ॥ ८ ॥

श्रीगोविंद ६ गिरिधर ७ एह सारेही उत्तम वैष्णव होतेभये और
पिताकी आज्ञा कर्के सारेही अपने स्थान वनावतें भये॥ ५ ॥
और वज्रनाभकी मूर्तियां वनाके सातोही पूजते भये अव तिन
केनाम पापोंके हरणे वाले कहता हुं॥ ६ ॥ गोविंद १ श्रीनाथ २
गिरिधर ३ चतुर्भुज ४ हरिदेव ॥ ५ ॥ और श्रीमत्केशवदेव ६
वंशीधर ७ इतने नामों कर्के अपना आचार प्रवृत्त कर्णे वाले
ओहसातों पूजन कर्ते भये ॥ ८ ॥

सर्वैवभूवुर्विख्याताश्रद्यापिपृथिवीतले अथ
विठ्ठलाशिष्यस्यकायस्थस्यकथांब्रुवे ॥ ९ ॥ ना
थद्वारेतिविख्यातापश्चिमेवैष्णवीपुरी तत्रश्री
नाथदेवोस्तिभुक्तिमुक्तिप्रदायकः ॥ १० ॥ श्री
मांत्रिपुरदासोभूत्तत्रैकोराजकृत्सदा कायस्थः
समहाभक्तः पूजयामासवैष्णवान् ॥ ११ ॥
श्रीनाथस्वामिनेसोथप्रतिवर्षंनवंनवम् तत्त
त्कालोचितंवस्त्रंमहार्घंप्रददौसदा ॥ १२ ॥

सो सातोंही आज तकर पृथ्वीके तलमें प्रसिद्ध हैं ऐसे पर
म भक्तहोते भये अब विठ्ठल भगवान् जीका शिष्य कायस्थ
भक्त उसकी कथा कहतेहैं ॥ ९ ॥ पश्चिम दिशामें नाथद्वारा
नाम एक वैष्णवोंकी पुरीहै तिसमें भुक्ति मुक्तिके देनें वाले श्री
नाथनाम करके भगवान् जीहैं ॥ १० ॥ उसी नगरीमें राजाका
अधिकारी त्रिपुर नामक कायस्थ भक्त निवास कर्ताथा सोवैष्ण
वों साधुयोंकों पूजन कर्ता भया ॥ ११ ॥ और सोई त्रिपुरदा
सकायस्थ भक्त श्रीनाथ स्वामिकों वर्ष २ में समय २ केयोग्य
जौनसें अति सुंदर वडे मोलके वस्त्रसो देताथा ॥ १२ ॥

अथकालेनकियतात्रिपुरोनिर्धनोभवत् शोच
यित्वासदुःखेनव्रतसंरक्षणायच ॥१३॥ यथाक
थंचिदानीययेनकेनाप्युपायतः रुदन्छ्रीनाथ
मूर्त्तौतुवासःस्थूलतरंददौ ॥१४॥ पूजकेनतदा
दृष्ट्वावस्त्रंतत्स्थापितंक्वचित् नयोग्यमितिम
त्वान्यत्प्रददौवस्त्रमुत्तमम् ॥ १५ ॥ अथरात्रौ
महाशीतेतुषारैराकुलेजने ददर्शपूजकः स्वप्ने
श्रीनाथंतादृशंगृहे ॥ १६ ॥

इसी प्रकार वर्तता हुया त्रिपुरदास निर्धन होगया तद मनमें व
डा शोककरा तिसने अबक्या करां कैसे भगवान्के वस्त्र वने
व्रतमेरा दूरहोताहै इसतरां चिंतन कर ॥ १३ ॥ व्रतक्या निय
मकी रक्षाके वास्ते जिस किस उपाय कर्के होतेथे ऐसें वनाय
कर रोदन कर्ता हुया श्रीनाथ जीका भक्त मोटे कपडेके वना
यकें भगबान् जीके चढाय आया ॥ १४ ॥ पुजारीने सो वस्त्र
देखे मनमें चिंतन कराकी एह कुच्छ नहिहै इनका क्या लगा
ना भगवानको ऐसे विचार कर कही किनारे रखछोडे और
अच्छे सुंदर वनाए हुए लगाए ॥ १५ ॥ तद इसवातके पीछे
दिन व्यतीत हुया रातके समय ऐसा महाशीत पडा कितुषारों
केसाथ क्या ठंडके साथ लोकोंके व्याकुल होएहुए पुजारीस्व
प्नमैं श्रीनाथजीकों मंदिरमेंही देखता भया ॥ १६ ॥

अहोशीतातुरोस्म्यद्यनैतैर्वस्त्रैःसुखंमम त्रिपुरे
णचयद्दत्तंतदर्प्पयममोपरि १७ तदासुखंस्या
न्नोचेदीदृशीतंमांबाधतेभृशम् दृष्ट्वापिस्वप्नंनो
त्तस्थौमहाशीतभयेनसः १८ पुनःस्वप्नंतथैवा
सीद्ददर्शपूजकोनिशि ततउत्थायसहसात्रिपु
रार्पितमंशुकम् १९ ददौश्रीरंगनाथस्यशरीरे
सतुपूजकः मत्वाश्चर्यंसभक्तस्तुप्रातरुत्थायभ
क्तितः२०श्रीमत्त्रिपुरदासस्यसत्कारंकृतवान्भृ
शम् एवंभक्तिवशोदेवोभक्तदत्तमभीप्सति २१

हेद्विज अब इससमय शीतकर्के आतुरहां इनां लगे होए वस्त्रों
कर्के सुखनहि मेरेकों होताहै इसवास्ते आज त्रिपुरदासने जौ
नसें वस्त्रचढाएहैं सोमेरें ऊपर आनके देदे ॥ १७ ॥ तद मेरें
कों सुखहोताहै नाहि तो शीत वहुत पीडा करेया कर्ताहै
इस प्रकारका स्वप्न देखकर्केभी महाशीतके भय कर्के पुजारी
नाहि उठता भया १८ तद फेर उसीतरांका स्वप्न तिसकों होता
भया तिसकों देखकर रातकेसमय निद्राका त्याग कर उठके मं
दिरमें चला गया तहां जाके त्रिपुरके चढाए होए वस्त्रभगवान
जीके ऊपर चढा देताभया १९ भगवान जीके ऊपर वस्त्र चढा
यकर मनमें आश्चर्य मानता भया और प्रातःकाल उठकर्के २०
वडी भक्ति प्रीतिसें त्रिपुरदासका वडा सत्कार कर्ता भया इसप्र
कारभक्तोंके वशी भूत भगवानजी भक्तोंकी दई हुई वस्तुयोंकी
इछा कर्तेहैं २१ एह भाक्ति माहात्म्यमें वस्त्रोंकी महिमा कहीहै॥

अथ केशवसन्निधौ दीपप्रज्वालनमाहात्म्य
नरसिंहपुराणे घृतेनातिलतैलेनदीपंयोज्वाल
येन्नरः विष्णवग्रेविधिवद्भक्त्यातस्यपुण्यफलं
शृणु १ विहायसकलंपापंसहस्रादित्यसन्निभः
ज्योतिष्मताविमानेनविष्णुलोकेमहीयते अ
श्वमेधसहस्रस्यफलमाप्नोतिमानवः२ संवर्तः
देवागारेद्विजानांचदीपंदत्त्वाचतुष्पथे मेधावी
ज्ञानसम्पन्नश्चक्षुष्माञ्जायतेनरः३ भविष्यो
त्तरे प्रज्वाल्यदेवदेवस्यकर्पूरेणतुदीपकं अश्व
मेधमवाप्नोतिकुलंचैवसमुद्धरेत् ४ ॥

अब केशव भगवानजी के आगे दीप जगाने का माहात्म्य लिखतेहैं नरसिंहपुराणमें कहाहै जो कोई पुरुष घृतके साथ वा तिलोंके तेलके साथ विष्णु के आगे दीप जगाताहै भक्ति करके तिसके पुण्यकाफल श्रवणकर १ सो पुरुष मृत होए आ हुया सारे पाप त्यागकरहजार सूर्यकीन्यांई शोभा वाला होएआहुया प्रकाशमान विमानके ऊपर चढ कर विष्णुलोकमें जाकरमहिमाकोंप्राप्तहोताहै और सो मानवहजार अश्वमेध यज्ञ करनेके फलकों प्राप्तहोताहै२ संवर्त्तऋषिजीने एह वातकहीहै कि देवताके मंदिरमें औरब्राह्मणोंकेघरमें औरचुरस्तेमेंदीप दानकर्के मेधावीज्ञानकरयुक्तवडेप्रकाशवालेनेत्रोंवालाहोताहै३ भविष्यो त्तरमेंकहाहै पुरुषजोहै देवताविष्णुके आगेकपूरकादीपजगाकर अश्वमेधयज्ञकेफलकों ाप्तहोताहै और कुलकाउद्धारकताहै ४

यथैवोर्ध्वगतिर्नित्यंराजन्दीपशिखा शुभादीप
दातुस्तथैवोर्ध्वगतिर्भवतिशोभना तस्मात्सर्वं
प्रयत्नेनदीपादेयानरेश्वर ३६ पुनस्तत्रैव दी
पहर्त्ताभवेदन्धःकाणोनिर्वापकोभवेत् दीपदा
नात्परंदानंनभूतंनभविष्यति ३७ पद्मसूत्रोद्भ
वांवर्तिंगन्धतैलेनदीपके विरोगःसुभगश्चैवद
त्वाभवतिमानवः३८ इष्टव्यंदेवदेवस्यकर्पूरेण
चदीपकं अश्वमेधमवाप्नोतिकुलंचैवसमुद्धरेत् ३९

और हेराजन् जिस प्रकार शुभ क्या सुंदर जो दीपकीशिखा ऊर्ध्व गति वाली होतीहै क्या ऊपर कों होतीहै इसी प्रकार दीपदान करने वालेकी भी गति ऊपर कों होतीहै क्या उस की वडेआई संसारमें सभसें अधिक होतीहै इस कारणसें सभ तरोंकें यत्नोंसें हेनरेश्वर दीपदान करणा योग्यहै३६ फिरउसी पुराणमें लिखाहै कि जो पुरुष मंदिर सें जगते होए दीपकों उठाके लेजावे सो जन्मांतर में अंधा होताहै और कोई उसी स्थानपर जगते दीपकों वुझा देवे सो काणा होताहै क्यों कि दीपदानसें अधिक होरकोई दानन पीछेहुया ना होवेगा ३७ कमलके सूत्रकी वट्टी वनायकर सुगंधिवाला तैलपायकर दीप जगाने वाला पुरुष नीरोगहोताहै और सौभाग्यवाला होताहै ३८ और देवतैयोंके देवताजो विष्णुजीहैं तिनके आगेकचूर का दीप जगानायोग्यहै औरजोकोई जगावताहै सो अश्वमेधके फलकों प्राप्तहोताहै और अपने कुलका उद्धारकर्ताहै ३९

एतन्मयोक्तंतवदीपदानेफलंसमग्रंयदुवंशचंद्र श्रुत्वाययथावत्सततंचदेयादीपास्त्वयाविप्रसुरालयेषु ॥ ४०॥ मार्कंडेयउवाच अत्राप्युदाहरंतीममितिहासंपुरातनं दीपदानाल्ललितिकाय दवापपुरान्नृप॥ ४१ आसीच्चित्ररथोनामविदर्भेषुमहीपतिः तस्यपुत्रशतंराज्ञोजज्ञेपंचदशोत्तरं ॥ ४२ ॥ एकैवकन्यातस्यासील्ललितानामनामतः सर्वलक्षणसंयुक्तारूपेणाप्रतिमाभुवि॥ ४३ ॥

हे यादवोंके वंशमे चंद्रमाके तुल्य मैंने तुमारेकों दीप दान का साराही फल कथन करदियाहै इसकों श्रवण कर्के तैंने देवताके मंदिरमें और ब्राह्मणोंके घरसें आदलेकर जौनसें दीप जगानेके योग्यस्थानहैं उनमे दीप दान करणे योग्यहै ॥ ४० मार्कंडेयऋषिजी कथनकर्तेहैं इसदीपदानकी महिमामेंप्राचीन इतिहास कथनकर्ताहों जिसकथामेंहेराजनूपूर्वएकसमयललिता नाम वालीस्त्री दीपदान करणेंसें जिस फलकों प्राप्त होती भई ॥ ४१ ॥ पूर्व एकसमय विदर्भ देशमें चित्ररथनाम कर्के राजा होताभया तिसके घर एकसौ पंदरां ११५ पुत्र जन्मते भये ॥४२॥ और ललिता नाम्नी एकही कन्याथीसारे शुभक्या संदुर लक्षणों कर युक्त और रूपकर्के पृथिवीमे तो अप्रतिमा थी क्या उसके तुल्य किसी औरका रूपनाहिथा॥ ४३ ॥

तांददौकाशिराजायतत्पिताचारुधर्मणे शता
नितस्यभार्याणांत्रीणूयासंश्चारुधर्मणः ४४॥
तासांमध्येग्र्यमहिषीललितास्यतदाभवत् वि
ष्णोरायतनेतस्याःसहस्त्रंराजसत्तम ॥ ४५॥
प्रदीपानांप्रज्वलतिदिवारात्रमरिंदम तामिस्त्र
माश्वयुक्पक्षंशुक्लपक्षंचकार्तिकात् ॥ ४६ ॥
तस्याःप्रज्वलितंदीपमुच्चस्थानकृतंतथा त
स्मिन्कालेतथानित्यंब्राह्मणावसथेषुच ४७॥

तिसका पिता तिसकों श्रेष्ठ धर्म वाले काशि राजके ताईं विवाह देता भया और तिस धर्मात्मा राजाकी आगेही ती नसौं राणीथी ४४ तिनके मध्यमैं ओह ललिता तिसकी मुख्य प्रीति वाली राणी होती भई और तिस राणीका विष्णुकें मंदिरमैं ४५ हेराजसत्तम हजार दीप जगताथा दि न रात और हेअरिंदम आश्विनकें कृष्णपक्षसें लेकर कार्तिक के शुक्लपक्ष पर्यंत उंचे स्थान पर जगाए होए जगतेथे औरउ नाही दिनोंमैं उसके जगाए होए ब्राह्मणोंकेघरोंमैंभी दीपजग तेथे॥ ४७ ॥

नित्यंव्रजतिसायाह्नेदीपप्रेषणतत्परा चतुष्प
थेषुरथ्यासुदेवतायतनेषुच ॥४८ ॥चैत्यवृक्षे
षुगोष्ठेषुपर्वतानांचमूर्द्धसु पुलिनेषुनदीनांचकू
पमूलेषुयादव ॥४९॥ तांसपत्न्योथसंगम्यप
प्रच्छुरिदमादरात् ॥५०॥ सपत्न्यऊचुःसर्वध
र्मान्परित्यज्यललितेत्वंसदैवतु विष्णोरायत
नेसुभ्रुदीपदानपरायणा ॥ ५१ ॥ तदेतत्कथ
यास्माकंललितेकौतुकंपरं मन्यामहेत्वयाव
श्यंदीपदानफलंश्रुतम् ॥ ५२ ॥

सो ललिता सर्वदा काल सायंकालके समय नित्यहि दीपजगा
वती २ फिरतीथीसोकौनसोयों जगों पर दीप जगावतीथी सो
कहतेहैं चुरस्तामै और अंधयारीयों गलियोंमैं देवताकेमंदिरोंमें
४८ पिप्पल वोड इत्यादि वृक्षोंके नीचे गौयोंकी शालामैं और
पर्वतों के शिखरों पर और नदियों के घाटों पर खूहें के उपर
॥ ४९ ॥हेयादव इत्यादि स्थानों पर दीपजगाती फिरती थी
तब तिसकीयां सपत्नीयां उसके पास जाकर वडेआदरसें
एहबात पूछने लागियां ॥ ५० ॥ तिसकीयां सपत्नियां कहतीयां
हैं हेंललिते तूंजो सर्वदा काल और सभतरांके धर्मत्याग कर वि
ष्णुके मंदिर सें आदलेकर स्थानों पर दीप जगावतीहैं ॥५१॥
हेसुभ्रु एहवातहमारेकोंभी कथनकर वहुत हमारें कों इच्छा है
किसवास्ते कि हम एहवात मनमैं मानतियां हां कि तैनें अ
वश्य कहीं सें दीपजगानेका माहात्म्यसुनाहुयाहै ॥ ५२ ॥

ललितोवाच नाहंमत्सरिणीभद्रानचरागादि
दूषिता एकपत्न्याश्रयायाताभवत्योमममान
दाः॥ ५३ ॥ अपृथग्धर्मचरणाः शृएवंतुगदितं
मम मयावैदीपदानस्ययथावैभुज्यतेफलम् ॥
५४ ॥ हरस्यदयिताभार्याशैलराजसुतावरा
उमादेवीतिमद्रेषु देविकायासरिद्वरा ॥ ५५ ॥
नराणामनुकंपार्थंब्राह्मणैरवतारिता तीरयोरु
भयोस्तस्याक्षेत्रंक्रोशचतुष्टयम् ॥ ५६ ॥

उनका वचन सुनकर ललिता कहने लगी हेभद्राः कल्याणरू पिणीयों तुमारेसाथ मत्सर नहिकर्तीहां क्या ईर्ष्या द्वेष नहिक र्तीहां और रागादियों करके दूषित नहिहां और हम सारियांही एक पतिकीयां स्त्रियांहैं पर तुसीं मेरेकों मान वडाई देतियांहो ५३ ॥ और नहिहै भिन्नधर्मका आचरण जिनका ऐसियांतुम सभीमेरा वचन सुनों जो कुछमें कथन कर्तीहांक्या जिसप्रकार मैंनेदीप दान करनेका फलभोगीदाहै ॥ ५४ ॥हर महादेवजी की जौनसी प्यारी स्त्री शैलराजकी पुत्रीहै वहुतश्रेष्ठउमातिस कानामथासो मद्रदेशमें देविका नामक नदीरूप होंगईहै ॥ ५५ परलोकोंके उपकार के लिये ब्राह्मणोंने कैलासथें उतारीहै उ सदेविकाके दोनों किनारोंमें चार कोशका एक क्षेत्रहै ॥ ५६ ॥

तस्मिंस्तीर्थेतुपानीयंसर्वंतीर्थंप्रकीर्त्तितं त
स्मिंस्तीर्थेमृतामर्त्याः प्राप्नुवंतिशुभांगतिम्
॥ ५७॥ श्रुताभिलषिताद्दृष्टादेविकापापना
शिनी तस्यांस्नात्वासकृन्मर्त्योगाणपत्यम
वाप्नुयात् ॥ ५८ ॥ तस्यांतीर्थंनृसिंहाख्यंसर्वं
कल्मषनाशनं नृसिंहवपुषास्नानंकृतंयत्रपुरा
शुभम् ॥५९ ॥ सौवीरराजस्यपुरेमैत्रेयोमत्पु
रोहितः तस्मिंस्तीर्थेतदातेनविष्णोरायत
नंकृतम् ॥ ६० ॥

तिसतीर्थमें जितना जलहै सो साराही पवित्र तीर्थ रूपक
थनकराहै तिसतीर्थमें मृत होए हुए मनुष्यमात्र शुभ क्या उत्तम
गतिकों प्राप्त होतेहैं ॥ ५७ ॥ फिरकैसी तीर्थरूप देविकाहै जो
कोई उसकी महिमा श्रवण करे और जो उससमय स्नानादियों
की इछा रखताहै और जो कोई उसका दर्शन कर्ताहै उनके
सब पाप देविका नष्ट कर्तीहै और मनुष्य उसमें एक वार भी
स्नान करके गणोंके पति भावकों प्राप्त होताहै ॥ ५८ ॥ तिसक्षे
त्रके अंतर्गतही नृसिंहाख्य एक तीर्थहै सारे पापों के नष्ट कर
ने वाला जिसतीर्थमें नृसिंह देहको धारण करे होए भगवान
जीने पूर्वसमय शुभ स्नान कराथा ॥ ५९ ॥ सौवीरराजाथा उ
सके पुरमें मेरामैत्रेय नामक पुरोहित निवास कर्ताथा उहां उस
नगर में उसनेविष्णु भगबान् जी का मंदिर वनायाथा ॥ ६० ॥

अहन्यहनि शुश्रूषांपुष्पधूपानुलेपनैः दीपदा
नादिभिश्चैवचक्रेतत्रसर्वैर्द्विजः ॥ ६१ कार्ति
केदीपकास्तत्रप्रदत्तास्तेनचैकदा आसन्निर्वा
णभूयिष्ठादेवार्चनरतोनिशि ॥ ६२ ॥ देवताय
तनेवात्सीत्तदाहमपिमूषिका प्रदीपवर्त्तिहरणे
कृतबुद्धिर्वरानना: ॥ ६३ गृहीताचमयावर्त्तिर्द्दं
षदंशोररावच नष्टाचाहंतदातस्यमार्जा रस्य
भयात्ततः ॥ ६४ ॥

सो पुरोहित प्रतिदिन पुष्प धूप लेपनादियों कर्के और अनेक तरांके दीपदाना दियों कर्के भगवान्जीकी सेवाकर्ता भया ॥ ६१ ॥ तोएक दिन कार्तिकके महीनेमें तिसने मंदिरमें वहुत दीपजगाए और आप भगवान्जीकी पूजामें तत्पर होके रातके समय वैठता भया तद उनदीपोंमेंसें वहुत दीप निर्बाण होतेभये क्या वुझजाते भये ॥ ६२ ॥ हेवरानना: श्रेष्टमुखवा लियों उससमय में मूषकी क्या चूही तिस मंदिरमें निवास कर्तीथी तदमैंने दीपवट्टी हरणेमें वुद्धि धारणकी इनोंदीपोंमेंसें वट्टीयां ल्यावतीहां ॥ ६३ ॥ ऐसा चिंतन कर मैंने वाहर निकलके एकदीपसें वट्टी ग्रहण करी तदउसी समय मार्जारने शब्दाकिया तद तिसका शब्दसुनकर तिसके भयसैंमै भागती भईं ६४ ॥

वर्तिप्रांतेननश्यंत्यादीपकःप्रेरितोमया जज्वा
लपूर्ववद्दीप्त्यातस्मिन्नायतनेपुनः ६५॥ मृता
चाहंतदाजाताविदर्भराजकन्यका जातिस्मरा
महीपस्यमाहिषीचारुधार्मणः॥ ६६ ॥ एषप्र
भावोदीपस्यकार्त्तिकेमासिशोभनः दत्तस्या
यतनेविष्णोर्यस्येयंतुष्टिरुत्तमा ॥ ६७ ॥ यदि
वोनास्तिमात्सर्यंदीपादेयाःसदाशुभाः असंक
ल्पितमप्यस्यप्रेरणंयत्कृतंमया ॥ ६८ ॥

भागतोहोए मैने वट्टीके प्रांतकर्के दीप प्रेराहुया तिस मंदिरमें फिरप्रकाशित होके पूर्वकी न्यांई जगता भया ॥ ६५ ॥ और मैं उहां मृतहोगई उसके प्रभावसें अब विदर्भराजाकी कन्या हुईहां और पिचला जन्मभी मेरेकों स्मरणहै और श्रेष्ट धर्म वाले राजाकी राणीहां इतना प्रभाव कार्तिकमें विष्णुके आगे दीपकी ऊंची ज्योति करणेसें मेरेकों हुयाहै तो दी पजगानेसें क्या फल होता होगा ॥ ६६ ॥ और कार्तिक म हीनेमें दीप जगानेका सुंदरजो प्रभावसो कथन कराहै जिस दीपके विष्णुजीके मंदिरमैं जगानेसें भगवानजीकों इतनी प्र सन्नता होतीहै ॥ ६७ जेकर तुमारें मनमें मत्सरता नहिहै त दसवंदा काल सुभ सुंदर दीप जगाया करो क्योंकी एह प्रत्य क्षफल देखो विनाजाने चिंतन किये मेरेकों दीपकी जोतिव धानेका इतना फल हुयाहैतो जोकोई जान बूझकर जगावेगा उसकों खवर नहिक्या फल होवेगा ॥ ६८ ॥

केशवालयदीपस्यतस्येदंभुज्यतेफलं एतस्मा
त्कारणाद्दीपानहमेतानहर्निशम् ॥ ६९ ॥ प्रय
च्छामिहरेर्धाम्निज्ञातस्यचहियत्फलम् ॥ ७०
मार्कंडेयउवाच एवमुक्ताः सपत्न्यस्तादीपदा
नपरायणाः बभूवुर्देवदेवस्यकेशवस्यसदागृहे
॥ ७१ ॥ ततः कालेनमहतातेनराज्ञामहात्म
ना विष्णुलोकमनुप्राप्ताः पंचत्वंप्राप्यमानद
॥ ७२ ॥ तंलोकमासाद्यनृपेणसार्धंसाराजपु
त्रीकमलाभरूपा रेमेमहीपालसदासमेतादीप
प्रदानाच्चयवनाद्विमुक्ता ७३ इतिदीपमहिमा

एह अब जौनसा सुख भोगेआ कर्तीहां सो तो पिचले जन्म
में करे होए दीपका है जौनसा चूहीके जन्ममें कराहै इस का
रणसें दिनरात्रइनोंदीपोंकों हरिकेधाममें जगाती फिरतीहांक्यों
की इसका फलमैंने जान लियाहुयाहै ७० मार्कंडेय ऋषिजी
कथन करतेहैं एवमिति इस प्रकार कथन करियां हुईआं सा
कुणीं सो भी दीप दान करणेमें तत्पर होति यां भईआं सर्वदा
काल देवता केशवजीके मंदिरमें ॥ ७१ ॥ तिससें उपरंत हे
मानद कितनाक समय व्यतीत होए पीछे राजाके मृत होए
पीछे सहगामिनिआं होकर विष्णु लोकमें जाय कर प्राप्त हो
तियां भईआं ७२ तिस लोकमें प्राप्त होकरराजाके साथकमल
की सुंदर मुख वाली राजाकी पुत्री उहांके सुख भोग भोगती
भई ७३ एहविष्णुकेआगे दीपजगानेकीमहिमा कथन करीहै

नारायणसन्निधौ दीपप्रज्वालनमाहात्म्येचेति
हासमवतारयतिभक्तमालायां अथमाधवदास
स्यकथांवक्ष्येमनोरमांयस्याः श्रवणमात्रेणनरो
भक्तिमवाप्नुयात् ॥ १ ॥ वभूवचोत्कलेदेशेवि
प्रोमाधवसंज्ञकः स्त्रीपुत्रधनमित्राद्यैर्महासुख
समाकुलः ॥२ ॥ निनायवहुवर्षाणिवयसासज
रांगतः एकदासगतःक्वापिकार्यार्थंनगरांतरे
३॥ कृत्वाकार्यमथैकाकीसमागच्छन्पथिस्थितः
ततरूच्छायामुपाश्रित्यश्रमापनयनायसः ॥४

अव नारायणजीके सामने दीप जगाने के माहात्म्यमें इति
हास उतारतेहैं क्या कथन कर्तेहैं भक्तमालामें कहाहै अव मा
धव दास व्राह्मणकी मनकों हरणे वाली कथा कथन कर्तेहैं
जिस कथा के श्रवण मात्र कर्के पुरुष भक्तिकों प्राप्त होताहै
॥ १ ॥ उत्कल देशमें माधव नाम एक ब्राह्मण होता भया
कैसाथा स्त्री पुत्र धन मित्रादियोंके सुख कर्के आकुल क्या
परम सुखीथा ॥ २ ॥ इसी तरां तिसके वहुत वर्ष व्यतीत
होगए पर अवस्था कर्के वृद्धभी होजाता भया एक दिन
सो कार्यके निमित्त कहीं ग्रामांतरमें जाता भया ॥ ३ ॥ त
हांजाके उसने कार्य साधन करा पीछे इकला वनमें आउता
२ थकेमा दूर करणें के वास्ते एक सघनी छाया वाले वृक्षके
नीचे ठंडी छायामें वैठ जाता भया ॥ ४ ॥

अथदैववशात्तस्यसमुत्पन्नामहाव्यथा उदरे
तुक्षणेनैवमूर्छांप्रापसवैद्विजः ॥ ५ ॥ निश्चेष्टो
निपतन्भूमौमुहूर्तादुत्थितःपुनःअहोकिंजातंम
तिसश्चिन्तयामासचेतसा ॥ ६ ॥ अद्यास्मि
न्निर्जनेस्थानेक्कमेपुत्राःसुहृत्स्त्रियःदुःखितस्यच
साहाय्यंकर्तुमत्रसमागताः ॥ ७॥ प्राग्जन्मक
र्मणैवाहंजीवितोनात्रसंशयः अथवापश्यतां
तेषामयियद्भावितद्भवेत् ॥८॥

वैठने सें उपरंत दैववशथें तिसकें उदरक्या पेटमें महाव्यथा आनके उत्पन्नहुई पर जिस पीडाके साथसो द्विजएकक्षण मात्र कर्कें मूर्छाकों प्राप्तहोजाता भया॥५॥ और उसीसें निश्चेष्टक्या मृतकोंके तुल्य होके भूमि परपडगया दोघडीसें उतरंत उठ खडा हुया राजी प्रसन्न होगया तद मनमें विचारणे लगा की एह क्या हुया अवहीपीडा में मूर्छितहुया अवही राजीहोगयाहां ॥ ६ ॥ अछा जेकर एह पीडा और भी होती तद इसनिर्जन स्थान में आज मेरे पुत्र सुहृत संवंधि स्त्रियां जो इहां पीडाके युक्त मेरेकों सहायता कर्नेकों आवते किसीकों खवर नहिथी जो इहां सो मेरे पास आवते ॥ ७ ॥ अवतो किसी पूर्व जन्मके प्रभाव कर्कें जीवित होगयाहां अथवा तिनके देखतें २ मेरा जो कुछ होना सोई होनाथा उनोंने इसमें क्या करणा था ॥ ८ ॥

नत्वस्यवारणंकोपिकर्तुमर्हतिभूतले मयिप
श्यतिमेपुत्राःकतिधादुःखमाप्नुवन् ॥९॥ किंचा
वश्यंहिमर्तव्यमेकस्मिन्दिवसेमया तदाक्व
मेसुताःक्वाहंक्वायंस्नेहोगमिष्यति ॥ १० ॥
अपिचाद्यावधिकृतंसुखंवैषयिकंमया जरया
शक्यतेनैवकर्तुंतदपिवैमया ॥ ११ ॥ त
स्माद्वृथैवमोहोयंकदर्थयतिमामिह इतोपि
स्थावरावस्थायदायास्यतिमेपुनः ॥ १२ ॥

और इसमृत्युके निवारणकरणे वाला पृथिवी लोकमें कोई न हिहै क्योंकर देखो मेरे देखते २ मेरे पुत्रकितनेतरोंके दुःखों कों प्राप्तहोते भये तदमैंने क्या कर्लिया था जो उनोंनें मेरा कुछ करणाहै ॥ ९ ॥ क्या एकदिन मैने अवश्य मरजानाहै तद मेरे पुत्र कहां रहेंगे मैं कहां होवांगा एह मेरास्नेह कहांकों जावेगा ॥ १० ॥ और निश्चयकर्के अवतक मैने विषय सुखही भोगेहैं और कुछ नहिकराहै अरजरावृद्धावस्था जद होवेगी तद भी नहि करने कों मैंनेंसमर्थ रहणा ॥ ११ ॥ इसकारणसें एह मोह वृथाही मेरेकों कदर्थ कर्ताहै इस गृह में और इससें भी जद अधिक स्थावर जीर्णावस्था होवेगी तद क्या करूंगा ॥ १२ ॥

तदामंदादरोभूत्वाशोचिष्येनात्रसंशयः दृश्यते
हिमहावृद्धाःसर्वत्रशिथिलादराः ॥ १३ ॥ त
स्मादद्यैवभवनाद्बहिर्गत्वाक्काचित्स्थितः परलो
कहितार्थायकरिष्येस्मरणंहरेः ॥ १४ ॥ इति
निश्चित्यविप्रोसौमाधवःस्वगृहंगतः स्नात्वा
भुक्त्वासुतान्पत्नींसुहृदः प्राहहृष्टवत् ॥ १५ ॥
अहोशृणुतमेवाक्यंभवंतोतीवमेप्रियाः तस्मा
न्मदुक्तमेवात्रस्वीकर्तव्यंमदाज्ञया ॥ १६ ॥

तद थोडे आदर वाला होकर शोच करूंगा इसमें संशय न हिहै किस तरां की और भी वडे २ वृद्ध पुरुष घर २ मेंशिथिल थोडे २ आदरों वाले देखी दें हैं ॥ १३ इसवास्ते आजही घरसें निकलकर कहीं सुंदर एकांत स्थानमें वैठ कर पर लोकके हित वास्ते हरिका स्मरण करूंगा ॥ १४ ॥ ऐसा निश्चय मनमें धारणकर सो माधव व्राह्मण अपनेघर चला आया तहां आकर स्नान संध्यादि कृत्य करके भोजन करा पीछेसें वडी प्रसन्नता पूर्वक स्त्री पुत्र मित्र सुहृदवांधव इन सभनों कों वुलायकर कहता भया ॥ १५ ॥ हे सुहृदवांधवो तुम सारे ही अत्यंत मेरेप्यारेहो मेरा एक वाक्य श्रवण करो जो कुछ तुमारे प्रति कथन कर्ताहुं सो तुमने मानलैना एही मेरी आज्ञाहै ॥ १६ ॥

अद्यावधिगृहेस्थित्वायुष्मदर्थंमयाकृतं शुभा
शुभफलंकर्म्ममोहपाशेनचेतसा ॥ १७ अतः
परंतुस्वाहितंकरिष्यामिनसंशयः जगन्नाथं
स्मरिष्यामिस्थित्वाहंकुत्रचिद्वने ॥ १८ ॥ मृते
मयिनयूयंमेनयुष्माकमहंपुनः जीवतोप्युपकु
र्वंतिकिंचिन्नैवमृतस्यच ॥ १९ ॥ तस्मादद्यै
वगच्छामियूयंतिष्ठतस्वेगृहे इत्युक्तामाधवोवि
प्रःप्रतस्थेनिजमंदिरात् ॥ २० ॥

क्या आ जन्मसें लेकर आजतक घरमें स्थित होकर तुमारे निमित्त मोहरूपी फांसी कर्के वंधे होए मन वाले मैने शुभ अशुभ फलों वाले कर्म कियेहैं ॥ १७ ॥ अब इस कालसें उपरंत कही एकांत वनके मध्यमें स्थित होकर जगन्नाथजीका स्मरण रूप जो अपने परलोक का हित सो करूंगा इसमें कुछ संशय नहिहै ॥ १८ ॥ क्योंकि मेरे मरे होए पीछेमें तुमारा नहिहां तुममेरे नहि हो जो कोंईहै सभ जी वतोंके ऊपरही उपकार करणे वालाहै मरे होए पीछे को ई किसीका कुछ नहि कर्ताहै ॥ १९ ॥ तिसकारणसें आजही मैं घरसें चला जाताहुं तुम सारेही अपनें २ घरोंमें आ नंदकरो इतना वचन कथन करके माधव ब्राह्मण अपने घरसें प्रस्थान कर्ता भया क्या निकल पडता भया ॥ २० ॥

अथतेवांधवाःसर्वेवारयंतस्तमन्वयुः नामन्यत
सकरूपापिगतएवयदृच्छया २१ तेपिसर्वेपरा
वृत्त्यसमायातानिकेतनं माधवोपिप्रहृष्टात्मा
नीलाचलमुपागतः २२ ॥ तत्रगत्वाद्रिपार्श्वे
स्थांगुहायामास्थितोभवत् निराहारोदकोदे
वंजगन्नाथंविचिंतयन् २३ ॥ यातेदिनत्रयेत
स्यनिराहारोदकस्यच तदातुष्टोजगन्नाथःप्रस
न्नोऽभूद्द्विजस्यसः २४ ॥

इसके उठकर चलनेसें उपरंत सो सारेही पुत्र मित्रादि वांधव निवारण क्या मना कर्ते होए पीछे चलते भये वहुतवार तिनोंने कहाभी तदभी तिसने किसीकी वात नहिमानी अपनी इछा पूर्वक चलाही गया ॥ २१ ॥ तद सो सारेही परत कर अपने २ घरोंमें चले आए उधरसें माधवभी प्रसन्न मन वाला नीलाचलको चलागया ॥ २२ ॥ तहां जाकर पर्वत के पासकी गुफामें वैठजाता भया और अन्न जलका त्याग कर देवता जगन्नाथजीकोंचिंतन कर्ता भया ॥ २३ ॥ इसी प्रकार अन्न जलके खाने पीने विना तीन दिन वीत गए होए पीछे तद जगन्नाथजी तिस व्राह्मण के ऊपर आनंद युक्त होके प्रसन्न होते भये २४ ॥

चतुर्थेदिवसेराजन्निशायांशयनक्षणे लडुकानि
सुवर्णस्य स्थाल्यांकृत्वाहिपूजकाः २५ ॥ ज
गन्नाथायदत्त्वातेमुद्रयित्वाकपाटकं सुषुपुःस्व
गृहेसर्वेयथान्यदिवसेतथा २६ अथश्रीभग
वांल्लक्ष्मीमुवाचकरुणामयः इदंलड्डुकनैवेद्यंनी
त्वानीलाचलेत्वहम् २ ॥ गत्वामाधवभक्ता
यदत्त्वायास्यामिसांप्रतम् सतुसर्वेपरित्यज्य
श्रीपुत्रधनवांधवम् २८ ॥

हेराजन् निराहारही तिस कों चौथे दिन रातको सोनेके समय स्वर्ण के थालमें लडुयोंसे आदलेकर मिठाईयों का नैवेद्य पायकर भगवान जीके आगे रखकर किपाड वंद कर पुजारी अपने अपने घरोंमें जाके शयन कर्ते भये जेसे आगे रोज जातेथे तैसेही २६ ॥ इस वृत्तांतसें उपरंत श्रीभगवान जी लक्ष्मी कों कहते भये वडे दयावान् होकर कहते भये एह लडुयोंका नैवेद्य नीलाचल में लेजायके २७ ॥ माधवदास भक्त को दे कर अबही परत कर चला आउता हुं उोह मेरे निमित्त स्त्रीपुत्र धन वांधव गृह सभनों का त्याग कर मेरा भजन करने कों आया है २८ ॥

दिनत्रयंनिराहारःस्मरतेमामनन्यभाक् तस्मा
दस्मैचदातव्यमिदमस्मिन्क्षणेमया ॥ २९ ॥
इतिश्रुत्वावचस्तस्यलक्ष्मीःप्र हकृतांजलिः ना
थाहमवगच्छामिदत्त्वायास्यामिवैद्रुतम् ३०॥
इत्युक्तास्वर्णपात्रंतुसलड्डुकंकरेणसा गृहीत्वा
स्त्रीस्वरूपंचकृत्वातत्रययौरमा ॥ ३१ ॥ गत्वा
माधवदासस्यसमीपेप्राहसादरं गृहाणैवंसल
डुकंपत्याहंप्रेषिताद्भुतम् ॥ ३२ ॥

तीन दिनोंसें मेरेकों निराहार होके अनन्य भागी होके स्मरण कर्ताहै इसकारणसें इसी समय मेंनेउसकों एह नैवेद्य देनेयोग्यहै ॥ २९ ॥ एहवचन तिनका श्रवण कर हाथजोड कर लक्ष्मीकहती भई हेनाथ मेंजातीहां शीघ्रतिसकों देकर चली आवतीहां ॥ ३० ॥ ऐसे कथनकर समेत लड्डुयों के पात्र उठायकर और सामान्य स्त्रीका रूप धारण कर लक्ष्मी नीलाचलमें चलीजाती भई ॥ ३१ ॥ तहां माधव दासके पास जाकर आदर पूर्वक कहने लगी हेभक्तपुरुष एह लड्डुयों के सहित ही पात्र ग्रहण कर मेरेकों स्वामीने भेजाहै को उसकों जाके भोजन दे सोवहुत दिनसें भूखाहै ॥ ३२ ॥

तवभोजनदानायेत्युक्त्वातद्भाजनंरमा लड्डु
पूर्णंचतस्याग्रेप्रणिधायसमागता ॥ ३३ ॥ त
दामाधवदासोपिमत्वाहादिहरेःकृपां बुभुजेता
निसर्वाणिपात्रंतत्रैवस्थापितम् ॥ ३४ ॥ अथ
प्रातः समुत्थायजगन्नाथस्यपूजकाः पूजांकर्तुं
मठंजग्मुर्ददृशुर्नैवभाजनम् ॥ ३५ ॥ नलड्डुकं
तदोद्विग्नाः कश्चौरोत्रसमागतः कपाटस्ताद्द
शोलग्नोऽस्माभिरुद्घटितस्तथा ॥ ३६ ॥

इस वास्ते तेरेको भोजन देने वास्ते आई हां ऐसे कथन कर ति स लडुयोंके पात्रकों उसके आगे रखकर चली आई ॥ ३३ ॥ तद उस समय माधवदास भी मनमें हरिकी कृपा मानता भया क्योंकी इसवख्त हरिसें विना कौन खवर लेनेवाला है ऐसाजा नकर तिस सारे नैवेद्य के लडुयोंकों खायकर पात्र उसी स्थानमे रखदेताभया ॥ ३४ ॥ इससें उपरंत प्रातः काल जगन्नाथके पुजारी उठकर पूजाकरने कों मंदिरमें आवते भये और किवाड खोलकर देखने लगे तौरातके नैवेद्य वाला थाल नहि देखा ३५ और लडुयोंको भीनहिं देखा इससें उद्वेग कर युक्तमनवाले होए हुए मनमें विचारणे लगे की इहां कोन कोई चौर रात कों आया जोनसा कोई कपाट लगे होए थाल चुराके लेग या कपाट जैसेबंदकरयाथा ऐसेंही लगेहोए मैने खोलेहैं ॥ ३६

कथंचौरःसमायातोमहाश्चर्यमभूदिदं सर्वमे
तत्तथाराज्ञेदुःखिताअब्रुवन्जनाः ॥ ३७ ॥
राजापिचारान्सर्वत्रप्रेषयामासचिंतितः पूज
काअपिसर्वत्रचौरंज्ञातुंसमंततः ॥३८॥ गता
अन्वेषमाणास्तेवनेग्रामेचपर्वते नीलाचलंग
ताःकेचिच्चौरदर्शनकांक्षिणः ॥ ३९ ॥ ददृशुः
पर्वतेतत्रमाधवंमीलितेक्षणं तदग्रेस्वर्णपात्रंत
द्दृष्ट्वासर्वेपिहर्षिताः ॥ ४० ॥

कपाट लगे होए अंदर मंदिर के चौर कैसे आया वडेही आ श्चर्यकी वातहै एह वात दुःखित होए हुए पुजारी लोक राजा के तांई कहते भये ॥ ३७ ॥ इतनी वात सुनते ही चिंता युक्त होएआ हुया चारो ओर हलकारे अपने भेजदेता भया और पुजारी लोक भी चौर कों पकडने के लिये शहरके चारो पासेयोंमें फिरने लगे ॥ ३८ ॥ तद सो पुजारी लोग ढूंडते २ वन २ पर्वत ग्रामोंमें फिरते २ नीलाचल पर कितनेक जाय निकले ॥ ३९ ॥ तव तहां क्या देखतेहैं नीलाचल की गुफामें नेत्रमीट कर ध्यानलगाए होए माधव दास वैठा हुया देखा और तिसके आगे स्वर्णकाथालभी देखा वडेहर्ष आनंद कों प्राप्त भये की चोरतो पकडा गया ॥ ४० ॥

अहोऽनेनैवनुहृतंपात्रंदेवस्यनान्यथा इत्युक्त्वा
जगृहुःपात्रंववंधुर्माधवंरुषा ॥ ४१ ॥ नीत्वा
याताःस्वनगरेताडयामासकोपिताः माधव
स्तुततस्तूष्णींस्थितःप्राक्कर्मजंस्मरन् ॥ ४२ ॥
पृष्ठभग्नास्त्वचस्तस्यशोथश्चताडनादभूत् दया
लुरेकस्तन्मध्येवारयामासताडकम् ॥ ४३ ॥
अथसायंजगन्नाथंतर्पयंतोजनास्तदा पृष्ठमू
र्तेस्त्वचोभग्नाश्शोथवैदद्दशुर्हरेः ॥ ४४ ॥

अहो देखो देवता जगन्नाथजीका पात्र हालियाहै ऐसे आपसमें कथनकर स्वर्णके थालकोंउठाय लिया और उसमाधवदासकों क्रोधकर वांधलेते भये४१फिर तहांसें ही कोपवाले तिसकोंताडना करते अपनी पुरीमें चले आवते भये माधव जौनसाथा सोचुपहोकर स्थिरहोजाताभया नकिसीकोकुछ अच्छी बुरीकहताकी मेरेकों किसवास्ते मारतेहोमैंने क्याःगुना कियाहै ऐसभीनहिकहताभया क्यों पूर्व जन्मके कर्मकाकोई फलएहभीआयगयाइस वातकों स्मरणकर्ता हुया४२और वहुत ताडना करणेसें तिसका पीठमें सोजाहोगया और ऊपरका मांसउडगया तददयावान् एक पुरुष मारणे वालेकोंहटायदेता भयाकी अव और इसकों मतमार ऐसे कहके छुडाया और कहीं कैदकररखा ॥ ४३इससें उपरंत सायंकालके समय पुजारी लोक जगन्नाथजीकी पूजाकर्ते होए शे ष उतारने के समय मूर्तिकी पीठमें मांस उखडाहुया और पीठ सोजी हुई हरिकी देखते भये ॥ ४४

दृष्ट्वासर्वंमहाश्चर्यंचिंतयातेसमन्विताः किंजा
तमितिशोकेनत्यक्ताशनजलानिशि ॥ ४५ ॥
सुषुपुः खिन्नमनसस्ततःश्रीपुरुषोत्तमः स्वप्ने
तान्प्राहभोविप्रामाधवोतीवमेप्रियः ॥ ४६ ॥
नीलाचलेस्थितस्तस्मैसलड्डुकंतुभाजनं मयैव
प्रेषितंतस्मान्नायंचौरोहिमाधवः ॥ ४७ ॥
तस्ययत्ताडनंपृष्ठेकृतंपुष्पाभिरत्रभोः तेनमेपृ
ष्ठदेशेचशोथोभेदस्त्वचामभूत् ॥ ४८ ॥

इस प्रकारका महाश्चर्य सारेही पुजारी देखकर चिंताकर युक्त होजाते भये श्रौर मनमें विचारतेहैं कीएहक्या हुया ऐसेंही शोककर युक्त रातके समय अन्न जलका त्याग करते भये ॥ ४५ श्रौर ऐसेही विमन वाले होए हुए शयन करते भये तद श्रीपुरुषोत्तमजी स्वप्नमें तिनों व्राह्मणोंको कहते भये हेविप्राः तुमवात सुनों माधवदास मेरा वहुत प्यारा भक्तहै ॥ ४६ ॥ नीलाचल परवैठा हुश्रा वहुतदिनोंका भूखा प्यासा तिसकों समेत लड्डुयों केथालमैंने भेजाथा सो चोर नहिंहै तुमनेजो पकडाहै ॥ ४७ ॥ श्रौरजो तुमनें मिलकर उसकी पीठमें जौनसा ताडनकराहै उस करकें मेरी पीठकी त्वचा टूटगईहै श्रौर सोजाभी होगया क्योंकी सो भक्त मेराही दूसरा देहहै ॥ ४८ ॥

नान्यःकोपिचमेजातोदोषःप्रेक्षतप्रदः एवंदृ
ष्ट्वानिशिस्वप्नंपूजकास्तत्क्षणंशुभं॥४९॥तथा
यतंमहाभक्तममुचुर्बंधनाद्द्रुतं मुक्तास्प्रणेमु
स्तेसर्वेस्नापयित्वाशुभांभसा ॥ ५० ॥ भोज
यित्वातिभक्त्यातंददुरास्तरणंशुभम् उपचारा
न्प्रचक्रुस्तेशोथक्षतानिवृत्तये ॥ ५१ ॥ एवंमा
धवदासस्तुभक्तस्तत्रबभूवसः तत्रैवनिवसन्दे
वंचिंतयानोदिवानिशम् ॥ ५२ ॥

हेविप्राः औरकोई मेरेकों क्षत देनवाला दोष नहुयाहै इसप्रका
ररातके समय पुजारी सुंदर स्वप्न देखकर तत्क्षण उठखडे होते
भये ॥ ४९ ॥ और तिस महा भक्तकों भीउठाकर शीघ्रबंधनों
सें खोलते भये खोलके तिसको सभनोंने प्रणाम करी उसी स
मय अच्छे जलके साथ स्नान कराय कर पीछे ॥ ५० ॥ भोजन
कराया और सुंदर विछौनेयों पर सुवाल दिया फिर उसकी पी
डा निवृत्तीके वास्ते उपचार कया मर्दनादि कर्ते भये ॥ ५१ ॥
इस प्रकार माधवदास भक्त तिसपुरुषोत्तम क्षेत्रमें होता भया औ
रातिस क्षेत्रमें हीदिन रात भगवान्जी का चिंतनकर्ता हुया नि
वास कर्ता भया ॥ ५२ ॥

निनायबहुवर्षाणिपलवन्मुदितात्मना एकदा
माधवोदासोनिवसंस्तत्रवैपुरे ५३भिक्षामादा
यभोक्तव्यमितिकृत्वाव्रतंतुसः पर्यटन्नगरेनि
त्यंभिक्षामादायसर्वतः ॥ ५४ ॥ भुक्त्वोवाससु
खीतत्रैकस्मिन्दिवसेतुसः स्थितैकातत्रनग
रेमहाचंडीतिकर्कशा ॥ ५५ ॥ महाधनवतीद
त्ता दानभोगविवर्जिता तस्यागृहेगतोभक्तो
माधवोन्नंचभिक्षितुं ॥ ५६ ॥

उसनगरीमें प्रसन्न मन वाला एक पलकी न्यांई बहुत वर्ष व्यतीत कर्ता भया ऐसेही माधवदास एकदिन तिस पुरमें निवास कर्ता हुया एह मन विषें धारण कर्ता भया ॥ ५३ ॥ अब भिक्षा मांगकर भोजन करणा चाहिए एह व्रत धारण कर-नित्यं प्रति भिक्षा मांगनेकों उस नगरीमें प्रतिदिन फिरता भया ॥ ५४ ॥ भिक्षा मांगकर ल्याउनी भोजन कर निवास कर्ता-भया ऐसेही एक दिन भिक्षा मांगता २ एक बडे धनवाली वृद्धा स्त्रीथी उसके चला गया सो कैसीथी बडे क्रोध कर युक्त कर्कशा कठोर स्वभाव वाली निवास कर्तीथी उसके चला गया ॥ ५५ ॥ बडे धन वालि तिसकों दान भोग कर वर्जित देखकर तिसके घरमें माधव दास भक्त भिक्षामांगनेकों चला गया ॥ ५६ ॥

भिक्षांचमांप्रदेहीतिप्रोच्चचारविदूरतः श्रुत्वा
पिचनशुश्रावलिंपतीचांगनंनिजम् ॥ ५७ ॥
पुनः प्रोवाचदेहीतिश्रुत्वासाथप्रदुद्रुवे उत्था
यदक्षिणंहस्तंलेपन्यासहितंरुषा ॥ ५८ ॥ त
तोदृष्ट्वातुतांचंडींहंतुकामांभयंकरीं पलायि
त्वागृहद्वाराद्बहिरागत्यसंस्थितः ॥ ५९ ॥ त
त्रापिसासमायातांहंतुंतंसोपिचद्रुतं पलायनं
चकाराथसातुतामेवलेपनीं तमुद्दिश्यप्रचिक्षे
पसातुतामेवलेपनीम् ६० ॥

घरके अंदर जायकर भिक्षा मागनेकी अवाज कर्ता भया दूर सें खडा होकर तद सो वृद्धा अपने घरका अंगन लिपती होई अवाज सुनकर मौन होरहती भई ॥ ५७ ॥ फिर तिस ने कहा माई मेरेकों भिक्षादे वहुत चिरसें खडा होएआदा हां इतनी वात सुनतही सो वृद्धा लेप देने वाले कपडे के खंडक समेत दहना हाथ उठायकर उसके पीछे मारणेकों दौडी ॥ ५८ ॥ तद सो माधव मारने की कामना वालि भयंकरी कों देख कर भाग करकें द्वारसें वाहर चला आके स्थित होगया ॥ ५९ ॥ सो वृद्धा उसके मारणे वास्ते शीघ्र वाहर भी आवती भई तद माधवदास उहांसें भी भागजाता भया तद उस वृद्धानें लेपिनी कों माधव का उद्देश करकें पीछे सुट देतीभई क्या कहती भई की लेजा इसकों ॥ ६० ॥

माधवस्तुततः शीघ्रंपरावृत्त्यसलेपनीं गृही
त्वादुद्रुवेभक्तः कर्कशापिन्यवर्तत ॥ ६१ ॥गा
लिदानंप्रकुर्वतीक्रोधेनस्फुरिताधरा अथमाध
वदासस्तुसाधुभावात्सतांस्त्रियम् ॥ ६२ ॥ उप
कर्तुमनश्चक्रेगत्वोदधितटेस्वयम् प्रक्षालनैश्च
वहुभिःशुक्लीकृत्यचलेपनीम् ॥ ६३ ॥ शोषयि
त्वातपेवर्तीर्विधायवहुशस्ततः विक्रीयकातिचि
त्तस्यक्रीत्वाज्यमार्तिकांस्ततः ॥ ६४ ॥

माधव दास भक्त परतके शीघ्र तिस लेपिनी कों ग्रहण कर्के फिर दौडकर चला जाता भया तद सो कर्कशा स्त्री भी हट कर पीछेसें चलीजाती भई ॥ ६१ ॥ गालियां दियाकर्ती औ र और क्रोध कर्के ओष्ठ जिसके फरकरहे इससें उपरंत सो भक्तमाधवदास श्रेष्ट अछे स्वभावसें तिसस्त्रीके ऊपर उपकार कर्णेकी इच्छा कर्ता भया ॥ ६२ ॥ तो समुद्रके किनारे परजा यके तिस लेपिनी कों वहुत वार धोय २ कर श्वेत रंगकी क रलेता भया ॥ ६३ ॥ फिर तिसकों धूपमें सुकायकर तिस कीयां वहुत वटियां वनायकर कुछ अषनेसें वेचके उसका घृ त लिया फिर घृतके दीप वनावता भया ॥ ६४ ॥

दीपान्निर्माय संध्यायां श्रीजगन्नाथमंदिरे प्रक्षा
ल्य प्रददौ प्रेम्णा संकल्पं मनसाकरोत् ॥ ६५ ॥
तस्यास्त्वं भो जगन्नाथ सुप्रसन्नो भव प्रभो अज्ञा
नतिमिरांधाया ज्ञानं भवतु निर्भयम् ६६ ॥ दा
ने तस्या मतिर्भूयादिह जन्मनि सर्वदा उपभोगो
धनस्यास्या दीपदानप्रसादतः ॥ ६७ ॥ एवं
संकल्प्य प्रददौ दीपांस्तत्र मठे द्विजः तत्क्षणादेव
तस्यास्तु पश्चात्तापो महानभूत् ॥ ६८ ॥

वहुत सुंदर दीप वनायकर उसकपडे की वट्टियां और घृत पायकर सायंकालके समय हाथपैर धोयकर श्रीजगन्नाथजी के मंदिरमें जायकर वडे प्रेमके साथ मनकर्के ऐसे संकल्प कर्ता भया ॥ ६५ ॥ हे श्रीजगन्नाथ वडे क्रोध वाली दानभोग रहित धनपदार्थ कर्के युक्त जो सोवृद्धा है हे प्रभो तिसके ऊपर प्रसन्न हो और अज्ञानतिमिर क्या है अज्ञान रूपी अंधकार तिसकर्के अंधाकों निर्भयज्ञान होवे तुमारी कृपासें ॥ ६६ ॥ और जवतक सो जीवतीहै तवतक उसकों इस जन्ममे दानकरणेमें वुद्धि उत्पन्न होवे और इसदीप दानके प्रसादसें धनका उसकों उपभोग होवे अर्थात् जितना उसके पास धनहै उसकों कुछखाये कुछतुमारे निमित्त दानकरे ॥ ६७ ॥ इस प्रकार सो व्राह्मण मनकर्के संकल्पकर मंदिरमें दीपों कों जगावताभया तद भगवानकी कृपासें उसीसमय धरमें वैठी होई तिसकों मनमैं वहुतएक पश्चात्ताप उत्पन्न होता भया ॥ ६८ ॥

नददामिविशिष्टेभ्योनभुंजामिस्वयंपुनः अद्यै
कःसाधुरायातस्तस्मैगालिमदामहम् ६९ ॥
अतोमत्सदृशीलोकेनान्यादुर्भाग्यशालिनीधि
ग्मांमूर्खांयदेतावद्धनंप्राप्यापिपुष्कलम् ७०
नदीयतेभुज्यतेवातस्माज्जन्मैवमेमृषा इतिचिं
तापरारात्रौलेभेनिद्रांनकर्कशा ॥ ७१ ॥ प्रात
रुत्थायसंमार्ज्यगृहद्वारंतथांगने अन्नादिवस्त्र
द्रव्याणिनिष्कास्यगृहात्तुसा ॥ ७२ ॥

कथा पश्चात्ताप करने लगी देखो मैं कैसीहां नातोमैं इस धनकों दीन अनाथ साधु अभ्यागतोंकों देतीहां नामैं आप खातीहां आज एक साधु आया उसकों भी मैने गालियां दियां तिरस्कार किया ॥ ६९ ॥ इस कारणसें जानोंकी मेरे जैसी संसारमें दुष्टखोटे भाग्यो कर्के युक्त नहि होवेगी धिक्कारहै मेरेकों २ जोंमैं इतने वहुत धनकों प्राप्त होकर्के भी कुछ नहि कर्तीहां ॥ ७० ॥ नामैंनें खाया नालाया नादिया नलिया इसथैं मेरा जन्म ही वृथाहै इस प्रकार की चिंतामें तत्पर होईं हुई रातके समय निद्राकों नहि प्राप्त होती भई ॥ ७१ ॥ वडेक्लेश कर युक्त जद रात व्यतीत भई प्रातः काल उठके सो कर्कशा अपनें घरके अंदर वाहर सारेही सोतकर गोहेका लेपन देती भई फिर अंदरमें जो कुछ अन्न वस्त्र भांडें भूषण रुपैये सारेही कुछ निकालकर वाहर स्थापन कर्तीभई ॥ ७२ ॥

दीनानाथदरिद्रेभ्योसाधुभ्यःप्रददौमुदा चिंतयामासमनसाकदापश्यामिताद्दशम् ॥ ७३ ॥ यस्मैगालिर्मयादत्तायाचमानायसाधवे मिलिष्यतियदादैवात्तोषयिष्यामिसर्वथा ॥ ७४ ॥ एवंचित्तेचिंतयंतीद्वारदेशेसमागता अथमाधवदासस्तु ज्ञातुंतच्चेष्टितंपुनः ॥ ७५ ॥ आयातस्तेनमार्गेणकर्कशापिददर्शतंदूरादागत्यन्यपतत्पादयोरतिभक्तितः ॥ ७६ ॥

और मनका संकल्प करा और जो उससमय दीन अनाथदरिद्री अंधा साधु ब्राह्मण अभ्यागत आवताभया सभकों मनमांगेया हुया देती भई और मनमें ऐसे चिंतन कर्तीभई की तिस साधू कों कद देखूंगी ॥ ७३ ॥ भिक्षा मांगते होए जिसकों मेने पूर्व दिनमें गालियां दईआंथी आज जेकर दैवयोगसें मिलजावे तद तिसकों तो अछीतरांसें प्रसन्न करूंगीं जो कुछ मांगेगा सोई वस्तु देवूंगी ॥ ७४ ॥ इस प्रकार मनमे चिंतन कर्ती होई द्वार देशपरचली आई की नजाने कहीं आवता जाता मिल जावे इतनेंमें माधव दास भी तिसका चरित्र देखने कों चला आया ॥ ७५ ॥ तिसमार्ग कर्के आवता हीथा तद दूरसेंही तिसें कर्कशा वृद्धाने देखां दौडकर बडी भक्तिसें तिसके पादोमें डिग कर्के शिर रखकें प्रार्थना कर्तीभई ॥ ७६ ॥

क्षमस्वाद्यापराधम्मेमूर्खायास्तुदयानिधे यत्पू
र्वेद्युर्मयादत्तागालयस्तेनिरागसे ७७ अथा
गच्छगृहेनाथदयांकुरुममोपरि इत्युक्तातंकरे
धृत्वानिनायनिजमंदिरम् ॥ ७८ ॥सोपिमत्वा
दीपदानमाहात्म्यंतद्गृहेगतः तद्दिनेसर्वमन्ना
दिस्वीकृत्यप्रददौस्वयम् ॥ ७९ ॥ उवाचतस्यै
मातस्त्वंसाधुसेवापरायणा हरिभक्तिरताभूत्वा
समुद्धरनिजंकुलम् ॥ ८० ॥

क्या हे दयानिधे में वडा मूर्खहां मेरे अपराधों कों आप क्षमा करो जो मेंने विना अपराधके तुमारे कों गालियां दईयां सिंयां सोई वडा अपराध हुया सो क्षमाकरो ॥ ७७ ॥ और हे नाथ मेरेपर दया कर्के आज घरमें चलो ऐसा कह कर वलात्कारसें हाथ पकडकर अपने घरके अंदर लेगई ॥ ७८ ॥ सो माधव दासभी दीपदानकी महिमाका प्रभाव जाणकर तिस के घरमें चलागया उस वृद्धाने जो कुछ निकाल रखेया हुयाथा सो साराही कुछ उसकों देदिया उसनें भी अंगीकारकर लिया फिर आपवांट कर देंदेता भया ॥ ७९ ॥ फिर तिसकों कहने लगा हेमातः तूंआज सें लेकर साधुयों ब्राह्मणों की सेवा करेया कर और नारायणजी की भक्ति में तत्परहो कर्के अपनेकुलका उद्धार कर ॥ ८० ॥

इत्युक्त्वानिर्ययौतस्यागेहात्समाधवोद्विजः ब्रा
ह्मणीसापिसत्कर्मनिरताभक्तिमत्यभूत् ॥ ८१
भुक्त्वाभोगानशेषांश्चमृताहरिपुरंययौ इतितेक
थितंदीपमाहात्म्यंहरिभक्तिदम् ॥ ८२ ॥ इति
श्रीदीपदानमाहात्म्यम्

इसतरां की शिक्षा करकें माधव दास ब्राह्मण तिसके घरसें नि कल आवता भया और उसके पीछे सो ब्राह्मणी अच्छे श्रेष्ठक र्ममें भक्ति वाली होति भई ॥ ८१ ॥ इस लोकके सुखभोग भ क्तिके प्रभावसें भोगकर मृत होंइं हुई हरिके पुर वैकुंठ लोक में चली जाती भई एह तेरे प्रति हरिकी भक्ति देने वाला भ गवानजीके आगे दीप जगानेका माहात्म्य कहाहै ८२ एह भ गवान जीके आगें दीप जगानेकामिहिमा समाप्त भई है ॥

अथ विष्णोराराऽर्तिकमाहात्म्यं भविष्यत्पुरा
णे वहुवर्तिसमायुक्तंज्वलंतंकेशवोपरिकुर्यादा
रार्तिकंयस्तुकल्पकोटिंदिवंवसेत् १ ॥ नीराज
नंचयः पश्येद्देवदेवस्यचक्रिणः सप्तजन्मभवे
द्विप्रोह्यंतेचपरमंपदम् २ कर्पूरेणचयः कुर्या
द्भक्त्याकेशवमूर्द्धनि आरार्तिकंमुनिश्रेष्ठप्रवि
शेद्विष्णुमव्ययम् ॥ ३ ॥ मंत्रहीनंक्रियाहीनंय
त्कृतंपूजनंहरेः सर्वंसंपूर्णतामेतिकृतेनीराजने
हरौ ॥ ४ ॥

अव विष्णु भगवानजीको आर्तिकरणेकी महिमा लि० भविष्य
त्पुराणमें कथन कराहै वहुत घृतकीयां वट्टियां जिसकों लगी
दीयां होवें ऐसीप्रकाशमान ज्यावलती होई केशवजी के ऊपर
जोकोई आर्ति कर्ताहै सो कल्प'कें क्रोडां स्वर्गमें निवासकर्ताहै
१ और जोकोई देवतयोंके देवता चक्रवाले विष्णुभगवानजी
की आर्तिकों देखताहै सोसात जन्म ब्राह्मण होताहै फिर परम
पदकों प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ और जोकोई पुरुष भक्ति प्रेम करकें
कपूरके साथ भगवानजी के शिरमे आर्ति कर्ताहै हे मुनियों
में श्रेष्ट सो अविनाशि विष्णुजीमें प्रवेश कर्ताहै ॥ ३ ॥ जौन
सानारायणजी का पूजन मंत्रों करकें और क्रिया करकें हीनक
राहै सो सभनीराजन के करे होए संपूर्णताकों प्राप्त होताहै ४ ॥

नीराजनजलंयत्रयत्रपादोदकंहरेः तिष्ठतेमुनि शार्दूलवर्धंतेतत्रसंपदइति ५ पाद्मेकार्तिक माहात्म्ये आरार्त्तिकंहरेर्यस्तुसकर्पूरंसुवर्तिकं कुरुतेमोक्षमाप्नोतिकुलायुतसमन्वितः ६ स्कांदे वहुवर्तिसमायुक्तांज्वलंतींकेशवाग्रतः सवैष्णवोनरोज्ञेयोविमुक्तोनरकार्णवात् ७ सनत्कुमारसंहितायां कुर्यादारार्त्तिकंयस्तुकल्पकोटिंदिवंवसेत् कर्पूरेणचयः कुर्याद्भक्त्याकेशवमूर्धनि ॥ ८ ॥

जिस स्थानमें नीराजन सें उपरंत भगवानजीके शिरपर वारेया हुया जल और पादोंका जल स्थित होताहै तहां २ संपदाव धतीयांहैं ॥ ५ ॥ एहपद्मपुराण के कार्तिक माहात्म्यमें कहाहै जोपुरुष सुंदर वट्टियों वाली कर्पूरके सहित भगवानजीकों आर्तिकर्ताहै सो अयुत कुलके सहित मोक्षकों प्राप्त होताहै ॥ ६ ॥ स्कंदमें कहाहै वहुत वट्टियों करके युक्त आर्ति कों जो केशवजीके आगे कर्ताहै सो नरक समुद्रसें मुक्त होताहै ॥ ७ ॥ सनत्कुमार संहितामेंलि॰ जोकेशवजी के मूर्द्धमें कपूरके साथ आर्तिकर्ताहै सो क्रोड कल्प स्वर्गमें निवास कर्ताहै ॥ ८ ॥

नीराजनावलिर्विष्णोर्यस्यगात्राणिसंस्पृशेत्
यज्ञलक्षसहस्राणांलभतेस्नानजंफलम् इति
॥ ९ ॥ पाद्मेपातालखंडे आरार्तिकंहरेर्यस्तुस
कर्पूरंप्रजागरे कुरुतेमोक्षमाप्नोतिकुलायुतसम
न्वितः ॥ १० ॥ इतिआरार्तिककरणमाहा
त्म्यंसमाप्तम ॥

जोकोई पुरुष विष्णुकी करीहोई आरतिकी पंक्तिकों गात्रों में स्पर्श कर्ताहै सो पुरुष यज्ञों के हजारों लाखोंके फलकों प्राप्त होताहै ॥ ९ ॥ पद्मके पाताल खंडमें लि० ॥ जोकोई पुरुष जागरण के दिन हरिकी आरति कर्ताहै सो अयुत कुलके सहित मोक्षकों प्राप्त होताहै ॥ १० ॥ एह आरति की महिमा समाप्त हुई है ॥

अथविष्णोर्निर्माल्यग्रहणमहिमा क्रियायोग
सारे मस्तकेदृश्यतेयस्यविष्णोर्निर्माल्यमु
त्तमम् सविज्ञेयोद्विजश्रेष्ठसाक्षादेवहरिः स्व
यम्॥ १ ॥ दुर्लभंविष्णुनिर्माल्यंपवित्रंपापना
शनं गृह्णंतित्रिदशास्सर्वेमानुषाणांचकाक
था २ जैमिनेतुलसीपत्रंयस्तुजिघ्रतिवैष्णवः
तस्यदेहांतरस्थायिसर्वंपापंविनश्यति ॥ ३ ॥
तुलसीपत्रगंधस्तुप्रविशेद्यस्यनासिकां आप
दस्तच्छरीरस्थाःसद्योगच्छंतिसंक्षयम् ॥ ४ ॥

अब विष्णुके ऊपर चढे होए निर्माल्य धारण की महिमा लि० क्रिया योग सारमें कहाहै जिस पुरुषके मस्तकमें उत्तम विष्णु का निर्माल्य देखनेमें आवे हे द्विज श्रेष्ट सो साक्षात् हरिका रूप जानना ॥ १ ॥ दुर्लभ जौनसा पवित्र पापों के नाशकरणेवाला विष्णुका निर्माल्यहै तिसकों सारेदेवता ग्रहण कर्तेहैं मनुष्योंकी तोक्या वातहै ॥ २ ॥ हे जैमिने जो वैष्णव पुरुष निर्माल्यकी तुलसीकों सूंघताहै तिसके देहके मध्यमें स्थित जौनसें पापहैं सों सारेही नष्ट होजातेहैं ॥ ३ ॥ और जिस किसी पुरुषकी नासिकां में तुलसी के पत्रकी सुगंधि प्रवेश कर्तीहै उसके शरीर मे स्थित जो आपदां हैं सो सभशीघ्र नष्ट होजातियांहैं ॥ ४ ॥

कृष्णोत्तीर्णंतुनिर्माल्यंयस्यांगंस्पृशतेमुने सर्व
रोगैस्तथापापैर्मुक्तोभवतिमानवः ॥ ५ ॥
विष्णोर्निमाल्यशेषेणयोगात्रंपरिमार्जयेत् दु
रितानिविनश्यंतिव्याधयोयांतिखंडिता ॥ ६ ॥
शंखोदकंहरेर्भक्त्यानिर्माल्यंपादयोर्जलम् वंद
नंधूपशेषस्यब्रह्महत्यापहारकम् ॥ ७ ॥ स्कां
दे मुखेशिरसिदेहेतुनिर्माल्यंपादयोर्जलं ह
रेर्देहपरिभ्रष्टंविभृयान्मुनिसत्तम ॥ ८ ॥

हेमुने जिस पुरुषके कृष्णजीके ऊपरसें उतरा हुया अंगोंमें स्प
र्श कर्ताहै सों सारेरोगों करकें और पापों करकें मुक्त हो
ताहै ॥ ५ ॥ और जो कोई पुरुष विष्णुके उतरे होए नि
र्माल्य शेष करकें अपने अंगों कों मार्जन कर्ताहै तिस्कें पाप
और व्याधियां खंडित होजातियांहैं ॥ ६ ॥ और जो कोई
पुरुष शंखका जल और विष्णुकें पादों का निर्माल्यजल पान
कर्ताहै धूप दीपकेशेष कों वंदनाकर्ताहै एहसभकाम ब्रह्महत्या
कें दूर करणे वालेहैं ॥ ७ ॥ स्कंद पुराण में कहाहै ॥ हेमु
निसत्तम हरिके देहसें भ्रष्ट हुया २ जो निर्माल्य पुष्पादि औ
र पादों का जल तिसकों मुखमें शिरमे देहमे इतने स्थानों में
धारणकरे ॥ ८ ॥

महास्नानोदकंयत्रयत्रपादोदकंहरेः तिष्ठतेमु
निशार्दूलतत्रस्युःसर्वसंपदः९ स्कांदे विष्णो
र्मूर्ध्निस्थितंपुष्पंशिरसायोवहेन्नरः जन्मप्रभृति
यत्पापंशतधास्यविनश्यति ॥ १० पाद्मे ॥ मु
खेशिरसिदेहेचविष्णोत्तीर्णांचयोवहेत् तुलसीं
मुनिशार्दूलनतस्यस्पृशतेकलिः ११ गारुडेतु
लसीदलसंमिश्रंयस्तोयंशिरसावहेत् सर्वती
र्थाभिषेकस्तुतेनप्राप्तोनसंशयः १२ ॥ स्कंदपु
राणे मुखेशिरसिविप्रेंद्रविष्णुदेहार्चनेरतः तु
लसीस्पर्शमात्रेणविनश्यतिसदाकलिः॥ १३ ॥

जिस स्थान महास्नान का जलहै और जहां में पादोंका जल है हेमुनियोंमें श्रेष्ठ तहां सारियां ही संपदाहैं ॥ ९ ॥ स्कंद पुराणमें लि० ॥ विष्णुके शिरपर स्थित जो पुष्प तिसकों शिरकर्के जो धारण कर्ताहै तिसके जन्मसें लेकरके जो पापहै सो सौ प्रकारका होकेनष्टहोताहै ॥ १० ॥ पद्म पुराणमें लि० विष्णुके ऊपरसें उतारीहोई तुलसीकों हेमुनिशार्दूल मुखमें और शिरमें देहमें जो धारणकर्ताहै तिसकों कलि स्पर्श नहि कर्ता है ॥ ११ ॥ गरुडमेंलि०तुलसी दलसें मिला हुयाजो जल तिसकों शिरकर्के जो धारण कर्ताहै तिसने सारेतीर्थोंमें स्नानका फलही प्राप्तहुयाहै इसमें संशयनाहिहै १२ स्कंदपुराणमें कहाहै हे विप्रेंद्र विष्णुकी पूजामें तत्पर होएआहुया पुरुष मुखमें जां शिरमें अथवा देहमें इतने स्थानोंमें तुलसीके स्पर्श मात्र कर्के सर्वदाकाल कलि क्या कलहानष्ट होतीहै ॥ १३ ॥

पाद्मेक्रियायोगसारे तुलस्याःस्मरणेनैवसर्वं
पापंविनश्यति तुलसीस्पर्शनेनैवनश्यंतिव्या
धयोनृणाम् ॥ १४ ॥ योश्नातितुलसीप
त्रंसर्वपापहरंशुभम् तच्छरीरांतरस्थायिपापा
नश्यंतितत्क्षणात् ॥ १५ ॥ तुलसीकाष्ठसंभू
तांमालांवहतियोनरःतद्गात्रेपातकंनास्तिसत्य
मेवमयोच्यते ॥ १६ ॥ तुलसीपत्रसंमिश्रं
यस्तोयंशिरसावहेत् गंगायाःस्नानजंपुण्यं
लभतेनात्रसंशयः॥ १७ ॥

पद्म पुराणके क्रिया योग सारमें लि० तुलसी के स्मरण मात्र करके सारे पाप नष्ट होतेहैं और तुलसीके साथ स्पर्श करणे करके पुरुषों कीयां व्याधियां नष्ट होतीयांहैं ॥ १४ ॥ जो कोई पुरुष सभनों पापोंके हरणे वाले शुभ क्या मंगल रूप तुलसी के पत्र कों भोजन कर्ताहै तिसके देहांतरमें स्थित जौनसें पापहैं सो तत्क्षण नष्ट होजाते हैं ॥ १५ ॥ जोकोई पुरुष तुलसीके काष्ठकी वनी होई माला कों धारण कर्ताहै तिसके देहमें कोई पाप नहि रहताहै एह वात मैने सत्य कथन करीहै ॥ १६ ॥ जो कोई पुरुष तुलसी दलककें मिलित जलकों शिर करके धारण कर्ताहै सो श्रीगंगा जीके स्नान करणेके पुण्यकों लभताहै इसमें संशय नहिहै १७

पाद्मे राजसूयसमंपुण्यंपुष्पेपुष्पेश्वमेधजंयःपु
नस्तुलसीमालांकंठेकुर्यान्मधुद्विषः १८ लला
टेदृश्यतेयस्यतिलकंतुलसीमृदा तस्यपापानि
नश्यंतिक्रियमाणानिनारद ॥ १९ ॥ गारुडे ॥
तन्मूलमृत्तिकांचांगेकृत्वास्नातिदिनेदिने दशा
श्वमेधावभृथेस्नानजंलभतेफलम् ॥ २० ॥स्कां
दे तुलसीमृत्तिकालिप्तोयदिप्राणान्परित्यजेत्
यमोपिनेक्षितुंशक्तोयुक्तंपापशतैरपि ॥ २१ ॥

पद्म पुराणमें लि ० ॥ राज सूयके समान पुण्य होताहै और अश्वमेध फल प्राप्त होताहै एक २ पुष्प चढानेमें और जो पुरुष तुलसीकीमाला कों भगवान जी के ऊपर चढावता है तिसकी क्यावातकहणी ॥ १८ ॥ और जिस पुरुषने तुलसीके मूलकी मृत्तिकाका तिलक लगादा होवे हेनारद तिसके क्रिय माण क्या रोजके रोज करीदे जोपाप सो नष्ट होतेहैं ॥ १९ गारुड में लि॥० तुलसीके मूलकी मृत्तिकाकों अंगोंमैं लगाय कर जो प्रतिदिन स्नान कर्ताहै सो पुरुष दश अश्वमेधमें स्नान करणेके फल कों प्राप्त होताहै ॥ २० ॥ और जो कोई तुल सी के मूलकी मृत्तिका कर्के लिपा हुया प्राणोंकों त्याग करे तिसकों यमराज भी देखने कों समर्थ नहि होताहै चाहे सो सैकडे पापों करभी युक्त होवे ॥ २१ ॥

अधुनाविष्णोर्निर्माल्यतुलसी माहात्म्यं सेति
हासंवर्णयामि पद्मपुराणे क्रियायोगसारे जैमि
निंप्रतिव्यासवाक्यम् व्यासउवाच माहात्म्यं
तुलसीधात्र्योःप्रोक्तमेतदशेषतः अत्रतेकथयि
ष्यामिचेतिहासंपुरातनम् १ जैमिनिरुवाच भूय
एवमहाभागतुलस्याः पापनाशनं अतिथेः पू
जनस्यापिमाहात्म्यंब्रूहिविस्तरात् २ सूतउवा
च ततोव्यासोमहातेजास्तुलस्याद्विजसत्तमाः
माहात्म्यंवक्तुमारेभेशृण्वतांपापनाशनम् ॥ ३

अब विष्णुजी की निर्माल्य रूपा क्या ऊपरसें उतारी होई तु
लसीके धारणका माहात्म्य इतिहासके सहित वर्णन कर्ताहुं
पद्मपुराणके क्रिया योग सारमें जैमिनी के प्रति व्यास देवजी
का कथन है ॥ व्यासदेवजी कथन कर्ते भये हेजैमिने तुलसी
का और धात्री आमली का माहात्म्य अच्छीतरां सें वर्णन करा
है जिसमें कुछ शेष नहि रहाहै अवतेरेकों इसमें इतिहास क
थन कर्ताहुं ॥ १ ॥ जैमिनि ऋषि व्यासदेवजी का वचन सुन
के कहने लगे हेमहाभाग अब पापोंके नष्ट करणे वाला तुल
सीका माहात्म्य और अतिथियोंके पूजनका माहात्म्य विस्तार
सेंमेरेप्रति कथनकरो॥ २ ॥सूतजी कथनकरतेहैं हेशौनकादिऋषि
यो बडेतेजवाले व्यासदेवजी श्रवण करणे वालयोंके पापनष्ट
करणे वाला तुलसी का माहात्म्यकहनेकों आरंभ कर्ते भये ३

व्यासउवाच ॥ इयंसाक्षान्महालक्ष्मीस्तुलसी
भगवत्प्रिया तस्मादिमांनपश्यंतिवृक्षज्ञानेनसू
रयः ॥ ४ ॥ सादरस्तुलसींमर्त्योयथैवभुविसेव
ते तथैवसेंद्राविवुधाः सेवंतेतांमुरारये ॥ ५ ॥
परंब्रह्मस्वरूपेयंतुलसीयत्रतिष्ठति तत्रैवकुशलं
सर्वंसुदृढंप्रोच्यतेमया ६ प्राप्नोतिमृत्युकालेय
स्तोयंपातकवानपितुलसीपत्रगलितंसयातिह
रिसंनिधिम् ७ तुलसीमृत्तिकापुंड्रंमृत्युकालेस
मुद्वहेत् समुक्तःसर्वपापौघैः पुरंगच्छतिचक्रिण ८

व्यासदेवजी कथन करणे लगे हेऋषे एह तुलसी साक्षात् भगवान् विष्णु जीकी प्यारी महालक्ष्मी का रूपहै इसकारणसें वुद्धिमान् लोक इसकों वृक्ष ज्ञान कर्के नहिदेखें की एह वृक्ष है ॥ ४ ॥ और जिस प्रकार पृथिवी लोंकमें आदर पूर्वक तुलसीकों पूजतेहैं इसी प्रकार स्वर्ग लोकमें इंद्रादिक देवता मुरारि जो विष्णुभगवान् तिनकी प्रसन्नताके वास्ते तुलसीकों सेवतेहैं ॥ ५ ॥ हेऋषे परंब्रह्म स्वरूपा एह तुलसी जहां स्थित है तहां मेंही निश्चय कर्के सम्पूर्ण कल्याण स्थितहै एहवात मैने कहीहै ॥ ६ ॥ जोकोंइ पापी पुरुष भी मृत्युके समय तुलसीके पत्रों सें डिगे होए जलकों प्राप्त होताहै सो हरिकी समीपता कों प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ जो पुरुष मरणे के समय तुलसीके मूलकी मृत्तिका का त्रिपुंडर तिलक धारण कर्ताहै सो सम्पूर्ण पापोंसें मुक्त होएआ हुया भगवान् जीके वैकुंठपुरमें जाताहै ८

यस्यस्यात्तुलसीपत्रंमुखेशिरसिकर्णयोः मृ
त्युकालेद्विजश्रेष्ठतस्यस्वामीनभास्करिः ९।
पवित्रनामासुमतिर्वभूवपरमार्थवित् वभूव
ब्राह्मणीतस्यवहुलानामधारिणी॥ १० सद्वं
शप्रभवासाध्वीपतिसेवापरायणा अनाथस्सु
मतिर्नामतत्रैकोऽस्तिद्विजोत्तमः॥ ११ सख्यंते
नसहानेनकृतंचहरिसेविना वयोनयत्सुमति
मान्कथालापेनसत्तम॥ १२॥

मरणेके समय जिसपुरुषके मुखमेंजांशिर विषें अथवा कानोंमें तुलसीपत्रस्थितहोवे तिसका स्वामी यमनहि होताहै ९ परमार्थ के जानने वाला श्रेष्टवुद्धि कर युक्त पवित्र नामा एक ब्राह्मण होता भया तिसकी स्त्री वहुला नाम वाली होती भई॥ १०॥ सो वहुला अच्छेश्रेष्ट वंशमें उत्पन्न होई हुई पतिव्रता पतिकी सेवा करणेमें तत्पर होती भई उसी नगर में और एक सुमति नाम कर्के अनाथ ब्राह्मण निवास कर्ता था॥ ११॥ उसकेसा थ सुमति का सख्य भावथा सोदोनों हरिकी सेवा कर्तेथे और हेसत्तम आपसमें परमेश्वर संवंधिनीयां कथां के कहने सुना ने कर्के काल समय कों व्यतीत कर्ते भये॥ १२॥

उपविष्टःपवित्रोसौस्नेहादेववरासने अत्रांत
रेमहातेजालोमशोनामसद्दिजः ॥ १३ ॥ कथ
यंतौकथाश्चित्राः समागम्यददर्शतौ अथतं
लोमशंविप्रंविप्रावुत्थायपीठतः १४ पाद्यार्घा
चमनीयाद्यैःपूजयाम स तुश्चतौ सुप्रीतौलोम
शस्ताभ्यांनारायणपरायणः १५ उवासब्राह्म
णश्रेष्ठआसनेकीर्त्तयन्हरिं आसनस्थंमहात्मा
नंलोमशंतौकृतांजली पवित्रनामासुमति र्भ
क्त्याप्राहतुरुत्तमौ ॥ १६ ॥

एह जौनसा पवित्र नामा था सोस्नेह पूर्वक सुंदर आसन पर वैठा हुयाथा इतनेमें वडेतेजवाले लोमश नामा ब्राह्मण आय गया ॥ १३ ॥ तो क्या देखता है की दोनोंआपसमें विचित्र कथा करेया कर्तेथे तिनकों देखता भया इतनेमें सोभी लोम श जीकों देखतेही आसन के ऊपर सें उठखडे होए ॥ १४ ॥ और पाद्य अर्घ आचमन इनसे तिनका पूजन कर्ते भये तद प्र सन्न मन वाले लोमशजी नारायणजी के भजन में तत्पर क्या कर्ते भये ॥ १५ ॥ हेब्राह्मण श्रेष्ठ तिनो कर्के दिये होए आसन के ऊपर नारायणजी के नामों कों उच्चारण कर्ते २ वैठ जातेभ ये तद आसनपर वैठे होए महात्मा लोमशजीको पवित्र नाम सुमति एह दोनो वडे श्रेष्टभाक्ति कर्के हाथ जोड विनती कर कहते भये ॥ १६ ॥

पवित्रसुमतीऊचतुः भगवन्सर्वधर्मज्ञत्वत्पाद
कमलैर्नृभिः सद्भिर्ग्राह्यैराश्रमोयंपूतोभून्नूनमा
वयोः ॥ १७॥ कृतानियानिपापानिश्रावाभ्यां
मोहतःपुरा तानिसर्वाणिनष्टानित्वत्पादयुग
दर्शनात् ॥ १८ ॥ भवान्नारायणः साक्षात्पूज
नीयोमरैरपि सम्यक्तेपूजनंकर्तुंकिमावांमान
वौक्षमौ ॥ १९ ॥ आतिथेयाकृतापूजातवेयं
निजशक्तितःअनयाभवसुप्रीतःक्षमस्वदोषमा
वयोः ॥ २० ॥

पवित्र सुमती नामा दोनों ब्राह्मण कहने लगे हेभगवन् सभनो तरोंके धर्मजानने वाले सत्पुरुषों कर्के ग्रहण करणे योग्यजो एहतुमारे चरणकमल तिनो कर्के एहहमारा दोनोंका आश्रम पवित्र होता भया ॥ १७ ॥ और हमने अज्ञानसें पीछे २ कियेजोनसें पापहैं सो सारेहो आज तुमारे चरण युगलके दर्शन कर्के नष्ट हो गएहैं ॥ १८ ॥ तुसी देवतेयों कर्केभी पूजा के योग्य साक्षात् नारायणका स्वरूपहो अच्छीतरांसें तुमारा पूजन करणेकों हम मनुष्य जन्मा कैसे समर्थ होवेंगे ॥ १९ ॥ और अपनी सामर्थके अनुसारसें एह तुमारी आतिथेय जो पूजाथीसो करीहै इतनी कर्केही आप प्रसन्न होए हुए हमारे अपराध क्षमा करो ॥ २० ॥

इत्युक्तौमहात्मानौतस्यनम्रौपदद्वये निपेत
तुर्द्विजश्रेष्ठवयस्थौगृहधर्मिणौ ॥ २१ ॥ तयोर्भ
क्त्यासुसंप्रीतोलोमशोविदुषांवरः तौप्राहमधुरै
र्वाक्यैर्जैमिनेलोकपूजितः ॥ २२ ॥ लोमश
उवाच अनयायुवयोर्भक्त्यासुप्रीतोस्मिमहाश
यौ युवाभ्यांवरपुत्राभ्यांनिजवंशःप्रतिष्ठितः
॥ २३ ॥ विनयाल्लभतेधर्मंविनयाल्लभतेयशः
विनयाल्लभतेवित्तं विनयात्किंनलभ्यते ॥ २४

इस तरां सो दोनों महात्मा कथन कर्के तिसके पादोंमें नम्रमन वाले होए हुए पडजाते भऐ कैसे सो दोनोंहैं आपस में स्निग्धप्रीति वाले मित्रऔर गृहस्थ धर्मी ॥ २१ ॥ तिनकी भक्ति कर्के प्रसन्न होएहुए विद्वानोंमेश्रेष्ट और लोकांमें पूजित लोमशजी हे जैमिने मधुर वाक्यों कर्के तिनकों कहते भये ॥ २२ ॥ लोमशजी कहने लगे हेमहाशयो वडे उदार मन वालेयो तुमारी इतनीही भक्ति पूजाकर्के प्रसन्नहां क्योंकि वडे श्रेष्ठ पुत्रहो तुमने अपना वंश प्रतिष्टा वाला कराहै ॥ २३ ॥ किसतरांजो विनयनम्रताकरयुक्तहैं सोविनयसें धर्मकों लभता है औरविनयसें यशकोंलभताहै और विनयसे धनकों भी लभ है और ऐसीविशेष कौनसी वस्तुहै जोविनय नंम्रतासें नाहिप्राप्त होतीहै विनयसें सभीकुछ लभताहै ॥ २४ ॥

युवांविनायिनांश्रेष्ठौकुलजौधर्मतत्परौ आप्या
यितोस्मिसुतरांयुवाभ्यांविनयोक्तिभिः ॥ २५
साक्षाद्ब्रह्माशिवोविष्णुरतिथिःप्रोच्यतेवुधैः त
स्मिन्नेतावतीभक्तिर्युवयोरस्तुमंगलम् ॥ २६
आराधितोस्म्यहंसम्यगतिथिर्भूरिभोजनैःव्या
सउवाच इतिब्रुवतिवैतस्मिल्लोमशेविदुषां
वरे ॥ २७ ॥ कालहस्ताकृष्टआखुस्तत्रोत्त
स्थौनिजालयात् तमुत्थितंविलाद्दृष्ट्वामूषकं
क्रोधविह्वलः ॥ २८ ॥

तुसीं दोनों विनयक्या शिक्षा कर्के युक्त पुरुषोंके मध्यमें श्रेष्टहो और अच्छे कुलमें जन्मे होए धर्ममें तत्परहो तुसांने मेरेकों विनयकी उक्तियां कर्के अत्यंत प्रसन्न मनवाला कियाहै ॥ २५ वुद्धिमान् पुरुषोंने अतिथि जोहै सोसाक्षात् व्रह्मा शिवजी का रूपकहाहै फिरतिस अतिथिमें तुमारी इतनी भक्तिहै इससें तुमारेकों मंगल होवे ॥ २६ ॥ मैंजो अतिथि हां सोतुमने वहुत सुंदर अनेक तरोंके भोजनों कर्के सेवित कराहों इतनी कथा सुनाय फिर व्यासदेवजी बोले इसप्रकार विद्वानोंमें श्रेष्ट तिस लोमश ऋषिके कथन कर्ते होए ॥ २७ ॥ इतनेमें कालनेहाथ कर्के खेंचा हुया एक अपने घरसें वाहर चूहा निकलता भया तव विलक्या खुड्डके वीचसें निकले होए चूहेकों देखकर क्रोध कर्के व्याकुल होया हुया ॥ २८ ॥

पवित्रस्तरसोत्तस्थौवदन्निातिमुहुर्मुहुः अयंपा
पाशयोदुष्टोमूषकोनिशमाश्रमम् ॥ २९ ॥ य
तोमदीयंदंतौघैर्गृहद्रव्यंचकुंथति सर्वेषामेवध
र्माणांदयाश्रेष्ठाप्रकीर्तिता ॥ ३० ॥ साचसर्वे
षुकर्तव्यानचदुष्टेषुजंतुषु इत्युक्त्वासद्विजः को
पान्मूषकंतंकृतैनसम् ॥ ३१ ॥ नाराचेनातिती
क्ष्णेनप्राप्तकालंजघानह अथशोणितधाराभिः
प्लावितांगःसमूषकः पपातभूमौविप्रर्षेव्यथया
गतचेतनः ॥ ३२ ॥

पवित्र नामा ब्राह्मण शीघ्र ऐसें वारंवार कथन कर्ता हुया उठ खडा भया क्याकहता एहपापाशयदुष्ट चूहाहै वारंवार मेरेइस आश्रम कों २९ दंतोंके समूह कर्के घरके द्रव्योंकों काटताहै लिखाहै सभनों धर्मोंमें दया धर्म वडा श्रेष्ठहै ॥ ३० ॥ सोदया सभतरांके जीवोंमें करणी योग्यहै पर दुष्ट जीवोंमें नहि करणी ऐसा कहकर सोद्विज कराहै अपराध जिसने तिस चूहेकों क्रो धसें वडे तीक्ष्णबाण कर्के प्राप्त होएआ मरण समय जिसका तिस कों मारदेता भया ॥ ३१ ॥ इससें उपरंत सोमूषक बाण कर्के विद्धा हुया रुधिरधारां कर्के युक्त हो गएहैं अंग जि सके ऐसासोव्यथा पीडा कर गत चेतन क्यादूरहो गई चैतन्य ताक्या प्राणजिसकें सोमरके पृथिवीपर डिग पडता भया ३२

आखौनिपतितेतस्मिन्ननादसुमतिर्द्विजः हाहा
कारंततःकृत्वासमुत्तस्थौजवेनसः ३३ ततःक
र्णात्समानीयतुलसीपत्रमुत्तमम् तस्याखौवद
नेशीर्षेकर्णयोश्चप्रदत्तवान् ३४मातस्तुलसिगो
विंदहृदयानंदकारिणि अस्याखोः कृतपापस्य
कुरुत्वंगतिमुत्तमाम् ३५ इत्युक्त्वासद्विजश्रेष्ठः
सर्वलोकोपकारकःहरेनारायणानंतइत्युच्चैरक
रोद्ध्वनिम् ३६ ॥

तिस चूहे के पृथिवी पर गिरेहोए सुमति नामा ब्राह्मण हा हा
कार करके शीघ्रवडेवेगसें उठखडाहोताभया ॥ ३३ तिससें अनं
तर अपने कानसें उत्तम तुलसी का पत्र ले कर तिस चूहे के
मुख शिर और कानोंमें देताभया ३४ ॥ इतने स्थानोंमें देकर
पीछेसें प्रार्थना करणे लगा हेमातः तुलसि भगवान्‌जी के हृदय
कों आनंद करणे वालि पापों केकरणे वाले इसचूहेकी तूं
उत्तमगतिकर ३५ ॥ इसप्रकार सो सारेलोकोंपर उपकार करणे
वालाद्विजों में श्रेष्ट सुमति हेहरे हेनारायण हे अनंत ऐसे वडे
ऊंचेस्वरसें शब्द कर्ता भया ॥ ३६ ॥

तुलसीपत्रसंस्पर्शान्मूषकोगतकल्मषः श्रवणा
द्विष्णुनाम्नश्चमुक्तोभूद्भववंधनात् ३७ ततोदू
ता महाविष्णोःसर्वलक्षणसंयुताः आजग्मुःस
र्वतः शीघ्रंनेतुंतंगतकल्मषम् ३८ ततोऽथंसमा
रुह्यविष्णुदूतगणैर्वृतः जगामपरमंस्थानं मूष
कोद्विजसत्तम ३९ युगकोटिसहस्राणि स्थि
त्वानारायणालये ज्ञानमासाद्यतत्रैवमोक्षमा
द्यंजगामह ४० ॥ व्यासउवाच ॥ माहात्म्यं
तुलसीदेव्याः कथितंतेद्विजोत्तम इदानींब्रूहि
किंश्रोतुंमहाभागत्वमिच्छसि ४१ इतिविष्णु
निर्माल्यतुलसीमहिमासमाप्तः ॥

तुलसी पत्रके स्पर्शकरणेसें दूरहोगएपापजिसके ऐसा मूषक
और विष्णुकेनामोंके श्रवणकरणेसें संसारके वंधनों सें मुक्त हो
जाता भया ३७ तदनंतर लक्षणोंकर्के युक्त विष्णुके दूत गतक
ल्मष क्या निष्पापी चूहे के ल्याउने वास्ते शीघ्र आजाते भये
३८ तिस सें उपरंत विष्णुके दूत गणों कर्के परिवारिया हुया चू
हा रथके ऊपरवैठकर हेद्विजसत्तम परमस्थानकों चला जाता
भया ३९ ॥ तहांनारायणजी के घर युगोंके हजारां क्रोडां वर्ष
स्थित होकर फिर उसी लोकमें ज्ञानकों प्राप्त होकर मोक्षकों
प्राप्त होजाता भया४० व्यासदेवजी कथन करतेहैं हेद्विजोत्तम तु
लसी देवीका माहात्म्य कथन कराहै हेमहाभाग अवक्या श्रवण
करणे की इच्छा कर्ता हैं४१ एहविष्णुभगवानूजीके निर्माल्य तु
लसी का माहात्म्य कथन कराहै ॥

अथसच्छूद्रैरपिब्राह्मणद्वाराशालग्रामशिला
र्चनंकर्तव्यं पद्मपुराणे पुराणसंग्रहेच दीक्षा
युक्तैस्तथाशूद्रैर्मद्यमांसविवर्जितैःकर्तव्यब्राह्म
णद्वाराशालग्रामशिलार्चनम् १ इत्येवंप्रकारे
ण ब्राह्मण दिचतुर्वर्णैरन्यब्राह्मणद्वारा शिला
र्चनंकार्यम्

अब श्रेष्ट शूद्रोंने भी और ब्राह्मणके द्वारा शालग्रामकी शि
लाका पूजन करणा योग्यहे एहवाक्य पद्मपुराणमे पुराणसंग्र
हमें लिखाहै ॥ क्या कीदीक्षा मंत्र कर्के युक्तजौनसें सच्छूद्र औ
र जौनसें मद्य मांसनहि खाते हैं तिनों शूद्रोंने ब्राह्मणके द्वारा
शालग्राम शिलाका पूजन करणा योग्यहे १ इसतरांके प्रका
रकर्के ब्राह्मणादि चारवर्णों नें और ब्राह्मणके द्वारा पूजन क
रणा योग्यहै ॥

अथ प्रसंगाद्विष्णुमंदिरे प्रातरुत्थायसंमार्जन करणमाहात्म्यमाह नरसिंहपुराणे यस्तुसं मार्जनंकृत्वाकृष्णवेश्मानिलेपयेत् सपापकल हंदेहंत्यक्त्वायातिपरंपदम् ॥ १ ॥ पाद्मेक्रिया योगसारे ततोविष्णवालयेतस्मिन्स्वयमागत्य मार्जनं कुर्याच्छनैःशनैःप्राज्ञःसंमार्जन्यापवि त्रया ॥ २ ॥ यावंतोरेणवस्तस्माद्गच्छंतिनि लयाद्बहिः तावन्मन्वंतरशतंतिष्ठेद्विष्णुगृहेज नः ॥ ३ यस्तुसंमार्जनंकुर्याद्ब्रह्महापिहरेर्गृहे सोपियातिपरंधामकिमन्यैर्बहुभाषितैः ॥ ४ ॥

अत्र प्रसंगसें विष्णु भगवान्‌जीके मंदिरमें प्रातःकाल उठकर्कें जो संमार्जन क्या सोंतनाहैं तिसका माहात्म्यकहतेहैं नरसिं ह पुराणमें लि० ॥ जो पुरुष श्रीकृष्णजी के मंदिरमें सोत दें कर्कें पीछेसें लेपन कर्ताहै क्या चौंका देताहै सोपापोंके सहि त कलह देहवाले देहकों त्यागकर परम पदकों जाताहै ॥ १ ॥ पाद्मके क्रिया योग सारमें लि ॥ ० तिसविष्णुके मंदिरमें धीरे २ स्थितहोकेपवित्र मार्जनी वहारीकेसाथ शोधनकरेक्या मंदिरकों अछीतरांसे सोते ॥ २ उसकाएहफलहै जितने क धूलिकेरेणु सो तने कर्कें वाहर निकलैं हें उतने सैकडे मन्वंतर विष्णुलोक में पुरुष निवास कर्ताहे ॥ ३ ॥ जौनसा कोई ब्रह्महत्या वाला भीहरिकें मंदिरमें संमार्जन करे तद सो भी हरिकें लोक विष्णु मंदिरमें जाताहै और इसमें वहुत क्या कहनाहै ॥ ४ ॥

संमार्जनंविष्णुगृहेजनःकृत्वोपलेपनं लभते परमंधामपूजायाःफलवत्प्रभोः ॥ ५ ॥ वृहन्नारदीये देवतायतनेराजन्कृत्वासंमार्जनंनरः यत्फलंसमवाप्नोतितन्मेनिगदतःशृणु ॥ ६ ॥ यावत्यः पांशुकणिकाः सम्यक्संमार्जितान्नृप तावद्युगसहस्राणिविष्णुलोकेमहीयते ॥ ७ ॥ वृहन्नारदीये सूतशौनकसंवादेन हरिमंदिरांतरसंमार्जनमाहात्म्यंसेतिहासमाह ॥

पुरुष जोहै सो बिष्णुके घरमें संमार्जन क्या सोत कर्के और लेपनदेकर्के पूजाके फलकी न्यांई प्रभुके परम धामकों प्राप्तहोताहै अर्थात् जिस गतिकों पूजा करणे वाला प्राप्तहोताहै उसी गतिकों सोतने और चौका देने बाला प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥ वृहन्नारदीय पुराणमें लि० ॥ हेराजन् पुरुष जोहै सोदेवताके मंदिरमें संमार्जन कर्के क्या सोतकर्के जिस फलकों प्राप्तहोताहै सो फल कथन कर्ते होए मेरेसें श्रवणकर ६ हेराजन् पुरुषने सोंतने कर्के जितनीयांक धूलिकियां कणिका सोतियांहैं उतनेही हजार युग विष्णुलोकमें महिमाकों प्राप्तहोताहै ॥ ७ ॥ वृहन्नारदीयपुराणमेंसूतशौनकजीके संवाद कर्के हरिके मंदिरमें संमार्जनकरणेके क्या सोतनेके माहात्म्येमे इति हास क्या प्रा[illegible] एकक थाकहतेहैं ॥ ॥

सूतउवाचभूयःशृणुताविप्रेंद्रामाहात्म्यंपरमेष्ठि
नः सर्वपापहरंपुण्यंनारदेनप्रभाषितम् ८ ॥
अहोहरिकथालोकेपापघ्नीपुण्यदायिनी हरि
भक्तिरसास्वादमुदितायेनरोत्तमाः ॥ ९ ॥
अहोभाग्यमहोभाग्यंविष्णुभक्तिरतात्मनां ते
षांमुक्तिकरस्थैवयोगिनामपिदुर्लभा ॥ १० ॥
अत्रैवोदाहरंतीममितिहासंपुरातनं शृण्वतां
वदतांचैवसर्वपापप्रणाशनम् ॥ ११ ॥

सूतजी कथन कर्तेभये हेविप्रेंद्राःअव परमेष्ठिका माहात्म्य फिर मेरेसे सुनो कैसाहै पापोंकें नाशकरणे वाला और नारदजी ने कथन कराहुया ॥८॥ हेऋषयःइस संसारमें नारायणजीकीऐसीक थाहै पापोंके नाशकरणे वाली पुण्योंके देनेवालीहै जौनसें श्रेष्ठ पुरुष हरिकी भक्तिरूपीरसके स्वाद कर्कें प्रसन्नहैं ॥९॥अर विष्णु भगवानजी की भक्तिमें रत क्या युक्त आत्मावालेयो के वडे भाग्यहैं उनकी क्या वातहै और योगिजनां कों भी दुर्लभ जौनसी मुक्ति है सो तिनकेहाथपरस्थितहै ॥ १० ॥इसवातमें प्राचीन इतिहासक्या कथा उदाहरणदेताहुं क्या कहताहुं जोकथासुनने कहने वालोंके सारे पापनष्ट करणे वालीहै॥११

आसीत्पुरामहीपालः सोमवंशसमुद्भवः य
ज्ञध्वजइतिख्यातोनारायणपरायणः १२॥ वि
ष्णोर्देवालयेनित्यंसंमार्जनपरायणः सकदा
चिन्महीपालोरेवातीरेमनोहरे १३ विचित्रक
लशोपेतंकृतवान्हरिमंदिरं सतत्रनृपशार्दूलः
सदासंमार्जनेरतः॥१४॥ कर्माण्यन्यानिसंत्य
ज्यविष्णोःप्रियतराणिवै हरिनामपरोनित्यं
हरिसंसक्तमानसः ॥ १५ ॥

पूर्व एक समय चंद्र वंशमें उत्पन्न होएआ हुया यज्ञ ध्वज नाम कर्के नारायणजी में युक्त एकराजा होताभया ॥ १२ सो विष्णु देवताके मंदिरमेंमार्जन कर्ताथा क्या सोतताथा फिर एक किसी समय सोराजा यज्ञध्वज मनोहररेवानदीके किनारे १३ पर वडे विचित्र कलशेयों कर युक्त हरिका मंदिर वनावता भया तिस मंदिर में आप सो राजा सर्वदाकाल संमार्जन कर्ताथा क्या आप तिसमंदिरकों चारो ओर से सोतताथा ॥ १४ और विष्णुके अत्यंतप्यारे जौनसें कर्महैं तिनकों त्यागकर हरिमें लग गयाहै मन जिसका ऐसा सो नारायणजीका नाम जपने में तत्पर होताभया ॥ १५ ॥

हरिप्रणामनिरतोहरिभक्तजनप्रियः वीतिहो
त्रइतिख्यातश्रासीत्तस्यपुरोहितः ॥ १६ यज्ञ
ध्वजस्यचरितंदृष्ट्वाविस्मयमागतः कदाचि
दुपविष्टंतंराजानंविष्णुतत्परम् अपृच्छद्वीति
होत्रस्तंवेदवेदांगपारगः ॥ १७ वीतिहोत्रउ
वाच राजन्परमधर्मज्ञहरिभक्तिपरायण वि
ष्णुभक्तिमतांपुंसांश्रेष्ठोसिभरतर्षभ ॥ १८ ॥

श्रोर हरिकों प्रणाम कर्णा हरिके भक्त लोक जिसकों प्यार ऐसा वीति होत्रनामक तिसका पुरोहित होताभया ॥ १६ ॥ सो यज्ञ ध्वज नामक राजे अपने यज्ञमान का चरित क्या वर्तन देखकर वडे विस्मयकों प्राप्तहोएश्रा एकसमय विष्णु भग वान की पूजामें तत्पर होए हुए राजा कों वेद वेदांग शास्त्र के पार अठिध कों जाणने वाला वीति होत्र पूछता भया १७ वीतिहोत्र राजाकों पूछने लगा हेराजन् परम धर्म के जाणने वाले श्रोर भगवानजीकी भक्तिमें तत्पर मैने जानाहे कि त्रिष्णुकी भक्ति करणे वाले पुरुषोंमें हेभरतर्षभ तूं वडाश्रे ष्ठहैं ॥ १८ ॥

संमार्जनपरोनित्यंदीपदानपरःसदा तन्मेवद
महाभागत्वयाकिंविदितंफलम् १९ संपादने
चवर्त्तीनांतैलसंपादनेतथा उद्युक्तोसिमहाभाग
सदासंमार्जनेरतः २० कर्माण्यन्यानिचीर्णा
निविष्णोः प्रियतराणिवै तथापित्वंमहाभाग
ह्येतयोःसततोद्यतः२१ सर्वात्मनामहत्पुण्यंजने
शविदितंत्वया तद्ब्रूहिमेगुह्यमपिप्रीतिर्मयित
वास्तिचेत्२२ पुरोधसैवमुक्तस्तुप्रहसन्पद्मजा
त्मज विनयावनतोभूत्वाप्रोवाचेदंकृतांजलिः २३

हेमहाभाग तूं जो सर्वदा काल मंदिरको सोतताहैं और दीप दान कर्ताहैं नित्यं प्रति मेरेकोंभी कथन करतैने इसमें क्या फ लजानेया हुयाहै १९ और तूंजो वट्टियां वनावता रहताहैं ते लसंपादन कर्ताहैं क्या इधर उधरसें इकट्ठा कर्ताहैं और सदा वहारी फेरताहैं इसमें क्या फलहे मेरेकोंभी कहो २० क्यों की विष्णुके प्यारे और वहुत तरोंके काम तैने करे हैं तदभी तूं हेमहाभाग इनों कामोंमैं सदा उद्यत रहताहैं एहक्या कार णहै २१ हेजनेश लोकोंके स्वामी सर्वात्मना क्या सभनों तरों से इनों दोनों कामोंमि वहुत पुण्य जानेआहे तद जेकर इसमें गुप्तभीहै जेकर तेरा मेरेमे प्रीतिहै तद मेरेकों कहो २२ हेपद्म जात्मज वह्माके पुत्र हेनारद सो राजा पुरोहितने ऐसेपूछाहुया हसता २ हाथ जोड विनतीकर शिरझुकायके कहताभया २३

यज्ञध्वजउवाच शृणुष्वविप्रशार्दूलयन्मयाच
रितंपुरा जातिस्मरत्वाच्छ्रोतॄणांकिंतुतेविस्मय
प्रदम् २४ आसीत्पुराकृतयुगेब्रह्मन्स्वारोचि
षेंतरे रैवतोनामविप्रेंद्रोवेदवेदांगपारगः २५
अयाज्ययाजकश्चैवसचैवग्रामयाजकः पिशु
नोनिष्ठुरश्चैवमपण्यानांचविक्रयी २६ निषि
द्धकर्माचरणःपरित्यक्तःसबांधवैः दरिद्रोदुःखि
तश्चैवजीर्णांगोऽव्यथितोभवत् ॥ २७ ॥

यज्ञध्वज कथन कर्ताभया हेविप्रशार्दूल जोकुछमैंने पूर्वमें करा हुयाहै सोश्रवण कर मेरेकों पूर्व जन्म स्मरणहै इससेमें कहता हुं श्रवणकर्णे वालेकों आश्चर्य देने वाला जोसुनताहै सो अचंभा होताहै २४ हेब्रह्मन् स्वारोचिष मनुके राज्यमे सत्ययुगके वीच वेद वेदांगोंके जाणने वाला रैवत ब्राह्मण होताभया २५ कैसाथा अयाज्य याजक और ग्राम याजक वडादुष्ट कठोर कहने वाला नहिवेचने वालियों वस्तुयोंकों वेचताथा २६ निषिद्ध कर्मोंके करणे वालाथा इससें बांधवोंने त्यागया हुयाथा और वडा दरिद्री अत्यंत दुःखित जीर्ण अंगों वाला वडा वृद्ध सोरोगों करके वहुत पीडित होता भया २७

सकदाचिद्धनार्थंतुपृथिव्यांपर्यटन्द्विजः ममार
नर्मदातीरेकासश्वासप्रपीडितः॥ २८॥ तस्मि
न्मृतेतस्यभार्यानाम्नावंधुमतीतदा कामाचार
पराभूतापरित्यक्तास्ववंधुभिः ॥ २९ ॥ तस्यां
जातोस्मिचांडालाद्दंडकेतुरितिश्रुतः महापाप
रतोनित्यंब्रह्मद्वेषरतस्तथा ॥ ३० ॥ परदार
परद्रव्यलोलुपोजंतुहिंसकः गावश्चविप्राव
हवोनिहतामृगपक्षिणः ॥ ३१ ॥

सो ब्राह्मण एकसमें धनके निमित्त पृथिवीमें फिरता २ हुया कासश्वास रोग कर पीडित होयाहुया नर्मदानदीके किनारे पर मृत होजाता भया ॥ २८ ॥ तिसके मरणएपीछे उसकी जो वंधुमती नाम कर्के स्त्रीथीसो कामा चार मैं क्या व्याभिचार करणेमें तत्पर होती भई तद वांधव जो उसके थे उनोंने तिसकों घरसें निकाल दिया तो निश्शंक होके व्यभिचार कर्तीभई ॥ २९ ॥ उस ब्राह्मणकी स्त्रीमें चांडालके गर्भसें दंड केतु नाम कर्के प्रसिद्धमैं जन्मता भया सो कैसा होता भया महापाप कर्णेमें नित्य तत्पर रहना ब्राह्मणों के साथ द्वेषकरणा ॥ ३० और पराईआं स्त्रियां वलात्कारसें भोगनीयां पराया धन हरलेना इतने कामोंमें तत्पर और वनके जीव मारणे ब्राह्मण गौयां मृग पंछि अनेकमैंने मारदिये ॥ ३१ ॥

मेरुतुल्यसुवर्णानिवहून्यपहृतानिच मद्यपानं
रतोनित्यंनिंदकःपिशुनस्तथा ३२ एवंपापकृ
तोनित्यंवहुशोमार्गरोधकृत् पशुपक्षिमृगादी
नांजंतूनामंतकोपमः ॥ ३३ ॥ सकदाचित्का
मतप्तोरन्तुकामःपरस्त्रियं शून्यंपूजादिभिर्वि
ष्णोर्मंदिरंप्राप्तवान्निशि ॥ ३४ तत्ररामोपभो
गार्थंशायितंतेनकामिना स्ववस्त्रप्रांततोब्रह्म
न्कियद्देशः सुमार्जितः ॥ ३५ ॥

और मैने सुमेरु पर्वतके तुल्य सुवर्ण चुराए और वहुत द्रव्य चुराए जिनकी कुछ गिनती नहिहै नित्यं प्रति मद्यपान करणा लोकोंकी निंदाकरणी चुगलीयां करणियां ॥ ३२ ॥ इस प्रकारके नित्यंप्रति वहुत पापकरे और मार्गों को रोक २ कर लोकों के धन लूटे और पशुपाक्षि मृगादि जीवोंकों तो में मृत्युकें तुल्यथा ॥ ३३ सो एकसमय कामदेवकरकेपीडित होए आ हुया पराई स्त्रीके साथ क्रीडा करणेकी इच्छावाला स्थान देखता फिरता था तद रातके समय एक पुराणा मंदिर विष्णु काथा जिसमें कोई पूजा नहिकर्तांथा न दीप जगाताथा सो मिलगया उसमेंचलेगए ॥ ३४ ॥ तहां स्त्रीके भोग करणेके ले ये उसकामिने अपने वस्त्रके साथथोडी जगा मोत कर शयनके निमित विछावने करे ॥ ३५ ॥

यावत्यःपांशुकणिकास्तेनसंमार्जितास्तदाता
वज्जन्मकृतंपापंतदैवक्षयमागतम् ॥ ३६ ॥ प्र
दीपः स्थापितस्तत्रसुरतार्थंद्विजोत्तम तेनापि
ममदुष्कर्मनिः शेषंक्षयमागतम् ॥ ३७॥ एवं
स्थितोविष्णुगृहेरमाभोगेच्छयाद्विज तदेवदीप
कंदृष्ट्वाआयाताः पुरपालकाः ॥ ३८ ॥ चौरो
यंपरदूतोयमित्युक्त्वामामपादयन् खड्गेनशि
तधारेणशिरःछित्त्वातुतेगताः ॥ ३९ ॥

जितने धूलिके कणके उसने उहांसे मार्जित करे क्या सोते उ
तनेही जन्मोंके करेहोए उसके पाप उसी समय नष्ट होजाते भये
॥ ३६ ॥ हेद्विजोत्तम क्रीडाके निमित्त तिसने उसमंदिरमें दीप
भी जगाया तद तिसदीप दानके प्रभाव करकें वाकीके पापभी
सारे नाशकों प्राप्त होजाते भये॥ ३७ ॥ हेद्विज इसप्रकार परस्त्री
के साथ भोंग करणेकी इछा वाला विष्णुके मंदिरमें स्थित हो
ता भया तद उस दीपककों जगते होए देख कर उस पुरके रख
वाले उहां आयजाते भये ॥ ३८ ॥ सो आनकर कहनेलगे ए
ह चौरहै एह औंर किसीका दूतहै ऐसें कथन कर तीक्ष्ण धारा
वाले खड्गके साथ मेराशिर काट अछीतरां मार करकें सो च
ले गए ॥ ३९ ॥

दिव्यंविमानमारुह्यसर्वभोगसमन्वितं सद्यए
वतयासार्धंविष्णुलोक मुपागतः॥४०॥तत्रस्थि
त्वाब्रह्मकल्पंशतंसाग्रंद्विजोत्तम ततश्चब्रह्मणा
सार्धंतावत्कालंचसंस्थितः॥४१॥ततश्चभूमिभा
गेषुदेवभोगेषुचैक्रमात् तेनपुण्यप्रभावेणयदू
नांवंशसंभवः॥४२॥तेनैवभुज्यतेसंपत्तथाराज्य
मकंटकं ब्रह्मन्कृत्वातुरागार्थमेवंश्रेयः समास
वान् ॥ ४३ ॥

सो मार कर मेरेकों चलेगए पीछेसे विष्णुके गण सम्पूर्णसु खभोगों कर्के युक्त विमान ल्याए उसके ऊपर मेरेकों चढाय कर तिसस्त्रीके साथही विष्णुलोकमें चले आए ॥ ४० ॥ हे द्विजोत्तम तिस लोकमें अग्रके सहित कुछक सौ वर्षसें अधिक ब्रह्माके कल्प तकस्थित होकरफिर उतनाहीचिर ब्रह्माके साथ ब्रह्मलोकमें निवास कर्ता भया ॥ ४१ ॥ फिर क्रमसे स्वर्गमें देवतेयोंके भोग २ कर भूमिभागमें आय प्राप्त भयाहां और तिस पुण्यके प्रभाव कर्के यादवोंकेवंशमें उत्पन्न भया हां ॥ ४२ और तिसपुण्यके प्रभाव कर्के सारियां संपदां और निष्कंटक राज्य भोग्या कर्ता हुं हे ब्रह्मन् विना पुण्यके प्रभाव जाने मार्ज्जनका और दीपका एह इतना फलपाया है अवजान कर सेवा कर्ता हुं नजाने किस फलकों प्राप्त होआंगा ॥ ४३ ॥

भक्त्याकृतवतांपुंसांकिंभवेदितिवेद्मिन तस्मा
त्संमार्जनेनित्यंदीपदानेचसत्तम ॥ ४४ ॥ य
तिष्येपरयाभक्त्याह्यहंजातिस्मरोयतः यःपूज
येज्जगन्नाथमेकाकीविगतस्पृहः ॥ ४५ ॥ सर्व
पापविनिर्मुक्तः प्रयातिपरमंपदं अवशेनापि
यत्कर्मकृत्वेमांश्रियमागतः ॥४६॥ भक्तिमद्भिः
प्रशांतैश्चकिंपुनःसम्यगर्चनात् इतिभूपवचः
श्रुत्वावीतिहोत्रोद्विजोत्तमः अत्यंततुष्टिमापन्नो
हरिपूजापरोभवत् ॥ ४७ ॥

और जोकोई भक्तिकर्के नारायणजीके मंदिरमें रोलके २ चौका देतेहैं और दीपजगातेहैं उनकों खबर नहिक्या फल होता होवेगा इसबातकों जानकर हेसत्तम रोजमंदिर कों सोततांहुं और दीप जगाताहुं ॥ ४४ ॥ और परम भक्तिकर्के यतन कर्ताहुं जिसके प्रभावसेंमें जातिस्मरहां क्या मेरेकों पूर्व जन्म यादहै जोपुरुष बिगत स्पृह होकर क्या कामनां कोंत्यागकरएकाग्र चित्त लगायकर जगन्नाथजीकों पूजताहै४५सोसारे पापोंसें निर्मुक्तहोकर परम पदकों जाताहे अवशक्या विना जाने बूझे अपने काम भोगके निमित्त जिसकामकों कर्के इतनी संपदा कोंप्राप्त भयाहां जौनसे कोंई भक्तिवाले शांत चित्त वेद विधिसें पूजन कर्तेहैं उनकोंखबर नहिक्याफल होताहै४६एहवाक्य राजाका श्रवण कर वीतिहोत्र ब्राह्मण अत्यंत परमप्रसन्नताकों प्राप्त होकर नारायण जीकी भक्ति पूजामें तत्परहोजाताभया४७

सूतउवाच तस्माच्छृणुतविप्रेंद्रा देवोनाराय
णोऽव्ययः ज्ञानताऽज्ञानतोवापिपूजकानांविमु
क्तिदः ॥४८॥ अनित्यानिशरीराणिविभवोनै
वशाश्वतः नित्यंसन्निहितोमृत्युःकर्त्तव्योधर्मसं
ग्रहः॥४९॥ अनित्याबांधवाः सर्वेसंपदत्यंत
चंचला शरीराणांध्रुवोमृत्युस्तस्माद्भजतकेश
वम् ॥५० जन्मकोटिसहस्त्रेषुपुण्यंयैः समुपा
र्जितं तेषांभक्तिर्भवेच्छुद्धादेवदेवेजनार्दने ५१
दुर्लभंजाह्नवीस्नानंतथाचातिथिपूजनं अर्चय
ध्वंजगन्नाथंभूयोभूयोवदामिवः ॥ ५२ ॥

सूतजी कथनकर्नेभयेइसकारणसें हेशौनकादिकऋषयोतुमश्रवण करो अविनाशिजोदेवता नारायणजीहेसोज्ञानकर्के विनाजाने भीपूजे होए पूजा करणे वालेयोकों मुक्तिके देतेहैं ४८ एहशरीर अनित्यहै क्यानहि रहनेवाला और धनभीसर्वदा काल नहिहै और मृत्यु सभनोंके पासरहताहै इसबातकों जानकर धर्मकों इकट्ठा करणा चाहिए४९ और भाई बांधवभी सदानहिरहते किसोकी संपदो जोहै सोतोअत्यंतकर्केंचचलहैसोक्याउोहकिसीके सदा रहतीनहिहै और शरीरका मरजाना निश्चयकरवनाहै इसवास्ते केशवजीकाभजन करोकुछ भला होवेगा५० जिनोंने हजारोंक्रोडोंजन्मोंमें पुण्य इकट्ठेकरेहोएहैं तिनकी भक्ति देवदेवजनार्दन जीमे होतीहै ५१ संसारमें गंगा जीका स्नान दुर्लभहै और अभ्यागतोंकी पूजा उससें भीदुर्लभहै और वारंवारमें एही कहता हुंकी जगन्नाथ जीकी पूजाकरो ॥ ५२ ॥

भगवतोमंदिरसंमार्जनमहिमानमाह भक्तमालायां वल्लभाचार्यपुत्रस्याविठ्ठलस्वामिनःसुताः सप्तपूर्वोदितास्तत्रसप्तस्थाननिवासिनः॥१॥ श्रीमद्गोकुलनाथस्यकथांवक्ष्यामिभक्तिदां महाभागवतः सोभूत्प्रसिद्धोऽद्यापिभूतले॥ २ ॥ नाथद्वारेतिविख्यातापुरीपरमपावनी तत्रश्रीनाथनामानं पूजयामासुरुत्तमाः ॥ ३ ॥ तत्र श्रीनाथमूर्त्तितुमंदिराद्वाह्यतोजनाः ददृशुर्नचतत्रासीत्किमप्यव्यवधानकम् ॥ ४

अबभगवान् जीके मंदिरमें झाडू देने की महिमा कहीहै भक्तमाला में लि० ॥ वल्लभाचार्यका पुत्रजो विठ्ठल स्वामि तिसके सात पुत्र पीछे कह आएहै सातों स्थानोंमे निवास कर्ते थे ॥ १ ॥ अब उनसें श्री मद्गोकुल नाथकी मनोहर कथा कथनकर्ताहुं जिसके सुनने सें परमेश्वरमें भक्ति होतीहै सो श्रीमद्गोकुलनाथ वडा परम भक्त होता भया सो आजतकर भी प्रसिद्धहै ॥ २॥ नाथ द्वारानाम करके परम पावनी नामा एकपुरी है तहां में श्रेष्ट भक्त जन पूजामें श्रीनाथ नामाठाकुरजी की मूर्त्तिकों पूजतेथे ॥ ३ ॥ तहां मंदिर के अंदर श्रीनाथजी की मूर्त्ति कों वाहरसें लोक देखते थे उनके आगे कोई दृष्टि रोकने वाला पढदा नहीथा ॥ ४ ॥

अथैकस्तत्रचांडालःकांधाख्योमलशोधकः वा
ह्याद्ददर्शतांमूर्त्तिंप्रातराराात्रिकक्षणे ॥५॥ दृष्ट्
वाविमोहितो मूर्त्तिंप्रातरारात्रिकक्षणे नचचाल
स्वयंकेनाप्याहूतोनिर्दयौततः॥ ६ ॥ परंतुसं
स्मरन्मूर्त्तिंगृहकर्मचकारसः एवंप्रत्यहमुत्थाय
प्रातरारात्रिकक्षणे ॥ ७ ॥ गत्वातत्रतुतांनाथ
मूर्त्तिंपश्यन्स्थितोभवत् ॥ ॥ एवंबहुदिनेयाते
तेदृष्टंकेनापिसाधुना श्रीमद्गोकुलनाथाख्यस्वा
मिनेकथितंतुतत् ॥ ८ ॥

उस नगरीमें मल मूत्र शोधने वाला कांधा नामक एक चूडा निवास कर्ताथा सो सोतनेके निमित्त गया हुया प्रातः काल आर्त्तिके समय वाहरमें खडा होकर मूर्त्तिकों देखताथा ॥५॥ तिसकों देखकर आर्त्तिके समय प्रातः काल उहां खडा होजाताभया फिर उहासें ना आप चलता भया किसीका वुलायाहुया उहां सें जाता भया॥ ६ ॥ और जेकर उसने घरमें जाना भी तदभी उसमूर्त्तिका स्मरण कर्ते२ घरका काम करणा इस प्रकार रोजके रोज उठ कर्के प्रातः काल आर्त्तिके समय उहां जाकर मूर्त्तिके सामने स्थित होजाता भया ॥ ७ ॥ इसनरां कर्ते होए तिसकों वहुत दिन वीत गए तद एक साधुने तिसकों देखा तद उसने श्रीमद्गोकुलनाथ स्वामिके तांई कहदिया हेगुरो मंदिरके वाहरसें चूडा दर्शन कर्ता है ॥ ८ ॥

भित्तिर्देयांतरानोचेच्चाडालोपिनिरीक्षते इत्यु
क्तः सोपितंप्राहकारयाद्यैवमाचिरम् ९ ततोभृ
त्यानुपाहूयनिर्ममेभित्तिमुत्तमां अथप्रातः स
मागत्यचांडालोनैवदृष्टवान् १० महाशोकार्ण
वेमग्नोदुःखीभूमौनिविष्टवान् ददर्शपुनरुत्था
यनापश्यत्संस्थितस्तदा ११ एवंसुदुःखितो
भूत्वात्यक्त्वाकर्मनिजंपुनः कामीप्रियावियोगे
णकृपणस्तुधनक्षये ॥ १२ ॥

सो साधु जाकर कहने लगा हेगुरो ठाकुर जीके सामने कुछ पडदा करना चाहिए नहितो चांडाल सामने सें देखताहै इसप्रकार कथन कराहुया गोकुलनाथ उसको कहता भया आज ही एक कंध झढाय देओ मतचिर लगाओ ९ इतनी आज्ञाउसकी पातेही भृत्यकोबुलाय कर उत्तम भित्तीआगे चढायदी इससें दूसरे दिन उसी तरां प्रातःकाल आयके देखने लगा तो ठाकुरजी दृष्टिमें नहि आये १० तद वडे शोक रूपी समुद्रमे डूबकरदुःखित मनवाला होके भूमि पर वैठ जाता भया फिर उठकर ऊचा होके देखने लगा तदभी नहि देखे फिर उसीतरांवैठगया ११ ऐसें सो दुःखित होता भया जैसे प्रियास्त्री के वियोग करके कामी पुरुष दुःखित होताहै और धनके नष्ट होए हुए कृपण दुःखित होताहै उसीतरांका होके अपना कर्म भी त्याग देता भया ॥ १२ ॥

एकपुत्रःसुत्त्यागेतथादुःखमवाप्तवान् आग
त्यस्वगृहंसोथाशिश्येरोगात्तवत्क्वचित् १३नभु
क्तवान्दिवारात्रौमूर्त्तिविश्लेषदुःखितः ततःसभ
गवान्देवः स्वप्नेप्राहदयान्वितः १४श्रीमद्गोकु
लनाथंतांभित्तिंदूरीकुरुद्रुतं योसौकांधाख्यचां
डालः सोप्यतीवममप्रियः १५ मद्दर्शनंविना
सोथमरणेकृतनिश्चयः तस्माद्यथासपश्येन्मां
तथाकुरुमदाज्ञया ॥ १६

और एक पुत्रवाला पुरुष पुत्रका त्याग कर जैसे दुःखित होताहै ऐसे सो दुःखित होता भया इससें उपरंत अपने घर में आय कर कहीं एकांतमे रोगार्तकी न्यांई सोय रहता भया १३ ॥ और मूर्त्तिकेवियोग कर दुःखित होएआहुया उसदिन में नारातमें भोजन कर्ता भया तद दयाके समुद्र भगवान् श्रीमद्गोकुलनाथकों स्वप्नमें कहते भये १४ जौनसा एह कांधानाम चांडालहै सोमेरावहुत प्यारा है और आज मेरेदर्शन विना मरणे में निश्चयधारण करलियाहै इसवास्ते ऐसा कामकरो जिसतरां सें मेरेकों आगेकी न्यांई देखे अर्थात् एहकंध जौनसी भ्रांईहै सोदूरकर देओ ॥ १६ ॥

इत्युक्त्वातंतथाकांधंप्राहवैष्णवरूपधृक् अहो
भित्तिस्तुपतितागत्वापश्यहरिंमुदा १७ इति
दृष्ट्वातदोत्थायकांधस्तत्रागतोनिशि संमुखः
संस्थितस्तस्थौपूजकः स्वाम्यपिस्वयम् १८
उत्थायाभित्तिंतत्कालंदूरीचक्रेतिविस्मितः अ
थप्रातरभूद्द्वारःकपाटोद्घाटनेकृते १९ कांधः
संमुखतोदृष्टःकिंकरोष्यत्रमांवद इतिश्रुत्वा
ततोकांधः सर्वंस्वाचरितंजगौ २०

इस प्रकारका वचन गोकुलनाथकों स्वप्नमें कथन कर फिर इसी प्रकार वैष्णवका रूप धार कर स्वप्नमें उस कांधे चांडाल कोंभी जाकर भगवानजी कहते भये हे कांधे सो जो दिवाल डिग पडीहै जौनजी ठाकुरजीके अगे पडदा करीथी अवहो जाकर हर्ष युक्त नारायणका दर्शन कर १७ इस तरांका स्वप्न देख कर उसीसमय उठ खडा होकर रातके समेंही उहां चला तो उस समय उहांका द्वार वंदथा सामने बैठरहा इतनेमें पूजक और साधु उठ कर आपही उस कंदाकों दूर करदेते भये क्या डिगाय देते भये विस्मय युक्त होए हुए अव इससें उपरंत प्रात काल भी होगया तद उनोंने किपाट खोलेतो क्या देखतेहैं की कांधा सन्मुख खडाहै १९ उसकों पूछने लगे तूं क्या इहां कर्ताहैं हमारेकों कहो इतना वचन सुन कर कांधा चांडालसा रा अपना चरित्र कहदेता भया २० ॥

श्रुत्वास्मृत्वास्वप्नवृत्तंतस्योपरितुतोषसः प्राह त्वंत्यजस्वांवृत्तिंभोजनंतेददाम्यहम् २१ द्वारसंमार्जनंत्वेकंकुर्वन्नत्रसुखीभव इत्युक्तः सोपिकांधाख्यस्तंप्रणम्यमुहुर्मुहुः २२ त्यक्का गृहादिकंसर्वंस्थितोभक्ततरोभवत् एवंभक्तिवशोभूत्वासंमार्जनपरायणः गोविंदनामप्रजपंश्चांतेहरिपुरंययौ २३ इति

उसका वर्तन श्रवण कर्के और स्वप्नका वृत्तांत स्मरण कर्के श्रीमद्गोकुलनाथ तिसपर वडा प्रसन्न होता भया और तिसकों- कहने लगा इस अपनी वृत्तिकों छोडदे हम तेरेकों भोजन दियाकरेंगे ॥ २१ ॥ और एक भगवान्‌जीके मंदिरका द्वार तैने सोतना और कुछ काम नहि करणा इस जगामें सुख पूर्वक निवास कर इस प्रकार तिसने कथन करा हुया कांधा वारंवार तिसकों प्रणामां कर्ता भया २२ और गृहस्थ कात्याग कर उहां ठाकुरद्वारेके वाहर कुटिया वनाय कर सुख पूर्वक निवास कर्ता श्रेष्ट भक्त होजाता भया इस प्रकार सोचांडाल भक्तिके वशी भूत होकर भगवानजीका मंदिर सोतने कर्ममें तत्पर होए आ हुया गोविंदजीके नाम जपता २ अंतमें नारायणजीके लोक वैकुंठमें जाय प्राप्त होताभया २३ एह भक्त माला ग्रंथ भगवानजीके मंदिरसोतनेकी महिमा कहीहै ॥

अथप्रसंगाद्विष्णुप्रासादे यःप्रातरुत्थायगोम
येनोपलेपनंकरोतितस्यफलमाह विष्णुधर्मो
त्तरे अभ्युक्षणंचयः कुर्याज्जलेनापिहरेर्गृहे स
शांतपापो भवतिनात्रकार्याविचारणा ॥ १ ॥
गोमयंगृह्यवैभूमिंममवेश्मोपलेपयेत् यावत
स्तुपदास्तत्रसमंतादुपलेपयेत् तावद्वर्षसह
स्त्राणिमद्भक्तोजायतेभुवि ॥२॥ स्कांदेकार्त्तिक
माहात्म्ये गृहीत्वागोमयंचाद्भिर्मंडलंकेशवाग्र
तः कर्त्तुःश्रियोधनप्राप्तिः संततेःस्वजनस्यच
इति ॥ ३ ॥

अबप्रसंगसें विष्णुजीके मंदिरमेंजोकोई प्रातःकालगोहे आदि
कालेपनकर्ताहै तिसकाफल कहतेहैं विष्णु धर्मोत्तरमें लिखाहै
जो कोई पुरुष जलके साथभी हरिके घरमें अभ्युक्षण कर्ताहै
क्या छिडकताहै उसके जितने कोई पापहैं सोशांत होजातेहैं
इसमें कुछ विचार नहिहै ।१॥ और जोकोई पुरुष गोमय ले
के मेरे घरमें जितने पादोंकी संख्याके लंबे चौडा चारो और
सें चौका देताहै सो उतनेही हजारवर्ष पृथिवी लोकमें मेरा
भक्त होताहै ॥ २ ॥ स्कंदके कार्त्तिकमें लिखाहै जोकोई गो
मय लेकर जलके साथ केशवजीके आगे मंडलकी न्याई चौ
का देताहै तिसकों श्रीशोभासंतान धनकी प्राप्तिऔर आगे सं
तानकी प्राप्ति होतीहै ३

पाद्मेक्रियायोगसारे संमार्जनंविष्णुगृहेजनःकृ
त्वोपलेपनं लभतेपरमंधामपूजायाःफलवत्प्र
भोः४ अथोपलेपनं कुर्यात्पावकैर्गोमयैर्जलैः
तस्मिन्विष्णुगृहेप्राज्ञःस्मरन्नारायणंप्रभुम् ५
यस्तूपलेपनंविप्रकुर्यात्केशवमंदिरे तस्यपुण्य
फलंवच्मिसंक्षेपाच्छृणुजैमिने ॥ ६ ॥ रजांसि
तत्रयावंतिविनश्यंतिद्विजोत्तम तावत्कल्पसह
स्राणि तिष्ठेद्विष्णुगृहेसुखम् ॥७॥ यस्तुदेवाल
येभक्त्याराजन्गोष्पदमात्रकंजलेनसेचनंकुर्या
त्तत्फलंवदतःशृणु ॥ ८ ॥

पाद्मकेक्रियायोगसारमे लिखाहै कि जोविणुकेमंदिरमें पहलेसो
तकरपीछेसे चौकादेवेसो प्रभुकीपूजा करणेकेतुल्य परमधामको
लभताहै ४ जोपुरुषप्रथमसोतकर्के पीछेसे पवित्रगोहे और जल
केसाथ जिसविष्णुके मंदिरमें प्रभुनारायणजीका स्मरणकर्ता २
लेपन करे ॥ ५ ॥ जोपुरुष केशवजी के मंदिरमें हेविप्र लेप
न लगाताहै तिसके पुण्यका फल संक्षेप सें तेरे प्रति कथन
कर्ता हुं तू श्रवणकर ॥ ६ ॥ हेद्विजोत्तम चौका देते २ जित
नीक धूलि उहां सें नष्टहोतीहै उतने हजार वर्ष विष्णुके घरमें
निवास कर्ताहै ॥ ७ ॥ हेराजन् जोकोई भक्ति प्रेम कर्के देव
ताके मंदिरमें गोष्पद मात्रभी जलके साथ सेचन करे तिसका
फल कथन कर्ते होए मेरे सें श्रवण कर ॥ ८ ॥ ॥

यावत्यः पांशुकणिकाद्रवीभूताजनेश्वर ताव
ज्जन्मार्जितैः पापैः सद्यएवप्रमुच्यते ९ गंधो
दकेनयोमर्त्योदेवतायतनेनृप भक्तितः सेचनं
कुर्यात्तस्यपुण्यफलंशृणु १० द्रवीभूतानियावं
तिरजांसिमधुसूदन तावत्कल्पसहस्राणिह
रिसारूप्यमश्नुते ११ वृहन्नारदीये मृदाधातु
विकारैर्वावर्णकैर्गोमयेनवा उपलेपनकृद्यस्तु
नरोवैमानिकोभवेत् ॥ १२ ॥

हेजनेश्वर जितनीयां क पांशु धूलि कियां कणिका द्रवी भूत हुईंआंहैं उतनेही जन्मोंके करे होंएपापों करके शीघ्र मुक्त होताहै ॥ ९ ॥ हेनृप देवता के मंदिर में जौनसाकोई पुरुष सुगंधि वालेजल करके सेचन कर्ताहै तिसके पुण्यका फलश्र वणकर ॥ १० ॥ हेमधुसूदन जितनीक रजक्या धूलि उहांसे दूर हुईहै उतने हजारां कल्प हरिकी सारूप्यता भोगता है ॥ ११ ॥ वृहन्नारदीय में कहाहै जो कोई पुरुष मृत्तिका करके और धातुयोंके विकारों करके क्या गेरिकादियों करके और रंगों करके गोमयके साथ उप लेपन करे सो विमानों पर चढता है ॥१२ ॥

बृहन्नारदीये सूतशौनकसंवादे हरिमंदिरांतरे
लेपनकरणस्येतिहासंवर्णयामि अत्रैवोदाहरं
तीममितिहासंपुरातनं पठतांशृण्वतांचैवसर्व
पापप्रणाशनम् १३ सूतउवाच विप्राः शृणुध्वं
चरितंयज्ञमालिसुमालिनोः यस्यश्रवणमा
त्रेणवाजिपेयफलंलभेत् १४ कश्चिदासीत्पुरा
विप्रा ब्राह्मणो रैवतेंतरे वेदमालिरितिख्यातो
वेदवेदांगपारगः १५ सर्वभूतदयायुक्तोहरिपू
जापरायणैः पुत्रमित्रकलत्रार्थंधनार्जनरतोभ
वत् ॥ १६ ॥

बृहन्नारदीय पुराण में सूतशौनकजी के संवाद करकें हरिके मंदिरमें चौकादेनेकी महिमामें इतिहासवर्णनकर्तेहैं इस लेपनकी महिमामें पुरातन इतिहास का उदाहरण देतेहैं जो पडने सुननें वालेयों के सारे पाप नष्ट करणे वाला है १३ सूतजी कथन कर्ते भये हेशौनकादि ब्राह्मणो इसमें यज्ञमालिसुमालिका चरित श्रवणकरो जिसकेसुनने मात्रकरकें वाजिपेय यज्ञका फलहोताहै १४ हेविप्राःरैवत मनुके राज्यकर्ते होए वेदवेदांग शास्त्रके जानने वाला वेदमालिनाम ब्राह्मण होता भया १५ केसा सो ब्राह्मणथा सभनो जीवोंमें दयाकर्णी हरिको पूजामें तत्पर रहना और पुत्र मित्र स्त्रीयां इनकें निमित्त धनइकठा करणे मे तत्पर रहता भया ॥ १६ ॥

अपण्याविक्रयंचक्रेव्रतानांविक्रयंतथा परार्थं
तीर्थगमनंकलत्रार्थमकारयत् ॥ १७॥ कालेन
गच्छताविप्राजातौतस्यसुतावुभौ यज्ञमालिः
सुमालीचयमलावतिशोभनौ ॥ १८ ततःपि
ताकुमारौतावतिस्नेहसमन्वितः पोषयामास
वात्सल्याद्बहुभिः साधनैस्तथा ॥ १९ ॥ वे
दमालेः सुतौप्रोक्तौयावुभौद्विजसत्तमाः यज्ञ
मालिः सुमालीचतयोः कर्माधुनोच्यते ॥ २०

तोक्या करणे लगा जौनसी बेचनेके अयोग्य वस्तु है तिसकों और व्रतादिक धर्मोंकों बेचता भया और पराए निमित्त तीर्थयात्रा करणी इत्यादि दुष्कर्म स्त्री पुत्रादियोंके लिये कर्ता भया ॥ १७ ॥ हेविप्रा इस प्रकार समयके वीतते २ तिसके घर यज्ञमालि सुमालि नाम वाले वडे सुंदर दोपुत्र इकठ्ठेही जन्मतेभये ॥ १८ ॥ तिससें उपरंत पिता तिनका उनोंकुमारोंमें अत्यंत स्नेह प्रीतिकर युक्त होएआ हुया अत्यंत प्रीतिसें वहुततरोंके साधन क्या उपायों करके तिनकों पालन कर्ता भया ॥ १९ ॥ हे द्विजसत्तमा वेदमालिके जौनसें दोपुत्र यज्ञमालि सुमालि कथनकरे हैं तिनका कर्म अब कथन कर्ताहुं ॥ २० ॥

तयोराद्योयज्ञमालिर्विभेदपितृसंचितं धनंद्वि
धाकनिष्ठस्यभागमेकंददौतदा ॥ २१ ॥ सुमा
लिस्तद्धनंसर्वंव्यसनाभिरतस्तथा असद्व्यया
दिभिश्चैवनाशयामासभोद्विजाः ॥ २२ ॥ गी
तवाद्यरतोनित्यंमद्यपानरतोभवत् वेश्याविभ्र
मलुब्धोसौपरदाररतोभवत् ॥ २३ ॥ सर्वस्मि
न्नाशमायातेहिरण्येपितृसंचिते अपहृत्यपरद्र
व्यंवारस्त्रीनिरतोभवत् ॥ २४ ॥

तिनोंमैंआद्य क्या वडा यज्ञमालि था सो पिताके मरेहोए पीछे सें उसपिताके इकठे करेहोए धन को दो भाग कर्ताभया उसका एकभाग छोटे भ्राता सुमालिकों देताभया २१ सुमालि दुष्ट बुद्धिवाला तिसधनकों प्राप्त होकर व्यसनोमें तत्पर होएआहुया असत् क्या खोटे जो वृथा खर्च तिनों करकें सारा धन नष्ट कर देताभया ॥ २२ ॥ क्याकाम करणेलगाकि गायन सुनना वाजेव जाने मद्यमांस खाना पीना वैश्यांके नृत्यादियोंका लोभी पराई स्त्रियां भोगनेमें तत्पर होताभया ॥ २३ ॥ जद सारा सो धन पिताका इकठा करा हुया नष्ट होगया तद पराए द्रव्य अनेक तरांके उपाय कर कर ल्याके वेश्या गमन करनेमें प्रीति वाला होता भया ॥ २४ ॥

दृष्ट्वासुमालिनः शीलंयज्ञमालिर्महामतिः ब
भूवदुःखितोवाढमनुजंचेदमब्रवीत् २५ अल
मत्यंतकष्टेनवृत्तेनानुजसत्कुले त्वमेकएवदुष्टा
त्मामहापापरतोभवः २६ एवंनिवारयंतंतं
वहुशोभ्रातरंततः हनिष्यामीतिनिश्चित्यखड्
गहस्तःकचेग्रहीत् २७ ततोहाहारवोजज्ञेन
गरेमुनिसत्तमाः ववंधुर्नागराश्चैनंकुपितास्तसु
मालिनम् २८

वडा वुद्धिमान् यज्ञमालि सुमालिका शील देख कर क्या वर्त्त न देख कर वडा दुःखित होके छोटे भ्राताकों ऐसें कहन लगा २५ हेअनुज छोटे भ्रातः ऐसें श्रेष्ट कुलमें इस तरांके कष्ठ दायक खोटे वर्तन कर्के पूर्णताहैं क्या जो कुछ किया सोकरा अब आगेकों जानदें तूं एक दुष्ट आत्मा वाला महापाप करणें में तत्पर होएआहैं २६ इस प्रकार वहुत बार निवारण कर्ते होए भ्राताकों तिससें उपरंत उसनें मनमें ऐसा चिंतन करा कि इसकों मार देउंगा ऐसा निश्चयकर एक दिन हाथ मे खड्ग लेकर केशोंसें पकडता भया ॥ २७ तद हेमुनिसत्तमाः उस नगरमें हाहा कार शब्द होने लगा और नगरके लोक क्रोधी होए हुए सुमालिकों वांधलेते भये २८

यज्ञमालिरमेयात्मापौरान्संप्रार्थ्यदुःखितःबंध
नान्मोचयामासभ्रातृस्नेहविमोहितः २९ य
ज्ञमालिःपुनश्चापिविभेदस्वधनंद्विधा आददे
स्वयमर्धंचददावर्धंयवीयसे ३० सुमालिस्त्व
तिमूढात्मातद्धनंचापिसत्तमाः मूर्खैःपाषंडचां
डालैर्बुभुजेचमदोद्धतैः ३१ असतामुपकारा
यदुर्जनानांविभूतयः पिचुमंदःफलाढ्योपिका
कैरेवाहिभुज्यते ३२

तद अमेय मन वाला यज्ञमाले वडा दुःखित होएआ हुयाआ
नके लोकोंकी प्रार्थना कर्के भ्राताके स्नेह कर व्याकुल होआ
हुया वंधनसे छुडाय देता भया२९फिर यज्ञमालि अपने धनको
दोभाग कर्के अर्धभाग आप लेता भया आधा उसको देता
भया३० हेसत्तमाः अत्यंत मूढ बुद्धि वाला सुमालि उसधनको
भी मूर्ख पाषंडी चांडालोंके साथ मिल कर भोगले
ता भया ३१ एह वात प्रसिद्धहै दुष्ट पुरुषोंकियां विभूतियां खो
टे पुरुषोंकेही उपकारके वास्ते होतियांहैं जिसतरां फलोंके सा
थ भराहुया निंवका वृक्ष काकों कर्केही भोजन करीदाहै ३२

भ्रात्रादत्तंधनंप्राप्यसुमालिर्मत्ततांगतः शर्करा
सहितंदुग्धंपीत्वेवपवनाशनः ॥३३॥ सुमाली
त्वतिमूढात्माचांडालत्वमुपागतः मद्यपानप्र
मत्तश्चगोमांसादीनभक्षयत् ॥ ३४ ॥ त्यक्तोवं
धुजनैःसर्वैश्चांडालस्त्रीसमन्वितः राज्ञापिबाधि
तश्चापिप्रपेदेनिर्जनंवनम् ३५ ॥ यज्ञमालिः
सुधीर्विप्रः सदाधर्मरतोभवत् अर्वारितंददाव
न्नंसत्संगगतकल्मषः ॥ ३६ ॥

फिर भ्राता कर्के दियेहोए धनकों प्राप्त होकर सुमालि मत्तभाव कों ऐसें प्राप्त हुया जेसें शर्करा सहित दूध पान कर्के पवनाशन सर्प मस्त होताहे ॥ ३३ ॥ उस सें उपरंत अत्यंत मूढ बुद्धिवाला सुमालि चांडाल भाव कों प्राप्त हुया२ मद्य पान करणे कर्के मत्त गोमांसादियों कों भी भक्षण कर्ता भया ॥ ३४ तद बांधव लोकोंने तिस चांडाल की स्त्रीके सहित त्यागदिया और राजाने भी तिसकों दंडकरा उससें उपरंत निर्जन वनकों चला जाता भया ॥ ३५ जौनसा यज्ञमालि बुद्धिमान् धर्मात्म ब्राह्मणथा सो सदा धर्ममें तत्पर होता भया और प्रतिदिन अन्नदान कर्ता भया कैसाथा यज्ञमालि सत्संग कर्के दूर होगए हैं पापजिसके ॥ ३६ ॥

पित्राकृतानिसर्वाणितडागादीनिसत्तमाः अपा
लयद्यज्ञमालिःसदाधर्मपरायणः ॥ ३७॥ वि
श्राणितंधनंसर्वंयज्ञमालेर्महात्मनः सत्पात्रदा
ननिष्ठस्यधर्ममार्गप्रवर्तिनः॥ ३८ अहोसदुप
भोगायसज्जनानांविभूतयः कल्पवृक्षफलंसर्वं
ममरैरेवभुज्यते ॥ ३९ ॥ धनंविश्राण्यधर्मार्थं
यज्ञमालिर्महामतिः नित्यंविष्णुगृहेसम्यक्प
रिचर्यापरोभवत ॥ ४० ॥

हेसत्तमाः और तिसने क्या काम करे कि पितृपितामहादियों के वनाए हुए जोवाग वगीचे खूहे तला मंदिरादिक तिनके निमित्त लगाए हुए जो धर्मार्थ धनादि तिनकों पालन कर्ता भया धर्ममें तत्पर होएआ हुया ॥ ३७ ॥ और सत्पात्रोंकों दान देनेमें निष्टा वाले और धर्ममें वर्तने वाले तिस यज्ञ मालि महात्माका सारा धनका खजाना खाली होजाता भया ॥ ३८ ॥ हेऋषियो सत्पुरुषोंके धनादि श्रेष्टोंके भोगने वास्तेहि होतेहैं जिस प्रकार कल्पवृक्षके सारे फल देवतेही भक्षण कर्ते हैं ॥ ३९ सो जौनसा यज्ञमालि वडा बुद्धिमान् धर्म कर्मके निमित्त धनकों खर्च कर्के फिर नित्यही विष्णुके घरमें नारायण जी की सेवामें तत्पर होजाता भया ॥ ४० ॥

कालेनगच्छतातौतुवृद्धभावमुपागतौयज्ञमाली
सुमालीचएककालेमृतौद्विजाः ४१ हरिपूजारत
स्यास्ययज्ञमालेर्महात्मनःहरिःसंप्रेषयामासवि
मानशतमुत्तमम् ४२ दिव्यंविमानमारुह्ययज्ञ
मालिर्महामतिः पूज्यमानःसुरगणैःस्तूयमानो
मुनीश्वरैः ४३ गंधर्वैर्गीयमानश्चअप्सरोभि
श्चसेवितः कामधेन्वापोष्यमाणश्चित्राभरण
भूषितः ४४

आयुके व्यतीत होते २ दोनों वृद्ध भावकों प्राप्त होगए फिर हे द्विजाः दोनों सो एकही समय मरगए ४१ ॥ तदहरीकी पूजा में रत जो यज्ञमालि तिस महात्माके लिये नारायणजी उत्तमसौ विमान भेजते भये ४२ उनमेंसे दिव्यजो विमानथा उस पर महामति वाला यज्ञमालि आरूढ होगया तो देवतयोंके समूह उसकी पूजा करणे लगे मुनीश्वर लोकस्तुतिकरणे लगे ४३ ॥ गंधर्व उसके आगे गायन कर्ते चलें अप्सरां नृत्य कर्तीयां आगे चलियां और कामधेनु उसकी पालना कर्ती भई और वडे २ विचित्र वस्त्र भूषणो कर्के शोभायमान होताभया ४४ ॥

कोमलैस्तुलसीमाल्यैर्भूषितस्तेजसांनिधिः ग
च्छन्विष्णुपदंदिव्यंसचतंपार्थिददृष्टवान् ४५ ता
ड्यमानंयमभटैःक्षुत्तृष्णापरिपीडितं प्रेतीभूतं
विवस्त्रंचददृष्टवान्पाशबंधितम् ४६ इतस्ततःप्र
धावंतंविलपंतंस्वकर्मणा क्रोशंतंवहुशोदीनं
वमंतंरुधिरंमुखात् ॥ ४७ ॥ यज्ञमालीदयायु
क्तोहरिदूतान्समीपगान् कोयंभटैस्ताडयमा
णइत्यपृच्छत्कृतांजलिः ॥ ४८ ॥

और कोमल तुलसीकी माला करके भूषित तेजोंका निधि प्र
काशमान दिव्य विष्णुके लोकमें जाता हुया रस्तेमें छोटे भ्रात
कों भी देखताभया ॥४५ ॥ कैसाहै यमके दूतोंकरके ताडयमान
औरक्षुधा तृषा करके पीडित प्रेतोंका रूप बनाहुया नग्नफांसियो
सें बांधकर दूत लेजाया करतेहैं ४६ उनसें इधर ऊधर दौडता
है और करे होए कर्मोंकों स्मरण करके विलाप करेया कर्ता औ
र बहुत दीन हो कर कर लाया कर्ता रुधिर मुखसें चला क
र्ताहै ४७ ऐसे तिसकी दशा देख कर दया करके युक्त पासमें बै
ठे होए हरिके दूतोंकों हाथजोड कर यज्ञमालि पूछता भया
हेविष्णुके गणो एह यमके दूत किसकों मारेया कर्तेहैं कोनहै
एह ४८ ॥

अथतेहरिदूतास्तंयज्ञमालिंमहौजसं असौसु
मालिर्भ्रातातेपापात्माइत्यवोधयन् ॥ ४९ ॥
यज्ञमालिः समाकर्ण्यआख्यातंविष्णुकिंकरैः
मनसादुःखमापन्नस्तत्कर्मसुविमृश्यवै ५० ॥
ईदृशीहिगतिर्लोकेनराणांदुष्टचेतसां कर्मजान
न्नपिभ्रातुः पुनः पप्रच्छवेगतः ॥५१॥ यज्ञमा
ल्युवाच सख्यंसप्तपदीनंस्यादित्याहुर्धर्मको
विदाः तस्मात्संबांधवायूयंयदुपायंवदंतुवै ५२

उसके पूछनेसें उपरंत हरिके दूत तिस वडेतेजवाले यज्ञमालि
कों ऐसे कथन कर्तेभये एहतेरा छोटा भ्राता पापात्मा सुमालि
है ॥ ४९ ॥ तद विष्णुके किंकरोंने कथन करेहोए ऐसा सुन
कर मनमें वहुत दुःखकों प्राप्तहोएआ हुया तिसकेकर्मोंको वि
चार कर अपने आपमें कहनेलगा ॥ ५० ॥ दुष्ट मन वाले पुरु
षोंकी एहीसंसारमें गतिहोतीहै ऐसें भ्राताके कर्मोंकों जानता
भीहुया पर तिनकों शनावी फिर पूछताभया ॥ ५१ ॥ यज्ञमा
लिकहने लगा हेविष्णु भगवानजीके दूतो धर्मके जानने वाले
ऐसे कहतेहैं क्याजिसके साथ सात पैर इकठे चालिये सोमित्र
होजाताहै और मैंतो तुमारेसाथ वहुत दूर आयाहां इसवास्ते
मित्रभाव जानकर्के पूछताहुं तुममेरे मित्रहो कुछ इसमें उपाय
कहो जिससें एह भ्राता मम दंडसें मुक्तहोजावे ॥ ५२ ॥

यज्ञमालेर्वचः श्रुत्वाहरिदूतादयापराः पुनः
स्मितमुखाभ्रातुर्यज्ञमालेर्विचेष्टितम् ॥ ५३ ॥
प्राग्जन्मकर्महृदयेविचार्यचमहुर्मुहुः ऊचुः
संमुखतोभूत्वायज्ञमालिंहरिप्रियम् ॥ ५४ ॥
विष्णुदूताऊचुः यज्ञमालेमहाभागनारायणप
रायण उपायंतववक्ष्यामः शृणुष्वगदितंचनः
॥ ५५ ॥ कृतंतुसुमहत्कर्मत्वयाप्राक्तनजन्मनि
प्रवक्ष्यामः समासेनशृणुष्वसुसमाहितः॥ ५६

इसतरांका दीन वाक्य यज्ञमालिकासुन कर्के हरिकेदूत दयामें त
त्परहोएहुए फिरमंद हास्यकर युक्त मुखवाले यज्ञमालिकों भ्राता
का पूर्व जन्मका चरित्र सुनावते भये ५३ तिसके पूर्वके जन्मों
काकर्म अपने मनमे विचार कर २ सावधान होके हरिके
प्यार यज्ञमालिकों कहतेभये ॥ ५४ ॥ विष्णुके दूत कहनेलगे
हेबडे भाग्योंवाले यज्ञमालि नारायण जीको भक्तिमें तत्पर ते
रेको उपाय कहतेहैं तूंहमारे कहेकों श्रवण कर ॥ ५५ ॥ हेय
ज्ञमालेपिछले जन्मोंमे तैंनेवडे २ अच्छे कर्मकरेहोए हैं सोते
रेकों संक्षेपसें कहतेहैं तूंसावधान होके श्रवणकर ॥ ५६ ॥

पुरात्वंवैश्यजातीयोनाम्नाविश्वंभरःस्मृतःत्वया
कृतानिपापानिमहांत्यगणितानिवै ५७ ॥ स्व
कर्मवासनाहीनोमात्रापित्रातथोज्झितः एक
दावंधुभिस्त्यक्तः शोकसंतापपीडितः ५८ क्षु
धापिपासासंतप्तः प्राप्तवान्हरिमंदिरं तत्रवृष्टि
समुद्भूतकर्दमेस्थातुमिच्छया ॥ ५९ ॥ निवा
रितस्त्वयासोपितत्रलेपनतांगतः त्वयोषितंतुत
द्रात्रौतस्मिन्देवालयेद्विज ॥ ६० ॥

पूर्व जन्ममें तूंवैश्य जातीका था विश्वंभरनाम कर्के प्रसिद्ध तैंने अगणित वडे २ घोर पापकरे ॥ ५७ ॥ तद अपने जातिके योग्य कर्मोंकी वासनासें हीन तेरेकोंदेख कर्के मातापिताने भी त्याग दिया तो वांधवोंसें मिल कर रहने लगा तो एक समय तिनोंने भी तेरेकों निकाल दिया उस समय शोक संताप कर युक्त और तिनके क्लेश कर पीडित घरसें तूं निकल जाता भया ॥ ५८ ॥ जद चला गया तेरेकों क्षुधा तृषा वहुत लगी तिस कर्के संतप्त क्या दुःखित होएआ हुया मार्ग में एकहरिका मंदिरथा तिसमें जाकर तूं प्राप्त भया उहां तेरे गए वृष्टि जो हुई मंदिर मेचिक्कड होगया और तैंने उहां वैठनेकी इच्छाकरी ५९ उहांसें चिक्कड सारा हाथोंसें हटाय दियास्वछ निर्मलस्थान वनायकरतैंने उहां देवताके मंदिरमें रातकोंनिवास करा और जौनसाकर्दमहटायासोचोका देनेकेफलकोंप्राप्त हुया क्या इसने मेरेआगेचौंका दिया उससें विष्णुजीप्रसन्न होए ६०

सर्पेणदंशितस्तत्रप्रातःपंचत्वमागतः तेनपु
ण्यप्रभावेणह्युपलेपनजेनते ६१ विप्रजन्मच
तत्रापिहरिभक्तिरचंचला कल्पकोटिसहस्रा
र्थंनिविश्यहरिसन्निधौ ६२ तत्रैवज्ञानमासाद्य
परंमोक्षंगमिष्यसिस्वानुजंपातकिश्रेष्ठमुद्धर्तुमि
हचेच्छसि ६३ उपायंतंप्रवक्ष्यामस्तच्छृणुष्व
महामते गोचर्ममात्रभूमेस्तुह्युपलेनजंफलं द
त्त्वोद्धरमहाभागतस्माच्छ्रेयोभविष्यति ॥ ६४

रात्रिके समय तेरेको सर्पने दंशन कराप्रातःकालके समय मर
गया तद सो जो चिकड हटाय कर उपलेपन करा तिसपु
ण्यके प्रभाव कर्के ॥ ६१ ॥ तेरेकों ब्राह्मणके घरजन्म हुया
और अचंचल भक्ति परमेश्वरमें हुई अब तूं कल्पोंके हजारांको
डांवर्ष हरिके सामने निवास कर ६२ परममोक्षको प्राप्तहोजा
वेंगा और ज्ञानकों प्राप्तहोकर हेमहामते जेकर अब अपने छोटे
भ्राताकों उद्धार करणेकी इच्छाकर्ताहैं तद तेरेकों एक उपाय
कहतेहैं तूं सावधान होकर श्रवण कर ॥ ६३ ॥क्या गोचर्ममा
त्र भूमिमें उपलेपन जो चोका तिसके लगानेका उसकों फल
देकर उसका भी उद्धार कर इसकारणतें उसको कल्याण हो
वेगा ॥ ६४ ॥

सूतउवाच॥ एवमुक्तस्ततस्तैस्तुयज्ञमालिर्महा
मतिः देवदूतोक्तमात्रंतुददौतस्मैफलंतदा ६५
विनष्टमभवत्तस्यपापजालंमुनीश्वराः यमाज्ञा
कारिणः सर्वेतम्प्रमुच्यप्रदुद्रुवुः ॥ ६६ ॥ वि
मानस्सागरंसद्यः सर्वभोगसमन्वितं समारुह्य
सुमालीचमुमुदेदेववत्तदा ॥ ६७ ॥ तावुभौभ्रा
तरौविप्राःसुरवृंदनमस्कृतौ अवापतुर्महाप्री
तिंसमालिंग्यपरस्परम् ॥ ६८ ॥

सूतजी कथनकरणेलगे हेशौनकादिकऋषियो इसप्रकार देवदूतोंने कथन करा तद ही यज्ञमालि ऐसे कहकर फल तिसकों देता भया क्या जोमैने पूर्व जन्ममें नारायणजीके मंदिरलेपन करा हुया है उसमेंसें गोचर्ममात्र पृथिवीमें लेपन देनेका फल इसकों होवे ॥६५॥ इतना वचन जद उसने कहा तद उसी समय हे मुनीश्वराः पापोंके समूह उसके नष्ट होजाते भये और जिनों यमके दूतोंने तिसकों पकडा हुयाथा सो सारेही तिसकों त्याग कर भागकेचले जाते भये ॥ ६६ ॥ तद सभतरां के भोगों कर युक्त विमान रूपी सागर में आरूढ होकर सुमाली भी देवतों की न्यांई हर्ष आनंद को प्राप्त होता भया ॥ ६७ ॥ सूतजी कथन करतेहैं हेशौनकादिकविप्राःविमानोंके ऊपर चढे होए दोनों भ्राताकोंदेवतोंकेसमूहनमस्कारां कर्तेभये और आप सपें दोनों भ्राताग ळमिल करवडो प्रीतिकों प्राप्त होतेभये ॥६८

यज्ञमालिःसुमालीचस्तूयमानौमहर्षिभिः गी
यमानौचगंधर्वैर्विष्णुलोकमुपागतौ ६९॥अवा
पहरिसालोक्यंसुमालीद्विजसत्तमाः यज्ञमाली
चधर्मात्माहरिसारूप्यमाप्तवान्॥७०॥ भुक्त्वा
भोगांश्चिरंतत्रयज्ञमालिर्महामतिः तत्रैवज्ञा
नसंपन्नः परंमोक्षमुपागतः॥७१॥सुमालीचम
हाभागोविष्णुलोकेयुगायुतं स्थित्वाभूमिंपुनः
प्राप्यभूयोविप्रत्वमागतः ॥ ७२ ॥

और यज्ञ मालि सुमाली कों महर्षि लोक स्तुतकर्ते भये गंधर्व उनके आगे २ गायन कर्तेहैं इस विधिसें विष्णुके लोक में आय प्राप्त भये ॥ ६९ ॥ हे द्विजसत्तमाः सुमाली जौनसा था सो तो हरिकी सालोक्य मुक्ति कों प्राप्त भया यज्ञमालिहारिकी सारूप्य मुक्तिकों प्राप्त भया ॥ ७० ॥ और सो धर्मात्मा यज्ञमालि चिरकाल तिस लोक में सुख भोग भोगकर महामति वाला उहांही ज्ञान कर युक्त होएआ हुया परम मोक्ष कों प्राप्त होजाता भया ॥ ७१ ॥ और जोनसा वडे भाग्यों वाला सुमाली विष्णुके लोकमें दश हजार युग निवास कर्के फिर पृथिवी लोकमें प्राप्त होकर ब्राह्मणोंके घर जन्म लेता भया ॥ ७२ ॥

अतिशुद्धकुलेजातोगुणवान्वेदपारगः सर्वसंप
त्समायुक्तोहरिपूजापरायणः ॥ ७३ ॥ यज्ञा
नियाजसुवहून्मोक्षार्थंविष्णुतत्परः समस्तव्र
तदानानिधर्मांश्चकृतवांस्तथा ॥ ७४ ॥ हरिपू
जापरोनित्यंहरिनामपरायणः व्याहरन्हरिना
मानिप्रपेदेजाह्नवीतटम् ॥ ७५ ॥ तत्रस्नात्वा
चगंगायांदृष्ट्वाविश्वेश्वरंप्रभुं अवापपरमंस्था
नंयोगिनामपिदुर्लभम् ॥ ७६ ॥

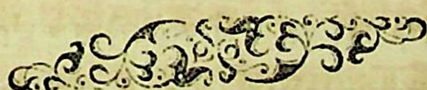
अच्छेश्रेष्ठ कुलमेंजन्मता भया वडा गुणवान् वेदोंके जानण वा
ला होताभया सारियां संपदां करके युक्तहरिकी पूजा करणेमें
तत्पर ॥ ७३ ॥ वहुततरोंके यज्ञ विष्णुभक्तिमें तत्पर मोक्षके नि
मित्त कर्ताभया और सारेही व्रत दान धर्मकार्य कर्ताभया ॥७४
और नित्य हरिकी पूजामें तत्पर रहताथा हरिका नामजपनेमें
तत्पर हरिके नामोंको उच्चारण कर्ता २ गंगाजी के किनारे
में प्राप्त होता भया ॥ ७५ ॥ तहां श्रीगंगाजी में स्नान करके
विश्वेश्वर जीका दर्शन करा उहांही देहका त्याग कर योगि
जनोंको दुर्लभ जोपरम स्थान तिसमें जायप्राप्त होताभया ७६

उपलेपनमाहात्म्यंकथितंवोमहीश्वराः तस्मा
त्सर्वप्रयत्नेनसंपूज्यध्वंजनार्दनम् ॥ ७७॥ न
तेषांनरकंविप्रायेप्रपन्नाजनार्दनं तस्मात्सर्वप्र
यत्नेनसंपूज्योजगतांपतिः ॥ ७८ ॥ अकामा
अपियेविष्णोःसकृत्पूजांप्रकुर्वते नतेषांभवबं
धस्तुकदाचिदपिजायते ॥ ७९ ॥ हरिभक्ति
रतान्यस्तुहरिबुद्ध्याप्रपूजयेत् तस्यतुष्यंतिवि
प्रेंद्राब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ८० ॥

हेमहीश्वरा उपलेपनक्याजो हरिके आगे चौंका लगाना तिसका
माहात्म्य तुमकों कथन कराहै इसकारणसें सारेहीतरोंके यत्नों
कर्के जनार्दनजीका पूजनकरो ॥७७॥हेविप्रा जौनसे कोईहरि
की शरणकों प्राप्तहैं तिनकों नरकोंकी यातना नहीहै इसकारण
सें जगतके पति पूजने योग्यहैं ॥ ७८ ॥ औरजौनसें निष्काम
पुरुषहैं और विष्णुकी एकवारभी पूजा कर्तेहैं तिनकों कदा
चित्भीसंसारका बंधन नहीहै ॥ ७९॥ जोपुरुष विष्णुके भक्तों
का विष्णुका हीरूप जान कर्केपूजन कर्तेहैं तिनके ऊपर हेविप्रें
द्रा ब्रह्मा विष्णु शिव एह तीनोंही देवता प्रसन्न होतेहैं॥ ८०

हरिभक्तिपराणांतुसंगिनांसंगमात्रतः मुच्य
तेसर्वपापेभ्योमहापातकवानपि ॥ ८१ ॥ हरि
पूजापराणांचहरिनामरतात्मनां शुश्रूषानिर
तायांतिपापिनोपिपरांगतिम् ॥८२॥ इतिश्रीवृ
हन्नारदीयपुराणेउपलेपनमाहात्म्यंसमाप्तम्

जो पुरुष हरिकी भक्तिमें तत्पर हैं उनकें साथ जोनसे संग
ति करणे वालेहैं उनके साथ व्यवहार मात्रसें महापातकोंवा
ला भी पुरुष सभनों पापोंसें मुक्तहोताहै ॥ ८१ ॥ जो पुरुषह
रिकी पूजा करणे वालेहैं और हरिकानाम जपने वालेहैं उन
की सेवा करनेमें युक्तमनवाले पापीभी परमगतिकों प्राप्तहोतेह
॥ ८२ ॥ एह वृहन्नारदीय पुराणमें विष्णुके आगेचौका देनेका
माहात्म्य समाप्त हुया ॥



अग्निपुराणे ध्यायंतियेसदाप्रीत्याकरिष्याम हरेर्गृहं तेषांविलीयतेपापंपूर्वजन्मशतोद्भवम् ॥ १ ॥ विष्णुधर्मोत्तरे सप्तजन्मकृतंपापंस्व ल्पंवावहुलंतथा विष्णोरालयविन्यासस्थाप नादेवनश्यति ॥ २ ॥स्कांदे आरंभेकृष्णाधि ष्ण्यस्यसप्तजन्मसुयत्कृतं पापंविलयमायाति नरकादुद्धरेत्पितॄन् ॥ ३ ॥ प्रासादपादेकृ ष्णस्ययावत्तिष्ठंतिरेणुकाः तावद्वर्षसहस्राणिस वसेद्विष्णुमंदिरे ॥ ४ ॥

अग्नि पुराण में कहाहै जोनसे पुरुष सर्वदा काल प्रीति कर्के ऐसें ध्यान कर्ते रहतेहैं कि हमभी नारायणजीका मंदिर वनावें उनके पीछेके सैकडे जन्मोंके पाप उत्पन्न होए हुए लीनहो जातेहैं ॥ १ ॥ विष्णुधर्मोत्तरमें कहाहै पीछेके सातजन्मोंमें कि ये होए थोडे वा बहुत पाप सोसारेही विष्णुका घर वनानेके निमित्त धन स्थापन करणेसें नष्ट होतेहैं २ स्कंदपुराणमें लिखा है कृष्णजीके निमित्त स्थान वनानेके आरंभके करेहोए सात जन्मोंमै करे होए जो पाप सोसारेही नष्ट होजातेहैं और नरको सें पितरोका उद्धार कर्ताहै ॥ १ ॥ श्रीकृष्णजी के एकहि स्सा मंदिरवने होए जितने रेणु धूलिके होतेहैं उतनेही हजार वर्ष विष्णुके मंदिरमें निवास कर्ताहै ॥ ४ ॥

विष्णुरहस्ये बाल्येप्रक्रीडमानायेपांशुभिर्भव
नंहरेः वासुदेवस्यकुर्वंतितेपितल्लोकगामिनः ५
पाद्मे जीर्णंकुर्वंतियेवैश्यतत्फलंद्विगुणंभवेत्
तद्विदार्यपृथक्कुर्यात्सगच्छेत्परमंपदम् ६ वाम
नपुराणे यःकारयेतमंदिरंमाधवस्यपुण्यांल्लो
कान्सगच्छेच्छाश्वतान्वै कृत्वारामान्फलपु
ष्पादिरम्यान्भोगान्भुक्तेकामतः स्वर्गसंस्थः
७ ॥ पितामहस्यपुरतः कुलान्यष्टौतुयानितु
तारयेदात्मनासार्धंविष्णोर्मंदिरकारकः ८ ॥

विष्णुरहस्य ग्रंथमें लिखाहै जो कोई बाल्यावस्था में क्रीडाक
र्ता हुया धूलियोंके साथ हरिका मंदिर बनाता है सो भी तिस
लोकमें जानेवाला होताहै ५ पद्मपुराणमे लि० ॥ हेवैश्य जो
कोई पुराणे मंदिरकों नवीन बनाताहै तिसकों नवीन सें दूना
फल होताहै और जो कोई उस पुरातन कों विदारण करकेंक्या
गिरायकर और नवीन ही बनाता है सो अत्यंत श्रेष्ठ परमपद
कों जाताहै ॥ ६ ॥ वामन पुराणमें लि० जों पुरुष माधव
विष्णुजी का मंदिर बनाताहै सो सर्वदाकाल रहनेवाले लोकों
में जाताहै और जो कोई पुष्प फलों वाले बाग लगाताहै सो
स्वर्गमें स्थित होकर कामना सें भोग भोगताहै ॥ ७ ॥ जो
विष्णु का मंदिर बनाने वाला है सों पितामहसें लेकर अपने
समेत जो आठ कुलहैं तिनका उद्धार कर्ताहै ॥ ८ ॥

नरसिंहपुराणे यः कुर्याच्छोभनंवेश्मनरसिंह स्यभक्तिमान् ससर्वपापनिर्मुक्तोविष्णुलोकम वाप्नुयात् ॥ ९ ॥ आदित्यपुराणे प्रतिष्ठाकांडेच लेपनाच्छादनाद्यैवयःकरोतिपुनर्नवं देव स्यायतनंतस्यनभवेत्कालजंभयम् १० ॥ जीर्णोदेवस्यप्रासादोयैःकृतःसंस्कृतोद्विजैः अ शोच्यास्तेमहात्मानोऽकृतपापामहामुने ११ मूलाच्छतगुणंपुण्यंप्राप्नुयाज्जीर्णकारकः तस्मा त्सर्वप्रयत्नेनजीर्णस्योद्धारमाचरेत् ॥ १२ ॥

नरसिंहपुराणमें लि० जौनसा कोई भक्तिमान् पुरुष शोभा वाला नरसिंहजीका मंदिर बनाताहै सो सभनों पापों सें निर्मुक्त होएआ हुया विष्णुके लोकमें जाताहै ॥ ९ ॥ आदित्य पुराणके प्रतिष्ठा कांडमें लि० जोकोई पुरुष पुराणे देवताकेमंदिरकों लेपन छादन कर्ताहै क्या छत पाताहै और कच्चेजां पक्केको चूना जां मिट्टी फिराणेसें नवीन जैसा कर्ताहै तिसकों कालकाभय नहि होताहै ॥ १० ॥ प्राचीन देवताका मंदिर जिन द्विज जातियोंने संस्कृतकराहै क्या लेपनादियोंसें अच्छा साफकराहै हेमहामुने सो पुरुष नहि शोक करणे योग्यहैं और पापभी नहि करा तिनोंने ११ जोकोईजीर्ण क्या पुराणे मंदिर कों बनावता है ओह मूलक्या नवीन पहले जिसने बनायाथा उससें भी सौगुणां अधिक पुण्यकों प्राप्त होताहै १२

जीर्णंदेहंयथादेहीत्यक्त्वाचान्यंसमाश्रयेत् प्रा
सादंदेवताजीर्णंत्यक्त्वान्यत्रव्रजेत्तथा ॥ १३ ॥
पुनस्तत्रैव कारयेच्चैवशिल्पज्ञैश्चित्रकर्माणि
मंदिरे विचित्रंयानमारुह्यचित्रभानुगृहंव्रजेत्
॥ १४ ॥ यावद्देवस्यरूपाणिहरेरूपाणिलेख
येत् तावद्युगसहस्राणिसूर्यलोकेवसेन्नरः १५
बृहन्नारदीये मृदाधातुविकारैर्वादेवतायतने
नृप करोतिचित्ररूपाणिविष्णुलोकेयुगंवसेत्
॥ १६ ॥

किस वास्ते कि जैसे पुराणे देहकों त्याग कर देहधारी और दूसरे देहमे आश्रय कर्ताहै इसीप्रकार पुराणे मंदिर कों देवता भी त्याग कर और स्थानमे चलाजाताहै ॥ १३ ॥ फिर उहां और विशेष वचन लि० ॥ जो पुरुष चित्रकारी करणे वाले यों सें देवताके मंदिरमैं विचित्र २ चित्र वेलां वूटे मूर्तियां लिखाताहै सो अंतमैं विचित्र तरां के वने होए विमान पर वैठ के चित्रभानुके घरमे जाताहै ॥ १४ ॥ उस मंदिरमे जितने रूप देवतयोंके और हरिके रूपलि० उतने हजार युग सूर्य लोकमैं निवास कर्ताहै १५ वृहन्नारदीयपुराणमें लि० मृत्तिका जोगेरिकादिऔर धातुयोंके विकारों कर्के हेराजन् देवताके मंदिरमैं चित्र रूप लि० सो विष्णुके लोकमैं निवास कर्ताहै ॥ १६ ॥

शालिचूर्णेनयोमर्त्यौदेवतायतनेनृप करोति स्वस्तिकादीनि तस्यपुण्यंनिशामय १७ यावत्यः कणिकाभूमौक्षिप्तारविकुलोद्भव तावद्युगसहस्राणि हरेःसालोक्यमश्नुते १८ मंदिरनिर्माणेचेतिहासमाहभक्तमालायां अथापरंप्रवक्ष्यामिभक्तेर्माहात्म्यमुत्तमं आश्चर्यकारकं विष्णोर्दृढभक्तिप्रदायकम् १ दक्षिणेद्रविडेदेशेग्रामःश्रीरंगपत्तनः तत्रश्रीरंगनामास्तिविष्णुभक्तसुरद्रुमः २

हेनृप शालिके चूर्ण कर्के क्या चाउलों के आटे कर्के जो मनुष्य देवता के मंदिरमे स्वस्तिकादिक क्या सर्वतोभद्र अष्टदल लिखता है तिसके पुण्यका फल श्रवण कर १७ हेसूर्य वंशोद्भव राजन् शालिके चूर्णकीआं जितनीआंक कणिका पृथिवी मैं क्षेपन करीयां हैं उतने ही हजार युग हरिकी सालोक्य मुक्ति कों भोगता है १८ अब देवता के मंदिर वनाने मैं इतिहास लि० भक्तमालामे अब और एक उत्तम भक्तिका माहात्म्य कथन कर्ता हुं केसा ओह माहात्म्य है आश्चर्य के करणे वाला और विष्णु भगवान्‌जी मे दृढभक्ति के देने वाला १ दक्षिण मे द्रविड देशके वीच श्रीरंग नामक एक शहर था तहां श्रीरंगनामा विष्णु भक्तो का सुरद्रुम था क्या कल्पवृक्ष था २

तत्रवेदैश्चशास्त्रैश्चब्राह्मणास्तंयजंतिहि अन्ये
पियेवसंतिस्मतेपिमोक्षंलभंतिहि ३॥ तत्रास्तां
स्वर्णकारौद्वौमातुलोभागिनेयकः ॥ केनापिवै
ष्णवेनाथतावुभावुपदेशितौ ॥४ ॥ ततस्तुस्वर्ण
कारौतौमहाभक्तौवभूवतुः अथैकदातयोश्चित्ते
वभूवाकास्मिकंत्विदम् ५ श्रीरंगमठनिर्माणमा
वांकुर्यावयत्नतः परंतुनधनंचास्तिकथमेतद्भ
विष्यति ॥ ६ ॥

तिस नगर में वेदशास्त्रों करके तिस श्रीरंगजी का पूजन करतेथे
और भी जौनसें उहां निवास करतेथे सो भी मोक्ष कों प्राप्त होतें
ते थे ३ तिस नगरमें मामा भनेआ दो सुनआर निवास करते
थे तिनकों किसी वैष्णवने उपदेश करा कि भगवान् जीकी
भक्ति करो ॥ ४ ॥ तद तिसके उपदेशसें दोनो हि मामा भ
नेआ सुनआरे परमेश्वर के वडे भक्त होते भये तद एकदिन अ
कस्मात् तिनके मनमें उत्पन्न भया ५ कि हमभी एक श्रीरंगभ
गवानजीका मंदिरवनावें पर हमारे पास धन नहि है किस
तरांसें मनोरथ हमारा सिद्ध होवेगा ६ ॥

इतिचिंतापरीतौद्वौपरस्परमभाषतां अहोयंना स्तिकोग्रामेमहाधनसमृद्धिमान् ॥ ७ ॥ तत्रत द्भृत्यव्याजेनआवांतद्गृहगौपुनः चोरयि त्वातुतद्द्रव्यंकरिष्येतेनतन्मठम् ॥ ८ ॥ इतिनि श्चित्यमनसागतौतौनास्तिकालये तमुचावां भवत्सर्वंकृत्वातद्वेतनेनच ॥ ९ ॥ जीविकांवैक रिष्यावोयदितेभिमतंविभो इतिश्रुत्वातयोर्वा क्यंतिष्ठेतमितिसोऽब्रवीत् ॥ १० ॥

उस प्रकार मंदिर वनाने मे चिंता कर्ते हुए दोनों आ पसमैं कहनेलगे एहजोनसा शहरमै नास्तिकहै सो वहुत धन समृद्धि कर्के युक्त है ७ उहां तिसके जाय कर्के नौकरी कर णेके वहाने कर्के असी उसकेधरमैं प्राप्त होवेंगे क्या अंदरमेजा नाआना कियाकरेंगे इसतरां विश्वास देकर उसके घरका द्रव्य चुरायकर उसधनसें मंदिर वनावेंगे ॥ ८ ॥ ऐसा मनमे निश्चय कर्के दोंनों उसनास्तिकके घरमैं चलेगए तहां जायकर उस कों कहनेलगेहमतेरी नौकरी करणेकों आयेहैं ॥ ९ ॥ हेविभो जीविकाके लिये तेरे पास आएहैं जेकर तेरी इच्छा होवे तद तिस तलव कर्के तेरे घरके सारे काम करेंगे एह तिनका वाक्य श्रवण कर्के ओहकहने लगा अच्छा तुमारी मर्जी रहो नौकरी करो ॥ १० ॥

ततस्तौस्वर्णकारौतुतद्गृहेभृत्यवास्थितौ पर
स्परंचिंतयंतौचोर्यावोधनंकिमु ११ नापश्य
तांत्ववश्यंतुधनंतद्देवतास्मृते देवतातुतदीया
सीत्सुवर्णप्रतिमामयी १२ महार्घरत्नघटि
तावहुमौल्यातिसुंदरी दृष्ट्वातांप्रतिमांतौतु
चक्रातेहरणेमनः १३ अथैकदानिशायांतुसु
प्तेलोकेततस्तुतौ प्रतिमामठमारुह्यगवाक्षंद
दृशेमहत् १४

तव उोह दोनों मामा भनैया सुनेआरे तिसके घरमे नौकर की न्याई स्थित होते भये और आपसमे चिंतन कर्तेथे कि इसके घरसें क्या धनचुरावें कुछ मालुम नहि होताहै ॥ ११ और उसनास्तिकके देवताकी स्वर्णमयी प्रतिमाथी तिससें विना और कुछ नहि धन तिनकों लभता भया ॥ १२ ॥ केसी उोहमूर्तियो वडे मोलके रत्नोंकर जडाऊ वनी होई वढेमोल की अतिसुंदर तिसकों देखकर उसके चुराणेकी इच्छा कर्ते भये मूर्ति चोरीमें मिलतद अच्छा मंदिरवन जाताहै ॥ १३ ॥ ऐसे मनमे चिंतन कर्ते २ एकादिन लोकोंके सोएहोए पीछे आधीरातके समय दोनों मामा भनेया उठकर्के प्रतिमा चुराणे के लिये मार्ग देखते भये किस रस्ते अंदर मंदिरकेजावें ऐसें देखते २ ऊपर एकवडाझरोखादेखा जिसमे मनुष्य निकल जावे उस मार्ग कर्के जाने वास्ते उसवडे मंदिरके ऊपर चडते भये ॥ १४ ॥

द्वारेकपाटसंरोधात्तेनमार्गेणमातुलः कष्टात्क
ष्टतरेणाथययौमंदिरमध्यतः १५ उत्थाप्यप्र
तिमांतांतुभागिनेयायचार्पयत् ततःस्वयंततो
नैवमार्गेणागंतुमुद्यतः १६ नशशाकवहिर्गंतु
द्वाराल्पत्ववशादसौ ततोब्रवीद्भागिनेयंमातु
लोमठमध्यगः १७ अतःपरंयद्वक्ष्यामितत्कु
रुष्वाविचारितं उपायोस्तिनचान्योत्रकुरुशी
घ्रंमदीरितम् १८

द्वारमैं किवाड लगे होए थे इस वास्ते मामा तिस गवाक्षकें मार्ग करकें वडेक्लेश करकें अर्थात् अत्यंतही दुःखपायकर मंदिर के अंदर चला जाता भया ॥ १५ ॥ उहांसे उनके देवताकी प्रतिमा उठायकर भनेवेंको देताभया तिस मूर्तिको देदेनेंसें उपरंत आप तिस मार्ग करकें आवनेंको उद्यत हुया ॥ १६ ॥ तद छोटेद्वारकें वशथें उसरस्ते आवनेंको समर्थ न होताभया जद उसरस्ते नहि आया तद उस मंदिरके अंदरसें मामा भनेवें को कहने लगा ॥ १७ ॥ मेरेसें अव वाहर नहि आने होताहै पर जो मैं तेरेको कहताहुं सो तूं विना विचारे काम कर उससे विना और कुछ उपाय नहिहै इससे मेरा कहना शतावी कर ॥ १८ ॥

छित्त्वामेमस्तकंयाहिगृहीत्वाप्रतिमामिमां नो
चेद्द्रक्ष्यतिमांप्रातरुभयोर्मरणंध्रुवम् १९ इ
त्थंमयिमृतेत्वंतुगृहीत्वामांविनाधनं श्रीरंगम
ठनिर्माणंकुरुष्वममशासनात् २० एताव
देवकर्त्तव्यमासीद्बहुदिनावधि मातुलस्येतिव
चनंश्रुत्वातद्भागिनेयकः २१ छित्त्वाशिरो
मातुलस्यनीत्वातांप्रतिमांद्रुतम् ययौस्वभव
नंरात्रौसंस्थाप्यप्रतिमांतुताम् २२

मेरा सिर काटकर इस प्रतिमाको लेके चला जा नहितो प्रातः काल आयकर देखेगा तब हमारे दोनोंका मरण निश्चयकरके होवेगा ॥ १९ ॥ इसप्रकार मेरे मरे होए पीछे कोई मेरेकोंन हि जानेगा और तूं मेरे विनाइसप्रतिमाकों ले जा और मेरेकहने सें श्रीरंगजीका मंदिर तैने बनाना ॥ २० ॥ एहि काम करनेकी इच्छा हमारि बहुतदिनोंसें बनी होईथी सोतोकाम आज सिद्ध होगया पर मंदिर अबतैने बनानारहा ऐसा वचन मामेका सुन कर ओहभनेवा कचा कर्ताभया २१ कि मामेका सिर काटकर और उह प्रतिमा उठाय ली शीघ्रतासें रातकेही समय अपने घरमे जायकर तिस प्रतिमाकों स्थापन करके दौड आवता भया ॥ २२

आययौसपुनस्तत्रनास्तिकस्यनिवेशनं सु
ष्वापपूर्ववत्स्वर्णकारः शय्यातलेनिजे २३
अथास्यमातुलस्यापिशिरश्छेदंयदाकरोत् त
दैवपुनरेवास्यशिरःप्रादुर्बभूवह २४ उद्घाटि
तःकपाटोपिस्वयंश्रीरंगभक्तितः मातुलोपिम
ठद्वारमार्गेणागत्यतद्बहिः २५ भागिनेयस्य
निकटेसुष्वापातिमुदान्वितः॥ ततःप्रातःसमु
त्थायनिरीक्षेतांपरस्परम् २६

मूर्त्तिकों अपने घर छोड कर फिर परत कर नास्तिकके घरमैं आयकर पूर्वकी न्याई अपनी शय्या के ऊपर प्रसन्नतासें सोय रहता भया २३ अब उसका वृत्तांत लिखते हैं जब वो अप ने मामेका शिर काटता भया उसी समयही भगवानजी की इ च्छासें उसका शिर लग जाता भया उसकों प्रतीतभी नहि हु था कि शिर मेरा काट दिया जां नहि काट दिया ऐसा होता भया २४ और श्रीरंग जीमें जोनसी उसकी भक्तिथी उसी सें अपने आप कपाट क्या द्वारभी खुल जाता भया तब ओह द्वा रके मार्ग करकें मंदिरसें बाहर आवता भया तो मंदिर उसवि धिसें फिर लगजाता भया २५ मामा भनेवें के पास आकर प्रसन्नता युक्त सोय रहा तो प्रातः काल जब हुवा तब आपस में अचंभा होए हुए देखने लगे २६

किमिदंचेंतिपप्रच्छभागिनेयःस्वमातुलं मातु
लोपिततःप्राहश्रीरंगकृपयाह्यहम् २७ भूत्वा
वैपूर्ववद्वात्रसमायातोस्मितेन्तिकं इत्येवमु
क्त्वावचनंप्रातरारभ्यतौपुनः २८ स्वकार्यनि
रतौभूत्वाचक्रातेभृत्यतामुभौ अथोत्थायततो
जैनोदृष्ट्वादेवस्यमंदिरे २९ उद्घाटितंक
पाटंचमहाशंकामुपागतः द्रुतंगत्वामठेनैवद
दर्शप्रतिमांचताम् ३०

तद भनेया मामेकों पूछने लगा एह क्या कैसे जीवित होई
आया मैं तेरेकों मार कर आयाथा तद मातुल बोला मैं श्रीरं
गजीकी कृपा करके जीवित हुया हां और द्वार मार्ग करके
आयाहां २७ और आगे की न्याई राजी प्रसन्न होकर तेरे
पास आकर सोय रहा हां ऐसा वाक्य कथन कर सो दोनो
प्रातः कालसे लेकर क्याकर्ते भये २८ कि अपना जो काम
रोजके रोज कर्तेथे उसमे तत्पर होकर उसकी नौकरी सेवा
कर्ते भये इससे उपरंत ओह घर वाला नास्तिक भी उठकरके देव
ताके मंदिरनें चलागया २९ कुछ अस्त व्यस्तता देखकर
बडी शंकाकों प्राप्त भया तद शीघ्र दौड कर मंदिर के अंदर
जाके देखता भया कि सिंहासन पर मूर्ति नहिहै एह क्या
हुया और दरवाजा कौन खोल गिया ३०

मुमोहशोकाज्जैनःसचिंतामापदुरत्ययां रुदि
त्वावहुदुःखार्त्तस्तौभृत्यावाहकोपतः ॥ ३१ ॥
अहोभवद्भ्यांगंतव्यमिदानीमेवमेगृहात् स्थि
तयोर्युवयोरेवगृहेचौर्य्यमभून्मम ॥ ३२ ॥ त
तोनैवास्तिमेकिंचित्फलंसंरक्ष्यचयुवां इतिजै
नेनतावुक्तौजहर्षस्वर्णकारकौ ॥ ३३ ॥ महा
प्रसादइत्युक्तातस्थतुस्तौततोगृहात् आगत्य
स्वगृहंतौतुकंचित्कालंव्यतीत्यच ॥ ३४ ॥

जद तिसने स्वर्णमयी मूर्ति नहि देखी तद मोहकर्के व्याकुल मनवाला होआ हुया वहुत रोदन कर्ताभया फिर दुःख कर्के आतुर होएआ हुया तिनों दोनों नौकरों कों कोपसें कहने लगा ॥ ३१ ॥ तुसीं दोनो मेरे घरसें अवही चले जावों क्यों कि तुमारे रहते होए मेरे घरमै चोरी होगईहै ३२ इसवास्ते तुमारे कों रख कर्के मेरा प्रयोजन कुछ नहि अवही चले जावों ऐसे तिस जैन कर्के कथन करे होए स्वर्णकार वडे प्रसन्न होते भये ॥ ३३ ॥ उनोंने कहा अछा तुमारी कृपा हमारा कुछ जोर नहिहै ऐसा कह कर्के अपने घरमैं चले आये कितनाक काल व्यतीत कर्के ॥ ३४ ॥

प्रतिमाभूषणैरत्नैश्चक्रतुर्मठमुत्तमम् एवंभक्ते
स्तुमाहात्म्यंशिरश्छेदेपियत्पुनः ३५ शिरो
बभूवलग्नस्तुकपाटःस्फुटितःस्वयम् श्रीरंगेद्या
पिजल्पंतिव्रतमेतत्पुरातनम् ॥ ३६ ॥ तस्मा
न्नाश्चर्यभूतंहिकिंचिद्भक्तेर्हिविद्यते ॥ ३७ ॥ इ
तिभक्तमालायां मठनिर्माणमाहिम्नि स्वर्णका
रचरितम्

फिर प्रतिमा कों तोड कर्के उसके भूषण रत्नों कों वेच २ कर उत्तम वडा सुंदर मंदिर श्रीरंगजी का वनाते भये ऐसा भक्ति कामाहात्म्यहै ॥ ३५ ॥ जिसके प्रभाव कर्के कटया हुया शिर फिर लग जाना भया श्रौर श्रपने श्राप द्वार खुल जाता भया श्रीरंगजीका एहपुरातन व्रत श्रवभी कथन कर्तेहैं ॥ ३६ ॥ इस कारणसें भक्तिके प्रभावमें श्राश्चर्यवाली वात नहिहै क्या भक्ति मैं कुछ श्रसाध्य नहिहै ॥ ३७ ॥ एह भक्तमालाग्रंथमैं मंदिर बनानेकी महिमामैं सुनयारेयोंका चरित समाप्त हुश्रा ॥

अथ वैष्णवानांनित्यनैमित्तिककाम्यकर्मसाध
नार्थं वैष्णवमंत्रानाहपद्मपुराणे विष्णवंशभू
तंसकलंजगदेतद्द्विजोत्तम तस्माद्विष्णुमयंधी
राःपश्यंतिपरमार्थतः १ ब्रह्मशंकरसूर्याद्याविष्णु
भृत्याःकिलामराः तस्मात्समस्तदेवार्चाविष्णु
मेकं प्रपद्यते २ स्मरतांविष्णुनामानिसर्वपाप
हराणिवै येनकेनाप्युपायेनाविद्यतेनाशुभंक्व
चित् ३ शारदातिलके अथवक्ष्येमहामंत्रंसर्व
कामफलप्रदं यंज्ञात्वामुनयःसर्वेमोक्षभाजो
भवंतिहि ४

अब वैष्णव लोकोंके नित्यनैमित्तिक काम्य कर्मोंके सा
धननिमित्त वैष्णव मंत्रोंका कथन कर्तेहैं पद्मपुराण मैं लिखाहै
हेंद्विजोत्तम एह साराजगत् विष्णुके अंशसें उत्पन्न होएआहु
आहै इसकारणसें परमार्थतें धीर पुरुष सारे जगत् कों विष्णु
मय क्या विष्णुका रूप देखतेहैं १ निश्चय कर्के ब्रह्मा शिव
सूर्यादि सारे देवता विष्णुके ही रूपहैं इसीसें सारे देवतयों
का कराहुया पूजन विष्णु भगवान् जीकों पहुचताहे २ येन
केन क्या जिस तरांसें हो सके उसीतरांसें पापोंके हरणे वाले
विष्णुके नाम जपने वालेयोंकों कहींसेंभी अशुभ नहि होताहै
३ ॥ शारदातिलकमें लिखाहै अब सभतरांकीयां कामना के
फल देनेवाले विष्णुके महामंत्र कथन कर्तेहैं जिनकों जान्
करके पुरुष और मुनि लोक मोक्षके भागी होजातेहैं ४

अनंतोरेफगः सेंदुर्बीजंरामायहृन्मनुः षडक्षरो यस्मादिष्टोभजतांकामदोमणिः ५ ब्रह्माप्रोक्तो मुनिश्छंदोगायत्रीदेवतामनोः कोशलेन्द्रः स माख्यातः रामोराक्षसमर्दनः दीर्घभाज्ञा स्ववीजेनकुर्यादंगानिषट्क्रमात् ६ मंत्रोद्धारो यथा अनंतः आकारः रेफगःरेफःसेन्दुःविंदुसं युक्तः रांइतिभवति रामाय स्वरूपं हृत्नमः रांरामायनमः इतिषडक्षरस्तारकाख्योमनुरु द्धृतः

अब तारक राममंत्र वनाने की रीति लि॰ अनंतकर्के आकार ग्रहण करणा रेफकर्के व्यंजन रकार सेंदु क्या इंदुवीजकर युक्त क्या अनुस्वार कर युक्त करणा रामाय चतुर्थ्यंत पद स्वरूप इसमैं जोडना और हृत् कर्कें नमः जद अंतमैं देना तद रांरा मायनमः ऐसा षडक्षर मंत्र बनता है ५ इसमंत्रका ब्रह्माऋषि गायत्री छंद कोशलेंद्र श्रीरामचंद्र परमात्मा देवताहैं धर्म अर्थ काम मोक्ष इनचार पदार्थौंकी प्राप्तिके निमित्त इनका विनियो ग है और दीर्घ भागी जो स्वरवीज है आकारादि तिनों कर्के क्रमसें षडंगन्यासकरे क्या छे अंगोंमें न्यास करे ऐसे मंत्रका उद्धारहै ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐअस्यश्रीब्रह्मतारकषडक्षररामामंत्रस्य ब्र
ह्माऋषिर्गायत्रीछंदः कोशलेंद्रश्रीरामचंद्रो
देवताधर्मार्थकाममोक्षार्थेजपेविनियोगः अथ
करन्यासः रांअंगुष्ठाभ्यांनमः रींतर्जनीभ्यांन
मः रूंमध्यमाभ्यांनमः रैंअनामिकाभ्यांनमःरौं
कनिष्ठिकाभ्यांनमः रःकरतलकरपृष्ठाभ्यांनमः
इतिकरन्यासः एवंहृदयादिन्यासः रांहृदयाय
नमः रींशिरसेस्वहा रूंशिखायैवषट् रैंकव
चायहुं रौंनेत्रत्रयायवौषट् रःअस्त्रायफट् इति
हृदयादिन्यासः अथमंत्रन्यासमाह ब्रह्मरंध्रे
भ्रुवोर्मध्येहृन्नाभ्यांयुग्मपादयोः षडक्षराणिवि
न्यस्यन्मंत्रस्यमनुवित्तमः ब्रह्मरंध्रेरांनमः भ्रुवो
र्मध्येरांनमः हृदयेमांनमः नाभौयंनमः दक्षि
णपादेंनमः वामपादेमांनमः इतिवर्णन्यासः

वर्णलक्षंजपेन्मंत्रंदशांशकमलैःशुभैः जुहुया
दर्चितेवह्नौब्राह्मणान्पूजयेत्ततः ९ पूजयेद्वैष्णवे
पीठेमूर्त्तिंमूलेनकल्पयेत् श्रीसीतायैद्विठांतेन
सीतांपार्श्वगतांयजेत् ॥ १० ॥ अग्रेपार्श्वद्वयेशा
र्ङ्गशरानंगानितद्वहिः हनुमंतंससुग्रीवंभरतं
सविभीषणम् ॥ ११ ॥

छेलाख मंत्रका जपकरे तिसका दशांश६०००० हजार पूजि
त अग्निमें सुंदर कमलों कर्के मंत्रपढ २ के हवनकरे तिसका द
शांश २ तर्पण मार्जन करे इनो सभनोका दशांश संख्याके
व्राह्मणोंकों भोजनदेवे ९ और विष्णुका पीठ वनायकर क्या
यंत्र वनाय कर मूल मंत्रकों पढके रामचंद्रजीकी मूर्तिकी कल्प
ना कर्के पूजनकरे १० और श्रीसीतायैस्वाहा इस मंत्रकों पढ
कर उठके वामे पासे सीताका पूजनकरे अग्रभागमें और दह
ने वामे पासे शार्ङ्ग धनुष और वाणोंका पूजनकरे त्रिकोणमे
और तिसके छे अंगोंका पूजन करे और तिसकें वाहर आठ द
लके कमलमें हनूमान् सुग्रीव भरत और विभिषणका पूजन
करे ११

अथध्यानंकालांभोधरकांतिकांतमनिशंवीरास
नाध्यासितं मुद्रांज्ञानमयींदधानमपरंहस्तांवु
जंजानुनि सीतांपार्श्वगतांसरोरुहकरांविद्युन्नि
भांराघवं पश्यंतंमुकुटांगदादिविविधाकल्पो
ज्ज्वलांगंभजे इतिध्यानम्

कालेरंगके मेघकी कांति क्याहै श्यामता तिसकी न्यांई है सांद्र श्याम मनोहर रूप जिनका और वीरासन करके वैठेहुए और दक्षिणहाथ करकें ज्ञानमयी मुद्रधारणकरी होई वामा हाथ जानु क्या गोडे ऊपर रखया हुयाहै जिनोने और वामे पासे विजलीका न्याई प्रकाशवाली वैठी हुई जो सीता तिसको देख रहे और मुकुट अंगद कंकणादि अनेकतरांके भूषणोंकीशोभा युक्त क्या अतिसुंदर हैं सारे अंग जिनके ऐसे रामचंद्रजीकों वारंवार भजतेहैं इस पूर्वोक्त मंत्रोंकों जपनेके समय ऐसा ध्यान करे ॥

लक्ष्मणांगदशत्रुघ्नाज्जाम्बवन्तंदलेष्विमान् वा
चयंतंहनूमंतमग्रतोधृतपुस्तकम् ॥ १२ ॥यजे
द्भरतशत्रुघ्नौपार्श्वयोधृतचामरौ धृतातपत्रंह
स्ताभ्यांलक्ष्मणंपश्चिमेयजेत् ॥ १३ ॥सृष्टिंसृ
जंतंविजयंसुराष्ट्रंराष्ट्रवर्धनं अकोपंधर्मपाला
ख्यंसुमंत्रंचदलाग्रतः ॥ १४ ॥

लक्ष्मण अंगद शत्रुघ्न जांववान् इनो आठोंका कमलके दलो मैं ऐसा ध्यान करे कि रामचंद्रजीके सामने हाथजोड कर खडेहैं पूजन करे और उससें वाहर सामने दलमें क्या आगेमें पुस्तककों धारणकरे पाठ कर्ते हनुमानजीका ध्यान कर पूजनकरै ॥ १२ ॥ और दोनों दहने वामे पासे चामर पकडकर रामचंद्रजी कों झोलिया कर्ते ऐसे ध्यान कर भरत शत्रुघ्न दोनोंका पूजनकरे और रामचंद्रजीके पीछे आत पत्र श्वेत छत्र हाथमें लिये होए छाया कर्के खडाहै ऐसा ध्या न कर लक्ष्मणजीका पूजन करै ॥ १३ ॥ और उससें वाहरके अष्टदल के आगे सृष्टि सृज विजय सुराष्ट्र राष्ट्रवर्धन अकोप धर्मपाल सुमंत्र इनों आठोंका पूजनकरे ॥ १४ ॥

सर्वाभरणसंपन्नाल्लोकेशानर्चयेत्ततः तदस्त्रा
णितताेबाह्येवज्रादीनिप्रपूजयेत् एवंपूजादि
भिःसिद्धोमनः कर्माणिसाधयेत् ॥ १५ ॥ जा
तिप्रसूनैर्जुहुयाच्चंदनांभःसमुक्षितैः राजवश्या
यकमलैर्धनधान्यादिसिद्धये ॥ १६ ॥ नीलो
त्पलानांहोमेनवशयेदखिलंजगत् विल्वप्रसू
नैर्जुहुयादिंदिरावाप्तयेनरः ॥ १७ ॥

तिनसें आगे संपूर्ण भूषणोंकरयुक्त दश दिक्पालोंका ध्यान कर्के पूजन करे तिनसें बाहरके दलोंमें वज्रादि तिनके जो शस्त्र उनका पूजन करे इस प्रकारकी पूजादियों कर्के सिद्ध पुरुष क्या साधक मनोभिलषित कामनाका साधन करे ॥ १५ ॥ पूर्वोक्त रीतिसें मंत्रका जप करणेसें उपरंत कामनां के भेदोंक कें हवन विशेष सामग्रियां लि॰ राजाकों वशकरणा होवे तद चंदनके जल साथ सिंचन कर्के चंवेलीके पुष्पो का हवन करे और धन धान्यादि सिद्धि के लिये क्या प्राप्तिके लिये कमल के पुष्पोंका हवनकरे ॥ १६ ॥ और सारे जगत्‌के व श करणेके वास्ते नीले कमलोंका हवन करे और इंदिरा क्या लक्ष्मी की प्राप्तिके लिये पुरुष विल्व वृक्षके पुष्पोंका हवन करे ॥ १७ ॥

दूर्वाहोमेनदीर्घायुर्भवेन्मंत्रीनिरामयः रक्तो
त्पलानांहोमेनधनमाप्नोतिवांछितम् १८ ॥ मे
धाकामेनहोतव्यंपलाशकुसुमैर्नवैः तज्जप्तमं
भः प्रपिवेत्कविर्भवतिवत्सरात् ॥ १९ ॥ तन्मं
त्रितान्नंभुंजीतमहदारोग्यमाप्नुयात् गदितं
राममंत्रस्यप्रभावंसुरपूजितम् ॥ २० ॥

और मंत्रकों जपने वाला दूर्वाके साथ हवन करणें कर्के बडी आयु वाला होताहै और नीरोग रहता है और लाल कमलोंकें होमकर्के निश्चय कर धनकों प्राप्त होताहै ॥ १८ ॥ और जिसकों श्रेष्ट वुद्धिकी कामना होवे सों नवीन क्या हरे पलाशके पुष्पोंका हवन करे और इस मंत्र कर्के जलकों मंत्रितकर्के पीवे तव एक वर्ष कर्के कवि होजाताहै १९ और भोजन मंत्रित कर्के खावेतो वडी नीरोगताको प्राप्त होताहै हेऋषियो एह रामचंद्रजीके मंत्रका प्रभाव कथन कराहै ॥ २० ॥

पद्मपुराणेक्रियायोगसारे व्यासउवाच राम
नाम्नःप्रभावंहिपुनर्वदामिद्विजोत्तमाः यच्छ्रुत्वा
सर्वपापेभ्योमुक्तोभवतिमानवः १ विष्णवंश
भूतंसकलंजगदेतच्चराचरं तस्माद्विष्णुमयंधी
राःपश्यंतिपरमार्थतः २ ब्रह्मशंकरसूर्याद्या
विष्णुभृत्याःकिलामराः तस्मात्समस्तदेवार्चा
विष्णुमेवप्रपद्यते ३ स्मरतांविष्णुनामानि
सर्वपापहराणिवै येनकेनाप्युपायेननाशुभंवि
द्यतेक्वचित् ॥ ४ ॥

पद्मपुराण के क्रियायोगसारमे लिखाहै व्यासदेवजी कथनकर्तेहैं हे द्विजोत्तमाः अवफेर रामनाम का प्रभाव तुमारे ताईं कथन कर्ताहुं जिसकों श्रवण करकें पुरुष सारें पापोंसें मुक्त होताहै ॥ १ ॥ एह जौनसा चराचर साराजगत्है सो विष्णुके अंशसें उत्पन्न होएआ हुआहै इसी कारणसें परमार्थ सें क्या वास्तवतासें धीर पुरुष विष्णुरूपही जगत्कों देखतेहैं ॥ २ ॥ ब्रह्मा शिव सूर्य इंद्रादिक सारेदेवता निश्चयकर विष्णुके भृत्यहैं क्या विष्णुने अधिकारोंपर छोडे होएहैं इसीकारणसें सारे देवतयोंकों करीहोई पूजा विष्णुजीकों पहुचतीहै ॥ ३ ॥ येनकेनउपाय करकें सारे पापोंके नाश करणेवाले विष्णुके नामोंको स्मरकरणे वालेको कहींसेभी अशुभ नहि होताहै ॥ ४ ॥

स्वपन्भुंजन्वदंस्तिष्ठन्नुत्तिष्ठन्मनुजस्तथा स्मरेद
विरतंविष्णुंमुमुक्षुर्वैष्णवोजनः५ तद्वत्सर्वैर्मुनिभिः
सर्वैःस्मरणेकमलापतेः नकालनियमः प्रोक्तः
सर्वदुःखविनाशने ६ नामप्रभावंविप्रर्षे के
शवस्यमहात्मनः ब्रवीम्यहंसमासेनसेतिहा
संनिशामय ॥ ७ ॥ आसीत्सत्यवसुर्नामपुरा
कृतयुगेशुचिः वैश्योवैश्यकुलश्रेष्ठःसमस्तगु
णपारगः ॥ ८॥

जो पुरुष सोंता हुया बेठाखडाहुया २ कहता २ खाता पीता चलता २ फिरता निरंतर मोक्षकी चाहना वाला पुरुष विष्णुका स्मरणकरे ॥ ५ ॥ और सारे दुःखोंके नाशकरणे वाले कमला पतिके स्मरणमे वैष्णव मुनियोंने कालका नियम भी नहि कहा हेविप्रर्षे ॥ ६ ॥ केशव भगवान्जीके नामोंका प्रभाव इतिहासके सहित संक्षेप करके कथन कर्ताहुं तूं श्रवण कर ॥ ७ ॥ पूर्वसमयएकसत्ययुग मे बडे अछे कुलमैं जन्मा हुया वडा श्रेष्ट सारे गुणोंका पारगामी वेश्य सत्यवसुनाम करकें होता भया ॥ ८ ॥

सवैश्योदैवयोगेनप्रथमेवयसिद्विज जगामव
शतांमृत्योः कासश्वासगदार्दितः ॥ ९ ॥ जी
वंतीनामतत्पत्नीसुमध्यागतयौवना मृतेभ
र्तरितातस्यजगामानिलयंप्रति ॥ १० ॥ सा
जीवंतीद्विजश्रेष्ठनवयौवनगर्विता मतिंचका
रजारेषुवोध्यमानापिवांधवैः ॥ ११ ॥ व्रत
स्यनियमंवापिगृहव्यापारमेवसा जारानुरक्त
चित्तातुतत्याजनवयौवना ॥ १२ ॥

हे द्विज सोवैश्य दैवयोग करके पहली ही अवस्था में कास श्वास रोग करके पीडित होएआ हुया मृत्युकी वशता कों प्राप्त होजाता भया क्या मर जाता भया ॥ ९ ॥ तद जीवंती नाम करके तिसकी जौनसी विवाही होई स्त्रीथी सुंदर मध्य भाग वाली और आयाही है यौवन भाव क्या नवीन युवाऽवस्था जिसकों भर्ताके मरे होए पीछे पिताके घरमैं चली जाती भई ॥ १० ॥ हे द्विजश्रेष्ट उहां गई होई नवीन युवाऽवस्थाके मद मोह कर गर्व वाली होई हुई कैसीथी जिसकों वांधव अपने माता पिता अनेक तरोंकीयां शिक्षा भी कर्ते रहतेथे तदभी जारोंमैं प्रीति वाली होती भई ॥ ११ ॥ और व्रतों के नियम जौनसे उसने धारे होए थे जौनसें घरके काम कर्ती थी ओह सारेही कर्म जारों में अधिक प्रीति वाली होई हुई नवीन युवा ऽवस्था कर त्याग देती भई ॥ १२ ॥

अधीकृतासाकामेनसश्रोणीपीवरस्तनी। धर्म
मार्गंद्विजश्रेष्ठनकदाचिद्ददर्शसा ॥ १३ ॥ तां
दुःशीलांततोदृष्ट्वातत्पिताधर्मतत्परः अप
कीर्तिभयाद्भीरुरित्याहात्यंतकोपवान् ॥ १४
दुष्टेपापिनिमद्वंशेसर्वदोषविवर्जिते आसाद्य
जन्मकिमितिक्रियतेपातकंत्वया ॥ १५ ॥
यद्यितेपातकंकिंचिद्वार्धिकेफलमेवाहि तदाक्षि
प्तंकृताभाग्येजहीहिममंदिरम् ॥ १६ ॥

हे द्विजश्रेष्ठ सुंदर है श्रोणि कटि भाग जिसका और कठोर स्तनों वाली कामदेव के वेग कर अंधी होई हुंई धर्मके मार्गकों न देखती भई ॥ १३ ॥ तद तिसकों अत्यंत मर्यादा छोडकर वर्तती कों देखकर तिसका पिता धर्म मार्ग में तत्पर बुद्धिवाला लोकोंके अपयशसें भय कर्ता हुआ अत्यंत क्रोध युक्त होकर ऐसे तिसकों कहता भया ॥ १४ ॥ क्या हे दुष्टे पापबुद्धि वाली सम्पूर्ण दोषों करकें वर्जित क्या ऐसे वंश परंपरासें शुद्ध कुलमैं मेरे घर जन्मकों प्राप्त होकर तूं क्यों पाप कर्ताहैं क्या जिस मेरे कुलमैं आज तक कोई दोष नहि लगाया अब तूं उसकुल प्रधान वंश मे जन्म कर व्यभिचार करणे लगी हैं ॥ १५ ॥ हे दुष्टे खोटें काम करणे वालि तेरेजन्मका मेरेकों वृद्धावस्थामेही एही होएआहै कि लोकोंमैं अपयश होनेलगाहे इस कारणसें तेरा पापनीका निवास घरमैं अछा नहिहै तूं मेरा घर छोड कर शताबी कहीं चलीजा १६

तातेनेतिदुरुक्तासाक्रोधाघूर्णितचक्षुषी पितुर्गृ
हमपित्यक्तासाजगामयथासुखम् १७ ॥ अथ
सास्वेच्छयानारीभ्रमंतीजारकांक्षया वेश्यावृ
त्तिसमासाद्यतस्थौलज्जाविवर्जिता १८ ॥ पु
लिंदःशवरोवापिचांडालोवापियोगृहं आयाति
तस्यास्तंचापिप्रेम्णाभजतिसाऽसती १९ पर
लोकभयंविप्रस्वप्नेऽपिक्वचिदेवसा नैवसंचित
यामासवारनारीतथाक्रियाम् ॥ २० ॥

पिताने इसप्रकार के दुर्वचनों कर कथनकरी होई क्रोधसें ला
ल होगएहैं नेत्र जिसके ऐसी ओह पापमतिवाली पिताके
घरकों त्यागकर यथासुख क्या प्रसन्नता पूर्वक चली जातीभई
१७ ॥ अब घरसें निकल जानेमें पीछे सें जीवंती नामक स्त्री
सुंदर युवावस्था वाले धनाढ्य किसी जारकी इच्छावाली फिर
ती होई तिसकों कोई ऐसानहि मिला तद वेश्याकी वृत्तिकों
आश्रित होकर लज्जाका त्याग करके किसी नगर के बजारमें बै
ठ जाती भई १८ ॥ तद तिसने ऐसी वृत्ति धारी कि पुलिंदनी
च जातिके म्लेच्छजाति के भीललोक और नीचों सेभी नीच
जो कोई तिसकें घरमें आजावे तिसके साथ तिसने प्रेम करके
सुखसंभोग क्रीडा करणी ऐसी सो वेश्यासें भी अधिक निर्लज्ज
होकर रहती भई १९ ॥ और हेविप्र इसवृत्तिकों आश्रित होई
हुई सो कदी परलोक का भय स्वप्नमें भी नहि चिंतन कर्तीभ
ई कि मैं धर्म राजको क्या कहूंगी ॥ २० ॥

एकदाब्राह्मणश्रेष्ठकश्चिद्व्याधस्तदालयं शुक
शावकमादायविक्रयार्थंसमाययौ २१ सापि
वारांगनातंचशुकशावकमुत्तमं जगृहेपरमप्री
त्याधनैःसंपूज्यलुब्धकम् २२ ॥ तद्योग्याहा
रदानेनवारस्त्रीनित्यमेवसा शुकस्यपोषणंच
क्रेतस्यजातकुतूहला २३ ॥ वारांगनानपत्या
सातमेवशुकशावकं मत्वापुत्रमिवाजस्रंचक्रे
तत्परिपालनम् २४ ॥

हेब्राह्मणोंमे श्रेष्ट एक दिन तिसके घर कोई व्याध क्या फां
सियां लगायकर पंछियोंको पकडने वाला तोतियों के बच्चे लि
ये होए तिनकों वेचने निमित्त कहीं जाता २ रस्ते में उसके
घर आय प्राप्तभया ॥ २१ ॥ तिसकों देखकर पास विठाय
लिया पूछने लगी एह तोतेके बच्चेका क्या लेवेगा तद उसने
कुछ मोल वताया तो धन उसके तांई देकर्के परम प्रीति सें
तोता लेलती भई ॥ २२ ॥ तो नित्यंप्रति सो वेश्या तिसके
योग्य आहार क्या इसके खाने वाली चोगसें तिसका पालन
कर्ती भई कैसी ओह वेश्या है उत्पन्न होई है प्रीति जिसमैं और
कुतूहल क्या मनकी प्रसन्नता जिसकों ॥ २३ ॥ और सो वा
रांगना वेश्या अनपत्यथी क्या उसके संतान कुछ भी नहिंथी
तद सो तिस तोते के बच्चेकों पुत्रकी न्याईं जान कर वारंवार
वडी प्रीतिसें पालन कर्ती भई ॥ २४ ॥

ततोसौलब्धतारुण्यः शुकोगणिकयातया रामे
तिनामसततंपाठ्यतेसुंदराक्षरम् २५ रामना
मपरंब्रह्मसर्ववेदाधिकंमहत् समस्तपातकध्वं
सिसशुकस्तत्तदापठत् २६ रामोच्चारणमात्र
णतयोश्चशुकवेश्ययोः विनष्टमभवत्पापसर्व
मेवसुदारुणम् २७ कदाचिद्वारमुख्यासाशु
कोपिद्विजसत्तम तावुभावपिपंचत्वमेककालेग
तौततः २८

तिस सें उपरंत एह तोता तारुण्यकों प्राप्त होएआ क्या अछो
तरां जद वडा समर्थ हुया तद उह गणिका उसकों सुंदर अ
क्षरो कर युक्त रामनाम पढावती भई २५ एहराम नाम जो है
सो परम ब्रह्म का रूप है सारे वेदों सें अधिक है और सभनो
सें वडा है और सारे पापों के ध्वंसन क्या नाश करणे वाले
रामनामकों शुक जो तोता था सो पढ लेता भया २६ तद रा
मनाम के उच्चारण करणे कर्के तिनों दोनों तोते और वेश्याके
पाप दूर होजाते भये सारेही जौनसे दारुणभी थे सोभी २७
हेद्विजसत्तम एकदिन ओह वेश्या और ओह तोता दोनों ही इ
कठे एकसमम ही मृत होगए २८

समानेतुंततस्तौचविहिताखिलपातकौ किंक
रान्प्रेषयामासचंडाद्यान्धर्मराट्प्रभुः २९ तत
स्तेकिंकराः सर्वेचंडाद्यात्र्प्रतिवेगिताः यमाज्ञ
यासमायाताः पाशमुद्गरपाणयः ३० आनेतुं
तौसमायाताः सर्वेविष्णुपराक्रमाः पाशवद्धौ
तदादृष्ट्वापथितौविष्णुकिंकराः ऊचुर्वाक्यमि
दंक्रुद्धायमदूतान्दुराशयाः ३१

इकठे करे हैं सारे पाप जिनोंने ऐसे तिनपापियोंके निमित्त धर्मराजा चंडादियोंसें आदलेकर दूतोंकों भेजदेता भया २९ तिस धर्मराज की आज्ञा के होनेसें उपरंत फांसियां और मुद्गर हाथों में लियें होए वडेवेगकर युक्त दौडते २ तिनके ले जाने के निमित्त चले आवते भये ॥ ३० ॥ इतने मैं वैकुठसें भी विष्णुके रूपवलपराक्रमके तुल्य देवगण विमानों पर चढे हुए आवते भये तों ऊपर के रस्ते मैंही सें क्या देखते भये कि यमदूतोंने तिनकों फांसियों सें वांधकर मुद्गरों सें ताडन कररहे हैं इसतरां के तिनकों देखकर विष्णुके गण क्रुद्ध हुए२ ऐसें कहते भये ३१

विष्णुदूताऊचुः केयूयंविकृताकाराज्वलत्पा
वकलोचनाः अत्यंतदीर्घरोमाणोदंष्ट्रिणश्चर्म
वाससः ॥ ३२ ॥ कथमेतौमहात्मानौ विनष्टा
खिलपातकौ वद्ध्वानयथपाशेनभवंतःकस्य
किंकराः ॥ ३३ यमदूताऊचुः वैवस्वतस्यदेव
स्यसद.ज्ञाकारिणोवयं नयामोभीमकर्माणौय
मालयमिमौजनौ ३४ ॥ यमदूतवचःश्रुत्वाते
सर्वेविष्णुकिंकराः जघ्नुस्तत्रप्रकोपेणबालसू
र्यनिभाननाः ॥ ३५ ॥

विष्णूके दूत कथन करते हैं वलती होई आग्निके समान नेत्रों वाले और वडे विकराल क्या भयानक रूपों वाले वडीयांहैं दाढां और अत्यंत लंवेंहें केश जिनके ऐसे तुसी चर्मके वस्त्रों वाले कौनहो कहांसें आएहों ॥ ३२ ॥ और नष्ट होगए हैं पाप जिनके ऐसे इनों महात्मा दोनोंकों फांसियोंके साथ वांध कर क्यों लेजातेहो ऐसे तुसीं किसके नौकर हो हमारे प्रति कहो ॥ ३३ ॥ इतना वचन सुन कर यमदूत कहने लगे हम सूर्य पुत्र धर्मराज देवताके सर्वदा काल आज्ञा पालन करणे वाले हैं और एह भयंकर काम करणे वाले एह दोनों जन हैं इनकों यम पुरीमें लेजाते हैं ॥ ३४ ॥ इतना वचन सुनकर यम दूतों का सारेही विष्णुके किंकर वाल सूर्यके समान आभा कर युक्त मुखों वाले क्रोध करके तिनकों मारते भये ॥ ३५ ॥

विष्णुदूताऊचुः अहोचित्रमिदंवाक्यंयमदूत
मुखाच्छ्रुतं भक्तावपिहरेरेतौदंडयौभास्करसू
नुना ॥ ३६ ॥ अहोचरित्रंदुष्टानांकदाचिदपि
नोत्तमम् यत्नादापियतोहिंसांकुर्वंतिसततंसता
म् ॥ ३७ ॥ दुष्टानांकृतपापानांचरित्रमिदमद्भुतं
निष्पापाह्यपिपीडयंतेस्वानुमानेनपापिवत् ॥
३८ ॥ निष्पापवत्पश्यंतिपुण्यात्मानोखिलंज
गत् पापात्मानस्तुपश्यंति कृतपापमिवाखि
लम् ॥ ३९ ॥

और ऐसे कथन कर्ते भये क्या वडे आश्चर्य युक्त यम दूतोंके मु
खसे वचनसुनाहै क्या कि धर्मराजा हरिके भक्तोंकोंभी दंडदेता
है ३६ ॥ देखो दुष्ट पुरुषोंके चरित्र जोनसें कदी भी अछे न
हि होतेहैं जोकोइ जन्मसेंभी सर्वदाकाल सत्पुरुषोंकी हिंसा
हि कर्तें हैं ३७ ॥ करे हैं पाप जिनोंने ऐसे दुष्टोंका एह वडा
अद्भुत चरित है कि अपनेही अनुमान कर्के विना विचारे नि
ष्पापियोंकों भी पापियोकी न्याई दंड देतेहैं ॥ ३८ ॥ और
जोनसें निष्पापी पुण्यात्मा पुरुष हैं सो सारेही जगत्कों अप
नी न्याइंक्या पुण्यवानोंकी न्याई देखतेहैं और जौनसे पापीहैंसो
सभनों कों अपनेकी न्यांई कृत पापों को देखते हैं ॥ ३९ ॥

श्रुत्वापापात्मनांपुण्यमपितृप्यंतिधर्मिणः तृ
प्यंतिपातकंश्रुत्वापापिनांपापिनोजनाः ४०
पापचर्यांसमाकर्ण्ययथातृप्यंतिपापिनः तृप्यं
तिनतथाप्राप्यस्वर्णभारशतान्यपि ४१अहोब
लवतीमायामहाविष्णोर्महात्मनः आत्मपीडा
करमपिपापंकुर्वंतिदुर्धियः ४२ व्यासउवाच॥
इत्युक्त्वाविष्णुदूतास्तेविष्णुभक्तिपरायणाः छि
न्नवंतस्तयोस्तत्रबंधनंचक्रधारया ४३ ॥

धर्म करणे वाले धर्मात्मा जो लोकहैं सो पाप करणे वाले पुरु षोंकेभी पुण्यकों श्रवण करकें प्रसन्नहोतेहैं क्यों इतने पापोंके करते इसने पुण्य किया है इसका भी कुछभलाहोवेगा और जों पापी लोकहैं सो पापियों के पापकर्म ही सुन कर तृप्तहो ते हैं ४० पापीलोक पाप वालों की पापचर्या क्या पापों का करणा सुनकर जितनेक प्रसन्न होते हैं इतनी प्रसन्नता उ नकों सौ भार सोनेके मिलने करकें भी नाहे होतीहै ४१ देखो महात्मा महाविष्णुकी माया कितनीक वलवान् है जिसके व शी भूत होए हुए दुष्ट वुद्धिवाले अपनेकों क्लेशदेने वाले भी पाप हैं तदभी तिनकों कर्ते ही चलते हैं ४२ व्यासदेवजी कथनकरें हैंद्विजाः विष्णुकी भक्तिमैं परायण विष्णुके गण ऐसें कहिकर तिनके जौनसें वंधनथे तिनकों चक्रकी धारा करकें क टदेते भये ४३

ततस्ते शमनप्रेष्याः क्रुद्धाअंगारसन्निभाःववर्षुः
सहसातत्रज्वलदंगारसंचयम् ४४ विष्णुदूतव
चःश्रुत्वाचंडः कोपसमन्वितः उवाचतांस्ततोवि
प्रविष्णुदूतान्महावलान् ४५ चंडउवाच विहितै
नसमप्येनंशुकंवेश्यांचपापिनीम् नेतुंयूयंसमा
याताअत्यद्भुतामिवाभवत् ४६ नूतमेतौयदानेतु
यूयमिच्छथसत्तमाः तदाकुरुतसंग्राममस्मा
भिःसहसंप्रति ४७

तिस सें उपरंत धर्मराजके दूत क्रोधकों प्राप्त होकर अंगारोंकी न्याईं होए हुए शीघ्र ही जलते २ अंगारोंके समूहों कों वर्षते भये ४४ और विष्णुकेदूतोंका वचन श्रवणकर चंड क्रोधकर संयुक्त होएआ हुया हे विप्र महावल पराक्रम वाले विष्णुके दूतों प्रति कहता भया ॥ ४५ ॥ चंडकहनेलगा जेकर तुम पापी तोते और पापिनी वेश्याके लेजाने कों आए हो तद एभी वड़े आश्चर्यकी वात होई है क्योंकि ऐसेभी पापी तुमने लेजाने हुए तद पुण्य क्यौं किसीने करणा है ४६ हेसत्तमाः निश्चय कर्के तुम इनके लेजाने कों आएहो तद हमारे साथ युद्ध करो इस सें उपरंत फिर लेजाना ४७

इत्युक्तायमदूतास्तेवलिनोविविधायुधाः सिंह नादैर्दिशः सर्वाःपूरयामासुरुद्धताः ४८ विष्णु दूतामहात्मानः सुप्रकाशादयस्तथा शंखनादैः सुललितैश्चक्रुश्शब्दमयंजगत् ४९ ततोयाम्यै धनुर्मुक्तैर्महादूतैःशिलीमुखैः छादिताविष्णुदू तास्तेसंग्रामेभृशदारुणैः ॥ ५०॥ शूलानिचि क्षिपुःकेचित्केचिच्छक्तीर्महाहवे केचिच्चमुद्गरा स्त्राणिकेचिच्चक्राणिवैरुषा ॥ ५१ ॥

इस प्रकार कथनकर्के यमके वडे वलवान्दूत अनेक तरांके शस्त्रो वाले उन्मत्त दूत सिंहकी न्याईं गर्जनांकर्के सारीयांही दिशा पूर्ण कर्देते भये ॥ ४८ ॥ और विष्णु के जो दूतहैं महा त्मा सुप्रकाशादि सो वहुत सुंदर आनंद देने वाले शंखों के शब्द कर्के सारे जगत् को ही शब्दमय कर्देते भये ॥ ४९ ॥ तद तिससें उपरंत यम राजके महादूतोंने धनुषों कर्के त्यागे होए अत्यंत कठोर देहकों भेदन करणे वाले वाणों कर्के संग्रा ममैं विष्णुके दूत आछादन कर्दिये ॥ ५० ॥ और कोईंतो त्रिशू लोंकों त्यागते भये और कोई उसमहायुद्धमें वर्छियोंका प्रहार कर्ते भये और कोई २ क्रोध कर्के मुद्गरोंसें चक्रोंसें प्रहार कर्ते भये ॥ ५१ ॥

तैर्मुक्तानिमहास्त्राणिविष्णुदूतामहाभटाः सर्वा
णिचूर्णयामासुर्गदाप्रहरणादिभिः ५२ ॥ ततो
भागवतैर्दूतैर्याम्यानांचक्रधारया केषांचिच्चरणा
श्छिन्नाःकेषांचिद्वाहवस्तथा ५३॥केचिद्विच्छिन्न
शिरसः केचिन्निर्भिन्नवक्षसः स्रवद्रक्तोक्षिताःके
चिद्याम्याःपेतुर्गतासवः ॥ ५४ ॥ छिन्नैकचर
णाः केचित्केचिच्छिन्नैकपाणयः संत्यक्तसाह
सायाम्याः संग्रामाच्चप्रदुद्रुवुः ॥ ५५ ॥

तिन यम दूतों कर्के त्यागे होए जो वडे २ अस्त्र तिनकों वडे वलवान् दूत विष्णुके अपनें गदादि शस्त्रों कर्कै चूर्ण करदेंते भये ५२ और भगवान्के दूतोंने कितनेक यम दूतोंके चक्र धारा कर्कें चरण काट दिये और कितनों कियां वाहवां हाथ काट दिये ॥ ५३ ॥ कितनेक काटे होए शिरों वाले कितनेक भे दे होए वक्षस्थलों वाले कितनेक यमके दूत जिनसें रुधिर च ला कर्ता ऐसें प्राणोंकों त्याग कर पृथिवी ऊपर डिग पडते भ ये ॥ ५४ ॥ और कैईक ऐसे हैं जिनका एक हाथ काटा ग या कैंईक ऐसे जिनका एक पाद काटा गया और अनेक प्र कारोंके छिन्न भिन्न अंगों वाले युद्धका हठ त्याग कर संग्रामसें यम दूतभाग कर चले जाते भये ॥ ५५ ॥

तानालोक्यततोदूतान्पलायनपरायणान् प्रवि
वेशरुषाचंडः संग्रामेधृतमुद्गरः ॥ ५६ ॥ यमदू
तगणश्रेष्ठश्चंडोत्यंतप्रतापवान् ताडयामासस
ततंमुद्गरैर्विष्णुकिंकरान् ॥५७ ॥ अथतेभगवद्दू
ताश्शितायुधनिवर्षणैः ववर्षुस्तरसाक्रुद्धास्तं
चंडंचंडविक्रमम् ॥ ५८ ॥ मुद्गरेणततश्चंडोवि
ष्णुदूतान्पृथक्पृथक् ताडयामासविगलद्रक्तसं
सिक्तविग्रहः ॥ ५९ ॥

भागनमैं तत्पर होए हुए यमके दूतोकौं देंखकर चंडनामा दू
तौंकास्वमी वडा क्रोध कर्के मुद्गरकौं उठायके संग्राममें आयप्रवे
श कर्ता भया ॥५६ ॥ यम के दूतोमे श्रेष्ठ जो अत्यंत प्रतापी
चंड सो अच्छी तरां सें मुद्गरोंके साथ विष्णुके किंकरक्यानौंकरोको
ताडन कर्ता भया ॥ ५७ ॥ इससें उपरंत सो भगवान् के दूतग
ण अपनेतीक्ष्ण धारा वाले शस्त्रों की वर्षाकर्के क्रुद्ध होए हुए
चंडक्या अत्यंत नहि सहारणे योग्य पराक्रम वाले चंड नामे
दूतौं के स्वामिकौं ताडन कर्ते भये ॥ ५८ तद उोह चंड वि
ष्णुके दूत गणोंकौं मुद्गरके साथ देहसेचलेया कर्ताहै जो रुधिर
तिस कर्कें संसिक्त क्या भीगाहुआ है देहाजिसका ऐसासो ति
नको पृथक् २ क्या एक २ कौं ताडन कर्ता भया ॥ ५९ ॥

चंडेननिहतास्तेनदूताभागवतायुधि त्यक्तस
त्वाः पृष्ठभागंसुप्रकाशस्यवैयथा ॥ ६० ॥
सुप्रकाशस्ततः क्रुद्धोजपापुष्पनिभेक्षणः प्रवि.
वेशरणंयोद्धुंगदापाणिर्महावलः ६१ गदयामु
द्गरंतस्यसुप्रकाशोमहावलः ताडयामाससंक्रु
द्धोविष्णुतुल्यपराक्रमः ॥६२॥ मुद्गराच्चंडहस्त
स्थात्प्रेक्षज्जनभयप्रदात् समुत्तस्थौततोवह्निः
सधूमः पूतिगंधिमान् ॥ ६३ ॥

युद्ध के विषें भगवान्के दूत तिस चंडने ताडन करे होए धैर्य कों छोडकर सुप्रकाश की पीठ पीछे जाय कर स्थित होजाते भये ॥ ६० ॥ तद ओह शुप्रकाश क्रोधकों प्राप्त होकर जपा के पुष्पोंकी न्याईं लाल नेत्र करकैं गदाकों हाथ लेकर महावली युद्ध करणेकों रणके मध्यमैं प्रवेश कर्ता भया ॥ ६१ ॥ सो महावल पराक्रम वाला सुप्रकाश अपनी गदाके साथ तिसके मुद्गरकों विष्णुके वरावर पराक्रमी ताडन कर्ता भया ॥ ६२ ॥ देखते लोकों को भय देने वाला चंडके हाथ में स्थित जो मुद्गर तिससें दुर्गंधि और धूम कर युक्त अग्नि उत्पन्न होता भया ६३

स्वमुद्गरेणचंडेनताडितास्यचवैगदास्फुलिंगव
र्षणंसद्योमुमोचात्यंतभीतिदं ततःक्रोधेनचंडो
सौतेनैवमुद्गरेणवली ताडयामासविप्रर्षेसुप्र
काशंमहाबलम् ६५सुप्रकाशस्ततोविप्रव्यथां
विस्मृत्यकोपवान् गदयाताडयामासचंडंशम
नकिंकरम् ६६ तयाप्रताडितश्चंडस्तत्ररक्तपरि
प्लुतः पपातमूर्छितोभूमौबालार्कइवजैमिने ६७

अपने मुद्गरके साथ जिससमय इसचंडने सुप्रकाशकी गदाकों ताडनकरा तदअत्यंत भयंकर अग्निके किणकयोंकी वर्षाकों त्या गता भया क्या उनके आपसमे ताडन होने करके अग्निके किणकेनिकलते भये ॥ ६४ फिर क्रोधकेसाथ एहचंड उसी अपने मुद्गरकेसाथ हेविप्रर्षे महावली सुप्रकाशकों ताडनाकर्ता भया ॥ ६५ ॥ हेविप्र जद उसकों मुद्गरके साथमारा तद सुप्रकाशने क्या करा अपनी पीडाकों विसार दिया क्या ऐसाजाना किमेरेकों कहीं लगी भी नहि शमन क्या धर्मराज कें किंकरकों गदाके साथमारता भया ॥ ६६ तद उससमय तिस गदाके साथ ताडना करा हुया चंड रुधिरकेसाथ युक्तहुया२वालसूर्यकी न्याईसाराही लालरंगके देहवाला मूर्छाकों प्राप्त होकरपृथिवी पर गिड पडता भया ॥ ६७ ॥

याम्यदूतास्ततःसर्वेचंडमादायमूर्छितं हाहाका
रंप्रकुर्वतोयुद्धभ्रष्टाःप्रदुद्रुवुः ६८ विष्णुदूतास्त
तोविप्रविष्णुतुल्यपराक्रमाः जयशंखान्समा
दध्मुर्जैमिनेद्विजसत्तम ६९ ततोरथेसमारो
प्यराजहंसयुतेचतौ जग्मुर्विष्णुपुरंसर्वेसहसा
काशवर्त्मना ७० विष्णुभक्तौमहात्मानौवि
नष्टाखिलपातकौ प्राप्तवंतौमहाविष्णोः सारू
प्यंद्विजसत्तम ॥ ७१ ॥

तद उससमय यमकेदूत सारेही मूर्छित होएहुए चंडकों उठाय कर्के युद्धसें भ्रष्ट होए हुए दौड कर चलेजातेभये ॥ ६८ ॥ हे विप्र तिनकें चलेजानेसें पीछें विष्णुके तुल्य पराक्रम वाले विष्णुकेगण हेजैमिने द्विज सत्तम विजय होनेकी प्रसन्नता कर्के शंखवजातेभयें ६९ उससें उपरंत राजहंसोंकरयुक्त जो अतिसुंदर विमान तिसपर विठायके तिन दोनो कों शीघ्र आकाश मार्ग कर्के विष्णुके पुरकों चलेजाते भये ॥ ७० हेद्विजसत्तम नाश होगए हैं सारेपाप जिनकें ऐसे ओह विष्णुके भक्त दोनों महाविष्णुकों सारूप्य मुक्ति कों प्राप्त होजाते भये ॥ ७१ ॥

यमदूतास्ततस्तेतुशोणितौघपरिप्लुताः यम
स्यसन्निधिंजग्मुःक्रंदंतोव्यथयाकुलाः ७२ ॥
तत्रगत्वायमप्रेष्यामुक्तकेशाहतप्रभाः सूर्यपुत्रं
समुद्दिश्ययदूचुस्तच्छृणुद्विज ७३ यमदूता
ऊचुः सूर्यपुत्रमहावाहोत्वदाज्ञाकारिणोवयं
तथ।विष्णुदूतैश्चकृतादुर्गतिरीदृशी ७४ महा
पातकिनांश्रेष्ठौप्रभोयद्यपितौखलौ रामनाम
प्रभावेणगतौनारायणालयम् ७५

तिससें उपरंत ओहसारेहीं यमके दूत रुधिरके साथ भरे होऐ पी
डा कर्के रोतेपिटते यमके पास चलेजातेभये ७२ तहां जाकेय
मके दूत खुले होएहैं केश जिनके दूर होगई प्रभा जिनकी
ऐसे ओह सूर्यके पुत्रकों सुनायकर हेद्विज जोकुछ कहतेभये सो
श्रवणकर ७३ यमदूत कहने लगे हेसूर्यकेपुत्र महावाहो हम तु
मारी आज्ञाको मानने वाले हैं तदभी विष्णुके दूतोंने ऐसी दुर्ग
ति करीहैं ७४ हेप्रभां निश्चयकर्के ओह महापातकियोंमैं श्रेष्ट
दोनों रामनामके प्रभावकर्कें नारायणके मंदिरकों चलेगएहैं ७५

भवतादंडनीयायेदुरात्मानःकृतैनसः तेपिवि
ष्णुपुरंयांतिप्रभुत्वंतवकिंतदा ७६ नास्माकंवि
ष्णुदूतैस्तुकृतःपरिभवोह्ययम् तवैवकेवलंना
थयतस्तेकिंकरावयम् ७७ यमउवाच श्रुतंय
द्यपिदूतावैरामनामाक्षरद्वयं दंडनीयौतदानो
मेतयोर्नारायणःप्रभुः ७८ संसारेनास्तित
त्पापंयन्नामस्मरणादपि नयातिसंक्षयंसद्योदृ
ढंशृणुतकिंकराः ७९

हे राजन् करेहैं पाप जिनोंने ऐसे दुरात्मालोक जिनकों तुमने दंडदेणायोग्यहै ओहभी रामनामके प्रभावककें विष्णुके पुरकों चलेहैं तोतुमारी प्रभुता क्या रही ७६ और जौनसे हमतुमारे किंकरहैं हमारा जो उनोंने तिरस्कार करा सो हेनाथ तिरस्कार तुमाराहुयाहै हमारातोनहिहै ७७ इतनावचन दूतोंका सुनकर्के धर्मराज कहनेलगा हेदूतो जिन पुरुषोंने रामनामके दो अक्षर श्रवणभी करेहैं ओह मेरेसेंनहि दंडकरेजातेहैं उनोंनेतो कितना काल रामनामजपा उनके स्वामी नारायणजीहैं ७८ हेदूतो मेरे सें श्रवणकरो ऐसा संसारमें कोईपाप नहि देखाहै जो रामनामा केस्मरण सें क्षीणनहि होताहै अर्थात् जितनेक पापहैं सोसा रेही रामनामके जपनेसें नष्ट होजातेहैं ७९

येमानवाःप्रतिदिनंमधुसूदनस्य नामानिघोर
दुरितौघविनाशकानि भक्त्यास्मरंतिविवुधप्र
करार्चितस्यतेपापिनोपिचभटाममनैवदंड्याः
८० ॥ गोविंदकेशवहरेजगदीशविष्णोनारा
यणप्रणतवत्सलमाधवेति भक्त्यावदंतिपुरुषाः
सततंक्षितौये दंड्यानतेममभटा अपिपापिनो
पि ८१ ॥ लक्ष्मीपतेसकलपापविनाशकारि
न् श्रीकृष्णकेशिमथनाच्युतदेहिदास्यं एतद्व
दंतिभुवियेसततंमनुष्यास्तेपापिनो ऽपिनभटा
ममदंडनीयाः ८२ ॥

जोनर पुरुष पृथिवी लोक मैं घोर पापों के समूहों कों विना
श करणे वाले जों देवतेयों के समूहो करकें पूजित मधु
सूदन भगवान् तिनकें नामों कों स्मरण कर्तें हैं
हे भटा ओह पापी भी पुरुष मेरेकों दंड कर्णे योग्य न
हि ८० ॥ सो कोनसे नाम हैं लि ० ॥ हेगोविंद हेकेशव ह
रे हेजगदीश विष्णो हेनारायण शरणागत जो भक्त पुरुष सो
हैं प्यारे जिनकों हेमाधव निरंतर पृथिवी लोकमैं जों पुरुष
इन नामो कों कहते हैं ओह पापी भी मेरे कों दंड करणे
योग्य नहि हैं ८१ हेलक्ष्मी के पति सारें पापों के नाशकरणें
वाले हें श्रीकृष्ण कोशीदैत्यके मारणे वाले हे अच्युत मेरेकों
अपनी भक्ति देओ पृथिवी लोक मैं जो इन नामों कों क
हते हैं सो पापी भी मेरेकों नाहि दंड करणे योग्यहैं ॥ ८२

दामोदरेश्वरसुरोत्तमवृंदवंद्य श्रीवासुदेवपुरु
षोत्तममाधवेति येषांवसंतिवदनेषुसदैवश्रेष्ठा
न्दूताननमाम्यहमपिप्रतिवासरंतान् ॥ ८३ ॥
नारायणस्यजगदेकपतेर्मुरारे रर्चासु चित्तमति
हार्दिनृणांचयेषां तेषामहंसततमेवभटाअधी
नो येविष्णुपूजनपराहरिभक्तभक्ताः ॥ ८४ ॥
एकादशीव्रतपराः कपटैर्विहीनायेविष्णुपादस
लिलंशिरसावहंति दूताअधीनमखिलंजग
देवतेषांयेभुंजतेभगवतोमधुसूदनस्य ॥ ८५ ॥

और हेदामोदर ईश्वर सुरोत्तमोंके समूहों करके वंदना करणे योग्य हे श्रीवासुदेव हे पुरुषोंमें श्रेष्ठ माया लक्ष्मीके धव स्वामिन् एह नाम जिनके मुखमें सदा वर्त्तमान रहते हैं हेदूतो तिनों श्रेष्ट भक्तपुरुषों कों मैं रोजके रोज नमस्कार कर्ताहुं॥ ८३ और जो कोई पुरुष जगत् के एक पति मुरके शत्रु नारायण की पूजामें प्रीति वाला मन जिनका और जो विष्णुके पूजन करणे वाले भक्तोंकें भक्त जोनसेहैं हेभटा दूता तिनके अधीन सर्वदा काल मैं रहता हुं ॥ ८४ ॥ और जोनसें एकादशीका व्रत कर्तेहैं और कपटसें रहितहैं और जौनसें विष्णुके चरणामृतकों शिरककेंधारणकर्तेहैं हेदूता तिनके अधीन सारा जगत् है और जौनसें भक्षणकर्ते मधुसूदनजीका ८५

नैवेद्यशेषमखिलाघविनाशकारियेकर्णयोश्चशि
रसिच्छदनंतुलस्याः नित्यंवहंतिचभटाःप्रण
माम्यहंतान् ॥ ८६ ॥ येमातृतातचरणार्च
नतत्पराश्चयेब्राह्मणार्चनरतागुरुसेवकाश्च ये
दीनलोकहृदयातिथिपूरिताशाः तेषामहंस
ततमेवभटाअधीनः ॥ ८७ ॥ येसत्यवाक्य
कथनेषुसदानुरक्ताः सद्भक्तदाश्चशरणागत
पालकाश्च पश्यंतियेचविषवत्सततंपरान्नं ते
मानवाममभटानहिदंडनीयाः ॥ ८८ ॥

सारे पापोंके विनाश करणे वाला जो नैवेद्य तिसकों खाते हैं और निर्माल्य शेषकी तुलसी कों शिरमैं जां कानोंमैं धारण कर्तेहैं हेभटाः तिनकोंमैं नमस्कार कर्ता हुं ॥ ८६ ॥ और जोनसें माता पिताके चरणोंकी पूजा करणेमें तत्परहैं और ब्राह्मणोंकी पूजामैं तत्पर हैं और गुरुकी सेवा करणे वाले जो हैं और दीन अनाथोंके देखनेमैं दया वाला मन जिनका और अभ्यागतों कीयां आशा पूर्ण करणे वालेहैं हेभटाः तिनके अधीनमैं सर्वदाकालहां ॥ ८७ ॥ और जोनसें कोई सर्वदाकाल सत्य कहनेमैं प्रीति वालेहैं और साधुयोंकों भक्त देतेहैं शरणागतोंकी रक्षा करणे वाले और पराये अन्नकों विषकी न्याइं देखके त्यागतेहैं हेभटा ओह मेरे दंडके योग्य नहिहैं ८८

येचान्नदाननिरताः सलिलप्रदाश्चभूमिप्रदानि
खिललोकहितैषिणश्च येवृत्तिहीनजनवृत्ति
कराःप्रशांता दूतानतेपिचकदाममदंडनीयाः
॥ ८८ ॥

और जौनसे कोई अन्नदान करणेमें तत्पर हैं क्या जिनके सदाव्रत अन्नके लगे होएहैं और जौनसे कोई जल दान करणे वाले हैं क्या जिनोंने निर्जल स्थानोंमें खूहे तला वाउली आं धर्मशाला अथवा खूहे ऊपर जलके निकालने वास्ते साधन वना रखेंहैं रस्सि जां डोल और भूमिके देने वालेहैं और जौनसे कोई सारे लोकोंका हित प्यार करणे वाले हैं और वृत्ति क्या है उपजीविका तिस करके हीन पुरुषों कों उपजीविका लगाय देने वेले क्रोध लोभादियोंसें रहित जो हैं ओह मेरेकों कदापि काल दंड करणे के योग्य नहिहैं ॥ ८८ ॥

येज्ञातिपोषणपराःप्रियवादिनश्च येदंभकोप
मदमत्सरहीनचित्ताः येपापदृष्टिरहिताविजि
तेंद्रियाश्च येमानवाःपरहितेषुसदानुरक्तास्ते
षामहंनविदधामिकदापिचर्चाम् ॥ ८९ व्या
सउवाच एवंप्रवोधितास्तेहियमेनयमकिंक
राः ज्ञानवंतोजगद्भर्तुःप्रभावमतुलंहरेः ॥ ९०

और जौनसें कोई अपने जातिवाले लोकोंकी पालनामैं रतहैं और सभकों हित प्यारके वचन कहने वाले और दंभ क्रोध लोभ मद मत्सरता कर्के हीन मन वाले और पाप दृष्टि कर्कें रहित और जिनोंने दुर्व्यसनों सें इंद्रियोंकों जितआ हुयाहै और जौनसें पुरुष पराए हित प्यार उपकार करणे में तत्पर सर्वदाकाला रहने वाले तिनको मैं हेदूतो चर्चा भी नहि कर्ता हुं दंड करणातो वडी वातहै ॥ ८९ ॥ इतनी कथा श्रवण कराय कर पीछेसें फिर व्यासदेवजी कथन कर्ते भये हेद्विजस त्तम इस प्रकारके वचनों कर ज्ञान वान कराए होए यमके किंकर जगतके भर्ता पालन करणे वाले हरि विष्णुके अतुल प्रभावको जानते भये ॥ ९० ॥

विष्णोर्नामानिविप्रेंद्र सर्ववेदाधिकानिवै तेषांम ध्येतुतत्त्वज्ञैरामनामवरंस्मृतम् ॥ ९१ ॥ रामे त्यक्षरयुग्मंतुसर्वमंत्राधिकंद्विज यदुच्चारणमा त्रेणयांतिपापाः परांगतिम् ॥ ९२ ॥ रामनाम प्रभावंहिसर्वदेवैःप्रपूजितं महेश्वरश्चजानाति नान्योजानातिजैमिने ॥ ९३ ॥ विष्णोर्नामस हस्राणांपठनाल्लभतेफलं तत्फलंलभतेसद्योरा मनामपठनात्नरः ॥ ९४ ॥

हे विप्रोंमेश्रेष्ठ विष्णुकेनाम सारे वेदोंके मंत्रोंसें अधिकहैं क्या श्रेष्ठहैं परंतु तिनके मध्यमेंभी तत्त्वके जानने वालेयोंने राम नाम बडाश्रेष्ठ कहाहै ॥ ९१ ॥ हेद्विज राम एह जौनसें दोअक्षर हैं सो सारे मंत्रोंसे अधिक हैं किसतरांकि जिसके उच्चारण मात्रकर्के पापी पुरुषभी परम उत्कृष्ट गतिको प्राप्त होतेहैं ९२ और हेजैमिने रामनामका प्रभाव सारे इंद्रादिक देवतायों कर्के पूजा करा हुआहै और इसके प्रभावको महादेवजी जानतेहैं और किसीको खबर नाहिहै की क्या इसके जपनेसें होताहै और क्या एह वस्तुहै ॥ ९३ ॥ हेद्विजसत्तम विष्णुजीकेहजार नामोंके पठनेसें जो फल है सो फल राम नामके स्मरणसे होताहै ॥ ९४ ॥

अहोचित्रंमनुष्याणांविचित्रमिदमुच्यते रामे
तिमुक्तिदंनामनस्मरंतिदुराशयाः ॥ १५ ॥ व
क्तुंनास्तिश्रमोऽल्पोपिश्रोतुमत्यंतसुंदरं तथा
पिरामनामेतिनस्मरंतिदुराशयाः ॥ १६ ॥ अ
त्यंतंदुष्प्रलभ्यापिमुक्तिर्जगतिमानवैः लभ्यते
रामनाम्नैवकर्माणिकिमतःपरम् ॥ १७ ॥ ता
वत्तिष्ठंतिपापानिदेहेषुदेहिनांद्विज रामेतिनाम
वैयावन्नस्मरंतिसुखप्रदम् ॥ १८ ॥

हेद्विज मनुष्योंका कैसा आश्चर्य करणे वाला कर्महे उनके वास्ते विचित्र एहबात कहतेहैं क्या राम एहजो मुक्तिके देने वाले दोअक्षर हैं इनकों दुष्ट मनवाले नहि स्मरण कर्तेहैं १५ जिसके वोलनेमें थोडाभी श्रम थकेमा नाहि होताहै और श्रवण करण मे अति सुंदर तदभी दुष्ट मनवाले रामनामका नहि स्मरण कर्तेहैं ॥ १६ ॥ देखो मानवों ने अत्यंत कष्ट वाले तपों करके भी दुःखकर प्राप्त होने योग्य एह जगतमें मुक्ति प्राप्तहोतीहे सो मुक्ति राम नामके जपने सें सहज होतीहे तो इससें परे और कौन श्रेष्ठ कर्महैं पर इसकों भीनाहि उच्चारण कर्तेहैं १७ और हेद्विज देहधारियोंके देहमे इतनाही चिर पाप वने रहतेहैं जितना काल सुखके देनेवाले रामनामका नहि स्मरणकरा १८

श्राद्धेचतर्पणेचैव बलिदानेतथोत्सवे यज्ञेदाने
व्रतेचैवदेवताराधनेषुच ९९ अन्येष्वपिचका
र्येषुवैदिकेषुविचक्षणः स्मरेत्तुसकलप्रेप्सूरामे
तिनामभक्तितः १०० नमोरामायेतिविप्रमंत्र
मोंकारपूर्वकं षडक्षरेणमंत्रेण हरिपूजनकृन्न
रः सर्वान्कामानवाप्नोति प्रसादाच्चक्रपाणिनः
॥ १०१ ॥ मृत्युकालेद्विजश्रेष्ठरामेतिनामयः
स्मरेत् सपापात्मापिपरमंमोक्षमाप्नोतिजैमि
ने ॥ १०२ ॥

श्राद्ध कर्म में पितृतर्पणमें वालिवैश्वदानमे और जौनसें कोई उत्सवहैं यज्ञ दान व्रतअनुष्टान और देवता का आराधन इनसभनों कर्मों में ॥ ९९ ॥ इनसें भिन्न जौनसें कोई वाकी के कार्य हैं वेद विहित तिनों सभनों में विचक्षण सभतरों की कार्य सिद्धिचाहने वाला भक्तिरीतिसें रामनामकों आद सभकें स्मरण करे ॥ १०० ॥ और ॐरामायनमः इस षडक्षर मंत्रकरकें एकवार हरिकी पूजाकरणे वाला सभनों कामोंकों प्राप्त होताहै १०१ ॥ हेद्विजश्रेष्ठ जो कोई मरणेके समय रामनाम कों स्मरण कर्ताहै सो हेजैमिनेपापात्माभी मोक्षकों प्राप्त होताहै १०२

रामेतिनामयात्रायांयेस्मरंतिमनीषिणः सर्व
सिद्धिर्भवेत्तेषांयात्रायांन.त्रसंशयः १०३ अ
रण्येप्रांतरेवापिश्मशानेपिभयानके रामनाम
प्रभावेणविद्यंतेनापदोद्विज ॥ १०४ ॥ राज
द्वारेतथायुद्धेविदेशेदस्युसन्मुखे दुःस्वप्नदर्श
नेचैवग्रहपीडासुजैमिने ॥ १०५ औत्पातिके
भयेचैववह्निरोगभयेतथा रामनामस्मरन्मर्त्यो
नाशुभंप्राप्नुयात्क्वचित् ॥ १०६ ॥

राम इस नामकों यात्रा के समय जो मनीषी बुद्धिमान् स्मर
ण कर्तेहैं तिनकों उन यात्रा में सभतरांकीयां सिद्धियां होति
यां हैं इसमे संशय नाहिहै ॥ १०३ ॥ और गहन वनमैं और
वडी दूर शून्य जगामैं भयानक स्मशान भूमिमैं हेद्विज राम
नामके स्मरण करणे के प्रभावसें किसी स्थानमैंभी आपदा
दुःख क्लेश नहिहोतेहैं १०४ और राजाके द्वारमैं युद्धभूमि मैं
विदेशमैं जाके चोरों के सन्मुख खोटे स्वप्नके दर्शनमैं ग्रहोंकें
अष्टम चतुर्थ द्वादश स्थानादियोंमैं स्थिति के बशर्थे जो पी
डा है तिसमे ॥ १०५ ॥ हेजैमिनें और उत्पातोंके भयों मे
अग्निकें भयमे महामार्यादि रोगोंके भयोंमे रामनाम कों स्मर
ण कर्ता हुया मर्त्य कदापिकाल कहीं भी अशुभकों प्राप्त नहि
होताहै इसमैं संशयनहिहै ॥ १०६ ॥

रामनामद्विजश्रेष्ठसर्वाशुभविनाशनं कामदं
मोक्षदंचैवस्मर्तव्यंसततंबुधैः १०७ रामेतिना
मविप्रर्षेस्मर्यतेंचक्षणेक्षणे सफलःसैवकालः
स्यात्सत्यमेवमयोच्यते १०८ रामनाममृदु
स्वादुभेदज्ञारसनाचया तन्नामरसनेत्याहुर्मु
नयस्तत्त्वदर्शिनः १०९ सत्यंसत्यंद्विजश्रेष्ठ
सत्यमेतन्मयोच्यत स्मरंतोहरिनामानिनाव
सीदंतिमानवाः ११०

हे द्विजश्रेष्ठ राम नाम जोहै सो सारे अशुभ पापोंके विनाश करणे वालाहै और कामनाके देने वाला मोक्ष कों देणे वाला वुद्धिमानों ने सर्वदा काल स्मरण करणे योग्यहै १०७ हेविप्र र्षे राम एह नाम जिस २ क्षण में स्मरण करीदाहै सोई काल सफल होताहै एह वात सत्य मैंने कहीहै १०८ ॥ राम नाम जो मधुर स्वाद वाला रस इसका भेद जानणे वालीजो रसना है जिव्हा तिसकों तत्वदर्शी मुनि लोक रसना जो कहतेहैं कि एह जिव्हाहै १०९ हे द्विजश्रेष्ठ मैंने तुमारे ताईं सत्य २ कथन कराहै कया हरिके नाम स्मरण करणे वाले पुरुष कदीं खेद नहि पातेहैं ११०

जन्मकोटिदुरितक्षयमिच्छुः संपदंचमहतींभु
विमर्त्यः विष्णुनामसततंद्विजभक्त्या मोक्षदायि
मधुरंस्मरतिस्म ११ इतिरामनाममाहात्म्यम्

जोकोई पुरुष इस पृथिवी लोकपर पिचले क्रोड जन्मोंके पाप दूरकरणेकी इच्छा करे और वहुत संपदाकी इच्छा करे हेद्विज सो पुरुष सर्वदाकाल मोक्षके देणे वाले मधुरजो विष्णु केनामहैं तिनका स्मरणकरे ११ एह राम नामका माहात्म्य समाप्त हुआ ॥

भक्तमालायां राममंत्रनाह.त्म्यद्योतनाय राज्ञः
कुलशेखरस्येतिहासमाह अथान्यत्संप्रवक्ष्या
मिभक्तेर्माहात्म्यमुत्तमं नीलाचलेमहात्माऽभू
द्राजावैकुलशेखरः १ सीतारामजपासक्तःसी
तारामप्रपूजकः सीतारामपदद्वंद्वेषट्पदीकृत
मानसः २ दयाधर्मरतोनित्यंसदाव्रतपरायणः
आमध्याह्नंराजकर्मकृत्वाशमंभजन्हृदि ३ त
तोपराह्णेशुश्रावरामायणमनन्यधीः तस्यपौ
राणिकस्तंतुरामार्थेत्यक्तजीवितम् ॥४ ॥

अव भक्तमालाग्रंथमे रामनामके माहात्म्य प्रकटकरणे वास्ते राजाकुलशेखरका इतिहास कहतेहैं अत्र और उत्तम भक्तिके माहात्म्यकीकथा कथनकर्ताहुं जगन्नाथ पुरीकेपास नीलाचल मैंमहात्मा एक कुलशेखरनामकर्के राजाहोताभया १ सीतारा मजीके मंत्रजपनेमैं तत्पर मनवाला और सीतारामजीकी पूजा करणेवाला और सीतारामजीके दोनों चरण कमलोंमें षट्पद भ्रमरेकी न्याईं कियाहै क्या लगायाहै मनजिसने २ दयाधर्ममैं नित्यप्रति रत रहताथा और सर्वदाकाल व्रतनियमोंमैं तत्परमन वाला रहना और दिनमैं मध्याह्न तक हृदयमैं सीतारामजीको भजते २ राजके कामकरणे ३ तिससैं उपरंत तीसरे पहरमैंएका ग्रमनवाला होकररामायणकी कथाश्रवण कर्ताभया तो रामचंद्र जीके निमित्त जीवितकों त्याग देनेवाले तिसकोंजानकर पौरा णिक कथाकहनेवाला ४

ज्ञात्वारामस्यदुःखादिसीतायाहरणादिकं जा
तुनश्रावयामासजानन्वैराजनिश्चयम् ५ पौ
राणिकस्त्वेकदातुक्लिष्टोभूज्ज्वररोगतः तत्पुत्रः
श्रावयामसराज्ञे रामायणंतथा ॥ ६ ॥ रावणे
नकृतंसर्वं श्रावयामासपुत्रकः श्रुत्वातुदुःखदं
वाक्यंसीतायाहरणादिकम् ॥ ७ ॥

ओह पंडित राजाका निश्चय जानता हुवा कथामैं एह बात न
हि श्रवण करावता भया कि रामचंद्रकों वनवास हुया और
उनकी सीताकों रावण छल करकें हर लेगया क्योंकि जिस
समय राजाने एहबात सुननीहैतो विनाविचार उठ दौडेगा कि
मैं उस सीता कों ल्यावताहां इसवास्ते ॥ ५ ॥ ओहपौराणिक
पंडित एक समय ज्वर रोग करकें पीडित होएआ हुया क
था कहनेको राजाके पास नहि जासकता भया तद उसका पु
त्र राजाकों जाकर कथा श्रवणकरावताभया ॥ ६ ॥ तो पंडित
का पुत्र उसकथामें वन वास जानेकी सारी कथासुनाय देता भ
या तो जद उसने एहकथाकही रामचंद्रजीवनमैं गए उहांसें
रावण सीताकों हर लेगया ऐसा दुःखदाई वचन सुनकर ॥ ७

गृहीत्वाखड्गमुत्थायशीघ्रमश्वंममानय अद्या
हंरावणंहत्वानयिष्यामिचजानकीम् ॥ ८ ॥
मयिजीवतिमेमातासीतारक्षोहृताभवेत् अहो
धिगस्तुमामद्येत्युक्त्वाश्वंससमारुहत् ९ ॥ धा
वयित्वाथमुख्यंतंपयोनिधिसमीपगः पुनरश्वं
कशाघातैस्समुद्रेऽपातयद्रुषा ॥ १० ॥

खड्गहाथमें लेकर उठखडा हुया और क्रोधसें कहनेलगाशी घ्रमेरा घोडा ल्याओ आजही इकल्ला रावणकों मार कर जान कीकों ल्याउंगा परइतना विचार नहि किया कि एहवात बहुत चिरकालकीहे और रावणकों मारकर रामचंद्र सीताकों लेकर गए हुएहेन और मैं किसतरां समुद्रके पारजाउंगा इतनीरामचं द्रजीमे उसकी भक्तिथीकि उनका दुःखसुनके नहिसहार सकता भया ८ उठ करकें उद्योग युक्त हुया तद पासके लोकोंने सम झायाभी परातिनकों क्या कहता भया मेरे जैसे पुत्रके जिंदेमेरी मातासीताकों राक्षसहरके लेजावे वडा आश्चर्यहे मेरेकों धिकारहे ऐसे वाक्य क्रोधसें अनेक कह कर झट पट घोडेपर असवार हो करकें समुद्रके किनारे परजाय खडा हुया फिर घोडे कों क मचियों सें ताडनकर क्रोधवाला हुया पूर्वा पर क्या आगा पीछाकुछ नहि विचारा और घोडे कों समुद्रमे सुटदिया १०

अश्वेनैवचपाथोधिंतीर्त्वाहत्वाहिरावणंसीताम
थानयिष्यामीत्येवंनिश्चितमानसः ॥ ११ ॥
अथैवंनिश्चयंतस्यज्ञात्वाश्रीरघुनंदनः लक्ष्म
णेनसहभ्रात्रासीतयासहनौस्थितः ॥ १२ ॥
आविर्बभूवसहसाकर्णधारेणसंयुतः आविर्भूय
समुद्रेतंकर्णधारोब्रवीन्नृपम् १३ ॥ किमर्थंया
सिलंकांत्वंहत्वारावणमाहवे सीतांनीत्वासह
भ्रात्रायात्ययोध्यापुरींस्वयम् ॥ १४ ॥

घोडे पर चडेआ होएआ समुद्रकों उल्लंघन कर्के युद्धमैं रावण कों मारकर आजही सीताकों ल्यावोंगा इसप्रकार दृढनिश्चय करताभया ॥ ११ ॥ इस तरां तिसके निश्चय कों जान कर श्रीरघुनंदन रामचंद्रजी भ्राता लक्ष्मणके सहित और पत्नी सीताके सहित नौकामे वैठे होंए ॥ १२ ॥ कर्ण धारकें सहित समुद्रके वीच प्रकट होते भये तद हनुमान् कर्ण धार का रूप धारे होंए तिस राजाको कहता भया ॥ १३ ॥ हेराजन् किस वास्ते अव लंकामैं जाताहैं रावणकों मार कर युद्धमैं रामचंद्रजी सीताकों साथ ले कर्के भ्राताके साथ अयोध्याकों चले जातेहैं ॥ १४ ॥

निवर्त्तस्वपुरींगच्छमद्वाक्यात्कुलशेखर ततो
विमानमायांतंसमारूढान्ददर्शह ॥ १५ ॥ ए
वंनिरीक्ष्यतान्सर्वान्श्रुत्वातस्यचभाषितं निव
र्त्तयामासनृपःपयोधेरंतरात्स्वयम् ॥ १६ ॥
जलाद्बहिस्समागत्य ददर्शनिजवाहिनीम् त
यानमस्कृतोराजातूष्णींभुवनमाययौ ॥ १७ ॥
पौराणिकंसमभ्येत्यदृष्टंचित्रंन्यवेदयत् श्रुत्वा
चित्रंद्विजःसोपिराजानमभ्यनंदयत् ॥ १८ ॥

हेकुलशेखर मेरे कहनेसें अपनी पुरीकों परतकर चलाजा इ तैंने मैं क्या देखताहै विमानों पर चढे होए तिनकों देखता भया ॥ १५ ॥ इस प्रकारके तिनकों देखकर और तिनका कहना सुनके सो राजा समुद्रके अंदरसें आप मुड कर चला आउता भया ॥ १६ ॥ तद जलसें वाहर आकर अपनी सेनाकों देखता भया तिस सेना अपनीने वंदित कराहुया चुप चाप अपने घरकों चला आया ॥ १७ ॥ और पुराण कहने वाले पंडितके पास जाकर देखे होए चित्रकों निवेदन कर्ता भया क्या एह मैने देखाहै एह वात सुनकर पंडित राजाकी स्तुति कर्ता भया हेराजन् तूं धन्यहैं तैंने रामचंद्रजी का दर्शन कीयाहै ॥ १८ ॥

तवभक्तौमहाराजसत्यंसत्यंनसंशयः समुद्रेप्र
विशंतंत्वांज्ञात्वासभक्तवत्सलः १९ स्वयंनि
वारयामासदर्शयित्वात्मविग्रहं धन्योसित्वंम
हाभाग धन्योयंनिश्चयस्तव त्वद्भक्त्यायोगि
दृश्योसौ रामस्त्वदृष्टिकपथंगतः २० इतिश्रु
त्वाथवचनंपौराणिकसमीरितं तदाबुबोधनृप
तिश्शौर्यावेशाच्चनिर्गतः २१

हेमहाराज मैं सत्य २ कहता हां इसतेरीभक्तिमें संशय नहिहैं
क्योंकि समुद्रमें प्रवेश कर्ते होए तेरे कों जानकर भक्तवत्सल
भगवान् १९ तेरेकों अपना देह दिखायकर आप तेरेकों जल
केवीचसें निवारणकर्ते भये हेमहाभाग तूं धन्य हैं और धन्य ते
रा निश्चयहै जिसकर्के योगिजनों को देखने योग्य जो रामचं
द्रजी सो तेरी मनुष्यकी दृष्टिमे प्राप्त होएहैं २० एहपौराणिक
का कथन करा हुया वचनसुन कर्के राजा शूर वीरता के आवे
श सें निकला हुया ज्ञान क्या चैतन्यता कों प्राप्त भया २१

पश्चात्तापंचकारोच्चैस्तदाज्ञातोनमेप्रभुःशौर्य्या
दुर्म्मदद्दुष्टेनचित्तेनातोधिगस्तुमाम् २२ इति
चिंतापरोराजातद्रूपंहृदिचिंतयन् नियमंपूर्व
मास्थायस्थितोवेश्मनिभक्तितः २३ एवंसरा
जाधर्मात्माभक्तिमान्कुलशेखरः कलावपिहरिं
साक्षादपश्यद्भक्तियोगतः २४ इति महाराज
कुलशेखरचरितम्

औरवडे ऊचे २ स्वरकर्के पश्चात्तापके वचन कहताभया फिर कहने लगा कि मेरेकों उस समय खवर नहि हुई कि एहरामचंद्रजी हैं में उनका अछी तरां दर्शनकर्ता पर शूर वीरताकर दुर्मदवाला दुष्टजो चित्त उसकर्के ही कुछज्ञान नहि रहा इस कारण सें शोर्यताकों धिकारहै २२ इसप्रकारकी चिंता कर्ता हुआ हि ओह जौनसा रूप तिसने देखाथा उसकों ही हृदयमैं चिंतन कर्ता भया और पूर्वके नियममैं स्थित होकर भक्तिसें घरमै निवास कर्त्ता हुआ राज्यकी पालनकर्ता भया २३ इसप्रकार सो धर्मात्मा कुलशेखर राजा भक्ति कर युक्त कलियुगमें भी साक्षात् रामचंद्रजीकों भक्ति योग के प्रभाव से देखता भया २४ एह कुल शेखर राजा का चरित समाप्त हुआ॥

अथप्रसंगादष्टाक्षरनारायणमंत्रमाहात्म्यवर्णनं बृहन्नारदीये अष्टाक्षरंमहामंत्रं सर्वपापप्रणाशनं वक्ष्यामितवराजेंद्रपुरुषार्थैकसाधनम् ॥ १ ॥ विष्णुप्रीतिकरंसद्यः सर्वसिद्धिप्रदायकं नमोनारायणायेतिजपेत्प्रणवपूर्वकम् ॥ २ ॥ वाच्योनारायणः प्रोक्तोमंत्रस्तद्वाचकः स्मृतः वाच्यवाचकसंबंधोनित्यएवमहात्मनः ॥ ३ ॥

अवप्रसंगसें अष्टाक्षर नारायणके मंत्रका माहात्म्य वर्णन करते हैं बृहन्नारदीयमौंलि० ॥ हेराजेंद्र तेरेकों आठ अक्षरों का महा मंत्र सारे पापोंकेनाश करणे वाला और सारे पुरुषार्थोंका एक सिद्ध करणे वाला कथन कर्ताहुं ॥ १ ॥ कैसाउहमंत्रहै शीघ्र विष्णु भगवान् जीकी प्रीति करणे वाला और सारियों सिद्धियोंके देने वालाहै नमोनारायणाय इसका आदमै ओंकार रखकर जपकरे ॥ २ ॥ इसमंत्रके वीच वाच्य नारायण जीहै औरमंत्र एह नारायणजी का वाचकहै तो वाच्य वाचक संवंध महात्मानारायणजी का नित्यही वनारहताहै ॥ ३

नरसिंहपुराणे शुकउवाच किंजपन्मुच्यतेता
तसततंविष्णुतत्परः संसारदुःखात्सर्वेषांहिता
यवदमेपितः ॥ ४ ॥ व्यासउवाच अष्टाक्षरंप्र
वक्ष्यामिमंत्राणांमंत्रमुत्तमं यंजपन्मुच्यतेमर्त्यो
जन्मसंसारबंधनात् ॥ ५ ॥ हृत्पुंडरीकमध्य
स्थं शंखचक्रगदाधरं एकाग्रमनसाध्यात्वावि
ष्णुंकुर्याज्जपंततः ॥ ६ ॥ एकांतेनिर्जनेस्थाने
विष्णवग्रेवाजलांतिके जपेदष्टाक्षरंमंत्रंचित्तेवि
ष्णुंनिधायवै ॥ ७ ॥

नरसिंहपुराणमे लि० ॥ शुकदेवजी कथनकर्तेभये हेतात सर्वदा काल विष्णुभगवानजीमे तत्पर रहने वाला किसमंत्रकों जपता हुया संसार दुःखोंके बंधनसें मुक्तहोताहै हे पितः सभनोंकेहित वास्तेमेरे कोंकथनकरो ॥ ४ ॥ व्यासदेवजी कथन करणेलगे हे वत्स मंत्रोंमे उत्तम अष्टाक्षर मंत्र कथन कर्ताहुं जिसकों जपता हुया वैष्णव जन्मसंसारबंधनसें मुक्तहोताहै ॥ ५ ॥ हृदय रूपी कमलके मध्यमे बेठे होए शंखचक्रगदापद्म धारणकरे होए विष्णुका एकाग्रमनकर्के ध्यानकर पीछेसें जपकरे ॥ ६ ॥ जपके स्थान लि० ॥ एकांत निर्जन स्थानमे जां विष्णुके आगेही अथवा जलके समीप चित्तमे विष्णुका ध्यान कर अष्टाक्षर मंत्र का जप करे ॥ ७ ॥

अष्टाक्षरस्यमंत्रस्यऋषिर्नारायणःस्वयं छंद
श्चदेवीगायत्रीपरमात्माचदेवता ॥ ८ ॥ शुक्लव
र्णंचउंकारंनकारंरक्तमुच्यते मोकारंवर्णतःकृ
ष्णंनाकारंरक्तमुच्यते ॥ ९ ॥ राकारंकुंकुमाभं
चयकारंपीतमुच्यते णाकारमंजनाभंतुयका
रंवहुवर्णकम् ॥ १० ॥ उंनमोनारायणायेतिमं
त्रः सर्वार्थसाधकः भक्तानांजपतांनित्यंस्वर्ग
मोक्षफलप्रदः ॥ ११ ॥

अष्टाक्षर नारायण मंत्र के आप नारायणजी ऋषिहैं उसका छंद देवी गायत्री है परमात्मा उसका देवताहै चार पुरुषार्थों के साधनमैं इसका विनियोगहै ॥ ८ ॥ अव अक्षरोंकावर्ण लि० उंकार का शुक्ल वर्ण है नकारका लाल रंगहे मोकार कालेव र्णका हे नाकार फिर लाल रंगका है ॥ ९ ॥ राकार केसर के वर्णका हे यकार पीले वर्णकाहै और णाकार अंजनक्या सुर्मेके रंगका है और यकार फिर वहुत रंगोंकाहै ॥ १० ॥ उंनमोना रायणाय एह अष्टाक्षर मंत्र सारे अर्थोंकों सिद्ध करणे वाला है और नित्य जपने वालेभक्तोंकों स्वर्ग मोक्ष फल देताहै ११

वेदपौराणयोः सिद्धएषमंत्रः सनातनः सर्वपाप
हरः श्रीमान्सर्वमंत्रेषुचोत्तमः ॥ १२ ॥ एनम
ष्टाक्षरंमंत्रजपन्नारायणंस्मरेत् एषएवपरोमो
क्षएषस्वर्गउदाहृतः ॥ १३ ॥ सर्वत्रेदरहस्यं
चपठतेयःसमाहितःसंध्यावसानेसततंसर्वपापैः
प्रमुच्यते ॥ १४ ॥एषएवपरोमंत्रएषएवपरंत
पः सर्ववेदरहस्येभ्यस्सारएषसमुद्धृतः ॥ १५

चारों वेदों मे और सभनों पुराणों मैं सनातन एह सिद्ध मंत्रहै सारे पापों के हरणे वाला श्रीमान् है और सारे मंत्रोंमें उत्तम मंत्रहे ॥ १२ ॥ इस अष्टा क्षर मंत्र कों जपता हुया नारायण जीका स्मरण करे एही परम मोक्षका साधन है और स्वर्गका साधन भी एहीहै ॥ १३ ॥ सारे वेदोंमें रहस्य क्या गुप्त इस मंत्रकों सावधान होके सायं कालके समय जो पढताहै सोसारे पापोंसे मुक्त होताहै ॥ १४ ॥ एहि सभनों मैं परम श्रेष्ठ मंत्रहै एही परम तपहै और सारे वेदों के रहस्यों सें सार रूप निकाला हुया है ॥ १५ ॥

विष्णुनावैष्णवानांहिहितायमनुजापुरा १६॥
एवंज्ञात्वाततोविप्रअष्टाक्षरमिमंस्मरन् स्नात्वा
शुचिः शुचौदेशेजपेत्पापविशुद्धये १७ ॥ जपे
दानेचहोमेचगमनेध्यानपर्वसुजपन्नारायणंमंत्रं
कर्मपूर्वापरेतथा १८ ॥ जपेत्सहस्रंनियतंशुचि
र्भूत्वासमाहितः मासिमासिद्वादश्यांविष्णु
भक्तयाद्विजोत्तम ॥ १९ स्नात्वाशुचिर्जपेद्यस्तु
नमोनारायणायतु सगच्छेत्परमंदेवंनारायण
मनामयम् ॥ २० ॥

विष्णु भगवान्जी ने पूर्व एक समय वैष्णव लोकों के हितके लिये वेदों सें सार निकालया है इस बात कों जान कर्के हेवि प्र अष्टाक्षरमंत्रका स्मरण करे १६ प्रातः काल स्नान कर्के पवित्र होकर शुद्ध भूमि में आसन लगाय कर पापों के शोधन वास्ते इस अष्टाक्षर कों जपे १७ जपके बिषै दानके समय होम के आरंभ मे और यात्रा के समय पर्व दिनों में और शुभकार्मों के आद अंत में इस अष्टाक्षरमंत्र कों जपे १८ नियम कर्के सावधान मन वाला पवित्र होकर एक हजार इस मंत्र का जपकरे हेद्विजोत्तम नित्य नहि होसके तद महीने २ पीछे द्वादशी कों जपे १९ ॥ जो पुरुष स्नानकर पवित्र होके एकांत वैठके ॐनमोनारायणाय इस मंत्रकों जपताहै सो निर्विकार नारायणकी पदवी कों प्राप्त होता है २० ॥

गंधपुष्पादिभिर्विष्णुमनेनाराध्ययोजपेत् सर्व
पापविशुद्धात्मासगच्छेत्परमांगतिम् २१ ॥
तृतीयेनतुलक्षेणस्वर्गलोकमवाप्नुयात् ॥ २२ ॥
पंचमेनतुलक्षेणनिर्मलंज्ञानमाप्नुयात्तुतथाषष्ठेन
लक्षेणभवेद्विष्णौस्थिरामतिः २३ ॥

जो कोई पुरुष इस नारायण का अष्टाक्षर मंत्र करकें गंध पुष्पादियों के साथ पूजन कर पीछे जो जप कर्ता है सो सारे पापों सें विशुद्ध आत्मा वाला होएआ हुया परम गति कों प्राप्तहोता है २१ ॥ प्रथम लक्षके जप करकें आत्मा की शुद्धि होती हैं और दूसरे लक्ष के जप करकें मंत्र की शुद्धि कों प्राप्त होता है तीसरे लक्षके जप करकें स्वर्ग लोक में प्राप्त होताहै चौथे लक्ष के जप करकें हरि की समीपता कों प्राप्त होताहै ॥ २२ ॥ और पांच लाख जप करकें निर्मल ज्ञान कों प्राप्त होता है ऐसे ही छेवें लाख के जप करकें विष्णुमे स्थिर बुद्धिहोती है २३ ॥

सप्तमेनतुलक्षेणस्वरूपंप्रतिपद्यते अष्टमेनतुल
क्षेणानिर्वाणमधिगच्छति ॥ २४ ॥ स्वस्वधर्म
समायुक्तैर्ज्जपंकार्यंद्विजातिभिः एतत्सिद्धिकरं
मंत्रमष्टाक्षरमतंद्रितः ॥२५ ॥ दुःस्वप्नासुरपैशा
चउरगब्रह्मराक्षसाः जपतांनोपसर्पंतिचौरक्षुद्
व्याधयस्तथा ॥ २६ एकाग्रमतिरव्यग्रोविष्णु
भक्तोदृढव्रतः जपन्नारायणंमंत्रमेतन्मृत्युभयाप
हम् ॥ २७ ॥

और सात लाख जप करकें विष्णुके स्वरूप कों प्राप्त होताहै और आठलाख जप करकें निर्वाण पदकों प्राप्त होजाताहै २४ इस मंत्रका जप अपने २ वर्ण आश्रमके अनुसार द्विजातियों ने करणा चाहिए एह अष्टाक्षर मंत्र सिद्धिके करणे वालाहै २५॥ इनकों जो कोई आलस्यसें रहित होकर जपतेहैं तिनकों खोटे स्वप्रदेख सर्प पिशाचसर्प और ब्रह्मराक्षस चोर क्षुधा तृषा व्याधि यां एह नहि प्राप्त होतीयांहैं २६ और एह जो नारायणका अ ष्टाक्षर मंत्र मृत्यु भयके दूर करणे वाला इसकों एकाग्रमनवा ला होके और अव्यग्र क्या सावधान होके दृढ निश्चित व्रत को धार करकें जप करे ॥ २७ ॥

मंत्राणांपरमोमंत्रोदेवतानांचदैवतम् गुह्यानांप
रमंगुह्यमोंकाराद्यक्षराष्टकम् ॥ २८ ॥ आयुर्धनं
चविद्यांचपुत्रांश्चलभतेयशः धर्मार्थकाममोक्षां
श्चलभतेवैजपन्नरः ॥२९॥ एतत्सत्यंचधर्म्मंचवे
दश्रुतिनिदर्शनात् अंतकालेजपंन्नेतितद्विष्णोः
परमंपदम् ॥३० ॥ नारायणायनमइत्ययमेवस
त्यंसंसारसर्पविषसंहरणायमंत्रः शृण्वंतुभव्य
मतयोमुदितास्तुरागादुच्चैस्तरामुपदिशाम्यहमू
र्ध्ववाहुः॥ ३१ ॥

एह मंत्र औरनों मंत्रोंमें श्रेष्टहै देवतयोमैं देवताहै गुप्त मंत्रोंमैं गुप्त मंत्रहै ओंकारहै आद जिसके ऐसा अष्टाक्षरहै ॥ २८ ॥ इसके जपसें दीर्घ आयु होतीहे वहुत धन होताहै विद्या प्राप्त होतीहै बहुत पुत्र होतेहैं यश लभताहै धर्म अर्थ काम मोक्ष एह चार पदार्थ लभतेहैं ॥ २९ ॥ एह वात सत्यहै धर्मयुक्तहै वेदकी श्रुतिके वचनसें उार जो कोई अंतसमय मरता २ इसका स्मरण कर्ताहै सो तिस मंत्रके स्वामी विष्णुभगवान् जीके लोकमे प्राप्त होताहै ॥ ३० ॥ ओंनमोनारायणाय एह जो मंत्रहै सो सत्य कर्के संसार रूपी सर्पकी विष दूर कर्णे वास्तेहै इसकों मंगल रूप वुद्धि वाले प्रसन्न होए हुये प्रीति सें श्रवण करें एहवात मैं वडी ऊंची स्वरकर्के ऊचेवाहु कर सभकों उपदेश कर्ता हुं ॥ ३१ ॥

भूत्वाद्विवाहुरद्यात्रसत्यपूर्वंब्रवीम्यहं हेपुत्राशि
ष्याः शृणुतनमंत्रोष्टाक्षरात्परः ३२ सत्यंसत्यं
पुनःसत्यंवाहुमुत्क्षिप्यचोच्यते वेदाच्छास्त्रंपरं
नास्तिनदेवःकेशवात्परः ३३ आलोच्यसर्वशा
स्त्राणिविचार्य्यचपुनःपुनःइदमेकंसुनिष्पन्नंध्ये
योनारायणःपरः ३४ तदुक्तंशारदातिलकेअथ
वक्ष्येमहामंत्रंविष्णोःसर्वार्थसाधकम् यस्यस्म
रणमात्रेणभवाब्धेः पारमाप्नुयात् ३५

हे पुत्र हे शिष्याः मेरा वचन तुम श्रवण करो आजमैं दोनोंवा
हुंउंचे कर्के सत्य पूर्वक कहताहां क्या अष्टाक्षरसें श्रेष्ट मंत्र औ
र कोई नहिहै ३२ मैं भुजां उठाके सत्य कहा कर्ताहुं क्या वे
दसें परेशास्त्र कोई नाहिहै और केशव विष्णुजीसेंपरे देवता श्रेष्ठ
नहिहै ॥ ३३ ॥ सारे शास्त्रों कों देख कर्के वारंवार विचार क
र्के एहि एक वात निकली है कि सवसें श्रेष्ठजो नारायणजीहै सो
ई ध्यानदे योग्यहै ३४ सोई वात कहीहै शारदा तिलकमैं अ
व सारे अर्थं प्रयोजन सिद्ध करणे वाला विष्णुका महामंत्र क
थनकर्ताहुं जिसके स्मरण मात्रकर्के पुरुष संसार समुद्रसें पारहो
जाताहै ३५

तारंनमःपदंब्रूयान्नरौदीर्घसमन्वितौ नारायणा
यमंत्रोथप्रख्योवस्वक्षरान्वितः ३६ साध्योनारा
यणःप्रोक्तोमुनिःछंदउदीरिता मंत्रस्यदेवीगाय
त्रीदेवताविष्णुरव्ययः ३७ उदुल्कायहृदाख्या
तंमहोल्कायशिरस्तथा वीरोल्कायाशिखाप्रोक्ता
द्युल्कायकवचंस्मृतम् ३८ सहस्रोल्कायास्त्रमंत्रो
ह्यगक्लृप्तिरियंमता भूयोवर्णैर्मनोःषड्भिः षडंगा
निसमाचरेत् ३९ अवशिष्टैःपुनर्वर्णैर्विन्यसेत्कुक्षि
पृष्ठयोः तद्वद्दिक्चक्रमंत्रेणमंत्रवर्णास्तनौन्यसेत्

४०

प्रथम ओंकार कहे पीछेसें नमः कहे उसके पीछे नारा दोनो दी
र्घ कहे उसके पीछे यकहे उसके पीछे णाकहे उसके पीछे फिर
यकहे तद ८ अक्षरकामंत्र वनताहै ३६ इस मंत्रमें साध्य नारायण
जोहै छंद इसका देवी गायत्री अविनाशी विष्णु देवताहै ३७
उदुल्कायनमः हृदि महोल्कायनमः शिरसि वीरोल्कायनमः शि
खायां द्युल्कायनमः कवचायहुं ३८ सहस्रोल्कायनमः अस्त्राय
फट् एक २ एह पढके अंगोमे हाथलगाना फिर मंत्रके छे ६ व
र्णोंकर्के षडंगन्यास करे ३९ वाकी जौनसे छेअक्षरहैं तिनों
कर्के कुक्षिपृष्टमें न्यास करे फिर तिनकी न्याईं दिक्चक्र मंत्रक
र्के मंत्रके वर्णोंका न्यासकरे ४०

अष्टाक्षरमंत्रमाहात्म्यकथनप्रसंगादितिहास
माह नरसिंहपुराणे ॥ सहस्रानीकउवाच ॥
सत्यमुक्तंत्वयाब्रह्मन्वैदिकः परमोविधिः वि
ष्णोर्देवादिदेवस्यपूजनंब्रूहिमेधुना ॥ १ ॥ अने
नाविधिनाब्रह्मन्पूज्यतेमधुसूदनः वेदजैर्वापुरा
णैर्वामंत्रैःसर्वाहितंवद ॥२॥ मार्कंडेयउवाच
अष्टाक्षरेणदेवेशंनरसिंहमनामयम् गंधपु
ष्पादिभिर्नित्यमर्चयेदच्युतंनरः ॥ ३ ॥ राज
न्नष्टाक्षरोमंत्रःसर्वपापहरःपरः समस्तयज्ञ
फलदःसर्वशांतिकरःशुभः ॥ ४ ॥

अष्टा क्षर मंत्र के माहात्म्य कहने के प्रसंग सें इति हास भी एक इसमे कहते हैं नरसिंह पुराणमे लि० सहस्रानीक राजा कथन करणे लगा हे व्रह्मन् विष्णु देवता का परम श्रेष्ट मंत्र आठ अक्षरों का कहा है वैदिक एह मंत्र हे एह वात सत्य है अव विष्णु देवता का पूजन वेदकी विधिसें मेरेप्रति कथन करो ॥ १ ॥ हे व्रह्मन् एह वातकहो कि इस विधि कर्के मधुसूदनजी पूजन करणे योग्य हैं सो वेदके मंत्रों कर्कें वा पुराणोक्त मंत्रों कर्कें होवे सो सभनांके हितके लिये कहो २ इतना वचन सुनते ही मार्कंडेयजी कथन कर्ते भये हे राजन् पुरुष जो है सो निर्विकार देवतयों के स्वामि नरसिंह जी का नित्य प्रति अष्टाक्षर मंत्र कर्कें गंध पुष्पादियों के साथ पूजन करे ॥ ३ ॥ हे राजन् अष्टाक्षर मंत्र सारे पापों के हरणे वाला वडा श्रेष्ट है और सारे यज्ञों के फल देने वाला और शांतियों के करणे वाला शुभकया मंगल रूप है ॥ ४ ॥

ॐनमोनारायणाय गंधपुष्पादिकंसर्वमनेनैव
निवेदयेत् अनेनाभ्यर्चितोदेवःप्रीतोभवतित
त्क्षणात् ॥ ५ ॥ किंतस्यबहुभिर्मंत्रैःकिंतस्यब
हुभिर्व्रतैः नमोनारायणायेतिमंत्रःसर्वार्थसा
धकः ॥ ६ ॥ इमंमंत्रंजपेद्यस्तुशुचिर्भूत्वासमा
हितः सर्वपापविनिर्मुक्तोविष्णुसायुज्यमाप्नु
यात् ॥ ७ ॥ सर्वतीर्थफलंह्येतत्सर्वदानफलंनृ
प एवंकृत्वानरश्रेष्ठनरसिंहप्रसादतः प्राप्नो
तिवैष्णवंतेजोयत्कांक्षंतेमुमुक्षवः ॥ ८ ॥

ॐनमो नारायणाय इस मंत्र के साथ सारे ही गंध पुष्पादि
क भगवान्जी कों निवेदन करे क्यों कि इस मंत्रके साथ पू
जन करे होए देवता नरसिंहजी तत्क्षण प्रसन्न होतेहैं ॥५ ॥
जिस पुरुष ने सारे हि अर्थ प्रयोजन सिद्ध करणे वाला मंत्र
जपआ है तिसकों और बहुत मंत्रों के जप करणे करके क्या
प्रयोजन है और बहुत व्रत करणे करके क्या प्रयोजन है ॥६ ॥
इस मंत्र कों जो कोई पवित्र होकर और सावधान मन वाला
हो के जप करे सो सारे पापोसें निर्मुक्त होएआ हुया विष्णु
जी की सायुज्य मुक्ति कों प्राप्त हो वेगा ॥ ७ ॥ हे नृपश्रेष्ट
इस प्रकार मंत्रके जपकरे होए नरसिंहजी की कृपासें सारेतीर्थों
मे स्नान करणे का फल होताहै और सारे दानका फलहोताहै
और वैष्णव तेजकों प्राप्त होता है और जिस २ की इच्छा
मोक्षकी चाहना वालाकर्ता है उसकों भी प्राप्त होता है ८ ॥

पुरापुरंदरोराजन्स्त्रीत्वंप्राप्तोप्यधर्मतः तृणविंदु
मुनेःशापान्मुक्तोह्यष्टाक्षराज्जपात् ॥ ९ ॥ सह
स्त्रानीकउवाच एतत्कथयभूदेवदेवेंद्रस्याघमो
चनं कश्चाधर्मःकथंस्त्रीत्वंप्राप्तोमेवदकारणम्
॥ १० ॥ मार्कंडेयउवाच राजेंद्रमहदाख्यानं
शृणुकौतूहलान्वितम् विष्णुभक्तिप्रजननंपठ
तांशृण्वतामिदम् ॥ ११ ॥ पुरापुरंदरस्यैवदेव
राज्यंप्रकुर्वतः वैराग्यस्यापिजननंसंभूतंवाह्य
वस्तुषु ॥ १२ ॥

हेराजन् पूर्व एक समय अधर्मसें क्या पापसें पुरंदर जो देवराज इंद्र सो तृण विंदु नामक मुनिके शापसें स्त्रीभावकों प्राप्त होए आ हुया अष्टाक्षर मंत्रके जपकरणेसें मुक्त होता भया ९ इहव चन सुनके सहस्त्रानीक राजा कथन करणे लगा हे भूदेव एह दे वतयोंके इंद्रकी कथा कहो कि कैसे उसका पाप मुक्त हुया कौ नसा उसने पाप कराथा और कैसे स्त्रीभावकों प्राप्त होया इस का कारण मेरेप्रति कथन करो ॥ १० ॥ तद मार्कंडेय ऋषि जी कहने लगे हेराजेंद्र वडा एह आख्यान है कुतूहल करके संयुक्त और पठने सुनने वालेयो कों विष्णुकी भक्ति उत्पन्न क रणेवाला ॥ ११ ॥ हेराजन् पूर्व एक समय देवतयोंका राज्य कर्ते होए पुरंदर इंद्रकों वाह्यवस्तुयोंमें वैराग्य उत्पन्न होताभया १२

इंद्रस्तदाभूद्विषमस्वभावोराज्येषु भोगेष्वपिसो
ध्याचिंतयत् ध्रुवंविरागीकृतमानसस्तुस्वर्गस्य
राज्येनचकिंचिदेव १३ राज्यस्यसारंविषये
षुभोगः भोगस्यचांतेनचाकिंचिदस्ति विमृश्य
चैतन्मुनयोप्यजस्त्रंमोक्षाधिकारं परिचिंतयंति
॥ १४ ॥ सदैवभोगायतपः प्रवृत्तिर्भोगावसा
नेहितपोविनष्टं मैत्रादिसंयोगपराङ्मुखानां
निर्मुक्तिभाजांनतपोनभोगः ॥ १५ ॥

तद क्या चिंतन कर्ता भयाकि सो इंद्रराजा राज्यके सुखभोगो
मैं विषम स्वभाव वाला होगया तद निश्चयकर विराग युक्त म
नवाला होएआ हुया स्वर्गके राज्यको भी कुछ नहि चिंतन
कर्ता भया ॥ १३ ॥ क्या विचार करके नहि अछामानताभया
कि राज्यका सारहै विषयोंमे भोग होना और भोगों के अंत
मैं कुछ नहि रहताहै इसी वातको विचारकर वारंवार मुनिलो
क मोक्षके अधिकार को ही चिंतन कर्तेहैं ॥ १४ ॥ जो पुरुष
भोगोंके निमित्त तप कर्तेहैं तिनको सुखभोग प्राप्त होतेहैं जद
ओह भोग भोगने लगतेहैं तद सुख भोगोंके अंतमैं नतोभोग
रहतेहैं न ओहतपरहताहै जिस तरां मैत्रादि संयोग से रहित
मुक्तिकी इच्छा वालेयोंको न तप व तो भोगरहताहै ॥ १५ ॥

विमृश्यचैतत्ससुराधिनाथो विमानमारुह्यस
किंकिणीकं नूनंहराराधनकारणेनकैलासमभ्ये
तिविमुक्तिकामः ॥ १६ ॥ सएकदामानसमा
गतस्सन्संवीक्ष्यतांयक्षपतेश्चकांतांसमर्चयंतीं
गिरिजांघ्रियुग्मंविद्धस्तदानंगमहाशरेण १७
प्रधानजांबूनदशुद्धवर्णांकर्णांतसंलग्न पयोजने
त्रां सुसूक्ष्मवस्त्रांतरदृश्यगात्रां नीहारमध्यादि
वचंद्रलेखाम् १८ ॥

इस वात को विचार करकें सो देवतयों का स्वामी इंद्र किं
किणियों के समूह करकें युक्त जो विमान तिसके उपर चढकर
मोक्षकी कामना वाला निश्चय करकें शिवजी का आराधन क
रणे कों कैलास पर्वत के ऊपर चला जाता भया ॥ १६ ॥ सो
देवतों का राजा इंद्र कैलास पर गया हुया मान सरो वर के
ऊपर स्नान करणें कों आया तो उहां यक्षराज की स्त्री कों दे
खता भया कैसी ओह स्त्रीहै गिरिजा पार्वती का पूजन करया
कर्ती तिसकों देखकर कामदेव के महाशरों करकें वेधया जाता
भया १७ ॥ फिर कैसी ओह स्त्री है प्रधान जो जांबूनद स्व
र्ण तिसकी न्याईं हैं शुद्ध वर्ण जिसका और कर्णोंके अंत प
र्यंत हैं कमल रूपी नेत्र जिसके और सूक्ष्म वस्त्र के अंतर क्या
वीचसें देखे जाते हैं अंग जिसके किसकी न्याईं जैसें नीहार
के मध्य में चंद्रमा की लेखा देखी जाती है १८

तांवीक्ष्यवीक्षणसहस्रभरेणकांतां काममंगतोह
तमातिर्नययौतदानीम् दूराध्वगस्तुगृहमेत्य
सुचिंतितार्थहृन्नस्थौ तदासुरपतिर्विषयाभिला
षी १९ पूर्ववरस्यात्सुकुलेपिजन्मततोहिसर्वांग
शरीररूपं धर्मंततोदुर्लभमेवपश्चाद्धनाधिपत्यं
सुकृतेनलब्धम् २० स्वर्गाधिपत्यंचमयाप्रलब्धं
तथापिभोगायनचास्तिभाग्यं यत्स्वःपरित्यज्य
विमुक्तिकामास्तिष्ठामितद्दुर्मतिरस्तिचित्ते २१ ॥

सो राजा इंद्र तिस यक्षको कांता स्त्री कों हजार ही नेत्रों क
र्के देख कर तिससमय कामके वशकों प्राप्त होता भया पर धै
र्य की बुद्धि कों न प्राप्त होता भया तौ दूर २ तिसके पीछे
आउता २ इंद्र कुवेरके घरकों देखकर अर्थ कों चिंतन क
र विषय भोगने की इच्छा कर उहां वैठ गया १९ क्या चिंतन
कर्ता है उहां वैठ करके कि एकतों मेरे सें कुवेर श्रेष्ठ है क्योंकि
अछे कुलमें उसका जन्म फिर सर्वांग सुंदर शरीरका रूप जिस
का फिर ओह दुर्लभ धर्म कर्ताहै और उसकों अपने पुण्यों के
प्रभाव सें धनाधिपत्य अधिकार मिलाहुयाहै २० ॥ एक मेरे
कों स्वर्ग का आधिपत्य राज्य मिला पर उसके भी सुख भोग
भोगने मेरी प्रारब्ध मे नहि हैं क्यों कि जो मैं खोटी बुद्धि वा
ला अपने राज्य कों छोड कर मोक्षकी कामना धार कर च
ला आयाहां राज्य सुखमैं मोक्षकी क्या इच्छा है ऐसी यों स्त्रि
यों के साथ सुख भोगने राज्यका सुख है २१ ॥

मोक्षोस्त्यमूनामिहकामिनीनांमोक्षस्य किंका
रणमास्तिराज्ये क्षेत्रंसुपक्कंपरिहृत्यदूरेकोनाम
चारेणकृपिंकरोति २२ संसारदुःखोपहता
नरायेकर्तुंसमर्थानचकिंचिदेव अकामिनोभा
ग्यविवर्जिताश्च वांछंतितेमोक्षपदंविमूढाः२३
एतद्विमृश्यबहुधामतिमान्प्रवीरोरूपेणमोहित
मनाधनदांगनायाः सर्वाभिचारकुशलःपरि
मुक्तधैर्यःसस्मारकाममरमराधिपचक्रवर्ती २४

इनों स्त्रीयों मेंहि मोक्ष होता है तद राज्य सुखमें मो
क्षका क्या प्रयोजनहै किस तरां जैसे पक्के होए क्षेत्रको
छोड कर नवीन क्षेत्र बीजने मैं कौनसा बुद्धि हीन है जो य
त्न करेगा क्या मुड कर हल वान करेगा ॥ २२ ॥ जोको
ई पुरुष संसारके दुः खों कर्के हत मन वाले हैं और कुछ
काम करणे कों असमर्थ और भाग्यहीन ऐसे निष्कामी पुरुष
मूर्ख मोक्षकी इच्छा कर्तेहैं और कामों के करणेकों समर्थ
भाग्यवान पुरुष तो नहि मोक्षकी इच्छाकर्ताहै २३ इस प्रकार
कर्के मति मानों मैं श्रेष्ठ जो इंद्र सो वहुत तरोंके विचार कर
कर्के पर कुवेरकी स्त्रीके रूप कर्के मोहित होएआ हुया देवतों
योंका चक्र बर्ती इंद्र और सभ तरोंके अभि चारकरणेमैं चतुर
भीया तदभी धैर्यकों त्यागकरकामदेवका स्मरणकर्ता भया २४

समागतेसौपरिमंदमंदं कामेतिकामाकुलचित्त
वृत्तिः पुरामहेशेनकृतांगनाशेधैर्यालयंगच्छ
तिकोविवेकी ॥ २५ ॥ आदिश्यतांनाथयद
स्तिकार्यंकोनामतेसंप्रतिशत्रुभूतः शीघ्रंममादे
शयमाविलंवं तस्यापदंसंप्रतिभोदिशामि २६
श्रुत्वातदातस्यवचोभिरामंमनोगतंतत्परमंतु
तोष निष्पन्नमर्थंसहसैवमत्वाजगादवाक्यंस
विहस्यवीरः ॥ २७ ॥

सो कामदेव वडी धैर्यसें धीरे २ आवता भया कामकर्के व्याकु
ल चित्त वृत्ति वाला इंद्र मनमें फिर विचार कर्ता है कि पूर्व
एक समय महादेवजीने काम देवकों भस्मभी कराया तदभी ऐ
सा कोई नहि जो बिचारवान् कामके प्राप्त होए हुए धैर्य
करे ॥ २५ ॥ हेनाथ जों तुमारे कों कार्य है सो मेरे प्रति क
हो जो कोई तुमारा इसमैं शत्रु होआ है सो शीघ्र मेरेकों आ
ज्ञा करो उसकी दुर्दशा मैं कर्ताहुं ॥ २६ ॥ निसका एह वचन
सुनकर मनकों आनंद देने वाला मनकर्के इंद्र काम देव
के ऊपर वडा प्रसन्न होता भया और अर्थ कों सिद्ध होए हुए
कों जान कर शीघ्रतासेहीं वाक्य कों कहता भया ॥ २७ ॥

रुद्रोपिविद्धोर्द्धशरीरमात्रश्चक्रेह्यनंगस्वशरा
भिघातैः सोढुंसमर्थोप्यपरोपिलोकेकोनामते
पंचशराभिघातम् २८ एकाग्रचित्तागिरिजार्च
नेयासंमोहयत्येव ममात्रचित्तं एनामनंगाय
तलोचनाख्यांमदंगसंगैकरसांविधेहि २९॥
सएवमुक्तःसुरवल्लभेनस्वकार्य्यभावादतिगौर
वेण संधायवाणंकुसुमायुधोपिसस्मारतामाशु
विमोहयेःसुधीः ॥ ३० ॥

इतनावचन सुनकर इंद्र देवराज कामदेवकी स्तुति करकें कह
ने लगा हेअनंग योगी जनोंके स्वामी महादेव जितेंद्री
सो तैंने अपने वाणों करकें ताडन करे होए अर्धनारीश्वर वना
दिये हैं और ऐसाकौनहै देवता जां मनुष्यादिक जो तेरेबाणों
के प्रहारकों सहार सकेगा २८ ॥ हेअनंग तूं सभकामोंके क
रणेकों समर्थहैं आजमैने एकाग्रमनहोकर पार्वतीका पूजन क
र्तीहोई जोमेरे मनको मोहितकर्ती होई विशालनेत्रोंवाली देखी
है इसकों मेरे अंगोंके साथ मिलाप करणे वालीकों कर क्या
उसकों मोहित करकें मेरेपास ल्या ॥२९॥ इसप्रकार अपनेका
र्यकी गौरवता वडिआई करकें जदकथन करा हुया देवतयोंके
स्वामी राजा इंद्रनेकामदेव वुद्धिकर्कें अपणे धनुषमैं पुष्पों
का वाण झडाया और कहा कि तूं शीघ्र उसका मोहनकर तूं
वडी वुद्धि वालाहैं ॥ ३० ॥

संमोहितापुष्पशरेणवाला कामेनकामं मदवि
व्हलांगी विहायपूजांहसतेसुरेशंकः कामको
दंडरवंसहेत ॥३१ विलोलनेत्रेह्यपिकासिवा
ले संमोहयंतीवमनांसिपुंसां सुराधिपोवाक्य
मिदंजगादकस्येहकांतावदपुण्यभाजः ३२ ॥
उक्तापिवालामदविव्हलांगी रोमांचसस्वेदस
कंपगात्रा कृताकुलाकामशिलीमुखेनसगद्गदं
वाक्यमुवाचमंदम् ॥ ३३ ॥

तद सो वाला यक्षराजकी स्त्री पुष्प हैं वाणजिसके ऐसेका
मदेवने मोहित करी होई मद करकें व्याकुल अंगोवाली पार्व
तीकी पूजाकों त्यागकर हास्यकर्ती २ काम किया वानां
इंद्रसें करंण क्योंकि देखे कोनसा पुरुषहै जो कामदेवके
वाणोंका शब्द सहारे ॥ ३१ ॥ ऐसा चिंतन करकें सुराधिप इं
द्र कहता भया हेचंचल सुंदर नेत्रोंवाली तू पुरुषोंके मन
को मोहतीहै और कौनहै और किसपुण्यवाले प्रारब्धीकी
स्त्रीहैं एह मेरेकों कथन कर ॥ ३२ ॥ एहवात इंद्रने जद तिस
कों पूछी तद सो मद करकें व्याकुल अंगोवाली कामदेव करकें
रोम रोम उसके देहमें खडा होगया और पसीना चलने लगा
जिससे ऐसी ओहकामबाणके प्रहार करी होई मंद २ धैर्यसें
गद्गदवाणीसें वाक्यकहती भई ॥ ३३ ॥

कांताधनेशस्यचयक्षकन्याप्राप्ताचगौरीचरणा
र्चनाय प्रब्रूहिकार्यंचतवास्तिनाथकस्त्वंहिव
दतिष्ठसिकामरूपः ३४ इंद्रउवाच सात्वंसमा
गच्छ भजस्वमाचिरान्मदंगसंगोत्सुकतांव्रजाशु
त्वया विनाजीवितमप्यनल्पंस्वर्गस्यराज्यंमम
निष्फलंस्यात् ॥ ३५ ॥ प्रोक्ताचसंवमधुरैंचते
नकंदर्पसंतापितचारुदेहा विमानमारुह्यकुवे
रकांतासुरेशकंठग्रहणंचकार ॥ ३६ ॥

क्या कहने लगी किमैं धनेश क्याकुवेरकी तों कांता स्त्रीहां और यक्षकी कन्याहां इहां गौरी क्यापार्वतीके पूजन करणे कों आई होईहां हेनाथ जेकर तुमारेकों कोई कामहै सो मेरेकों कहो और आपभी अपना नाम ग्राम कहो कौनहो काम देव की न्याईं अतिसुंदर इहां स्थित होए हुए हो ३४ ॥ इतना वचन सुनकर इंद्रदेवता कहनेलगा हेसुभ्रु सो तूं मेरे पास आ कर मेरेकोंभज क्या अंगीकार कर इसमैं चिरमनलगा औरमेरे अंगोंके संग करणेकी उत्कंठा वाली शीघ्रहो क्योंकि तेरे वि ना जीवनकों भी तुछ मानताहुं और स्वर्गका राज्यभी मेरा निष्फल होगयाहै ॥ ३५ ॥ सो यक्षराजकी स्त्री तिस इंद्रने इ स प्रकार कथन करी होई काम देव करके तप्त होगयाहे देह जिसका ऐसी ओह सुंदर देह वाली कुवेरकीस्त्री विमानके ऊ परचड कर सुरेश क्या इंद्रका कंठ ग्रहण कर लेती भई क्या आलिंगन कर्ती भई ॥ ३६ ॥

जगामशीघ्रंसहदेवनाथःसकांतयामंदरकंदरा
सु अदृष्टदेवासुरसंचरासुविचित्ररत्नांकुरभा
सुरासु ॥ ३७ ॥ रेमेतयासाकमुदारवीर्य्यश्चि
त्रस्वरैश्वर्यगतादरोपि स्वयंचयस्यालघुपुष्प
शय्यांचकारतूर्य्यनिनदांश्चकामः ३८ ॥ जातः
कृतार्थोऽमरवृंदनाथः सकामभोगेषुसदाविद
ग्धः मोक्षाधिकंस्नेहरसातिमिष्टंपरांगनालिं
गनसंगसौख्यम् ॥ ३९

तद सोदेवता इंद्र तिस कुवेरकी स्त्रीकों साथ लेकर मंदराचल की गुफामे चलागया जिसमे देवता और दैत्योंका आनाजाना नहि देखा और माणियोंके प्रकाशकर युक्त तिनमैं तिस स्त्रीकों लेजाता भया ३७ सोतो उदार पराक्रम वाला तिसके साथ क्रीडा करताभया कैसाइंद्रहै स्वर्गके ऐंश्वर्यकर प्राप्त होएआ आदर जिसकों जिसकेनिमित्त कामदेव अपने हाथोंसें सुंदरअति विचित्र पुष्पोंकी शय्या कंदरामे रचताभया और वाजेवजावताभया ३८ और देवतयोंके समूहकास्वामी इंद्र काम भोगोंमैं सर्वदाकाल वडा चतुर सो अपने आपकों कृतार्थ मानता हुया पराई स्त्रीके साथ आलिंगनकर सुखभोग करकें स्नेह प्रीतिका जो अतिमीठारस तिसकों मोक्षसेंभी अधिक मानता भया ३९

अथागतायक्षपतेःसमीपंनाय्योंनिवार्य्यैवविचि
त्रसेनां ससंभ्रमास्संभ्रमाखिन्नगात्रा स्सगद्ग
दंप्रोचुरसाहसज्ञाः ४० नूनंसमाकर्णययक्षना
थविमानमारोप्यजगामकश्चित् संवीक्षमा
णः ककुभोऽपिकांतांविगृह्यवेगादिहसोपित
स्कर: ४१ वचोनिशम्याऽपि धनाधिनाथोवि
षोपमंजातमसीनिभाननः जगादभूयोनचाकिं
चिदेवबभूववैवृक्षइवाग्निदग्धः ४२

उसकों कहीं लेगए होऐ पीछे उसके संगकीयां स्त्रियां क्या विचित्रसेनाकियां दासियां तिसकों ननिवार कर्के कुवेरके समीप आवतियां भईयां और आश्चर्य युक्त मनवालियां और भय कर्के खिन्नहैं अंग जिनके और साहसकों न जानने वालियां ऐसियां सो गद्गदवाणी कर्के कहतीयां भईयां ॥ ४० ॥ क्या कहती भईआं हेंनाथ यक्षोंके स्वामि निश्चय कर हमारा वाक्य सुन क्योंकि कोई अज्ञात कुल नाम वाला तिसकों विमान पर चढायके कहीं वेगसें ले गया हे और दिशां भी देखतागयाहै वो चोरथा ॥ ४१ ॥ ऐसा विषके तुल्य तिनका वचन सुन कर धनाधिनाथ कुवेर श्रवणकर्के मसीक्यास्याईके तुल्य तिसका उस समय मुख हो जाता भया और तिनकोंकुछ उत्तर भी नहि देता भया और अंदर सें तो अग्नि कर्के दग्ध होए हूए वृक्ष की न्याईं होजाता भया ४२

विज्ञापितार्थैवरकन्यकाभिर्याश्चित्रसेनासहचा
रिणीभिः मोहापनोदायमतिंदधानःसकंठकु
ब्जोपिसमाजगाम ४३ श्रुत्वागतंवीक्ष्यसरा
जराजउन्मीलिताक्षोवचनंजगाद विनिःश्वस
न् गाढसकंपगात्रःस्वस्थंमनोऽ प्याशविधाय
दीनम् ४४ तद्यौवनंयद्युवतीविनोदोधनंतुतद्य
त्स्वजनोपयोगि तज्जीवितंयत्क्रियतेसुधर्मस्त
दाधिपत्यंयत्तुष्टविग्रहः ४५

जब चित्रसेनाकी दासियोने स्या साथ रहने वालियें वर क्याश्रे
ष्ट कन्योंने प्रयोजन सुनागडिया तद शोक मोहके दूरकरणे वा
स्ते बुद्धिकों धारण कर्ता हुया कंटकुब्जनामा एकमंत्रीथासो च
ला आवताभया ४३ तद राजोंका राजा कुवेर आए होए तिस
कों सुनकर्के लज्जासें नेत्रों को मीट कर वाक्य कहताभया वडे
उंचे श्वासलेता २ अछी तरां सें कंपयुक्त हैं अंगजिसके और
मनकी दीनता कर युक्त होके ४४ और ऐसेकहन लगा हेकं
ठकुब्ज पुरुषकी युवावस्था ओहीहै जिसमें अछीतरां युवा
स्त्रियोंका सुखभोग भोगयाजावे और धन ओही है जौनसा
अपने सज्जनों के प्रयोजन मैंआवे और जीवित ओईहै जिसमें
श्रेष्ट कर्म होवें और राज्य ओहीहै जिसमें देह प्रसन्न रहे ४५

धिङ्मेधनंजीवितमप्यनल्पंराज्यंबृहत्संप्रातिगु
ह्यकानां विशामिचाग्निंनचवेदकश्चित्पराभवो
स्तीतिचकोमृतानाम् ॥ ४६ ॥ पार्श्वेस्थिता
सापिचजीवतोमे गता तडागं गिरिजार्चनाय
हृताचकेनापिवयंनविद्मो ध्रुवंनतस्यास्तिभयं
हिमृत्योः ४७ जगादवाक्यंसचकंठकुब्जोमो
हापनोदायविभोःसमंत्री आकर्ण्यतांनाथनचा
स्तियोग्यःकांतावियोगेनाहिदेहघातः ४८ ॥

कुवेर अपने मंत्रीके प्रति कथन कर्ताहै हे मंत्रिसत्तम मेरे धन कोंभी धिकारहै और वहुत मेरे जीवनकों भी धिकारहै और अत्यंत वहुत जो गुह्यकोंका राज्यहै तिसकों भी धिकारहै और मैं आज अग्निमें प्रवेश कर मृत होजाताहां क्योंकि मरे होए पीछेकोई पराभव क्या निंदा अपयशकों कौनजानताहै ४६ देखो कैसाआश्चर्यहै मेरे जीवित इहांमेरे पास वैठी होई मेरी स्त्री गिरिजाक्या पार्वतीके पूजनकरणे कों तडागपर गईहै उहां सें कोई दुष्ट पुरुष हरके लेगयाहै पर हम उसकों नहि जानतेहैं और भी उसमें विचार कर्तेहैं ऐसा कौन पुरुषहै किजिसकों मृत्युकाभय नहिहै ४७ इस प्रकार वचन सुनकर राजाके मुखसें कंठकुब्जनामा मंत्री अपने स्वामीके मोहकों दूर करणे वास्ते कहता भया हेनाथ जो कुछ मैं कथन कर्ताहु तिसकोंसुनो क्या स्त्रीके निमित्त देहका घात करणा योग्य नहिहै इसमें वडा अपयश होताहै ॥ ४८ ॥

एकापुरारामवधूर्हृताच निशाचरेणाऽपिमृतश्च सोपि अनेकशःसंतितवात्रनार्य्यःकोनामचित्ते कुरुतेविषादम् ॥ ४९ ॥ विमुक्तशोकःकुरुविक्रमेमतिंधैर्य्यंसमालंव्यचयक्षराज भृशंनजल्पंतिरुषंतिसाधवः पराभवंवाह्यकृतंसहंते ५० कृतंहितंकार्यमहोदिशंति सहायवान्वित्तपकातरोसिकिं सहायकार्यंकुरुतेहिसंप्रतिस्वयंहियस्यावरजोविभीषणः ॥ ५१ ॥

हेराजन् पूर्व एक समय इक निशाचरने रामचंद्रजीकी वधू सीता हरीथी पर सोभी मर गया और इस लोकमें उससेंभी अधिक सुंदर २ नारियांहैं ऐसा कोनहै जो स्त्रीके निमित्त मनमैं खेद कर्ताहै ४९ ॥ आप तुसी शोकको त्यागो सत्पुरुष वहुत वातांनहि कर्तेहैं और क्रोधनहि कर्तेहैं और वाह्यकृत जो पराभवहै तिसको भी सहारतेहैं ५० हेवित्तप धनके स्वामितेरे जैसे राजा होचुके होए कार्यको हित करके कहतेहैं तूं सहायता वाला क्यों कातर होएआहैं तेरे सहायकाम सभतरांसे करणे वाला तेरा छोटा भ्राता विभीषण वड़ा वलवान्है तेरेको क्या फिकरहै ॥ ५१ ॥

धनदउवाच विभीषणोमेप्रतिपक्षभूतोदायाद
भावंनविमुंचतीति ध्रुवंप्रसन्नानभवंतिदुर्जनाः
कृतोपकाराहरिवज्रनिष्ठुराः ५२ नचोपकारैर्न
गुणैर्नसौहृदैः प्रसादमायातिमनोहिगोत्रिणाम्
उवाचवाक्यंसचकंठकुब्जोयुक्तंत्वयोक्तंहिधना
धिनाथ ५३ परस्परंघ्नंतिचतेविरुद्धास्तथापि
लोकेनपराभवोस्ति. पराभवंनान्यकृतंसहंतेनो
ष्णंजलंज्वालयतेतृणानि ५४ ॥

इतना वचन कंठकुबज मंत्रीका सुनकर धनाधिनाथ कुवेरजी कहनेलगे हेमंत्रिसत्तम विभीषणजोहै सो मेरे प्रतिपक्ष भावकों प्राप्त होएआ हुया दायाद भावकों क्या पिताके धनका हिस्सा आंजतन मेरेसें मांगताहै उसमें उसनावकों नहि त्यागताहै एह प्रसिद्ध वातहैदुर्जनजो पुरुषहैं तिनके उपर्गिकानंनमो उपकारकरो तदभीओह प्रसन्न नाहि होतेहैं और इंद्रके वज्रके तुल्य कठोर हो तेहैं ॥ ५२ ॥ और सुहृद भाव करके संबंधियोंका मन उपकारो करके और गुणों करके प्रसन्न नहि होताहै इतना वचन सुनतेहि कंठकुबज बोला हेधनाधिनाथ एह वात आपने सत्य कहीहे ५३ परंतु एह वात ओहजो वंशकेंहैं सो विरोधि होए हुए आपसमें लडाई झगडे करतेहैं पर उनका अपवाद कुछ नहिहोता हे और दूसरेका इतना अपराध नहि कदी सहारतेहैं जिसतरां गर्म जलसें तृण नहिदग्ध होतेहैं इसीतरासें एक गोत्र वाले क्या शरीकोंके वचनोंसें पुरुष नहिदग्ध होतेहैं ॥ ५४ ॥

तस्मात्समागच्छधनाधिनाथ पार्श्वेचवेगेनवि
भीषणस्यस्ववाहुवीर्याजितवित्तभोगिनांस्वबं
धुवर्गेषुहिकोविरोधः ५५ इत्युक्तःसतदातेन
कंठकुब्जेनमंत्रिणा विभीषणस्यसामीप्यंज
गामचविचारयन् ५६ ततोलंकाधिपःश्रुत्वा
बांधवंपूर्वजंतदा प्राप्तंप्रत्याजगामाशुविनयेन
समन्वितः ॥ ५७ ॥

हेकुवेर इसवातकों विचार कर वेगकेसाथ विभीषणके पासच
लाजा क्योंकि अपने वाहुयोंके पराक्रमकर्के जीतकर धनादियों
कों भोगनेवाले जोअपने वांधवोंका समूह तिसमें क्याविरोधहै
५५ इस प्रकार तिस समय कंठकुब्ज मंत्रीने कथन कराहुया य
क्षराज कुवेर विचार कर्तां२ विभीषणके पासचला जाताभया ५६
तद तिसके गए होए पीछे लंकाके वीच विभीषणकों खवर
हुई कि मेरा वडा भ्राता कुवेर मेरेपास आयाहै इतनी वात सु
नकर विनती करयुक्त आदर सन्मान पूर्वक उसके लेनेके वास्ते
आगे आवता भया ॥ ५७ ॥

ततोविभीषणोदृष्ट्वातदादीनंचवाधवं संतप्त
मानसोभूपजगादेदंवचोमहत् ॥ ५८ विभीष
णउवाच कथंदीनोसियक्षेशकिंकष्टंतवचेतासि
निवेदयाधुनास्माकंनिश्चयान्मार्जयामितत् ॥
॥ ५९ ॥ तदैकांतंसमासाद्यकथयामासवेदनां
गृहीताकिंस्वयंयातानिहताकेनचिद्दूषा ६०
भ्रातःकांतांनपश्यामिचित्रसेनांमनोरमां एतद्दं
धोमहत्कष्टंममनारीसमुद्भवं प्राणान्वैघातयि
ष्यामिअनासाद्यचवल्लभाम् ॥ ६१ ॥

इतने मैं विभीषण तिस कुवेरके पास आय पहुचा और तिस कों दीन होए हुए वांधव कों देख कर हे भूप वहुत संताप युक्त मन वाला होआ हुया इस प्रकार वचन कों कहता भया ॥ ५८ ॥ विभीषण कहने लगा हे भ्रातः यक्षों के स्वामि किस करके दीन होए हुए हो और क्या तुमारे मनमे दुःख है अव मेरे प्रति कहो तद मैं उसको उपाय करके दूर करूंगा ५९ इतना वचन आश्वसन कर युक्त तिसका श्रवण करके कुवेर एकांतमैं कही लेजाकर मनकी पीडा तिसके प्रति कहने लगा हेभ्रातः मनकों आनंद देने वाली चित्रसेना नामक अपनी स्त्री कों कही मैं नहि देखताहुं खवर नहि कोई पकड कर लेगया है वा आप चली गई है कही अथवा किसीने द्वेषकरके मार दई है ६० हे भ्रातःएही मेरे कों स्त्रीके जाने करके वडा कष्ट उत्पन्न होएआ हुया है इसका कुछ उपाय करो नहि तो तिसके प्राप्त होने विना अपने प्राणोंका घात कर देउंगा ॥ ६१ ॥

विभीषणउवाच आनयिष्यामितेकांतांयत्रत
त्रस्थितांविभो कःसमर्थोऽधुनास्माकंहर्तुनाथ
तृणस्यच ॥ ६२ ॥ ततोविभीषणस्तत्रनाडी
जंघांनिशाचरीं भृशंतुजल्पयामासनान्नामा
यागरीयसीम् ॥ ६३ ॥ धनदस्यचयाकांताचि
त्रसेनाभिधानतः साचकेनहृतालोकेमानसे
सरसिस्थिता ॥ ६४ ॥ तांचजानीहिसंवी
क्ष्यदेवराजादिवेश्मसु ततोनिशाचरीभूपकृ
त्वामायामयंवपुः ॥ ६५ ॥

इतना वाक्य हानि के करणे वाला सुन कर विभीषण कहने लगा हे विभो मैं जहां कहीं लोकांतर मैं भी तुमारी भार्या स्थित होवेगी उहां सें ही ल्याय करदेताहुं क्यों हे नाथ इस समय ऐसा कौन पुरुष है जो कोई हमारा तृणभी उठाय कर लेजावेगा ओहतो कांता है ॥ ६२ ॥ इतना वाक्य तिस को कथन कर विभीषण नाडी जंघा नामा एक राक्षसी थी तिस कों वुलाय कर अछी तगीद करकैं कहता भया ॥ ६३ ॥ कि मान सरोवरके ऊपर गिरिजा देवीका पूजन कर्ती होई कुवेर की स्त्री चित्रसेना नाम वाली जो है सो किसी ने हरी है इसी स्थान मैं ॥ ६४ ॥ तिस कों जा करकैं तूं देवता दैत्य राजा लोक इनके घरों मैं देख और हमारे कों आन करकैं खवर दे इतना वचन सुन कर हे भूप सो निशाचरी माया का रूप अनेकतरों का माया अपना वनाय लेती भयी ६५ ॥

जगामत्रिदिवंशीघ्रंदेवराजादिवेश्मसु मांसह
स्त्रेक्षणोद्दष्ट्वामोहंयास्यतिसत्वरम् ६६ ॥ य
स्याः समंध्रुवंरूपंविद्यतेनचराचरे एतस्मिन्नेव
कालेतुदेवराजोपिपुत्रक ॥ ६७ ॥ संप्राप्तोमं
दराच्छीघ्रंप्रेरितश्चित्रसेनया गृहीतुंदिव्यपुष्पा
णिनंदनप्रभवाणिच ॥ ६८ ॥ तत्रापश्यततांत
न्वींनिजस्थानेसमागतां अतीवरूपसंपन्नांगी
तनृत्यपरायणाम् ॥ ६९ ॥

शीघ्रहि देवराज इंद्रकें घर स्वर्गमै चलीजाती भई मनमे ऐसा विचार कर्त्तीभयी कि मेरेको देखकर इंद्रशीघ्रहि मोहको प्राप्त होवेगा ६६ ॥ किसवास्ते कि जिसके समान अति सुंदर रूप चराचरमै नहि किसी और का ऐसा रूप तिसने बनाया ६७ इतनेमें हेपुत्रक देवराजभी उहांहि चित्रसेनाने भेजा हुया नंदननामा स्वर्गके बागमे उत्पन्न होने वाले दिव्य पुष्पलेन के वास्ते आय प्राप्तहुया ॥ ६८ ॥ तौ तहांक्या देखताहै कि अपने स्थान क्या स्वर्गमैं आई होई तिस कोमल अंगोवाली अत्यंतरूपकर संयुक्त नृत्यगायनमै तत्पर होई हुईको देखता भया ॥ ६९ ॥

तांवीक्ष्यदेवराजोपिसकामवशगोभवत् ततः
संप्रेरयामासदेववैद्यौसुराधिपः ॥ ७० ॥ त
स्याःपार्श्वेसमानेतुंश्रुवंचांतः पुरेतदा देववैद्यौ
तदागत्य जल्पतुश्चाग्रतः स्थितौ ॥ ७१ ॥
आगच्छभवतन्वंगिदेवराजसमीपगा इत्युक्ता
सातदाताभ्यांजगादमधुराक्षरम् ७२ नाडीजं
घोवाच देवराजःस्वयंयन्मेपार्श्वेचात्रागमि
ष्यति तस्यवाक्यंचकर्त्तव्यंनान्यथासर्वथा
मया ॥ ७३ ॥

तदतिसकोंदेखकर्के इंद्रभीकामदेवके वशीभूत होजाताभया पर
अपने अंदरजायकर सुराधिपमोहितं होएआहुयातिसके रूपक
र्के देवतेयोंके जोवैद्यहैं तिनकों तिसके पासल्याउनेके वास्तेभेज
ता भया७० कि तुमजाके उसकों अंदरमें ल्याओ तद देववैद्यउस
की आज्ञापायकर उसके पास आयके स्थित होकर कहने ल
गे ॥ ७१ ॥ हेतन्वंगि तूं हमारेसाथ आयके देवराजके पासच
लओह तेरेकों वुलावताहै इतना वाक्य तिनका सुनतेंही नाडी
जंघा राक्षसनी कहनेलगी ७२ देवराज जेकर मेरे पास आपचल
करके आवे और अपने मुखसें कहे तद मैं उसका कहना मा
नती हुं ऐसेतुमारे कहनेसें नहि जातीहुं एहवात तुम जाकर कं
हदेओ ॥ ७३ ॥

तौतदावासवंगत्वाऊचतुस्तद्वचःशुभं वासवउ
वाच समादेशयतन्वंगिकिंकर्त्तव्यंमयाधुना
॥ ७४॥ सर्वदादासभूतस्तेयाचसेतद्ददाम्यहम्
७५ तन्वंग्युवाच याचितंयदिमेनाथदास्यसि
त्वंनसंशयः ततोहंवशगादेवभविष्यामिनसंश
यः ७६ अद्यत्वंदर्शयास्माकंसर्वकांतापरिग्रहं
ममरूपसमाकाचित्तुकांतातेचास्तिवानवा ७७

उसका इतना वचन सुनतेही सो दोनो स्वर्ग निवासियोंके वै
द्य परतकर इंद्रकों जाके उसका कहना सुनाय देते भये कि
हेमहाराज उोह इसप्रकार कहतीहै इंद्रआप मेरेपास आवे जो
कुछ मैं कहतीहां सो करे उसके घरचलतीहां इतना वचन उन
के मुखसें निकलतेही इंद्र देवतों का राजा कहन लगा तुम दों
नो परत कर फिर उसके पास जाकेकहो हेतन्वंगि कोमलदेह
वालि हमारे कों आज्ञा कर जो कुछ हमने काम तेरा सिद्ध कर
णा है ॥ ७४ ॥ हम तेरे दास रूपीहैं जो कुछ हमकों कहती
हैं सोई कुछ हम तेरेको देतेहैं इसमैं मत संशय कर ७५ ॥ इ
तनी बात इंद्रके मुखसें सुनकर दोनों उोह उसके पास परत
कर आये विनतीसें उोहवात सुनाई तद सो तन्वंगी कहतीभई
हेनाथ जेकर मेरी मांगी होई वस्तुकों देउोगे इस मैं कुछ संश
यनाहि है परमैं भी तद ही तुमारे वश होवांगी इस मैं कुछ सं
शय नाहि है ७६ तद उनों ने कहा कि हमकों आज्ञा कर जो
तैने मांगनाहै फिर उोहवोली प्रथम तोमेरेकों अपने अंतःपुरकी
यांस्त्रियां तुमारीयां विवाहियां हुईआं दिखाउो उनमें मैं देखूंगी
क्या मेरी सुंदरताके समान कोई तुमारी स्त्रीहै जा नाहि ७७

तयाचोक्तिचवचनेभूयस्तांवासवोवदत् दर्शयि
ष्यामिसर्वंतेदेविकांतापरिग्रहम् ७८ससर्वंद
र्शयामासवासवोंतः पुरंतथा ततोजगादभूय
स्सकिंचिद्गूढंममासते ॥ ७९॥ विमुच्यैकांतुयु
वतिंसर्वंतेदर्शितंमया साचमेमंदिरेचास्तित्र
विज्ञातासुरासुरैः ८० तांचतेदर्शयिष्यामिना
ख्येयंकस्यचित्त्वया ततःसदेवराजोपितयासा
र्द्धंचपुत्रक ॥ ८१ ॥

तिसने ऐसे कथन करे होए पीछे फिर वासव इंद्र कहता भया हेदेवि सारे अंतःपुरकी स्त्रीयां मैं तेरेकों दिखावताहुं ॥ ७८ ॥ ऐसे कह कर इंद्र तिसकों अपने अंतः पुरमे ले जाय कर सारियां स्त्रियां दिखायके फिर तिसकों कहन लगा और सभी कुछ मैने तेरेकों दिखाय दिया एक वात गुप्त मेरे घरमैं और है ॥ ७९ ॥ एक तिस स्त्रीकों त्याग कर सारा कुछ मैने तेरेकों दिखाय दियाहै सो किनारे मैं मेरे घरमैं है उसकी खवर किसी देवता दैत्य कों नहि है ॥ ८० ॥ ओहभी मै तेरेकों दिखायदेता हुं पर किसीकों नहि कहना कि ओह स्त्री मैने देखी है ऐसे कह कर उससें प्रतिज्ञा करायकर पीछेसें देवराज तिसकों साथ लेकर हेपुत्र उहां आवता भया जहां यक्षराजकी स्त्री मनोरमा रहतीथी ॥ ८१ ॥

जगामचांबरेभूपमंदरंप्रतिभूधरं तस्यवैगम्य
मानस्यविमानेनार्कवर्चसा ८२ दर्शनंनारद
स्यापितस्यजातंतदांबरे तंवीक्ष्यनारदंवीरोल
ज्जमानोपिवासवः ॥ ८३ ॥ नमस्कृत्यजगादो
च्चैःक्यातोसिमहामुने ततः कृताशीःसमुनिरव
दत्रिदशेश्वरम् ॥ ८४ ॥ गच्छामिमानसेस्नातुं
देवराजसुखीभव नाडीजंघेस्तिकुशलंराक्षसा
नांमहात्मनाम् ॥ ८५ ॥

हे भूप आकाश मार्ग कर्के मंदरा चलपर्वतकों सूर्यके तेजकी न्याईं प्रकाश वाले विमान पर बैठ कर जाते होए तिस इंद्र देवताकों ॥ ८२ ॥ तिस समय आकाशके ऊपरही नारद जी का दर्शन होता भया तद तिसकों देखकर वीर जो इंद्र है सो लज्जा वाला होया हुया ॥ ८३ ॥ नारदजीकों नमस्कार कर्के ऊचेस्वरके साथ पूछने लगा हेमहामुने आप कहां चले हो तद तिस इंद्रका वचन सुन कर नारदने आशीर्वाद दिया फिर त्रि दशेश्वरकों कहन लगा ॥ ८४ ॥ हेदेवराज मैं स्नान करणें वास्ते मानसरोवर कों चलाहुं तेरेकों सुख होवे इतना उसकों कह कर फिर कहन लगा हे नाडीजंघे महात्मा राक्षसों कों तो कुशल है ॥ ८५ ॥

विभीषणोपितेभ्राताsुखीतिष्ठतिसर्वदा एवमु
क्ताचमुनिनासाकृष्णवदनाभवत् ॥ ८६ ॥ दे
वराजोपितज्ज्ञात्वाछद्मतोदुष्टयानया नारदो
पिगतःस्नातुंकैलासेमानसंसरः ॥ ८७ ॥ क्षणं
विश्रम्यतत्रैवधृत्वाकेशेषुराक्षसीं हंतुमिच्छति
देवेशोनाडीजंघांनिशाचरीम् ॥ ८८ ॥ ताव
त्तत्रसमायातस्तृणविंदुर्निजाश्रमे धृताक्रंद
तिसाराजन्निंद्रेणापिनिशाचरी ॥ ८९ ॥

और विभीषण तेरा भ्राता सर्वदाकाल राजी प्रसन्न रहता है ना इस प्रकार मुनिने जद कहा तदही सो भयसें श्याम मुखवाली होतीभई ८६ देवराजनेभी एहवात जानी कि इसने छल किया कर्के मेराभेद लियाहै और नारदजीभी कैलास पर्वतके ऊपर मानसरोवरमैं स्नान करणेकों चले गए ८७ तद तहां एक क्षण मात्र विश्राम कर्के इंद्र पीछेसें राक्षसीकों केशोसें पकडकर मारने की इच्छा वाला होएआ क्या जव नाडी जंघाकों मारणे लगा ॥ ८८ ॥ तो इतनेमैं अपने आश्रमकों जाता २ तृण विंदु नामा ऋषि आय गया तो उहां केशोंसें पकडी होई नाडीजंघा राक्षसी इसतरां क्रंदन कर्ती भई क्या करलावती भई क्या रेमी इससें रक्षा करे ॥ ८९ ॥

नमांरक्षतिपुण्यात्माहन्यमानांतुसाप्रतं तदा
गत्यमुनिश्रेष्ठस्तृणविंदुर्महातपाः १० जगा
दपुरतःस्थित्वामुंचेमांमद्धितांचमे जल्पितेचमु
नौतस्मिन्महेंद्रेणनिशाचरी ११ ॥ वज्रेणनि
हतावत्सकोपयुक्तेनचेतसा सचकोपमुनिश्रे
ष्ठोवेपमानोमुहुर्मुहुः १२ यद्द्वेषाद्युवतीदुष्टनि
हतामेतपोवने ततस्त्वंममशापेननिश्चयात्स्त्री
भविष्यसि ॥ १३ ॥

इस समय मरती होई मेरे कों कोई नहि रक्षा कर्ता है क्या करां मेरे कों कोई दयावान् नहि मिलता है ऐसा करलाने का शब्द तिसका श्रवण कर्के वडातपस्वी तृण विंदु नामा ऋषि उहां आय कर्के ॥१०॥ तिसके आगे स्थित होकर इंद्रकों कहन लगा मेरी हित वाली इसकों छोडदे मत मार इसतरां कथन कर्ते होए भी तिस मुनि के इंद्रनें सो निशाचरी ११ ॥ हेवत्स क्रोध युक्त होए हुए मन वालेने वज्र के साथ मार ही दई तद सो वारंवार कांपता हुया वडा क्रोध वाला होता भया १२ ॥ और ऐसे कहता भया हेदुष्ट मेरे तपोवनमैं जिस द्वेष सें तैंने एह स्त्री मारी हैं इस कारण से तूं मेरे शापसें स्त्री रूप निश्चय कर्कें होवेंगा ॥ १३ ॥

इंद्रउवाच एषानाथमहादुष्टाराक्षसीनिहताम
या अहंस्वामीसुराणांचशापंमादेहिमेऽधुना
१४मुनिरुवाच नूनंतपोवनेस्माकंदुष्टास्तिष्ठंति
साधवः ममात्रतपसोभावान्नविघ्नंतिपरस्परम्
१५॥इत्युक्तोहितदाचेंद्रोयातःस्त्रीत्वंनसंशयः
जगामत्रिदिवंभूपहतशक्तिपराक्रमः १६ ॥ना
सीनोहिभवत्येवसर्वदादेवसंसदि देवदुःखंस
मापन्नंदृष्ट्वास्त्रीत्विगतंहरिम् १७॥ ततोदेव
गणाः सर्वैवासवेनसमन्विताः जग्मुश्चब्रह्मसद
नंतथादीनाशचीतदा १८

इंद्र कथन करणे लगा हेनाथ एह वडी दुष्ट राक्षसी छल माया कर्णे वाली मैनें मारी है और देवतयों का स्वामी हां मेरे कों मत इस समय शाप देओ १४ मुनि कहने लगा निश्चय कर्के मेरे इस तपो वनमैं दुष्ट भी साधु भी निवास कर्ते हैं पर मेरे तप के प्रभाव कर्के कोई किसी के साथ विद्वेष नहि कर्ता है १५ इस प्रकार कथन करा हुया इंद्र उसी समय स्त्री भाव कों प्राप्त होगया तो हेराजन् हत होगई सामर्थ्य जिसकी और पराक्रम जिसका ऐसा इंद्र परतके स्वर्ग कों चला जाता भया १६ पर देवतेयों कों वडा दुःख होता भया इंद्र कों स्त्री वने होए देख कर १७ सारे देवतेयों के समूह मिलकर इंद्र के साथ ब्रह्मलोकमैं चले जाते भये और दीन होई हुई इंद्राणी भीचली जाती भई १८ ॥

ब्रह्माभग्नसमाधिश्चतावत्तत्रैवसंस्थितः देवाऊ
चुश्चतेसर्वैवासवेनसमन्विताः ॥ ९९ ॥ त
स्यविंदुमतेःशापाद्यातःस्त्रीत्वंसुराधिपःसमुनिः
कोपवान्ब्रह्मन्नचगच्छत्यनुग्रहम् ॥ १०० ॥ पि
तामहउवाच नमुनेरपराधःस्यात्तृणविंदोर्महा
त्मनः स्वकर्मणापपातासौस्त्रीत्वंस्त्रीवधकार
णात् १०१ चकारदुर्नयंदेवादेवराजोपिदुर्मदः
जहारचित्रसेनांचसुगुप्तांधनदागताम् १०२॥

जिस समयदेवता ब्रह्म लोकमैं जाय वैठे तद ब्रह्मा भी भग्न
समाधि वाला होगया और सारे देवता इंद्र के सहित ब्रह्मा
कों कहते भये ॥ ९९ हेब्रह्मन् तिस तृण विंदुके शापसें सु
राधिप इंद्र स्त्रीभावकों प्राप्त होएआ है और वो क्रोधी
जो मुनि है सो अव तक कृपा करणे मैं नहि आवता है
॥ १०० ॥ इतना वचन सुन कर ब्रह्माजी कहने लगे तिस म
हात्मा तृण विंदुका कुछ अपराध नाहि है क्यों कि अपने क
र्मके प्रभाव कर्के और स्त्री के कारणे सें स्त्री भावकों प्राप्त हो
ए आहै ॥ १०१ ॥ हेदेवाः दुष्ट मद वाला एह देव राज भी
दुष्ट काम कर्ता भया देखो एक तो चित्र सेना धनद क्या कुवेर
स्त्री रक्षा करी होई तिसकों हरकेल्यावता भया ॥ १०२

तथाजघानयुवतींतृणविंदोस्तपोवने तेनकर्म
विपाकेनस्त्रीभावंवासवोगतः ॥ १०३ ॥
देवाऊचुः यदयंकृतवान्शंम्भोर्दुर्नयंनामदुर्म
तिः तत्सर्वंसाधयिष्यामोवयंशच्यासमन्विताः
॥ १०४ कांताधनाधिनाथस्यगूढातिष्ठतियावि
भो तांचतस्यप्रदास्यामःसर्वेकृत्वापरांमतिम्
॥ १०५ ॥ त्रयोदश्यांचतुर्दश्यांदेवराज्ञीशची
पुनः नंदनेचार्चनंचक्रेसर्वदायक्षरक्षसाम् १०६

[illegible] तृणविंदु ऋषि के महावन में क्या तपो वन में युवती त्रा कों मार देता भया तिस कर्म के प्रभाव कर्के एह इंद्र स्त्री भावकों प्राप्त होए आहै ॥ १०३ ॥ इतना वचन सुन कर सारे देवता कहने लगे हेब्रह्मन् एह दुर्मति इंद्र जो कुछ शंभु महादेवजी का दुर्नयकर्ता भया क्या अपराध कर्ता भया तिसके निमित्त हम सारे ही शचीके सहित साधन कर्तेहैं क्या उपाप कर्तेहैं ॥ १०४ ॥ और हेविभो जौन सी इसने कुवेरकी कांता ल्याके गुप्त राखी होई है ओहभी हम सारेही सलाह कर्के तिस धनाधिनाथकों देतेहैं ॥ १०५ ॥ ऐसे कहा जद तिससें उपरंत त्रयोदशी चतुर्दशी के दिन इंद्राणी नंदन वनमैं जाकर सर्वदा काल यक्ष राक्षसों का पूजन कर्तीभयी ॥ १०६ ॥

ततःशचीतदागूढांचित्रसेनांविगृह्यच मुमोचय
क्षभुवनेप्रियकष्टानुवर्त्तिनी १०७ एतस्मिन्नंतरे
कश्चिद्दूतोलंकांसमागतः धनेशंकथयामास
चित्रसेनासमागमम् १०८ शच्यासाकंसमाया
तातवकांताधनाधिप सखित्वमतुलंप्राप्यचरि
तार्थाबभूवसा १०९ धनेशस्तुकृतार्थोभूज्जगाम
निजमंदिरम् देवाऊचुः सर्वमेतत्कृतंब्रह्मन्प्रसा
दात्तेनसंशयः ११०

तिससें उपरंत शची इंद्राणी गुप्त होईहुई चित्रसेनाकों ग्रहणकर
अपने स्वामिके कष्टके अनुसार कष्टवाली होई हुई यक्षराजकुवे
रके घरमें छोड आवतीभयी १०७ तद तिसकों देखके उसी समय
एक दूत लंकाकों चलागया तिसने जाके धनेशकों कहदिया
कि चित्रसना आगई होईहै १०८ हेधनाधिप शची इंद्राणी
के साथ तेरी कांता आईहै सो तिसके साथ अतुल प्रीतिवा
ले सखिभावकों प्राप्त होकर चरितार्थ होतीभई १०९ इतनीवा
त सुनके धनेश कुवेर तो कृतार्थ होजाता भया और अपने घर
मैं चलाआवताभया देवता कथन कर्तेभये हेब्रह्मन् एहसभी कु
छ तुमारी कृपासें हमने कराहै इसमैं कुछ संशय नहिहै ११०

पतिहीनायथानारीनाथहीनंयथाबलं गोकुलं
कृष्णहीनंतुतथेंद्रेणामरावती १११ जपक्रि
यातपोदानंज्ञानार्थंचवैप्रभो वासवस्यसमार
ब्धाततःस्त्रीत्वंप्रमुच्यताम् ११२ ब्रह्मोवाच
नाहंहंतुंमुनेःशापंसमर्थोहिनशंकरःतीर्थंचान्य
न्नपश्यामिमुक्त्वैकंविष्णुपूजनम् ११३ अष्टा
क्षरेणमंत्रेणपूजनंचतथाजपम् करोतुविधिव
च्छक्रःस्त्रीत्वाद्येनप्रमोक्ष्यते ११४

हेब्रह्मन् पतिकर्के रहित जैसें स्त्री होतीहै और स्वामिके विना
जैसे सेना होतीहै और श्रीकृष्णजीके विना गोकुलनगरी जि
सतरां शोभावाली नहिहै १११ इस वास्ते कोई जप पाठ पू
जा ध्यान दान ज्ञान इनसें कोई हेप्रभोइंद्रकों उपदेश करोजि
सकें करणेसें इंद्र स्त्रीभावको त्यागे ११२ इनना वचन
तिनका सुनकर ब्रह्मा कहने लगा मुनि कर्के दिया हुया शाप
दूर करणेकों मैं भी समर्थ नहिहां और न महादेव जी दूर
करसकतेहैं नकोई तीर्थस्नान हि समर्थहै विना एक विष्णुजी
की पूजासें एक विष्णुहै जेकर ओहकरसकें तदकरेगा ११३
अष्टाक्षर मंत्रके साथ विष्णुजीका पूजन करे और उसी मंत्रका
जपकरे विधिकर संयुक्त तद इंद्रका स्त्रीभाव दूर होवेगा ११४

एकाग्रमनसाशक्रस्नात्वाश्रद्धासमन्वितः न
मोनारायणायेतिजपत्वमात्मशुद्धये११५लक्ष
द्वयेकृतेजाप्येस्त्रीभावान्मुच्यसेहरे इतिश्रुत्वा
तथाकार्षीद्ब्रह्मोक्तवचनंहरिः ११७ स्त्रीभा
वाद्वविनिर्मुक्तस्तदाविष्णुप्रसादतः मार्कंण्डेय
उवाच इतितेकथितंसर्वंविष्णोर्माहात्म्यमुत्त
मम् मयाभृशंनियुक्तस्तुकुरुसर्वमतंद्रितः१११

एकाग्रमन वाला होकर हे इंद्र तूं श्रद्धाभक्तिकर संयुक्त स्नानकर्कै
ऊँनमोनारायणाय इस मंत्रका अपनी शुद्धिके वास्ते जपकर
११५ हेहरे इंद्र जद दो लाखजप इसमंत्रका करेंगा तदही स्त्री
भावसें मुक्तहोवेंगा इस तरांका ब्रह्माका वचन सुनकर इंद्रदेवता
यथाविधि इसी प्रकार कर्ता भया ११६ तद विष्णुभगवानजी
की प्रसन्नतासें स्त्रीभावसे मुक्त होताभया इतनी वात सुनकर
फिर मार्कंडेयऋषिजी कथन कर्नेलगे हेराजन् एह मैंने तेरे प्र
ति उत्तम विष्णुजीके अष्टाक्षर मंत्रका माहात्म्य कथन कराहै
अछी तरां नियुक्त होके कराहुयाहै अव तूं इसकों कर आल
स्यका त्यागकर्कें ११७

इतिसंबोधितस्तेनमार्कंडेयेनपार्थिवः नरसिं
हंसमाराध्यप्राप्तवान्वैष्णवंपदम् ॥ ११८ ॥
सूतउवाच एतत्तेकथितंसर्वंभरद्वाजमुनेमया
॥ ११९ ॥ चरितंविशुद्धंशुभदंकिमन्य
त्कथयामिते योमानवःप्रतिदिनंशृणुतेकथां
हरेः पुरातनींसर्वविमुक्तिदांच सप्राप्यज्ञानंझ
टितीहनिर्मलंतेनैवविष्णुंप्रतिपद्यतेहि १२०
इतिश्रीरणवीरभक्तिरत्नाकरे नारायणाष्टाक्ष
रमंत्रमाहात्म्यंसमाप्तम् ॥

इसप्रकार तिस मार्कंडेय ऋषिजीने संबोधित करा हुया क्या समझाया हुया सहस्रानीकराजा नरसिंहजीका आराधन कर परमपदको प्राप्त होजाताभया ११८ सूतजी कहतेभये हेभरद्वाज मुने एह सारा शुद्ध और शुभके देनेवाला चरित्र मैंने तेरे प्रति कथन कराहै अब और क्या तेरे प्रति कथनकरां ॥ ११९ ॥ इस विष्णु संबंधिनी सबकों विमुक्तिके देनेवाली पुरातन कथाकों मानव सुन २ के अत्यंत निर्मल ज्ञानकों प्राप्तहोकर उसी ज्ञानकर्के विष्णुको प्राप्तहोताहै १२० एह श्रीरणवीरभक्तिरत्नाकरमे अष्टाक्षरमंत्रका माहात्म्यसमाप्तहुया

अथ नित्यनैमित्तिककाम्यकर्मप्रसंगाद्द्वाद शाक्षरमहामंत्रस्य महिमानं वर्णितुमशक्य त्वात्तथापिकिंचिदाहपाद्मे सदीक्षाविधिसध्यानंमंत्रंचद्वादशाक्षरं येजपंतिनरोभक्त्यानतेयांतियमालयम् ॥ १ ॥ नृसिंहपुराणे इक्ष्वाकुप्रति वशिष्ठवाक्यम् तापसंवेशमास्थायशाकमूलफलाशनः ध्यायन्नारायणंदेवमिमंमंत्रं सदाजप २ ॥

अव नित्य नैमित्तक काम्य कर्मोंके प्रसंगसें द्वादशाक्षर महामंत्रकी माहिमा वर्णन करनेकों नहि सामर्थ्य होनेसें तद भी कुछथोडाक माहात्म्य पद्मपुराणमें कहतेहैं दीक्षा और विधि और ध्यान सहित जो कोई पुरुष भक्ति प्रीति करकें द्वादशाक्षर मंत्रकों जपते हैं सो यमकी पुरीमें नहि जातेहैं १ नृसिंह पुराणमें इक्ष्वाकु राजाकें प्रति वशिष्ट जी का कथन है कि हेराजन् तपस्वियोंका वेश धारण कर शाकमूल फल भोजन कर्ता हुया नारायण देवता कों ध्यान कर्ता हुआ तूं इस मंत्रकों सर्वदाकाल जप २

ऊँनमोभगवतेवासुदेवाय एषसिद्धिकरोमंत्रो
द्वादशाक्षरसंज्ञितः जप्त्वैनंमनवासिद्धिंपरांप्रा
प्ताःपुरातनाः ३ गत्वानिवर्तयंत्येतेचंद्रसूर्याद
योग्रहाः अद्यापिननिवर्त्ततेद्वादशाक्षरचिंतकाः
४ द्वादशाक्षरमंत्रेणवासुदेवात्मकेनच ध्यायंश्च
तुर्भुजंविष्णुंजप्त्वासिद्धिंनकोगतः ५ प्रणवो
हृद्भगवतेवासुदेवायकीर्त्तितः प्रधानोवैष्णवे
तंत्रेमंत्रोयंद्वादशाक्षरः ॥ ६ ॥

ऊँ नमो भगवतेवासुदेवाय एह वारां अक्षरों का मंत्र सिद्धिके देने वालाहैं इसकों मनकेसाथ जपकर्के पीछे२मनुष्यपरम सिद्धिकों प्राप्त होते भये ३ ॥ चंद्रमा सूर्यसें आद लेकर सारेही ग्रह उहां जायके परत कर चले आवते हैं और जौनसें द्वादशाक्षर के चिंतन करने वाले परमपदकों गए होएहैं सो आज तक परत कर नहि आए हैं ४ वासुदेवात्मक जो द्वादशाक्ष मंत्र तिस कर्के चतुर्भुज विश्णु का ध्यान कर्ता हुया जप कर्के कोन पुरुषहै जौं सिद्धि कों नहि प्राप्त भया न सारेही सिद्धि कोप्राप्त होते भये ५ इसमंत्रका प्रणव ऊँकार हृदयहै क्यामुख्यहै ऊँनमोभगवते वासुदेवाय एहद्वादशाक्षरमंत्र वैष्णवतंत्रमे प्रधान कहाहै ६

ऋषिः प्रजापतिःछंदोगायत्रीपरिकीर्त्तिता देव
तास्यमनोःप्रोक्तो वासुदेवोमनीषिभिः ॥ ७ ॥
तारेणहृदयंप्रोक्तंमनसाशिरईरितं चतुर्वर्णैः
शिखाप्रोक्तापंचार्णैःकवचंमतम् ॥ ८ ॥ सम
स्तेनभवेदस्त्रमंगकल्पनमीरितं मूर्ध्निभालेदृ
शोरास्येगलेदोर्हृदयांवुजे ॥ ९

शारदा तिलकमें कहाहै इस मंत्रका प्रजापति ऋषिहै गाय त्री छंदहै वासुदेव देवताहै धर्म अर्थ काम मोक्ष इन चार प दार्थोंके लिये पूर्व मनीषियोंने विनियोग कहाहै ॥ अब इस मंत्रके हृदयादि षडंग न्यास लि० ओंहृदयायनमः इस कर्के हृदय को हाथ लगावे नमः शिरसे स्वाहा इसकों पढ कर्के शिरमैंहाथ लगावे भगवते शिखायै वषट् इसकों पढकर्के शिखा मे हाथ लगावे वासुदेवाय कवचाय हुं इसकों पढ कर्के दो नो वाहोका संकोच कर्के वामेहाथ कर्के दहनी का स्पर्श करे दहने हाथसें वामी भुजाकों स्पर्श करे ओंनमोभगवतेवासुदेवाय एह सारामंत्र पढ कर्के अस्त्राय फट् ऐह कहे क्या करे कि वामे हाथकी तलीके ऊपर दहने हाथकी अंगुलियोंके साथ तीनवार जोरसें उठाय २ कर शब्द करें एह अंग न्यासों की कल्पना कही है ॥ अव इस मंत्र के अक्षरों कर्के भिन्न २ सारे देहके न्यास करणे की विधिलि० ओं मूर्ध्नि न मस्तकेमः दृशोःभमुखे गकंठदेशे वभुजयोः तेहृदये ९

कुक्षौनाभौभुजेजानुद्वयेपादद्वयेतथा अथध्या
नं विष्णुंशारदचंद्रकोटिसदृशंशंखंरथांगंगदा
मंभोजंदधतंसिताब्जनिलयं कांत्याजगन्मोह
नं आबद्धांगदहारकुंडलमहामौलिस्फुरत्कंक
णं श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरंवंदेमुनींद्रैःस्तु
तम् ॥१०॥

वाकुक्षौ सुनाभौ देलिंगे वा जानु युग्मे य पादयोः ऐसे पु
र्वोक्त अक्षर यथाक्रम उच्चारण कर्के यथोक्त अंगमैं हाथल
गावता चले इसमैं विशेषता एही है कि नाभीके नीचेवाम हा
थसे न्यासकरे ॥ अब ध्यान का अर्थभी भाषा मे लिखतेहैं
प्राचीन मुनींद्रों कर्के स्तुतकरे होए जो विष्णभगवान्‌जी तिन
का ध्यान कर्ता हुआ और वंदना कर्ता हुं कैसे उह विष्णजी
हैं शरदऋतुके क्रोड चंद्रमोंकी न्याई शोभावालेहैं और चारों
भुजों मैं चार आयुध जोहैं शंख चक्रगदा पद्म एह धारेहैंऔर
श्वेतकमल के मध्य मैं बैठे होए हैं और जो भगवान् अपनी
कांति कर्के सारे जगत्‌को मोहित करणे वालेहैं और धारण
करे होए हैं बाजूबंद और अमोल्यरत्नोंका हार कानोंमे कुंड
ल शिरमैं रत्न जडित मुकट और प्रकाशमान कंकण श्रीवत्स
का चिन्ह और उदार कौस्तुभ मणि एह धारण करी होई ऐसे
भगवान्‌जी का चिंतन कर्तेहैं १०॥

वर्णलक्षंजपेन्मंत्रंदीक्षितोविजितेंद्रियः तद्दशां
शंप्रजुहुयात्तिलैराज्यपरिप्लुतैः ॥ ११ ॥ पीठे
प्रागीरितेमूर्तिंमूलमंत्रेणकल्पयेत् पूजयेद्विधि
नानेनवासुदेवंविधानवित् ॥ १२ ॥ प्रथमा
वृत्तिरंगैःस्याद्वासुदेवादिभिःपरा शांत्यादिश
क्तिसहितैःपराद्वादशमूर्त्तिभिः १३

श्रद्धा भक्ति करकें युक्त पुरुष अछेश्रेष्ट निर्दोष गुण युक्त गुरु सें इस द्वादशा क्षर मंत्रकी शिक्षा ग्रहण करकें पीछेसें यथोक्त विधि कर सहित इंद्रियों कों जीत कर बारां लक्ष इस मंत्रका जप करे फिर तिसका दशांश तिलों को घृत मैं मिलाय कर हवन करे तिसका दशांश तर्पण दुग्धके साथ करे उसीका द शांश कलशे के जल करकें मार्जन करे उसका दशांश फिर ब्राह्मणो कों सुंदर पायसादिक पदार्थ बनाकर भोजन करावे ॥११॥ और जो अष्टाक्षर मंत्रमैं पीठ पूजा कहीहै ओही पू जा करे मूल मंत्रसें मूर्त्तिकी कल्पना करकें पीछे सें विधान के जानण वाला इस विधिसें वासुदेवजी का पूजन करे ॥ १२ तिसके पहले आवरणमैं अंगों की पूजा करे और वासुदेवा दियों करकें दूसरे आवरण की पूजाकरे और शांति श्रद्धा सें आद लेकर जोनासियां बारां शक्तियां हैं तिनका तीसरेआ वरणमे पूजन करे ॥ १३ ॥

चतुर्थीसुरनाथाद्यैर्वज्राद्यैःपंचमीमता एवंसंपू
जितोविष्णु प्रदद्यादिष्टमात्मनः ॥ १४ ॥ पा
यसेनघृताक्तेनमंत्रवर्णसहस्रकम् जुहुयान्मा
नवःसिद्ध्यैसमिद्भिःक्षीरभूरुहाम् ॥ १५॥ तत्सं
ख्ययायथोक्ताभिःसर्वपापविशुद्धये ॥ १६ ॥
इति शारदातिलके विष्णोर्द्वादशाक्षरमंत्रविधा
नम्

और इंद्रादि दिकपालों का चौथे आवरणमैं पूजन करे और ऐसेहि पांचमैं आवरणमैं वज्रादि आयुधोका पूजन करे इस विधिकरके पूजितकरे होए विष्णुजी अपनेकों इष्ट कामनादेतेहैं १४ और घृत करके युक्त पायसकी वारां हजार आहुतिकादान करे तद इसकी सिद्धि होतीहै और इसमें क्षीर युक्त जौनसे वृक्षहैं तिनकीयां समिधां चाहिए १५ और घृत क्षीरकियां वारां हजार आहुतियां देवे पापोंसें शुद्धि होतीहै ॥ १६ ॥ एहविष्णुभगवान् जीके द्वादशाक्षर मंत्रका विधान शारदातिलकमेकथनकराहुआ समाप्तहुआ ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीरति

ब्बताद्यनेक देशाधिपति श्रीप्रभुवर श्रीमहा

राजरणवीरसिंहकारिते श्रीरणवीरभक्तिरत्ना

करेद्वादशाक्षरमंत्रमाहात्म्यंसमाप्तम्॥

समाप्तोयंश्रीरणवीरभक्तिरत्नाकरः

शोधितोऽयं निधिपतिना ॥

श्रीमान् महाराजयोंके अधिराज जंबू और काश्मीर तिब्बतआ

दि अनेक देशोंके स्वामी और प्रभुवर जो श्री महाराज रण

वीर सिंहजी उनोंने वनवायाजो श्रीरणवीरभक्तिरत्नाकरग्रंथ

उसमे द्वादशाक्षर मंत्रका माहात्म्य समाप्त हुआ ॥

एह श्रीरणवीर भक्तिरत्नाकर ग्रंथ समाप्तहुआ ॥

जम्बूविद्याविलास नामक मुद्रायंत्रालयमें शिब्बामल्लकें अधिका

रसें मुद्रितभया संवत् १९३८

(रामलालः)